



Vaish College, Bhiwani

(Affiliated to Chaudhary Bansi Lal University, Bhiwani-Haryana)



Assessment Period: 2018-2023

Supporting Document: 3.3.1

Number of research papers published per teacher in the journals notified on UGC care list during the last five years

ISSN : 2349-1876 (Print) / ISSN : 2454-1826 (Online)

Double Blind Peer-reviewed Referred Research Journal

**INTERNATIONAL
JOURNAL OF
INNOVATIVE
SOCIAL SCIENCE &
HUMANITIES RESEARCH**

Volume-V, Issue-II, April-June, 2018 (SPECIAL ISSUE)

Journal has been approved and notified by UGC Serial No. 48941 / PIF 5.46

SPECIAL ISSUE

मीडिया, साहित्य और राष्ट्रवाद

MEDIA, LITERATURE AND NATIONALISM

EDITOR

Dr. Harish Arora
PGDAV College (Eve.)
(University of Delhi)
Nehru Nagar, New Delhi-110065

CONTENTS / अनुक्रम

सम्पादकीय (भारतीय राष्ट्रवाद और संस्कृतिबोध).....	iii
1. भारतीय राष्ट्रवाद बनाम विश्व.....	1
अर्चना दुबे	
2. भारतेन्दु के साहित्य में राष्ट्रवादी चिन्तन	6
वीपमाला	
3. आइए बनाएं एकात्म मानवदर्शन पर आधारित मीडिया.....	9
संजय द्विवेदी	
4. मौलाना आज़ाद की पत्रकारिता में राष्ट्रीय चेतना.....	12
देवेन्द्र नाथ तिवारी	
5. स्वतंत्रता-पूर्व हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता में राष्ट्रीय जीवन-चेतना	15
चन्द्रप्रकाश मिश्र	
6. सोशल मीडिया और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद.....	21
संगीता वर्मा	
7. हिंदी सिनेमा में राष्ट्रवाद	25
दीपक शर्मा	
8. मॉरिशस की हिन्दी पत्रकारिता में राष्ट्रवाद की अन्तर्ध्वनि	29
कृष्ण कुमार झा	
9. Is Media changing the Paradigm of Nationalism?	33
Gagandeep Kaur	
10. मीडिया और राष्ट्रवाद	37
मीना शर्मा	
11. समाज मीडिया व साहित्य के समक्ष वर्तमान चुनौतियाँ	40
विपिन गुप्त	
12. Advertisements in Tele-media -- As the facade of Indian Nationalistic Thought	45
Mercy Jill Jill	
13. राष्ट्रवाद की अवधारणा और हिंदी पत्रकारिता.....	49
नीरव अडालजा	
14. हिंदी सिनेमा और साहित्य में राष्ट्रवाद.....	52
डिम्पल गुप्ता	
15. भारतीयता के पोषक पं. दीनदयाल उपाध्याय की पत्रकारिता	57
सारिका कालरा	
16. Globalization, Social Media and Nationalism	60
Mansi Khanna / Manju Khanna	
17. भीमराव अम्बेडकर की पत्रकारिता में राष्ट्रवाद	64
दीपा भण्डारी	
18. Folk Culture and Traditional Media as pillars of Development Communication	67
Tanvi Dahiya	
19. India's Economic Growth Triggered by Journalism enrouting Nationalism	70
Garima Bhardwaj	

समाज मीडिया व साहित्य के समक्ष वर्तमान चुनौतियाँ

डॉ. विपिन गुप्त
वैश्य कॉलेज, भिवानी
हरियाणा

'साहित्य' शब्द 'सहित' में यत् प्रत्यय लगकर बना है, जिसका अर्थ है शब्द और अर्थ का यथावत् सहभाव अर्थात् साथ होना। साहित्य वह है, जिसमें शब्द और अर्थ सहित रूप में रहते हैं- 'सहितयोः शब्दार्थयोः भावः साहित्यम्।' पाश्चात्य विद्वानों ने भी 'साहित्य' को पारिभाषित किया है। श्री हेनरी हड्सन के अनुसार - "It is fundamentally an expression of life through the medium of language." अर्थात् साहित्य मूलतः भाषा के माध्यम द्वारा की गई जीवन की अभिव्यक्ति है। एमर्सन महोदय के मतानुसार 'साहित्य भव्य विचारों का लेखा है। हड्सन काव्य को जीवन से सम्बन्धित करते हुए कहते हैं- 'कविता का जन्म जीवन से हुआ है। जीवन से उसका घनिष्ठ सम्बन्ध है और जीवन के लिए उसका अस्तित्व है।' मैथ्यू आर्नल्ड ने साहित्य को जीवन की व्याख्या कहा है- 'Literature is the criticism of life.'

मनुष्य ने सामाजिक जीवन अपनाकर अपनी भाषा माध्यम से अपने अनुभवों को ज्ञान रूप में संचित करने का प्रयास किया। इसे ही आगे चलकर 'साहित्य' कहा जाने लगा। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने भी कहा है- "ज्ञानराशि के संचित कोष का नाम ही साहित्य है।" आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के मत में "प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चितवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है।" आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार "सारे मानव समाज को सुन्दर बनाने की साधना का ही नाम 'साहित्य' है। वस्तुतः 'साहित्य' शब्द बहुत विस्तृत अर्थ संजोये हुए है। साहित्य 'सर्वोत्तम विचार की उत्तमोत्तम लिपिबद्ध अभिव्यक्ति' कहा जा सकता है। साहित्य की भावना और विचारों की मधुर अभिव्यक्ति है। साहित्य जीवन में विषाद के क्षणों में संतोष और सुख के क्षणों में स्फूर्ति प्रदान करता है। जीवन में उसकी उपादेयता वांछनीय है।

साहित्य और समाज का घनिष्ठ सम्बन्ध है। साहित्य सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षक होता है। संस्कृति वास्तव में अनुभूतियों तथा विचारों के संग्रह का स्थान है। भारतीय संस्कृति मानव जीवन के समानुपातिक सर्वांगीण विकास की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। समस्त उदात्त मानवीय भावों के संरक्षण के कारण यह संस्कृति प्राचीनतम होने पर भी आज भी युगदृष्टि से उतनी ही मूल्य सम्पन्न है। भारत में एक बहुलतायुक्त समाज है। यहाँ अनेक धर्म, संस्कृति, भाषा और प्रजाति के लोग निवास करते हैं। इन सब विविधताओं का प्रभाव साहित्य पर भी पड़ा है। अनेकता में एकता भारत की विशेषता है। यहाँ का साहित्य प्रेरणादायी है। डॉ. मोहन अवस्थी साहित्य की उपयोगिता उद्घाटित करते हुए कहते हैं- "जिस देश का साहित्य जिन्दगी के प्रेरक तत्वों से प्राणवान् है, वह देश संकटों से जूझता हुआ भी अपनी उर्ध्वगामिनी जीवनी शक्ति का इजहार बराबर करता रहेगा। इसलिए देश को ऊँचा उठाना है तो नवयुवकों को वहाँ के साहित्य से परिचित कराया जाना चाहिए।"⁹

सभ्यता के विकास के कारण प्रत्येक व्यक्ति समाज का अंग बन गया है। अतः साहित्य में वैयक्तिक जीवन के साथ-साथ सामाजिक जवन का समावेश आवश्यक हो गया है। सुप्रसिद्ध समाजशास्त्री श्यामाचरण दुबे का मानना है कि समकालीन भारतीय समाज परिवर्तन के एक संवेगात्मक उद्वेग से गुजर रहा है।¹⁰ वर्तमान भारत में विपरीत प्रकार के सामाजिक मूल्य और सामाजिक अभिवृत्तियाँ पायी जाती हैं। आज व्यक्ति समूह, समाज और देश के हित के दृष्टिकोण से विचार नहीं करके स्वयं के हित के दृष्टिकोण से सोचता है। तेजी से बदलती हुई परिस्थितियों के साथ व्यक्ति समायोजन नहीं कर पा रहा है। उसके सम्मुख लक्ष्य और साधनों की अस्पष्टता है।¹⁰ ऐसी परिस्थितियों में साहित्यकार के व्यक्तित्व का प्रभावित होना स्वाभाविक है।

श्रेष्ठ साहित्यकार समाज को मार्गदर्शित कर उन्नति के पथ पर अग्रसर करता है। स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय साहित्यकारों ने जन-चेतना फैलाने का सराहनीय कार्य किया था। साहित्यिक रचना मात्र मनोरंजन के निमित्त ही विरचित नहीं होती बल्कि वह सामाजिक परिष्करण के लिए भी लिखी जाती है। साहित्य और समाज का सम्बन्ध मंगलकारी है। साहित्य और समाज दोनों का शिलान्यास आत्म-रक्षा और आत्मोन्नति की कामना पर ही होता है।

यथार्थ में साहित्य समाज की धारा के साथ स्वयं भी प्रभावित होता है। अधुनातन साहित्य में एक ओर नारी-स्वातन्त्र्य का आग्रह दिखाई पड़ता है तो दूसरी ओर यौन-स्वातन्त्र्य के नाम पर उसे देह का पुलिन्दा मानकर चित्रित किया जा रहा है।¹¹ साहित्यकारों का यह परम कर्तव्य है कि वह समाज की असंगतियों एवं उसके कुरूप का अन्वेषण करे तथा उनका समाधान

लोकप्रिय नहीं है।¹³ श्री सुधीर पचौरी के अनुसार आज देश के दस सबसे ज्यादा बिकने वाले अखबारों में छह हिन्दी के हैं। भारत में मीडिया एक बड़ा उद्योग है। आर्थिक उदारोकरण के इस दौर में भाषाई मीडिया में आया 'बूम' मीडिया के विकास का एक नया चरण है। लेकिन यह 'समस्याहीन' नहीं है। इस प्रक्रिया में बहुराष्ट्रीयकरण और कॉरपोरेटीकरण छोटे-मझोले मीडिया का खतरा बन सकते हैं। मार्केट द्वारा कंटेंट का निर्धारण पत्रकारिता की प्रक्रिया को गहरे और नकारात्मक ढंग से प्रभावित करने लगा है।¹⁴ वैश्वीकरण का दौड़ एवं भूमण्डलीकरण के प्रभाव से हिन्दीभाषा ही नहीं बल्कि अर्थ भावनाएँ भी अछूती नहीं रही हैं। विभिन्न वेब पोर्टलों पर, पत्र-पत्रिकाओं में प्रस्तुत भाषा एवं साहित्य पर भी वैश्वीकरण का परिणाम देखा जा सकता है। पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्री तथा पुस्तकों के आशय एवं विषयों पर भी नई तकनीक के साथ-साथ वैश्विक परिदृश्य दिखाई देता है। वर्तमान साहित्य के विषय एवं आशय भी नए सिरे से प्रस्तुत हो रहे हैं। इंटरनेट पर प्रकाशित अत्यधिक रचनाओं के विषय भी भूमण्डलीकरण से प्रभावित हैं।¹⁵ भूमण्डलीकरण के कारण कलम पर बाजारवाद के खतरे बढ़ रहे हैं। बाजारवाद पूँजीवाद सभ्यता का ही नया रूप है, जिसे 'नवपूँजीवाद' भी कह सकते हैं। बाजारवाद के खतरों से सावचेत करते हुए श्री जीवन सिंह लिखते हैं - "बाजारवाद का सबसे खतरनाक खेल है-इन्सानी अनुभूतियों का पूरी तरह हनन कर व्यक्ति को मशीन में परिवर्तित कर देना। आज चारों तरफ मशीनी मनुष्यों के चेहरे नज़र आते हैं जिनके ऊपर मानवीय अनुभूतियों की चमक गायब है।¹⁶ बाजारवाद का साहित्य, समाज व मीडिया पर भी प्रभाव पड़ा है। बाजारवाद के प्रभाव को रेखांकित करते हुए प्रो. कृष्णदत्त पालीवाल कहते हैं-"हालत यह है कि भारत का दूरदर्शन हर समय उपभोक्ता समाज का प्रसार कर रहा है। रंगीन नारी छवियों और भटकते मुस्तंडों से भोग सामग्री के लिए ललचाया जा रहा है। इस प्रदर्शन, विज्ञापनबाजी से समाज में भोग लिप्सा, सेक्स लिप्सा, पनप रही है। टेलीविजन की सूर्यनखाएँ कभी स्वयंवर के सौरियल चलाती हैं तो कभी साड़ी उतार देहवाद का नंगा नृत्य करती मिलती हैं। इसी पूरी स्थिति ने जीवन और समाज से गंभीर साहित्य, कला, दर्शन और विचार का अंत कर दिया है।"¹⁷

दूरदर्शन पर आरम्भ में 'हम लोग', 'बुनियाद', 'चन्द्रकांता', 'रामायण', 'महाभारत', 'तमस', 'चरित्रहीन', 'नीम का पेड़', 'कब तक पुकारूँ', 'राग दरबारी', 'गण देवता' जैसे साहित्यिक कृतियों पर आधारित धारावाहिक प्रसिद्ध हुए, किन्तु बाद में टी.वी. पर साहित्य हाशिए में चला गया। कथा धारावाहिक की जगह 'रियलिटी शो' ले चुके हैं। श्री सुरेन्द्र उनियाल के अनुसार, 'टी.वी. पर साहित्य के हाशिए पर चले जाने का जो प्रत्यक्ष कारण समझ में आता है, वह है -व्यावसायिक दबाव। दरअसल निजी चैनलों के आने के बाद इन चैनलों और धारावाहिक निर्माताओं को आपस में ही व्यावसायिक प्रतिद्वंद्विता का सामना करना पड़ा। टी.आर.पी. (टी.वी. रेटिंग प्वाइंट) के कारण साहित्य टेलीविजन पर उपेक्षित होने लगा।"¹⁸

सिनेमा के माध्यम से साहित्यिक कृतियों का प्रचार-प्रसार हुआ है। 'गोदान', 'गबन', 'निर्मला', 'शतरंज के खिलाड़ी', 'तीसरी कसम' जैसी साहित्यिक कृतियों पर फिल्में भी बनीं। 'जगद्गुरु शंकराचार्य' तथा 'मुद्राराक्षसम्' जैसी संस्कृत की कृतियों पर भी संस्कृत में फिल्में निर्मित हुईं, किन्तु लोकप्रिय नहीं हो सकीं। 'अर्द्धसत्य', 'आक्रोश', 'माया मेमसाहब', 'मिर्च मसाला', 'गंगाजल' आदि श्रेष्ठ कलात्मक फिल्मों को व्यावसायिक फार्मूला प्रधान फिल्मों की प्रतिस्पर्धा ने अधिक समय तक टिकने नहीं दिया। सिनेमा सामाजिक परिवर्तन का सशक्त जन संचार माध्यम है, किन्तु यह भी बाजारवाद के मायाजाल में फँसकर व्यावसायिकता की भेंट चढ़ गया। फिल्म निर्माण की दृष्टि से भारत का विश्व में चौथा स्थान है। भारतीय फिल्मों में अरबों की लगी पूँजी का वास्तविक लोहा भारतीय जनता को मिल सका।"¹⁹ असहाय आम व्यक्ति की पीड़ा को व्यक्त करते हुए कवि रमेश खत्री मीडिया से प्रश्न करते हैं-"दूर दराज के गाँव का मजदूर-किसान/आज भी उतना ही असहाय/मीडिया की कलाबाजी/आखिर कौन से गुल खिलाणे को तत्पर?"²⁰

मीडिया की कलाबाजी पर क्या कहें? साहित्य की अभिव्यक्ति पर क्या कहें? क्या चुप रहें? वरिष्ठ कवि गोविन्द माधुर के शब्दों में यही कहा जा सकता है - 'सोचता हूँ चुप रहूँ/पर कुछ भी नहीं बोलने को भी/अपमान समझते हैं लोग।"²¹

जन संचार प्रौद्योगिक ने अनेकानेक सुविधाएँ प्रदान की हैं तो कई प्रकार की चुनौतियाँ भी खड़ी कर दी हैं। आज मीडिया पूँजीपतियों के नियंत्रण में है। फलस्वरूप मूल्यहीन पत्रकारिता को बढ़ावा मिल रहा है। आर्थिक लाभ कमाने के लिए मीडिया का प्रयोग किया जा रहा है। राजकुमारी डायना, मोनिका लेविंस्की तथा भंवरी देवी से सम्बन्धित प्रेम-रोमांस व सेक्स-स्केण्डल छह-छह माह तक मीडिया में छाये रहते हैं। इंटरनेट अश्लीलता की चरम सीमा को छूने में मददगार बन रहा है। टी.वी.चैनल भी नारी देह प्रदर्शन करने में गर्व महसूस करता है। मीडिया की नकारात्मक भूमिका पर टिप्पणी करते हुए डॉ. अर्जुन तिवारी कहते हैं-"चैनलों के अश्लील कार्यक्रमों को देखकर प्रौढ़ के लोग भी स्थूलित हैं, उसे देखकर लगाता है कि देह-प्रदर्शन और सौंदर्य की भूख ने नारी जाति से मातृत्व का वह त्याग ही छीन लिया है, जिस मातृत्व के बल पर समाज में एक आशा जगी रहती थी कि माता के स्नेहसिक्त हाथों से पली पीढ़ी समाज, देश और मानवता की धरोहर सिद्ध होगी।"²²

'पेह न्यूज सम्बन्धी मीडिया की समस्या आजकल बढ़ती जा रही है। इस पर चिन्ता व्यक्त करते हुए प्रख्यात पत्रकार प्रभाष जोशी कहते हैं-" यह देश का कैसा दुर्भाग्य है कि आजकल पैसा लेकर खबर लिखी और दिखाई जा रही है। ऐसे में पत्रकारिता का बचना मुश्किल है। अगर नीर-क्षीर विवेक से पत्रकारिता नहीं करेंगे तो हम अपनी पत्रकारिता की परम्परा

इसे सिर्फ प्रिंट मीडिया या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के दो खानों में तक्सीम नहीं किया जाता। फिल्म, रेडियो, टेलिविजन के बाद इंटरनेट, ब्लॉग, ट्विटर, फेसबुक, यहाँ तक कि टेलिफोन और मोबाइल जैसे खालिस निजी संचार यंत्र भी मीडिया के हाथ-पैव बन गए हैं। इस पसमंजर में दुनिया की सभी जबानों के लिए ये मुआमला साफ और वाजेह हो गया है कि इन्हें जिन्दा रहना और फलना-फूलना है तो मीडिया के सभी बाजुओं के साथ जुड़कर आगे बढ़ना होगा।¹²

कहा जाता है कि मीडिया, समाज का दर्पण है। दर्पण कभी झूठ नहीं बोलता, लेकिन कभी-कभी दर्पण का सच कड़वा होता है, तो हमें अच्छा नहीं लगता, इसलिए हम दर्पण को ही दोषी मानकर उसकी आलोचना करने लग जाते हैं। मीडिया के माध्यम से कम समय में बहुत लोगों व स्थानों तक सूचनाएँ पहुँचती हैं। यह जनसंचार माध्यमों की सबसे बड़ी उपादेयता है।¹³ अतः आज फले की अपेक्षा मीडिया पर अधिक उत्तरदायित्व है। न्यायाधीश सरकारिया का मानना है कि प्रेस को स्वयं आगे आकर नैतिक बल के आधार पर जनता से सम्बन्ध स्थापित करने चाहिए ताकि दोनों में आपसी विश्वसनीयता प्रगाढ़ हो सके।¹⁴

हिन्दी भाषा में प्रचार-प्रसार, विकास एवं परिमार्जन में पत्र-पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हिन्दी गद्य के अभ्युत्थान की प्रेरणा समाचार-पत्र से ही प्राप्त हुई और आधुनिक हिन्दी गद्य के साहित्यकारों ने, जो समाचार पत्रों के सम्पादक थे, अपने कृतित्व को समाचार-पत्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया तथा अन्य गद्यकारों को भी प्रभावित किया।¹⁵ सूचना प्रौद्योगिकी में कम्प्यूटर का स्थान प्रमुख है। अब स्थिति यह हो गई है कि हिन्दी में पेजर आ गए हैं। हिन्दी में इंटरनेट भी उपलब्ध हो गया है। ई-मेल और सर्च संभव है। हिन्दी में अनेक पोर्टल प्रारम्भ हो गए हैं। हिन्दी में वेबसाईट व फेसबुक की शुरुआत हो चुकी है। हिन्दी में ई-बुक तथा ई-समाचार-पत्र व पत्रिकाएँ भी उपलब्ध हैं।¹⁶

सूचना प्रौद्योगिकी के कारण हिन्दी भाषा तथा साहित्य का वृहत् प्रचार-प्रसार हुआ है। इंटरनेट से 'वैश्विक ग्राम' की परिकल्पना साकार होने लगी है। डॉ. सुधीर सोनी "इलेक्ट्रॉनिक संचार माध्यम" पुस्तक में लिखते हैं— "इंटरनेट ने आज ज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में कम्प्यूटर स्क्रीन के रूप में अभिनव दृश्य माध्यम प्रस्तुत किया है। प्रत्यक्ष प्रदर्शन के इस प्रारूप ने जीवन अभिनव पक्षों को साकार किया है।¹⁷ निस्संदेह इंटरनेट मीडिया ने विश्व में अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया है। प्रो. रमेश जैन के शब्दों में - "इंटरनेट मीडिया की पहुँच प्रिंट मीडिया से कहीं अधिक है। इसका उत्पाद लागत प्रिंट मीडिया से अपेक्षतया कम है।"¹⁸ लन्दन में किये गए एक सर्वे से यह साफ होता है कि टेलीविजन और रेडियो के बाद इंटरनेट मनोरंजन और समाचारों के लिए सबसे अधिक लोकप्रिय माध्यम है।¹⁹ आधुनिक तकनीक ने सही रूप में हमें 'ग्लोबलविलेज' बना दिया है। इसने संसार के तौर-तरीके बदल दिये हैं। सेटलाइट टेलीविजन पुरानी बात हो गई है। डिजिटल तकनीकी पत्रकार और दर्शक के बीच की दूर और कम कर देंगी। मोबाइल टेलीविजन, इस्टेंट वीडियो को उपभोग की वस्तु बना देंगे। नई ऑनलाइन तकनीक अब वीडियो ऑन डिमांड का प्रस्ताव दे रही है।²⁰

गाँवों में भ्रूण हत्या, नारी उत्पीड़न, अशिक्षा और अधिकारों के प्रति अज्ञानता आदि बहुत से मुद्दे हैं, जिन्हें लेकर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया बड़ी प्रभावी भूमिका निभा सकता है। लेकिन टी.आर.पी. के लोभ में सभी चैनल वही कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं जिनके चलते खुद को नंबर एक चैनल सिद्ध किया जा सके। वस्तुतः सभी सरोकारों पर बाजार हावी हो चला है। लोकतन्त्र में मीडिया तब तक प्रभावशाली भूमिका नहीं निभा सकता जब तक वह ग्रामीण भारत के लोगों की समस्याओं को अभिव्यक्ति नहीं देता। जाने-माने टीवी पत्रकार व एंकर श्री पुण्य प्रसूत वाजपेयी का मानना है कि "मीडिया को जनसमस्याओं को प्राथमिकता देना चाहिए, न कि मनोरंजन को। मनोरंजन के कई अन्य माध्यम मौजूद हैं। सिवाय मीडिया के जनसमस्याओं को उभारने, उन्हें पटल पर लाने का अन्य कोई दूसरा तरीका नहीं है।"²¹

साहित्य और मीडिया एक गाड़ी के दो पहियों की भाँति साथ-साथ कदम बढ़ाकर जनजागृति फैला सकते हैं। मीडिया का फर्ज है कि वह समाज को सभ्य बनाने में मदद करे। जहाँ जरूरत हो वहाँ उसे टोके। व्यक्ति को समूह के बाहर भी गरिमा प्रदान करे।²² पत्रकार सजग साहित्यकार की भाँति अपनी उल्लर्जा से समाज को उन्नति प्रदान करता है। विदेशी और देशी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने कुछ सालों में ही हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं को जितना नुकसान पहुँचाया, उतना किसी और ने नहीं पहुँचाया।..... हमारे यहाँ भी बाजारवाद के खतरों की घण्टियाँ सुनाई देने लगी हैं। बाजारू संस्कृति के चुगलों पर चलने वाले साहित्यकारों ने साहित्य को अपूरणीय क्षति पहुँचाई है।²³ मीडिया और साहित्य की तुलना करते हुए श्री सुधीर पचौरी मानते हैं कि मीडिया साहित्यकारों के लिए नहीं होता, वह आम जनता के लिए होता है। साहित्यकारों के लिखे हुए को कम लोग पढ़ते हैं, जबकि मीडिया में छपता है या सुनाई देता है, उसे लाखों पढ़ते और समझते हैं।

विगत 150 वर्षों में लघु पत्रिकाओं और साहित्यिक पत्रिकाओं ने समाज को भी चेतना सम्पन्न बनाया है। वर्तमान में हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति पर हैं। एक सर्वे के मुताबिक भारत में 4,477 अंग्रेजी पत्र-पत्रिकाएँ हैं, जिनमें 209 दैनिक हैं। इनकी तुलना में हिन्दी में 9,695 पत्र-पत्रिकाएँ हैं, जिनमें 1,182 दैनिक हैं, जिनमें पत्र-पत्रिकाओं को विज्ञापनों का 57 प्रतिशत भाग मिलता है। जबकि हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं को केवल 20 प्रतिशत और अन्य भारतीय भाषाओं को कुल मिलाकर 23 प्रतिशत ही प्राप्त होता है। इस प्रकार भारी आर्थिक प्रोत्साहन मिलने पर भी अंग्रेजी पत्र-पत्रिकाएँ अधिक

स्तुत करे। साहित्य की सामाजिकता पर प्रकाश डालती हुई डॉ. रेणु वर्मा कहती हैं—“आज के युग गतिशीलता और परिवर्तनशीलता में संघर्ष के प्रतिमान अत्यन्त सूक्ष्म हो गये हैं और साहित्य के संस्कार विशृंखलित होकर खण्ड-खण्ड सामाजिकता को संगठित करने के लिए प्रयत्नरत हैं।”¹² इस प्रकार ‘साहित्य का समाजशास्त्रीय चिंतन’ पर विचार व्यक्त करती हुई प्रो. निर्मला जैन लिखती हैं—“समाजशास्त्र की तरह, साहित्य का मुख्य सरोकार होता है; मनुष्य का सामाजिक जगत, उस जगत के प्रति उसकी अनुकूलता और उसे बदलने की इच्छा। उपन्यास औद्योगिक समाज की प्रमुख साहित्यिक विधा है। अतः उसमें परिवार, राजनीति तथा शासन के साथ मनुष्य के सम्बन्धों के सामाजिक जगत के पुनः सृजन का ईमानदार प्रयास दिखाई पड़ता है।”¹³

नई सदी-इक्कीसवीं सदी का आगमन हो चुका है और इसका पहला दशक बीत चुका है। भूमण्डलीकरण (ग्लोबलाइजेशन) का युग आ चुका है। ‘ग्लोबलाइजेशन’ के कारण ग्लोब से गाँव की परम्परागत संस्कृति लुप्त हो रही है। उपभोक्तावादी अपसंस्कृति फैल रही है। वर्तमान समय चुनौतिपूर्ण है। इसकी ओर संकेत करते हुए वरिष्ठ कवि एवं समालोचक डॉ. कौशलनाथ उपाध्याय का कहना है—“वस्तुतः जिस समय में हम जी रहे हैं, वह समय संवेदनशील रचनाकार और आम आदमी दोनों के लिये कठिन एवं चुनौतिपूर्ण है। नयी सदी में प्रवेश करते के साथ ही हम इस कठिनाई की ओर गम्भीरतापूर्वक देखने लगे हैं और चुनौतियों की व्याख्या करते हुए उनसे लड़ने के औजारों के विषय में भी सोचने लगे हैं।”¹⁴ समकालीन कविता के परिदृश्य को देखकर परमानन्द श्रीवास्तव मानते हैं कि निर्व्यक्तिक ठण्डेपन और व्यक्तिगत मानवीय ताप में रची बसी दोनों ही रूपों में कविता अपने समय के प्रश्नों और चुनौतियों का सामना कर सकती है।¹⁵ ‘कृति ओर’ तथा ‘प्रतिश्रुति’ साहित्यिक पत्रिकाओं के विद्वान् सम्पादक डॉ. रमाकांत शर्मा वर्तमान चुनौतिपूर्ण समय में सांस्कृतिक हमलों से सतर्क करते हुए लिखते हैं—“आज भूमण्डल में चेतना की लहर के बावजूद साम्राज्यवादी ताकतें खामोश होकर नहीं बैठती हैं बल्कि चालाकीपूर्ण ढंग से अपनी चालें बदलने में कामयाब हुई हैं। इन ताकतों ने सैनिक हमलों के स्थान पर अपनी पूँजी और मीडिया के बल पर सांस्कृतिक हमले शुरू कर दिये हैं। ये हमले फौजी हमलों की बजाय ज्यादा घातक और दूर की मार करने वाले हैं।”¹⁶

जिस तरह साहित्य को समाज का दर्पण माना गया है, उसी तरह मीडिया को ‘विश्व का दर्पण’ माना जाता है। मीडिया आरम्भ में अखबार के रूप में अवतरित हुआ। फिर रेडियो और टेलीविजन ने सशक्त और प्रभावी माध्यम के रूप में मीडिया में प्रवेश किया। अब कम्प्यूटर, इन्टरनेट, मोबाइल जैसे नवीनतम साधन मीडिया को लोकप्रिय बना रहे हैं। आज मीडिया के प्रभाव को देखकर उसे ‘लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ’ कहा जाने लगा है। सार्थक सामाजिक बदलाव लाने में मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण है। मीडिया को आम जनता का विश्वविद्यालय कहें तो अतिशयोक्ति नहीं है।

प्रसिद्ध साहित्यकार एवं मीडिया विशेषज्ञ डॉ. कृष्ण कुमार रतू का कहना है—“फिल्मों, टेलीविजन और इंटरनेट द्वारा इन दिनों का मीडिया परिदृश्य आपकी दिनचर्या को सीधे प्रभावित तो कर ही रहा है, इसके साथ वो आपकी भाषा, साहित्य, संस्कृति, व्यवहार, लिबास से लेकर आपके दिलों-दिमाग पर एक नयी क्रान्ति का प्रभाव छोड़ रहा है। नतीजा आपके सामने है। आज समाज तथा विश्व हर क्षण एक नये बदलाव की प्रक्रिया से गुजरते हुए दिखायी देते हैं।”¹⁷ आज की दुनिया में संचार माध्यमों या मीडिया की भूमिका की चर्चा करती हुई डॉ. संध्या गर्ग (दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली) कहती हैं—“भूमण्डलीकरण की अवधारणा एक ऐसी सभ्यता को जन्म देने के लिए प्रयासरत है, जिसके मूल में पश्चिम से उपजे प्रतिमान हैं। इस सभ्यता के विस्तार में सांस्कृतिक कारणों से अधिक भूमण्डली बाजार का महत्व है और इस बाजार को बढ़ाने की मुख्य भूमिका का निर्वाह करने की जिम्मेदारी मीडिया के कन्वेंशंस पर डाली गई है।”¹⁸ जनसंचार क्रान्ति का उल्लेख करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. रामप्रसाद दाधीच लिखते हैं—“युवा पीढ़ी को रचनात्मक एवं स्वस्थ दिशा देने वाला देश में कोई नेतृत्व नहीं है। पश्चिम की ओर अन्धी दौड़ ने सम्पूर्ण देश को दिशाभ्रमित किया है। संचार-क्रान्ति, प्रौद्योगिकी, औद्योगीकरण और किसी भी प्रकार अर्थ-संग्रह और सत्ता हथियाने के अपिक्रम देश में आज अनियंत्रित चल रहे हैं। नारी सशक्त हो रही है- यह बहुत ही प्रशंसनीय है, किन्तु ‘मुक्त नारी’ का नारीवाद आन्दोलन देश में जोर पकड़ रहा है। मीडिया को सर्वशक्तिमान कहे या सर्वग्रासी कहे - भूमिका पूरा जोर पर है।”¹⁹ आज जनतंत्र को बचाना व बढ़ाना स्वयं मीडिया के अपने अस्तित्व के लिए भी आवश्यक है। मीडिया की यात्रा मिशन से प्रोफेशन और प्रोफेशन से कमर्शियलाइजेशन के चरण में पहुँच गयी है। फिर भी आज के मीडिया की सबसे बड़ी चुनौती और कसौटी यह है कि वह राज्य और समाज को जनतात्रिक बनाने की अपनी भूमिका अदा करता है या नहीं।²⁰ सूर्यनगरी जोधपुर के वरिष्ठ कवि नवल जोशी भी संवेदनशील होकर पद्यमय उद्गार प्रकट करते हुए कहते हैं :

जुर्म सूँधता मीडिया, सड़कें पीती खून
चस्पा करती वरिद्याँ, चेहरों पर कानून।²¹

20वीं सदी विज्ञान और टेक्नोलॉजी के लिए समर्पित थी तो 21वीं सदी मीडिया के लिए समर्पित है। इस सदी में मीडिया सबसे बड़ी ताकत के रूप में उभरा है। ‘शेष’ पत्रिका में प्रकाशित यह अशेष कथन उल्लेखनीय है—“हालिया बरसों में मीडिया सबसे बड़ी आलमी ताकत बनकर उभरा है और इसकी शक्ति भी न सिर्फ तब्दील हुई है, बल्कि इसका दायरा भी फैला है।

‘नहीं कर सकेंगे’⁴³
साहित्य और मीडिया समाज को उन्नत बना सकते हैं। वर्तमान में अनेक चुनौतियाँ हैं, जिनका सामना किया जा सकता है। प्रसिद्ध साहित्यकार तथा मीडिया विशेषज्ञ डॉ. कृष्ण कुमार रतू के शब्दों में निष्कर्षतः कहा जा सकता है—“नयी सदी की इस पल-प्रतिपल बदल रही दुनिया में श्रव्य-दृश्य एवं आधुनिक संचार माध्यम एक शक्तिशाली भूमिका तथा मानवीय सरोकारों की संवेदना का सम्प्रेषण हाशिये के अन्दर तथा बाहर पड़े आदमी के लिए करेगा।”⁴⁴

संदर्भ

1. डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त : साहित्यिक निबन्ध, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, 1990 पृष्ठ 106
2. डॉ. रामदेव साहू : पाश्चात्य काव्यशास्त्र का इतिहास, श्याम प्रकाशन, जयपुर, 2004 पृष्ठ 20
3. डॉ. भोलेनाथ तिवारी (सं.) । क्यबजपवदंतल वनिनजंजपववदेए बुक्स एन बुक्स दिल्ली, 1986 पृष्ठ 166
4. गोविन्द त्रिगुणायत (डी.लिट.) : शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त (प्रथम भाग, भारतीय साहित्य मन्दिर, दिल्ली, 1962, पृष्ठ 5
5. तर्कतीर्थ लक्ष्मण शास्त्री जोशी : वैदिक संस्कृति का विकास साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2007 पृष्ठ 302
6. डॉ. प्रीती प्रभा गायल : भारतीय संस्कृति, राजस्थानी ग्रन्थकार, जोधपुर, 2008 पृष्ठ 16
7. वीरेन्द्र प्रकाश शर्मा : भारतीय समाज, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2002, पृष्ठ 7
8. डॉ. मोहन अवस्थी : हिन्दी साहित्य का विवेचनपरक इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृष्ठ 8
9. श्यामाचरण दवे : भारतीय समाज, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2001, पृष्ठ 126
10. प्रो. एम.एल. गुप्ता व डॉ. डी.डी. शर्मा: भारतीय समाज मुद्दे तथा समस्याएँ, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2005, पृष्ठ 359
11. सुरील कुमार श्रीवास्तव : निबन्ध नवनीत, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 2007, पृष्ठ 117
12. डॉ. रेणु वर्मा : साहित्यिक निबन्ध, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2006, पृष्ठ 248
13. प्रो. निर्मल जैन: साहित्य का समाजशास्त्रीय चिंतन, हिन्दी माध्यम कार्यालय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 1992 पृष्ठ 2
14. डॉ. कौशल नाथ उपाध्याय : कविता का पक्ष, रॉयल पब्लिकेशन, जोधपुर, 2008, पृष्ठ 11
15. परमानन्द श्रीवास्तव : समकालीन हिन्दी कविता, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2010, पृष्ठ 14-15
16. डॉ. रमाकान्त शर्मा : कविता की लोकधर्मिता, रॉयल पब्लिकेशन, जोधपुर, 2009, पृष्ठ 57
17. डॉ. कृष्ण कुमार रतू : मीडिया देशान्तर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2010 (भूमिका)
18. डॉ. संजय गर्ग (आलेख) : 'भारतीय पक्ष' (मासिक) दिसम्बर 2006, 51, रानी झौंसी रोड, फाड़गंज, नई दिल्ली, 2006 पृष्ठ 19
19. डॉ. रामप्रसाद दाधीच (आलेख) : 'प्रतिभ्रुति' (त्रैमासिक), जुलाई-सितम्बर 2007, भारतीय विद्या भवन, जोधपुर, 2007 पृष्ठ 9
20. डॉ. हेतु भादराज (प्र.सं.) : अक्षर (त्रैमासिक), अप्रैल-जून 2009), त्रिवेणी नगर, जयपुर, 2009, पृष्ठ 311
21. नवल जोशी (रोहे) : 'कृति और लोकधर्मिता कविता विशेषांक, रॉयल पब्लिकेशन, जोधपुर, 2011, पृष्ठ 206
22. हसन जमाल (सं.) 'शेष' (त्रैमासिक) अप्रैल-जून 2011), पन्ना निवास के सामने, लोहारपुरा, जोधपुर, पृष्ठ 9-10
23. डॉ. सजीव भानवत क्षिप्र माधुर : जनसम्पर्क: सिद्धान्त व तकनीकी, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2008, पृष्ठ 54
24. डॉ. सैलेश सेन गुप्ता : जनसम्पर्क एवं संचार प्रबन्धन, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर, 2003, पृष्ठ 136
25. डॉ. बंदप्रताप वैदिक (सं.) हिन्दी पत्रकारिता: विविध आयाम, हिन्दी बुक सेंटर, नई दिल्ली, 1992, पृष्ठ 61
26. डॉ. पूनम चन्द टण्डन (सं.) सूचना एवं प्रौद्योगिकी, हिन्दी और अनुवाद, भारतीय अनुवाद परिषद्, नई दिल्ली, 2005 पृ. 47-48
27. डॉ. सुधीर सोनी : इलेक्ट्रॉनिक संचार माध्यम, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2008, पृ. 126
28. प्रो. रमेश जैन: प्रयोजनमूलक हिन्दी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2009 पृ. 371-372
29. डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ एवं डॉ. रामप्रसाद कुलश्रेष्ठ : प्रयोजनमूलक हिन्दी, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2005, पृ. 66
30. राजदीप सरदेसाई (लेख) भारत : कल, आज और कल, दैनिक भास्कर समूह, भोपाल(म.प्र.), 2007 पृ. 66
31. ओम गुप्ता : मीडिया और समाज, कनिष्का पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2002 भूमिका
32. सुरेश गौतम व वीणा गौतम : हिन्दी पत्रकारिता : कल आज और कल, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 2001, पृ. 343
33. विमलेश कान्ति वर्मा व डॉ. मारलती (सं.) भाषा, साहित्य और संस्कृति, ओरियण्ट लांगमैन प्रा.लि. हैदराबाद, 2007 पृ. 403
34. सुधीश पर्वीरी (सं.) 'वाक्' (नए विमर्श त्रैमासिक) अप्रैल-जून 2007, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2007, पृ. 171
35. सीमा ओझा (सं.) : 'आजकल' (मासिक) सितम्बर 2011, प्रकाशन विभाग, सूचना भवन, नई दिल्ली, 2011 पृ. 45
36. जीवन सिंह (आलेख) : 'वागर्थ' (मासिक पत्रिका) अप्रैल 2008, भारतीय भाषा परिषद् कोलकता, 2008, पृ. 114
37. प्रो. कृष्णदत्त पालीवाल (आलेख) : 'संकल्प' (त्रैमासिक), जनवरी-मार्च 2012, हिन्दी अकादमी हैदराबाद, 2010, पृ. 31
38. सुरेश उनियाल (लेख) : 'दि संडे पोस्ट' (साहित्य विशेषांक, 2009), बी.एफ.एल. इन्फोटेक लि. नोएडा (उ.प्र.), 2009, पृ. 126
39. डॉ. जितेन्द्र वत्स डॉ. किरण बाला: जनसंचार माध्यम और पत्रिका सर्वांग, अमर प्रकाशन, गाजियाबाद (उ.प्र.), 2009 पृ. 20
40. रमेश खत्री (कविता): 'कथादेश' (मीडिया विशेषांक), अगस्त 2009, पृ. 158
41. गोविन्द माधुर (कविता) 'शुक्रवार' साहित्य वार्षिकी 2012), पल्स न्यूज नेटवर्क प्रा.लि. नई दिल्ली, 2012 पृ. 103
42. हरिनाथयण (सं.) 'कथादेश' (मीडिया विशेषांक) अगस्त 2009, सहयात्रा प्रकाशन प्रा.लि., 2009, पृ. 107
43. रवीन्द्र कालिया (सं.) : इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की चुनौतियाँ, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2011, पृ. 194
44. डॉ. कृष्ण कुमार रतू : मीडिया देशान्तर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2010 पृ. 150

Velocity profiles of pulsatile unsteady flow of blood through stenosed artery filled with porous medium under the influence of magnetic field and slip velocity

Dr. Mahender Singh*

Dr. Seema Bansal**

Sanjay Kumar***

Abstract: The present paper considers the pulsatile flow of blood under the effect of transverse static magnetic field and slip velocity. The pulsatile flow is analyzed by considering a periodic pressure gradient (a function of time). Also, viscosity of blood is of hematocrit dependent and governed by Einstein equation. The Navier-stokes equation is made dimensionless using non-dimensional parameters and is solved by Frobenius method. The effect of Hartmann number (H), Hematocrit concentration(Hm), Womersley number(α) and Darcy number(Da) on the velocity profiles have been calculated and shown by graphs.

Keywords: Newtonian fluid, Stenosed artery, Slip velocity, Magnetic field, Porous medium.

Introduction

Many researchers Kolin(1936), McDonald(1960), Fung(1984), Mazumdar(1992), Halder and Ghosh(1994), Layek and Mukhopadhyay (2008), Sharma and Bansal(2012, 2014) considered the mathematical model of blood flow through stenosed artery subject to various physiological conditions. Steinman et al. (2000) characterized the hemodynamics of moderately and severely stenosed carotid bifurcation. They concluded that the presence of a severe stenosis serves to increase the size and extent of the recirculation zones and introduces turbulence in the post-stenotic region. J. Anand Rao *et al.* (2004) obtained the numerical solution of unsteady blood flow through an indented tube with atherosclerosis and observed that volumetric flow rate decrease with increase in maximum hematocrit, increase in maximum hematocrit increases the pressure gradient in stenotic region and also investigated that increase in hematocrit and maximum height of the stenosis decrease the shear stress in the stenotic region. Sanyalet *et al.* (2007) developed a mathematical model for studying the characteristic of blood flow in a rigid inclined circular tube with periodic body acceleration under the influence of a uniform magnetic field and concludes that velocity increases with acceleration due to gravity, inclination and womersley parameter and decreases with magnetic number. Biswas *et al.* (2010) consider a two-layered blood flow through stenosed artery under the action of body acceleration and slip at wall. They noticed that there is a highly influence of wall slip and body acceleration on velocity, flow rate and effective viscosity. They found that with the increase of wall slip and body acceleration,

* Associate Professor, Department of Mathematics, Shri Jagdishprasad Jhabarmal Tibrewala University, Jhunjhunu, Rajasthan

** Assistant Professor, Deptt. of Mathematics, Vaish College, Bhiwani, Haryana

*** Research Scholar, Department of Mathematics, Shri Jagdishprasad Jhabarmal Tibrewala University, Jhunjhunu, Rajasthan

there is an increase in velocity and flow rate, but effective viscosity decreases with wall slip. Prakash and Makinde (2011) studied the effect of magnetic field on the blood flow through a stenosed artery with radiative heat transfer. The blood behaves like a Newtonian fluid and viscosity is taken in the form of hematocrit dependent. Analytic solution for the blood velocity, temperature, volumetric flow rate, wall shear stress and wall heat transfer rate are found. They concluded that arterial wall heat transfer rate and skin friction increases with the increases of stenosis height and radiation absorption. Also, they observed that blood temperature is maximum along the arterial centre line and minimum at wall. Sharma et al. (2012) considered the blood flow in a stenosed artery under the influence of transverse magnetic field through porous medium and they showed that wall shear stress changes its sign twice in the region of stenosis nearby entry and exit of the stenosis. The occurrence of these variation suggests that there will be two region of circulation for the value of Hartmann number $H > 2$. Sharma et al. (2014) dealt with the pulsatile blood flow through an inclined catheterized stenosed artery with slip on the wall in the presence of an external magnetic field by considering the incompressible Newtonian fluid model. Analytic expression for the velocity, volumetric flow rate, wall shear stress, wall shear stress gradient and impedance have been derived and numerical results are presented graphically for different values of physical parameters. Mwanthi et al. (2017) dealt the unsteady blood flow through an inclined circular tube under MHD effects. Here, blood is taken as incompressible, viscous and Newtonian with varying pressure gradient with time. The problem was solved by approximation method. They found that with the increase of Hartmann number leads to decrease the axial velocity of the blood.

In the present paper an attempt has been made to deal with the blood flow through an artery filled with porous medium subject to a slip velocity at arterial wall and effects of various hemodynamic parameters on velocity profiles.

Formulation of Problem

The present study is to dealt with the flow of blood in narrow stenosed artery that is suffer with some deposition in the flow region which is taken as porous medium. A static magnetic field is present surrounding the patient and slip velocity at the arterial wall is also taken. The viscosity of blood is dependent on Hematocrit concentration and is given by Einstein equation

$$\mu = \mu_0 [1 + \beta h] \tag{1}$$

where,

μ_0 → coefficient of viscosity of plasma

β → constant

And

$h(r)$ → hematocrit concentration

which vary along the radial direction govern by the equation

$$h(r) = H_m \left[1 - \left(\frac{r}{R_0} \right)^n \right] \tag{2}$$

Here, H_m → maximum hematocrit concentration at the axis of tube.

Geometry of the Model

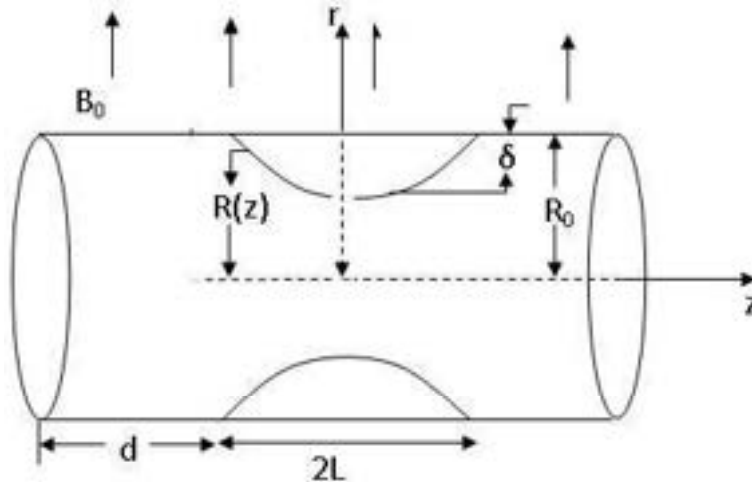


Figure 1

The blood vessel geometry is determined by the radius R_0 of the inlet and outlet unstricted segment, whereas the radius of the smooth axisymmetric stenosed segment is given by

$$R(z) = \begin{cases} R_0 - \frac{\delta}{2} \left(1 + \cos \frac{\pi z}{L}\right) & -L \leq z < L \\ R_0 & \text{otherwise} \end{cases} \quad (3)$$

where

$2L \rightarrow$ length of stenosis

$\delta \rightarrow$ maximum thickness of the stenosis

Here, we consider unsteady, incompressible, viscous, axially symmetric and one dimensional fully developed blood flow through a circular tube in the presence of static magnetic field and slip velocity u_s at arterial wall. The governing equations are derived using cylindrical coordinate system (r, θ, z) , the axis of the tube is along with the z -axis and $z=0$ (origin) corresponds to the peak point of the stenosis. The diameter of the tube is assumed to be greater than 1mm so Fahraeus –Lindqvist effect is not significant. The tube is filled with blood of electrical conductivity σ , density ρ and the permeability of porous material is constant K .

The momentum equation of blood as incompressible and Newtonian fluid through a porous medium with slip condition at arterial wall is given by

$$\rho \frac{\partial u}{\partial T} = -\frac{\partial p}{\partial z} + \frac{1}{r} \frac{\partial}{\partial r} \left(\mu r \frac{\partial u}{\partial r} \right) - \sigma B_0^2 u - \frac{\mu}{K} u \quad (4)$$

The boundary conditions are

$$\begin{aligned} \frac{du}{dr} &= 0 & r &= 0 \\ u &= u_s & r &= R(z) \end{aligned} \quad (5)$$

Where, $-\sigma B_0^2 u$ is the magnetohydrodynamic force which arises due to the interaction of electrical conductivity of blood and the applied magnetic field.

Taking length and time scaling parameter, the governing equation reduced to

$$\frac{\rho R_0^2}{t_0 \mu_0} \frac{\partial u}{\partial t} = \frac{-R_0^2}{\mu_0} \frac{\partial p}{\partial z} + \frac{1}{y} \frac{\partial}{\partial y} \left[(a - ky^n) y \frac{\partial u}{\partial y} \right] - \frac{R_0^2 \sigma B_0^2 u}{\mu_0} - \frac{(a - ky^n)}{Da^2} u \quad (6)$$

Where, $y = \frac{r}{R_0}$, $t = \frac{T}{t_0}$, $\beta H_m = k$, $a = 1 + k$, $t = \frac{T}{t_0}$

The blood is acted upon by pressure gradient $\frac{\partial p}{\partial z}$ which varies with time is given by

$$-\frac{R_0^2}{\mu_0} \frac{\partial p}{\partial z} = c e^{i\omega t} \quad (7)$$

where,

$\omega = 2\pi f$, $f \rightarrow$ heart pulse frequency and c is the amplitude of the pulsatile flow.

Also, Taking $u(y, t) = U(y) e^{i\omega t}$ (8)

And introducing the following non-dimensional parameters

$$\frac{R_0^2 \sigma B_0^2}{\mu_0} = H^2, \quad \frac{K}{R_0^2} = Da^2, \quad \alpha^2 = \frac{\rho R_0^2 \omega}{t_0 \mu_0} \quad (9)$$

Where, H the Hartmann number, Da the Darcy number and α the Womersley number, the governing equation can be written as

$$\frac{1}{y} \frac{d}{dy} \left[(a - ky^n) y \frac{dU}{dy} \right] - (\alpha^2 i + H^2 + \frac{a}{Da^2}) U + \frac{ky^n}{Da^2} U = -c \quad (10)$$

The corresponding boundary conditions (10) and (11) are transformed to

$$\begin{aligned} \frac{dU}{dy} &= 0 & y &= 0 \\ U &= u_s & y &= \frac{R(z)}{R_0} \end{aligned} \quad (11)$$

Method of Solution

Calculation for Velocity Profiles

We have used Frobenius method for the solution of differential equation (10). For implementing, it is required that U is bounded at $y = 0$. The only admissible solution satisfying the boundary condition (11) is

$$U = D \sum_{m=0}^{\infty} A_m y^m - \frac{c}{4a} \sum_{m=0}^{\infty} \lambda_m y^{m+2} \quad (12)$$

Here, the second term of the right hand side is the solution corresponding to non-homogenous part of the equation (10) and A_m and λ_m are the series constant, D is an arbitrary constant to be determined by the boundary condition (11).

Firstly, we find the solution of homogenous part of (10) with

$$U = D \sum_{m=0}^{\infty} A_m y^m \quad (13)$$

$$\frac{dU}{dy} = D \sum_{m=1}^{\infty} A_m m y^{m-1} \quad (14)$$

$$\frac{d^2U}{dy^2} = D \sum_{m=2}^{\infty} A_m m(m+1)y^{m-2} \tag{15}$$

Combining these with the homogenous part of the equation (10) we get

$$\begin{aligned} & \left[ay - ky^{n+1} \right] \sum_{m=2}^{\infty} A_m m(m+1)y^{m-2} + \left[(a - ky^n - kny^n) \right] \sum_{m=1}^{\infty} A_m my^{m-1} \\ & - \left[(\alpha^2 i + H^2 + \frac{a}{Da^2})y + \frac{ky^{n+1}}{Da^2} \right] \sum_{m=0}^{\infty} A_m y^m = 0 \end{aligned} \tag{16}$$

Comparing the coefficient of y^m , we have

$$A_{m+1} = \frac{(\alpha^2 i + H^2 + \frac{a}{Da^2})A_{m-1} + k(m+1)(m-n+1)A_{m-n+1} - \frac{k}{Da^2} A_{m-n-1}}{a(m+1)^2} \tag{17}$$

For the solution of non-homogenous part, let

$$U = -\frac{c}{4a} \sum_{m=0}^{\infty} \lambda_m y^{m+2} \tag{18}$$

$$\frac{dU}{dy} = -\frac{c}{4a} \sum_{m=1}^{\infty} \lambda_m (m+2)y^{m+1} \tag{19}$$

$$\frac{d^2U}{dy^2} = -\frac{c}{4a} \sum_{m=2}^{\infty} \lambda_m (m+2)(m+1)y^m \tag{20}$$

The equation (10) gives

$$\begin{aligned} & \left[(a - ky^n) y \right] \sum_{m=2}^{\infty} \lambda_m (m+2)(m+1)y^m + \left[a - ky^n - kny^n \right] \sum_{m=1}^{\infty} \lambda_m (m+2)my^{m+1} \\ & - (\alpha^2 i + H^2 + \frac{a}{Da^2})y \sum_{m=0}^{\infty} \lambda_m y^{m+2} + \frac{ky^{n+1}}{Da^2} \sum_{m=2}^{\infty} \lambda_m y^{m+2} = 4ay \end{aligned}$$

Comparing the coefficient of y^{m+2} , we have

$$\lambda_{m+1} = \frac{(\alpha^2 i + H^2 + \frac{a}{Da^2})\lambda_{m-1} + k(m+3)(m-n+3)\lambda_{m-n+1} - \frac{k}{Da^2} \lambda_{m-n-1}}{a(m+3)^2} \tag{21}$$

with $A_0 = \lambda_0 = 1$ and $A_{-m} = \lambda_{-m} = 0$

The constant D involved in the solution (13) is obtained with the help of boundary

condition (11) i.e. $U = u_s$ at $y = \frac{R(z)}{R_0}$

We have, $u_s = D \sum_{m=0}^{\infty} A_m \left(\frac{R}{R_0} \right)^m - \frac{c}{4a} \sum_{m=0}^{\infty} \lambda_m \left(\frac{R}{R_0} \right)^{m+2}$

and D is given by

$$D = \frac{\frac{c}{4a} \sum_{m=0}^{\infty} \lambda_m \left(\frac{R(z)}{R_0}\right)^{m+2} + u_s}{\sum_{m=0}^{\infty} A_m \left(\frac{R(z)}{R_0}\right)^m} \quad (22)$$

then,

$$U(y) = \frac{\left(\frac{c}{4a} \sum_{m=0}^{\infty} \lambda_m \left(\frac{R(z)}{R_0}\right)^{m+2} + u_s\right) \sum_{m=0}^{\infty} A_m y^m - \frac{c}{4a} \sum_{m=0}^{\infty} A_m \left(\frac{R(z)}{R_0}\right)^m \sum_{m=0}^{\infty} \lambda_m y^{m+2}}{\sum_{m=0}^{\infty} A_m \left(\frac{R(z)}{R_0}\right)^m} \quad (23)$$

and $u(y, t) = U(y) e^{i\omega t}$

$$u(y, t) = \left[\frac{\left(\frac{c}{4a} \sum_{m=0}^{\infty} \lambda_m \left(\frac{R(z)}{R_0}\right)^{m+2} + u_s\right) \sum_{m=0}^{\infty} A_m y^m - \frac{c}{4a} \sum_{m=0}^{\infty} A_m \left(\frac{R(z)}{R_0}\right)^m \sum_{m=0}^{\infty} \lambda_m y^{m+2}}{\sum_{m=0}^{\infty} A_m \left(\frac{R(z)}{R_0}\right)^m} \right] e^{i\omega t} \quad (24)$$

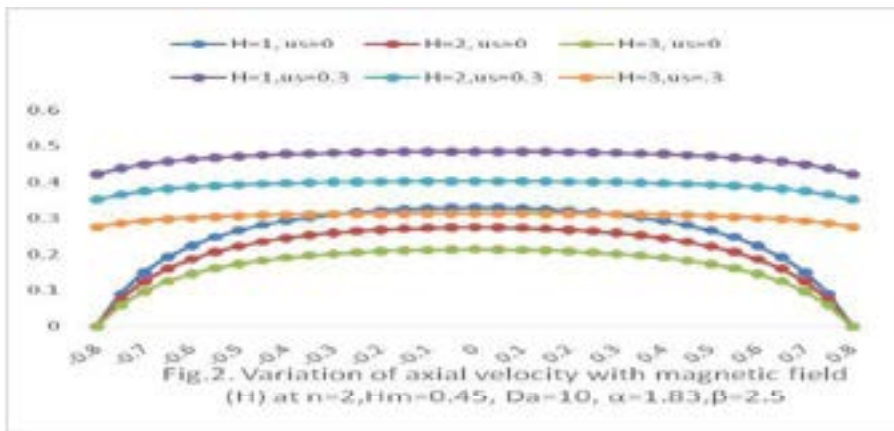
In particular, in the absence of the hematocrit, the average velocity u_0 is given by

$$u_0 = \frac{c_0 e^{i\omega t}}{\left(\alpha^2 i + \frac{1}{Da^2}\right)} \left[1 - \frac{I_0\left(\sqrt{\alpha^2 i + \frac{1}{Da^2}} y\right)}{I_0\left(\sqrt{\alpha^2 i + \frac{1}{Da^2}}\right)} \right] \quad (25)$$

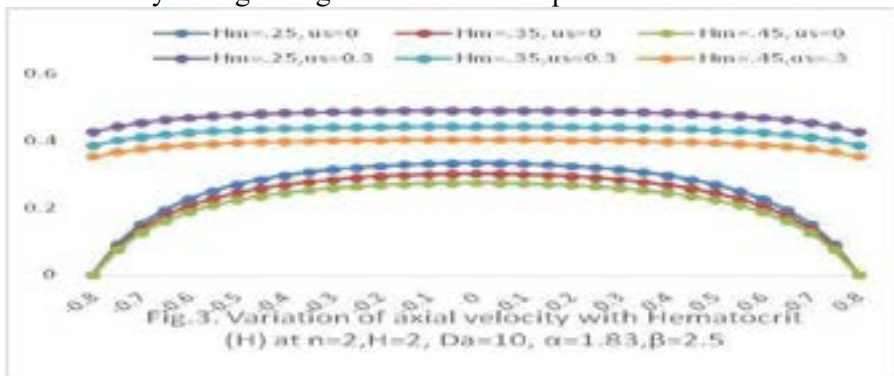
The dimensionless form of $u(y,t)$ with respect to u_0 is now obtained from equations (24) and (25) and given by

$$\frac{u}{u_0} = \left(\frac{\alpha^2 i + \frac{1}{Da^2}}{c_0} \right) \frac{\left(\frac{c}{4a} \sum_{m=0}^{\infty} \lambda_m \left(\frac{R(z)}{R_0}\right)^{m+2} + u_s\right) \sum_{m=0}^{\infty} A_m y^m - \frac{c}{4a} \sum_{m=0}^{\infty} A_m \left(\frac{R}{R_0}\right)^m \sum_{m=0}^{\infty} \lambda_m y^{m+2}}{\sum_{m=0}^{\infty} A_m \left(\frac{R}{R_0}\right)^m \left[1 - \frac{I_0\left(\sqrt{\alpha^2 i + \frac{1}{Da^2}} y\right)}{I_0\left(\sqrt{\alpha^2 i + \frac{1}{Da^2}}\right)} \right]}$$

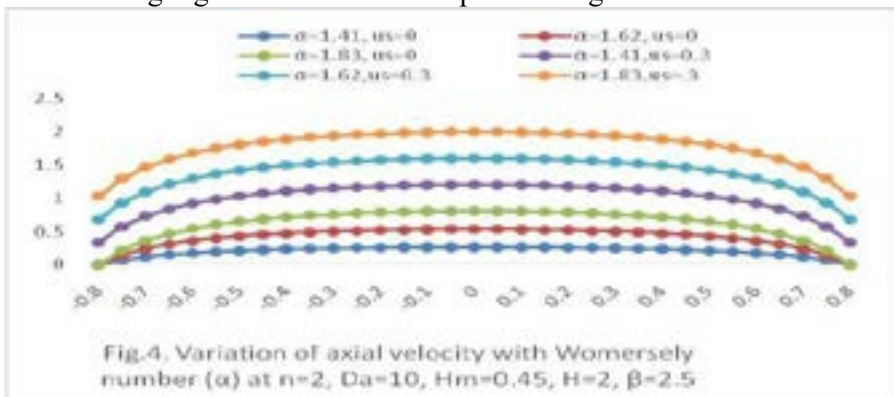
Results and Discussion: The expression of axial velocity is found and the obtained Data are plotted for different values of Hartmann number (H) , Darcy number (Da), Wormersley number (α) and Hematocrit concentration(Hm). The profiles of axial velocity versus radial co-ordinate for various physical parameters are shown in Figures [2-5].



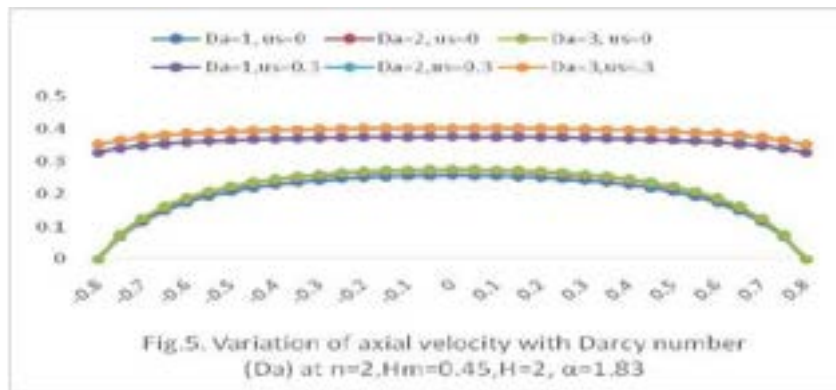
In figure 2, it is observed that increase of Hartmann number (H) fluid speed decreases in both the cases, with slip or without slip at arterial wall, keeping all other parameters constant. The Slip velocity fairly increases the flow speed as compare to the no-slip at the wall of artery. It is good agreements with the previous research.



In figure 3, it is observed that the axial flow velocity slowed down with the increase of Hematocrit concentration for both cases of with slip or without slip at the arterial wall, it is possible that the velocity profile in centerline region for less Hematocrit concentration of blood having higher curvature as compared to higher Hematocrit concentration of blood.



In figure 4, it is observed that with the increase of Womersley number, there is an increase in the flow speed for both the cases that is flow speed is increased with increasing of oscillations in the flow.



In figure 5, it is observed that with the increase of porosity of the medium in the tube, there is an increase in the flow speed for both the cases, but there is amplification in the fluid speed for the slip velocity at the arterial wall.

Conclusions

1. The fluid velocity reduces its value with the increase of magnetic field and Hematocrit concentration.
2. The fluid velocity increases its value with the increase of Womersely number and Darcy number

References

1. Biswas, D. and Chakravarty, U. S., 2010, "Two layered pulsatile blood flow in a stenosed artery with body acceleration and slip at wall", *Int. J. Applications and Applied Mathematics*, **5(2)**, 303-320.
2. Fung, Y.C., 1984, *Biodynamics circulation*, Springer-Verlag, New York. 29
3. Halder, K and Ghosh, S.N., 1994, Effects of a magnetic field on blood flow through an intended tube in the presence of erythrocytes. *Ind. Jr. Pure and Appl. Math.*, **25** , 3 , 345-352.
4. Kolin, A., 1936, An Electromagnetic flowmeter: Principle of method and its application to blood flow acceleration , *Exp Biol Med.* **35** (1),53-56.
5. Layek, G.C and Mukhopadhyay. 2008, Numerical modeling of a stenosed arter using mathematical model of Variable shape, *Int. J. of Applications and Applied Mathematics.* **3**, 308- 328.
6. Mazumdar H.P, Ganguly U.N, Ghorai.S and Dalal D.C., 1996, On the distribution of axial velocity and pressure gradient in a pulsatile flow of blood through a constricted artery. *Ind. J. of pure and Appl.Maths.* **27**,1137-1150.
7. McDonald D.A., 1960, 1974, *Blood Flow in Arteries*. Arnold, London.
8. Mazumdar J.N., 1992, *Bio-fluid Mechanics*. Word Scientific Press.
9. Mwanthi, V., Mwenda, E and Gachoka, k.k., 2017, Velocity profiles of unsteady blood flow through an inclined circular tube with magnetic field. *J. Advances in mathematics and Computer Sciences.* **24(6)**. 1-10.
10. Prakash, J., Makinde, O. D. and Ogulu, A., 2004, Magnetic effect on oscillary blood flow in a constricted tube. *Botswana Journal of Technology*, April, 45-50.
11. Prakash, J. and Makinde, O. D., 2011, "Radiative heat transfer to blood flow through a stenotic artery in the presence of magnetic field", *Lat. Am. Appl. Res.*, **41**, 1-9.
12. Sanyal, D.C and Maiti, A.K., 1998, On Pulsatile flow of blood through a Stenosed Artery. *Ind .J.Maths.* **40(2)**, 199-213.

13. Sharma, M.K., Singh, K. and Bansal, S., 2012, Pulsatile unsteady flow of blood through porous medium in a stenotic artery under the influence of transverse magnetic field. *J.Korea-Australia Rheology*. **24(3)**, 181-189.
14. Sharma, M.K., Singh, K. and Bansal, S., 2014, Pulsatile MHD flow in an inclined catheterized stenosed artery with slip on the wall. *J. Biomedical Science and Engineering*. **7**, 194-207.
15. Misra, J. C. and Shit, G. C., 2007, "Role of slip velocity in blood flow through stenosed arteries: A non-Newtonian model", *J. Mechanics in Medicine and Biology*, **7**, 337-353.
16. Venkateswarlu, K. and Rao, J Anand., 2004, "Numerical solution of unsteady blood flow through an intented tube with atherosclerosis", *Ind. J. Biochemistry & Biophysics.*, **41**, 241-245.

माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में अवसादपूर्ण जीवन का चित्रण

डॉ० अनिल कुमार
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
वैश्य महाविद्यालय भिवानी।

पं० माखनलाल चतुर्वेदी जी ने अपने युग की उलझी संवेदनाओं, परिवर्तित जीवन-शैली को जिसमें आक्रोश, कुण्ठा, पलायन, विद्रोह, निराशा के भाव तीव्र गति से बढ़ रहे थे, को अपने काव्य में अभिव्यक्त किया है। इनके काव्य में सामाजिक-परिवर्तन का संघर्षपूर्ण यथार्थ चित्रण देखने को मिलता है। यूँ तो सामाजिक परिवर्तन के सभी पक्ष माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में अभिव्यक्त हुए हैं यथा वैयक्तिक अभावों की स्वीकृति, ज्वलन्त यथार्थ का चित्रण, मानव की प्रतिष्ठा, सामाजिक निषेधों को तोड़ने का प्रयास, ईश्वरीय शक्ति में आस्था आदि किन्तु वैयक्तिक अभावों को प्रधान रूप में अभिव्यक्त किया गया है, माखनलाल चतुर्वेदी जी के काव्य में वैयक्तिक अभावों के अनेक सूक्ष्म चित्र मिलते हैं। उन्होंने व्यक्तिगत जीवन में यथार्थ को अपने काव्य में स्पष्ट अभिव्यक्ति प्रदान की है। 'अपना आप हिसाब लगाया' कविता के माध्यम से कवि ने जीवनकाल की स्थिति को व्यंजित किया है—

अपना आप हिसाब लगाया पाया महा दीन से दीन

डेसिमल पर दस शून्य जमाकर लिक्खे जहाँ तीन पर तीन !

इतना भी हूँ क्या? मेरा मन हो पाया निःशंक नहीं

पर मेरे इस महाद्वीप का इससे छोटा अंक नहीं !'

एक अन्य उदाहरण दृष्टव्य है —

छोड़ो भाई, जीवन मेरा रूठ न जाये छोड़ो तो,

तोड़ो, बाँधे नहीं, प्रतिष्ठा के ये बन्धन तोड़ो तो,

विस्मृत कर दो सखे, बावली आशा के घट पफोड़ो तो,

गौरवमयी उपेक्षा के सुर-साधे बंधन जोड़ो तो ।'

संसारिक निष्ठुरता से कवि विवश हो उठता है और यह विवशता उनके गीतों के माध्यम से मुखरित हो उठती है—

विवश मैं, तो वीणा का तार ।
न मुझमें रंग, न मुझमें रूप, न दीखे मेरा कहीं शरीर ।
किन्तु मेरे प्राणों पर हाय, टूटते हो तुम आलमगीर ।

मधुरिये ! तू कितनी लाचार,
अभागा मैं वीणा का तार ।
विवश मैं तो वीणा का तार ।

माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में वैयक्तिक दुःखानुभूति अधिक मात्रा में मिलती है, उनके हृदय की पीड़ा ही उनकी कविता बन गई है—

आज मैंने
वीन खोई
वीन—वादन का
अमर स्वर—भार
आज मैं तो
खो चुका
साँसों—उसाँसों,
और अपना लाड़ला
उर—ज्वार !
आज जब तुम
हो नहीं, इस—
पफूस कुटिया में
कि कसक समेत ।

माखनलाल चतुर्वेदी जी के काव्य में वैयक्तिक दुःखात्मक अनुभूति प्रधान गीत अनूठी व्यापकता के साथ अभिव्यक्त हुए हैं। ऐसा लगता है मानो उनके हृदय की पीड़ा ही छंदों में साकार हो उठी है

भाई, छोड़ों नहीं, मुझे खुलकर रोने दो
यह पत्थर का हृदय आँसुओं में धेने दो
रहो प्रेम से तुम्हीं मौज से मंजु महल में,
मुझे दुखों की इसी झोंपड़ी में सोने दो ।

कुछ भी मेरा हृदय न तुमसे कह पायेगा,
किन्तु पफटेगात्र पफटे बिना क्यों रह पायेगा,
सिराक-सिराक सानंद आज होगी श्री-पूजा,
बहे कुटिल यह सुख दुःख क्यों बह पायेगा ।
बारूँ सौ-सौ श्वाँस एक प्यारी उसाँस पर,
हारूँ, अपने प्राण, दैव तेरे विलास पर,
चलो, राखे तुम चलो तुम्हारा कार्य चलाओ,
लगे दुखों की झड़ी आज अपने निराश पर !⁵

पत्नी की मृत्यु पर उनका हृदय चित्कार उठा -

हरि खोया है? नहीं, हृदय का घन खोया है,
और, न जाने कही दुरात्मा मन खोया है
किन्तु आज तक नहीं हाय इस तन को खोया,
अरे बचा क्या शेष, पूर्ण जीवन खोया है ।
पूजा के ये पुष्प-गिरे जाते हैं नीचे,
यह आँसू का झोत आज किराके पद सींचे,
दिखलाती, क्षण मात्रा न आती, प्यारी प्रतिमा
यह दुखिया किस भोंति उसे भूतल पर खीचें !⁶

माखनलाल चतुर्वेदी की वैयक्तिकता निराशा, वेदना, विपाद,
अवसाद, स्मृति आदि सभी मानवीय संवेदनाओं के वैयक्तिक धरातल पर मुखरित हुई हैं ।
जिसमें कवि से गाकर अपने हृदय की पीड़ा को अभिव्यक्ति देता है-

बोल तो किराके लिए मैं

गीत लिक्खूँ, बोल बोलूँ

प्राणों की मसोसा, गीतों की कड़ियाँ बन-बन रह जाती है,

आँखों की बूँदों बूँदों पर, चढ़-चढ़ उमड़-घुमड़ आती है !

रे निन्दुर किस के लिए मैं आँसुओं में प्यार घोळूँ?

बोल तो किराके लिए मैं गीत लिक्खूँ, बोल बोलूँ?⁷

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि पं० माखनलाल चतुर्वेदी ने अपने व्यक्तिगत ज्ञान की तीव्र अनुभूति को प्रखर अभिव्यक्ति प्रदान की है। इस प्रकार की प्रत्यक्ष आत्माभिव्यक्ति, जिसके प्रति हिन्दी साहित्य में एक प्रकार का संकोच ही रहा है, आधुनिक कालदास के इस महर्षि ने इस संकोच को त्यागकर साहस के साथ स्पष्ट आत्माभिव्यक्ति के लिए मार्ग प्रशस्त किया है।

संदर्भ संकेत

1. सं० श्रीकान्त जोषी, माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली, भाग-6 पृष्ठ-24
2. वही पृष्ठ-108
3. वही पृष्ठ-129
4. वही पृष्ठ-41
5. वही पृष्ठ-41
6. वही पृष्ठ-128
7. वही पृष्ठ-129

Allu



A Review on Self-Management - The Power of The People

Dr. Promila Dahiya

(Director-cum Astt. Professor, SFS Vaish College, Bhiwani)

Abstract

Today, the word management has become very common in general language. Everybody is using frequently this as their pet word. Each one of us want everything managed in every field like education, health, facility, finance, human resource, hotel, tourism, production, sales, transportation, distribution, marketing etc. and many more. But here, I want to focus on the skill of self-management, something that I believe is the fundamental requirement for empowering the both, people and organizational success in the knowledge economy. There is ambiguity about the term, and in most discussions, *self-management* refers to a combination of behaviors that focus on how people manage themselves in their work and their life. Some authors define self-management through these six traits: self-control, transparency, adaptability, achievement, initiative, and optimism. Building self-management skills takes time and is a multi-year process. It requires time for people to find what works for them and to be given more autonomy and opportunity as they grow professionally. Our life is about goals. Rare person lives without an ultimate aim or a dream bird fluttering somewhere over a horizon. But reaching this goal implies performing thousands of petty tasks, everyday chores, meetings and actions. Planning these activities effectively is what self management is about. To survive in the world we have to manage our situation and to meet our objectives of life we have to plan, organize, direct, coordinate and control our self first and only then we can achieve objectives of our job or our business or even the organizational objectives. The present article throws a light on the aspect of self management, which is the need of today's highly competitive and stressed and so called time lacking environment.



Introduction

Management is not just for managers, just as leadership is not just for leaders. We all manage, and we all lead; these are not actions reserved for only those people who happen to hold these “positions” in a company. I personally think of management and leadership as *callings*, and we all get these callings to manage and lead at different times, and to different degrees. Self management sounds like being your own boss, but it doesn’t mean setting up your own business. In fact it means taking responsibility for your own actions and doing things as well as you can. It shows you are able to organise yourself and offer your own ideas to any project. It’s about being the boss of YOU, not the boss of a team or company!

Twelve Rules for Self-Management

1. Live by your values, whatever they are. You confuse people when you don’t, because they can’t predict how you’ll behave.
2. Speak up! No one can “hear” what you’re thinking without you be willing to stand up for it. Mind-reading is something most people can’t do.
3. Honor your own good word, and keep the promises you make. If not, people eventually stop believing most of what you say, and your words will no longer work for you.
4. When you ask for more responsibility, expect to be held fully accountable. This is what seizing ownership of something is all about; it’s usually an all or nothing kind of thing, and so you’ve got to treat it that way.
5. Don’t expect people to trust you if you aren’t willing to be trustworthy for them first and foremost. Trust is an outcome of fulfilled expectations.
6. Be more productive by creating good habits and rejecting bad ones. Good habits corral your energies into a momentum-building rhythm for you; bad habits sap your energies and drain you.
7. Have a good work ethic, for it seems to be getting rare today. Curious, for those “old-fashioned” values like dependability, timeliness, professionalism and diligence are prized



more than ever before. Be action-oriented. Seek to make things work. Be willing to do what it takes.

8. Be interesting. Read voraciously, and listen to learn, then teach and share everything you know. No one owes you their attention; you have to earn it and keep attracting it.
9. Be nice. Be courteous, polite and respectful. Be considerate. Manners still count for an awful lot in life, and thank goodness they do.
10. Be self-disciplined. That's what adults are supposed to "grow up" to be.
11. Don't be a victim or a martyr. You always have a choice, so don't shy from it: Choose and choose without regret. Look forward and be enthusiastic.
12. Keep healthy and take care of yourself. Exercise your mind, body and spirit so you can be someone people count on, and so you can live expansively and with abundance.

Three Key Self Management Skills

Self management is about making a choice to do more than you need to, and it is a great skill to build for life and work. There are the three most important self management skills on which one should focus which are as under:-

- Initiative
- Organisation
- Accountability

Initiative means one is being able to work without always being told to do. One can show initiative by thinking and taking action as and when needed. It means using your head and having the drive to achieve. Initiative requires self belief and motivation which is needed to do the things without being reminded or asked.

Why is initiative important?



Employers often say they want staff who can respond to and deal well with problems. Highlighting to an employer that you can think for yourself or “show initiative” will be useful in many job applications and interviews. It’s a great life skill, too. Taking the initiative is what makes you phone a friend to clear the air after an argument you both regret, or decide you are going to take up volunteering, or do further education.

Organisation If you are organized in life and work it means you can plan your time and the things you have to do. You know very well that what the priority is. What to do and how to do.

Why are organisation skills important?

From managing your time to prioritizing tasks, and even having a tidy desk, being organised will help you improve your employability and also your life. An organised person will know what they need to do and when, where their pen is, and if it’s their turn to bring biscuits into the office. They make lists, have a calendar or diary, and are able to manage themselves in all areas of life and work.

As well as ensuring you don’t forget your lunch or turn up late to an important meeting, organisation will make you look more professional and help you get your job done more effectively. Employers really value strong organisational skills, as they know you will be efficient and do the work on time. Being organised also shows how much you care about your job. Arriving every day, being on time, and remembering everything you need is really important.

Accountability If you say to yourself that you are accountable, it means that you take ownership of the responsibilities that come your way. You take pride in your work and want to do it well to get the best results possible. You can be justly proud of the task’s success, and you accept responsibility if it goes wrong.

If a task you are responsible for doesn’t go well, you will make it your personal mission to look for ways to improve next time or find a better way of completing the task using your problem solving skills. This is still accountability. It’s not about the task being successful or not – it’s about your attitude to the task.



Why is accountability important?

Everyone loves to see you have a positive attitude and can be relied on to put the effort in when something needs to be done. If you're in a sports team, other people on your team know they can rely on you to give it your all. If you're working on a group project, going the extra mile to contribute – and doing it because you care, not just because you have to – means the project is more likely to go well and people will want to work with you in future.

At work, employers want to know that you will take the work they give you seriously and treat it as a chance to show you can be trusted with more important work in the future. Taking responsibility for yourself is a great way to get invited to work on really exciting projects as you build experience over time.

Building self management skills at work will help you:

- Turn up on time to important meetings and bring anything you might need (that counts for job interviews too!)
- Take pride in your work and get recognized as someone who really tries and cares
- Do your tasks better because you prepare in advance when you need to
- Seek out opportunities for work experience, training and more.

Good self management skills will give you more chances to move forward in your career, too. People can see you as someone who can handle responsibility and puts extra care into what they do, going above and beyond what's required. An attitude like this can help you get more opportunities, responsibility, training and promotions over time.

How to build and improve self management skills

Self management is about preparing for the future, owning your present and taking care in what you do – as well as learning how you could do better next time. Self management is a really important way to grow as a person, not just in the workplace. Babies are not responsible for anything they do. As we grow, we learn that it's important to take responsibility for yourself because there won't always be someone there to hold your hand with every step you take.



Here are some ways to build the three key elements of self management (initiative, organisation and accountability).

Ways to boost your initiative

- **Starts a project** – Having an idea and making the effort to follow it through shows great initiative.
- **Do a course in your spare time** – Choosing to develop your skills and knowledge shows employers how motivated and willing you are.
- **Volunteering** – Giving your time to a good cause makes you stand out and can help you to develop a range of skills. As an example, you could become a Youth Ambassador with Youth Employment UK.
- **Complete our Young Professional Training!** If you haven't done this yet it's totally free, and doing the training shows you are already taking the initiative to build your life skills.

Ways to develop your organization

- **Set yourself deadlines for projects** – Plan how you will achieve your goal. When do certain tasks need to be done and in what order?
- **Use a planner** – Use an online or paper tool that will help you manage your diary, tasks and important information.
- **Create a routine** – Set a morning routine to make sure you are ready for the day ahead.

Ways to develop accountability

- **Own the task you're given** – When you are given a task by anyone (e.g. a teacher, boss or parent/career) doesn't think of it as a task someone gave you. Say to yourself : “this is my task. The passion I put into this task reflects on me as a person, and I am ready to take pride in what I do.”



- **Go the extra mile to do things as well as you can** – If you have been assigned a task or activity and it is not going well, think about what extra steps you could take to make it better. Is there someone you could talk to? An extra action you could take? A new way you could look at the problem?

Contribution of Management in developing the Self Management Skills

Management is very important for every person to achieve success in his career and overall life. It helps deliver a better performance and achieve goals in the stipulated time period, making one successful.

Have you ever thought why a particular businessman makes more profit than others? And why the others fail to achieve their goals in spite of being in supportive and favorable conditions? The answer lies somewhere in management skills. These skills help deliver a better performance and achieve goals in the stipulated time period, making one successful. You may be a businessman, artist, student, employee, or a trainee! If you are wondering what personal management skills are, then it is nothing but the way one manages his own life. According to Simon Oates, "It refers to the ability of oneself to exercise control over one's attitude, behavior, emotions, and motivation." It is very important to possess these skills, as today people are not judged only by their academic achievements, intelligence, and expertise, but also by how they handle and manage themselves and those around them.

Management Skills

Communication Skills- It tops the list of management skills, be it personal or professional. As someone rightly said that the way we communicate with others and with ourselves ultimately determines the quality of our life. It is almost impossible to develop your management skills without communication skills, because if you cannot listen to your own inner voice, then how you would communicate with others? Hence, it is essential for you to develop good communication skills that can not only help you convey a message, but also help motivate, encourage, and inspire others and your own self.



Self Development skills-Personal management would be incomplete without self development skills. They say no one is perfect, but it does not mean that you should stop striving for perfection. The more you try to perfect yourself, the more you improve. You must always analyze and evaluate your performance, not only regarding your career, but also regarding personal life. You must always remain open for suggestions, and should take criticism in a healthy manner. It actually paves the way for improvement. Plan your own goals and aims, and make sure that you proceed as per the planning to hit the bull's eye.

Others

- Planning skills
- Time management
- Crisis management
- Financial management
- Positive attitude
- Constructive and responsible behavior
- Decision making
- Adaptability
- Goal setting
- Execution skills
- Listening skills
- Problem solving
- Stress management
- Developing self-confidence
- Self discipline
- Emotional stability
- Strategic thinking
- Interpersonal skills
- Observation skills



These were some of the most decisive factors that would help develop self management skills. These skills help lead a stress-free life with confidence and optimism.

Conclusion

Self-management practices have a larger impact on the quality and quantity of individual output and personality. Improving self-management skills is key to increase all productivity dimensions and in particular the quality of the output. This article contributes to a better understanding of the self-management practices on different levels and dimensions. It is a blend of the various skills to improve the creativity, problem solving, self discipline, strategic thinking, interpretation, analyzing skills etc. in the combo.

References

Dana R Reinecke, Ashley Krokowski, (2016) *Bobby Newman Self-management for building independence: Research and future directions* Retrieved from

<https://www.sciencedirect.com/science/article/pii/S0883035516300994>

Glynda A. Hull(May, 1981), Effects of Self-Management Strategies on Journal Writing by College Freshmen, *Research in the Teaching of English*, 15(2), 135-148

Marcus Buckingham, *The One Thing You Need to Know: About Great Managing, Great Leading, and Sustained Individual Success* (New York: Free Press, 2005).

Mashallah Vailikhani & Fahimeh Karimi(January2015),A Study f the effect of Self – Management (Managing themselves) on the Performance (Case Study: City Council Staff Khomeini Shahr), *International Journal of Academic Research in Business and Social Sciences*,5(1),240-248.

Miikka Palvalin, The vander Voordt, TuuliJyjha, (2017), The Impact f workplace and self –management practices on the productivity of knowledge workers, *Journal of Facilities Management*,15(4),423-438



Robert E. Kelley, *How to Be a STAR at Work: 9 Breakthrough Strategies You Need to Succeed* (New York: Times Books, 1998).

SuessJack(2015, September 14).Power to the People: Why Self-Management Is Important. *The Professional development Commons*.

To-Do Lists: the key to efficiency (MindTools.com)

Getting started with "Getting Things Done" (43folders.com)

A Primer on Getting Things Done (7pproductions.com)

Management Information System: Creative Ways of Handling Challenges

Dr. Promila Dahiya

(Director-cum Aast. Professor, SFS Vaish College, Bhiwani)

ABSTRACT

One of the main branches of management is information technology management(responsible for management information system). The MIS is described and analyzed in the light of its capability for decision making. It is the computer system that provides accurate and timely information for decision making and helps the organization in planning, controlling and operating in efficient manner. It involves three primary resources: people, technology and information. Management Information System is different from other information systems because it is used to analyze the operational activities in the organization. It is a key factor to provide and attaining efficient decision making in an organization. It is basically concerned with processing data into information and finally communication to different departments for further decision making. It is mechanism to ensure that information reaches to its managers in original and timed manner. Academically, the term refers to group of information management methods attached with the support of human decision making like decision, expert system and executive information systems. The MIS is dynamic concept that changes with the time and also changes with the change in business management process. It continuously interacts with internal and external business environment which helps in providing corrective actions for the required changes. This paper focuses on understanding the concept of MIS, the need for MIS, the advantages of MIS in the organization, challenges related to MIS and its implications in Business.

KEYWORDS: Management Information System (MIS), Information Technology, Decision making.

INTRODUCTION

After several economic reforms, business firms have not only to compete with the local firms but with global firms also. In such situations the manager has to take quick decision making to grasp the opportunities as and when arises, failing which the competitors can take the advantages of such opportunities. Hence quick decision making is the most important aspect which can be performed through MIS. The quick access and upto date view of business is necessary so that the customers can be responded quickly and business can grow more profitably.

Secondly, in the era of internet and low cost high capable hardware components, the firms have to collect abundance of data from internal and external sources. However only a few firms capitalize this opportunity.

So it is necessary that the firms should uses such resources which assists them in the challenging job of decision making and control. In such a situation MIS is considered as the main components of successful organization.

OBJECTIVES OF THE STUDY

- To study the concept of management information system.
- To study the role of MIS in business.
- To analyze the advantage and challenges of MIS in business.

CONCEPT OF MANAGEMENT INFORMATION SYSTEM

MIS is considered as organized, diverse and automated information system that is concerned with the process of collecting data from various sources and compiling it in various relevant information in order to support the management operations of the organizations. Processing of data takes place in the form of graphs, tables, charts, diagrams, reports in order to generate accurate and relevant information for the management. MIS is a computerized database of

financial information organized and programmed in such a way that it produces regular reports on operations for every level of management in an organization. Its main purpose is to give managers feedback regarding their own performance and the performance of company as a whole. Usually MIS is defined as a systematic and scientific approach to combine all information (internal and external) into integrated information useful for business.

“MIS is a broadly used and applied term for a three resource system required for effective organization management. The resources are people, information and technology, from inside and outside an organization, with top priority given to people. The system is a collection of information management methods involving computer automation(hardware and software) or otherwise supporting and improving the quality and efficiency of business operations and human decision making.” -Technopedia.

MIS provides faster access to the required information which helps the organization to makes effective and timed decision in every aspect of business like investments, employments, products etc. depending on the organization. Basically MIS provides four types of information to the organizations i.e. Descriptive(related with the current reports and answering what is situations), Diagnostic(pertinent to what is wrong by comparing the actual results with the standardized results), Predictive information(related with the future aspects of business and provides answers to what if questions) and Prescriptive information(helping the firms in providing solution for decision making based on firms' goals and strategic objectives).

MIS MODEL

MIS model starts with collection of data and information from various sources and storing it in the database through accounting information system. The information is then sent to the report writing software in order to generate periodic and special reports. The information is also analyzed through mathematical simulation to analyze and relate various aspects of organization's operations. The results of report writing software and the mathematical model are sent to the

decision makers of the organizations for efficient and effective decision making. In this way the process of MIS takes place.

BENEFITS OF MIS IN BUSINESS AND INDUSTRY

MIS can be treated as the heart of business and industry. Just as the function of heart is to supply the blood in human body in order to pump up the body, the function of MIS is to provide the necessary information throughout the organization for the diversified needs and for decision making. Thus the role of MIS in the organization is very important.

Role of MIS in organization:

- Satisfaction of diverse needs: MIS helps in completion of diverse needs through variety of systems like query system, analysis system, modeling system and decision support system.
- Decision maker: MIS plays the role of decision maker by providing relevant information through specific reports generated from mathematical simulation and computerized software.
- Helps in coordination among departments: MIS helps in creating coordination among several departments by exchanging several information and helps in establishing sound relationship among the peoples of different departments.
- Helps in finding out problems: MIS provides necessary and relevant information about every aspect of the business and organization. If any error occurred on any level of organization, MIS can detect the problems and may provide solutions for this.
- Helps in comparison of business performance: MIS stores all past and present data in its database. Through report generating software and mathematical models, it can generate current reports which can be compared with standardized reports as well as past reports which helps in analyzing organizational development and growth.

Role of MIS at different levels of management:

- ✓ Top Level Management/ strategic users: MIS helps the top level management in setting goals and objectives, strategic planning and implementation by providing strategically analyzed reports and relevant information.
- ✓ Middle Level Management/ managerial users: MIS helps the middle level management in short term planning, target setting and controlling the business operations by the use of management tools of planning and control.
- ✓ Operational Management/ operational users: MIS helps junior management by providing the operational data for planning, scheduling and control and helps them in decision making at the operational level to correct an out of control situation.

Role of MIS in Human Resource Management:

- Helps in improving the skills of human resource through training and development.
- Improving the productivity of employees through MIS.
- Helpful in reducing the costs.
- Helpful in minimizing the efforts of employees through automating repetitive and simplified duties.

MIS plays a very important role in the organization, it has its impact on marketing, finance, production and personnel. The tracking and monitoring of functional targets becomes easy through MIS. It helps in forecasting and long term perspective planning.

ADVANTAGES OF MANAGEMENT INFORMATION SYSTEM

MIS creates a big difference for an organization. It is very important in today's dynamic environment. It provides several advantages to the organization:

- Helps in managing data: MIS helps in maintaining and managing business data for helping in the complex decision making by the management. The complex data is stored in the database of MIS in an organized way which can be accessed whenever needed.
- Helpful in analyzing trends: Management needs information for strategic planning and achieving future goals. MIS provides such information through the use of mathematical tools and also helps in prediction of future trends on the basis of current trends.
- Helps in strategic planning: MIS reports helps in identifying the resources that are required for achieving the objectives of the company. In this way MIS helps the organization in strategic planning.
- Goal Setting: MIS reports provides the information about the current trends of the company and also the future trends which can be used as a base for goal setting in future. Hence we can say that MIS helps in determining goals in an organization.
- Problems identification: MIS provides information about every aspect of business. The current reports are compared with the standard reports which helps in analyzing the variances and problem identification. MIS also provides the suggestions regarding the problem.
- Increases efficiency: MIS provides the relevant information on time which helps in achieving the objectives of organization as a whole and also helps in accessing the individual performances at every level of management. In this way MIS helps in increasing efficiency.
- Comparison of Business Performance: MIS database can be accessed anytime. It helps in analyzing current year performance and also helps in making comparison with past performances. In this way it helps in analyzing growth and development of business.
- Easy, Quick and relevant information: MIS provides the necessary information in the easiest form within a few minutes. Hence it provides relevant, quick and flexible information which may help in future prediction.

MIS helps in getting information in efficient and effective manners and ensures that employees do not have to collect data manually for filing and analysis. It provides a platform for building programs to access the data in response to queries by management.

CHALLENGES OF USING MANAGEMENT INFORMATION SYSTEM

Management Information System is considered as an important part of the organizations. It provides several types of advantages to the organizations by analyzing the organization's data and information in a relevant and effective manner. However there may be some challenges that a company have to face after implementing MIS. Some of these are as follows:

- **High Cost of Implementation:** The main challenge in front of organization is the high cost of implementation of MIS. Also MIS required up to date information regarding all the changes on companies website. This may create a huge problem.
- **Opposed by employees:** The MIS system is opposed by the employees of the organization. Employees have to learn the necessary skills to operate MIS in changing and competitive business environment. If employees resist this, it may become difficult to stay in market.
- **Equipment and network problems:** The MIS system requires the electronic gazettes like computer system. The equipment should be purchased and maintained properly and time to time repairs are also necessary. Also problems like server crash and websites crash may arise which creates a huge problem in front of the organization.

CONCLUSION

It can be concluded that management information system is an important part of the business organizations. It enables the business to stay prepared, forecast the changes and capitalize the opportunities by providing timely and accurate information. A rapidly evolving MIS is necessary for the growth and survival of business organization. However MIS may face the challenges like

implementation cost, resistance by employees, website and server crash and learning of new system by employees etc. hence it is suggested that proper planning is very important aspect before implementation of management information system. Along with it the cooperation from employees and harmony in project is necessary for the successful implementation. In the dynamic business environment, it is necessary for every organization to implement MIS so as to get quick and relevant information.

REFERENCES

- <https://www.ijsrp.org/research-paper-1015/ijsrp-p4671.pdf>
- <https://www.gjimt.ac.in/web/wp-content/uploads/2017/10/N111.pdf>
- James, P. (2017). Role of Management Information System in Business and Industry. *International Journal of Humanities and Social Science Invention*, 6(7), 01-06. Retrieved from [http://www.ijhssi.org/papers/v6\(7\)/Version-2/A0607020106.pdf](http://www.ijhssi.org/papers/v6(7)/Version-2/A0607020106.pdf)
- Mishra, L., Kendhe, R., & Bhalerao, J. (2015). Review on Management Information Systems (MIS) and its Role in Decision Making. *International Journal Of Scientific And Research Publications*, 5(10). Retrieved from <http://www.ijsrp.org/research-paper-1015/ijsrp-p4671.pdf>

A Strategic Framework for Customer Relationship Management: A Review on Banking Services in India

Dr. Promila Dahiya

(Director-cum Astt. Professor, SFS Vaish College, Bhiwani)

ABSTRACT

In the present scenario of globalization and liberalization, marketing has under gone a metamorphic change to cope with increased competitiveness, changing needs of customers, continuous product up-gradation due to change in technology, changing marketing trends and many more. It is a business process, which seeks to match the organizations human, financial and physical resources with the wants and need so fits customers within the context of its overall competitive strategy. A customer is the “king” of the market. A customer is the most important person in the market. A customer is not dependent on us—we are dependent on him. Customer relationship management has become inevitable for growth and profitability of banks in present scenario marked by rising competition, technological advancement and empowered customers. In Indian banking Customer Relationship Management is still at a nascent stage. A very small proportion of its potential has been utilized. The concept has been implemented on a limited scale. This paper throws an insight into the customer relationship management and investigates the impediments to successful implementation of CRM and also study the Relationship Marketing and its impact of banking services in India.

Keywords

Customer Relationship Management, Relationship Marketing, Banking Services

Paper Type: Review and Viewpoint

Research Methodology

The paper is based on secondary data. The paper is based on extant literature and internet sources have been used. The study focuses on extensive study of secondary data collected from various websites, various national and international journals and articles, publications, conference papers, books related to customers relationship management, newspapers, magazines which focused on various aspects of customer relationships.

INTRODUCTION

Customers rarely wants imply to be sold to; they want to be valued. They want the in circumstances to be acknowledged and their needs to be satisfied. A customer is a person who brings us his wants. It is our job to handle them profitably. This demand for a matching of the suppliers offers to the customer needs is something greater than the resultant transactions; it is responsible for some kind of higher order business relationship.

Marketing today has led to a new emphasis in marketing, with a focus on relationship and the developments of the notion of relationship marketing and marketing is recast as a matter of relationship management. It does not a band on the fundamental principles of marketing, but builds them in to something more powerful and more relevant for today's competitive marketplace.

Relationship Marketing: Relationship marketing is a strategy used to learn more about customer needs and behavior in order to develop stronger relationship with them. Relationship marketing has emerged as one of the major marketing issues in the 1980's and 1990's.

Many marketers have considered relationship marketing as a necessary and effective way of achieving competitive advantage - through the creation of relationships, networks and interactions that are long-term. Despite the fact that the term 'Relationship Marketing' was introduced by Berry (1983) more than twenty years ago, there is still a lot of debate about what is meant by relationship marketing. Berry has defined Relationship marketing as "attracting, maintaining and enhancing customer relationships so that indifferent customers are transformed into loyal ones. In the relationship marketing perspectives, servicing and selling to the existing customer, are viewed to be as important to long - term marketing success as acquiring new customers. Good service is necessary to maintain their relationship, while good selling is necessary to enhance it. Besides above in the 1990's relationship marketing has become a topic of central importance in companies. Gronroos in 1990 formulate the relationship-focused definition of marketing, emphasizing the need to establish, maintain, enhance and commercialize customer relationship, through the mutual exchange and fulfillment of promises. In the service sector it has received the greatest attention. Relationship marketing is increasingly important source of competitive advantage in companies by which they serve their customers. More and more companies are moving towards using service and relationship building and service as a powerful means of achieving competitive differentiation. There is a not the major trend in relationship marketing i.e. the emergence of one-to-one marketing (McCarthy 1998). While the earlier perspective aimed at meeting the needs of segments of consumers, the new perspective treats every customer as unique. The quality of relationship with individual customer is emerging as a proper measure of success. Now it is possible to maintain data on individual

customers and address their needs on one-to-one basis. There is more attention given to customers and relationship marketing in terms of improved service quality, personalized care, reduction of customer stress etc. also benefits them. A high degree of customer contact, commitment and service are maintained.

The relationship marketing approach has gradually taken the shape of customer relationship management. Relationship marketing has a narrow focus on the customers and only focuses on the marketing functions of the organization concerned. On the other hand, customer relationship management focuses more widely on customers and on the entire functions connected with value creation and delivery chain of the organization concerned. Organization have preferred the usage of the term Customer Relationship Management (CRM) rather than relationship marketing because they face the harsh reality that brings an old adage to life- "You can please some of the people most of the time and most of the people some of the time, but you can't please all of the people all of the time". Today, Customer Relationship Management (CRM) is the key that fulfills the promise of helping sellers -please all of the people (customers) most of the times. To step over the threshold of the new millennium - the age of "never satisfied" customer, leading enterprises are identifying the need to change from a product-centric business to a customer -centric one. Organizations are slowly waking up to the benefits as well as the challenge of changing processes that are necessary in this age of never satisfied customer.

Objectives of the Study

The research intends to focus on understanding concept of customer relationship management and its impact on Indian Banking System.

Accordingly the objectives of this study are:

- To cognize the concept Customer Relationship Management.
- To cognize the concept of Relationship Marketing.
- To highlight the needs of customer relationship management in banking services in India.
- To study the impact of customer relationship management in banking services in India.

Regarding Availability of Infrastructure

In this regard, it is found that the basic infrastructure for CRM i.e. computerization, phones, fax, ATMs facility, Internet banking etc. are available in bank. Banks are contacting with their customers through phones, fax, Internet, mobile banking, website but it was not sufficient as the infrastructure was not adequate enough to handle their big cliental. It was a difficult task to deal the customers with less equipment. The study depicts that both some public and private banks branches had failed to provide the certain services like mobile banking, tele - banking, Internet banking, and electronic fund transfer system.

Suggestions

Whenever an innovative product is launched in the market, the marketer needs to create its awareness amongst the existing and prospective

customers. According to AIDA model of communication the first step in any marketing communication is the creation of awareness in the market followed by interest, desire and action. In order to increase the awareness level of customer's the following suggestions are likely to ensure better utilization of wide spectrum of bank services.

1. Computerization:

Introduction of computers for front office banking are proved to be very useful. Improvement in customer service is visible, customers are getting their accounts in time, interest calculations are done accurately, books of accounts are being balanced promptly and branches now, are in position to submit various returns and statements to their controlling offices used in time. But some employees faced difficulty. Therefore bank should provide them time to time training so that they would not face any difficulties.

2. Phones:

The phone facility is available only in branch manager room. Therefore it is suggested that a phone facility should be provided to each bank employee so he/she tackles the customers' problems by sitting on their seat.

3. Faxes:

Banks used fax machines to send messages or other details etc. and at present the branch has only 1 or 2 fax machines. Therefore to handle some unforeseen condition there should be more than two or three fax machines in the branch.

4. ATMs:

ATM is abbreviation of Automated Teller Machines. ATM is user - friendly system and customer does not require any training to use it. But the study found that availability of ATMs counters is not sufficient. Therefore it is suggested that more ATM facility should be given to the customers and it should be opened near at bus-stand, railway station, near hotel and park etc. location of ATM should be convenient for the customer benefits and facility.

5. Internet Banking:

Internet banking allows the customers to use the Internet for the basic functions like making enquiries about balances, electronic communications with the bank through internet. It is suggested to the bank employees to make the people more aware about this service and its benefit.

6. Tele banking and Phone banking:

Technology development has totally changed the face of banking industry. Conventional banking where banking services were provided manually across the counter has come to the stage where customer is not required to visit the bank personally. But the 29 branches of public banks (PNB and SBI both) in some rural areas have not yet started the phone banking. Customers who wanted to do the transactions, they usually do by contacting the branch managers. Therefore, it is advisable for the branch to provide the facility as early to its customers.

7. Mobile banking

Mobile banking has also not yet started in 47 branches of public banks. In this, some branches are Internet driven. So, it is suggested to start it as early as possible, as in this era, Mobile banking is the most demanding

services, because it helps to show their transactions and account status through sms, which save the time of customer and prove convenient to the customers.

8. Electronic fund transfer system

With this facility bank can transfer the money within 10 or 15 minutes anywhere from one branch to another. Private Banks employees use this services more frequently rather the public banks. Therefore, the employees are advisable to make aware the customers more to use these type of services.

Thus, in spite of the fact that the technological up gradation has become essential requirement of each economic activity, the banking sector is still in beginning stage in using electronic machines. Though to bring mechanization in the bank is a costly affair, but in order to provide speedy services to customers it is essential to use moderate electronic devices and services.

Impact of CRM

In this regard the study concluded that dealing with the customers through phones, Internet and face to face contact has proven greatly beneficial to bank business. This lead to the reducing cost and increase customer loyalty by 91.1% and also by providing new services loyalty is increased by 100% in private banks. Banks profitability has increased about 25 to 50% (53.3% in total). As most of the transactions are done on computers and overall efficiency of the bank has increased with computerization of the banking environment and it leads to the conclusion that future of electronic devices in banks are very bright.

What are the benefits of CRM in banking?

1. Boosted Sales
2. Increased Lead Conversion
3. Personalized Customer Journeys
4. Increased Productivity
5. More Efficient Communication
6. Inter-Department Data Tracking
7. Better Service
8. Improved Customer Experience
9. Increased Customer Loyalty

Regarding Awareness and Attitude of Bank Employees

In a service organization like banks, its most valuable assets are their employees. The success or failure of their products depends to a large extent on the attitude and willingness of their employees. These organizations are therefore advised to not only do external marketing but also at the same time and rather more important is the internal marketing. Banks must make an internal survey of its own employees to know their attitude and to read their minds towards the customer relationship management. The different aspects of banker's attitude are concluded here in the following paragraphs.

There was a problem faced by employees for handling the various electronic tools. The employees of public bank faced more problems comparison to private bank employees.

Further in regard to problems faced by employees in handling tools it was found that banks give time to time training to their employees, so that

employees feels comfortable while using various electronic tools and it help to save their time as well.

As far as the type of media a bank should adopt for the awareness of its customers a significant differences were found in replies of the staff of both banks. Public banks prefer the newspaper, television, radio, magazines to aware the customers whereas in private banks phones, newspaper, TV, magazines are preferably used.

In regard to selection of channel Internet, the private banks preferably use websites and on the other side public bank used personal selling in comparison to internet.

Suggestions

- Efficient and competent persons should be posted on the jobs.
- Employees need to be trained in developing a habit of usage of electronic tool.
- Maximum advertising media should be adopted by bank to get aware their customers of their services.

Reaction of Customers

In this regard the study concludes that customers are also giving positive response. Most of the customers in the sample of the study were of 25-40 years age group; postgraduate, and Rs. 10,000 to 25,000 family income groups. All of them were aware about the different service provided by their banks.

Banking is essentially an industry which carries on its operations mainly based on the confidence and faith of its customers. It has undoubtedly to grow on the quality of service rendered by it, since service is the end

product of a bank; the efficiency of a bank depends more on how best it can deliver goods to its customers rather than simply the volume of business carried on by it.

Furthermore, the customer's requirements are getting more and more sophisticated. Today's customers want personalized care and attention. Besides, there still remain large rural area customers untouched by the banking services and the government is visualizing a more dynamic and purposeful role for the public sector banks in attaining the socio-economic objectives.

There is a need to response and enlarge the package of rural banking and urban banking offered in tune with the changing customers preferences. The standardized sets of products and services offered by the banks are, therefore, no longer sufficient to meet the diverse needs of the customers. Thus, banks faced with a situation where continuous innovations in products and services have been called for. In order to make these products more oriented towards customer's needs, attitudes and their perceptions and preferences need to be continuously monitored and incorporated into the product/service features.

Besides the above written suggestions the various other suggestions for bank management are given below:

Helpful Attitude at the Time of Opening of Account

Bank staff should be motivated to help the customers at the time of opening of new account or filling up the forms and finalizing various procedural formalities. Enquiry counter is a necessary facility for the convenience of the customers. Banks should provide a separate counter in each branch and the

person at the enquiry counter should be especially motivated and trained to be polite and helpful to the customers. The staff at this counter should in particular be asked to provide all the necessary assistance particularly to new account holders. 'MAY I HELP YOU' counter should to give guidance and assistance to the customers.

Better Promotion of Bank Service

The awareness level of customers (rural and urban) was not found sufficient particularly in the age group of above 60 years. Majority of customers as revealed by the study were unaware of the banking services and particularly rural customers are not enjoying any business promotional services. Banks should make the present and prospective customers to be aware of the service package they offered by distributing information booklets, pamphlets on various schemes. Banks should always try to get in touch with the customers and make them aware of the various new schemes and services.

Prompted Method

Service delayed is service denied.The bankers must not forget this fact. In selection of a bank different factors are considered by the customers i.e. tangibility, reliability, responsiveness, assurance and empathy, and competitive strength. In regard to tangibility customers are found moderately prompted. Thus it is suggested for tangibility banks should also go in for computerization because with the growing volume of business and number of clientele and changes in quality of work, banks can't continue to depend upon the old manual techniques. Introduction of computers for front office banking at some of the large banking centers will result in immediate and visible involvement in the customer service. Time required for cashing of cheques and other instruments will be reduced and its result less queues.

Customer Care Policies

Generally complaints highlight the areas of weakness in bank service, which needs improvement. There should be positive approach to complaints in banks. The bank employees should not behave in adverse manner with the complainants. A satisfied customer of the bank is an unpaid publicity agent for the bank is equally important, in the fact that the highly dissatisfied customer is an unpaid agent for carrying on a campaign against the bank. The choice is that of bank. So that banks provide different policies to customers for their care which helps in maintaining the CRM.

Motivating Bank Staff to be more Customer-Oriented

From the study it concludes that bank customers are not fully satisfied with the bank staff. It is suggested that bank employees those who are in direct contact with the customers should be motivated to be polite and helpful to the customers. Employees should try their best to provide maximum help to the customers who come to them. Customers must be welcomed with all courtesy. Courtesy should be repeated every time the customer comes. Customers come to the branch for prompt attention, courtesy and good words which do not cost anything to the bankers. Moreover, bank employees should treat all the customers at par so that customers don't feel the necessity of developing some personal contacts with the branch staff to cut short their waiting time.

Bank Charges

Private Banks charges higher for their services rendered by them as compare to the public banks for the same services. It is suggested that the banks should reduce the service charges so that customer gets attracted towards their different policies and schemes.

Better Maintenance and Upkeep of the Branch Premises

Surroundings in which customers have to make their transactions leaves strong impressions, taking place them, quality of their services. Since this aspect is directly linked with bank's concern with the welfare of its customers, it becomes very important for banks that premises are properly maintained and kept clean and all amenities like seating arrangements for them in banking and the tables of appropriate height for filling up various forms / slips, counters should have sign board of the transactions being handled at those counters for the convenience of the customers, special attention should be paid to see that drinking water is available to the customers. The booklets comprising the elucidation of services should be distributed to present and prospective customers so that a big chunk of customers and non-customers may come to know the latest services being rendered by the bank and attractive advertisement highlighting the gains from banking should also be released.

Surely these suggestions imply an increase in the workload of staff. Yet this will ultimately benefit them by increased banking business and helps them to maintain the good relationship with customers. So, that their purpose of customer relationship is fulfilled.

CONCLUSION

In this regard the study found that banks have made a lot of efforts for maintaining relationship with the customers. Banks provide the new-new services to their customers. The bank has opened the customers care department as its head office, websites to satisfy the customers, appointment of person in banks. The bank has facilitated the grievance - redressal machinery to handle the customer problems. Bank has used the different

marketing channels and advertising media to make aware the customers regarding its new and moderate schemes. Public and private banks have made about 25-50% of total expenditure whereas public banks spend 50-75% of their total expenditure for providing new-new services for betterment and acquiring the new customers and retaining the existing ones. Banks also have given various types of incentives to their employees for attracting the customers in addition to monetary the non-monetary benefit given by banks i.e. (48%) by appraisal their work. Therefore, it is suggested that bank should give monetary benefits with non-monetary benefits to their employees, for good services and whatever efforts they had made to strengthen their business and acquiring the customers.

References

Agrawal M.L, "Customer Relationship Management (CRM) and Corporate Renaissance", Journal of Services Research, Vol. 3, no. 2 (2004)

Coltman T., "Can superior CRM Capabilities Improve Performance in Banking", Journal of Financial Services Marketing, Vol. 12,2 (2007).

Mukherjee K, "Using CRM Effectively", TMTTC Journal of Management, Vol. 8, no. 2, (2010).

Ravi V, Raju N P, Sridhar S, "Big Data, Analytics, CRM: A Formidable Triumvirate for Banking", The Indian Banker, Vol. 3, no. 2, (2012).

Injazz J Chen, Karen Popovich, "Understanding Customer Relationship Management (CRM) People, Process and Technology", Business process management journal 9 (5), 2003

Adrian Payne, Pennie Frow, "A Strategic Framework for Customer Relationship Management", Journal of Marketing 69 (4), 2005

Manisha, Saini R.R., (2008) "Customer Relationship Management in Banking Services in Haryana".

Saxony Leipzig, "Customer Relationship Management in Banking System (case of Kosovo)", Journal of Internet Banking and Commerce, ISSN: 1204-5357

<https://www.salesforce.com/solutions/industries/financial-services/resources/banking-crm/>

J. Munaiah, G. Krishnamohan (2017) "Customer Relationship Management in Banking Sector"



Woman is "Swayamsiddha" in the poetry of Dr. Rashmi Bajaj

↓
"Woman of spirit"

Sarita Goval,

Asstt. Prof. of English,

Vaish College, Bhiwani

Abstract :

Dr. Rashmi Bajaj, the poet thinks highly of women and feels that woman is still alive and powerful. The woman with her unflinching faith and unwanted courage in herself, everyday she falls and rises, sometimes feels disheartened but gathers strength and moves on to the path of her life. The stark reality shatters her dream every time but she weaves a more beautiful new dream for herself. By undergoing the trial & tribulations, every woman gains her inner strength that makes her a woman of the spirit or a "Swayamsiddha". The paper under study deals with the poems of the poet's book, "Swayamsiddha"

Keywords : "Swayamsiddha", disheartened, strength, faith, reality.

"What does it mean to be a woman?" – I think, every woman very well knows that she may assume herself as a 'Human Being' but the world in which she lives, does not let her forget even for a second that first and foremost, she is 'a woman'. This gender identity is her first and the last introduction, opines, the, poet, Dr. Rashmi Bajaj.

The grand and closed doors of the mosque, the reserved and divine campus of the temples, the wailing 'Designer Homes' of the women celebrities, the 'Terrifying Mothers' Wombs, the celebration of a girl child's birth for media coverage, the 'Dhaal-Budkale' prepared by the sisters for their brothers' well being during Holi festival and other such incidents remind a woman, even in the twenty first century that she is nobody except a 'Universal Dalit' (p. 9-10) Moreover, anti-feminine group, in the name of religion, caste and creed is constantly trying to prove every woman as a lonely and helpless person.

*"How lucky
I am, a woman
'To Be' or
'Not to Be'
The pangs of it
Are not for me.*

*My all
Decisions always
Are taken
By someone else..."*

(p.35)

In the second part of her book, "Swayamsiddha", The poet, Dr. Rashmi Bajaj provides solution to the problems of every woman. She says : "Now in the blank and wet eyes of a woman, there are no dreams of a golden dawn. Rather she has learnt to be the sun for herself." (p.67).

The poem, "Raajpeeth" describes a woman's inner strength The poet says :

*"The more you desired
To suppress me,
To torture me
To eliminate me,
The more I
Became
Courageous.*

(p100)

This inner strength of woman is further appreciated in the poem, "Naya Inquilab" :

*"One day
Veil, Burke'
Be removed.
Religion and
Caste'
Differences be eliminated,
Every wall
Of hostility
Be demolished,
All the wounds
Be treated,
Only a woman here
Will usher a new
"Inquilab" (Movement)
Of Love....."*

(p.103)

The poet salutes a woman for her courage in the poem, "Zurrat" :

*"In this melancholic
Era too
To laugh and to make others laugh
To dance,
To celebrate,
To weave dreams,
To shower love,
Only a woman,
Can have
That courage."*

(p.76)

And in the poem, "Nahin Marti Ishtri", the poet Dr. Rashmi Bajaj says :

*"In spite of the conspiracies
A woman does not die.
The nectar of a woman
Is hidden in her
Womanhood."*

(p. 106)

The poet treats a woman as an Empress in the poem, "Samragyi". She says :

*"Does not know
This world,
That every
Woman
In dreamland
Is
An Empress."*

(p. 97-98)

In the poem, "Pyari Dadi", the poet celebrates the birth of a girl child in these words :

*"In my village
The granddaughter has taken birth,
And Dadi
Liberates
A woman
By celebrating
Her birth....As
A woman
Will be liberated
One day
By a woman."*

(p. 93)

In the poem, "Bahut Bahut Sunder", the poet encourages a woman to love herself. She says :

*"How
Good it is
To be in love
With a man;
But it is
More beautiful
Sometimes
To come out of
Man's love
And
To be in love
With herself."*

(p. 96)

In the poem, "Ishtrivad" describes a woman as :

*"Some incidents
In this World
Take place
For/with
A woman;
Listen, you
The intellectuals!
Until
Is alive
A single woman
Can't end
This feminism ('ishtrivad')."*

(p. 82-83)

In the poem, "Sampuran", the poet says :

*"A woman
With another woman
Becomes
Depression less
Blessed
And long lived.....
Will become
The life of a woman
Complete when
Intimate
To that woman
is any woman too."*

(p. 81)

This woman is 'puranrupa' as she completely surrenders to the wish of her man. She says :

*Whatever
You desire,
Dear!
Says she
By smiling;
Stealthily
And secretly Undergoes
Her inner journey;
Becomes
A woman
Everyday
In herself
'Puranrupa'....*

(p. 87-88)

The poet thinks that "inside the heart of a woman, a flame is burning that can't be cooled down. Many names will be given to it as 'Feminism' or 'Humanism'. But a long struggle will continue unless she is not understood as a "Human being" ('Aag' poem p. 72). A woman can't be captured in epics as she is "Swayamidha" (p. 75) herself. Acc to the poet, "inside the heart of a woman, there is a room where no one can enter. But she herself becomes mentally stable by sitting there whenever she wanted to" (p. 105)

In the poem, "Maha-Mahotsava", the poet celebrates womanhood :

*Why?
The life of a woman be
Any sorrowful song,
Any last Journey? (P.107)*

"In every direction, street, nook and corner, let us celebrate the grand celebration (Maha-Mahotsava) of womanhood!" (p. 107-109), says the poet.

The poet is hopeful of "Istri-Nirvana" as she says "Woman liberation is not impossible. Rather, every moment, it is possible. A woman is only a few steps behind away from that liberation as she is engulfed to her lover on the one end and to her progeny / issues on the other end." (p. 23) - *Asutdlerkand*, Part - 1

Dr. Rashmi Bajaj, in her collection of poems titled, "Swayamsiddha", expresses her feelings in these words :

*Can take the risk
Of expression
Only a woman.
Doesn't have
To lose
Or Gain
Anything. (p. 17) "Swayamsiddha".*

How a woman is different from a man says the poet in the poem, "Bahut Alag"

*"I woman
Do Sleep
When and how much
Can sleep,
Do eat,
When and that much
Could eat." (p. 29)*

In the poem, "Meri Aukat", the poet says that a woman is treated in the same way, irrespective of the status she has in the society. A woman whether she is a queen, a beggar, a thakur, a Brahmin or Balmiki's wife, she has only one 'identity'

*"I
Am only
A Woman" (p. 30)*

In the poem "Zaziya", the poet remarks :

*"Every moment a woman
Gives here
Tax/Zaziya
For her being alive!" (p. 63)*

In the poem, "Saubhagyashalini" the poet shows that a woman is always deprived of taking decisions even for her own life.

To sum up, "Swayamsiddha" is a courageous feminine challenge to those who believe in traditionalism, modernism, Manuism and other cults like these. All the poems of Dr. Rashmi Bajaj force both men and women to think and act differently for a better society and better tomorrow.

Reference :-

" Swayamsiddha" : A collection of poems, Dr. Rashmi Bajaj, Vrinda Publications Pvt. Ltd., Delhi- 91, Edition-2013.



CULTURAL STUDIES AND INDIAN CUSTOMS IN THE WRITINGS

OF R.K. NARAYAN.

PUNAM VERMA

Assistant Professor of English

Vaish College, Bhiwani.

Culture encompasses social behavior, belief customs, norms and value found in human societies round the globe. The term ' culture' is most commonly used in three ways- ' excellence of taste in the fine arts and humanities, also known as high culture' , ' an integrated pattern of human knowledge, belief, and behaviour' and the out look, attitude values, moral goals, and custom shared by a society' . Accordingly culture can be defined as socially inherited, shared, and learned way of living possessed by individuals by virtue of their membership in social groups.

Culture is what puts people in place. The word took its form from the French word CULTURA which connotes " to cultivate" . " to till" , and to grow." Allegedly, culture is a process of growth through the means of education, discipline, training etc.

Rajagopalachari Stated " Culture is not just character or morality. Charater is the inside of man. Culture is external rather than internal. Culture has more to do with behaviour and way of living than with character. Broadly speaking, culture is external through of course it has much to do with character too. Because, the outside has always much to do with the inside."

The word culture in truest sense of term is used to describe the values, beliefs and attitude of a particular place. It is about how people live and worship and about other music, art and literature they produce over generations. It occupies a very important place in human society. Broadly speaking, culture signifies growth. It is the sum total of all the custom, traditions, institutions etc., inherited by people. A person with good moral values, character and conduct is said to have a good cultural background. The earth has seven continents which otherwise mean huge areas of land. Each continent is made up of several countries. The people living in each country speak different languages and have different culture. They have different ways of life like music dance, art, food, belief, history, clothing, sports, celebrations



etc. The term culture is commonly used in sociology, anthropology, and social Psychology. It has been applied to many different sized units of society, from western culture down through U.S. culture, southern culture, suburban culture, from broad aspect of society to very small social units. To put it in simpler terms, it can be said that culture is man-made part of the human environment.

There are two distinct theories on the origin of culture. One is the diffusionist theory which says that every idea, motive or innovation has an epicenter and the other is evolutionist theory, which recognize corresponding ideas, if not identical, or innovation at every stage of human development. The diffusionist group gives credit to Mesopotamia and Egypt as the dispersal centre for the spread of urbanization, north of Black Sea region for the spread of Indo-European Languages, Turkemenia for the pottery and ceramic design and so on. From the ancient past, people have always migrated from one place to another for survival and economic reason. To what extent the culture has been modified or changed by diffusion process is always a debating question for any culture. Culture has to be distinguished from civilization since an is often confused with the other. The concept of culture evolved gradually. The word culture made its appearance in the English Language in the 16th century to keen "cultivated". But within two centuries the two terms cultured and civilized were used to refer to a cultivated or civilized person. But it was only in Germany in the 19th century the word culture was used to all aspects of the social life of a community. The word civilization is now used to indicate higher and more developed form of culture especially of the cities.

India is world famous for her unique Hindu religion, culture and civilization. The culture of India is deep rooted into the past. The background of Harappan-Kalibangan findings confirm immense potential of this country to become a great nation. This ancient Indus civilization mysteriously disappeared for unknown reason but the remnants exhibit many good and great things of the past which are still magnificent examples of the present.

Religion is very important in Indian culture and in people's lives. It can determine where and how people live, whom they marry, what food they eat and how they dress. Majority of the Indians are Hindus and Muslims from the next largest group. There are smaller number of Christians, Sikhs, Buddhists and Jains. Hindus follow the religion of Hinduism, which goes back at least 4000 years. Hindus have many different beliefs and ways

of worshipping. Most Hindus believe in great spirit called Brahaman. Some Hindus call Brahma " God" . They also believe in many deities who represent Brahaman' s different qualities and powers.

Vyas opines " The entire edifice of Indian culture is based on the foundation of spirit. Her religion, art, literature everything has drawn inspiration from the spiritual outlook alone. The source books of Indian culture can be called " Shruti-smriti Puranokta' , i.e. based on the Shruti, Smriti and Puranas" . Indian culture was shaped by the Itihasas and Puranas too. The Ramayana and Mahabhartha are considered to Itihasas, while the Puranas consist of Mahapuranas and Upapuranas. The two epics and the puranas are repositories of Indian culture.

Indian culture is dynamic and never static. It is a fusion of old traditional values and the modern principles, thus, satisfying all the three generations in the present India. The elite businessmen and the common vendor on the roads share the same news and worship the same deity. One cannot approve Indian culture to be the many facets of the society but considering its people and the way they view Indian culture make one feel it is true. Indian culture is compared to a rolling dice which has different facets due to its enormity of diversified population called race. The spectacular background Indian culture carries on its shoulders is to be ascertained to the fact that it is as old as mankind itself. India is a home for money such as Hindus Buddhists, Jains, Jews, Christians, Muslims, Parsees, Sikhs and others.

Sachindananda Murthy opines " In Indian culture, unity in diversity is generally advanced by scholars of different shades of Vedanta, Buddhism, Christianity, Islam and indeed, all other religious faiths.

The culture of India comprises Humanity, Tolerance, unity Secularism and a closely knit social system. It is very pertinent to everyone that Gandhiji' s Satyagraha principle or Ahinsa-Freedom without taking a drop of blood, worked wonders and gave credit to India in international arena. Indian culture is also one of the oldest cultures in the world. India culture is Pluri cultural in nature and modern India presents a remarkable cultural diversity throughout the country. Indian culture teaches us to multiply our joys and share our sorrows and jointly develop co-operation and better living amongst ourselves and subsequently make this world a better place to live in.

Anita Singh opines " Culture, as we know, includes knowledge, belief, art, moral law, custom and other capabilities and habits acquired by man as a member of society. Man is also affected by cultural displacement and shocks. This displacement implies co-presence of more than one culture, biculturalism or inheritance. Culture shapes man' s integrated behaviour or his behaviour patterns, in a way refinement comes through cultured behaviour. Every culture has the misfortune to undergo shocking split of the self. Each culture possesses a quality of affecting the mass which lives in its contact-be it Asian, European, African or American.

Rama Kundu in his book shares. His experience with the readers thus: " In July 1998, I had the chance of visiting a spot in the remote countryside of England, a two hour journey by car from Coventry towards welsh. A little way from the railway station of welsh ale there stands a sprawling monastery called ' Vedanta math' . It is run by saffron clad Dutch and British Sadhus and sannyasins, who Perch Shankaracharya' s ideals and philosophy in immaculate Sanskrit. When we reached, the elderly Sannyasins greeted us: " You are from India. You are blessed people." This I mention as just another evidence that India continues to be fascination, a goal, an ideal for the western imagination, at least for a segment of it."

The two great Indian epics The Ramayana and The Mahabharata are frequently compared with the Iliad and Odyssey. But the former tends to be colossally longer than the latter and needless to say that the Mahabharata alone is about seven times as long as the Iliad and the Odyssey put together. These two great epics give sheer entertainment and intellectual stimulation as one waddles through the long tales full of dialogues, dilemmas and alternative perspectives. One also encounters masses of arguments and counter arguments spread over incessant de debates and disputes.

It is a fact that the Indian culture is grand and unique and has fostered other cultures. Mahatma Gandhi was himself a great exponent and representative of Indian culture. His preaching on Indian culture was what he practiced in real life. He urged his fellow beings and countrymen not a remain aloof from one another or to erect walls around as it means to show one' s narrow-mindedness and rigidity and in the impact losing one' s entity. Ravinder Kumar opines " Gandhi' s views as a representative of India culture are founded on facts, for they present it in right perspective; they make him an embodiment of cultural heritage. In brief, these views along with his conduct conforming to them will always remain capable of guiding one and all who would work with a desire to keep the true Indian culture alive. It is

not all; they will also be a source of inspiration of all others cultures to the world for their longevity" .

In fact every culture has a body and soul. The body consists of its visible elements and soul, its invisible elements. Culture is not objective because each person more or less is locked with in a culture, a part of human life. However, culture is the act of developing by education, discipline or social experience. It is the training or refining of the moral or intellectual faculties. In brief, culture is the total pattern of human behaviour and its products embodied in thought, speech, action, and artifacts. According to E.B. Taylor, " culture is that complex whole which includes knowledge, beliefs, arts, morals, law, custom and any other capabilities and habits acquired by man as a member of society."

One of the early scholars of cultural studies in Britain, Raymond Williams (1963:16) defines culture as " an individual habit of mind; the state of intellectual development of a whole society; the arts; and the whole way of life of a group or people." The aim of culture is to pursue perfection in all walks of life. It is capable of developing the faculties of man in a harmonious and balanced manner. So the cultured man perfects not only himself but also the world. In addition, the 19th century British poet-critic, Mathew Arnold (1946:48-9), has defined culture in various ways. According to him; " it is sweetness and light, it is the best that has been thought and said, it is internal to the human mind and general to the whole community; It is a harmony of all the powers that make for the beauty and worth of human nature."

These definitions underline culture' s dynamism and its presence in every aspect of social life. In brief, culture includes knowledge, beliefs, morals law, customs, opinion, religion, superstition, and art, a complex typical behaviour or standardized social characteristics peculiar to a specific group, occupation, profession, sex, age or social class.

People do not just form cultures. They also form much smaller groups within society which use term sub-cultures. When we use the term sub-culture sociologically, we are referring to a group of people whose behaviour has features that set it apart from the wider concept of culture of the society in which it develops. For example, in Britain we recognize the youth category teenager as a distinctive sub-cultural group. Although teenagers may develop interests and behaviour that are unique to this group that is the ways of dressing, the kind of music they enjoy, a particular form of language. They hold even their own religious

beliefs and values. It means that social behaviour is always dynamic. There is a continuous flow of influence from one culture to another as each culture depends upon the religion, age, gender, social class and the ethnic background.

A cultural study is an academic field of critical theory and literary criticism. It is an innovative interdisciplinary field of research that investigates the way in which 'culture' creates and transfers individual experiences, everyday life, social relations and power. At a time when cultural studies have become detached from economics and politics, the works of Raymond Williams and Eduard said provide a valuable focus to rethink about cultural studies. Both are acknowledged as the foremost cultural theorists of our times and represent different intellectual and political positions. Raymond William is a Marxist and Edward said is a non-Marxist, yet their works have been many common themes, shared values and concerns.

Williams rejected not only the minority version of culture but also the crude Marxist generalization about bourgeois and popular culture. He rejects the concept of 'Mass culture', according to him, to acknowledge mass culture is to fall into the conservative trap, to accept that there is a minority culture. He see 'mass culture' as an elitist construction. William proposes the idea of a common culture-a culture ' that is not based an exploitation, but on. Collaborative effort and enriched by working. Class attitudes and values. If we think of culture, as it is important to do, in terms of a body of intellectual and imaginative work, we can see that with the extension of education the distribution of culture is becoming more even, and at the same time, new work is being addressed to public wider than a single class. Yet a culture is not only a body of intellectual and imaginative work, it is essentially whole way of life. William's description of culture in terms of the dominant residual and ' emergent' is of critical significance to culture theory. The chief value of williams' s cultural theory lies in its recognition of the materiality of culture.

Without reducing culture to the economic level or elevating it to the ideal, Williams showed how culture participates in other social practices-economy, politics and ideology. Through his formulations of cultural materialism and structure of feeling, Raymond Williams focused on the political economy of cultural production on the question of economic inequality and oppression and persistently thought in terms of a socialist society. Williams has greatly influenced the debate on culture in the present country.

Indian Customs in the writings of R.K. Narayana.

R.K. Narayan, one of the finest Indian authors of his generation writing in English. His first Novel, Swami and friends (1935), is an episodic narrative recounting the adventures of a group of schoolboys. The novels of Narayan help in understanding the nuances of India culture such as traditions, customs, religious beliefs, faiths, social hierarchies, family system, bitter & sweet melodies of love and marriage, conflict between Indian and foreign cultures etc. Narayan depicted India of his times and its customs and traditions, myths and magic' s, epics and fairy tales, his novels portrait a true picture of India during the British rule.

Narayan, with his keen observation of the various beliefs and faiths of Indians along with the customs and conventions that prevail in India, has presented them all through his novels and short stories with a meticulous regard for verisimilitude. Narayan was a traditionalist and his novels are the mirrors of the Hindu customs and traditions adhered to by the overwhelming majority of Indians. He vests most of the characters in his writings in traditional grab. Some of them are discussed here.

In ' The Financial Expert' Narayan has portrayed the character of Margayya as a very greedy Indian who brought his own ruin with his greed. Margayya was a money Lender and he located his office beneath a banyan tree in the compound of a cooperative bank. The bank authorities drove him away from that place. He lost his earnings and suffered a lot and thereupon consulted the Hanuman temple priest. Here Narayan depicts Margayya into a miserable condition. If margayya wanted to consult, there were many other financiers in the town. But he was made to consult only the priest of a temple. For priests are believed to be well-versed with scriptures dealing with the cause and effect of the sufferings of human life, Margayya hopped that the priest would be able to suggest a remedy for his own sufferings.

And when the priest offered some milk to Margayya, the latter pushed aside the tumbler with his left hand. The priest warned margayya not to refuse milk when offered, as milk is considered to be Goddess Lakshmi Devi. According to the priest those who insulted her would be punished by her.

The Priest advised Margayya to perform Lakshmi Puja with ghee made from cow' s milk for lighting the lamps before Goodess Lakshmi, and red lotus for performing puja. These are traditional rituals cow' s ghee is considered sacred and red lotus symbolizes



knowledge. Narayan seems to say that God alone gives us peace of mind when a man is surrounded by worldly troubles.

Jagan in 'The Vendor of Sweets' went to Badri hills with his parents and wife seeking the blessing of Santhana Krishna. According to his faith, he had Mali within a year after his pilgrimage.

Raju's mother in 'The Guide' is portrayed as a traditional woman and she sings same hymns on God after lighting a lamp in front of God's portraits everyday and she goes to temple every evening to worship God. This is a custom and the lighting of a lamp is treated as Gyana-Jyothi that destroys the ignorance of one and gives enlightenment. His holiness Sri Kanchi Paramacharya observes that the purpose of prayer is to find relief from the heart-aches of life by communicating with the one who will give ear to what is said and who alone can heal them. This is why people visit temples. Raju's mother in 'The Guide' believes that if there is one good man it would rain for his sake and all the world would benefit. From his childhood Raju has been listening to her words and in the end he sacrificed his life for the sake of the people who wanted rain. This reminds us of the story of sage Righyasringa.

Narayan gave much importance to the religious rituals in his novels. As per Hindu Sastras from cradle to grave there are several ceremonies, associated with every walk of life. The first and foremost ceremony performed by Indians is Namakarnam to the new born child. In 'The Vendor of Sweets' this ceremony is described elaborately.

Next comes Aksharbhayam. This is school-going ceremony. People regard Vijayadasami as an auspicious day for sending children to school.

In 'The Financial Expert' Margayya performs this school going ceremony with pomp and glory.

The woman characters in 'The Guide' and in 'The Painter of Signs' are symbols of traditionalism.

In 'The Dark Room' Narayan described the Navaratri Festival. This is an Indian Tradition and in so many places especially in Mysore this festival is celebrated with much pomp and glory.



In ' India: R.K. Narayan and tradition' novels usually treat of those standed between tradition and modernity. He does not write of peasants or urban workers, rather he shows the townsman who still thinks in older ways, but inhabits the modern world.

Narayan' s view of life in his own words, ' Life is not normally either and Elysium or a vale of tears.' And he means it.

REFERENCES:

- Shodhganga.inflibnet.ac.in
- <https://www.researchgate.in>, net
- William Raymond, (1958). Culture and society, London Chatto and Minutes.
- R.K. Narayan: K.R. Srinivas Iyengar, P.360.
- Philp David Scott: R.K. Narayan: The reinvented traditionalist, perceiving India through the work of Nirad Chaudari: R.K. Narayan and Vedmehta, P.106.

Photo Elastic Behaviour of Ionic Crystals

Madhu Rani*

Abstract

Photoelastic effect in crystals has been the subject of many experimental and theoretical investigations. It is associated with electronic polarizabilities and light scattering in crystals. Photo elastic constant is related to density derivative of refractive index. It is related to optical damage of solids by high LASER and self focusing of beam. The derivatives of electronic dielectric constant with respect to volume and lattice parameters are studied. A theoretical analysis of this effect requires strain derivatives of electronic polarizabilities which are difficult to find from model. The photo elastic behaviour of alkali halides is analyzed by assuming that change in polarizability is not responsible for electronic polarizability. In this paper, we analyze theory and models related to this and discuss aspects related to photo elastic phenomenon. We analyze relation of photoelastic effects to ionic radii, volume dependence of effective charge etc. Methodology used is based on theoretical discussion of various theories and models related to photo elastic behaviour and its various related constants.

Key Words:- Polarizabilities, light scattering, dielectric constant, ionic radii.

Introduction

Photo elasticity of crystals is related to variation of refractive index or variation of electronic dielectric constant under hydrostatic pressure. Photo elastic effect in crystals is of great interest not only because of fundamental association with electronic polarizabilities, but also from the point of view of light scattering in crystals. It is also connected with problems of optical damage of solids by high LASER and self focusing of LASER beams. The dependence of energy gap on lattice parameter and volume has been evaluated to study the photo elastic behaviour. Even the empirical approaches suggested in the past have been indirect and can be extended in a straight forward manner to include other families of crystals. It is observed that photo elastic behaviour of alkali halides can be analyzed by assuming that change in cation polarizability does not contribute to electronic strain polarizability. The main contribution arises from strain derivatives of anion polarization. The strain derivatives of dielectric constants are related to photo elastic behaviour of solids. In this paper, we will study the relation between photo elastic effect to ionic radii. The methodology used is based on theoretical discussion of various existing theories related to photo elastic behaviour.

Polarizability and Photo elasticity

Studies on volume dependence of refractive index and polarizability provide useful information for understanding the photoelastic behaviour, frequency dependence of photoelastic constants and optical performance of high power LASER beams. From the view point of theoretical knowledge, the calculation of strain polarizability parameter and then the comparison with experimental data makes a critical test of existing theories of electronic polarizabilities. For alkali halides the situation has been complicated by

* Assistant Professor of Physics, Vaish College, Bhiwani, Haryana, India

development of new concepts of polarizabilities. Values of electronic polarizabilities changed significantly when the ions are transported into crystalline state from free state. For explaining these changes in polarizabilities several models with different physical origins have been developed. The first and oldest one is due to Fajan and Joos according to which the electronic polarizabilities of cations increase and those of anions decrease in going from free state to a crystalline state because of electronic potential which is negative at the cation site and positive at anion site. This causes the loosening of cations and tightening of anions due to the effect of crystal potential. Pentilides and Wemple have considered a different model, which considers that transitions from the anions to conduction band make the dominant contribution to crystal polarizability. The corresponding transitions from cation are considerably higher in energy such that they are considered to contribute significantly to crystal polarizability. However, this picture suggesting the cation polarizabilities to be almost zero is not consistent with traditional work and also contrary to the evidence based on analysis of reflectance spectra for ionic crystals. Coker has developed another model for electronic polarizabilities by making a careful analysis of experimental data on electron density measurements, reflectance spectra and reflection data. According to Coker's model the electronic polarizabilities of cation remain unchanged in crystals relative to Free State whereas the anion polarizabilities in crystals are reduced significantly. Such changes in polarizabilities are due to neighbouring ions in terms of model developed by Wilson and Curtis and extended by Cover. This model offers a simple approach for studying photoelasticity of ionic crystals such as alkali halides. However, it was not possible to obtain a quantitative good agreement between theory and experiment. This calculated values of electronic strain polarizability parameter for alkali halide crystals turned out to be significantly different from the corresponding experimental values.

In the present analysis, we use the modified form of additive rule as proposed by Raghurama and Narayan for crystalline state electronic polarizability parameter and volume derivative of refractive index are determined assuming that anion polarizability changes significantly in going from Free State to crystalline state while cation polarizability remains unchanged. The use has been made to five different models due to

- i) Yamashita and Kurosawa (YK)
- ii) Dick and Overhauser
- iii) Hanlon and Lawsor
- iv) Aggarwal and Szigeti
- v) Wilson, Curtis and Coker along with three different sets of Free State polarizabilities. The refractive index of crystal depends on the volume on density and polarizability through the Lorentz-Lorentz relation,

$$\frac{n^2 - 1}{n^2 + 2} = \frac{4 \pi \alpha}{3V}$$

Where α and V are the electronic polarizability and volume per ion pair respectively. The pressure or volume dependence of n is related to photoelastic behaviour of crystals. Burstein and Smith found that the experimental values of volume or density dependence of refractive index can be explained only if one takes into account the variation of polarizability with change in volume. The volume derivatives of refractive index calculated by assuming that the polarizability does not change with volume were found to deviate significantly from the corresponding experimental values. By making a comparison of

calculated and experimental values of dielectric constant it has been that polarizabilities obtained by Raghurama and Narayan produce the best agreement with experimental data. Raghurama and Narayan used the modified form of additivity rule as given below,

$$\epsilon = \epsilon_0 + (r/l)^2 \alpha$$

Where $(r/l)^2 = k$ and α_+ and α_- are the electronic polarizabilities of cation and anion respectively, n is a arbitrary constant which is 0.26 for alkali halides and l is normalization length equal to 3 \AA . The electronic polarizabilities of ions changes when they are transported into crystal from Free State. Numerous models have been developed to explain these changes in polarizabilities. Similar changes in polarizabilities are expected when the volume or density of crystal changes. Thus we can extend the use of various models of electronic polarizabilities for calculating the strain polarizabilities and volume derivatives of refractive index.

Conclusion:

The photoelastic behaviour, i.e., volume derivatives of electronic dielectric constant can also be studied by using theoretical method. We make use of equation to calculate R/C ($d\epsilon/dR$) to calculate photoelastic constants. It has been suggested that for highly ionic crystals such as alkali halides, value is zero. The first order strain derivatives can be evaluated for alkali halides are in good agreement with experiment. This serves to support the approach used. Due to lack of experimental data, the second order derivatives is calculated from quadratic electro-optic coefficients can be related to theoretical results. The correlation between photoelastic effect and ionic radii has been discussed in terms of different theoretical models. In calculation of bond orbital method has been extended by presence of term involving the relative cation to anion size difference. This term is not inconsequential is an evolution of refractive index itself and become more important as ionicity of crystal increases.

References

1. M.Muller; Phys.Rev.47, 947 (1935).
2. J.Shanker and S.Dixit; Phys. Stat. Sol(a) 123, 17(1991).
3. M.Kumar and U.C. Dixit. Ind. J.App. Phys., 31, 234 (1993).
4. G.Raghurama and R.N.Narayan; current. Sci.52, 210 (1983).
5. J.Shankar, G.O. Aggarwal and N.Dutta; Solid Stat. Commun, 25, 993(1985).
6. H.Z. Weber; Z.Kristallogr, 177, 185 (1986).
7. E.Burstein and P.L. Smith; Phys. Rev. 74,229 (1948).
8. G.Rachurama and N.Narayan; Curr. Sci., 52, 210 (1983).
9. Reddy R.R. and Anjaneyula S; Phys. Stat. Sol. (b) 174, K99 (1992).
10. Reddy R.R. and Ravishanker M; Crystal res. Tech. 281, 973 (1993).
11. D.R. Penn, Phys. Rev. 128, 2093 (1962).
12. H.Muller, Phys. Rev., 947 (1935).
13. Van- Vechten J.A., Phys. Rev. 891, 469 (1969).
14. S.K. Sipani and V.P. Gupta, J.Phys. Chem. Solids 52, 457 (1991).

Solar Cell – A Future Prospective

Madhu Rani

(Assistant Professor of Physics, Vaish College, Bhiwani, Haryana, India)

Abstract

A solar cell is an electrical device that converts the energy of light directly into electricity by photovoltaic effect. It is a form of photoelectric cell whose electrical characteristics, such as current, voltage or resistance vary when exposed to light. Individual solar cell devices can be combined to form modules known as solar panels. Solar cells are used as photo detector, detecting light or electromagnetic radiation near visible range, measuring light intensity. The operation of photovoltaic cell requires three basic attributes.

Absorption of light, generating electron-hole pairs.

Separation of charge carriers of opposite type.

Separate extraction of those carriers to external circuit multiple solar cells in an integrated group, all oriented in one plane, constitute a solar panel. Solar cells are usually connected in series, creating additive voltage. Connecting cells in parallel yields a high current. Most commonly, this is a solution processed hybrid organic-inorganic tin or lead halide based material. Past few years in solar industry have been a race to the top in terms of solar cell efficiency. A number of achievements by various panel manufacturers have brought us to today's current record for solar panel efficiency.

Solar cells, popularly called as PV cells is the source of electric energy. When these solar cells are placed in sunlight, electrons flows from one terminal to another. In this way electricity is produced. Few decades before, this field of technology comes into existence as an experimental issue when scientists were trying to find new sources of renewable energy. Now, solar cells are most useful source of renewable energy. With the use of solar technique, small businessman are now generating electricity personally at much lesser rates. Now, international energy agency has full faith that upto 2050, solar cell will be the major source of electricity in this world. Till now, solar energy faced a huge competition with wind energy and water energy as a future source of renewable energy. Solar energy contributes very less in energy generation till now. But in past few years, solar energy develops as most important renewable sources of energy. With the increasing demand of solar electricity generator in whole world, solar energy generation reaches upto 100 gigawatt.

There is a considerable progress regarding minimizing the cost of solar electricity in the solar industry. In many parts of this earth, now there is competition between the cost of electricity between solar and grid electricity. Because there is less need of basic infrastructure for solar electricity, so it is also any easy option for electricity where traditional methods fails to provide electricity. Normally, when people are asked to imagine about solar panels, then they imagine about large, dark blue, silicon based panels which can be seen on the top of roof in domestic areas normally. Now development of technique related to photovoltaic cell increases the possibility of solar panel. Elastic solar panels are of less weight because they do not contain heavy sheet of glass and metal frame. Due to this reason, the establishment and transport cost of solar panel reduces to a large extent.

Types of solar cells

Now, solar cells of fourth generation are available. According to need, different type of solar cells are used.

i) First Generation (1G) solar cell

Traditionally, thick crystalline film is used in PV technique made up of silicon. This type of solar cells has high efficiency but a high cost too. This type of solar cells are called first generation solar cell. Due to their prime qualities, they are present in large amount in business market. Primarily, these cells are made up of crystalline silicon wafar.

ii) Second generation solar cell (2G)

Second generation solar cell is developed with the use of thin film technique to reduce the cost of solar panel. In this, the aim is to reduce the quantity and quality of material used so that cost of preparation of solar panel reduces, considerably. But there is a challenge to increase the absorption in thin films. For this, PV layers of reduced thickness is used. This 2 G thin film technique is based on PV materials developed during the progress of 1G PV technique. This is developed to include the material like amorphous or polycrystalline silicon, CIGS and CdTe. With the development of 2 G PV family, it is said that the cost of generation of solar cell reduces as compared to thick first generation solar cell. So, there was performance of second generation solar cell is poor as compared to first generation solar cell. So, there was a challenge to increase efficiency at less cost. In this, thin film chemical deposition technique and thermal

crystallization technique are used at proper places. Due to use of amorphous materials, the decrease in active volume is compensated with an internal layer-PIN technique. These are mixed with doped material to keep the carriers produced due to light in the region. The main factor working in favour of second generation PV cell is its low cost per watt but to increase efficiency, the increase of surface area of solar cell is main debatable question. This increase the possibility of development of third generation solar cell in which nanocrystalline film, PV based active quantum dots, Tandem or stacked multi-layer inorganic based made 3-5 material like GAAS/GE/GAINP2 or Hot carrier cell is developed. The main aim of these are to reduce the cost of second generation solar cell with high performance. These cells are known as "Plasma enhanced chemical vapour deposition (PECVD)". In this generation, there are four types of solar cells in which amorphous silicon cells are also included. These are deposited in big compartments with the help of PECVD. The band gap is approximately 1.7 eV. Poly crystalline silicon is made up of particles of pure silicon.

This design works much better than previous design due to its conductivity. They can be used in large amount. Cadmium telluride cell are made with Cadmium and tellurium in Zinc cubic crystal structure. This material is cheap as compared to silicon but its efficiency is less as compared to silicon. Cell of alloy of copper indium gallium selenide are deposited on the surface of glass or stainless steel. This is a difficult model. Its band gap is about 1.38eV.

iii) Third generation solar cell (3G)

After this, a real competition starts between material to design on nano scale and microscopic areas. First time, full concentration was given on techniques of charge and energy conservation techniques. The way found out to store charge and in this way the consumption of energy from solar spectrum increased. It is called third generation technique due to low cost and high optical absorption with the start of photo voltaic charters in organic materials. Another materials which makes third generation technique more effective are di or semiconductor sensitive solar cells. Third generation cells got right success but some improvement was also needed to remain in competition with previous generation regarding cost per watt. This generation is very much different from previous generation because nanoscale semiconductors are used in this generation. Different type of solar cells came in this generation for example- nano crystal solar cell, photo electrochemical cell, Di-sensitive hybrid solar cell and polymer solar cell. Nano crystal solar cells are based on coating of silicon substrate on Nano crystal. A thin layer of nano crystal is used with this. This thin layer is deposited with help of spin coating technique. In this list, photo electrochemical cell was in second position and in this semiconducting photo anode was used. This works well with electron polymer solar cell was the last invention of this generation. Its weight was less, cost less and disposable on atomic level. Its negative effect on environment was very less. The cost of third generation solar cell is very less as compared to first and second generation solar cells. These crystalline and poly crystalline based solar cells are responsible for generation of solar electricity upto 90%

Fourth generation (4G) solar cells

In fourth generation, photovoltaic technology, low cost thin film polymer and new inorganic nano materials are used. The aim of this is to improve upto electronic qualities of low cost thin film photovoltaic materials. To increase the energy production with maintaining low cost some inorganic components are involved with the help of which charge is divided and flows in photovoltaic cells. Previously brought mesoscopic solar cells when mixed with inorganic component (commonly titanium), then it is called fourth generation technique. This inorganic components is necessary for the efficiency of solar cell. Till now, maximum efficient polymer solar cells are made from solid heterogeneous junction structure. These fourth generation solar cells are such hybrid which are low cost and have properties of ductility of conducting polymer film. Its nano structure (inorganic material) makes is stable for life time. This fusion of inorganic technique in organic improves the transfer of solar energy into electricity. The efficiency of solar cell in this generation is more as compared to third generation at low cost. The material for new generation solar cells are made originally on nano scale. They are made for maximum absorption of solar radiations and for improving efficiency of electricity generation. It is supposed that this fourth generation solar cells are the future technology for photovoltaic energy sources. From this generation, most efficient solar cell are made for human requirement and they are hybrid nano crystal cells. To prepare, these cells, a layer is made from mixing polymer and nano particles. This layer is useful for high quality flow of charges and current.

Solar cells of Next generation

Till now, maximum solar cells are made from inorganic semiconductors which is mainly silicon. But they are not energy efficient as compared to organic semiconductor. In new technique of next generation solar cells, both organic and inorganic solar cells are made. In silicon solar cell, one photon of light emits only one electron, but in new material, same amount of light is emitted (mainly present in green leaves naturally) but due to emission of two electrons the energy efficiency becomes double. This improves the energy efficiency. This cannot be possible with traditional inorganic semiconductor. This technology is the way to hybrid solar cells. The solar cells of next generation will be highly useful. For

this nanotube structure is highly responsible. In this tube electric charge upto 100 million times can flows. Now, silicon is used as solar light absorber these days scientists discovers carbon nano tubes to improve the efficiency of solar cells. Scientists are successful in fixing the carbon nano tubes in polymer matrix on nano scale. By this technique, we can set carbon nano tubes in complex networks by decreasing the essential cost of nano tubes. Nano tubes are used in very less quantity. The solar cell made by this solution is highly efficient. This means that no costly equipment is used for this. Therefore, there is an extraordinary efficiency of flow of charge in Nano network design with traditional speed as compared to carbon nano tubes. Photovoltaic cell depends upon light for production of electricity. So, the production of electricity is very less in bad weather conditions. Researches are trying to make solar cells which works in all weather conditions. In rainy season, the dust from solar panel is washed away, so there efficiency can be increased. The salt particles are present in rain drops which divides in positive and negative ions. With this, chemical science researches changes the graphine to thick carbon sheet. The electrons of graphine attracts the positive charge ions, with the result of which positive and negative charge layer separates. These layers helps to store energy like a capacitor. By keeping these points in mind, scientists put graphine in a dye sensitive solar cells. This is a low cost thin film solar cell which is placed on transparent indium background with tin oxide and plastic. The efficiency of production of solar electricity from solar energy obtained from these cells is about 6.53 percent. So, the production of electricity for a long duration in adverse weather conditions can be done in near future.

CONCLUSION

Solar power generation has been developed as one of the most demanding renewable source of electricity. It has several advantages compared to other forms of energy like fossils fuels and petroleum deposits. It is an alternative which is promising and consistent to meet the high energy demands. Though the methods of utilizing solar energy are simple, yet need an efficient and durable solar material. Technology based on nano crystal QD of semiconductors based solar cell can theoretically convert more than sixty percent of whole solar spectrum into electric power. The polymer based solar cells are also a viable option. However, their degradation with time is a serious concern. There are various challenges for this industry, including lowering the cost of production, public awareness and best infrastructure. Solar energy is the need of the day and research on the solar cell has a promising future worldwide.

REFERENCES

- [1] Choubey, P.C., Oudhia, A. and Dewangan, R. (2012) A review: Solar cell current scenario and future trends, recent research in science and technology, 4, 99-101.
- [2] (15-16) energy from the Sun, Student guide. National energy education development project (NEED).
- [3] Rana, S. (2013) A study on automatic dual axis solar tracker system using 555 timer. International journal of scientific and Technology research, 1, 77-85.
- [4] Wall, A (2014) Advantages and Disadvantages of solar energy. Process industry forum, 7 august 2013. Web. 2 February 2014.
- [5] Whitburn, G. (2012) exploring green technology. fundamental advantages and disadvantages of solar energy.
- [6] Types of solar panels, Green energy. Published 22 April 2015.
- [7] Seethi, V.K., Pandey, M. and Shukla, P. (2011) use of Nanotechnology in solar PV cell. International journal of chemical engineering and applications 2, 77-80.
- [8] Hoppe, H. and Saricificti, N.S. (2008) polymer solar cells. Advances in polymer science, 214, 1.
- [9] Yogi Goswami, D. and Keith, F. (2007) Handbook of energy efficiency and renewable energy. (RC press, Boca Raton)
- [10] Jayakumar, P. (2009) solar energy resource assessment Handbook. Renewable energy corporation network for the Asia Pacific.
- [11] Chu, Y. and Meisen P. (2011) review and comparison of different solar energy technologies. Report of global energy network Institute (GENI), Diego.
- [12] Ina, Y. and Gader, P.F. (2014) nature communications published on 3 october 2014.

Middle Class Milieu in R. K. Narayan's Novel

"The Financial Expert"

Sarita Goyal,

Asstt. Prof. of English,

Vaish College, Bhiwani

Abstract

Literature happens only in a milieu determined largely by societal forces, culture and social ideologies, though we cannot ignore the fact that the most immediate setting of a work of literature" is its linguistic and literary tradition, and this tradition in turn is encompassed by a general cultural climate." The milieu of a work of art, novel in particular, focusses attention not only on its social determinates but also on the artistic method by which it is conceived. In a work of fiction, milieu has a role to play, most commonly, a reflective or supporting role. It enhances the nature of the action and the qualities of the characters. Sometimes it may be a means of placing a character in a society. It may generate a climate which plays a significant function in the plot.

R.K. Narayan's characters have been created by his fertile imagination and minute observation of life. Characters are placed in the context of their social milieu, they can't be viewed in isolation. The middle class society in Narayan's novel, "**The Financial Expert**" gets reduced to individuals as individual in the real world is the end - product of the society.

Keywords : milieu, cultural climate, middle class, social milieu.

Milieu, in fact, has paramount importance in a novel or a story. In R. K. Narayan's novels, this milieu is determined by the geographical locale and the inner milieu of the character's mind. In his novels, milieu is composed generally of middle-class people. The milieu in the congested localities of Malgudi has a definite impact on the mental make-up of the middle class individuals like, Margayya, the protagonist of the novel, "**The Financial Expert.**"

The internal milieu in Narayan's novels is composed of the typical middle class ideology which is reflected in and by the actions of the imaginary characters. The ideology contains craze for self, power and status in the society, moral duplicity, social respectability and self-consciousness Margayya, the self - centered hero, has lofty ambitions &

materialistic outlook. In order to realize the goals of becoming rich and possessing status and power, he discards the cherished values and norms of the middle class to which he belongs.

Milieu in R.K. Narayan's novel is essential to the presentation and understanding of the characters because there is a close correlation between life and art. The Writer's fictional world is based upon a single small growing town named Malgudi in the south. It is largely made up of the middle class and its norms and values.

The middle class milieu provided consciously by the writer remains in the background but it is significant in illuminating the characters and defining their actions. The middle class enjoys a modicum of economic independence, security and status. But beset with the problems of growing self consciousness, rising expectations and insatiable longing, they find themselves in perpetual struggle to rise higher in the social hierarchy.

The typical middle class milieu consists of craze for pelf, power and position, a hypocritical attitude towards love and sex, a strong urge for domestic peace and harmony and a superficial faith in religious dogmas and rituals. It also lies in maintaining social respectability and honour, personal or familial, by all means. Margayya, in the novel, "**The Financial Expert**", stands for all the persons of the middle class who in his personal endeavour to a rapid social ascent alienates himself, and suffers in the process and becomes miserable and pitiable creature. This simple yet clever man has an inborn faculty for making money multiply. To him, it is money only that matters in his life.

Margayya's journey from rags to riches is the journey of any typical ambitious middle class man, "Every Rupee, Margayya felt, contained in it seed of another rupees and that seed in it another seed and so on and on to infinity" (p. 94) The business of this "**Financial Mystic**" (p. 102) gets collapsed within a few days and he has to declare himself insolvent. The "**Financial Wizard**" (p.7) again becomes a petty money-lender. This fortune wheel moves from the ordinary to the extra-ordinary and to the ordinary again which, in Narayan's fictional world, is a typical middle-class phenomenon. His heroes, push themselves irresistibly towards their motto of social status, wealth, name, fame and power, love and social security and soon and so forth.

The middle class society in Magludi, as we see in the novel, "**The Financial Expert**" is torn between two worlds: One is essentially traditional and the other is relatively modern. The true nature of the relationship of Margayya with his brother is summed up in these lines:

"It was a relationship essentially thriving on a crisis. The moment that the crisis was over, the two families fell apart." (p. 143)

The relationship between Margayya's family and that of his brother's throws light on the fast changing values and norms of the society. Margayya avoids his brother fearing that they may depend on him or demand anything from him.

The relationship of Margayya and his son is also a sort of love hate relationship which also emphasizes on the milieu of middle class. The clash shown between the father and the son is the clash between the old and the new values of the middle class society.

Women characters in "**The Financial Expert**" like other novels of R.K. Narayan, are traditional and fully domesticized. They uphold the middle class tradition of loyalty and duty to husband and caring for their children." (p. 14). whereas Margayya ignores Meenakshi, his wife and scolds her also over petty issues. Middle class women, despite being neglected and exploited, remain docile and submissive. His son Balu's wife, Brinda also shows extreme self-control and reticence over her husband's infidelity.

In the novel, Magludi is a microcosm of the middle class Indian milieu in turmoil and transition. It presents a world still clings to the old crumbling traditions; comparison of horoscopes, joint families, parents settled marriages and the propitiation of gods and goddesses. The simple and placid life of an average individual in a middle class family has begun to feel the tremors of the new waves. The western style of living, the opening of cooperative and other banks, the Lawley Extension with its huge bungalows, interest in pornography, intoxicants and women are the stark realities of the town.

In the fast growing materialistic world, non materialistic things lose charm & sanctity. The traditions in the middle class families have begun to be performed as mere formalities. Horoscope matching has proved a hollow convention in the novel. Margayya performs rituals as formalities and sometimes out of fear-another characteristic of the people of middle class.

In the middle class milieu of Narayan's novel, love and romance are pursued just for social upliftment- a means to rise to some extra ordinary position in the society.

In "The Financial Expert", R.K. Narayan has used the language of the middle class people to heighten the effect of the middle class milieu. As he deals with the people of middle class, so he uses plain English. He lends depth and interest even to the bland expressions. His English is austere and pretends no sophistication.

Milieu in Narayan's novels can be the result of a linguistic manipulation. In the first part, the tempo of the narrative is slow. It is as slow as Margayya's financial progress. It gathers momentum after he becomes a financial wizard.

The middle class people are very cautious about the opinions of others. "What will people say?" "What others think?" When Margayya's son Balu fails in S.S.L.C., Examination, he feels ashamed: "How am I to hold up my head in public? What will they think of me? What will they say of my son?" (p. 113) when Margayya has to revert to his petty money lending business, he asks Balu, his son to sit in front of the cooperative Bank under the banyan tree. But Balu replies: "How can I go and sit there? What will people think?" (p. 178) This aspect indicates towards the middle class milieu in the novel. There is no dichotomy between the real middle milieu and the imaginary middle class milieu of Narayan's novel.

The conflict in the milieu remains at the individual level. The ultimate hall-mark of his writing is that the routine of middle-class existence becomes a value system rather than a drab monotony. Novy Kapadia rightly remarks that "The universal and widespread appeal of R.K. Narayan is due to the predominant middle class milieu in all his novels."² But it can be said that he has pressed highly upon the inner milieu rather than the outer milieu or the physical world, the Malgudi world. The inner milieu has its correlate in the outer milieu in the form of middle class tendencies as they shape the destinies of the individuals moving from experience to experience. To quote William Walsh: "Narayan writes chiefly about the Indian middle class because he is a member of it, and it is the class he understands best."³ His characters display independent attitudes and critical existence but there is always an intrinsic tension between this and all pervading shackles of tradition and custom.

References

1. R.K. Narayan, The Financial Expert (1952, rpt. Mysore : Indian Thought Publications, 1958)
2. Novy Kapadia, "Middle class Milieu in R.K. Narayan's Novel" in Common Wealth Fiction, Vol. 1 ed. R.K. Dhawan (New Delhi : Classical Publishing Co. 1988), p. 147
3. William Walsh, R.K. Narayan : A critical Appreciation (London Heinemann, 1982), p. 8.



Revelation of Human Bonds in Anita Desai's Novel The Zig Zag Way.

Punam Verma
Asstt. Prof. of English
Vaish College, Bhiwani.

The novel *The Zigzag Way* belongs to the author's mature phase. It was published in 2004. This is her latest novel, and it differs from her earlier novels in that, the novel is set in Mexico. Anita Desai presents the Mexican locale in her supremely luxuriant prose. The novel blends history, mythology, superstition and sense of mystery. The study seeks to examine the realities of immigration, exploitation, subjugation, slavery, colonization, displacement and a search for space and identity. Anita Desai sets her eyes on a new continent, Mexico, away from India. Anita Desai has abandoned India to write a novel about Mexico. Anita Desai, whose novels are typically set in her native India, brilliantly entertain an atmosphere, a scene, a moment in time but not just the superficial dazzle of a crowded market or a conversation in a hotel bedroom. External meaning of. She writes about the edginess, confusion, sensations that lie beneath.

The Zigzag Way is divided into four sections. The first concerns Eric, a young American who follows his girlfriend Em into Mexico. Because she's busy with her research, Eric is left alone most of the time, and ends up leaving Mexico City to travel to the Sierra Madre Oriental, where he hopes to find out more about his family. As he discovered shortly before his trip, his father was actually born in Mexico, and his grandfather was a Cornish miner who immigrated there in the 1910's.

The second section mostly concerns Doria Vera, a woman known as the "Queen of the Sierra." Dona Vera is a renowned expert on the Huichol Indian, and her house, the Hacienda de La Soledad, is a research centre that attracts students and experts from all over the world. However, as we soon find out, not everything about this woman is as it seems.

The third section tells Betty's story. Betty is Eric's grandmother, and as a young woman she immigrates from Cornwall to Mexico to marry Davey and settle in one of the mining communities. As you can imagine, the process of adapting to a new culture and way of living is not exactly easy.



Finally, in the fourth section, set in the Dia de los Muertos, we return to Eric, and the three previous storylines more or less come together in a ghostly finale.

The study attempts to explore the female characters of *The Zigzag Way* and bring out a clear-cut perception of their feminine strength as depicted by the author. Jasbir Jain opines that "Anita Desai's novels are about the preoccupations of a woman in a male world, and in some measure they can be viewed as novels of domesticity as it is defined in a patriarchal society."

But the study shows that the present novel *The Zigzag Way* presents women characters who may not be said to accede to the above statement. The female characters presented here are extremely tenacious and strong. Each one is enumerated in the present study. It is a well-known fact that women had in past remained dependent on men. Men were considered the sole bread winners. But in modern days the proportion of women who are getting educated has increased, and therefore, the employment opportunities have also increased. One can also find that women-headed households are on the rise, where women meet most financial needs of the household.

Emily Hatter, called Em in the novel illustrated the amount of wide-spread change that now characterize women's lives. Such changes have created a deep need in women for self-recognition. An affluent environment also has ushered in great freedom. Em knows that she is an independent self. Em is presented as a strong woman and she is in control of her life. She is academically minded and she always moves with a preoccupied air about her. The soberness in her sets her apart from the other girls whom Eric has encountered. Em is a sincere girl and she has varied interests. Em possesses an aptitude of devoting her undivided attention to the subject on hand. This is her strong point and it helps Eric to brace up his own vacillating and indeterminate nature. She is an apt support for the different Eric. Em exudes a warm, sweet, self-confident and poised personality. Em is a strong-willed, and determined personality, quite unlike the female protagonists of Anita Desai's initial novels.

Em embarks on a study tour to Mexico. She has exhausted the resources for her research at Boston. Therefore, she wishes to carry her research study into the field. Eric finds himself accompanying her. The author depicts Eric as a person who does not possess an independent



identity. He depends on Em for support. The novel reveals that Eric feels like this “usually it was steady to think of Em....”

There is more than one instance in the text to reveal that Em was the superior of the two. When Eric is assailed by confusion, he feels: “If Em were here, he thought, she would have understood and grasped the whole situation in no time.”

Now Em undertakes a journey to Merida, all by herself, in fulfillment of her research studies. She receives great certainty and confidence from her work. Therefore, she strikes the reader as a wise girl with a deep sense of forethought.

Human experience amply evidences to the fact that when people devote themselves to any worthwhile tasks, it lends a worthiness and meaning to life. The devotion to a reputable mission imparts a sense of service. Dona Vera devotes herself to the education and upliftment of the Huichol Indians, a diminishing tribe. She emerges as a powerfigure. In spite of her foreign identity. Dona succeeds in accumulating power.

Dona Vera undertakes the journey to Mexico through her marriage to Don Roderigo. The novel reveals that she has almost outgrown her prospects at cabaret dancing and such other professions. Dona Vera is an opportunist. She comes forth as a domineering and gritty woman. Although she is a victim of dislocation, wherever she goes, she identifies herself with the culture of the land and empowers herself.

As the plot develops we see several facets of her life. Eric's efforts to make sense of both Mexico and his family past are counter-pointed with Vera's story. As Eric furthers his explorations in Mexico, he comes to find out more about the legend of Dona Vera and her escape to Mexico from Nazi Austria with a foreigner. A poor girl in 1930s Vienna, she achieved minor success on the stage, then married Roderigo. He was “large, foolish and fumbling”, but helped her escape from the Austrian capital, where her father had been beaten up by anti-Nazis. In Mexico, Vera is obsessed with the aloof Huichol warriors and is building her life around them – or around an idealized vision of noble savages. Does she help or exploit them? Although she embodies the exploitation of the people and land of Mexico, she pays lip service to their conservation, giving lectures at the Centre for Anthropological and Ethnographic Studies.



The novel reveals that she is an Austrian exile, a refugee from the II World War. Dona has been exploited as a dancer. This exploitation denotes the realistic aspect of the social malaise of the exploitation of helpless women. But in Mexico she has transformed herself into Queen of Sierra. She has forged a relationship with the Huichol Indian and has exerted herself to protect their culture. She has conscientiously worked hard towards their upliftment. She creates a base for the marketing of their hand-made objects, embroidery and artefacts. Her endemic adaptability to mingle with the tribal Huichol Indian, transforms her into an awe-inspiring personality. Vera possesses a distinct sensitivity towards the needs of the Huichols. The novel reveals that she is not an educated woman. But her mind is singularly receptive to the work regarding tribals that is being accomplished throughout the world.

The novel realistically presents the details of Vera's everyday life, her drudgery in order to work for upliftment of the Huichols. Although the world has moved ahead and has experienced transformation, yet there exist people who remain in blind beliefs and superstitions. Such are the Huichols. Vera redeems the Huichols who have been marginalized by the mining company. But the people around there, treat Vera as a controversial woman.

The novel records the subliminal development of Vera from an ordinary dancer to a woman of great popularity. Vera has given the Huichols the service of a redeemer. In this act, she has gratified her own need for self-esteem. This is due to the fact that she is a migrant in Mexico. Her Hacienda is a centre for studies on the Huichols helps to raise her on a very high pedestal.

But Dona Vera suffers an amount of alienation and detachment from the community. She is uprooted from her own motherland. She has led a wayward life and she is uprooted from moral values as well. Now loneliness assails her. She cultivates eccentricities and thus she lives separately in the hacienda. She can identify herself with the Huichols as they are uprooted individuals like her. Her nightmare reveals that there is a deep void in her heart. She has developed detachment from society as she has not received adequate affection and emotional reinforcement from the individuals she expected. Thus she has developed the peculiarity of hating anybody who comes to her hacienda without the august purpose of studying her Huichol. This unhealthy alienation from



society leaves Dona Vera sapped of her emotional vitality. She remains an oddity with her own bunch of rules and regulations governing her territory.

However, the stereotypical role of the weak or dependent woman is totally absent in the present novel. Here, the woman is the repository of all positive values. Another such woman is Eric's mother. She is bred in the fishing village of Maine and is the sole daughter in a family of sons. The novel reveals that, "... she made it evident that while she cooked, cleaned and washed up for the others, she had a mind of her own, separate and intact." Her assertiveness and self-confidence can be witnessed in her insistence on Eric's education." She chooses to send Eric away to school. Eric, the Harvard scholar is recognized as an oddity in a lineage of vigorous Maine fishermen. Eric's mother uproots him from such a milieu and plants him in a boarding school for education. She exudes great pluck when she chooses to be different in two instances. She had insisted on marrying the English stranger who had arrived in their village; and when she sent Eric way to school, "The small, progressive school..." Eric's mother indicates an extraordinary perseverance and strength, a superb intelligence and vigilance, when she questions Em about all her academic pursuits. This behaviour depicts an unusual cognizance of the world outside her domestic periphery.

Betty Jennings is another lady of grit and determination. She struggles against all odds and yet does not give up. Through her mundane existence, Betty expands and grows in resilience. She is in search of her individuality which is reflected in her love for freedom.

Betty is an educated girl; she has attended the Chapel school in Delabole, Cornwall. She is a dutiful and illustrious girl. She is imbued with a fertile sense of imagination and sensibility. Her letters written back home to her sisters and father are evidence to the fact that she is fastidious. She spurns David's attempt at curbing her freedom. The novel reveals a vestige of male domination in David's irritation at Betty's independent ways. Betty expresses her desire to be of some help to the poor classes. She communicates her philanthropic tendency in her awareness of the potter's struggle for livelihood. Betty experiences no uneasiness when she buys his cheap earthen ware. David's snobbish response does not deter her.



The uniform acquisition of identity and individuality through various means as pointed above surpasses any discriminations. These female characters possess a self-appraisal of their status as individuals. These characters are not neurotic, but they are in conscious control of their lives. The Zigzag Way presents emancipated female characters. The patriarchal forces or any other force cannot persecute them. They defy such forces. These women would like to redefine their identities and they struggle when challenged. The male characters are not evil. But their indirect attempts at curbing the women render them powerless. This oblique oppression is manifested in their incapacity to comprehend their women's search for identity. The idealistic tendencies of these women pose a challenge to their men. The author employs the male characters- Eric, Don Roderigo and David to ignite the women's urge to move beyond themselves. In Em's it is her academic pursuit, with Dona Vera, it is her service to the Huichol and with Betty, it is her drive towards the oppressed class. The picture portrayed is not of weakness or neuroticism, but that of tenacity and a power to nourish others around them.

It is Betty's story that produces the book's real momentum. Like both Dona Vera and her grandson many decades later, she is entranced by the spirit of Mexico. Betty's story of adjustment to her new life in this strange land is so full of innocence, wonder, discovery and eventually drama and sadness that it could have been a much longer novel.

The study of the novel reveals the capabilities of the woman towards suffering and adaptability. It also examines the woman's power to transmute her surrounding in such a way that it serves as a site for enhancing herself and her confidence. The fact emerges from the study that women contain more prodigality and depth than men. Patriarchy which symbolizes male authority in the family and society, at times, tends to become ineffective. In *The Zigzag Way*, the members who represent patriarchy become puppets at the mercy of the women. This is seen both in Eric and some extent in Don Roderigo. Male chauvinism seems to be utterly destroyed. Thus the researcher has presented the realistic study of the women characters in the novel.

Another aspect of realism studied in *The Zigzag Way* is the phenomenon of the Huichol Indian. Mexico had been economically exploited by the Spanish. The following lines from Carl



Sartorius' book, *Mexico and Mexicans*, 1959, have been quoted by the author: "When at the beginning of the sixteenth century the Spaniard landed in Mexico, they first met with the native of Sempollan, not far from the sea... the chiefs wore silver and gold ornaments that attracted the rapacious glances of the white adventures. Their first question was 'Whence comes this?' The natives pointed to the west. When, soon after, the ambassadors of Montezuma brought rich presents of the precious metals adorned with emeralds, in order to induce the unbidden guests to turn back, they were confirmed in their opinion that there were literally golden mountains in the interior, and the cry was 'Forwards' !"

These lines reveal that the ancient and immaculate glory that had flourished on mining, was seized by the Spanish encounter. The Mexicans had tried to understand these alien invaders. They strove to satisfy them with precious gifts, but the invaders were bent upon establishing their foothold. Thus the Spanish hegemony had imposed the Spanish language upon the land. With the war of independence, the struggle against this foreign domination had come to an end.

The Spanish invaders dislodged these native dwellers and cast them out of their land. Therefore, the Huichols may be viewed as a marginalized group. The mining industry had exploited and destroyed the land by continuous mining, thereby they had destroyed everything that the natives had cherished as divine. They are the primitive population of that place. They, as a tribe have been silenced and kept ignorant by the domineering Spanish, that is represented by the mining industry. Throughout the history of the world, there have been many instances of enslavement and torture of different using them as labourers or as beasts of burden. This kind of exploitation of the Huichols is very touching. The destruction of these people and their culture has been literally disregarded. It is natural that other forms of destruction claim attention. The fate of these Mexican aboriginals is miserable. They have experienced exploitation and injustice from the mining industries. The Huichols had cultivated occult practices and superstitions. As elsewhere, they were in a state of physical and psychological vulnerability.

Oppressive conditions have left devastating effects on their personality. They experience fear and insecurity at meeting strangers. This is witnessed in their movements. This is due to the



domineering oppression to which they are subjected since a long time. This insecurity and fear has become second nature to them. The Huichols who are present at the hacienda are shy and withdrawn. They speak their own native language. Their depiction is very realistic. They do not even speak broken English. The oppression has also caused in them a suspended sense of individuality. They are unable to think or reason anything. They are pathetically disintegrated. They are innocent and harmless. There was a state of powerlessness and helplessness. They are torn from their home and culture. Their religious beliefs and practices are also snatched away from them. As Dona Vera accuses, the miners sought to dehumanize and enslave these people. They also erased their traditions and culture. Therefore, these people experience a sense of rejection, low self-esteem and inferiority complex.

At the same time, this diminishing tribe has not relinquished its culture and traditions. They led a community life, as it gave them a sense of security. Harmony and cohesiveness was maintained. Brotherhood and social affinity was practiced, as they left a deep need to hold on together. The Huichol Indians felt it essential to understand the universe that was around them. Their existence was closely linked to the elements of nature. Perhaps their survival depended upon it. The peyote cactus held great significance for them. Therefore, they trudged miles together in search of this magic mushroom. Their religion was related to the peyote cactus and it constituted an important aspect of life for them. Their life was permeated with such religious rites and customs. The Huichol also upheld a strong conviction in spiritual upliftment. It is true that only spiritual upliftment can to some extent minimize the damage done to their culture. Thus, the Huichols are seen as a group who cling to their religious traditions. They asserted their faith by traveling long distances on foot in search of the peyote cactus. The author portrays the festival of the dead, which happened to be a ritual associated with the past. The festival presents a realistic presentation of the essence of Mexican life.

The Zigzag Way denotes a total departure from the passive role of women with a limited space and influence on the outer world, to a very positive role. So, with the presentation of female characters in such a positive way, the reality of the modern society can be evidenced. The present



study finds that the depiction is very much in accordance with the present reality. The present-day reality reveals that women are dynamic. They are conspicuous and invincible. They have emerged out of their domestic realm. The study reveals that the reality of woman as the fountain of strength and resilience is firmly rooted and established. Thus, the study finds that The Zigzag Way spurns the stereotyped depiction of the woman as docile and dependent.

REFERENCES

- Alter, Stephen and Wimal Dissanayake, (1991). "A Devoted Son by Anita Desai." The Penguin Book of Modern Indian Short Stories. New York: Penguin Book.
- Asha Kanwar, (1989). Virginia Woolf and Anita Desai: A Comparative Study, New Delhi: Prestige.
- Gopal N.R. (1995). Virginia Woolf and Anita Desai: A Comparative Study, New Delhi: Prestige.
- Gopal, N.R. (1995). A Critical Study of the Novels of Anita Desai, New Delhi: Atlantic Publishers & Distributors.
- Shrivastava, Sharad, (1996). The New Woman in Indian English Fiction: A Study of Kamala Markandaya, Anita Desai, Namita Gokhale & Shobha De, New Delhi: Creative Books.
- Usha Bande, (1988). The Novels of Anita Desai: A Study in Character and Conflict, New Delhi: Prestige.

Hemodynamics indicators of pulsatile unsteady flow of blood through stenosed artery filled with porous medium under the influence of magnetic field and slip velocity

Dr. Mahender Singh*

Dr. Seema Bansal**

Sanjay Kumar***

Abstract: The present paper deals with the pulsatile flow of blood through a stenosed artery under the influence of static magnetic field and slip velocity. Numerical solution is found by Frobenius method. The effect of non-dimensional parameters on hemodynamics indicators are discussed through graphs.

Keywords: Newtonian fluid, Stenosed artery, Slip velocity, Frobenius method.

Introduction: Many researchers Mazumdar(1992), Halder and Ghosh(1994), Layek and Mukhopadhyay (2008), Sharma and Bansal (2012, 2014) studied the blood flow through stenosed artery under the various physiological conditions. Sanyal *et al.* (2007) studied the characteristic of blood flow in a rigid inclined circular tube with periodic body acceleration under the influence of a uniform magnetic field and conclude that velocity increases with acceleration due to gravity, inclination and womersley parameter and decreases with magnetic number. Mwanthi et al. (2017) considered the unsteady, incompressible, viscous and Newtonian blood flow through an inclined circular tube under MHD effects and concluded that with the increase of Hartmann number leads to decrease the axial velocity of the blood. incompressible, viscous and Newtonian. Singh et al. (2018) dealt with the velocity profiles of blood flow through stenosed artery under magnetic effects and slip condition. El-Shahed (2003) studied pulsatile flow of blood through stenosed porous medium in the presence of periodic body acceleration.

In the present paper we considered the blood flow through a narrow stenosed artery filled with porous medium subject to a slip velocity at arterial wall. Effects of various non-dimensional parameters on hemodynamic indicators are discussed and shown by graphs.

Formulation of Problem

We dealt with axially symmetrical cylindrical tube (stenosed artery) with axis coinciding with z-axis. Blood is taken as Newtonian, incompressible and viscous. A transverse magnetic field is applied and a slip velocity is consider at arterial wall. The basic equations of motion in the cylindrical co-ordinate system(r, θ, z) are given by

* Associate Professor, Department of Mathematics, Shri Jagdishprasad Jhabarmal Tibrewala University, Jhunjhunu, Rajasthan.

** Assistant Professor, Deptt. of Mathematics, Vaish College, Bhiwani, Haryana.

*** Reserch Scholar, Department of Mathematics, Shri Jagdishprasad Jhabarmal Tibrewala University, Jhunjhunu, Rajasthan

$$\rho \frac{\partial u}{\partial T} = -\frac{\partial p}{\partial z} + \frac{1}{r} \frac{\partial}{\partial r} \left(\mu r \frac{\partial u}{\partial r} \right) - \sigma B_0^2 u - \frac{\mu}{K} u \quad (1)$$

Where, u is the axial velocity of blood, p is the pressure of blood, ρ is the density of blood. The viscosity of blood is Hematocrit concentration dependent given by Einstein as $\mu = \mu_0 [1 + \beta h(r)]$

where, μ₀ is coefficient of viscosity of plasma, β is a constant and h(r) is the hematocrit concentration which is govern by the equation

$$h(r) = H_m \left[1 - \left(\frac{r}{R_0} \right)^n \right] \quad (2)$$

Here, H_m is maximum hematocrit concentration at the center of tube. The shape of the stenosis is shown in Figure 1. and is determined as

$$R(z) = \begin{cases} R_0 - \frac{\delta}{2} \left(1 + \cos \frac{\pi z}{L} \right) & -L \leq z < L \\ R_0 & \text{otherwise} \end{cases} \quad (3)$$

Where, R₀ is the radius of normal tube, 2L is the length of stenosis and δ is the maximum thickness of the stenosis

Geometry of the Model

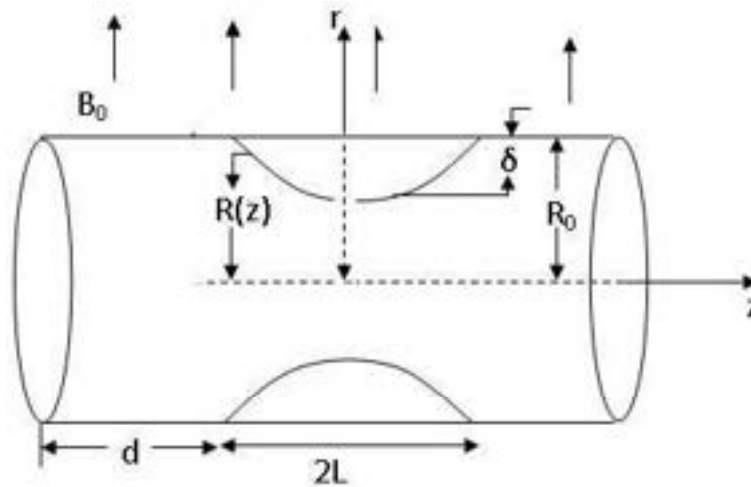


Figure 1

The boundary conditions are

$$\begin{aligned} \frac{du}{dr} &= 0 & r &= 0 \\ u &= u_s & r &= R(z) \end{aligned} \quad (4)$$

Where, -σB₀²u is the magnetohydrodynamic force.

Putting the values of v, μ and h(r) in the equation and using the length and time scaling parameter, the governing equation reduced to

$$\frac{\rho R_0^2}{t_0 \mu_0} \frac{\partial u}{\partial t} = \frac{-R_0^2}{\mu_0} \frac{\partial p}{\partial z} + \frac{1}{y} \frac{\partial}{\partial y} \left[(a - ky^n) y \frac{\partial u}{\partial y} \right] - \frac{R_0^2 \sigma B_0^2 u}{\mu_0} - \frac{(a - ky^n)}{Da^2} u \tag{5}$$

Where, $t = \frac{T}{t_0}$, $y = \frac{r}{R_0}$, $\beta H_m = k$, $a = 1 + k$

Taking $u(y, t) = U(y) e^{i\omega t}$ (6)

and $-\frac{R_0^2}{\mu_0} \frac{\partial p}{\partial z} = c e^{i\omega t}$

where, c is the amplitude of the pulsatile flow.

Then the equation reduced to

$$\frac{1}{y} \frac{d}{dy} \left[(a - ky^n) y \frac{dU}{dy} \right] - (\alpha^2 i + H^2 + \frac{a}{Da^2}) U + \frac{ky^n}{Da^2} U = -c \tag{7}$$

With $\frac{R_0^2 \sigma B_0^2}{\mu_0} = H^2$, $\frac{K}{R_0^2} = Da^2$, $\alpha^2 = \frac{\rho R_0^2 \omega}{t_0 \mu_0}$

The corresponding boundary conditions (10) and (11) are transformed to

$$\begin{aligned} \frac{dU}{dy} &= 0 & y &= 0 \\ U &= u_s & y &= \frac{R(z)}{R_0} \end{aligned} \tag{8}$$

Method Of Solution

Calculation for Hemodynamics parameters

We have used Frobenius method for the solution of differential equation (7) under the boundary condition (8) and is given by [16]

$$u = \frac{\left(\alpha^2 i + \frac{1}{Da^2} \right) \left(\frac{c}{4a} \sum_{m=0}^{\infty} \lambda_m \left(\frac{R(z)}{R_0} \right)^{m+2} + u_s \right) \sum_{m=0}^{\infty} A_m y^m - \frac{c}{4a} \sum_{m=0}^{\infty} A_m \left(\frac{R}{R_0} \right)^m \sum_{m=0}^{\infty} \lambda_m y^{m+2}}{c_0 \sum_{m=0}^{\infty} A_m \left(\frac{R}{R_0} \right)^m \left(1 - \frac{I_0 \left(\sqrt{\alpha^2 i + \frac{1}{Da^2}} y \right)}{I_0 \left(\sqrt{\alpha^2 i + \frac{1}{Da^2}} \right)} \right)} \tag{9}$$

Calculation for Hemodynamic Indicator Volumetric Flow Rate (Q)

The volumetric flow rate Q of the fluid in the stenotic region is given by

$$Q = 2\pi R_0 \int_0^{R/R_0} u y dy$$

Let Q_0 denotes the flow rate of plasma fluid in unstricted tube ($M=0$ and $H=0$) which is given by

$$Q_0 = -\frac{\pi R_0^3}{8\mu_0} \left(\frac{\partial p}{\partial z} \right)_0$$

where, $\left(\frac{\partial p}{\partial z} \right)_0$ being the pressure gradient of the fluid in unstricted uniform tube.

Thus non-dimensional flow rate $Q = \frac{Q}{Q_0}$ is given by

$$Q = \frac{4 \frac{\partial p}{\partial z} \sum_{m=0}^{\infty} \left(\lambda_m \left(\frac{R}{R_0} \right)^{m+2} + 4au_s \right) \sum_{m=0}^{\infty} \frac{A_m}{m+2} \left(\frac{R}{R_0} \right)^{m+2} - \sum_{m=0}^{\infty} A_m \left(\frac{R}{R_0} \right)^m \sum_{m=0}^{\infty} \frac{\lambda_m}{m+4} \left(\frac{R}{R_0} \right)^{m+4}}{a \left(\frac{\partial p}{\partial z} \right)_0 \sum_{m=0}^{\infty} A_m \left(\frac{R}{R_0} \right)^m}$$

(10)

The expression for the relative pressure gradient can be obtained by

$$P = \left(\frac{\partial p}{\partial z} \right) / \left(\frac{\partial p}{\partial z} \right)_0$$

$$P = \frac{a Q \sum_{m=0}^{\infty} A_m \left(\frac{R}{R_0} \right)^m}{4 Q_0 \sum_{m=0}^{\infty} \lambda_m \left(\frac{R}{R_0} \right)^{m+2} \sum_{m=0}^{\infty} \frac{A_m}{m+2} \left(\frac{R}{R_0} \right)^m - \sum_{m=0}^{\infty} A_m \left(\frac{R}{R_0} \right)^m \sum_{m=0}^{\infty} \frac{\lambda_m}{m+4} \left(\frac{R}{R_0} \right)^{m+4}}$$

Calculation for Hemodynamic Indicator Wall Shear Stress (WSS)

The shear stress at the surface of stenosis is described by

$$\tau_s = - \left[\mu(r) \frac{du}{dr} \right]_{r=R}$$

$$= -\mu_0 \left[a - k \left(\frac{R}{R_0} \right)^n \right] \left[\frac{\sum \left(\lambda_m \left(\frac{R}{R_0} \right) + 4au_s \right)^{m+2} \sum (m+1) A_{m+1} \left(\frac{R}{R_0} \right)^m}{\sum A_m \left(\frac{R}{R_0} \right)^m} - \sum A_m \left(\frac{R}{R_0} \right)^m \sum (m+3) \lambda_{m+1} \left(\frac{R}{R_0} \right)^{m+2} \right]$$

Also, if τ_N is the shear stress at the wall in the absence of stenosis, then

$$\tau_N = \frac{\mu_0 c_0 e^{i\omega t}}{R_0} \frac{I_1 \left(\sqrt{\alpha^2 i + \frac{1}{Da^2}} y \right)}{I_0 \left(\sqrt{\alpha^2 i + \frac{1}{Da^2}} \right)}$$

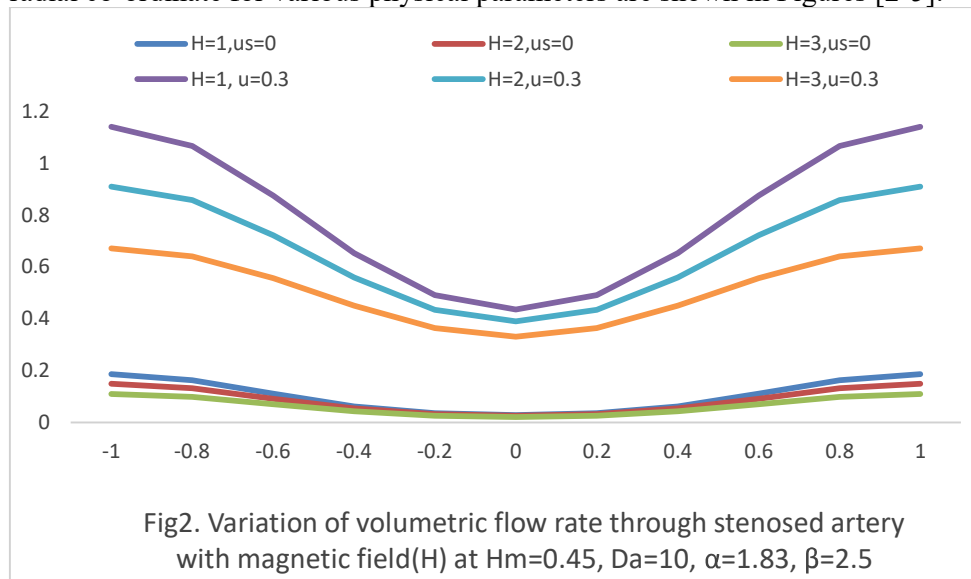
The non-dimensional form of shear stress is now obtained as

$$\tau = \frac{\tau_s}{\tau_N}$$

$$= \frac{c I_0 \left(\sqrt{\alpha^2 i + \frac{1}{Da^2}} \right)}{4ac_0 I_1 \left(\sqrt{\alpha^2 i + \frac{1}{Da^2}} y \right)} \left[a - k \left(\frac{R}{R_0} \right)^n \right] \left[\frac{\sum \left(\lambda_m \left(\frac{R}{R_0} \right) + 4au_s \right)^{m+2} \sum (m+1) A_{m+1} \left(\frac{R}{R_0} \right)^m}{-\sum A_m \left(\frac{R}{R_0} \right)^m \sum (m+3) \lambda_{m+1} \left(\frac{R}{R_0} \right)^{m+2}} \right] \frac{1}{\sum A_m \left(\frac{R}{R_0} \right)^m}$$

data are

Results and Discussion: The expression of volumetric flow rate is found and the plotted for different values of Hartmann number (H), Darcy number (Da), Wormersley number (α) and Hematocrit concentration(Hm). The profiles of volumetric flow rate versus radial co-ordinate for various physical parameters are shown in Figures [2-5].



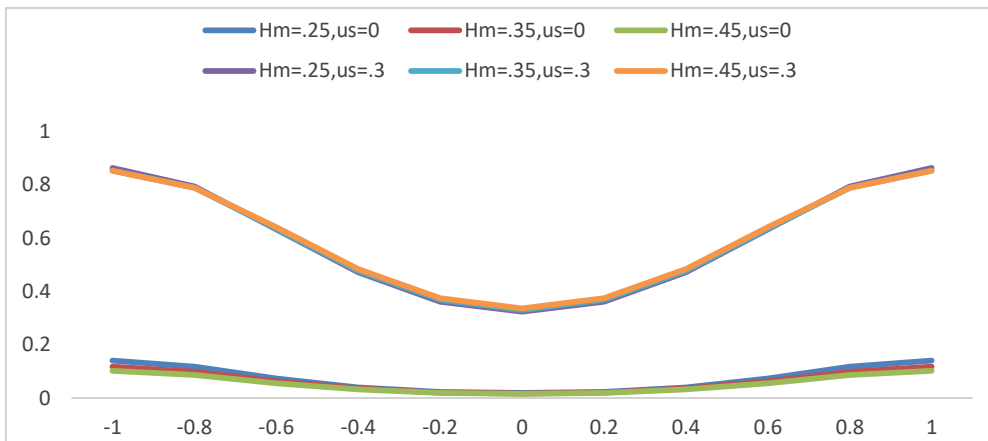


Fig3. Variation of volumetric flow rate in stenosed region with Hematocrit(Hm) at $H=5, Da=10, p=0.5, \alpha=1.83, \beta=2.5$

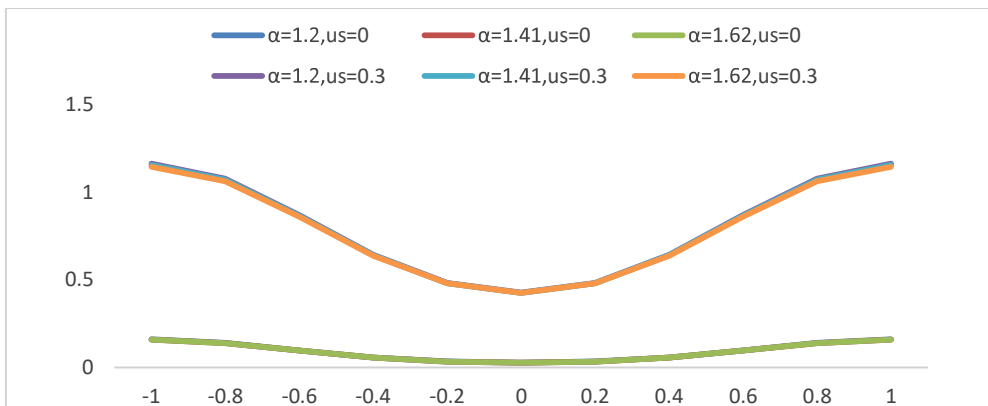
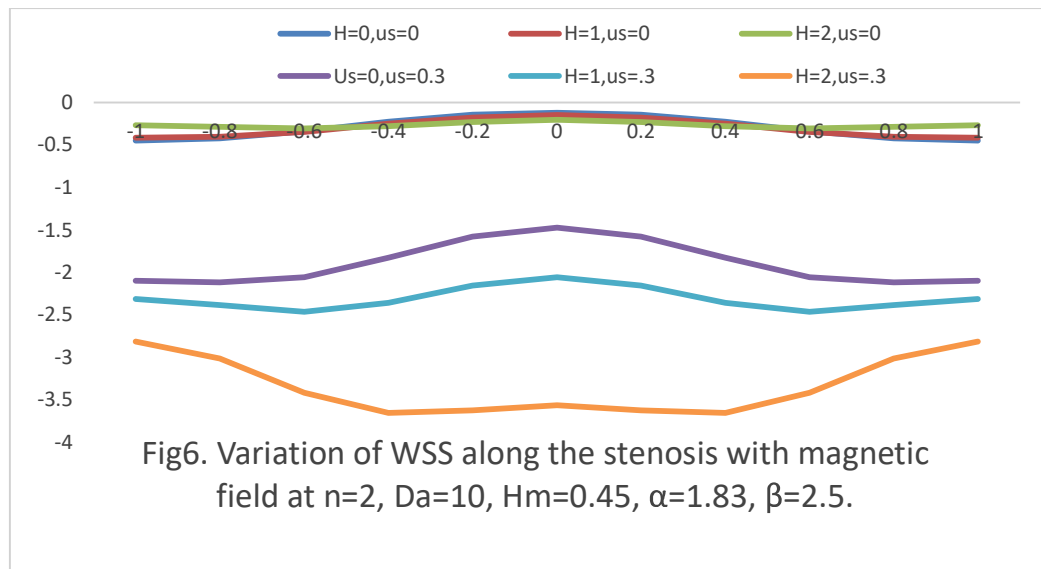
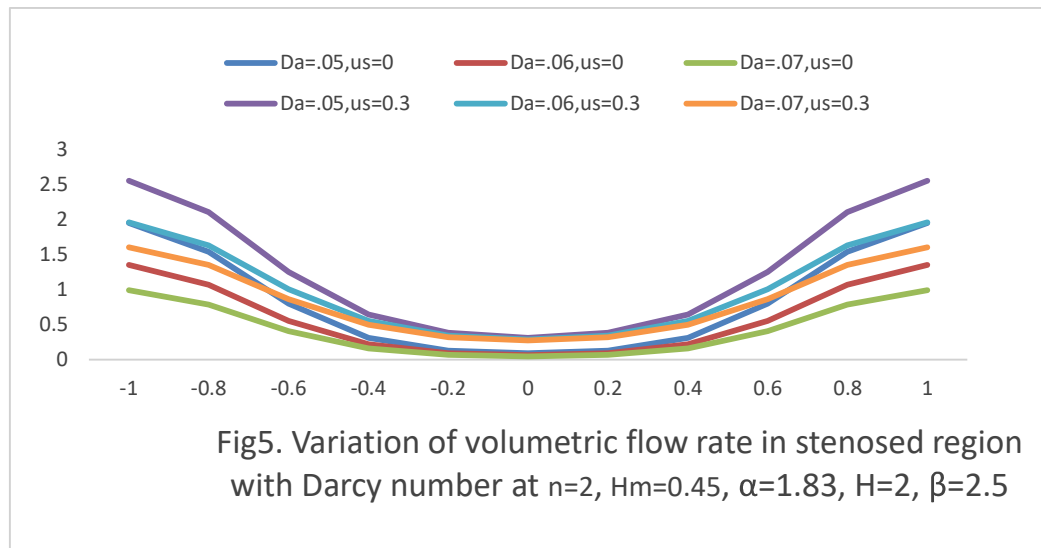
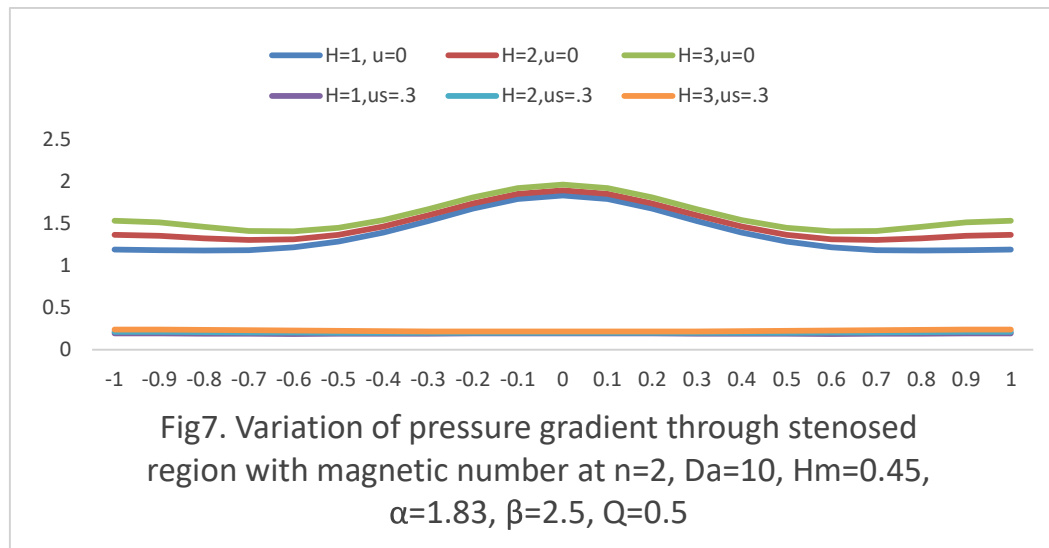


Fig4. Variation of volumetric flow rate in stenosed region with womersely number at $H=2, Hm=0.45, p=0.5, Da=10, \beta=2.5$





In figures 2 to 5, it is observed that volumetric flow rate decreases with the increase of magnetic field, Hematocrit concentration, Womersley number and Darcy number in both the cases, with slip or without slip at arterial wall. The Slip velocity fairly increase the volumetric flow rate as compare to the no-slip at the wall of artery. WSS and WSSG increases with the increase of magnetic field which is in good agreement with earlier results.

Conclusion

The magnetic field, Hematocrit concentration and Darcy number is more effective than Womersley number in volumetric flow rate.

References

1. Bansal, J. L., 1994, "Magnetofluid dynamics Jaipur Pub. House, Jaipur, India.
2. Barnothy, M. F., 1964&1969, "Biological effects of magnetic fields, **1&2**, Plenum Press, New York.
3. Batchelor, G., 1967, "An introduction to fluid dynamics", Cambridge University Press.
4. Fung, Y.C., 1984, Biodynamics circulation, Springer-Verlag, New York . 29
5. Halder, K and Ghosh, S.N., 1994, Effects of a magnetic field on blood flow through an intended tube in the presence of erythrocytes. *Ind. Jr. Pure and Appl. Math.*, **25** , 3 , 345-352.
6. EL-Shahed, M., 2003, "Pulsatile flow of blood through a stenosed porous medium under periodic body acceleration", *Appl. Math. Comput*, **138**, 479-488.
7. Haldar, K., 1985, "Effects of the shape of stenosis on the resistance to blood flow through an artery", *Bull. Math. Biol.*, **47**, 545-550.
8. Halder, K. and Ghosh, S. N., 1994, "Effects of a magnetic field on blood flow through an intended tube in the presence of erythrocytes", *Ind. J. of Pure and Appl. Math.*, **25**, 345-352.
9. Layek, G.C. and Mukhopadhyay, S., 2008, "Numerical modeling of a stenosed artery using mathematical model of variable shape", *Int. J. of Applications and Applied Mathematics*, **3**, 308-328.
10. Mazumdar J.N., 1992 , Bio-fluid Mechanics. Word Scientific Press.

11. Mwanthi, V., Mwenda, E and Gachoka, k.k., 2017, Velocity profiles of unsteady blood flow through an inclined circular tube with magnetic field. *J. Advances in mathematics and Computer Sciences.* **24(6)**. 1-10.
12. Prakash, J., Makinde, O. D. and Ogulu, A., 2004, Magnetic effect on oscillary blood flow in a constricted tube. *Botswana Journal of Technology*, April, 45-50.
13. Sanyal, D.C and Maiti, A.K., 1998, On Pulsatile flow of blood through a Stenosed Artery. *Ind. J. Maths.* **40(2)**, 199-213.
14. Sharma, M.K., Singh, K. and Bansal, S., 2012, Pulsatile unsteady flow of blood through porous medium in a stenotic artery under the influence of transverse magnetic field. *J. Korea-Australia Rheology.* **24(3)**, 181-189.
15. Sharma, M.K., Singh, K. and Bansal, S., 2014, Pulsatile MHD flow in an inclined catheterized stenosed artery with slip on the wall. *J. Biomedical Science and Engineering.* **7**, 194-207.
16. Singh, M., Bansal, S., and Kumar, S., 2018, Velocity profiles of pulsatile unsteady flow of blood through stenosed artery filled with porous medium under the influence of magnetic field and slip velocity. *Int. J. Management, IT and Engineering.* **8**, 98-106.
17. Venkateswarlu, K. and Rao, J Anand., 2004, "Numerical solution of unsteady blood flow through an intended tube with atherosclerosis", *Ind. J. Biochemistry & Biophysics.*, **41**, 241-245.

Statistical Analysis on Cyber Crime against Women

Dr. Shruti Rani¹, Assistant Professor (Mathematics), Vaish P.G College, Bhiwani

Dr. Sanjay Goyal², Associate Professor (Mathematics), Vaish P.G College, Bhiwani

ABSTRACT

Information and Internet technology is the axis of global and technical evolution. Over the some last decades information technology has broaden. The World of internet provides each and every individual all the necessary information quickly by communication and share-out tool which makes it the most important beginning source of information. With the help of internet we can look out unknown and communicate with nigh anyone, anytime, anyplace all over the worldwide. The cyberspace has revolutionized the way business movement and conduct work. A good planned and implemented e- commerce system can let down transaction costs, minify inefficiencies, raise better information flow and promote better group action in between buyer and sellers. But at the mean time, certain social, political and economic activities like cyber crimes against women being discovered. Cyber space has wide-eyed doors to cyber criminal and for the most part generally women are on their target. With the advanced of technology the way of conducting crime is becoming more sophisticated and complex. Cyber crime is real threat to the fast growing technology development. The speedy or fast growth of the cyberspace users are drastically enlarged the probability of crimes. Cyber crime is a World-wide phenomenon and generally women are the main soft target of this new form crime. In this paper many issues are discussed like cyber stalking, Harassment via e-mail, cyber defamation, morphing and e-mail spoofing against women. Also this paper is a intentionally efforts to define cyber crime which is a actual warning to women and also some suggestion are discuss to fight against cyber crimes.

Keywords:- Cyber Crime, Information and technology, victim, women

Introduction:-

Nowadays Crime against women is an emerging Challenge and other issues are articulated comprehensively. The biological weakness of women makes her an easy prey particularly to physically domination. She is often a victim of physical violence not only in her home but outside her home .unfortunately; women have been discriminating in all spheres of life in all societies. Various types of crimes are inflicted on them. Rape, wife beaten, sexual harassment etc. Today's a modern woman frequently faces cyber crime. Harassment through electronic mean by sending grossly offensive or menacing information and persistently causing annoyance, injury, insult etc. are some cyber crimes. So an attempt has been made in the research work to analyze the different kind of cyber crimes against women. The present study tries to accomplish the following objective:

- (i) To analyze the different kinds of cyber crimes against women in world-wide especially in India.
- (ii) To study the modern distressing tendency in crime against women.
- (iii) To find out the different types of reasons for crime against women in our country.
- (iv) Also discussing some different to the point applicable data, tables and figures related to this cyber crime against women.

Cyber Crime or Internet crime is a computer oriented crime which includes a computer and a cyberspace .Cyber crime can be defined as “offense which are bounded up against individuals or groups of individuals with the criminal motif to intentionally harm the reputation of the victim or cause physical or mental harm or loss, to the victim directly or indirectly by using modern telecommunication cyberspace such as internet and mobile phone.

Cyber crime against women in India

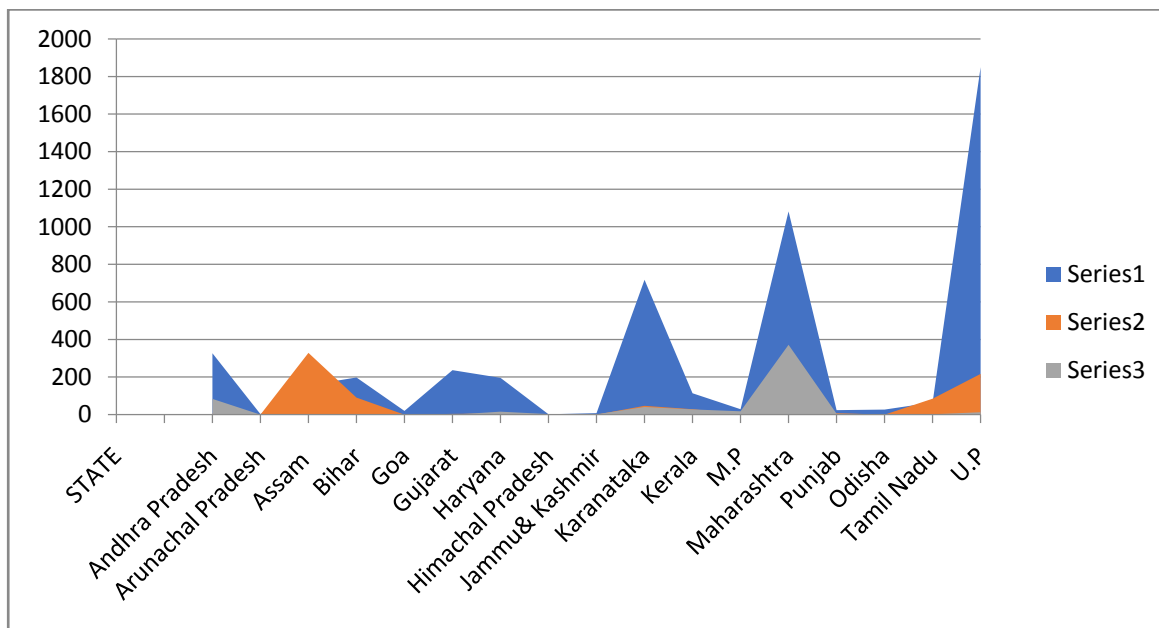
With the increasing economic importance, the degree of criminal actions within the internet is supposed to increase with accelerating speed. Cyber crime against women is most important or an alarming stage and it may constitute a major threat to the security of a person. The World Wide Web permits users to circulate subject matter or messages in the form of text, images and videos. In particular, worldwide spread circulation of such content is harmful for women. In the recent years there have been various reports of women receiving unrequested e-mail which having obscene language. In 2012, The NCRB also provided an insight figure into the changing mind-set of Kerala State.

- Total numbers of 96 cases were enrolled under cyber crimes which have the motif of harassment of women.
- 312 persons arrested as suspects in cases for cyber crimes out of which 73 cases were known persons, neighbor`s, friends and relative.
- 48 cases enrolled for money.
- 48 cases were enrolled for fraud or illegal gain.

According to statistics' (Cyber Crime -2014-16)

Cyber crime went up by 6.3% in 2016 over 2015. Uttar Pradesh (21.4, 2639 cases) reported the most cases followed by Maharashtra with 19.3% (2380 cases) and Karnataka with 8.9% (1101 Cases).Some cyber crime of other states are given in following table and figure:

STATE	2014	2015	2016
Andhra Pradesh	282	536	616
Arunachal Pradesh	28	6	4
Assam	379	483	696
Bihar	114	242	309
Goa	62	17	31
Gujarat	227	242	362
Haryana	151	224	401
Himachal Pradesh	38	50	31
Jammu& Kashmir	37	34	28
Karanataka	1020	1447	1101
Kerala	450	290	283
M.P	289	231	258
Maharashtra	1879	2195	2380
Punjab	226	149	102
Rajasthan	697	949	941
Tamil Nadu	703	687	593
U.P	1737	2208	2639



Generally cyber crime can be divided in two parts.

1. **The computer as a target-** If a computer is using to attack other computers e.g. Hacking, Virus/Worm attack, DOS attack etc.
2. **The computer as a weapon-** If a computer is used to do real worldcrimes e.g. Cyber Terrorism, Credit Frauds, Pornography etc.

In India the term “cyber crime against women” includes sexual crimes and sexual insult or ill-usage on the internet. Out of the total number of crimes specially targeting women are as follows:

Harrassment via e-mails:- Nowadays this type of molestation is not a new-born phenomenon. It includes blacking, threatening,e-mail, defamatory mails, spamming e-mails and content sending of love letters in anonymous names or regular sending of embarrassing mail to one`s mail box. E-mail bombing is particularly characterized by abuses continual sending an same e-mail message to a particular address.

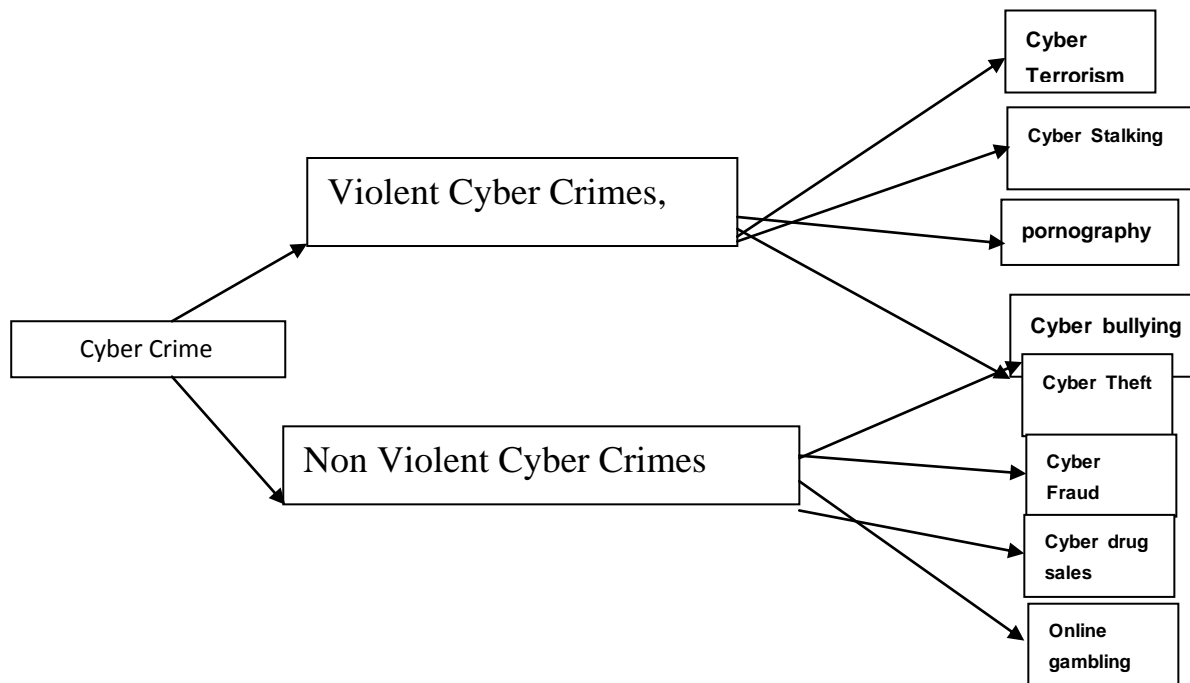
Cyber Stalking:- it is the most widespread cyber space crimes in the recent all over the world. It includes the perennial acts harassment or threatening behavior of the cyber criminal towards the victim by using the internet services.

In 2012 Statistics, The NCRB for Kerala State arrests 15 person below age 18years, 81 persons between the age 18-30 years, 44 persons between the age 30-45 years, 11 persons between the age 45-60 years for cyber crimes.

According to the IT act of Kerala State, 147 cases were registered for the publishing or electronic transfer of offense material out of the total number of cases enrolled. This is the highest cases among the other states. Maharashtra came second with 76 cases.

Initially, Ritu Kojli complained to the police against a person who was using her personal information to chat over the internet at website, mostly in Delhi channel for four consecutive days. She complained that the person was chatting on net, using her name and giving her address and was talking obscene language.

In the another ways cyber crimes can be easily placed into two categories: Violent Cyber Crimes, Non Violent Cyber Crimes. In detail these can be study with the help of following model.



Defamation:- It concerns with publishing defamatory information about the person on a website or circularize it among the victim's friends circle. This can happen to both genders but women are more threatened.

Morphing:- Morphing is an action to release original picture to abuse it by unauthorized user or fake identity. Here the female's photographs are uploaded from social websites by fake users and again reload on various websites by creating fake profiles.

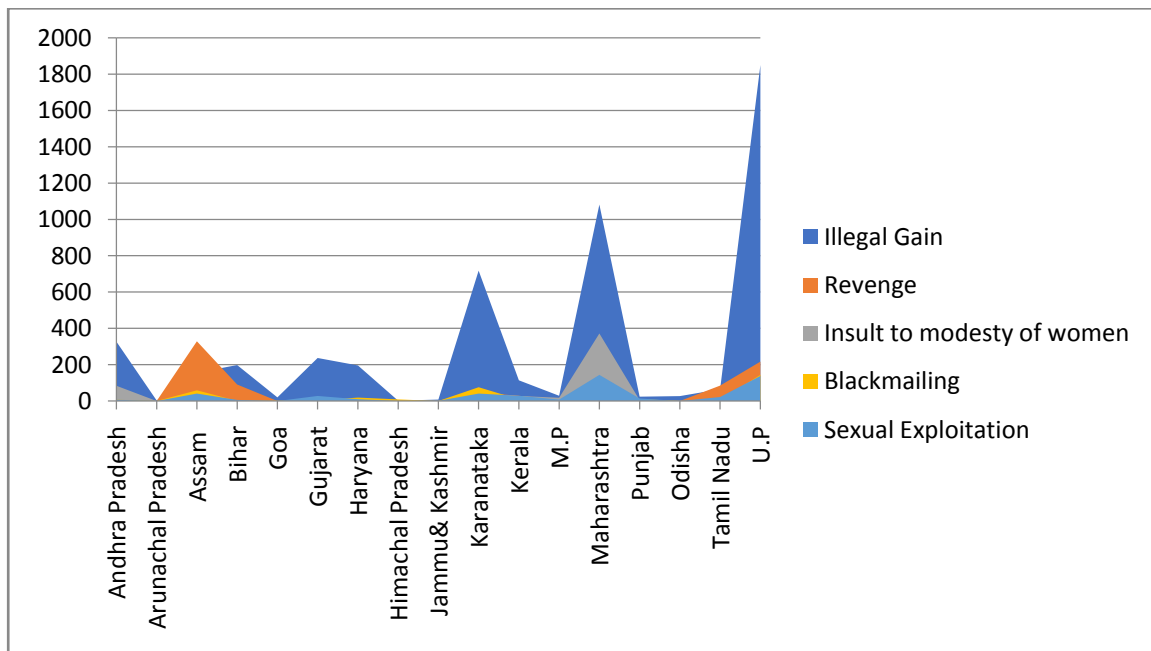
Cyber Pornography:- Adult entertainment is bigger industry on cyberspace. Nowadays there are more than 420 million individual pornographic web pages. It is the showing sexual activity in order to cause sexual excitation. Here women and children are becoming the main victim of this side of technology.

E-mail Spoofing:- It mention to an email that emerges from one source but has been sent from another source. It can cause monetary damage.

Cyber Bullying:- Cyber bullying is self-willed and continued harm inflicted through the use of computers, Cell phone, by transferring messages of threatening in nature. India is in third in number from China and Singapore in online bullying.

India's National Crime Records Bureau (NCRB) released crime statistics for the last year. For the sake of appropriate comparison, the NCRB has provided crime rates in terms of crime per lakh population. Furthermore, the Bureau has bifurcated data on crimes such as murder, crime against women. In regard to crimes against women, Lucknow has the highest rate (179) followed by Delhi (52), Indore(130), Jaipur(128) and Kanpur(118). The lowest rate are reported from Coimbatore(7), Chennai(15), Surat(28), Kolkata(29). An analysis of all the above data reveals that Delhi, Jaipur, Lucknow, Indore have the highest average crime rates across other crime categories,

STATE	Illegal Gain	Revenge	Insult to modesty of women	Blackmailing	Sexual Exploitation
Andhra Pradesh	327	6	84	7	7
Arunachal Pradesh	3	0	0	0	0
Assam	156	329	3	59	41
Bihar	198	91	0	1	6
Goa	20	0	0	2	0
Gujarat	237	4	0	3	28
Haryana	196	6	16	19	10
Himachal Pradesh	2	1	3	9	0
Jammu & Kashmir	8	0	2	0	1
Karnataka	718	47	41	76	41
Kerala	114	29	28	9	29
M.P	29	5	18	5	8
Maharashtra	1082	45	372	46	144
Punjab	24	8	5	11	14
Odisha	27	0	2	0	0
Tamil Nadu	65	85	2	5	22
U.P	1850	217	13	144	138



Problem In Hand:

- Most of the cyber crimes remain unreported because of the hesitation and shyness of the victim and her fear of defamation of family`s name.
- Non existence of digital police portal currently due to abuse on online platform
- Cyber Laws have not been developed properly and the procedure for registering a complaint is not known by woman.
- Due to the lack of cyber Forensics Laboratories. It takes more time for investigation and many times cases are unsolved.

Suggestion and Conclusion:

- It is required to collaborate both police force and cyber forensic laboratories together for better investigation.
- There should be digital police portal where women can complain their problem online.
- NCRB should assemble all the cases related to women and other cyber crimes against women under a separate category.
- Girls should be made alert about all types of cybercrimes and how to handle them.
- School curriculum must cover all aspects of cybercrimes.
- Special women courts need to be set up.

References: Crime In India 2016-Statistics

Crime In India 2018-Statistics

NCRB Report 2012

Sex Ratio in India –Census 2011

Information Technology (Amendment)Act, 2008 enforceable from 5 feb 2009

International Journal of
Research in Social Sciences



www.ijmra.us

VOL. 9 ISSUE 2 (1)
FEBRUARY 2019

(ISSN : 2249-2496)
Impact Factor : 7.081

**A Monthly Double - Blind Peer Reviewed Refereed Open Access and Indexed
International Journal included in the International Serial Directories.**

भारतीय प्रजातन्त्र एवं मतदान

रतन सिंह*

आज का युग प्रजातन्त्र का युग है और भारत विश्व का सबसे बड़ा प्रजातन्त्रात्मक देश है। प्रजातन्त्रीय शासन प्रणाली में मतदाता केन्द्रीय भूमिका में होते हैं यानी की पूरी शासन प्रणाली मतदाताओं के ईद-गिर्द घूमती है, अगर यूँ कहें तो पूरी शासन प्रणाली की बुनियाद मतदाता ही होते हैं तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। प्रत्येक पांच वर्ष के बाद जनमत तय करती है कि अगले पांच वर्ष हमारा शासक कौन होगा, यह सब मत के माध्यम से ही सम्भव हो पाता है। कठने का तात्पर्य यह है कि देश के मतदाताओं के ऊपर यह बहुत बड़ी जिम्मेदारी होती है, शासक का चुनाव करना, इस जिम्मेदारी का मतदाताओं को निर्वाह करना पड़ता है। शासक का चुनाव करना उतना ही जिम्मेदारी व जागरूकता का कार्य है जितना कि एक बीमार व्यक्ति के लिए डॉक्टर का चुनाव करना। एक गलत डॉक्टर का चुनाव हमारे जीवन के लिए खतरनाक है और गलत शासक का चुनाव राष्ट्र के लिए घातक है। इसलिए यह अपेक्षा की जाती है कि देश का प्रत्येक मतदाता जागरूक हो, सक्षम हो, योग्य हो, कुरल हो, और स्व-विवेकी हो ताकि एक सही शासक का चुनाव कर सके और देश का प्रजातन्त्र एक मजबूत प्रजातन्त्र के रूप में जाना जाए। इसलिए राज्य की तरफ से, सरकार की तरफ से हर सम्भव प्रयास किए जाते हैं क्योंकि हर राजनीतिक व्यवस्था में राजनीतिक भागीदारी एक आवश्यक तत्व है। राजनीतिक शक्ति सभी जगह कुछ लोगों के पास होती है लेकिन ये सत्ताधारी चाहते हैं कि जनता की कुछ अंश में राजनीतिक भागीदारी हो ताकि उनकी राजनीतिक सत्ता को कैंधता मिल जाए। और इससे व्यवस्था में स्थिरता भी आती है। अगर राजनीतिक भागीदारी का कोई भी अवसर न हो स्थिति विस्फोटक बन जाती है। अतः गैर-जनतन्त्रिक व्यवस्थाओं में भी इसको प्रोत्साहित किया जाता है ताकि शासकों के निरंकुश निर्णयों पर जनता के समर्थन का पर्दा पड़ा रहे।

प्रजातन्त्र में इस राजनीतिक भागीदारी यानी मतदान का और भी ज्यादा महत्व है क्योंकि मतदान ही वह प्रमुख साधन है जिसके माध्यम से सहमति प्रदान की जाती है तथा शासकों को जिम्मेदार बनाया जाता है। वोट का अधिकार एक बहुत बड़ा संवैधानिक अधिकार है। आज पूरे विश्व में वयस्क मताधिकार को अपनाया गया है यानी कि आयु के आधार पर मत का अधिकार, यह आयु की सीमा पूरे विश्व में एक नहीं है, यह प्रत्येक देश के भौगोलिक वातावरण पर निर्भर करती है। हमारे देश में यह 18 वर्ष है, पहले 21 वर्ष थी, 1985 में 61 वें संवैधानिक संशोधन के द्वारा 18 वर्ष किया गया क्योंकि उस समय रहे प्रधानमंत्री स्व. श्री राजीव गांधी का तर्क था कि 70 साल के बुजुर्ग कि बजाय महाविद्यालय में पढ़ने वाला युवा ज्यादा सक्षम होता है, जागरूक होता है। यहाँ पर एक बात ध्यान रखने योग्य यह है कि इस वयस्क मताधिकार का इतिहास बहुत पुराना नहीं है, विश्व में प्रजातन्त्र का घर कहा जाने वाला देश इंग्लैण्ड में इसे 1918 में लागू किया गया, इससे पहले सम्पत्ति को आधार माना जाता था यानी कि जिसके पास जितनी ज्यादा सम्पत्ति होती उसको उतने ही ज्यादा वोट डालने का अधिकार प्राप्त था। और दुर्भाग्य की बात तो यह है कि यहाँ महिलाओं को वोट का अधिकार 1928 में मिला है। हमारे देश में आजादी के बाद सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार को अपनाया गया है। वोट का अधिकार एक संवैधानिक अधिकार होने के साथ-साथ एक लोकतांत्रिक कर्तव्य भी है। चुनाव में 100 प्रतिशत मतदान से ही मतदाताओं की सहमति या असहमति का सही मापने में पता लगता है। लेकिन इस मामले में दुख की बात यह है कि हमारे देश में किसी भी स्तर का चुनाव हो मतदान प्रतिशत 60 से 70 प्रतिशत मुश्किल से होता है, वह भी तब जब उम्मीदवार पुरा जोर लगा लेते हैं, गाड़ीयों का प्रयोग करते हैं मतदाताओं को लाने में। मतदान का यह आँकड़ा बहुत कम है और यहाँ पर मैं कहना चाहूँगा कि लोकतन्त्र में वोट न डालना, लोकतन्त्र की नींव पर प्रहार करने से कम नहीं है। इससे लोकतन्त्र को नुकसान पहुँचता है।

इस प्रकार ये 30 से 40 प्रतिशत लोग जो वोट नहीं डालते, ये हमारे सामने एक बहुत बड़ी चुनौती है। इन लोगों को हम राजनीति शास्त्र में उदासीन (Apathetic) कहते हैं, इनके दो प्रकार हैं- अनजाने में वोट न डालना, जान-बुझकर वोट न डालना। अनजाने में- इसमें ऐसे लोग आते हैं जिनके पास सूचना का अभाव, अवसर नहीं मिलता, लगे रहते हैं काम में, पता ही नहीं चलता कि कब क्या हो रहा है। यह सब जान-बुझकर नहीं होता-अशिक्षा इसका कारण हो सकती है, पुरुष प्रधान समाज में स्त्रियाँ हो सकती हैं। कई बार व्यक्ति की स्वयं की अयोग्यता भी जैसे-अपने आप को अभिव्यक्त न कर पाना भी इसका कारण है।

जान बुझकर वोट नहीं डालते- इस कटौतरी में पढ़े-लिखे और अच्छे पदों पर आसिन लोगों की संख्या भी बहुत ज्यादा होती है। इनको वोट डालने की बजाए दूसरे कियाकलापों में ज्यादा संतोष मिलता है- जैसे परिवार के साथ या दोस्तों के साथ समय दिवाना।

* सहायक प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र, वैश्य महाविद्यालय, मिथानी

इस कटौती के कुछ लोगों का यह मानना होता है कि एक वोट से क्या फर्क पड़ता है और पूरे देश में ये एक-एक करके काफी संख्या हो जाती है। जब तक लोगों को यह अहसास नहीं होगा कि उनके मत से फर्क पड़ेगा या सरकार बनाने वाली पार्टी समाज में फर्क ला सकेगी तब तक 100 प्रतिशत मतदान नहीं हो सकता। कुछ लोग सरकार की नाकामी या अपनी नाराजगी (सरकार चाहे किसी भी पार्टी की हो) का जवाब वोट के प्रति उदासीन होकर देते हैं जो कि उचित नहीं है। जबकि वोट का प्रयोग करके ही अपने सरकार को पुरा करना चाहिए। कुछ लोग मतदान प्रक्रिया की कठोरता के कारण वोट नहीं डालते जैसे वोट के लिए लम्बी-लम्बी लाइनों में घण्टों तक खड़े होकर समय बर्बाद होना, मतदाता पहचान पत्र व मतदाता सुधियों में गड़बड़ी होना। कुछ लोगों का चुनाव, नेताओं व पार्टियों के प्रति बड़ा नकारात्मक दृष्टिकोण होता है, कुछ लोग संकुचित विचारधारा के होते हैं, उनका मानना है कि सब धोखा है, कुछ सुधार नहीं सकता इसलिए वोट नहीं डालते। वोट न डालने वाले की इस कटौती में वे दिहाड़ी मजदूर भी आते हैं जिनके पास पेड़ लीव जैसी सुहुलियतें नहीं होती, उनका छुट्टी लेने का मतलब एक दिन की मजदूरी न मिलना है जो वे वहन नहीं कर सकते। इस कटौती में वे वोट भी आते हैं जिनका अस्तित्व ही नहीं है यानि कि जो मर चुके हैं, इन्हें अंग्रेजी में घोस्ट वोटर्स कहते हैं जो कभी वोट नहीं डालने वाले, फिर 100 प्रतिशत मतदान का स्वप्न कैसे पुरा हो सकता है। इसके अतिरिक्त मतदाताओं को फोटोयुक्त पहचान पत्र प्रदान करके, नुटि रहित मतदाता सुधियों तैयार करके व मतदान के लिए जो लम्बी-लम्बी लाइनें लगती हैं, जिनके कारण कई मतदाता लाइनों में लगकर समय बर्बाद करने की बजाए, वोट डालने नहीं जाते, इस समस्या का समाधान मोबाइल पोलिंग बुथ को अपनाकर किया जा सकता है।

इस दिशा में सरकार की तरफ से अच्छे प्रयास किए जा सकते हैं क्योंकि जहाँ राजनीतिक व्यवस्था ज्यादा जटिल होती है, प्रशासक के नियम कठोर होते हैं और राजनीतिक संचार ठीक प्रकार से नहीं होता तो व्यक्ति में एक दुरत्व की भावना आ जाती है और वह अपनी भूमिका को ठीक प्रकार से नहीं निभा पाता। इसके विपरीत जहाँ राजनीतिक शक्ति के लिए खुली स्पर्धा होती है और यह स्थापित प्रक्रियाओं पर आधारित होती है तो लोगों का राजनीतिक व्यवस्था में विश्वास बढ़ता है और वे मतदान के माध्यम से अपनी भागीदारी दर्ज करवाने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। उदाहरण के लिए अगर चुनाव के नियम सरल हो, मतदान की प्रक्रिया ज्यादा जटिल न हो और सरकार की तरफ से भी मतदाताओं को शिक्षित करने के लिए तथा उत्साहित करने के लिए लगातार प्रयास किया जाए तो स्वाभाविक है कि मतदान का प्रतिशत अधिक होगा।

इस दिशा में राजनीतिक दलों की भूमिका भी अहम हो सकती है। राजनीतिक दल सरकार तक जनता की इच्छाओं को पहुंचाने का सबसे महत्वपूर्ण साधन है। राजनीतिक दल सूचनाओं के माध्यम से लोगों में उत्साह पैदा कर सकते हैं जैसे देश में प्रमुख मुद्दे क्या हैं और उन पर कैसे निर्णय लिया जाए। इस कार्य के लिए संगठित राजनीतिक दलों का होना अति आवश्यक है। राजनीतिक दल उदासीन से उदासीन व्यक्ति में भी रुचि पैदा कर सकते हैं। राजनीतिक दलों कि इस मुहिम में जन संचार के साधनों की भूमिका भी बड़ी महत्वपूर्ण है। इसलिए जनसंचार के साधनों का भी स्वतंत्र व निष्पक्ष होना बहुत जरूरी है।

सी प्रतिशत मतदान को सुनिश्चित करने के साथ-साथ एक जरूरी बात यह है कि वोट का सही प्रयोग करना चाहिए यानी कि दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। दुरुपयोग करने की बजाए तो अगर वोट न डाला जाए तो अच्छा है या नोटा का प्रयोग किया जाए। हमें वोट का प्रयोग जाति के आधार पर, धर्म के आधार पर, क्षेत्र के आधार पर, या किसी प्रलोभन में आकर नहीं करना चाहिए, बल्कि वोट का प्रयोग उम्मीदवार की उपयोगिता, कार्यशीली और उसकी योग्यता के आधार पर होना चाहिए। उम्मीदवार के कार्य व व्यक्तित्व को महत्व दिया जाना चाहिए तभी जाकर प्रजातन्त्र की सफलता के प्रति हमारे दायित्व की पूर्ति व इस मताधिकार की सार्थकता सिद्ध होगी।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. बसु दुर्गादास, भारत का संविधान- एक परिचय, प्रेंटिस हल आफ इण्डिया, नई दिल्ली, 2002
2. कोठारी रजनी, भारत में राजनीति-कल और आज, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
3. भाभरी चन्द्र प्रकाश, भारत में लोकतन्त्र, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, नई दिल्ली, 2013
4. सिन्हा सचिदानन्द, लोकतन्त्र की धुनीतियां, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007
5. शेखावत मैरव सिंह, आम आदमी और लोकतन्त्र, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009
6. शास्त्री इन्द्रचन्द्र, लोकतन्त्र का लक्ष्य, सरता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, 2013
7. अग्रवाल मनोज, चुनाव सुधार, सुशासन की ओर एक कदम, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015
8. सिंह महेश्वर, भारतीय लोकतन्त्र समस्याएँ एवं समाधान, कालेज बुक डिपो, जयपुर 2003
9. घटुर्वेदी गीता, भारतीय राजनीति व्यवस्था, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1999
10. कश्यप सुभाष, हमारी संसद, भारत की संसद- एक परिचय, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, नई दिल्ली, 1993

पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारी: चुनौतियाँ एवं अपेक्षाएँ

रतन सिंह*

समाज में स्त्रियों से ही महिलाओं का स्थान गौरवशाली रहा है। पौराणिक कथाएँ एवं इतिहास इस बात की साक्ष्य है कि महिलाएँ न केवल पूज्य रही हैं, बल्कि समाज को भेगुल्य प्रदान करने में उन्होंने महत्वपूर्ण एवं अछणी भूमिका निभाई है। आजादी के बाद बने भारतीय संविधान और उसमें होते रहे संघर्षों में इस तथ्य को बराबर महसूस किया जा रहा है कि महिलाओं की भागीदारी सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्रों में बढ़ाना आवश्यक है। सन् 1959 में बलवंतराय मेहता समिति की सिफारिशों के आधार पर त्रि-स्तरीय पंचायती राज व्यवस्था लागू की गई और यह माना गया कि समग्र विकास महिलाओं की अनदेखी करके नहीं किया जा सकता। इसलिए पंचायती राज व्यवस्था को सुदृढ़ करने तथा पंचायतों में महिलाओं की एक तिहाई भागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से 1992 में 73 वीं संवैधानिक संशोधन अधिनियम पारित किया गया। इस व्यवस्था का प्रभाव यह हुआ कि देशभर में लाखों महिलाएँ पंचायतों के नेतृत्व हेतु मैदान में आ गईं। इस प्रकार संविधान का यह प्रावधान महिलाओं की छिपी शक्ति को उजागर करने का सार्थक कदम था। लेकिन इस व्यवस्था के बावजूद भी आज महिलाओं की वह भागीदारी सुनिश्चित नहीं हो पाई है जो अपेक्षित है। उनकी इस सक्रिय भागीदारी के मार्ग में आज अनेकों चुनौतियाँ बरकरार हैं, जिनका निदान किए बिना पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारी को व्यावहारिक रूप प्रदान नहीं किया जा सकता। ये चुनौतियाँ निम्नलिखित हैं—

महिलाओं का अपना स्वभाव एवं प्रकृति— महिलाएँ स्वाभाविक रूप से मायूक, आभित, उदासीन, आज्ञापालक व समाज की सामान्य संस्कृति का विरोध न करने वाली होती हैं। उन्हें गृह प्रबंध एवं बच्चे पालन, माँ और पत्नी के रूप में क्रियाशील रहने में ही आनंद प्राप्त होता है। स्त्रियों और पुरुषों के मध्य स्पष्ट भेद है। दोनों के मनोविज्ञान अलग-अलग हैं। यह सर्वप्रचलित बात है। किंतु आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि महिलाओं के विषय में हमारी धारणाएँ मिथ्या हैं। हम पूर्वग्रहों से ग्रस्त हैं।

भारतीय समाज की परम्परावादी प्रकृति— महिलाओं और पुरुषों के व्यवहार का अंतर हमारी परम्परिक सामाजिक प्रक्रिया का परिणाम है। क्योंकि बचपन से ही दोनों को उच्चता और हीनता की शिक्षा दी जाती है। इसका परिणाम यह होता है कि जैसे-जैसे उमर बढ़ती है। वैसे-वैसे महिलाओं की हीनता भी बढ़ती जाती है। इसके साथ-साथ कुछ और पारम्परिक कारण भी हैं जैसे प्रथा, पारम्परिक संस्कार, परम्परिक पुरुष वर्चस्व, रुढ़िवादिता आदि जो इसके लिए उत्तरदायी हैं। और भारतीय समाज एक प्राचीन समाज है। अतः इसमें क्रांतिकारी परिवर्तन होने के अवसर भी बहुत कम हैं।

महिलाओं में उत्तरदायित्व का भाव तथा परिवार के सदस्यों की उनसे उम्मीदें— महिला जनप्रतिनिधियों की एक समस्या यह भी है कि उनके भरे-पूरे परिवार होते हैं वे लोक कार्यों के उपरांत अपना अधिकांश समय परिवार या पारिवारिक कार्यों में देना आवश्यक समझती हैं। परिवार की भी अपेक्षा यही रहती है कि वे ज्यादातर समय परिवार को दें। इस मनोविज्ञान का परिणाम यह होता है वे जन प्रतिनिधि अपने क्षेत्र में व्यापक जनसंपर्क नहीं कर पाती। उनके स्थान पर निकटतम रिश्तेदार और परिचित व्यक्ति आदि ही सामान्यतः विरोध संपर्क सूत्र रहते हैं। भेटवार्ता के दौरान कई महिला जनप्रतिनिधियों ने यह स्वीकार किया कि जब वे पहली बार निर्वाचित होकर आईं तो उन्हें बहुत सारे व्यक्तियों के बीच बोलने में संकोच का अनुभव हुआ। उनका यह संकोच केवल मनोवैज्ञानिक हीनता थी। यह भी देखने में आया है कि अनुभवी जनप्रतिनिधि अपने अधिकारों के प्रति काफी सजग रही हैं और जब उन्हें कभी बोलने का अवसर नहीं मिलता या कम मिलता है तो वे कहने लगती हैं कि महिला जनप्रतिनिधियों को बोलने का अवसर नहीं दिया जा रहा है या कम दिया जा रहा है, या पक्षपात किया जा रहा है। वे अपना रोष भी प्रकट करती हैं। वर्तमान में पंचायती राज संस्थाओं के माध्यम से जो महिला जनप्रतिनिधि निर्वाचित होकर आ रही हैं उनकी हिम्मत पहले की बजाय अब बढ़ी है और दूसरी सकल जनप्रतिनिधियों को देखकर उनमें भी अब उत्साह आ रहा है।

पंचायती राज व्यवस्था में समाज के प्रभावी वर्ग का वर्चस्व— यह आमतौर पर देखने में आया है कि जहाँ कहीं भी महिला सदस्य अथवा प्रधान या सरपंच समाज के प्रभावी वर्ग के विलुद्ध फैसला करते हैं तो उन्हें अनेक समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है यहाँ तक कि अपने विकृष्ट हिंसा और सामाजिक विरोध भी सहना पड़ता है। इसके अलावा जानकारी का अभाव, शिक्षा का अभाव, जागरूकता का अभाव, प्रशासनिक अधिकारियों का सहयोग न करना, पुरुष वर्ग का असहयोग आदि कुछ सामाजिक कारण भी पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की भूमिका को प्रभावित करते हैं और वही कुछ अधिक कारण जैसे गरीबी, बेरोजगारी, आर्थिक संसाधनों का न होना भी इस मार्ग में बड़ी बाधा बने हुए हैं। महिलाओं के संदर्भ में कहा जा सकता है कि अभी भी महिलाओं का एक बड़ा समूह राजनीतिक क्षेत्र में स्वयं को पृथक रखे हुए है। गिनी-बुनी महिलाएँ ही राजनीतिक निर्गम प्रक्रिया में भाग लेने हेतु आगे आ पाईं।

* महापद प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र, हैम नारियल, मिदना

राजनीतिक सहभागिता के लिए प्रदत्त आरक्षण का अधिकार परिवार के पुरुष सदस्य द्वारा सत्ता प्राप्त करने का एक साधन ही सिद्ध हुआ है। वास्तविक अर्थों में महिलाएं अपनी निम्न सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक स्थिति के कारण ही अपने इस अधिकार का उपयोग करने में असमर्थ सिद्ध हुई हैं। भविष्य में जैसे-जैसे महिलाएं प्रशिक्षण प्राप्त करने से व पंचायतों की बैठकों में भाग लेने के माध्यम से इच्छा होगी, कम मुखर महिला प्रतिनिधियों पर मुखर महिलाओं का प्रदर्शनकारी प्रभाव पड़ेगा जो उनकी पंचायतों की भूमिका को सकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा।

निष्कर्ष

इस प्रकार निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि महिला प्रतिनिधियों में शिक्षा की कमी, महिलाओं में अजागरूकता, पुरुष वर्ग का वर्चस्व, नौकरशाही की उदासीनता, समाज के प्रभावशाली वर्गों द्वारा स्थानीय स्तर की संस्थाओं पर प्रत्यक्ष एवं परोक्ष प्रभुत्व की स्थापना, समाज में व्याप्त परम्परावादिता, वर्गीय एवं जातीय तनाव तथा महिलाओं की प्रशासनिक क्षमता में समाज का अविश्वास आदि ऐसे सामाजिक मुद्दे हैं जो पंचायती राज व्यवस्था को प्रभावशाली बनाने में एवं महिलाओं के द्वारा उक्त व्यवस्था में सक्रिय भागीदारी के क्रम में बाधाकारी प्रतीत होते हैं। महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता के आधार को व्यापक बनाने तथा उसमें गुणात्मक परिवर्तन लाने के लिए तीन बातों की अपेक्षा है। प्रथम महिलाओं में वर्गीय चेतना का विकास, द्वितीय आर्थिक निर्भरता के अन्त और तीसरे शिक्षित बनना। पुरुषों की मुख्यापेक्षी बनकर महिलाएं अपना भला नहीं कर सकती। महिला संगठनों को इस दिशा में आगे आना चाहिए। राजनीतिक दलों को भी इस बात को गम्भीरता से लेना चाहिए। उन्हें अपने दलीय संगठनों के प्रत्येक स्तर पर महिलाओं को समुचित प्रतिनिधित्व देना चाहिए।

आज आवश्यकता इस बात की है कि लोकनीति निर्माणकर्ता जो व्यवस्था की कुर्सी पर विराजमान हैं, वे यथार्थ को समझे और शिक्षण-प्रशिक्षण एवं जन-जागरण के माध्यम से स्थानीय प्रशासन में महिलाओं को इतना सशक्त समर्थन प्रदान करें ताकि वे अपनी क्षमताओं का सही-सही उपयोग एवं प्रदर्शन कर सकें। इसके साथ-साथ मतदाताओं व महिला जन प्रतिनिधियों को भी इस बारे में अधिक परिश्रम की आवश्यकता है ताकि निम्न स्तर पर राजनीतिक सहभागिता को स्थापित कर भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था की जड़ों को मजबूती प्रदान की जा सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. नीतू रानी, पंचायतीराज व्यवस्था- सिद्धांत एवं व्यवहार, राजपाल प्रकाशन 2006.
2. महिलाएं, पंचायतीराज पुनीतियां एवं समावनाएं, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, 2012.
3. मिनाक्षी पंचार, पंचायती राज और ग्रामीण विकास, क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली।
4. बी. एल. फड़िया लोक प्रशासन, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, 1998.
5. विजय रंजनदत्त, पंचायती राज: संकल्पना और वर्तमान स्वरूप, सर्वसेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी, 1997।
6. डॉ० विपिन कुमार सिंघल, पंचायती राज व्यवस्था एवं महिलाएं-73 वें संविधान संसोधन के संदर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।
7. दैनिक जागरण, संपादकीय पृष्ठ, 15.07.2012
8. दैनिक जागरण, संपादकीय पृष्ठ, 16.07.2012
9. दैनिक जागरण, संपादकीय पृष्ठ, 08.03.2016
10. Singh, J.L., Women and Panchyati Raj, New Delhi, Sunrise Publication, 2005.
11. Verma B.L., Social Justice & Panchyati Raj, New Delhi, Mittal Publication, 2002
12. Bandopadharya, D. Mukharjee, Amitava-Empowering women panchyat members hand book for master trainer using particiapery approach, new delhi: concept publishing co. 2006.
13. Baghel,Indu- Dalit women in Panchyati Raj, New Delhi-Jananda Parkashan, 2009.
14. Pinto, Ambrose & Helmut Reifeld (eds) women in Panchyati Raj. New Delhi, Indian Social Institute, 2001.

पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारी: चुनौतियाँ एवं अपेक्षाएँ

रतन सिंह*

समाज में स्त्रियों से ही महिलाओं का स्थान गौरवशाली रहा है। पौराणिक कथाएँ एवं इतिहास इस बात की साक्ष्य है कि महिलाएँ न केवल पूज्य रही हैं, बल्कि समाज को भोग्य प्रदान करने में उन्होंने महत्वपूर्ण एवं अछूनी भूमिका निभाई है। आजादी के बाद बने भारतीय संविधान और उसमें होते रहे संघर्षों में इस तथ्य को बराबर महसूस किया जा रहा है कि महिलाओं की भागीदारी सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्रों में बढ़ाना आवश्यक है। सन् 1959 में बलवंतराय मेहता समिति की सिफारिशों के आधार पर त्रि-स्तरीय पंचायती राज व्यवस्था लागू की गई और यह माना गया कि समग्र विकास महिलाओं की अनदेखी करके नहीं किया जा सकता। इसलिए पंचायती राज व्यवस्था को सुदृढ़ करने तथा पंचायतों में महिलाओं की एक तिहाई भागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से 1992 में 73 वीं संवैधानिक संशोधन अधिनियम पारित किया गया। इस व्यवस्था का प्रभाव यह हुआ कि देशभर में लाखों महिलाएँ पंचायतों के नेतृत्व हेतु मैदान में आ गईं। इस प्रकार संविधान का यह प्रावधान महिलाओं की छिपी शक्ति को उजागर करने का सार्थक कदम था। लेकिन इस व्यवस्था के बावजूद भी आज महिलाओं की वह भागीदारी सुनिश्चित नहीं हो पाई है जो अपेक्षित है। उनकी इस सक्रिय भागीदारी के मार्ग में आज अनेकों चुनौतियाँ बरकरार हैं, जिनका निदान किए बिना पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारी को व्यावहारिक रूप प्रदान नहीं किया जा सकता। ये चुनौतियाँ निम्नलिखित हैं- **महिलाओं का अपना स्वभाव एवं प्रकृति-** महिलाएँ स्वाभाविक रूप से मायूक, आभित, उदासीन, आज्ञापालक व समाज की सामान्य संस्कृति का विरोध न करने वाली होती हैं। उन्हें गृह प्रबंध एवं बच्चे पालन, माँ और पत्नी के रूप में क्रियाशील रहने में ही आनंद प्राप्त होता है। स्त्रियों और पुरुषों के मध्य स्पष्ट भेद है। दोनों के मनोविज्ञान अलग-अलग हैं। यह सर्वप्रचलित बात है। किंतु आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि महिलाओं के विषय में हमारी धारणाएँ मिथ्या हैं। हम पूर्वग्रहों से ग्रस्त हैं।

भारतीय समाज की परम्परावादी प्रकृति- महिलाओं और पुरुषों के व्यवहार का अंतर हमारी परम्परिक सामाजिक प्रक्रिया का परिणाम है। क्योंकि बचपन से ही दोनों को उच्चता और हीनता की शिक्षा दी जाती है। इसका परिणाम यह होता है कि जैसे-जैसे उमर बढ़ती है। वैसे-वैसे महिलाओं की हीनता भी बढ़ती जाती है। इसके साथ-साथ कुछ और पारम्परिक कारण भी हैं जैसे प्रथा, पारम्परिक संस्कार, परम्परिक पुरुष वर्चस्व, रुढ़िवादिता आदि जो इसके लिए उत्तरदायी हैं। और भारतीय समाज एक प्राचीन समाज है। अतः इसमें क्रांतिकारी परिवर्तन होने के अवसर भी बहुत कम हैं।

महिलाओं में उत्तरदायित्व का भाव तथा परिवार के सदस्यों की उनसे उम्मीदें- महिला जनप्रतिनिधियों की एक समस्या यह भी है कि उनके भरे-पूरे परिवार होते हैं वे लोक कार्यों के उपरांत अपना अधिकांश समय परिवार या पारिवारिक कार्यों में देना आवश्यक समझती हैं। परिवार की भी अपेक्षा यही रहती है कि वे ज्यादातर समय परिवार को दें। इस मनोविज्ञान का परिणाम यह होता है वे जन प्रतिनिधि अपने क्षेत्र में व्यापक जनसंपर्क नहीं कर पाती। उनके स्थान पर निकटतम रिश्तेदार और परिचित व्यक्ति आदि ही सामान्यतः विरोध संपर्क सूत्र रहते हैं। भेटवार्ता के दौरान कई महिला जनप्रतिनिधियों ने यह स्वीकार किया कि जब वे पहली बार निर्वाचित होकर आईं तो उन्हें बहुत सारे व्यक्तियों के बीच बोलने में संकोच का अनुभव हुआ। उनका यह संकोच केवल मनोवैज्ञानिक हीनता थी। यह भी देखने में आया है कि अनुभवी जनप्रतिनिधि अपने अधिकारों के प्रति काफी सजग रही हैं और जब उन्हें कभी बोलने का अवसर नहीं मिलता या कम मिलता है तो वे कहने लगती हैं कि महिला जनप्रतिनिधियों को बोलने का अवसर नहीं दिया जा रहा है या कम दिया जा रहा है, या पक्षपात किया जा रहा है। वे अपना रोष भी प्रकट करती हैं। वर्तमान में पंचायती राज संस्थाओं के माध्यम से जो महिला जनप्रतिनिधि निर्वाचित होकर आ रही हैं उनकी हिम्मत पहले की बजाय अब बढ़ी है और दूसरी सकल जनप्रतिनिधियों को देखकर उनमें भी अब उत्साह आ रहा है।

पंचायती राज व्यवस्था में समाज के प्रभावी वर्ग का वर्चस्व- यह आमतौर पर देखने में आया है कि जहाँ कहीं भी महिला सदस्य अथवा प्रधान या सरपंच समाज के प्रभावी वर्ग के विलुद्ध फैसला करते हैं तो उन्हें अनेक समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है यहाँ तक कि अपने विकृष्ट हिंसा और सामाजिक विरोध भी सहना पड़ता है। इसके अलावा जानकारी का अभाव, शिक्षा का अभाव, जागरूकता का अभाव, प्रशासनिक अधिकारियों का सहयोग न करना, पुरुष वर्ग का असहयोग आदि कुछ सामाजिक कारण भी पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की भूमिका को प्रभावित करते हैं और वही कुछ अधिक कारण जैसे गरीबी, बेरोजगारी, आर्थिक संसाधनों का न होना भी इस मार्ग में बड़ी बाधा बने हुए हैं। महिलाओं के संदर्भ में कहा जा सकता है कि अभी भी महिलाओं का एक बड़ा समूह राजनीतिक क्षेत्र में स्वयं को पृथक रखे हुए है। गिनी-बुनी महिलाएँ ही राजनीतिक निर्गम प्रक्रिया में भाग लेने हेतु आगे आ पाईं।

* महापद प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र, हैम नारियल, मिदना

राजनीतिक सहभागिता के लिए प्रदत्त आरक्षण का अधिकार परिवार के पुरुष सदस्य द्वारा सत्ता प्राप्त करने का एक साधन ही सिद्ध हुआ है। वास्तविक अर्थों में महिलाएं अपनी निम्न सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक स्थिति के कारण ही अपने इस अधिकार का उपयोग करने में असमर्थ सिद्ध हुई हैं। भविष्य में जैसे-जैसे महिलाएं प्रशिक्षण प्राप्त करने से व पंचायतों की बैठकों में भाग लेने के माध्यम से इच्छा होगी, कम मुखर महिला प्रतिनिधियों पर मुखर महिलाओं का प्रदर्शनकारी प्रभाव पड़ेगा जो उनकी पंचायतों की भूमिका को सकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा।

निष्कर्ष

इस प्रकार निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि महिला प्रतिनिधियों में शिक्षा की कमी, महिलाओं में अजागरुकता, पुरुष वर्ग का वर्चस्व, नौकरशाही की उदासीनता, समाज के प्रभावशाली वर्गों द्वारा स्थानीय स्तर की संस्थाओं पर प्रत्यक्ष एवं परोक्ष प्रभुत्व की स्थापना, समाज में व्याप्त परम्परावादिता, वर्गीय एवं जातीय तनाव तथा महिलाओं की प्रशासनिक क्षमता में समाज का अविश्वास आदि ऐसे सामाजिक मुद्दे हैं जो पंचायती राज व्यवस्था को प्रभावशाली बनाने में एवं महिलाओं के द्वारा उक्त व्यवस्था में सक्रिय भागीदारी के क्रम में बाधाकारी प्रतीत होते हैं। महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता के आधार को व्यापक बनाने तथा उसमें गुणात्मक परिवर्तन लाने के लिए तीन बातों की अपेक्षा है। प्रथम महिलाओं में वर्गीय चेतना का विकास, द्वितीय आर्थिक निर्भरता के अन्त और तीसरे शिक्षित बनना। पुरुषों की मुख्यापेक्षी बनकर महिलाएं अपना भला नहीं कर सकती। महिला संगठनों को इस दिशा में आगे आना चाहिए। राजनीतिक दलों को भी इस बात को गम्भीरता से लेना चाहिए। उन्हें अपने दलीय संगठनों के प्रत्येक स्तर पर महिलाओं को समुचित प्रतिनिधित्व देना चाहिए।

आज आवश्यकता इस बात की है कि लोकनीति निर्माणकर्ता जो व्यवस्था की कुर्सी पर विराजमान हैं, वे यथार्थ को समझे और शिक्षण-प्रशिक्षण एवं जन-जागरण के माध्यम से स्थानीय प्रशासन में महिलाओं को इतना सशक्त समर्थन प्रदान करें ताकि वे अपनी क्षमताओं का सही-सही उपयोग एवं प्रदर्शन कर सकें। इसके साथ-साथ मतदाताओं व महिला जन प्रतिनिधियों को भी इस बारे में अधिक परिश्रम की आवश्यकता है ताकि निम्न स्तर पर राजनीतिक सहभागिता को स्थापित कर भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था की जड़ों को मजबूती प्रदान की जा सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. नीतू रानी, पंचायतीराज व्यवस्था- सिद्धांत एवं व्यवहार, राजपाल प्रकाशन 2006.
2. महिलाएं, पंचायतीराज पुनीतियां एवं समावनाएं, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, 2012.
3. मिनाक्षी पंचार, पंचायती राज और ग्रामीण विकास, क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली।
4. बी. एल. फड़िया लोक प्रशासन, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, 1998.
5. विजय रंजनदत्त, पंचायती राज: संकल्पना और वर्तमान स्वरूप, सर्वसेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी, 1997।
6. डॉ० विपिन कुमार सिंघल, पंचायती राज व्यवस्था एवं महिलाएं-73 वें संविधान संसोधन के संदर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।
7. दैनिक जागरण, संपादकीय पृष्ठ, 15.07.2012
8. दैनिक जागरण, संपादकीय पृष्ठ, 16.07.2012
9. दैनिक जागरण, संपादकीय पृष्ठ, 08.03.2016
10. Singh, J.L., Women and Panchyati Raj, New Delhi, Sunrise Publication, 2005.
11. Verma B.L., Social Justice & Panchyati Raj, New Delhi, Mittal Publication, 2002
12. Bandopadharya, D. Mukharjee, Amitava-Empowering women panchyat members hand book for master trainer using particiapery approach, new delhi: concept publishing co. 2006.
13. Baghel,Indu- Dalit women in Panchyati Raj, New Delhi-Jananda Parkashan, 2009.
14. Pinto, Ambrose & Helmut Reifeld (eds) women in Panchyati Raj. New Delhi, Indian Social Institute, 2001.

कौटिल्य कृते अर्थशास्त्र की ऐतिहासिकता : एक समीक्षा

Surender Kumar
Assistant Professor,
Vaish College, Bhiwani

कौटिल्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं सटीक स्रोत है। आचार्य चाणक्य या कौटिल्य चन्द्रगुप्त मौर्य के गुरु तथा मन्त्रि-पुरोहित थे। उन्होंने इस ग्रन्थ में राजा के कर्तव्यों, मन्त्रियों के गुणों, गुप्तचर व्यवस्था, कुटनीति, युद्ध-विधियों, शासन-प्रणाली के सिद्धान्तों एवं भू-राजस्व व्यवस्था पर प्रकाश डाला है। प्राचीन ऐतिहासिक अनुश्रुति के अनुसार चाणक्य ने ही नवनन्दों का विनाश कर चन्द्रगुप्त को मगध के राजसिंहासन पर आरूढ़ कराया था। प्राचीन धार्मिक ग्रन्था में चाणक्य के अनेक नामों का उल्लेख मिलता है जैसे वात्स्यायन, मल्लिनाग, कुटल, चाणक्य, द्रामिल, पक्षिलस्वामी, विष्णुगुप्त और अंगुल। उनका व्यक्तिगत नाम विष्णुगुप्त था। 'कुटल' गात्र में उत्पन्न होने के कारण वो कौटिल्य कहलाए। 'चणक' उनके पिता का नाम था, अतः उन्हें चाणक्य भी कहा जाता है।

इतिहासकारों में कौटिल्य के अर्थशास्त्र के काल एवं उसके लेखक को लेकर पर्याप्त मतभेद हैं। अनेक विद्वानों ने यह मत प्रतिपादित किया है कि कौटिल्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र चौथी सदी ई० पू० की रचना न होकर तीसरी या चौथी ई० पश्चात् की रचना है। प्राफेसर जॉली के अनुसार न यह ग्रन्थ मौर्यकाल में लिखा गया और न ही इसकी रचना किसी एक व्यक्ति द्वारा की गई। वस्तुतः यह तो एक सम्प्रदाय की रचना है। अर्थशास्त्र में बार-बार 'इति कौटिल्य' लिखकर कौटिल्य के मत को उद्धृत किया गया है। यदि कौटिल्य ने इसकी रचना की होती तो स्थान-स्थान पर 'इति कौटिल्य' लिखने की आवश्यकता न होती। प्राचीन भारत के प्रसिद्ध इतिहासकार श्री रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर ने भी कौटिल्य नाम के किसी व्यक्ति की मौर्य-युग में सत्ता तक को नकारा है। उनके अनुसार पंतजलि ने अपने महाकाव्य महाभाष्य में चन्द्रगुप्त एवं मौर्यों का उल्लेख किया है, परन्तु उन्होंने कहीं पर भी कौटिल्य या चाणक्य का वर्णन नहीं किया है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पंतजलि को कौटिल्य या चाणक्य का ज्ञान नहीं था। अतः कौटिल्य का समय पंतजलि के बाद होना चाहिए। पंतजलि शुंग सम्राट पुष्यमित्र के समकालीन थे, जिनका काल दुसरी सदी ई०पू० का है। अतः कौटिल्य पंतजलि से पहले के मौर्य राजा चन्द्रगुप्त के समकालीन कदापि नहीं हो सकते। विन्टरनिट्ज ने भी वर्णित किया है कि मैगस्थनीज, सल्युकस के राजदूत के रूप में चन्द्रगुप्त मौर्य के राजदरबार में कई वर्षों तक रहा था, वास्तव में यदि चाणक्य चन्द्रगुप्त मौर्य का गुरु व मुख्य पुरोहित होता तो यह कतई सम्भव नहीं था कि मैगस्थनीज का ध्यान उसकी ओर न जाता ।

मौर्य सम्राटों ने अभिलेखों एवं शिलालेखों में अपने लिए 'देवान प्रिय' नामक उपाधि का प्रयोग किया था। परन्तु कौटिल्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र में 'देवान प्रिय' का कहीं पर भी उल्लेख नहीं है। मौर्य युग में सभी अभिलेख एवं शिलालेख पाली भाषा में उत्कीर्ण किये गये हैं, जिससे प्रतीत होता है कि मौर्यों के राज्य में सब कार्य पाली भाषा में हो किये जाते थे, जबकि अर्थशास्त्र की रचना संस्कृत भाषा में की गई है। भारत में संस्कृत भाषा का राजकीय भाषा के रूप में प्रयोग गुप्तकाल में हुआ है, जो इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि अर्थशास्त्र की रचना का समय चौथी शताब्दी का है। इसी तथ्य की पुष्टि समुद्रगुप्त के प्रयाग-प्रशस्ति अभिलेख से भी होती है। प्रयाग-प्रशस्ति में राजा को 'धनद्व ऋण ऐन्द्रान्त कसम' विशेषण का प्रयाग हुआ है, इसी प्रकार अर्थशास्त्र में राजा को 'इन्द्रयम स्थान' कहा गया है। अर्थशास्त्र में प्राचीन भारत के अनेक भौगोलिक क्षेत्रों एवं राजाओं का उल्लेख मिलता है, लेकिन कहीं पर भी मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त एवं उसकी राजधानी पाटलीपुत्र का वर्णन नहीं मिलता है। सम्भवतः यदि अर्थशास्त्र की रचना चन्द्रगुप्त मौर्य की शासन विधि हेतु की होती तो कहीं ना कहीं पर उसका एवं उसकी राजधानी के नाम का उल्लेख अवश्य मिलता।

कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में यह मत प्रतिपादित किया है कि दुर्गों का निमाण प्राचीन प्रस्तरों द्वारा किया जाना चाहिए। वे लकड़ी द्वारा निर्मित दुर्गों की आलोचना करते हैं। परन्तु मौर्यों की राजधानी पाटलीपुत्र की खुदाई में लकड़ी द्वारा निर्मित दुर्गों के प्रचुर मात्रा में प्रमाण मिलते हैं।

यदि कौटिल्य चन्द्रगुप्त मौर्य का गुरु एवं प्रधानमन्त्री होता तो वह पाटलीपुत्र में लकड़ी का प्रयोग दुर्गों के निर्माण में कभी न करने देता। मौर्यकालीन भारत की शासन-पद्धति, सामाजिक जीवन और आर्थिक स्थिति के विषय में मैगस्थनीज एवं कौटिल्य द्वारा प्रदान की गई सुचनाएँ पूर्णतया भिन्न हैं। मैगस्थनीज ने पाटलीपुत्र में 30 सदस्यों को सभा का उल्लेख किया है, जिसकी 6 उपसमितियाँ प्रशासनिक कार्यों का संचालन करती थी और इसी प्रकार 30 सदस्यों की एक सभा सैन्य विभाग का संचालन करती थी। परन्तु कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में किसी भी स्थान पर नगर-सभा एवं सैन्य-सभा का उल्लेख नहीं किया है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उस समय धातु-उद्योग उन्नत था। लोगों को अनेक धातुओं की जानकारी थी और वे उनसे अनेक प्रकार की वस्तुओं का निर्माण करने में निपुण थे। परन्तु मैगस्थनीज ने अपने विवरण में दर्शाया है कि इस समय धातु उद्योग विकसित नहीं था।

कौटिल्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र में चीन, नेपाल, बाहलीक, कपिषा एवं वनायु इत्यादि अनेक ऐसे देशों का उल्लेख मिलता है, जिनसे चौथी सदी ई०पूर्व के भारतीय परिचित नहीं थे। चीन का नाम प्राचीन राजवंश 'चिन' के नाम के कारण पड़ा था और 'चिन' राजवंश का उत्थान तीसरी शताब्दी ई०पूर्व में हुआ था। इसी प्रकार अन्य देशों से भी प्राचीन भारत के सम्बन्ध चौथी शताब्दी ई०पूर्व के बाद ही स्थापित हुए थे। अतः अर्थशास्त्र की रचना चौथी शताब्दी ई०पूर्व के बाद में ही हुई होगी। अर्थशास्त्र में जिस राज्य और उनके शासन के बारे में जानकारी मिलती थी, वो बहुत छोटा सा राज्य है और वह एक ऐसे युग को सूचित करता है, जब भारत में बहुत से छोटे-2 राज्यों की सत्ता थी और वे परस्पर संघर्ष में लीन थे। जबकि मौर्यों का साम्राज्य लगभग सम्पूर्ण भारत में फैला हुआ था।

उर्पयुक्त विवरण में मैंने उन युक्तियों का उल्लेख किया है, जो कौटिल्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र के मौर्य युग में विरचित होने के विरुद्ध दी जाती हैं। विन्टरनिट्ज, कीथ, जॉली और स्मिट्स इत्यादि ने इसे तीसरी सदी ई०पूर्व या उसके पश्चात् निर्मित माना है। परन्तु फ्लीट, जैकोबी, मेयर, श्री काशीप्रसाद जायसवाल, देवदत्त रामकृष्ण भण्डारकर, पाण्डुरंग वामन काणे, श्री

नीलकण्ठ षास्त्री इत्यादि इतिहासकारों का मानना है कि कौटिल्य ने अर्थशास्त्र की रचना मौर्यकाल में की और इसका काल भी चौथी शताब्दी ई०पूर्व का है। उन्होंने उपर्युक्त अर्थशास्त्र की रचना मौर्य युग में न होने के सम्बन्ध में दी गई युक्तियों

का निराकरण करते हुए निम्नलिखित युक्तियों का उल्लेख किया है, जो सि करती है कि अर्थशास्त्र मौर्य युग की रचना है और इसका सम्बन्ध चन्द्रगुप्त मौर्य से ही है।

यह सत्य है कि मौर्य कालीन अभिलेखों में राजा अशोक एवं दशरथ के नामों के साथ 'देवानं प्रियः' उपाधि का प्रयोग हुआ है। परन्तु अर्थशास्त्र में मौर्यकाल के किसी भी राजा एवं उसकी उपाधि का वर्णन नहीं है। 'देवानं प्रियः' उपाधि का सम्बन्ध मौर्यवंश के राजाओं के साथ न होकर बौद्ध राजाओं के साथ था। महावष में अशोक के समकालीन श्री लंका के राजा तिरस या तिष्य के लिए भी 'देवानं प्रियः' उपाधि का प्रयोग हुआ है। चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ इस उपाधि का प्रयोग नहीं हुआ है। कौटिल्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र संस्कृत भाषा का ब्राह्मण धर्म पर आधारित ग्रन्थ है। अतः इस उपाधि का प्रयोग अर्थशास्त्र में न होना उचित है। मौर्य युग में अभिलेख भी पाली भाषा में ही उत्कीर्ण किये गये हैं। अशोक ने धम्म-घोष को जनता तक पहुंचाने के लिए आम-बोलचाल की भाषा पाली का ही प्रयोग करते थे। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र की रचना राजाओं, मन्त्रियों एवं अमात्यों के मार्ग प्रदर्शन के लिए की थी, वे सभी सुशिक्षित थे। अतः पुरानी परम्परा के अनुसार चाणक्य ने भी अपने ग्रन्थ की रचना संस्कृत भाषा में की थी।

कौटिल्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र की विचारधारा का प्रभाव दशकुमारचरित् एवं मुद्राराक्षस जैसे प्राचीन ग्रन्थों पर पड़ा। राजनैतिक और धर्मशास्त्र विषयक ग्रन्थों पर तो अर्थशास्त्र का प्रभाव स्पष्ट रूप से पड़ा है। इसी प्रकार समुद्रगुप्त की प्रयाग-प्रशस्ति अभिलेख पर अर्थशास्त्र का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है।

यह भी पूर्ण रूप से सत्य है कि कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में चन्द्रगुप्त एवं पाटलीपुत्र का उल्लेख नहीं किया है। परन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि कौटिल्य का इनके साथ कोई भी

सम्बन्ध नहीं था। अर्थशास्त्र राजनतिक सिद्धान्तों का वैज्ञानिक ग्रन्थ है। इसमें संस्मरणों एवं गजेटियर का वर्णन नहीं है। इसमें जिन राजाओं के नाम का उल्लेख है, वो सिद्धान्त के रूप में है और जिन स्थानों का उल्लेख हुआ है, वो किसी वस्तु या व्यापार के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। राजा को काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और हर्ष को त्याग कर इन्द्रियजयी होना चाहिए का निरूपण करते हुए भोज दाण्डक्य, वैदेह कराल, जनमेजय, अजबिन्दु इत्यादि राजाओं का उल्लेख किया है। पर चन्द्रगुप्त के नाम का कोई भी प्रसंग इस शास्त्र में नहीं है, फिर भी अर्थशास्त्र में 'तेन गुप्तः प्रभवित' का उल्लेख मिलता है। गुप्त का समीकरण चन्द्रगुप्त मौर्य से करना असंगत नहीं है। कलिंग एवं अंग हाथियों, काषी सूती कपड़ों, नेपाल कम्बल एवं कम्बोज घोड़े के लिए प्रसिद्ध थे। अतः इन्हीं का नाम ही अर्थशास्त्र में उल्लेखित है। मगध का उल्लेख की पत्थर तोलने के बट्टे बनने के लिए प्रसिद्ध था। मौर्य साम्राज्य में बने समस्त दुर्गों का निर्माण चाणक्य की सम्मति से किया जाये, यह सम्भव नहीं है। पाटलीपुत्र की खुदाई से जो लकड़ी के षहतीर एवं कड़िया मिली है उनका प्रयोग दुर्ग निर्माण के लिए किया गया हो यह भी सर्वसम्मत नहीं है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि चन्द्रगुप्त मौर्य के काल में पाटलीपुत्र, तक्षशिला, उज्जैन और कौषाम्बी जैसे नगरों में 'पौर' सभाओं की सत्ता थी। परन्तु मैगस्थनीज ने केवल पाटलीपुत्र की पौर सभा का उल्लेख अपने विवरणों में दिया है। कौटिल्य ने स्थानीय स्वशासन संस्थाओं का उल्लेख नहीं किया अपितु देश, ग्राम जाति एवं कुल आदि को संघ की संज्ञा देकर उनका उल्लेख किया है। नगरों के शासन में राजा या केन्द्रिय शासन का क्या कर्तव्य है, इसका उल्लेख कौटिल्य के अर्थशास्त्र में किया है। मैगस्थनीज ने 30 व्यक्तियों की सभा एवं 6 उपसमितियों की सैनिक प्रबन्ध के लिए अपने विवरण में उल्लेख किया है, उसकी सत्यता व प्रामाणिकता भी संदिग्ध है। पत्याध्यक्ष, अष्याध्यक्ष, रथाध्यक्ष आदि के रूप में इन विभागों की सत्ता कौटिल्य द्वारा भी सूचित की गई है।

यह तथ्य पूर्णतया ठीक है कि मौर्यकाल में भारतीय द्यातुओं को षुद्ध करने तथा उनसे विविध प्रकार की वस्तुओं का निर्माण करने में निपुण थे। परन्तु मैगस्थनीज ने दरदई लोगों के

प्रदेश का वर्णन करके लिखा है कि वे द्यातु पिघलाने एवं षुद्ध करने की कला नहीं जानते थे। परन्तु इससे यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता है कि मौर्य युग में सभी भारतीय इस कला से अनभिज्ञ थे। जायोडोरस के विवरणों के अनुसार भारत में इस काल में सोना, चाँदी, ताम्बा और लोहा प्रचुर मात्रा में मिलता है और वे इनको पिघालकर एवम् षुद्ध करके आभुषण हथियार, युद्ध का साज-सम्मान तथा अन्य वस्तुओं का निर्माण करने में निपुण थे। कौटिल्य ने भी इस कथन की पुष्टि की है। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में चीन, नेपाल, बाहलीक, कपिषा, वनायु आदि देशों का वर्णन किया है। कुछ विद्वान मानते हैं कि चौथी सदी ई०पू० में भारतीयों को इन देशों का ज्ञान नहीं था। परन्तु यह सत्य नहीं है। चीन में चिन सत्ता का उत्कर्ष लगभग 722 ई०पूर्व में माना जाता है।

ईरान और बेबीलोनिया जैसे पश्चिमी देशों से हमारे व्यापारिक सम्बन्ध प्राचीन समय से ही है। असीरिया के राजा सेन्नाचरीब ने 700 ई०पू० में हमारे देश के कपास के पौधे लेकर अपने देश में लगाए थे। ईरान के हखामनी वंश के शासक दारयबहु प्रथम ने सिन्ध के आस-पास के क्षेत्रों पर अपना आधिपत्य स्थापित किया था। इसकी पुष्टि हैरोडोटस के विवरणों से भी होती है। सिकन्दर के आक्रमण से पूर्व भारत के व्यापारी समुन्द्र मार्ग से ईरान, बेबीलोन आदि देशों से व्यापार करते थे। इस दशा में यह सत्य है कि अर्थशास्त्र की रचना चौथी सदी ई०पूर्व में ही हुई थी।

यह पूर्णतया सही है कि अर्थशास्त्र में छोटे-2 संघीय रूपी गणतन्त्रों का उल्लेख मिलता है। कौटिल्य तक्षशिला में आचार्य का कार्य करते थे और चन्द्रगुप्त मौर्य वहां शिक्षा प्राप्त करता था। सिकन्दर ने भारत आक्रमण के दौरान उत्तर-पश्चिमी और पश्चिमी भारत के लगभग 28 गणराज्यों से सम्पर्क हुआ था। इनके शासक अपने गण के साम्राज्य के विस्तार में लीन रहते थे। अतः इनका उल्लेख अर्थशास्त्र में होना स्वाभाविक है। कौटिल्य ने अपने ग्रन्थ में जिस दण्डनीति का प्रतिपादन किया है, वह भारत की परम्परागत राजनीति थी और स्वाभाविक रूप से उसके प्रतिपाद्य विषय जनपद थे। पन्तजलि के महाभाष्य में कौटिल्य या चाणक्य का नाम न आने से यह नहीं कहा जा सकता है कि दूसरी सदी ई०पू० से पहले इस नाम का कोई व्यक्ति न हुआ है।

महाभाष्य एक व्याकरण का ग्रन्थ है, न कि इतिहास-ग्रन्थ व पुराण। इसमें व्याकरण के नियमों को स्पष्ट किया गया है। अतः उसमें जिन ऐतिहासिक पुरुषों का नाम न आये हो, उनकी सत्ता से इन्कार करना सही नहीं है।

कौटिल्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र में 'इति कौटिल्य' कहकर चाणक्य या कौटिल्य के मत को प्रतिपादित किया गया है, यह सही है, परन्तु इससे यह परिणाम नहीं निकाला जा सकता है कि इसकी रचना चाणक्य या कौटिल्य ने नहीं की है। अपितु यह तो प्राचीन भारत की लेखन शैली है, जिसे वात्स्यायन ने कामसूत्र में और राजषेखर ने काव्य-मीमांसा में भी इस शैली को अपनाया है।

इन समस्त युक्तियों से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अर्थशास्त्र की रचना कौटिल्य ने चौथी शताब्दी ई0पूर्व में की और कौटिल्य चन्द्रगुप्त मौर्य के गुरु एवं प्रधानमन्त्री थे। इस आचार्य द्वारा दण्डनीति या अर्थशास्त्र विषयक एक ग्रन्थ की रचना की गई। कौटिल्य अर्थशास्त्र की अन्तः साक्षी द्वारा भी यही जानकारी मिलती है कि इस ष शास्त्र के रचियता वही चाणक्य थे, जिन्होंने नन्दराज का विनाश करके चन्द्रगुप्त मौर्य को मगध का सम्राट बनाया था।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

- अग्रवाल, वी0 एस0 : इण्डिया एज नॉन टु पाणिनि, बनारस, 1963.
- कृष्ण राव, एम, वी0 : स्टडीज इन कौटिल्य, दिल्ली, 1958.
- रंग राजन, एल0 एन. : कौटिल्य द अर्थशास्त्र, न्यू दिल्ली 1992. पेगुइन बुक्स
- शाम शास्त्री, आर. : कौटिल्य अर्थशास्त्र, बँगलोर, 1915, गर्वमैन्ट प्रैस
- कॉंगले, आर0 पी0 : द कौटिल्य अर्थशास्त्रा (थ्री वोल्यूम्स), 1963 बोम्बे
- धर, सोमनाथ : कौटिल्य एण्ड द अर्थशास्त्र, 1981 न्यू दिल्ली, मारवान,
पब्लिकेशन

E- MARKETING: GROWTH AND CHALLENGES IN INDIAN PERSPECTIVE-A STUDY

Dr. Satbir Singh

Assistant Professor, (Deptt. of Mgt. and Computer Sciences), Vaish College Bhiwani

Abstract

Marketers have been using electronic tools for many years, but the internet and other information technologies created a flood of interesting and innovative ways to provide customer value. The more the Internet settles into mainstream business, the more it spawns innovation and more change. Electronic marketing is the youngest of the membership growth devices and has grown tremendously since mainstreaming a little more than two decades ago. E-marketing is traditional marketing using information technology but with some twists. The marketing transformation results in new business models that add customer value, build customer relationships, or increase company profitability. This in turn created a virtual market for actual products globally. This paper focuses on the opportunities and the challenges in the process of e- marketing. Evolution of e - Marketing has been one of the most important and influential trends in the field of business, marketing and information technology over the recent years. E Marketing helps selling of goods and services using digital technologies. These technologies are creating a competitive advantage to the brands and companies while the traditional marketing methods are still followed. The basics of marketing remain the same - creating a strategy to deliver the right information to the right people at the right time.

Keywords-: Challenges, E-marketing, barriers, technology, customer's relationship, evolution

INTRODUCTION

Before the term e-marketing evolved, the term digital marketing was used in the 1990s. It is often referred to as "online marketing", "internet marketing", or "web marketing". Technically speaking, the Internet is a global network of interconnected networks. In this context, E-marketing is the use of information technology in the process of creating, communicating and delivering value to customers and for managing customer relationships in ways that benefit the organization and its stakeholders. E-marketing is the application of a broad range of information technologies for-

- 1) Transforming marketing strategies to create more customer value through more effective segmentation, targeting, differentiation and positioning strategies.
- 2) More efficiently planning and executing the conception, distribution, promotion, and pricing of goods, services, and ideas, and
- 3) Creating exchanges that satisfy individual consumer and organizational customers' objectives.

The rapid growth of the web, subsequent bursting of the dotcom bubble and current mainstreaming of the Internet and related technologies created today's climate of marketing Convergence: the comprehensive integration of e-marketing and traditional marketing to create seamless strategies and tactics.

REVIEW OF LITERATURE

An extensive literature review is done on the concepts and theories related to E-marketing. Several Industry experts, researchers and businessmen expressed their view on E-marketing as a powerful strategy in attracting the customers. The following are the opinions of different experts.

N.S. Muthukumaran, Director, Online Research, The Nielsen Company, India: -By online media almost no aspect of life remains untouched. As our lives become busier and cluttered, when it comes to researching and buying products isn't surprising that consumers turn to the matchless, convenience of the Internet. The Online shoppers tend to stick to the shopping sites they are familiar with. Capturing the online shoppers early and creating a positive shopping experience for them would prove beneficial in the long run for marketers.

Dr Subhas Ray, President, IAMAI- Consumer e-commerce is a major driver of the economy and we are happy that it has achieved a very decent size in India. It is perhaps the only sector which has operated under, sometimes, hostile and at all other times indifferent policy environment.

Objective of the study

1. To know the benefits of e-marketing.
2. To identify the barriers in growth of e-marketing.
3. To know about the challenges of e-marketing.
- 4.

Research Methodology

- **Data Source Used: Secondary Data.** The present study is based on secondary data. Basically, the required information has been derived from
 1. Various books. Articles from Newspapers, Magazines and journals, and
 2. From the various related web-sites which deals directly or indirectly with the topic.

E-MARKETING HAS AT LEAST FIVE GREAT BENEFITS

1. Both small and large firms can afford it.
2. There is no real limit on advertising space, in contrast to print and broadcast media.
3. Information access and retrieval are fast, compared to overnight mail and even fax.
4. The site can be visited by anyone from any place in the world.
5. Shopping can be done privately and swiftly.

E-MARKETING PROVIDES A NUMBER OF BENEFITS TO MARKETERS:

1. Quick adjustments to market conditions: Companies can quickly add products to their offering and change prices and descriptions.
2. Lower costs: On-line marketers avoid the expense of maintaining a store and the costs of rent, insurance, and utilities. They can produce digital catalogues for much less than the cost of printing and mailing paper catalogues.
3. Relationship building: On-line marketers can dialogue with consumers and learn from them.
4. Audience sizing: Marketers can learn how many people visited their on-line site and how many stopped at particular places on the site. This information can help improve offers and ads. Clearly, marketers are adding up on-line channels to discover, attain, communicate, and sell.

E-MARKETING PROVIDES A NUMBER OF BENEFITS TO BUYERS:

1. Convenience: Customers can order products 24 hours a day wherever they are. They don't have to sit in traffic, and a parking space, and walk through countless shops to find and examine goods.
2. Information: Customers can find reams of comparative information about companies, products, competitors, and prices without leaving their office or home.
3. Fewer hassles: Customers don't have to face salespeople or open themselves up to persuasion and emotional factors; they also don't have to wait in line.

PROBLEM FACED WHILE USING E-BUSINESS

While India's Internet adoption rate has been projected to grow rapidly significant barriers limit the growth of future adoption and e- business. A report conducted by Nasscom and Boston Consulting group outlines the following barriers:-

- 1) PCs and other devices to access the Net for individuals are less than 1%.
- 2) Telephone line penetration is limited to less than 3%of the population.
- 3) Poor telecom and communication infrastructure for reliable connectivity.
- 4) Internet connectivity is very slow and access costs are still very high.
- 5) High legal and regulatory barriers.

CHALLENGES IN THE E-MARKETING

Problem of integration

one of major problems with marketing campaigns is that they take up several offline and online promotional channels such as press, brochure, catalogue, TV, cell phone, e-mail, internet, social media etc, while lack a comprehensive, harmonizing marketing structure. Each item is used separately and accomplished as a different task not as a part of an integrated campaign aiming at the realization of specified and particular objectives. This deficiency can be compensated for by taking a holistic come up to which synchronizes the different traditional and internet age modes of marketing communication as moments of an integrated organization. With respect to the practical, online component of an integrated marketing what is "also worth noting (or reminding) is that like offline marketing, all aspects of online marketing are inextricably connected- and in many cases mutually dependent.

Lack of face-to-face contact

Internet dealings involve no alive, personal interaction and that is why some customers consider electronic modes of providing customer service impersonal and enjoy the experience of shopping in a bricks and mortar, physical store. They like better to talk to store personnel in a face to face conduct, touch the related product with their hands, and socialize with other customers. Virtual marketplace cannot provide for this function of offline shopping and lacks personal interaction. To be more specific "for the types of products that rely heavily on building personal relationship between buyers and sellers such as the selling of life insurance, and the type of products that requires physical examination, Internet marketing maybe less appropriate.

Security and Privacy

It is clear enough that now a days customers' data can easily be shared with other companies without asking for their authorization. Moreover their more crucial personal data such as usernames and passwords are not protected from hackers (Lantos, 2011: 74).

Lack of trust

"online trust includes consumer perceptions of how the site would deliver on expectations, how believable the site's information is, and how much confidence the site commands" (134). These days in spite of the rapid growth of online dealings a number of people still suspect electronic methods of paying and still have doubt whether the purchased items will be delivered or not. On the other hand, occurrence of online fraud has made customers hold negative or doubtful attitudes towards online transactions.

CONCLUSION

In the future, consumer control, improved strategy integration, refined metrics, increase wireless networking, receiving appliance convergence and the semantic web will change the marketing landscape. This paper discussed the growth and the challenges in the ever-expanding area of e marketing. This field needs constant learning. One cannot overlook the fact that it is a technology driven approach. There is a dire need to keep abreast of the latest in the field of computer science and information technology. Poorly created and executed programs create mistrust between clients and marketers. Spam, identity theft, intrusive advertising, technical snags, not keeping terms with contract / agreements, gap between ordered products and actual deliveries have

created deep mistrust in e marketing. Hence the growth of e-marketing depends also on the growth of business ethics on the one hand and consumer protection laws on the other. In other words, the relevance of 'credibility' in business in general and marketing in particular is mammoth which can be addressed with skill development in the field of information technologies. While one has to adopt caution, e marketing offers a world of opportunities. This understanding opens the door for many new product opportunities that provide value to demanding customers of the future.

REFERENCES

Devi .C.S and Anita. M (2013): "E marketing challenges and opportunities" pg. 96 – 105 retrieved from www.ijssm.in.

<http://www.economist.com/node/1>

<http://www.Internetworldstats.com/asia/in.html>

http://www.jumpseller.com/files/other/final_ecommerce_report07.

<http://articles.economictimes.indiatimes.com/2014-10->

Date of Publication



INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND
ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | E-ISSN 2348-1269, P-ISSN 2249-5139

An International Open Access Journal

The Board of

International Journal of Research and Analytical Reviews (IJRAR)

Is hereby awarding this certificate to

Dr. Satbir Singh

In recognition of the publication of the paper entitled

E-MARKETING: GROWTH AND CHALLENGES IN INDIAN PERSPECTIVE-A STUDY

Published in IJRAR (www.ijrar.org) UGC Approved (Journal No. : 43602) & 5.75 Impact Factor

Volume 6 Issue 1, Date of Publication: January 2019-01-05 04:07:40

Dr. Satbir Singh

EDITOR IN CHIEF



PAPER ID : IJRAR19J5081

Registration ID : 238604

UGC and ISSN Approved - International Peer Reviewed Journal, Refereed Journal, Indexed Journal, Impact Factor: 5.75 Google Scholar

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS | IJRAR

An International Open Access Journal | Approved by ISSN and UGC

Website: www.ijrar.org | Email id: editor@ijrar.org | ESTD: 2014

Technology in Indian Banking Services-A Study

Ankit Aggarwal , Dr. Satbir Singh, Dr. Hemant Verma

Assistant Professor of Commerce, Assistant Professor of Commerce, Assistant Professor of Computer Sciences
Department of Management and Computer Sciences, Vaish College Bhiwani (Haryana)

Abstract:

Over the years, the Indian Banking Sector has seen a number of changes. Most of the banks have begun to take an innovative approach towards banking with the objective of creating more values to the customers and consequently the banks.

Information Technology (IT) has introduced new business paradigms and is increasingly playing a significant role in improving the services in the banking industry. E-Banking enables the customers to carry out most of their banking transactions using a safe website which is operated by respective banks. Various Innovations in Banking and Financial Sectors are ECS, RTGS, NEFT, EFT, ATM, Retail Banking, Debit and Credit cards and many more. With the emergence of Liberalization, Privatization and Globalization (LPG) in India, Banks are focusing on Research and Development and applying various innovative ideas and technology in their industry. There is a close relationship between the development of banking sector and the new technological and Electronic data processing innovations. The paper aims to explore some important and popular IT enabled services of banking institutions, its benefits & issues at present and their future prospects as well as the advancement of banking sector by information technology.

Keyword: Information technology, ATM, Internet Banking, Mobile Banking, Fund Transfer Indian Banking Sector, New Technological Changes.

Introduction

The changes after economic Liberalization, Privatization and Globalization (LPG) process, initiated since 1991, have significant impact on the financial institution. Information Technology (IT) revolution is of entire changing the way financial business is done and has considerably widened the range of products and increased the expected demands of the customers. Financial sector reforms and banking sector reforms are the part and parcel of economic reforms, which strengthen the economic reforms. IT Act of 2000 gave new dimension to the Indian financial sector. IT has created transformation in banking sector, banking structure, business process, work culture and human resource development. It affected the productivity, profitability and efficiency of the banks to a large extent. Strengthening the financial sector and improving the functioning of financial markets have been the core objective of the financial sector reforms. It was in June 1999 that an IT revolution actually appeared in the Indian financial institutions specially banking sector when the world of IT seemed too wide open with introduction of Indian Financial Network. This Indian Financial Net included a wide area satellite based network, which used Very Small Aperture Terminals Technology. The Reserve Bank of India jointly set it up with the Institute for Research & Development in Banking Technology. The Indian Financial Network initially comprised only the public sector banks but was later on opened up for participation by other categories of members including foreign banks as well. It was the payment system, which was the first segment of banking system, benefited a lot from the introduction of the new technology. This segment being the lifeline of a bank was later on fully mechanized with the introduction of Automated Teller Machine (ATM), This facility was further enhanced by the internet facilities such as ECS, RTGS, NEFT, EFT, Retail Banking, Debit and Credit cards and many more, which was also significantly influenced delivery channels of the banks. Internet has emerged as an important medium for delivery of banking products and services. The IT Act, 2000 provides the electronic data to be treated as a valid proof in a court of law in most of the cases except those cases, which continue to be governed by the provisions of the Negotiable Instrument Act, 1881. RBI has also stressed the implementation of centralized funds management system, which facilitates centralized viewing of balance positions of the account holders across different accounts maintained at various locations of Reserve Bank of India. This process was divided in two parts. The first part made the centralized funds enquiry system available to the customers and the second part arranged for a centralized funds transfer system by the end of 2003. In order to enhance the information security on network, Government

of India has approved the Institute for Development and Research in Banking Technology as Certification Authority for digital signatures. Electronic funds transfer is being enhanced in terms of security by means of implementation of digital signatures using the facilities offered by the certification authority. Further recognizing the need for technology based payment products a pilot project for multi application smart cards in combination with a few banks, under the guidance of the Ministry of Communications and Information Technology, Government of India, has been initiated. All this technologic advancement has changed the face of Indian Banking System. Banking environment has become highly competitive today. To be able to survive and grow in the changing market environment, banks have introduced the latest technology.

The Indian Banking has finally worked up to the competitive dynamics of new Indian market and its relevant issues concerning the various challenges of Globalization. IT has helped the Banking industry to deal with the challenges the new economy poses. Technology has opened up new markets, new products, new services and efficient delivery channels for the banking industry. Few examples are such as Online Banking, Mobile Banking and Internet Banking. The progress of technology and development of worldwide have significantly reduced the cost of global fund transfer. The IT revolution has set the stage for unprecedented increase in financial activity across the globe.

Literature Review

Awasthi & Sharma [1] reveals that the advancement in technology are set to change the face of the banking business. Technology has transformed the delivery channels by banks in retail banking. Janki [2] analyzed that how technology is affecting the employee's productivity. There is no doubt technology has changed the operating efficiency and customer services. The focus on technology will increase new products, strengthen risk management etc. The study concluded that Technology is the only tool to achieve their goals. Rao [3] reveals the impact of new technology on banking sector. The technology is changing the way the business is done and open new vistas for doing the same work differently in most cost-effective manner. Tele banking and internet-banking are making forays such that branch banking may give to honor banking. Bhasin [4] analyzed the impact of IT on financial sector. It has transformed the repetitive and overlapping systems and procedures, into simple single key pressing technology resulting in speed, accuracy and efficiency of conducting business and enabling them to enter into the new activities. Sabnani [5] analyzed the importance of Universal Banking in India. The developments in IT and telecommunications are allowing international pooling of financial resources thereby spreading the risk across more than one market. He feels that Universal Banking System will increase in India. Vageesh [6] highly appreciated the new private sector banks which have adopted IT. The new private sector banks with their state-of-the-art technology and grandiose plans to make inroads into e-Banking. Banks are foraying into net banking offering great convenience to the customers on one hand and results in lower transaction cost for the banks as well for the banks on the other hand. Verma [7] analyzed the impact of IT on public sector banks and new private sector banks and observed that IT is a threat for public sector banks whereas strength of new private banks. New private banks are fully computerized and providing services on internet, especially ICICI Bank and HDFC Bank very active on this front and concentrating on Internet and e-Commerce to offer the clientele a whole range of products under one roof. Public sector banks have to do a lot on improving the productivity and efficiency. Arora [8] highlighted the significance of bank transformation. Technology has a definitive role in facilitating transactions in the banking sectors and the impact of technology implementation has resulted in the introduction of new products and services by various financial institutions in India.

Objective of the Study

The Objectives of the present paper are:

1. To study the rapid advancement occurring in the banking sector.
2. To analyze the performance of existing technology based products offered by the banks in India and its future prospects.

Methodology

The present review paper is based on the Secondary data. It analyses the available literature on Banking technology and various existing and upcoming innovative products offered by Indian Banks. The Secondary data pertaining to the study was obtained from the various journals, books, newspapers and websites of the concerned Banks.

Theoretical Framework

Banking sector plays an important and crucial role in the development of Indian economy. With the use of technology, there had been an increase in penetration, productivity and efficiency of banking practices. It has not only increased the cost effectiveness but also has helped in making small value transactions feasible. Many researchers have given their views on the innovation in the services. Many researchers have given their views on the innovation in the services. Bhosle and Sawant in research paper, "Technological Developments in Indian Banking sector" discussed the role and concept of banking sector in the development of Indian economy. This paper highlights that the technology allows taking place faster and offering unparalleled convenience through various delivery channels like MICR, CTS, RTGS, and NEFT etc. Avasthi and Sharma (2000) in their study have analyzed that advances in technology are set to change the face of banking business. Technology has transformed the delivery channels by banks in retail banking. The study has also explored the challenges the banking industry and its regulator faces. Arora (2003) in his study highlighted the significance of banking transformation. Technology has a definite role in facilitating transactions in the banking sector and the impact of technology implementation has resulted in the introduction of new products and services by various banks in India. Mangnale, Chavan and Randive, in their research paper "E-CRM in Indian Banking Sector, Golden Research Thoughts" analyzed in their study that technology, people and customer are the three elements which depend on the whole success of banking in the fast changing economic environment. This paper analyzes the concept of e-CRM in Indian banks from its various dimensions covering specifically the needs, present status and future prospects. Models using mobile devices and efficient payment systems will make banking services widely available 24 x 7. The various technological platforms provided by the banks to their customers bring greater flexibility and operational convenience by providing computerized banking environment, speedier transactions, accurate statements, ATMs offering 24 hours banking, Mobile banking, Internet banking; anywhere and at anytime. Customer terminals are proved to be a milestone in the development and growth of banks.

Technology and Innovations in Banking

Banking environment has become highly competitive today. Developments in the field inclusive of information technology strongly support the growth and inclusiveness of the banking sector by facilitating inclusive economic growth. IT improves the front end operations with back end operations and helps in bringing down the transaction costs for the customers. Major events in the field of IT in banking sector in India are:

- Introduction of ATMs in 1987.
- Card based system in late 1980's and 90's.
- Electronic Clearing Services (ECS) in early 1995
- Electronic Funds Transfer (EFT) in early 2000.
- Introduction of RTGS in 2004.
- National Electronic Fund Transfer (NEFT) in 2005 by replacing EFT.
- CTS in the year 2008.
- The Payment and Settlement Systems Act passed in December 2007.

Automated Teller Machines (ATM)

ATMs were introduced to the Indian Banking industry during 1987 by HSBC Bank in Mumbai. With the advent of ATMs, banks are able to serve the customers outside the banking halls. Now the ATMs are equipped with modern technologies and facilitate various features for its customers which includes Bill payments, ticket booking, Mobile recharges, Ubiquitous multifunction, ATMs biometric, Multilingual ATMs and ATM network switches. The number of ATMs in India is growing at a brisk pace. ATM segment witnessed a growth

45.44% for the period from 2012-2019. According to available data the number of ATMs which were 92,455 in 2012 is increased to 2,03,458 in January 2019, which is a good sign for whole industry.

Card Based System (CBS)

Among the Card based delivery mechanisms for various banking services, are Debit Cards and Credit Cards. The amount of Debit Card transactions increased rapidly which was Rs.469.1 million in year 2012-2013 and Rs.808.1 million in year 2014-2015, whereas the amount of Credit Card transactions was Rs.396.6 million in year 2012-2013 and Rs. 615.1 million in the year 2014-2015.

Electronic Clearing Services (ECS)

ECS introduced by RBI in 1995, similar to Automated Clearing house system. ECS has two variants i.e. ECS Debit clearing services and Credit clearing services. ECS Debit operates on the principles of single credit and multiple debits and is used by utility service providers for collection of electricity bills, telephone bills and other charges and also by banks for collection of principal and interest repayments. ECS Credit handles bulk and repetitive payment requirements of corporate and other institutions and is used for transactions like payment of salary, dividend, pension, interest etc.

Electronic Fund Transfer (EFT)

The EFT system enables an account holder of a bank to electronically transfer funds to another account held with any other bank. The most widely used EFT programs is Direct deposits, in which payroll is deposited straight into an employee's bank account, although it transfers the funds through an electronic terminal including Credit card, ATM and Point of Sales (POS) transactions.

REAL TIME GROSS SETTLEMENTS (RTGS)

The introduction of RTGS in 2004 was instrumental in the development of infrastructure for Systematic Important Payment System (SIPS) and it settles all interbank payments and customer transactions above Lakhs. RTGS was launched by RBI, which enabled a real time settlement on a gross basis. To ensure the RTGS system is used only for large value transactions and retail transactions take an alternate channel of EFT. The reach and utilization of RTGS has witnessed a sustainable increase since its introduction. In the year 2013 to 2018-2019 transactions related to customer remittances have raised. This shows the increasing popularity of RTGS in Indian banking industry.

National Electronic Fund Transfer (NEFT)

New and improved variant of EFT was implemented in November 2005 to facilitate one to one fund transfer requirement of individuals as well as corporate. It uses the Structured Financial Messaging Solution (SFMS) for EFT message creation and transmission from the branch to the banks gateway and to the NEFT centre, so it can transfer the funds with more security. With the SFMS facility, branches can participate in both RTGS and NEFT System. Using the NEFT infrastructure, a one way remittance facility from India to Nepal has also been implemented by the RBI since 15 May, 2008.

Innovative Products and Policies of Banks

- "My Saving Rewards", the programme allow customers to accumulate reward points on a host of saving account transactions such as bill pay, online shopping, EMI payment etc.
- 24x7 fully electronic branches are opened to undertake real time transactions by the customer.
- "E-Locker", an online service for storing important documents for privilege banking customers.
- UID authentication for Aadhar based payments and enabling corporate to pay taxes online.
- Cash Deposit Machines (CDMs) are installed for cash deposits by customers at these machines by using the ATM cum Debit card.
- E-trade SBI, a web based portal launched in March 2011 to access trade finance services with speed and efficiency.
- To facilitate the Electronic Benefit Transfer (EBT) scheme for routing MGNREGA where all scheduled commercial banks were instructed to open Aadhaar enabled bank accounts of all the beneficiaries.
- Expansion of branches in remote locations either through a bank branch or Business Correspondence (BC) other modes so that every eligible person should have a bank account.
- Know Your Customer (KYC) norms simplified to facilitate financial inclusion and customer services.
- The RBI is replacing the existing RTGS with a new NG-RTGS system which includes which includes few extra features like advanced liquidity management facility, Extensible Mark up Language (XML) based messaging system etc.
- Recently launched scheme of government "Jan Dhan Yojana" with the motive that every family must have bank account
- Today, the banks installed Solar ATMs, windmills to fulfill their own energy needs, paperless banking etc SBI is the largest deployer of Solar ATMs.

Conclusion

The transformation in banking services is providing various advantages to customers with anytime, anywhere access to their accounts as well as power to operate their accounts. Although the change is good but still banks in India are required to address the important issues to get the full benefits of information technology implementation. IT has introduced new business paradigms and is increasingly playing a significant role in improving the services in the banking industry. E-Banking enables the customers to carry out most of the banking transactions using a safe website which is operated by respective banks. Various Innovations in Banking and Financial Sectors are ECS, RTGS, NEFT, EFT, ATM, Retail Banking, Debit and Credit cards and many more. With the emergence of Liberalization, Privatization and Globalization (LPG) in India, Banks are focusing on Research and Development and applying various innovative ideas and technology in their industry. There is a close relationship between the development of banking sector and the new technological and Electronic data processing innovations.

References

- [1] Avasthi, G. P. and Sharma, M., — Information technology in banking : challenges for regulators/Pragnan Vol.29(4) ,pp. 17-22, 2001.
- [2] Janki, — Unleashing employee productivity : need for a paradigm shift Indian Banking Association Bulletin, Vol. 24(3) ,pp.7-9, 2002.
- [3] Rao, N. V., — Changing Indian banking scenario: A paradigm shift. Indian Banking Association Bulletin, Vol. 24(1) pp.12-20, 2002.
- [4] Bhasin, T. M., — E-Commerce in Indian banking, Indian Banking Association Bulletin, Vol. 23(4&5), 2001
- [5] Sabnani, P.- — Universal Banking —, IBA Bulletin, Vol. 22(7) July 2000, pp34-36
- [6] Vageesh, N.S.- — New private banks : new kids on the Block, Business line, March 2000.
- [7] Verma, " Banking on change IICFAI Reader ,May 2000, pp.69-72.
- [8] Arora, Kalpana,—Indian banking managing transformation through IT, Indian Banking Association Bulletin ,Vol. 25(3), pp. 134-38. March 2003.



INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRRAR) | E-ISSN 2348-1269, P-ISSN 2349-5138
An International Open Access Journal

The Board of

International Journal of Research and Analytical Reviews (IJRRAR)

Is hereby awarding this certificate to

DR. SATBIR SINGH

In recognition of the publication of the paper entitled

TECHNOLOGY IN INDIAN BANKING SERVICES-A STUDY

Published In IJRRAR (www.ijrrar.org) UGC Approved (Journal No : 43602) & 5.75 Impact Factor

Volume 6 Issue 1, Date of Publication, March 2019-03-17 01:19:27

PAPER ID : IJRRAR19J3533
Registration ID : 199739



EDITOR IN CHIEF

UGC and ISSN Approved - International Peer Reviewed Journal, Refereed Journal, Indexed Journal, Impact Factor: 5.75 Google Scholar

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS | IJRRAR

An International Open Access Journal | Approved by ISSN and UGC

Website: www.ijrrar.org | Email id: editor@ijrrar.org | ESTD: 2014

Consumer Awareness Towards Mobile Number Portability In Haryana - A Study

Dr. Satbir Singh

Assistant Professor, (Deptt. of Mgt. and Computer Sciences), Vaish College Bhiwani,

ABSTRACT

Mobile number portability (MNP) is a process that allows users to choose desired network or service provider. MNP is a new but a fast growing trend in the world of mobile service. In the modern age it attracts more and more and now becoming a mass revolution in the field of mobile network. This paper examines the consumer awareness and procedures followed for mobile number portability and try to find reasons for switching the service providers. The present study used exploratory as well as descriptive research designs. The data were collected from the all four divisions of Haryana state namely Hisar, Rohtak, Gurgaon and Ambala by using stratified sampling. The collected data was analyzed using different statistical techniques. SPSS (18.0 version) software was used to compile all observations and analysis of data. For content analysis, sources like newspapers, journals, articles, books, social sciences journals, professional literature and internet search were used. Result suggest that respondents are not only aware about the MNP but they also know the procedure of using MNP and network coverage, customer care, quality of service are the main factors to switch over another service provider Portability benefits subscribers and increases the level of competition between service providers, rewarding service providers with the best customer service, network coverage, and service quality.

Keywords: Mobile Number Portability, Mobile Service Provider, Mobile Network Operator

Introduction

Today communication is one of the gifts for man. Communication helps in acceleration of growth of economy by transmitting information and simplifying motivation. Communication has been playing a vital role in man's life from time memorial. Invention like Telephone, Radio, Television and computer made a tremendous change in the world. The first telephone was introduced by Alexander Graham Bell, out of a wooden stand, a funnel, a cup of acid and a copper wire. The concept of wireless telephone came in mind in-1970, after Second World War. In 1979 the first commercial cellular telephone system began operation in Tokyo. It is one of the greatest achievements of late 20th Century. Its purpose is to provide universal connectivity and increase efficiency and productivity in all sectors. This system is bringing a major change in the world Scenario and transforming world in to global village. Mobility helps one to send and receive information anytime, anywhere and make one to keep up the place in the competitive world.

Tele Communication Medias in India

Tele communication Medias in India have been laying a phenomenal role in the dimensions development activities. Satisfactory functioning of telecommunication network is an essential component of the economic infrastructure. The application of modern marketing principles in the telecom Medias would pave the way for a generation of profits and would certainly make these telecom services quite affordable to the consumers at large.

History of Mobile Phones

Mobile phone technology began in 1947. The theory was that, a person could use a cordless type communications device by transferring the communication signal wave from one base station to the other. This meant limitless accessibility to the user and he or she could travel as per as communication station would allow. Unfortunately, the technology to do so did not exist at the time.

As technology moved forward, so did the concept of making the mobile phone theory a reality. With limited frequencies as supplied to companies by the FCC (The governing body of airwaves) as companies room began to offer selected wireless service in selected areas. As time passed, eventually we get to where we are today- wireless phones are everywhere.

Today the mobile phone towers that governs our airwaves can be seen in every town, city and off of every major road ways. They are the link that is needed to triangulate the signal we use every time we make a call. Naturally with such ever changing technology, future of the mobile phone is limitless.

Literature Review

The phenomenal growth of mobile telephony in India has given the Indian telecommunication sector a high visibility in the media. Many newspaper and magazine articles highlight this growth, and report its segment-wise distribution. MNP in particular has received great media attention. However, not many formal studies have been undertaken on issues related to the Indian telecommunications sector. **Stefan Buehler (2007)** examines the consequences of introducing mobile number portability (MNP). As MNP allows consumers to keep their telephone number when switching providers, it reduces consumers' switching costs. However, MNP may also cause consumer ignorance if telephone numbers no longer identify networks. **Suthar (2012)** studied on consumer behavior after mobile number portability with reference to Gujarat telecom circle and reflected on mobile phone user's perception and switching barriers that discouraged them from switching operator. **Jha (2008)** suggested that it is the youth which is the real growth driver of the telecommunications industry in India. His study examined how demographics influenced the usage pattern of mobiles. **Robins (2008)** highlighted the issues in marketing the next generation of mobile telephones, viz. "3G". The first is related to the pricing of 3G handsets and services, given the high licensing fees. All variants of 3G remain dependent on largely unproven technology. He pointed out that marketing of 3G would be of high risk. First, 3G has no obviously unique selling proposition to build on except, perhaps, the combination of live video and easy portability. Second, the potential customers have not yet had adequate opportunity to signal their service likes and dislikes. Third, the cost and complexity of service provision leave doubt about the market's reaction to price.

Bhatt (2008) analyzed the perceptions of students on the usage, necessity, and spending on mobile phones. He also compared the students' perspectives on the different mobile handset companies and mobile service providers. **Kapoor (2009)** reported that business subscribers mostly from the postpaid category are more likely to shift their service providers' gears, while the prepaid, low and medium spenders are not likely to be motivated to switch. He suggested that, as the market grows and hyper-competition takes effect, retention of the right type of customers will become critical. He also argued that there is a powerful opportunity for operators to drive in-bound porting of high-value subscribers, provided that they have a good understanding of who is more likely to switch. Satisfaction scores on network quality dropped for almost all operators, with Airtel, BSNL and Reliance registering the greatest drops. He suggested that loyalty to operators is seen to be higher among lower socio-economic groups, older age groups, and among females.

Yadav (2013) studied "Effects of Mobile Number Portability in Telecom Sector - A Case Study of Idea Cellular Ltd", and figured out the impact of mobile number portability on service providers and service users with the effect on sale of IDEA and strategies adopted to retain and attract customers by IDEA cellular limited.

MNP Background

The Indian Telecom industry is the fastest growing industry in the world today and Mobile Number Portability (MNP) has added to its success and growth. MNP process allows free choice of mobile operator by the subscriber. It has elevated the level of open competition amongst mobile network operators. This has left operators with no choice but to improve on quality of services and customer satisfaction. On the other hand, industry is gaining more faith as customers are no more dependent on to a single operator for their mobile number. After many delays and trial runs in Haryana, MNP was finally launched in January 2011 by Prime Minister Dr. Manmohan Singh and Telecom Minister Mr. Kapil Sibal.

MNP process was piloted in India in November 2010 and was extended to whole country in January 2011. As per the data from TRAI, 2.3 million mobile phone subscribers requested for mobile number portability in the month of August 2013 alone. To add, TRAI says 100 million mobile phone customers have already raised the request till August 2013. Mobile number portability that has been successful in many parts of the world for over a decade now not only offers the user the option to decide his/her network while retaining their number, it also provides opportunities for network operators to fascinate existing customers to their network by providing better services. Although, the movement is yet to pick up in India, in other parts of the globe, mobile operators usually offer some freebies to customers porting in to their network, while the service is also available for free and is finished in as quickly as 15-20 minutes. On the other hand, subscribers in India, have to pay a small fee of Rs. 19, if they wish to port their number to another network and often wait for around 7 days to successfully move to another operator.

Statement of the Problem

In our country the growth of service marketing especially mobile phone industry is still in its infancy stage, as compared to the industrially advanced countries. It is for the fact that the economy of our country has been in the developing stage. There are various mobile phone industry mainly depends on the customer satisfaction. With the arrival of MNP, competition will increase dramatically and markets historically dominated by a single player will see increased fragmentation. It is evident that service providers with better choices and offers will benefit from this new reality. The study is undertaken to gain insight about the awareness level of MNP facility among the customers, factors influencing their porting decision and to analyze the customer's satisfaction after availing MNP.

Objectives of the Study

1. To identify customer awareness about mobile number portability.
2. To identify the reasons for the switching the service provider.
3. To identify the customer satisfaction on MNP
4. To identify factors that motivate customer to switch over service provider.

Significance and Scope of the Study

The present study will provide the awareness about the Mobile Number Portability. Resultantly, customers can opt so many networks and can take the benefits from mobile phone service providers in terms of best services, low call rates and better connectivity. Further, the study was confined to four divisions of Haryana State by selecting one district from each division.

Data Collection

Data were collected from primary as well as secondary source. The data were collected from users belonging to the different age groups. A well-structured questionnaire was used for collection of data.

Table 1: Awareness about the procedure followed for Mobile Number Portability.(Please tick as \checkmark)

STATEMENT	N/%	YES	NO	TOTAL
Awareness about Mobile Number Portability	N	159	241	400
	%	39.7	60.3	100

Source: Survey, Data processed through PASW 18.0**Table 2: Sources of awareness about Mobile Number Portability**(Rate these factors in scale of 1 to 5 on the basis of your preference i.e. 1=Very Important, 2=Important, 3=Less Important, 4=Unimportant, 5= Least Unimportant) (Please tick as \checkmark)

S.N.	Sources of Awareness		1	2	3	4	5	9	Total
i.	Newspapers	N	113	45	1	0	0	241	400
		%	28.3	11.3	0.3	0	0	60.3	100
ii.	Television/Radio	N	57	71	30	1	0	241	400
		%	14.3	17.8	7.5	0.3	0	60.3	100
iii.	Friends	N	95	32	26	6	0	241	400
		%	23.8	8.0	6.5	1.5	0	60.3	100
iv.	Relatives	N	15	60	62	22	0	241	400
		%	3.8	15.0	15.5	5.5	0	60.3	100
v.	Magazines	N	54	76	24	4	1	241	400
		%	13.5	19.0	6.0	1.0	0.3	60.3	100
vi.	Service providers' company agent	N	32	48	42	33	4	241	400
		%	8.0	12.0	10.5	8.3	1.0	60.3	100

Source: Survey, Data processed through PASW 18.0

Findings

Table 1 depicts that 241 (60.3 per cent) respondents are not aware about the procedure followed for MNP whereas 159 (39.7 per cent) respondents are aware about the procedure followed for MNP.

Table 2 depicts that **newspapers** are 'very important' sources of awareness about mobile number portability for 113 (28.3 per cent) respondents whereas the **newspapers** are 'important' sources of awareness about mobile number portability for 45 (11.3 per cent) respondents. **Television/Radio** are 'important' sources of awareness about mobile number portability for 71 (17.8 per cent) respondents whereas the **television/ radio** are 'very important' sources of awareness about mobile number portability for 57 (14.3 per cent) respondents. **Friends** are 'very important' sources of awareness about mobile number portability for 95 (23.8 per cent) respondents whereas the **friends** are 'important' sources of awareness about mobile number portability for 32 (8.0 per cent) respondents. The **relatives** are 'important' sources of awareness about mobile number portability for 60 (15.0 per cent) respondents and the **relatives**

are very 'important' sources of awareness about prepaid mobile number portability for 15 (3.8 per cent) respondent. **Magazines** are 'important' sources of awareness about mobile number portability for 76 (19.0 per cent) respondents whereas **magazines** are 'very important' sources of awareness about mobile number portability for 54 (13.5 per cent) respondents **Service provider's company agents** are 'important' sources of awareness about mobile number portability for 48 (12.0 per cent) respondents. It is observed that **Service provider's company agents** are 'very important' sources of awareness about mobile number portability for 32 (8.0 per cent) respondents.

Suggestions

Most of respondent are not aware about Mobile Number Portability due to illiteracy so the government should take proper action to take MNP to common public by television advertisement

MNP create competition over the network provider this make advantage to public

The service providers should improve the quality of service to make the customer remain in the same network.

Conclusion

The MNP is a very good system is introduced by the TRAI. It provides facility to new comers according to their need. This system helps the customer to switch over to another if they are not satisfied with the current network provider's service or other factors. But most of respondent are not aware about Mobile Number Portability due to illiteracy so the government should take proper action to take MNP to common public by television advertisement From this study we came to know that most of the people are dissatisfied with poor connectivity and network problem. Even though the subscribers are facing these kinds of problems frequently with the current service provider, they remain in the same network this is because most of the service providers are providing the service alike. Hence, the subscribers are fed up with all the service providers and they remains in the same network. To avoid these kinds of problems the service providers has to provide quality service to their subscribers. And also the TRAI has to insist the service providers to offer a quality service to the subscribers. TRAI has to do is to create an awareness among the people about MNP, for that TRAI has to conduct various advertisement campaigns to make people aware about the system fully.

References

1. Nilsson, G. (1997) "Number Portability: A Networking Perspective", Telecommunications Magazine, <http://www.telecomsmag.com/marketing/articles/jul97/nilsson.html>
2. Nilsson, J (2005) Number Portability: MNP in Afrca – paper delivered in IIR Number Portability Conference, Johannesburg.
3. Nilsson, J (2006) Number Portability: Delivery Cost Effective Number Portability - paper delivered in IIR Number Portability Conference, London Mar. 2006.
4. Aldrich, C. The e-learning 2000 hype cycle. Stamford, CT. Gartner Group
5. B. Hoffmean (Ed.), Encyclopedia of Educational Technology.
6. National Centre for Technology in Education (NCTE, 2007) NTCE Advise sheet – Mobile PhonesSource: www.ncte.ie/ICTAdviceSupport/AdviceSheets
7. Odunaike, S. A. (2006) The Impact of incorporating elearning in traditional classroom education
8. <http://www.trai.gov.in/RegulationUser.aspx?qid=0&id=0>
9. http://en.wikipedia.org/wiki/Mobile_Number_Portability
10. http://electronicsforu.com/newelectronics/circuitarchives/view_article.asp?sno=1071&title%20=%20



Journal of Emerging Technologies and Innovative Research
An International Open Access Journal
www.jetir.org | editor@jetir.org

Certificate of Publication

The Board of

Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (ISSN : 2349-5162)

Is hereby awarding this certificate to

Dr. Satbir Singh

In recognition of the publication of the paper entitled

Consumer Awareness Towards Mobile Number Portability In Haryana - A Study

Published In JETIR (www.JETIR.org) ISSN UGC Approved & 5.87 Impact Factor

Published in Volume 6 Issue 4 , April-2019

Pasir P
EDITOR

JETIR1904128

Research Paper Weblink <http://www.jetir.org/view?paper=JETIR1904128>

SS Saini
EDITOR IN CHIEF

Registration ID : 203746





Customers' Perception towards Mobile Number Portability: An Empirical Study

Dr. Satbir Singh*

Assistant Professor, Department of Management and Computer Sciences, Vaish College, Bhiwani

Abstract – Perception means the sense of perceiving and the word perceive means to become aware of by one of the senses. It is therefore an intelligent observation or understanding. The word perception refers to the intuitive faculty. The word percept is the mental product with the help of this intuitive power the human being including animals perceive or become aware of through the senses or by mind. Other meanings of the word perceive are to discern to apprehend, to understand, to comprehend or to have knowledge. Perception is the process by which we become aware of and give meaning to events around us. It is through our perception that we come to define 'Reality'. Perceived reality is what individuals experience through one or more of the human senses and the meaning they ascribe to those experiences. Perception is the process by which people organize and obtain meaning from the sensory stimuli they receive from the environment. It is the process by which we make sense of the world. It is not foolproof. No two people in the same situation will perceive it in exactly the same way. Perception has close relation with the personality of the person perceiving the things and culture. To define the personality, the collection of psychological characteristics or traits that determine a person's preference and the individual style of behavior. Culture is the way in which a society as a whole perceives the world.

..... X

1. INTRODUCTION

1.1 Mobile Number Portability

Mobile Number Portability (MNP) is a technology that enables subscribers to switch their service providers while retaining their mobile numbers. The mobile number portability is the process to change the mobile company without changing your mobile number. This is the very simple and easy way to change any mobile company according to the customers' choice. We believe the implementation of MNP would be a negative for the Indian Telecom Sector from an operator point of view, while for subscribers it would be a key positive. Churn rates, already in the region of 4-5 per cent monthly (pre-paid subscribers) are likely to increase further. It will increase the competition of mobile companies to give better services. These companies will do their best to give their better performance. Mobile Number Portability is a feature present in most developing telecom markets around the world, is now making its way into the developing telecom markets of South Asia. Every mobile company tries to maximize their subscribers by giving better services than other mobile companies. MNP is a service that enables a mobile subscriber to switch operators while retaining his/her phone number. The customers want the good and proper communication with their friends and their relatives so they choose the best network. This MNP

is useful for the new companies because everyone will try to use that company if there are all the qualities in the company then the company can develop themselves. The successful implementation of MNP is associated with high porting rates. The company should show all the proper details to the customers and give the full information to the customers because there will be too much options have the customers so they will want to full information about the company and all the schemes. This is because high porting rates signify that the facility is being utilized and conforms that mobile subscribers are in demand of the service every company wants to increase their customers.

Number Portability has to ensure that call routing for all mobile sessions Voice, SMS, MMS should be enabled with routing to the ported network for the same called subscriber number. IETF defines three types of number portability (NP): Service provider number portability (SPNP), location portability and service portability. SPNP allows subscribers to switch service providers while retaining the same phone number. The technology challenges towards implementation come through complexities in number administration, network signaling functions, call routing, billing and service management. The introduction of MNP is expected to increase churn rates and force

service providers to stay competitive through product and service differentiation. Prepaid churn rates are said to be between 3- 4 percent per month but the regulator is looking to increase it to, about 8- 10 percent in order to force incumbent operators to be more competitive (Business Standard, 2007). Although competition is high in the Indian mobile sector, regulators feel the need for more intense competition for the benefit of subscribers. MNP will give the five new entrants into the mobile sector and four existing operators who have been allowed to provide services in new circles, a chance to survive in the already competitive marketplace. Given the anticipated growth in the mobile market to more than 500 million subscribers, one of the largest in the world and second only to China, regulators feel that the introduction of MNP in India is imminent and deem it a suitable time to set the stage to push subscriber number up.

2. REVIEW OF LITRATURE

Survey of related literature is an important prerequisite to the planning and implementation of a planned research project. Its review is an exacting task, calling for a deep insight and clear perspective of the overall fields. It is a crucial step, which invariably minimizes the risk of dead ends, rejected topics and rejected studies, waste efforts, trial and error activity oriented towards approaches already discarded by previous investigators and even more important erroneous finding based on a faulty research design. The review of the literature promotes a greater understanding of the problems and its crucial aspects and ensures the avoidance of unnecessary duplication. It also provides comparative data on the basis of which to evaluate and interpret the significance of one's findings.

Mlik, *et al.* (2008)¹ describes various parameters that effect subscribers or parameters on which MNP depends and MNP decision using fuzzy logic. In this paper a sample has been taken when customer care services satisfaction is 55 per cent network coverage of strength is -75db and tariff plan is 65 paisa per call then MNP will be 0.5188 here it has considered three parameters and drawn the graph showing the required portability. By using this graphical representation, we can find out MNP for various input values and it can be decided that MNP should be carried out or not. This system can further improved by considering many more parameters which are responsible for MNP. These parameters are single strength, billing, IDD service etc.

Reiko and Small (2010)² reveals that the widespread presumption in favour of number portability is not necessarily in the interest of society in general, or even of consumers. In well developed telephony markets with high penetration rates, it is possible for consumers as a group to receive fewer surpluses following a reduction in the cost of switching between carriers as a result of the introduction of number portability. It has examined

four possible mature industry regimes, two of which involve some sharing of the market between the incumbent and the entrant. Switching costs affect customers and firm differently in these two shared market cases.

Iqbal (2011)³ discusses about the suitability of introducing MNP in India. The paper will also consider how phone subscribers at the Bottom of the Pyramid (BOP) and the impact of the Low-cost, low-ARPU pricing model implemented in South Asia will affect porting rates. The researcher investigates the benefits, costs and preconditions for Mobile Number Portability (MNP), while questioning its suitability for implementation in emerging South Asia. He finds out that high porting rates are not the only means to measure the impact or successfulness of MNP. According to writer in many cases customer's loyalty also tends to increase, leading to lower porting rates than otherwise expected. At the end the writer says that the existing market structure in South Asia may not be as suited to MNP because of the large numbers of prepaid or low end users. Their phone use patterns and requirements are rather distinctive, compared to high end post paid subscribers, commonly found in the developed western markets.

Khan (2010)⁴ emphasized to implement number portability, the best solution is to implement centralized system, maintain a common number porting database, and use the All Call Query (ACQ) Call routing scheme to route the calls to a ported number. A trusted 3rd party, which typically reports to the telecom regulatory authority, can maintain the centralized Number portability database. According to write the number portability gives freedom to subscriber to choose best service provider. This will encourage competition among the service providers, and in turn will reduce the tariff. From subscribers point of view it reduces cost, time and money. From service providers point of view specific network maintenance activities need to be done to ensure proper operation of the number portability service overtime.

Sharma (2011)⁵ found that subscribers would likely to have efficient services at cheapest rate. Subscribers can retain one number lifetime while choosing competitive plans from other operators. In this way the researcher find out that the subscribers who wishes to port his mobile number should approach the Recipient operator, withdrew his porting request within 24 hours of its submission to the Recipient Operator. Some experts are saying that MNP would not a game changer, it will just make a bit initial impact and everything will flatten out in the long run eventually.

Dhanya (2012)⁶ revealed the pros and cons of Mobile Number Portability System (MNPS) from both customers as well as service providers

perspective. It was found that, Customers are eagerly waiting for such a service, where customer can change service provider without changing mobile number. Major drawback of MNP for customer will be relatively less as compared to that of service provider. Service providers do not be happy with MNPS. They will face problems like losing customer base, cut-throat competition and financial loss and also they will have to upgrade their network. According to the researcher Mobile Number Portability System will change the scenario of the telecom industry Earlier the only way a service provider was able to hold their customer was by the mobile number. But now if MNPS comes into action customer will have freedom to switch with same number so customer will rule the market. In this battle between customers and service providers, service provider will have to surrender against customers.

Kumar (2011)⁷ advocated that the service accessibility, service affordability, promotional offers and customer services are four important factors which are influencing the customer in selecting the service provider. This study provides a significant contribution to the theory by conducting factor analysis and Structure equation method to know the impact of these factors in selection of service provider in India. There is a huge growth in mobile subscribers in India and heavy competition among the service providers. The finding of the study contributes to a better understanding of the relationship between Service Accessibility, Service Affordability, Promotional Offers and Customer Service to select the service provider. In particular, the finding in this research can help practitioners and academicians to understand the level of impact that these factors has on service provider and the correlation between these factors. The result of this research predicts that Customer Service is most important factor than Promotional Offers which is influencing the customer to select their service provider.

Farzana, et al. (2011)⁸ found that there is huge potential to make a conceptual contribution by developing a theoretical linkage and improving the theoretical rational for existing linkages. More specifically, this study tested switching cost as a moderator to solve the conflicting and confusing relationship that exists between service satisfaction and service switching constructs, which is new to the service literature.

3. RESEARCH METHODOLOGY

The present study will be exploratory as well as descriptive in nature.

3.1 Statement of the Problem

To know the perception of mobile number portability users.

3.2 Objective of the study

The present study attempts to:

- (i) identify the factors responsible for Mobile Number Portability;
- (ii) study the satisfaction level towards MNP among mobile users; and
- (iii) to give the recommendations for the improvement in MNP in the society.

Table : Perception of mobile number portability users.

S/N	Expectations	N	1	2	3	4	5	Total
1	Cheap call rate	N	75.0	22.0	3.0	0	0	100
		N	294	101	4	0	0	400
2	Good network coverage	N	73.5	25.3	1.0	0.1	0	100
		N	159	136	4	1	2	302
3	Good and different type of tariff plan	N	33.0	24.0	21.5	8.1	15.5	100
		N	207	111	67	2	4	400
4	High internet speed	N	31.0	36.0	13.0	17.0	0	100
		N	210	145	41	1	1	400
5	Cheap internet pack	N	32.5	36.1	16.4	10.0	0.3	100
		N	285	190	34	1	0	400
6	Good customer care facility	N	34.0	37.1	16.5	11.0	0	100
		N	191	175	32	2	0	400
7	Discount offers and schemes	N	37.0	43.0	16.0	10.0	0	100
		N	137	175	30	8	0	400
8	3G service facility	N	30.0	40.0	14.5	14.0	0	100
		N	174	139	29	0	0	400
9	Exchange service facility	N	44.0	40.0	7.0	0	0	100
		N	194	179	26	2	0	400
10	Free roaming facility	N	40.0	43.0	16.0	11.0	0	100
		N	121	204	40	7	0	400
11	Cheap rates of Value Added Services	N	30.4	33.6	17.6	14.0	0	100

Source: Survey, Data processed through PASW 18.0

Detail Explanation

Table depicts that 300 (75.0 per cent) respondents are expecting 'very much' with mobile phone service providers to 'cheap call rate' whereas 88 (22.0 per cent) respondents are expecting 'much' with mobile phone service providers to 'cheap call rate' and 12 (3.0 per cent) respondents are 'less expecting' with mobile phone service providers to 'cheap call rate'. 294 (73.5 per cent) respondents are expecting 'very much' with mobile phone service providers to 'good network coverage' whereas 101 (25.3 per cent) respondents are expecting 'much' with mobile phone service providers to 'good network coverage'. 4 (1.0 per cent) respondents are 'less expecting' with mobile phone service providers to 'good network coverage' and only one (0.3 per cent) respondent is 'lesser expecting' with mobile phone service providers to 'good network coverage'. It depicts that 159 (39.8 per cent) respondents are expecting 'very much' with mobile phone service providers to 'good and different type of tariff plan' whereas 136 (34.0 per cent) respondents are expecting 'much' with mobile phone service providers to 'good and different type of tariff plan'. 86 (21.5 per cent) respondents are 'less' expecting with mobile phone service providers to 'good and different type of tariff plan' whereas 17 (4.3 per cent)

respondents are 'lesser' expecting with mobile phone service providers to 'good and different type of tariff plan' and 2 (0.5 per cent) respondents are 'least' expecting with mobile phone service providers to 'good and different type of tariff plan'. 207 (51.8 per cent) respondents are expecting 'very much' with mobile phone service providers to 'high internet speed' whereas 144 (36.0 per cent) respondents are expecting 'much' with mobile phone service providers to 'high internet speed'. 47 (11.8 per cent) respondents are 'less' expecting with mobile phone service providers to 'high internet speed' whereas 2 (0.5 per cent) respondents are 'lesser' expecting with mobile phone service providers to 'high internet speed'. 210 (52.5 per cent) respondents are expecting 'very much' with mobile phone service providers to 'cheap internet pack' whereas 145 (36.3 per cent) respondents are expecting 'much' with mobile phone service providers to 'cheap internet pack'. 41 (10.3 per cent) respondents are 'less' expecting with mobile phone service providers to 'cheap internet pack' whereas 3 (0.8 per cent) respondents are 'lesser' expecting with mobile phone service providers to 'cheap internet pack' and only 1 (0.3 per cent) respondent is 'least' expecting with mobile phone service providers to 'cheap internet pack'. 216 (54.0 per cent) respondents are expecting 'very much' with mobile phone service providers to 'good customer care facility' whereas 149 (37.3 per cent) respondents are expecting 'much' with mobile phone service providers to 'good customer care facility'. 34 (8.5 per cent) respondents are 'less' expecting with mobile phone service providers to 'good customer care facility' whereas, 1 (0.3 per cent) respondents are 'lesser' expecting with mobile phone service providers to 'good customer care facility'. 191 (47.8 per cent) respondents are expecting 'very much' with mobile phone service providers to 'discount offers and schemes' whereas 175 (43.8 per cent) respondents are expecting 'much' with mobile phone service providers to 'discount offers and schemes'. 32 (8.0 per cent) respondents are 'less' expecting with mobile phone service providers to 'discount offers and schemes' whereas 2 (0.5 per cent) respondents are 'lesser' expecting with mobile phone service providers to 'discount offers and schemes'. 175 (43.8 per cent) respondents are expecting 'much' with mobile phone service providers to '3G service facility' whereas 159 (38.8 per cent) respondents are expecting 'very much' with mobile phone service providers to '3G service facility'. 58 (14.5 per cent) respondents are 'less' expecting with mobile phone service providers to '3G service facility' whereas 8 (2.0 per cent) respondents are 'lesser' expecting with mobile phone service providers to '3G service facility'. 193 (48.3 per cent) respondents are expecting 'much' with mobile phone service providers to 'recharge voucher's facility' whereas 179 (44.8 per cent) respondents are expecting 'very much' with mobile phone service providers to 'recharge voucher's facility'. 28 (7.0 per cent) respondents are 'less' expecting with mobile phone service providers to 'recharge voucher's facility'. 193 (48.3 per cent)

respondents are expecting 'very much' with mobile phone service providers to 'free roaming facility' whereas 179 (44.8 per cent) respondents are expecting 'much' with mobile phone service providers to 'free roaming facility'. 26 (6.5 per cent) respondents are 'less' expecting with mobile phone service providers to 'free roaming facility' whereas 2 (0.5 per cent) respondents are 'lesser' expecting with mobile phone service providers to 'free roaming facility'. 204 (51.0 per cent) respondents are expecting 'much' with mobile phone service providers to 'cheap rate of value added services' whereas, 121 (30.3 per cent) respondents are expecting 'very much' with mobile phone service providers to 'cheap rate of value added services'. 68 (17.0 per cent) respondents are 'less' expecting with mobile phone service providers to 'cheap rate of value added services' whereas 7 (1.8 per cent) respondents are 'lesser' expecting with mobile phone service providers to 'cheap rate of value added services'.

CONCLUSIONS

Most of the respondents (75 per cent) are expecting 'very much' with mobile phone service providers to 'cheap call rate'. So service providers companies should make the strong plan regarding cheap call rate. 73.5 per cent respondents are expecting 'very much' with mobile phone service providers to 'good network coverage'. So service providers companies should make the strong plan regarding good network coverage and 39.8 per cent respondents are expecting 'very much' with mobile phone service providers to 'good and different type of tariff plan'. So service providers companies should make the strong plan regarding good and different type of tariff plan.

REFERENCES

1. Malik, Ajay, Malik, Sunita and Pal, Vijay Singh (2008), "Parameters effecting mobile number portability and Fuzzy logic based MNP decision", *International Journal of advances in computer networks and its security*, Vol. 1, pp. 125-139.
2. Aoki, Reiko and Small, John (2010), "The Economics of Number Portability: Switching Costs and Two-Part Tariffs", retrieved from http://hermes-ir.lib.hit-u.ac.jp/rs/bitstream/10086/18655/1/pie_dp483.pdf on August 3, 2012.
3. Iqbal, Tahani, (2011), "Mobile Number Portability in South Asia", <http://ssrn.com/abstract=1618182>, pp. 1-37.
4. Khan, Atiya, Faiz, (2010), "Mobile Number Portability: Challenges and solutions", *Journal of Emerging Trends in Computing*

and Information Sciences, Vol.No.2, pp.1-6.

5. Sharma, Ankit, (2011), Project Report on Analysis of Adopter of MNP for Leading Operators, Jagannath International Management School, pp. 1-74
6. J.S. Dhanyan (2012), "Customers perception towards Mobile Number Portability", International Journal of Physical and Social Science, Vol. 2, Issue 1, pp. 269-282.
7. Kumar, G.N. Satish (2011), "Factors Influencing Mobile Users in selecting cellular service providers in India: An Empirical Study based on structured equation model", International Journal of Research in Commerce & Management, Vol.2, Issue 6, pp. 47-53.
8. Habib, Farzana Q., Salleh, Aliah Hanim M., Abdullah, Nor, Liza (2011), "Service switching behavior among mobile phone users", International Research Symposium in Service Management, Vol. 2, pp. 136-144.

Corresponding Author

Dr. Satbir Singh*

Assistant Professor, Department of Management and
Computer Sciences, Vaish College, Bhiwani

satbir.biran@gmail.com

CERTIFICATE OF PUBLICATION



CERT-9587/18-19

Dr. Satbir Singh

for authoring and publishing the research paper titled

CUSTOMERS' PERCEPTION TOWARDS MOBILE NUMBER PORTABILITY: AN EMPIRICAL STUDY
in
JOURNAL OF ADVANCES AND SCHOLARLY RESEARCHES IN ALLIED EDUCATION

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

IMPACT FACTOR : 3.46

VOL- 16, ISSUE- 2 ISSN: 2230-7540

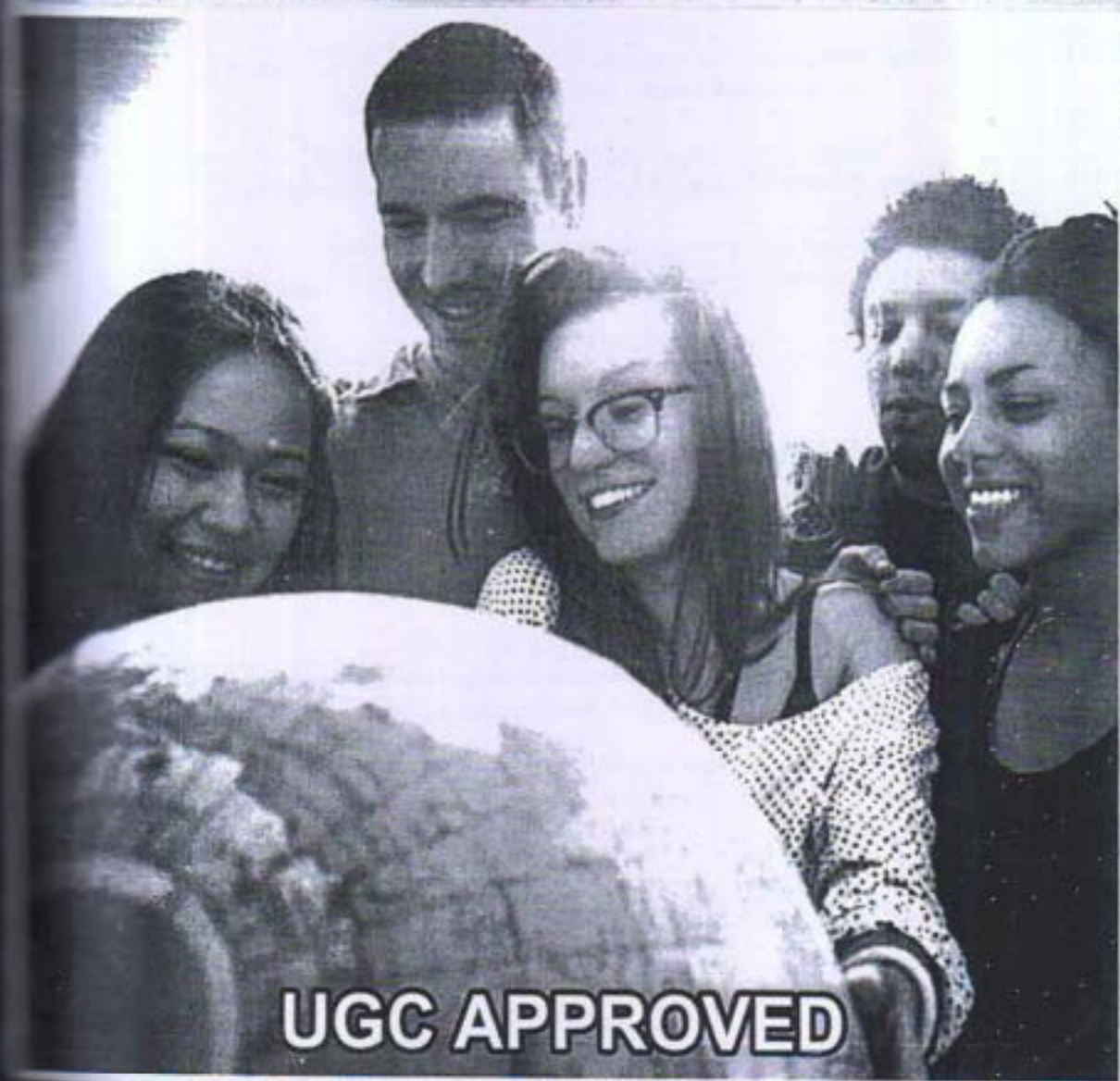
Awarded 11-Feb-2019

W. Singh
CHAIR

RESEARCH LIAISON DIV.



International Journal of
Research in Social Sciences



www.ijmra.us

VOL. 9 ISSUE 2 (1)
FEBRUARY 2019

(ISSN : 2249-2496)
Impact Factor : 7.081

A Monthly Double - Blind Peer Reviewed Refereed Open Access and Indexed
International Journal included in the International Social Directory

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 2(1), February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081

Contents

S. No.	Particulars	Page No.
1.	शिक्षण प्रक्रिया के प्राथमिक लक्ष्य के रूप में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का विकास Mr. krishan Kumar	190-193
2.	Impact of ICT Awareness and Emotional Intelligence on Teaching Effectiveness of High School Teachers F. San George Martin, Dr. F. L. Antony Gracious	194-199
3.	Emotional Intelligence of Secondary Teacher Education Students Mrs. A. Merlin Sonia, Dr. F. L. Antony Gracious	200-204
4.	Role of Education in the Human Resource Development Atul P. Naik	205-210
5.	भारतीय प्रजातन्त्र एवं मतदान रतन सिंह	211-212
6.	पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारी: चुनौतियाँ एवं अपेक्षाएँ रतन सिंह	213-214
7.	Impact of Emotional Intelligence on Adjustment of Employees in the Organization Dr. Satish Kumar, Sunita Nimbria	215-219
8.	Sales Promotion Strategies Of Payments Banks In India – A Case Study Of Paytm Payments Bank And Airtel Payments Bank DR. MD ALJAZ KHAN, MRS. ASMA SULTANA	220-224
9.	A Study on Level of Anxiety, Depression & Quality of Life in older People Niraj Kumar Vedpuria, K.S. Sengar	225-232
10.	“अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के भौतिक विकास विषयक योजनाओं वस्तु स्थिति एवं क्रियान्वयन का अध्ययन” नेमल्ल (वेदपुरी), डॉ. अश्विनी जोषी	233-236

Impact of Emotional Intelligence on Adjustment of Employees in the Organization

Dr.Satish Kumar*

Sunita Nimbria**

Abstract

Emotional Intelligence can help in creating enthusiastic work environment, psychological well being and effective methods of adjustment and problem solving for useful vision for the future and achieving organizational goals. The purpose of present study is to examine the impact of emotional intelligence on adjustment of the employees. Sample consisted of 100 employees (50% male) from various organisations were selected. The emotional intelligence scale developed by Hyde et.al(2002) and Adjustment Scale by A.k.Sinha&R.P.Singh(1980) were used for the data collection. Coefficient of Correlation and t value were computed. Results revealed that emotional intelligence and adjustment are not correlated. This study also indicates no gender differences between emotional intelligence and adjustment. Furthermore, suggestions for further investigations were also stated.

Keywords: *emotional intelligence, adjustment, employees.*

Introduction

The success of any individual or organization is depends on the quality of its human resources. In the organization employees feel stress free and comfortable when organization provide them healthy environment. For this emphasis should also be placed on emotional and intellectual endowments and abilities for the growth. In this regard, emotional intelligence has emerged as the crucial factor in the successful social adjustment. Emotional intelligence can help in creating enthusiastic work environment, psychological well being and efficient methods of problem solving for useful vision for the future and achieving organizational goals.

Emotional Intelligence

The concept of emotional intelligence has found increased acceptance as a factor that is potentially useful in understanding and predicting individual performance in different domains of daily life, adjustment, social functioning and academics, and workplace performance (e.g. Brackett, Rivers, & Salovey, 2011 Mayer et al. 2008, O'Boyle et al.2010). Emotional Intelligence model is emerging as key success factor to enhance the effectiveness of an organization and can influence the employee commitment in an organization. Emotional intelligence (EI) has their own place and value in the area of leadership and organization. It has been proved that our general intelligence and academic success are poor predictors of life success and adjustments. It accounts for only 20% of our life success (Goleman 1995).

Emotional intelligence is an important set of psychological abilities that relates to life success. It accounts for how people's emotion reports vary in their accuracy and how the

* Assistant Professor

** Guest Lecturer, Vaish college, Bhiwani

mere understanding of emotions leads to better adjustment and problem solving in the individuals emotional life. It is empathy and communication skills as well as social and leadership skills that are central to ones success in life. Goleman (1995) purports that is far better to have a high emotional quotient rather than high intelligence quotient to become the productive and valued member of the society.

Emotional intelligence in the Indian context cannot be viewed as a homogenous trait, or a mental ability devoid of social concerns like respecting elders, concern for others, fulfilling one's duties. These along with moral values of Ahimsa (non-violence), kindness, benevolence, provide the very basis for emotional expression and responsively. In fact, they are built in ways an individual deals with situations, emotional, social, or otherwise. These culture specific ways of behaving, therefore, are basic to the notion of emotional intelligence. It is due to these reasons that individuals approach emotions differently-across cultures, subcultures, within societies or families. Regulation of emotion too is directed inwards. Individuals attempt to change their behaviours, actions, etc., and to adapt themselves according to the environment. Thus, the need of others takes prominence over personal, social and environmental values.

Adjustment

In our day to day life we need adjustment for living a stress-free life; this adjustment may be anywhere for example: in family, in the school, in the peer groups, in the society, in the job etc. This is necessary for the survival of an individual is to adjust. "Life presents a continuous chain of struggle for existence and survival" says Darwin. The concept of adjustment is as old as human race on earth. Psychologists have interpreted adjustment from two important points of views. One is adjustment as an achievement and another, adjustment as a process. The first point of view emphasizes the quality of efficiency of adjustment and the second lays emphasis on the process by which an individual adjusts in his external environment. A person who adjusts himself in every situation or environment can never fall in his life as compare to those who find it difficult to adjust themselves in different situations. Those who have sound emotional intelligence can adjust in any environment. Adjustment is an unending process and is bound up with human life. It is continuous process to produce harmonious relationship between man and his environment. Adjustment is a satisfactory relation of an organism to its environment (Symonds, 1949).

Large number of researches and studies has been conducted in the field of emotional intelligence and adjustment in order to highlight various important aspects some are mentioned here. Kalapriya & Anuradha (2015) conducted a study on emotional intelligence and academic achievement among adolescents. Results revealed that there is significant difference between emotional intelligence and academic achievement among adolescents. Adeyemo et al., (2008) found a significantly high emotional intelligence in female workers; however, no significant relationship was found between age, marital status, educational qualification and emotional intelligence. Kushwaha (2015) investigated the adjustment level among female hostlers and day scholars. Results revealed that there is significant difference found between the adjustment scores of hostlers and day scholars. Kumar (2013) studied Adjustment of Secondary School Students of Working Mothers belonging to Joint and Nuclear Families and conclusion of the study reveals that there is no significant difference between adjustment of students of working mothers belonging to joint and nuclear families. But on the other hand the mean score of social adjustment of boys of working mothers belonging nuclear families is higher than those from joint families.

Problem: To assess the impact of Emotional Intelligence on Adjustment of employees in the organization.

Objectives

1. To see the relationship between emotional intelligence and adjustment among employees.
2. To investigate gender difference of emotional intelligence among employees.
3. To investigate gender difference of adjustment among employees.

Hypothesis

1. There is no relationship between emotional intelligence and adjustment among employees.
2. There is no significant gender difference in the emotional intelligence among employees.
3. There is no significant gender difference in the adjustment among employees.

Methodology

Sample: -The present study consisted of 100 samples equally divided into two groups' male employees (50) and female employees (50).

Description of the tool used:

1. **Emotional Intelligence Scale:** It is a standardized scale developed by Ankool Hyde, Sanjyot Pethe and Upinder Dhar. It has 34 items related to the dimensions of emotional Intelligence. It is a five-point scale. The mode of response is to just tick right (✓) mark in the column such as strongly agree, agree, Uncertain, disagree and strongly disagree. The split-half reliability coefficient was found to be 0.88 and validity is 0.93. Manual scoring has been done conveniently with each item or statement scored as:

Response	Scores
Strongly agree	1
Agree	2
Neutral	3
Disagree	4
Strongly disagree	5

2. **Adjustment Scale:** It is a standardized scale developed by Prof.A.K.Sinha and R.P.Sina. The mode of response is to just tick right (✓) mark for Yes or No. One mark will be allotted for each right answer. The test-retest reliability of the test is .93. Inventory can be scored by hand only. For any answer indicative of adjustment, zero is given, otherwise a score of one is awarded. It means high score in any given area of adjustment indicates poor adjustment and low score indicates healthy adjustment i.e. as we will move from low score to high score there will be decline in adjustment in given areas of adjustment.

Statistical Techniques Used

The researcher will use appropriate statistical techniques however she proposes to use Mean, S.D, Correlation and t-test in analysing data of the study.

Result

Table1: Mean, SD and t- value of Emotional Intelligence according to Gender of Employees

Gender	Mean	SD	t value
Male	68.74	14.10	0.978
Female	68.66	15.42	
Total	68.7	14.70	

Table2: Mean, SD and t- value of Adjustment according to Gender of Employees

Gender	Mean	SD	t value
Male	36.78	16.03	0.230
Female	33.28	12.39	
Total	35.03	14.36	

Table3. Correlation-Coefficient between Adjustment and Emotional Intelligence of Male and Female Employees.

	Emotional Intelligence	Adjustment	Gender
Emotional Intelligence	1		
Adjustment	-.002	1	
Gender	-.003	-.122	1

Discussion

The data in Table No-1 reveals the mean and standard deviation of Emotional Intelligence according to gender of employees. The total mean score of Emotional Intelligence of employees is 68.7 ± 14.70 . In which, the male employees have higher Emotional Intelligence (68.74 ± 14.10) as compared to female employees (68.66 ± 15.42) of different organizations. The t-test value (0.978) it shows that there is no significant difference in the emotional intelligence of the male and the female employees. It represents how the male and female employees both are going at a same pace with regards to the emotional intelligence. There stands no gender difference in the employees of organisation for emotional intelligence.

The result in Table No.2 indicates the mean and standard deviation of Adjustment according to the gender of employees. The total mean score of Adjustment of employees is 35.03 ± 14.36 . In which, the male employees have higher Adjustment (36.78 ± 16.03) as compared to female employees (33.28 ± 12.39) of different organizations. The t-test value(0.230) it shows that there is no significant difference in the adjustment scale of the male and the female employees. It represents how the male and female employees both are going at a same pace with regards to the adjustment. There stands no gender difference in the employees of organisation for adjustment scale.

The above table no. 3 shows no positive relationship between adjustment and emotional intelligence among male and female employees. The value of correlation shows how they adjust themselves considering emotional intelligence in mind.

Conclusion

This study aims to determine the phenomenon of emotional intelligence on adjustment of employees in the organization. Employees with high level of emotional intelligence adjust effectively with others and control their emotions more carefully rather than reacting to the situation. In this study the researchers obtain the data from both male and female employees, therefore specifically it aims to provide the relevant understanding of emotional intelligence with respect to the adjustment of employees in the organization.

Though, this could be concluded how the relation between emotional intelligence of the female employees than that of the male employees. We might say that the females treat the two aspects differently as compared to the males. They might work with the concept of being emotionally strong and understand what everyone wants and needs are but do not mix them with how well they adjust in the organisation.

Suggestions

1. This study is confined to only one organization. The future researcher can conduct the study amongst various other organizations.
2. Similar studies may be conducted in other professional differentiating the hierarchy of the organization.
3. Similar studies may be conducted in general employees without being specific on any grounds.
4. This study is limited to two psychological variables it may be extended to other psychological variables.

References

- Adeyemo O., A., Tella, A., & Tella, A. (2008.). Relationship among emotional intelligence, parental involvement and academic achievement of secondary school students in Ibadan, Nigeria.
- Brackett, M. A., Rivers, S. E., & Salovey, P. (2011). Emotional intelligence: Implications for personal, social, academic, and workplace success. *Social and Personality Psychology Compass*, 5(1), 88-103.
- Goleman, D. (1995). Emotional intelligence. New York: Bantam Books.
- Goleman, D. (1995). Emotional intelligence: Why it can matter more than IQ. New York: Bantam Books.
- Kalapriya C., Anuradha K. (2015). Emotional intelligence and academic achievement among adolescents. *International Journal of Advanced Research in Management and Social Sciences*, 4, 1:11- 17.
- Kushwaha J. (2015). Study of adjustment among female hosteler and day scholars. *International Journal of Social Science and Language*, 5, 1:1-05.
- Kumar A. (2013) Adjustment of Secondary School Students of Working Mothers Belonging To Joint and Nuclear Families. *Indian Journal of Educational Research Experimentation and Innovation*, 3(1).
- Mayer, J. D., Salovey, P., & Caruso, D. R. (2008). Emotional intelligence: new ability or eclectic traits?. *American Psychologist*, 63(6), 503.
- O'Boyle, E.H, Humphery,R.H Polllack, J.M Hawver,T.H and Story P.A.(2010) , The relationship between emotional intelligence and job performance : A Meta analysis. *Journal of organizational behaviour*, 32:788-818.

Degradation of AY36 using TiO₂-UV Photocatalytic System

Palak¹, Shivani Chauhan¹, Krishan Kumar², A.K. Haritash^{3*}

^{1*} Department of Environmental Science & Engineering, Guru Jambheshwar University of Science & Technology, Hisar, Haryana (125001) India.

² Department of Chemistry, Vaish College, Bhiwani, Haryana (127021) India.

³ Department of Environmental Engineering, Delhi Technological University, Bawana Road, Shahbad Daultapur, Delhi (110042) India. akharitash@dce.ac.in.

ABSTRACT

This study investigates the efficacy of photocatalytic degradation process using TiO₂-UV configuration for treatment of waste water containing textile dye Acid Yellow 36 (AY36). Acid Yellow 36 dye was degraded using catalyst TiO₂ in an alkaline medium of pH 8.0. A dose of 0.25 g of TiO₂ was used for 88.4% degradation of initial concentration of 20 mg/l AY36 dye in 28 hrs. The effect of parameters such as pH, initial dye concentration, amount of TiO₂ used, and exposure to UV light/irradiation on degradation of AY36 was investigated. Further it was observed that suspended TiO₂ in dye solution shows more effective results towards dye degradation, than embedded TiO₂ in the form of alginate beads. The study concluded that photocatalytic degradation is a potential tool for degradation of azo dyes.

Keywords: TiO₂; Acid Yellow 36; Advanced oxidation process (AOPs); Photocatalysis

1. Introduction

Dyes are important raw material for industries like paper, pulp, leather, textile etc. Azo dyes have excellent coloring properties like yellow to orange so they are used in almost every industry. These dyes have colouring properties because of the presence of a chemical azo group. Other industries where dyes are used are tinting and inks, paints adhesive, polymers etc. [1] Effluents from different industries are the main source of contamination of water as they contain different fractions of residuals of dye. Azo dyes are highly resistant in nature; they are even resistant to heat temperature and weather condition.

Azo dye; R-N=N-R'

Where, R and R' can be either alkyl or aryl. The N=N is an azo group, which is only responsible for the colour of the dye and the only reason for its recalcitrant nature. It is hard to degrade dye by any biological means so chemical methods need to be applied for breakdown of double bond which turns coloured solution to colourless [2]. Industrial outlets contains huge amount of an azo dye residues which are toxic in nature and cause harmful effects on ecosystem. Dyes are not only harmful to plants and water organisms, but also show harmful Impact on human beings. There is ample evidence of the harmful effects of dyes. These are highly mutagenic and carcinogenic in nature and hence causing cancer and other dreadful disease. These are continuously being released to the environment from industries which impart ecotoxicity in aquatic ecosystems [3]. Since dyes are readily dissolved in water, they interfere with the photosynthetic activity of water organisms, and disturb the food chain of aquatic ecosystem by reducing visibility of zooplanktons. Textile dyes also cause allergies, respiratory diseases and dermatitis, irritation of skin and eyes etc. Considering the harmful effects of dyes on environment, it is important to explore an effective method for its degradation.

There are various methods of dye degradation but one of the more efficient accelerated processes is advanced oxidation process. It is a chemical treatment which reduces organic impurities of water by oxidising them to simpler forms^[4]. The hydroxyl radicals are produced during the process with the help of primary oxidants (H₂O₂, ozone) or energy sources (UV lights) or catalyst (TiO₂). These components must be precised, properly configured, and used for the study. AOPs are mainly used for non-degradable and toxic products which include photocatalysis^[5], Fenton oxidation^[6], Photofenton, ozonolysis, and ultrasonication in standalone mode or combination of two. Photocatalysis process is the acceleration of photoreaction in presence of catalyst like TiO₂ or ZnO etc. The most widely used semiconductor catalyst in photo-induced process is TiO₂ which is activated by UV light^[7]. TiO₂ is also known as heterogeneous catalyst. It is chemically and biologically inert, stable, relatively easy to produce and reuse, cheap, environment friendly, have stable electrical properties, and efficiently catalyse reactions. It exists in four mineral state anatase, rutile, brookite and TiO₂(B)^[8]. It is versatile in nature and has various application areas like paints, varnishes, paper, plastics, solar cells, glass, electrical conductors, food colouring agents etc. It is also used in immobilised form of beads and acts as an opacifier in powdered form. It is widely used as a white pigment due to its sticky nature and having very high refractive index. TiO₂ is being used in the photocatalysis process because of the following factors - inexpensive, easily available, wavelength selective, and accelerated by UV light. Photocatalytic reactions take place at room temperature and the formation of intermediate products is avoided. UV light is absorbed by TiO₂, making ground state electrons jump to excited state forming an electron hole pair. This creates a void or energy gap between lower vacant conduction band and upper filled valence band. Hydroxyl ions are generated by this process. When photons with greater or equal energy to 3.4 eV is adsorbed by TiO₂, an electron is excited from valence band to conduction band; charge carriers (OH radicals) are generated and leave a positive hole in the valence band, this photo generated electron hole pair is known as excitons.

There are various operating parameters which play a vital role in the photocatalytic degradation^[9]. One such parameter is amount of catalyst used. Greater the amount of catalyst used more will be the rate of degradation^[8].

The mechanism of photocatalytic degradation can be described by following steps:

- Absorption of photons by TiO₂ and productions of electron- hole pairs.
- Oxygen ion absorption.
- Neutralisation of OH radicals by photon holes.
- Reaction of organic pollutant with OH radical.

The first step of the reaction is carried out by photons with the energy higher than the band gap of TiO₂ i.e. 3.2 eV^[10].

2. Materials and methods

The AY36 is an azo dye with complex chemical structure, recalcitrant nature, and reported eco-toxicity. The dye was obtained from Vishnu chemicals, Ankleshwar, Gujarat having 85% minimum assay. Titanium dioxide (99% AR Grade) was obtained from High Purity Laboratory Chemicals Pvt. Ltd., Mumbai. All the experiments were performed in triplicates using Grade 1 ultrapure water.

A stock solution of 1000ppm (0.5mg/500ml) of AY36 was prepared for degradation experiments. The 20mg/l solution of dye was prepared by diluting the stock solution. A standard curve of AY36 was plotted in concentration range of 5-20 mg/L with regular interval of 5mg/L The absorption spectrum for absorbance (400-700 nm) of AY36 against wavelength reported 434nm as the wavelength of maximum absorption. The pH was adjusted at 8.0 with the help of HCl (1N) and NaOH (1N) solutions. The experiment was conducted using 150ml of the dye solution in conical flask. The solution was continuously stirred using magnetic stirrer at 150 rpm in the UV chamber fitted with three (03) lamps (λ – 254 nm) of capacity of 30 W each.

The photo-catalytic degradation of AY36 was studied at an initial dye concentration of 20 mg/L with TiO₂ as catalyst under UV light. A volume of 10 ml was extracted from the flask placed in a UV light and the absorbance was monitored first at interval of 15 minutes for first one hour; 30 minutes for next one hour; and then at regular interval of two (02) hours. The extracted sample was centrifuged at 5000rpm for 20 minutes to separate TiO₂ particles from the solution. A blank without dosing of TiO₂ was also run to compensate for the photo-degradation. The concentration was obtained observing the absorbance at 434nm over Labtronics make LT-290 model spectrophotometer. The percentage degradation of AY36 was calculated using formula given below

$$\text{Percentage degradation \%} = ((C_i - C_f) / C_i) \times 100$$

Where, C_i is the initial concentration of dye, and C_f is the final concentration of dye.

3. Results and discussion

Based on the results obtained, it was observed that photocatalytic process could degrade AY36 dye. The concentration of AY36 went on decreasing with time. It decreased from initial concentration (C_i) of 22.6 mg/l to 20.4 mg/l in first one hour. Later, the rate of degradation reduced but the degradation progressed slowly; and residual concentration of AY36 stabilised at around 2.2 mg/l after a period of 32 hours (**Figure 1**). Further degradation of AY36 was not observed, and it was concluded that Photocatalytic degradation of AY36 has an overall efficiency of about 90%. The reduced rate of degradation in later phase may be ascribed to reduction in initial dye concentration with time. The Photocatalytic degradation of AY36 might be following first order rate kinetics which is dependent over initial concentration of reactants viz. AY36 in the present study. In order to confirm it, the rate of degradation (mg/h) was calculated using the following relation

$$\text{Rate of reaction (K) (mg/h)} = (C_i - C_f) / (t_i - t_f)$$

Where, C_i is initial concentration of AY36; C_f is the final concentration; t_i is initial time; and t_f is the final time during an interval of degradation. The rate of degradation was maximum during 15 to 30 minutes (@ 2.6 mg/h) followed by the rate of 2.2 mg/h during 30 minutes to one hour. Later, the rate of degradation went on decreasing with time (**Table 1**) and it stabilised at 0.1 mg/h after a period of 32 hours with an overall decolourisation efficiency of 90.3%.

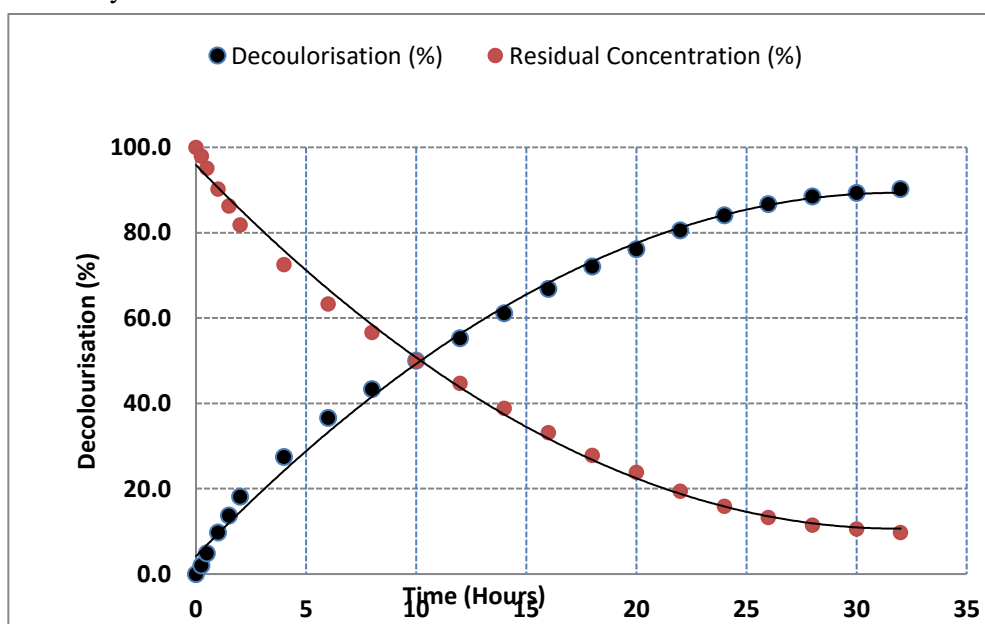


Figure 1. Degradation profile of AY36 during photocatalytic treatment

S. No.	Time (hours)	Concentration (mg/l)	Decolourisation (%)	Rate of decolourisation (mg/hour)
1	0	22.6	0.0	0.0
2	0.25	22.2	2.0	1.8
3	0.5	21.5	4.9	2.6
4	1	20.4	9.8	2.2
5	1.5	19.5	13.7	1.8
6	2	18.5	18.2	2.0
7	4	16.4	27.4	1.1
8	6	14.3	36.6	1.0
9	8	12.8	43.4	0.8
10	10	11.3	50.0	0.8
11	12	10.1	55.3	0.6
12	14	8.8	61.2	0.7
13	16	7.5	66.8	0.6
14	18	6.3	72.1	0.6
15	20	5.4	76.1	0.5
16	22	4.4	80.5	0.5
17	24	3.6	84.1	0.4
18	26	3.0	86.7	0.3
19	28	2.6	88.5	0.2
20	30	2.4	89.4	0.1
21	32	2.2	90.3	0.1

Table 1. Percent decolourisation and rate of degradation of AY36 in the present study.

4. Conclusion

Based on results obtained in the present study, Photocatalytic degradation was observed to be an effective process for decolourisation of azo dyes like AY36. The TiO₂-UV system can be used for the treatment textile industry wastewater containing toxic azo dyes. Optimisation of parameters regulating photocatalysis may be done to improve efficiency of the process to treat the industrial effluents to the level of compliance.

Conflict of interest

The authors declare no potential conflicts of interest.

References

- Sharma A, Verma M, Haritash AK. Degradation of toxic azo dye (AO7) using Fenton's process. *Advances in Environmental Research* 2016; 5(3):189–200.
- Mahmoud MA, Poncheri A, Badr Y, *et al.* Photocatalytic degradation of methyl red blue. *South African Journal of Science* 2009; 5: 299–303.
- Ratna BS, Padhi. Pollution due to synthetic dyes toxicity and carcinogenicity studies and remediation. *International Journal of Environmental Sciences* 2012; 3(3): 940–955.
- Haritash AK, Sharma A, Verma M. Photocatalytic degradation of Acid Orange 7 (AO7) dye using TiO₂. *International Journal of Engineering Research and Technology* 2015; 4: 34–36.
- Barka N, Qourzal Samir, Assabbane A, *et al.* Photocatalytic degradation of an azo reactive dye, Reactive Yellow 84, in water using an industrial titanium dioxide coated media. *Arabian Journal of Chemistry* 2010; 3: 279–283.
- Haritash AK, Deepika, Verma M, *et al.* Degradation of acid yellow 36 (ay36) dye using fenton's process. *International Journal of Environmental Sciences* 2016; 6(6): 1061–1067.
- Saggio EM, Oliveira AS, Pavesi T, *et al.* Use of titanium dioxide photocatalysis on the remediation of model textile wastewaters containing azo dyes. *Molecules* 2011; 16: 10370–10386.
- Akpan UG, Hameed BH. Parameters affecting the photocatalytic degradation of dyes using TiO₂-based photocatalysts: A review. *Journal of Hazardous Materials* 2009; 170: 520–529.

9. Shrivastava VS. Photocatalytic degradation of Methylene blue dye and Chromium metal from wastewater using nanocrystalline TiO₂ Semiconductor. Archives of Applied Science Research 2012; 4(3): 1244–1254.
10. Sima J, Hasal P. Photocatalytic Degradation of Textile dyes in a TiO₂/UV System. Chemical Engineering Transactions 2013; 32: 79–84.

Innovative Developments in Coating for Making Flame Retardant Paper and their Kinetic Study



Dr. Krishan Kumar

ABSTRACT

Organic polymers and cellulose based papers are intrinsically flammable and therefore these materials need to be modified to prevent or delay fire propagation. This is usually carried out by means of incorporation of fire retardant material into the polymer/cellulosic based materials. However, an alternative and innovative way to provide flame-retardant properties to such material may be carried out through application of flame-retardant coatings. Furthermore, this coating provides anti-fire properties without affecting the bulk properties or processing of the polymer substrate and can be applied easily to any substrates. In this study, attempts were made to develop a new approach based on an innovative coating. The coating composition includes compound based on phosphorus and nitrogen and char forming agents which trigger several fireproofing mode of actions in condensed and gas phases. This article investigates the preventive modification of cellulose paper to exhibit flame retardancy by application of intumescent coating through Pad-Dry- Cure conventional process. This study also explored the various parameter to achieve the goal like flammability and kinetic parameters of cellulosic paper and coated paper samples. Activation energy of thermal degradation of samples was determined using Coats-Redfern method. Result of the study revealed that paper samples coated with intumescent coating formulation were best as far as physical properties are concerned. The Limiting Oxygen Index (LOI) values of sample found increased from 18 to 31% on coating. Activation energy of coated paper is found to be lower than simple uncoated paper.

KeyWords: Cellulosic fibre, intumescent, coating, flame retardant, activation energy

1.0 Introduction

Cellulosic polymeric material like fabric, papers, wood etc. undergoes degradation on ignition, forming highly burnable volatile products mainly leavoglucosan with spread of fire causing injuries and losses in fire accidents [1]. Cellulose thermally decomposes below 300°C under dehydration, depolymerisation and oxidation with release of CO, CO₂ and carbonaceous residue [2, 3]. At higher temperature (> 300°C), tar consisting leavoglucosan as a major flammable constituent is formed [4, 5]. Function of flame retardant is to increase char at the cost of flammable volatiles. Many flame retardants available in the market such as chlorine-type flame retardant, bromine-type flame retardant, phosphorus-halogen type flame retardants and also inorganic flame retardant to make cellulosic papers as flame proof [6]. But

halogen based flame retardant releases highly toxic and corrosive fumes during combustion. There has also been major interest in replacing halogenated flame retardants because of environmental and toxicity issues [7,8]. Also traditional phosphate-based flame-retarding papers meet the requirements of non-halogen, non-toxic, and low-fume characteristics. However, papers incorporating chemicals are liable to become wet when exposed to atmospheric moisture, leading to resist of their more-general acceptance.

In this study, attempts were made to develop a new approach based on an innovative coating. Intumescent flame retardant system requires acid source, a swelling agent and a char forming agent [9-13]. The coating composition includes compound based on phosphorus and nitrogen and char forming agents which trigger several fireproofing mode of actions in condensed and gas phases.

Experimental:

Materials

For intumescent flame retardant system, ammonium polyphosphate (APP) as an acid source, melamine as a swelling agent and pentaerythritol (PER) as a carbon source were obtained from Clariant Co., Germany. Normal Photocopy paper (purchased from market) was used for back coating, and acrylic resin, Zytrol-7800 as binder (Zydex Industries, India).

Preparation of intumescent formulation

Intumescent formulation was prepared containing intumescent components (APP, pentaerythritol and melamine) in ratio 3:1:1. The acrylic resin was used for coating the intumescent formulation on ordinary paper. The intumescent formulation was prepared by mixing evenly in pastel and mortar.

Intumescent formulation application and curing process

The intumescent formulations solution was prepared with desired proportions of M : L (material to liquor) ratio that incorporated into sample by using pad- dry- cure technique. The solution was placed in the trough of padding mangle for giving treatment. After dipping the samples into the solution for approximately 2 minutes, the sample was passed through the rolls at 2.5kPa pressure.

Two dip two nip were given to get desired chemical level of weight add on. The paper sample was taken for this study was basis weight of 75g/m². Initial weight of sample taken for this proposes was 3.32 gram. The coating amount was adjusted using bars of different numbers and coat weight was maintained to 20-22 g/m². Then the coated sample was dried in oven and cured at 110- 1200C for 2 minutes.

Thermal Analysis

Thermal degradation of samples was carried out by thermogravimetry (TG) (TA instruments SDT Q600). Samples in platinum crucibles were analyzed from ambient temperature to 600°C (heating rate, 10°C/min). Nitrogen was used as carrier gas (flow rate, 100 ml/min).

Limiting Oxygen Index (LOI)

LOI values that measure performance of flame retardancy were measured using a Stanford Redcroft FTA flammability unit BS-2782 instrument. Samples were tested according to standard method ASTM D2863, ISO-4589.

Kinetics Study

TG data were analyzed for kinetic study using Coats-Redfern method [14, 15]. It is assumed that only a single reaction occurs while a sample undergoes a certain temperature rise at a steady heating rate, β. Thus, Coats-Redfern equation when n≠1 is given below:

$$\ln \left[\frac{1-(1-\alpha)^{1-n}}{(1-n)T^2} \right] = \ln \frac{AR}{\beta E} + \ln \left[1 - \frac{2RT}{E} \right] - \frac{E}{RT} \dots\dots\dots \text{Equation (1)}$$

Where n=order of reaction, E is Activation Energy, A is Pre-exponential Factor, R is gas constant,

β is heating rate i.e, 10 0C/Min,

α is degree of conversion=(W0-WT)/(W0-Wf) where W0 is initial weight of sample, WT is residual weight of sample at temperature, T 0C, Wf is the final weight of sample.

when order of reaction, n=1 then Coats-Redfern equation become as below:

$$\ln \left[\frac{-\ln(1-\alpha)}{T^2} \right] = \ln \frac{AR}{\beta E} + \ln \left[1 - \frac{2RT}{E} \right] - \frac{E}{RT} \dots\dots\dots \text{Equation (2)}$$

Result and Discussion:

Thermal analysis

The untreated paper sample shows one stage of thermal degradation in range of 295-400 0C with weight loss of 79.2%

and with DTG peak at 375 °C as given in Table 1 and shown in Fig 1-2. The sample degraded almost completely up to 400 °C leaving no char yield at 600 °C. The thermal degradation of sample was due to pyrolytic decomposition of reactions.

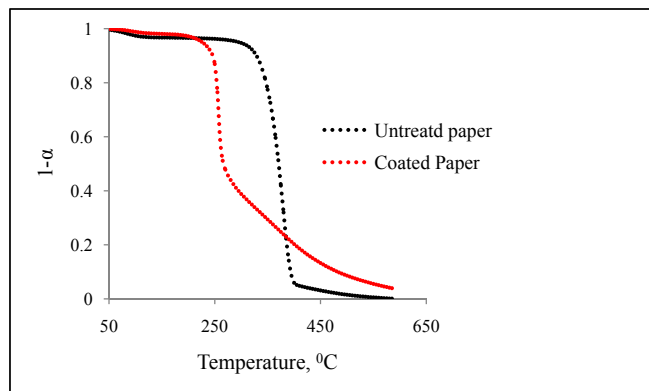


Fig 1: curves in Nitrogen at heating rate of 10°C/min of untreated paper and Coated Paper

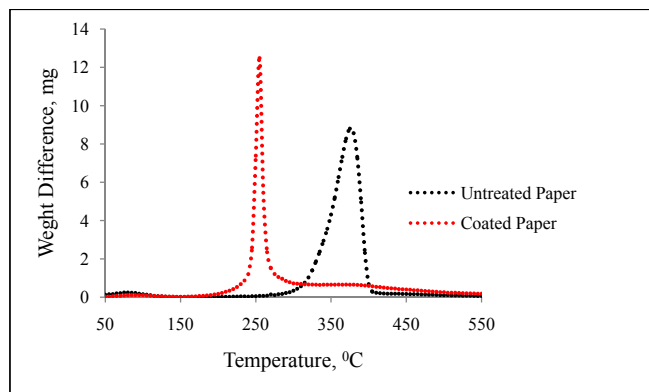


Fig 2: DTG curves in Nitrogen at heating rate of 10°C/min of untreated paper and Coated Paper

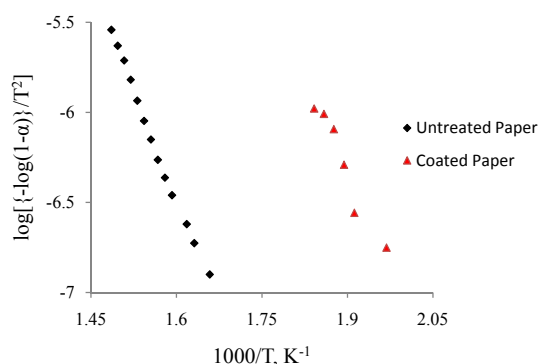


Fig 3: Coats-Redfern plot for first stage of thermal degradation of untreated paper and Coated Paper

Table 1: DTG peaks, LOI and Char Yield and Kinetic Parameters of untreated paper and its coated sample

Sample	TG Stages	Temperature Range (°C)	Weight Loss (%)	DTG Peak (°C)	1-α range	Activation Energy, (kJmol ⁻¹)	ln A (min ⁻¹)	Char Yield (%) at 600 °C	LOI (%)
Untreated Paper	Single	295-400	79.2	375	0.9-0.05	154.7	20.07	Nil	18
Coated Paper	First Stage	240-270	31.5	255	09-0.49	129.8	20.12	28.7	30.2
	Second Stage	270-600	31.2	-	-	-	-	-	-

First stage of thermal degradation:

First stage of thermal degradation of intumescent coated paper in temperature range 240- 270 °C shows 31.5 % (Fig 1) weight loss. The first stage thermal degradation of sample is mainly due to pyrolytic decomposition reactions corresponds to release of phosphoric acid from intumescent. This released phosphoric acid starts phosphorylate the cellulose as well as the pentaerythritol at about 200 °C. In the meantime the melamine (the third component of intumescent formulation as swelling agent) sublimates at about 240 °C and start releasing NH₃ at about 260 °C and continues up to 380 °C and weight is less in nitrogen atmosphere. This way, a cover of swelled material starts building on the polymer substrate as a thermal barrier. The dispersion of combustible volatiles from the burning substrate to combustion phases is also prevented. The DTG peak at 255 °C (Fig 2) for coated paper also predicts the changes in decomposition stage of paper sample.

Second stage of thermal degradation:

Second stage of thermal degradation of intumescent coated paper in temperature range 270-600 °C shows 31.2 % weight loss as in Fig 2. This may be due to pyrolytic decomposition, deoxygenation, dehydrogenation, and aromatization of char. At the same time complex formation takes place of intumescent component with the substrate and solidification through cross-linking reaction of residual char occurs in this stage. No DTG peak is shown in this stage because of gradual weight loss.

Kinetics Study of Thermal Degradation

The kinetic parameters of thermal degradation of untreated and its coated samples were determined using first order Coats-Redfern method as in equation (2) on data obtained from TG and is given in Table 1 using Coats Redfern Plot (Fig 3). Activation energies of coated sample and untreated sample was calculated in range of degree of conversion ($1-\alpha=0.9-0.49$) and ($1-\alpha=0.9-0.05$) respectively, which falls in first stage of thermal degradation of maximum mass loss. Activation energy of coated paper (129.8 kJ mol⁻¹) is found lower than that of untreated paper (154.7 kJ mol⁻¹). Decrease in activation energy is due to catalyzing effect of phosphoric acid and metals, which show that dehydration path during thermal degradation of cotton is chosen resulting in more char formation at the expense of tar.

LOI and Char Yield

Char yield at 600°C and LOI values of untreated paper and its coated sample were obtained. Higher the value of LOI and char yield, better is the flame resistance of the material. LOI value for pure untreated sample (18%) was found to increase for intumescent coated sample (30.2%). No char yield was obtained for pure untreated paper sample at 600°C. Char yield for intumescent coated sample increased from zero to 28.7%.

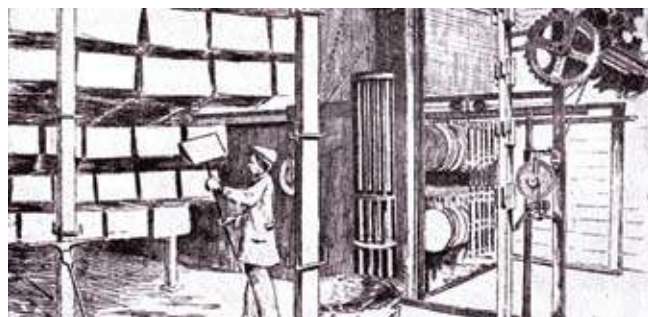
Conclusions

TG curves of coated papers show two stages of thermal degradation which are mainly due to dehydration, pyrolytic decomposition and aromatization of char, respectively. For coated sample, pyrolytic degradation gives a less amount of tar consisting flammable volatile products and correspondingly higher char yield. Decrease in activation energy is due to catalyzing effect of released phosphoric acid, and support that dehydration path during thermal degradation of polymeric substrate is preferred in which more char is formed at the expense of tar. LOI value for pure untreated fabric (18%) increased for coated fabric (30.2%) again supports the flame retardant behaviour of coated sample.

Hence the thermogravimetric analysis, LOI and char yield results has demonstrated that coatings decompose, absorb heat, swell and form the protective char layers at the different temperature ranges, and, therefore, these cooperated reactions provide a good fire protection for the polymeric substrate in a fire.

References:

1. Fire Statistics United Kingdom (Government Statistical Office, London, UK) 1998.
2. W. E. Franklin, J. Macromol. Sci. Chem., A19 (1983) 95.
3. W. E. Franklin, J. Fire Retardant Chem., 9 (1982) 263.
4. C. J. Biermann and R. Narayan, J. Polym. Sci: Part C, Polym. Letters, 25 (1987) 89-92.
5. P. Zhu, S. Sui, B. Wang, K. Sun and G. Sun, J. Anal. Appl. Pyrol., 71 (2004) 645-655.
6. R. Y. Yeh, Y. Yang and Y. S. Perng, Taiwan J For Sci., 26(1) (2011) 87-97.
7. S. M. Iomakin, G. E. Zaikov and M. I. Artsis, Int J Polm Mater., 32 (1996) 173-202.
8. G. Camino, in Fire Retardant Polymeric Materials, edited by G Nelson (ACS, USA) 1995, 461-492 (chap 10).
9. M. C. Yew, N. H. Ramli Sulong, M. K. Yew, M. A. Amalina and M. R. Johan, Materials Res. Innovations, 18(2014) SUPPL 6, 384-388.
10. H. T. Deo, N. K. Patel and B. K. Patel, J Engg Fibres & Fabrics, 3 (4) (2008), 23-38.
11. D. Wesolek, R. Gasiorski, S. Rajeswski, J. Walentowska and R. Wojeik, Polymer, 8(12)(2016), 419.
12. S. Rabe, Y. Chuenban and B. S. Chartel, Materials, 10 (5)(2017), 455.
13. A. B. Morgan, Polymer reviews, (2018)
14. A. W. Coats and J. P. Redfern, Nature, London, 201 (1964) 68.
15. J. B. Dahiya, K. Kumar, M. M. Hogedorn and H. Bockhorn, Polym. Int., 57 (2008) 722-729.



OUR HERITAGE Journal

certify to all that

आशा रानी

has been awarded Certificate of Publication for research paper titled

सूराजपाल चौहान की कहानियों में दलित चेतना

UGC Care Approved International Indexed and Refereed Journal

Published in Vol-67-Issue-5-September-2019

of OUR HERITAGE JOURNAL with ISSN:: 0474-9030

Impact Factor 4.912 (SJIF)

Indexed with Crossref and DOI <https://doi.org/10.2664/whjhrj-19-06>

S/S Sharma

Editor, OUR HERITAGE JOURNAL

सूरजपाल चौहान की कहानियों में दलित चेतना

शशि बाला
शोधार्थी
म0द0वि0, रोहतक
Email id: shashibala292@gmail.com

डॉ० आशा रानी
हिंदी विभाग,
वैश्य पी.जी. कॉलेज, भिवानी

शोध-सार :

सूरजपाल चौहान एक दलित वर्ग से हैं। वे अपनी कहानियों में ना केवल सहानुभूति की बात करते हैं, अपितु वे स्वानुभूति की बात करते हैं। क्योंकि उन्होंने इन सब चीजों को स्वयं झेला है। वे उस तबके से आते हैं जो समाज इन सब बातों को झेलता है, देखता है, उस पीड़ा को भोगता है। इसलिए इनकी कहानियों में केवल कल्पना नहीं है वो जीवन की सच्चाईयाँ हैं, जीवन का यथार्थ है। इनके तीन कहानी संग्रह 'हैरी कब आएगा', 'नया ब्राह्मण', 'धोखा-', अब तक प्रकाशित हो चुके हैं। इनकी मुख्य कहानियाँ 'बदबू', 'बहुरुपिया', 'बस्ती के लोग', 'कारज', 'तीन चित्र', 'एलिजाबेथ', 'जाति', 'झूठ के दो चेहरे' हैं जिनके माध्यम से मैं अपनी बात आपके सामने रख रही हूँ। इन्होंने अपनी कहानियों में दलित वर्ग में चेतना जागृत करने के लिए उनमें शिक्षा का अधिकार, संस्कृति का अधिकार, समानता का अधिकार, स्वतंत्रता का अधिकार के प्रति लोगों को जागृत किया है।

भारतीय समाज में दलित के लिए विभिन्न शब्दों का प्रयोग हुआ है जैसे- अछूत, हरिजन, अस्पृश्य आदि। शब्दकोशीय आधार पर इसके अग्रलिखित अर्थ लिए जा सकते हैं - दबाया गया, सताया गया, खंडित, बिखरा हुआ, कुचला हुआ, बांटा गया, रौंदा गया, अपमानित, उपेक्षित, शोषित, पीड़ित, उत्पीड़ित, पराश्रित आदि।" (1)

'महात्मा गांधी ने शूद्रों के लिए 'हरिजन' शब्द प्रयुक्त किया परन्तु भीमराव अम्बेडकर ने इसका विरोध किया क्योंकि दक्षिण भारत के मंदिरों में देववासियों से उत्पन्न अवैध संतानों को हरिजन कहा जाता था। यह 'हरिजन' शब्द घृणा की दृष्टि से देखा गया। 'दलित' शब्द का प्रयोग स्वयं डॉ० अम्बेडकर ने किया यह 'डिप्रेसड क्लास' का हिंदी पर्याय है। यह वही शब्द है जो कि स्वर्ण हिंदुओं के उत्पीड़न, दलन और अन्याय का प्रतीक है तथा इसके उत्पीड़न से मुक्ति का उद्घोष है।' (2)

पन्ना भगत कहता है - " मगना, बावरो मत बने, उल्टी गंगा मत बहा.....बरसों से चले आ रहे रिवाजों को ताक पर, पहले अपने बाप की चिता की आग को ठण्डी करने की सोच ताकि उनकी आत्मा को कूँ शान्ति मिल सके।" (10)

मगनलाल मोहल्ले के लोगों की आँखों पर जो अज्ञानता का पर्दा पड़ा था उसे हटाने की कोशिश करता है। कमली अपने पति से कहती है-"गाँव में अब भी छुआछूत, ऊँच-नीच और कुप्रथा का बोलबाला है, ऊँची जाति की क्या कहें, दलितों में की आपस में।"(11)

कहानीकार ने 'तीन चित्र' शीर्षक कहानी के दूसरे चित्र से स्पष्ट किया है अगर कोई स्वतंत्र व्यवसाय करना चाहे तो सर्वर्ण समाज में लोग उसके उस धंधे को चौपट कर देते हैं। पंडित की दुकान के सामने चाय की दुकान लेकर बैठे चतरसिंह की जाति पता चलते ही उसका धंधा बरबाद कर देते हैं। दलित युवक अगर सर्वर्ण कन्या से विवाह कर लेता है तो या तो उसे मार दिया जाता है या उसे वह स्थान छोड़ कर भाग जाना पड़ता है। हर किसी को अब यह कहते हुए तो सुना है कि पहले जैसे जाति-व्यवस्था नहीं रही।

अब दलित लड़के- लड़की में साथ स्वर्ण शादी करते हैं लेकिन ऐसा कुछ नहीं है सब ढकोसला है। दलित लड़कियों के साथ सर्वर्ण वर्ग के युवक रंगरेलिया तो मना सकता है लेकिन उससे शादी की बात आए तो अपनी बात से मुकर जाता है। 'एलिजाबेथ' कहानी में एलिजाबेथ के माँ-बाप ईसाई धर्म अपनाने के बाद भी जाति से पीछा नहीं छोड़ा पाए। विनोद को उसकी जाति का पता चलते ही पीछे हट गया। रवीन्द्र कहता है "एलिजाबेथ और उसके परिवार के लोग ईसाई बनने से पहले चूहड़ा जाति से सम्बन्ध रखते थे, यार अशोक, क्या धर्म बदलने से जाति बदल जाती है, यह तो अच्छा हुआ कि समय रहते सच्ची बात पता चल गयी, वरना विनोद के साथ बहुत बड़ा अनर्थ हो जाता। प्रगतिशील या वामपन्थी होने का यह मतलब तो नहीं कि किसी भी चूहड़ी-चमारी से विवाह रचाते फिरे।" (12)

पढ़े लिखे दलितों में दलित अपनी पहचान मिटाकर छलावे के पीछे भाग रहा है लेखक इस वर्ग को नया ब्राह्मण कहते हैं। 'नया ब्राह्मण' कहानी में मंगूल राम नौकरी मिल जाने के बाद अपने अतीत को भूल जाता है। उसे अपने माँ से रहने-सहने से भी छिन आने लगती है। " उरी अम्मा, कैसी रहवै तू भंगन सी, ठीक से रहा कर अफसर की माँ जैसी।" (13)

'जाति' कहानी दिल्ली में एक सरकारी दफ्तर के अन्दर जाति भावना और अवमानना के चित्र प्रस्तुत होते हैं। कहानी में ब्रांच मैनेजर एक दलित है और वहाँ काम करने वाले ब्राह्मण और स्वर्ण समाज से हैं। चेतन दलित वर्ग से हैं। चेतन पी.सी. शर्मा विरोध करते हुए

मैनेजर से कहता- " सर यह पी0सी0 शर्मा समझता क्या, बामन का चौ.....जब भी मिलता है मेरी जाति ही पूछता है। कई बार उसे बता चुका हूँ कि शिड्यूल कास्ट हूँ, लेकिन हरामी कुरेद-कुरेदकर मेरी उप-जाति में बारे में जानना चाहता। सर, इसने फिर कभी पूछा तो साले के होश ठिकाने लगा दूंगा।" (14)

' झूठ के दो चेहरे' कहानी में लेखक समाज में चित्रित दोगलों चेहरों की बात करता है। एक तो हम भंगी समाज की औरतों की ताई कहकर बुलाते हैं दूसरे और उनसे छूआछूत करते हैं। वह कहता है - " अगर सुक्को गाँव में किसी की ताई, चाची या किसी की भाभी है तो फिर उसके बेटे मुख्खा को गाँव की पाठशाला में दूसरे बच्चों से अलग क्यों बैठाते है। मेरे बापू और अम्मा मुझे मुख्खा के संग खेलने क्यों नहीं देते। एक ओर सुक्को मेरी ताई लगे तो फिर दूसरी ओर यह छूआछूत क्यों।" (15)

निष्कर्ष:-

दलित साहित्यकार सूरजपाल चौहान अपनी लेखनी के बल पर देश - विदेश के लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने में सफल रहे।

सूरजपाल चौहान जी वैज्ञानिक आधार पर अम्बेडकर वादी है। वह दलित एकता के प्रति समर्पित है। सूरजपाल चौहान दलित संहिता के प्रतिबद्ध है। वे चाहते हैं कि समाज में सभी को समान हक मिलें। समाज में ऊँच-नीच का भेद खत्म हो। वह समाज में समानता चाहते हैं।

संदर्भ सूची:-

- (1) डॉ0 गुणशेखर, दलित साहित्य का स्वरूप: विकास और प्रवृत्तियाँ, पृ0सं0-14, शिल्पायन प्रकाशन शाहदरा, दि0-110032, संस्करण-2012
- (2) जोगिन्द्र कुमार संधू, दलित चेतना के संदर्भ में कथाकार ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृ0सं0-25, प्रकाशक साहित्य संस्थान, गाजियाबाद-201102, सं.-2012
- (3) डॉ0 लीलावती देवी गुप्ता, प्रसाद साहित्य में मुग चेतना, पृ0सं0-25, चन्द्रलोक प्रकाशन 126/100, पी0 ब्लॉक, नागपुर, प्र0सं0-1996
- (4) जोगिन्द्र कुमार संधू, दलित चेतना के संदर्भ में कथाकार ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृ0सं0-55
- (5) सूरजपाल चौहान, नया ब्राहमण, भूमिका, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नयी दि0 110002, प्रथम सं0-2009
- (6) वहीं पृ0 सं.-19

Our Heritage

ISSN: 0474-9030

Vol-67-Issue-5-September-2019

- (7) वही पृ०सं.-19
- (8) वही पृ० सं.-24
- (9) वही पृ० सं.-59
- (10) वही पृ० सं.-70-71
- (11) वही पृ० सं.-71
- (12) वही पृ० सं.-82
- (13) वही पृ० सं.-63
- (14) वही पृ० सं.-84
- (15) वही पृ० सं.-104



A study of Soliton Transmission with Wavelength Division Multiplexing and Four Wave Mixing

Narender Kumar

Department of Physics, Vaish College, Bhiwani 127021

*corresponding author, E-mail: nk.physics15@gmail.com

Abstract:- Soliton waves are those waves which propagate long distance without any distortion of its wave form. The propagations of optical pulses in optical fiber by non-linear Schrodinger (NLS) equation called soliton in optical fiber. The optical solitons have been experimentally generated by various research worker using mode-locked lasers and single mode fiber. It is necessary to generate short pulses at wavelength greater than λ_0 which is in the 1.3 to 1.5 μm region of single mode fused silica fibers. Generally color center lasers have been used to create the pulses, although semiconductor diode laser are becoming available which can generate the optical solitons is of the order of 1W. Such peak powers are relatively straight forward to generate.

Keywords: Optical solitons; optical fiber; optical nonlinear; dispersion; WDM and FWM

1. Introduction

The optical fiber development much of the effort was devoted to decreasing the loss. These efforts led to the realization of the low-loss single mode silica fiber which has a minimum attenuation at 1.55 μm . In single-mode fibers the total dispersion is the sum of material dispersion caused by the dispersive properties of the waveguide material and waveguide dispersion caused by the guidance effects within the fiber structure. The total dispersion can be negative or positive depending on the wavelength. In silica based fiber the total dispersion passes through zero to 1.3 μm and it is negative for the wavelength greater than 1.3 μm .

In 1973 Hasegawa and Tappert modeled the propagation of coherent optical pulses in optical fiber by nonlinear Schrodinger (NLS) equation which showed theoretically that generation and propagation of shape preserving pulses called soliton in optical fibers. They solved the nonlinear Schrodinger (NLS) equation. This equation has an exact solution for an initial pulses shape of $N_{\text{sech}}(t)$, where N is any integer known as order of solitons. The first order solitons is a self-maintaining pulses whereas higher order solitons split and narrow which recovering their initial shape at the end of a period which is $P/2$ in normalized coordinate axis. This period is known as the solitons period. They showed that the pulses can be convex upward (bright solitons) or Concave upward (dark solitons) depending on the sign of the dispersion. If dispersion is positive 'dark solitons' generated or positive then bright solitons generated. The following properties of solitons make them attractive for optical communication systems.

- i. Pulse shape the width and speed are preserved in the absence of loss
- ii. Solitons are stable against small perturbations

- iii. They collide with each other without changing their shape and speed.

At present solitons propagation is the only method which can be induced broadening of pulses in fiber-optics transmission. This important discovery of Hagegawa and Tappert stimulated extended research towards optical solitons as in high bit-rate optical fiber communication systems.

During the present research work, we have tried to analysis the following cases-

- i. Introduction to Soliton Propagation
- ii. Types of Soliton
- iii. Soliton Transmission
- iv. Wavelength Division Multiplexing in Solitons
- v. Four Wave Mixing in Solitons
- vi. Stability of Solitons
- vii. Conclusions

2. Types of Soliton:

2(a) Spatial Solitons :The nonlinear effect can balance the diffraction. The electromagnetic field can change the refractive index of the medium while propagation thus creating a structure similar to a graded-index fiber. If the field is also a propagating mode of the guide it has created, then it will remain confined and it will propagate without changing its shape.

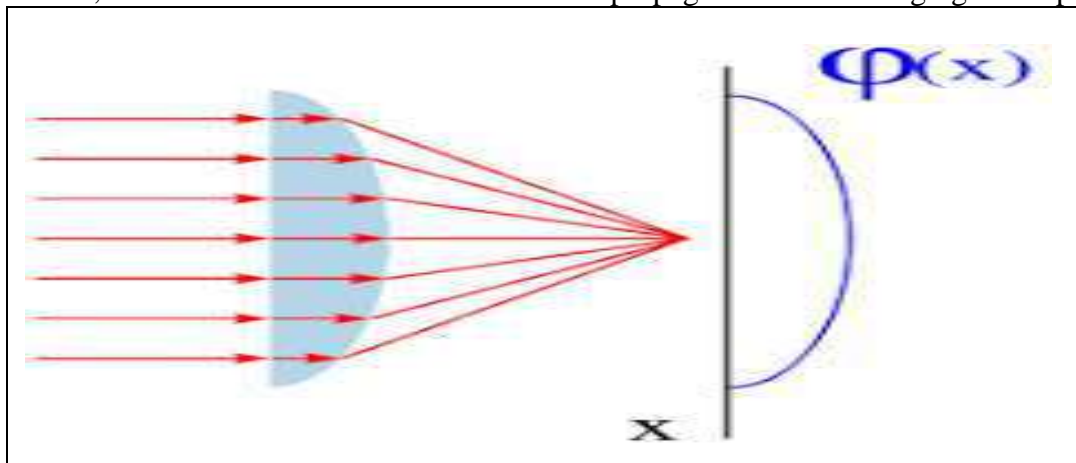


Fig- Optical field approaches the lens and focused

In order to understand how a spatial soliton can exist, we have to make some considerations about a simple convex lens. As shown in picture on the right an optical field approaches the lens and then it is focused. The effect of the lens is to introduce a non-uniform phase change that causes focusing. This phase change is a function of the space can be representing with a $\Psi(x)$, whose shape is approximately represented in picture.

The phase change can be expressed as the product of the phase constant and the width of the path in field has covered can be written as

$$\Psi(x) = k_0 n L(x) \dots\dots\dots 1.1$$

Where $L(x)$ is the width of the lens changing in each point with a shape that is the same of $\Psi(x)$ because k_0 and 'n' are constants. In other words, in order to get a focusing effect we just have to introduce a phase change of such a shape but we change the value of the refractive index $n(x)$ we will get exactly the same effect, but with the completely different approach.

That's the way graded-index fiber work; the change in the refractive index introduces a focusing effect that can balance the natural diffraction of the field. If the two effects balance each other perfectly, then we have a confined field propagating within the fiber. Spatial

solitons are based on the same principal: Kerr effect introduce a self-phase modulation that changes the refractive index according to the intensity

$$\Psi(x) = k_0(x)L = k_0L[n+n_2I(x)] \quad \dots\dots\dots 1.2$$

If $I(x)$ have a shape similar to the one shown in the figure, then we have created the phase behavior we wanted and the field will show a self-focusing effect. In other words the field creates a fiber like guiding structure while propagating. If the field creates a fiber and it is the mode of such a fiber at the same time. It means that the focusing non-linear and diffractive linear effects are perfectly balanced and the field will propagate forever without changing its shape (as long as the medium does not change and if we can neglect losses. In order to have a self-focusing effect, we must have a positive n_2 , otherwise we will get the opposite effect and we will not notice any non-linear behavior.

2(b) Temporal Solitons: If the electromagnetic field is already spatially confined, it is possible to send pulses that will not change their shape because the non-linear effects will balance the dispersion. Those solitons were discovered first and they are often simply referred as “solitons” in optics. The main problem that limits transmission bit rate in optical fibers is group velocity dispersion. It is due to the fact that generated impulses have a non-zero wide bandwidth and the medium they are propagating through have a refractive index that depends on the frequency or wavelength. This effect is represented by the group delay dispersion parameter D ; using it it’s possible to calculate exactly how much the pulse will widen

$$\Delta\tau \sim DL\Delta\lambda \quad \dots\dots\dots 1.3$$

Where L is the length of the fiber and $\Delta\lambda$ is the bandwidth in terms of wavelength. The approach in modern communication systems is to balance such dispersion with other fiber having D with difference signs in different parts of the fiber: this way pulses keep on broadening and shrinking while propagating anyway with temporal solitons. It is possible to remove such a problem completely.

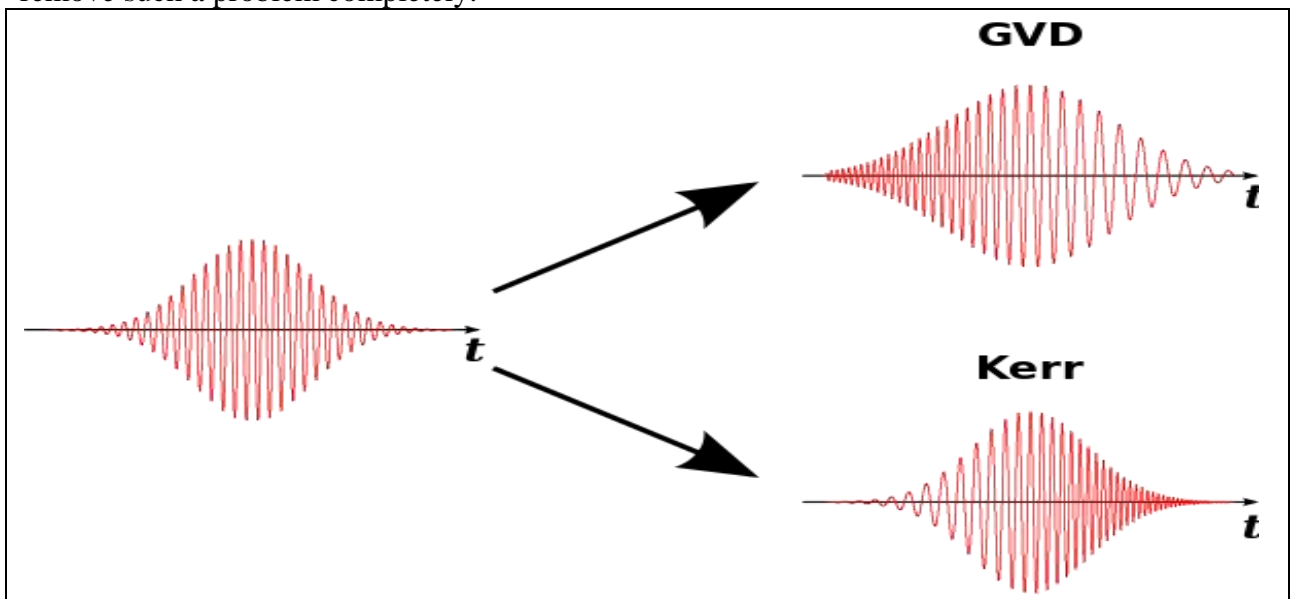


Fig:- Linear and Non-linear effects on Gaussian pulses

In above picture left side is a standard Gaussian pulse which is the envelope of the field oscillating at a defined frequency. We assume that the frequency remains perfectly constant during then pulse.

Now we let this pulse propagate through a fiber with $D>0$, it will be affected by group velocity dispersion. The higher frequency components will propagate a little bit faster than the lower frequencies, thus arriving before at the end of fiber. The overall signal we get is a wider chirped pulse shown in the upper right of the picture.

Now let us assume we have a medium that shows only non-linear Kerr effect but its refractive index does not depend on frequency- such a medium does not exist, but it's worth considering it to understand the different effects.

The phase of the field is given by:

$$\Psi(t) = \omega_0 t - kz = \omega_0 t - k_0 z [n + n_2 I(t)] \quad \dots\dots\dots 1.4$$

The frequency (according to its definition) is given by

$$\omega(y) = \partial\Psi(t)/\partial t = \omega_0 - k_0 z n_2 \partial I(t)/\partial t \quad \dots\dots\dots 1.5$$

This situation is represented in the picture on the left shows in beginning of the pulse the frequency is lower and at the end is higher. After the propagation through our ideal medium, we will get a chirped pulse with no broadening because we have neglected dispersion.

Coming back to the first picture, we see that the two effects introduce a change in frequency in two different opposite directions. It is possible to make a pulse so that the two effects will balance each other. Considering higher frequencies, linear dispersion will tend to let them propagate faster, while non-linear Kerr effect will slow them down. The overall effect will be that the pulses do not change while propagating: such pulses are called temporal solitons. An electric field is propagating in a medium showing optical Kerr effect through a guiding structure (as an optical fiber) that limits the power on x-y plane.

2(c) Dark Solitons:- In the analysis of both types of solitons we have assumed particular conditions about the medium

- In spatial solitons, $n_2 > 0$, that means the self-phase modulations causes self-focusing
- In temporal solitons $\beta_2 < 0$ or $D > 0$, anomalous dispersion

Is it possible to obtain solitons if those conditions are not verified or if we assumed $n_2 > 0$ or $\beta_2 < 0$ we get the following differential equation (it has the same form in both cases we will use only the notation of the temporal solitons).

$$-1/2 \partial^2 a / \partial \tau^2 + \partial a / \partial \tau^{\zeta} + N^2 I a^2 = 0 \quad \dots\dots\dots 1.6$$

This equation has soliton like solution . For the first order (N=1):

$$a(T, \zeta) = \tanh(T) e^{i\zeta} \quad \dots\dots\dots 1.7$$

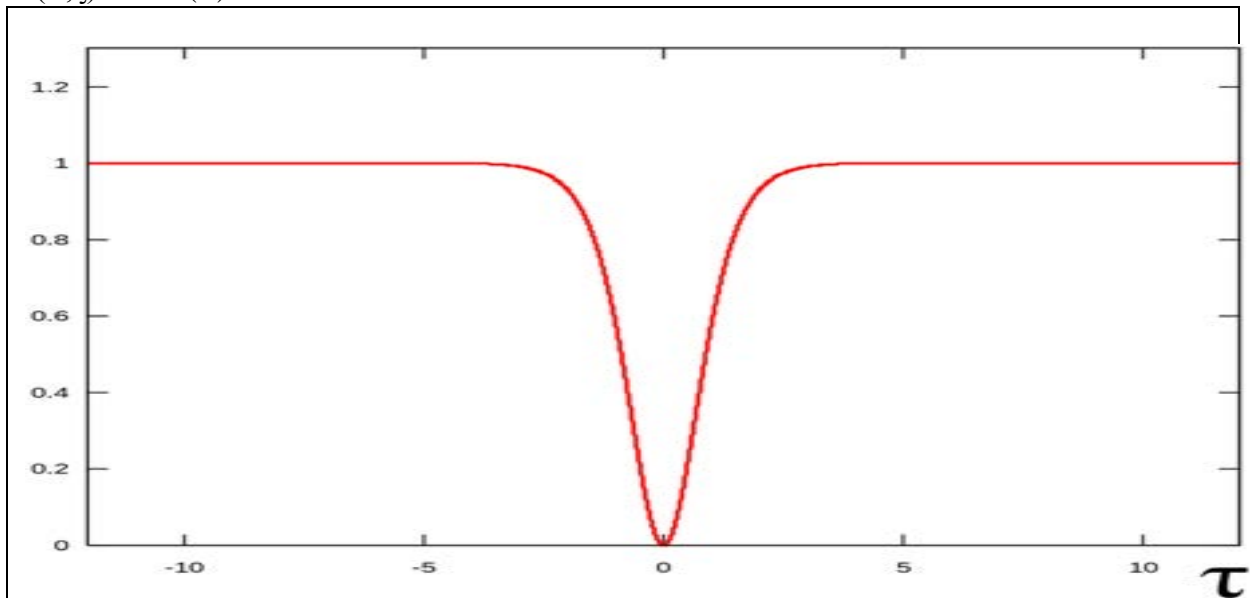


Fig:- power of a dark soliton

Power of darksoliton shown in figure. For highest order soliton (N>1) we can use the following closedform expression. It is a soliton, in the sense that it propagates without changing its shape, but it is not made by a normal pulse, but it is a lack of energy in a continuous time beam. The intensity is always constant, but for a short time it becomes zero

and then back to the constant value again, thus generating a “dark pulse”, from which the name dark soliton. These solitons can actually be generated introducing short dark pulses in much longer standard pulses. Dark solitons are GeO₂ and P₂O₅ compositional fluctuations that occur. These two effects give rise to refractive index variations which occur within the glass over distances that are small compared with the wavelength. These index variations cause a Rayleigh-type scattering of light. Rayleigh scattering in glass is the same phenomenon that scatters light from the sun in the atmosphere, thereby giving rise to a blue sky.

3. Soliton Transmission:- The solutions a pulse able to keep its shape and width steady as a result of mutual compensation of dispersion broadening and self-phase modulation narrowing processes has been discussed above. The Wavelength Division Multiplexing system is based on solitons transmission. System of 128 channels with each channel carrying capable of 109 bit/sec. Its pulse is able to travel up to 6,000 KM without regeneration. Since solitons can be transmitted over a very long fiber link without amplifications and dispersion compensation. They look like the most promising transmission technology. The urgent need of solitons stems from the necessity to cope the most limiting effects in today’s fiber. The major challenge in the development of commercial solitons transmission is already installed multimillion networks of standard fibers. Solitons are used to produce a pulse train suitable for solitons transmission.

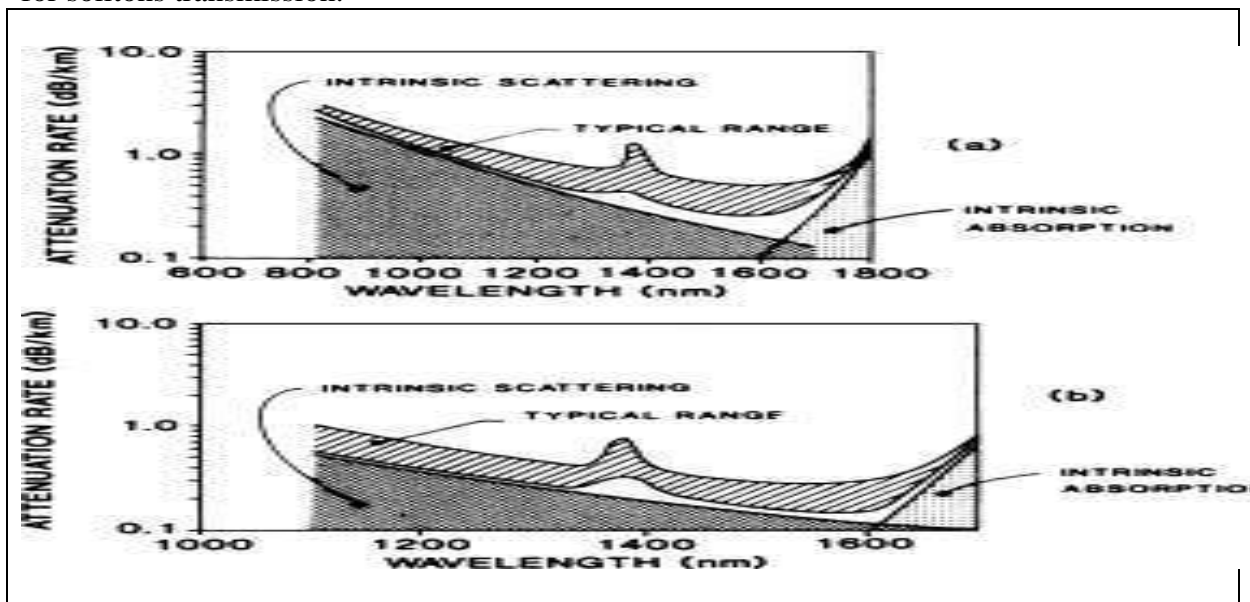


Fig- Semiconductor of the device for a hybrid pulse source

Our research goal is to realize long distance large capacity optical transmission by taking advantage of optical nonlinear effects, including optical solitons and nonlinear techniques for generating ultra-short optical pulses. Thus soliton is a wave that exists in nature which can propagate over long distances without any distortion in its waveform. Another interesting property of solitons is the durability, which means that once generated and launched into the fiber they retain their shape over long distances.

4. Wavelength Division Multiplexing (WDM) with solitons-

The wavelength division multiplexing is the potentially an effective way to increase the capacity of ultra-long distance data transmission. For most transmission modes, however nonlinear interaction tend to cause severe inter channel interference. On the other hand in losses, constant dispersion fiber, solitons of different wavelength are transparent to each other. The transparency means that each solitons emerges from a mutual collision with wavelength energy and shape. In particular FWM components that make a temporary appearance during the collisions are reabsorbed by solitons. This transparency can be maintain in the system by use of a chain of lumped amplifiers as long as the collision length (

the distance that the solitons travel down the fiber while passing through each other) is two or more times the amplifier spacing. Nevertheless the effect of cross-phase modulation between colliding solitons and their generation of the FWM components was assumed to be similar to that in the lossless case. In the recent experimented study of soliton WDM transmission at 10 G bits per channel, however we observed serious penalties, particularly the distance for error free transmission. Thus it is clear that the above analysis has an important effect.

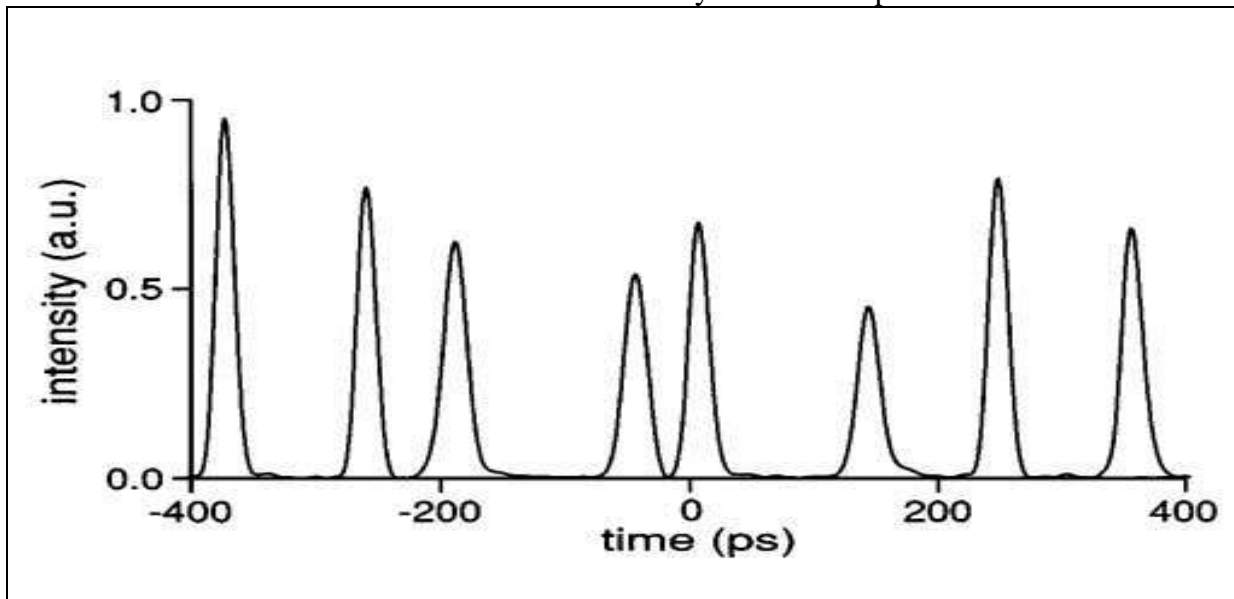


Fig- *Intensity(a.u.) with respect to Time(p.sec)*

The net results in that WDM solitons system behave quite differently from conventional WDM system e.g. channel spacing $\Delta\lambda$ in conventional WDM system must be longer than a certain critic value or satisfactory performance. But soliton system impose an additional requirement $\Delta\lambda$ must be smaller than another critical value. The growth of FWM products can be effectively eliminated through proper dispersion management. The elimination is complete when the fiber decreases exponentially with distance exactly as does the single energy. Although such dispersion tapered fiber is not yet commercially available e.g. just a twosteps approximation almost completely eliminated the timing and amplitude jitter.

Residual Four Wave Mixing energy following a single collisions of 20-ps solitons in channels spaced 0.6 nm apart in a chain of fiber spans with $D=0.5\text{ps}/(\text{nm km})$. For constant D and for the optical two, three, four step approximation to the ideal exponential taper. The Four Wave Mixing energy for a single sideband and is normalized to the soliton pulse energy. No noise seed was used in these simulations. Channel spaced 'n' times the adjacent channel spacing the Four Wave Mixing intensity should scale as n^{-5} . The apparently rapid full of in Four Wave Mixing effect is tempered somewhat by the facts that the no of collisions tends to increase as 'n' and that is really the vector addition of residual field quantum from at least several successive collisions that is to be referred here. Also note that the no of steps require for total suppression of the FWM intensity increasing channel spacing just two steps are required for lamp. In the neighborhood of 30km. Whereas our steps are required for same in fig. Finally note that because of the finite nature of the pulse width and collision length are responses.

5. Four Wave Mixing in Solitons-

The power dependence of refractive index has its origin in the third order non-linear susceptibility denoted by $\chi^{(3)}$. The non-linear phenomenon known as the Four Wave Mixing also originates from $\chi^{(3)}$. If three optical fields with carrier frequencies ω_1 , ω_2 and ω_3 co-propagate inside the fiber simultaneously $\chi^{(3)}$ generate four field whose frequency is ω_4 related to other frequencies by a relation $\omega_4 = \omega_1 \pm \omega_2 \pm \omega_3$ several frequencies corresponding

to different pulse and minus signs combinations are possible in principal. In practice most of these combinations do not build up because of the phase matching requirement. Frequency combination of the form $\omega_4 = \omega_1 + \omega_2 - \omega_3$ are often troublesome for multichannel communication systems. Since they can become nearly phase matched when channel wavelength lie close to the zero dispersion wavelength. In fact the degenerate Four Wave Mixing process for which $\omega_1 = \omega_2$ is often the dominate process and impulsive the system performance most. On the fundamental level, a four wave mixing process can be viewed as a scattering process and impacts the system performance most. The four wave mixing process may also be interpreted between four photons. A photon of frequency ω_3 combines with a photon of frequency ω_4 will produce a photon of frequency ω_1 and ω_2 shown in fig.

$$\Delta = \beta(\omega_3) + \beta(\omega_4) - \beta(\omega_1) - \beta(\omega_2) \dots\dots\dots 1.8$$

Where $\beta(\omega)$ is propagation constant for an optical field with frequency ω . in degenerate case $\omega_2 = \omega_1$, $\omega_3 = \omega_1 + \Omega$ and $\omega_4 = \omega_1 - \Omega$ where Ω represents the channel spacing. This process can still occur and transfer power from each channel to nearest neighbors. Such a power transfer not only results in the power loss for a channel but also induced inter-channel cross talk that degrades.

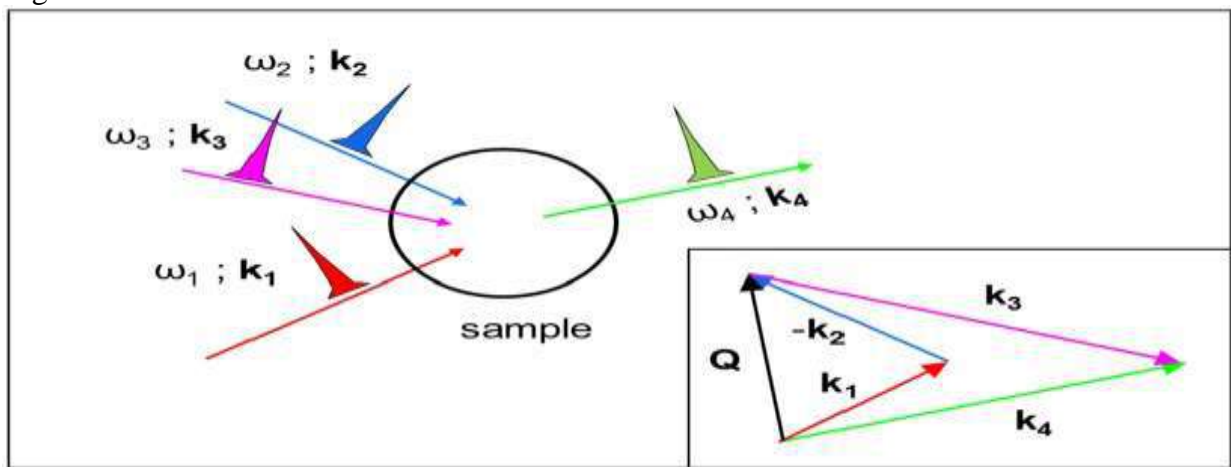


Fig-Interaction of four photons in Four Wave Mixing

Modern Wavelength Division Multiplexing system avoid Four Wave Mixing by using the technique of dispersion management in which Group Velocity Dispersion is kept locally high in each fiber section even though it is low on average. Four Wave Mixing, can also be useful in designing light wave system. It is also used for de-multiplexing individual channels when time division multiplexing is used in the optical domain. It is also used for wavelength conversion. Four Wave Mixing in optical fiber, is some time used for generating for a spectrally inverted signal through the process of optical phase conjugate. This technique is useful for dispersion compensation.

6. Stability of Solitons-We have describe what optical solitons are to create a field with a particular shape with a particular power related to the duration of the impulses. But what if we are a bit wrong in creating such impulses then adding small perturbations to the equations and solving them numerically, it is impossible to show that memo-dimensional solitons are stable. They often referred as (1+1)D solitons meaning that they are limited in one dimension and propagate in another one say z.

If we create such a soliton using slightly wrong power or shape then it will adjust itself until it reaches the standard such shape with the right power. Unfortunately this is achieved at the expense of some power loss that can cause problems because it can generate another non-soliton field propagation together as we want. On the other hand (2+1)D spatial solitons are unstable so any small perturbation can cause the soliton to different as a field in a linear

medium or to collapse damaging the materials. So working close this saturation level makes it possible to create a stable soliton in a three dimensional space.

7. Conclusions- The propagation of first order solitons with different pulse widths indicates that shorter initial pulse spread more than longer once although the loss coefficient in the non linear Schrodinger equations is smaller. These solitons are basically used in optical communications, optical switching, high energy physics and in solid state physics.

- **In optical communications-** The most use of solitons are in optical communications. In these cases information is encoded in light pulses and transmitted through optical fiber over a long distance in 1977. With the help of solitons theory optical cables has been developed which transmit 40,000 telephone conversations simultaneously which have been experimentally observed and theoretically confirmed. In addition we have shown that the uses of the DM soliton improve the power margin and the dispersion tolerance of long distance transmission systems without any distortion.
- **In optical switching-** The optical switching as the controlling of the gain from very low values to very high value or vice-versa. The solitons pulse having very narrow band width and highly intense so we obtain optical switching using solitons system.
- **In high energy physics-** High energy physics means the particle physics where size of the particle is very small having high kinetic energies. Ideal solitons, which propagate without waveform distortion, can exist only in a transmission line with no energy loss and no fluctuation of the group velocity dispersion along the line. For achieving soliton transmission in a real optical fiber, it has been necessary to extend the concept of the soliton.
- **In Solid State Physics-** In this case we used to measure the high energy of any object. If we want to measure the length of a person with having a box of height of several hundred meters so there is no matching of size of person and the box. It can be easily measured the height of a person accurately with the help of box. We have developed several novel soliton transmission techniques, such as the use of dispersion managed solitons, a pulse reshaping technique which we call soliton control and also wavelength division multiplexed (WDM) soliton transmission. By adopting these techniques, we can increase transmission capacity and upgrade installed terrestrial or submarine cables. As enabling technologies for these transmission techniques for ultra-short optical pulses; fiber gratings for the dispersion compensation and equalization and the application of ultra-fast optical pulses to optical signal processing. So we used the solitons system in solid state physics.

8. ACKNOWLEDGEMENTS:

The authors are thankful to Dr. Narender Kumar Chauhan, Librarian GJUS&T Hisar.

9. REFERENCES:

1. M.J. Ablowitz, G.Biondini, S.Chakravary, R.B.Jenking and J.R.Souer J.Opt.Soc. Am. 14, No 7(1997), 1788-1794
2. M.J. Ablowitz, G.Biondini, S.Chakravary, R.B.Jenking and J.R.Souer J.Opt.Soc. Am. 21, No2 (1196), 1646-1648.
3. P.V.Mamysher and L.F.Mollenauer, Opt. Lett. 21, No. 6(1996). 396-398
4. Yves Jaouen, Laurent du Mouza and Guy Debangue Opt. Lett. 23, No 15, (1998), 1185-1187

5. Peter Y.P.Chen, Boris A.Malomed and Pak L.Chu, J.Opt. Soc Am B, 21, No 4 (2004) 719-728
6. Saleh, B.E.A and M.C.Teich John Wiley and sons, Inc (1991), Fundamentals of Photonics, New York
7. agrwal, Govind P, Nonlinear fiber optics (2nd edt) San Diego Academic press 17,(1995)
8. p.a.Franken, A.E.Hill, C.W.Peters and G.Weinreich, Generation of Optical Harmonics, Phys. Rev. Lett. 7 (1996) 118-119
9. H. A. Haus and Y. Chen, "Dispersion-managed solitons as nonlinear Bloch waves," J. Opt. Soc. Am. B **16**, (1999), 889–894
10. L. F. Mollenauer, P. V. Mamyshev, J. Gripp, M. J. Neubelt, N. Mamysheva, Lars Grüner-Nielsen, and Torben Veng Opt. Lett. 25 No 10, (2000), 704-706
11. Mark J. Ablowitz, Gino Biondini, Sarbarish Chakravarty, and Rudy L. Horne, J.Opt. Soc Am B 20 No 5, (2003) 831-845
12. Chen YF, Beckwitt K, Wise F, Aitken BG, Sanghera JS, Aggarwal ID. Measurement of fifth- and seventh-order nonlinearities of glasses. J. Opt. Soc. Am. B 23,(2006), 347-352
13. Nair S Sreedevi, Vipal Prem. Solitons: A Promising Technology in Optical Communication. International J of Science and Research. No 3,(2014)
14. Cai, Hong; Parks, Joseph. W. Optofluidic wavelength division multiplexing for single-virus detection, Proceedings of the National Academy of Sciences of the United States of America, (2015) No. **112**: 12933–12937
- 15.Hecht, Jeff. "Boom, Bubble, Bust: The Fiber Optic Mania." Optics and Photonics News. The Optical Society, (2016), 47
16. Vinod Bajaj, Shrinivas Chimmalgi, Vahid Aref, Sander Wahls, "Exact NFDM Transmission in the Presence of Fiber-Loss", *Lightwave Technology Journal of*, vol. 38, No. 11, (2020), 3051-3058
17. Alexander Span, Vahid Aref, Henning Bülow, Stephan ten Brink, "Successive Eigenvalue Removal for Multi-Soliton Spectral Amplitude Estimation", *Lightwave Technology Journal of*, vol. 38, No. 17, (2020), 4708-4714
18. Jonas Koch, Ken Chan, Christian G. Schaeffer, Stephan Pachnicke, "Signal Processing Techniques for Optical Transmission Based on Eigenvalue Communication", *Selected Topics in Quantum Electronics IEEE Journal of*, vol. 27, No. 3, (2021),1-14

आधुनिक भारत के शिल्पी : सरदार वल्लभ भाई पटेल

सुरेन्द्र कुमार

सहायक प्रवक्ता, इतिहास विभाग

वैद्य महाविद्यालय, भिवानी।

सरदार वल्लभ भाई पटेल की गणना भारत के महान देशभक्तों में की जाती है। वे भारत के राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम के अटल स्तम्भ थे। उनमें बिस्मार्क जैसी संगठन कुशलता, कौटिल्य जैसी राजनैतिक सुझ-बुझ और अब्राहम लिंकन के समान राष्ट्र भक्ति विद्यमान थी। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद उन्होंने असाधारण योग्यता एवं साहस का परिचय देते हुए देश की विभिन्न छोटी-बड़ी रिसायतों का विलनीकरण करके विष्व के मानचित्र पर एक अखण्ड भारत का निर्माण किया।

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के समय भारत में लगभग छोटी-बड़ी 565 रियासतें थी, जिनके अन्तर्गत 715,964 वर्गमील क्षेत्रफल था और 1941 की जनगणना के अनुसार लगभग 931189233 जनसंख्या थी। परन्तु कोई भी रियासत राजनैतिक दृष्टि से स्वतन्त्र सार्वभौमिकता का प्रयोग नहीं करती थी और वे ब्रिटिश सरकार की अधिसत्तापूर्ण थी।

भोपाल के नवाब ने कैबिनेट मिशन के सामने अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए कहा कि, "भारत की रियासतें अधिक से अधिक प्रभुत्व के साथ अपना अस्तित्व बनाये रखना चाहती है। उन्होंने यह भी कहा कि यदि भारत के दो खण्ड बनाये जा सकते हैं तो रियासतों के लिए तीसरा खण्ड भी बनाया जाना चाहिए। रियासतों को भारत व पाकिस्तान में शामिल न किया जाये। ब्रिटिश भारत में जो भी सरकार बने, वह रियासतों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न करें।" 29 जनवरी 1947 ई0 को चेम्बर ऑफ प्रिंसेज की स्थाई समिति ने बम्बई की बैठक में कुद विषिष्ट अधिकारों की माँग की और कहा कि रियासतों का भारत संघ में शामिल होने का अन्तिम निर्णय रियासतों का होना चाहिए। परन्तु बड़ौदा के शासक ने इस निर्णय से असहमति जताते हुए व्यक्तिगत रूप से संविधान सभा में शामिल होने का निष्चय किया। 20 फरवरी 1947 को ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली ने जून 1948 ई0 को भारत को स्वतन्त्र करने की घोषणा की और देशी रिसायतों की सर्वोच्च सत्ता एवं दायित्वों को ब्रिटिश भारत की किसी सरकार को न सौंपने का स्पष्ट आश्वासन दिया, जिसके फलस्वरूप दोनों पक्ष प्रभावित हुए। 15 अप्रैल 1947 को बड़ौदा में सरदार पटेल ने राजाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि वे कांग्रेस से भयभीत न हो और संविधान सभा में भाग ले। उन्होंने चेतावनी भी दी कि, "अन्त में हारकर आएंगे, वह शोभा नहीं देगा। शादी के बाजे शादी के वक्त ही अच्छे लगते हैं, मौत के समय शोभा नहीं देते।"

16 अप्रैल 1947 को सरदार पटेल ने सूरत में अपने भाषण में रियासतों की "ठहरो और देखो" नीति की आलोचना करते हुए कहा कि राजाओं को शीघ्र ही अपने प्रतिनिधि संविधान सभा में भेज दें। 28 अप्रैल 1947 ई0 की संविधान सभा के अधिवेशन में बड़ौदा, जयपुर, रीवाँ, कोचीन, बीकानेर, जोधपुर, ग्वालियर एवं पटियाला के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। लार्ड माउण्टबैटन ने भारत-विभाजन का निर्णय लेने के बाद जवाहरलाल नेहरू को भारत का जो प्रारूप दिखाया, उसमें भारत मात्र दो हिस्सों में नहीं वरन् अनेक छोटे-छोटे खण्डों में विभाजित था। माउण्ट बैटन ने अनुभव किया कि राजाओं के मध्य गम्भीर मतभेद है। भोपाल एवं ट्रावनकोर के राजा स्वतन्त्रता के पक्षधर थे। बीकानेर, जयपुर, जोधपुर, पटियाला एवं ग्वालियर के शासक संविधान सभा में सम्मिलित होना चाहते थे। हैदराबाद के निजाम जिन्ना के साथ समझौता करके पाकिस्तान में शामिल होना चाहते थे।

भारत स्वतन्त्रता अधिनियम के अन्तर्गत अंग्रेजी सरकार ने सभी देशी रियासतों को उनकी संप्रभुता वापस लौटा दी और उन्हें छूट दे दी गई कि वे अपनी इच्छानुसार भारत या पाकिस्तान में किसी के भी साथ समझौता कर ले अथवा अपना स्वतन्त्र अस्तित्व बनाये रखे। अतः अनेक देशी रियासतों के राजा स्वतन्त्र राज्यों का स्वप्न देखने लगे। परन्तु 15 जून 1947 को कांग्रेस ने इसका विरोध करते हुए अपने प्रस्ताव में कहा कि, “अखिल भारतीय कांग्रेस समिति, भारत में किसी भी रियासत की स्वतन्त्रता की घोषणा करने और शेष भारत से अलग रहने की माँग को स्वीकार नहीं कर सकती। यह भारतीय इतिहास तथा जनता के लक्ष्यों की अस्वीकृति माना जाएगा।” 5 जुलाई 1947 को भारतीय राज्य विभाग लौह पुरुष सरदार पटेल को सौंप दिया गया और वी.पी. मेनन को उनका सचिव बनाया गया। इसी दिन सरदार पटेल ने अपने ऐतिहासिक वक्तव्य में रियासतों के प्रति कांग्रेस के सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार का आभ्यासन दिया तथा “केवल सुरक्षा, वैदेशिक सम्बन्ध और परिवहन के क्षेत्र में केन्द्रिय सरकार के अन्तर्गत आने का निवेदन किया।” उन्होंने इतिहास की ओर इशारा करते हुए कहा, “हमारी खण्डित अवस्था और एक होकर मुकाबला न करने की हमारी अयोग्यता का निरन्तर हमें षिकार होना पड़ा। हमारे आपसी झगड़े, ईर्ष्या, द्वेष और बैर भाव के कारण ही जो विदेशी आए, उनके सामने हम हार गए।” सरदार पटेल ने रियासतों के शासकों और उनकी जनता को अपनी मातृभूमि के प्रति समान निष्ठा से प्रेरित होकर सबके समान हित के लिए मैत्रीपूर्ण और सहयोग की भावना से संविधान सभा में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया।

11 अगस्त 1947 ई० को सरदार पटेल ने अपने सम्बोधन में कहा कि, “चार दिन पश्चात विदेशी सरकार चली जाएगी। अतः रियासतें 15 अगस्त तक भारतीय संघ में शामिल हो जाये, अन्यथा उनके साथ कठोर व्यवहार किया जाएगा।” उन्होंने यह भी स्पष्ट रूप से कहा कि “आज की दुनिया में अकेला रहना मुष्किल है। जब तेज आँधी आती है तब अकेला पेड़ गिर जाता है। मगर जो दूसरे पेड़ों के समूह में होता है वह बच जाता है। आप भी रामचन्द्र जी और अषोक जैसों के वंशज हैं। परन्तु यह भी सत्य है कि आप आजकल अंग्रेज अधिकारियों के छोटे-छोटे चपडासियों को भी सलाम मारते हैं। आपको अभी यह विश्वास नहीं है कि 15 अगस्त को अंग्रेज चले जाएँगे। परन्तु जब वे जाएँगे और आपको स्वतन्त्रता की हवा लगेगी तब आपके हृदय पट्ट खुलेंगे।” सरदार पटेल और वी.पी. मेनन के अथक प्रयासों से 14 अगस्त 1947 तक पटियाला, बीकानेर, धौलपुर, भरतपुर, बिलासपुर, ग्वालियर, नाभा, द्रावणकौर, जोधपुर, भोपाल और इन्दौर रियासतें भारतीय संघ में शामिल हो गईं। हैदराबाद, जूनागढ़, कठियावाड़ एवं कश्मीर अब भी स्वतन्त्र थीं।

1941 ई० की जनगणना के अनुसार जूनागढ़ की जनसंख्या लगभग 670719 थी, इसमें 80 प्रतिशत हिन्दू थे। वहाँ का नवाब महावत खान रसूल खान था। उसे कुत्ते पालने का शौक था और उन पर वह अत्यधिक मात्रा में धन खर्च करता था। रियासत का सारा कार्य दीवान शाहनवाज भूट्टों देखता था, जो जिन्ना एवं मुस्लिम लीग के प्रभाव में था। जूनागढ़ में भी भावनगर, नवानगर, मौरवी, गोंडल, पोरबन्दर तथा वनकानकर इत्यादि रियासतें थीं। भारत के राज्य विभाग ने जूनागढ़ में प्रवेश-लिखित पूर्ति हेतु भेजा। 13 अगस्त 1947 को शहनवाज भूट्टों ने उतर दिया कि वह विचाराधीन है। परन्तु भारत को अन्धकार में रखते हुए 15 अगस्त 1947 को जूनागढ़ पाकिस्तान में शामिल हो गया। जूनागढ़ की भीतरी रियासतों ने नवाब के इस कार्य की कड़ी आलोचना की। नवानगर के जाम साहब दिल्ली आए और सरदार पटेल तथा राज्य विभाग से काठियावाड़ क्षेत्र में स्थाई शान्ति और व्यवस्था बनाये रखने के लिए शीघ्र कार्यवाही का अनुरोध किया।

17 सितम्बर 1947 ई० को केन्द्रिय मन्त्रिमण्डल में फैसला लिया गया कि जूनागढ़ के चारों तरफ घेरा डाला जाए। जूनागढ़ के नवाब ने बाबरियागढ़ में सैनिक हस्तक्षेप करके 51 ग्रामों के शेखों को पाकिस्तान में सम्मिलित होने के लिए बाध्य किया, जो पहले ही भारत में शामिल हो चुके थे। सरदार पटेल के निर्णयानुसार कमाण्डर गुरदयाल सिंह के नेतृत्व में सेनाएं जूनागढ़ भेजी गईं। भारतीय सेना ने जूनागढ़ की आर्थिक नाकेबन्दी कर दी। नवाब सैनिक कार्यवाही के भय से कराची भाग गया। सरदार पटेल ने जूनागढ़ जाकर वहाँ के लोगों की भावनाओं का आदर करते हुए उसे भारत में सम्मिलित कर लिया और पाकिस्तान को चेतावनी दी कि वो भारत के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न करें। 20 फरवरी 1948 को जूनागढ़ में जनमत संग्रह हुआ। 20 फरवरी 1949 में ये रियासतें सौराष्ट्र संघ में मिला ली गईं।

भारतीय देशी रियासतों के शासकों में से हैदराबाद का निजाम मीर उस्मानअली खान बहादुर सबसे अधिक महत्वाकांक्षी थे। उन्होंने 12 जून 1947 को घोषित किया कि अंग्रेजों के चले जाने के बाद हैदराबाद एक स्वतन्त्र राज्य की स्थिति प्राप्त कर लेगा। 29 नवम्बर 1947 को भारत सरकार एवं हैदराबाद के निजाम के मध्य एक 'यथास्थिति समझौता' हुआ, जिसके अर्न्तगत तय हुआ कि "15 अगस्त 1947 के पूर्व तक हैदराबाद से पारस्परिक सम्बन्ध की जो व्यवस्था थी, वह बनी रहेगी। सुरक्षा, वैदेशिक सम्बन्ध और परिवहन की कोई नई व्यवस्था नहीं की जायेगी।" समझौते की शर्तों के पालन के लिए दोनों ही एक दूसरे के पास एक-एक प्रतिनिधि रखेगी। सरदार पटेल ने के.एम. मुंषी को भारत सरकार का प्रतिनिधि बनाकर हैदराबाद भेजा। परन्तु शीघ्र ही निजाम ने "यथास्थिति समझौते" का उल्लंघन करते हुए पाकिस्तान को 20 करोड़ रुपये का ऋण दिया और बगैर भारत को सूचित किये पाकिस्तान में एक जन-सम्पर्क अधिकारी भी नियुक्त कर दिया। इतना ही नहीं निजाम के निर्देशों से ही 'इतिहादुल मुसलनीन' नामक फासिस्ट संगठन, जिसका मुखिया कासिम रिजवी था, वहां पर हिन्दुओं पर अत्याचार कर रहा था। यह संगठन खुलेआम हिन्दुओं एवं भारत सरकार के विरुद्ध घृणा का भी प्रचार कर रहा था। के.एम.मुंषी ने निजाम के प्रधानमंत्री लायक अली के पास इस विषय पर पत्र भी भेजा।

16 अप्रैल 1948 को लायकअली ने पटेल से मुलाकात की तो पटेल उसे चेतावनी देते हुए कहा कि, "मैं आपको असमजस की स्थिति में नहीं रखना चाहता। हैदराबाद की समस्या उसी प्रकार हल होगी जैसी कि अन्य रियासतों की, कोई दूसरा विकल्प नहीं है। हम कभी भारत के अन्दर एक अलग स्वतन्त्र स्थान के लिए सहमत नहीं हो सकते, जिससे भारतीय संघ की एकता भंग हो, जिसे हमने खुन तथा पसीने से बनाया है। हम मैत्रीपूर्ण ढंग से रहना तथा समस्याओं को सुलझाना चाहते हैं, पर इसका अभिप्राय: यह नहीं है कि हम कभी हैदराबाद की स्वतन्त्रता पर सहमत हो जायेंगे। हैदराबाद को स्वतन्त्र अस्तित्व प्राप्त करने का प्रत्येक प्रयास असफल होगा।"

हैदराबाद की समस्या दिन-प्रतिदिन विषम होती चली गई। 28 अगस्त 1948 को दिल्ली में हैदराबाद सरकार के प्रतिनिधि ने हैदराबाद समस्या को संयुक्त राष्ट्र संघ में ले जाने की सूचना दी। सरदार पटेल ने हैदराबाद में सैनिक कार्यवाही के लिए "मेजर जनरल जे.एम.चौधरी के नेतृत्व में भारतीय सेनाएं भेजी गई। 17 सितम्बर 1948 को हैदराबाद की सेनाओं ने आत्मसमर्पण कर दिया।

कश्मीर-भारत की उत्तर-पश्चिम सीमा पर स्थित वह राज्य है जो भारत एवं पाकिस्तान को जोड़ता है। आजादी के समय कश्मीर के शासक हरिसिंह ने स्वतन्त्र राज्य की कल्पना करते हुए भारत एवं पाकिस्तान दोनों में यथास्थिति समझौता कर लिया। कश्मीर में यातायात, डाक एवं संचार के साधन पाकिस्तान से होकर जाते थे। पाकिस्तान ने कश्मीर पर पाकिस्तान में विलय का दबाव बनाने के लिए कश्मीर के अन्न, पेट्रोल व अन्य आवश्यक वस्तुएँ भेजना बन्द कर दिया। सितम्बर एवं अक्टूबर 1947 को पाकिस्तान ने कबायलियों के रूप में सषस्त्र 5000 सैनिकों को कश्मीर पर आक्रमण करने के लिए भेजा। कश्मीर के राजा हरिसिंह ने 24 अक्टूबर को भारत से सैनिक सहायता माँगी और 26 अक्टूबर को कश्मीर के भारत में शामिल होने की लिखित घोषणा कर दी।

27 नवम्बर 1947 को भारतीय सेनाएं हवाई जहाजों के द्वारा कश्मीर भेजी गई। भारतीय सेना ने श्रीनगर से पाकिस्तानी सेना को वापस खदेड़ दिया। 1 जनवरी 1948 को सरदार पटेल की असहमती के बावजूद कश्मीर का प्रश्न संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद् के समक्ष प्रस्तुत कर दिया गया। पटेल ने बड़े दुःख से कहा कि "यदि जवाहर लाल नेहरू और गोपाल स्वामी आयरग ने कश्मीर को अपना व्यक्तिगत विषय बनाकर रियासत विभाग से अलग न किया होता तो कश्मीर समस्या उसी प्रकार हल होती जैसे कि हैदराबाद की।"

सरदार पटेल ने स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् रियासतों का विलय किया और एक अखण्ड भारत का स्वरूप प्रदान किया। पटेल ने उड़ीसा एवं छत्तीसगढ़ की छोटी-छोटी रियासतों को उड़ीसा एवं मध्य प्रान्त में मिलाई गई। काठियावाड़ में 14 सलामी, 17 गैर सलामी एवं 119 छोटी रियासतें थी। पटेल ने इनका विलय करके सौराष्ट्र संघ का निर्माण किया। सौराष्ट्र संघ का विधान बनाने के लिए एवं विधान परिषद् की स्थापना की। राजस्थान में भी 18 मार्च 1848 ई0 को अलवर,

भरतपुर, धौलपुर तथा करौली की रियासतों को सम्मिलित करके 'संयुक्त मत्स्य' की स्थापना की गई। दूसरे चरण में 25 मार्च 1948 को संयुक्त राजस्थान संघ में कोटा, बासबाड़ा, बूँदी, डूंगरपुर, भीलवाड़ा, किशनगढ़, प्रतापगढ़, शाहपुरा तथा टोंक की रियासते शामिल की गई। तीसरे चरण में 1 अप्रैल 1948 को उदयपुर को और चौथे चरण में 18 अप्रैल 1948 को जयपुर, जोधपुर, बीकानेर तथा जैसलमेर को राजस्थान संघ में मिला लिया गया।

पटेल ने 2 अप्रैल 1948 को 38 रियासतों को एक जूट करके संयुक्त विन्ध्य प्रदेश की स्थापना की। 1 जनवरी 1950 को विन्ध्य प्रदेश का शासन केन्द्र सरकार ने अपने हाथों में ले लिया। मध्य भारत को दो संघों—ग्वालियर एवं इन्दौर में विभक्त करने का प्रस्ताव रखा। परन्तु पटेल ने इनमें संघर्ष की आषंका को लेकर एक संघ का निर्माण पर बल दिया, जो स्वीकार कर ली गई। पंजाब में पटियाला, जीन्द, नाभा, फरीदकोट, मलेर कोटला और कपूरथला का मिलाकर एक संघ 'पेप्सू' का निर्माण किया गया। वी.पी. मेनन ने द्रावणकोर एवं कोचीन को मिलाकर एक संघ का निर्माण किया।

पटेल द्वारा नव-भारत निर्माण में देशी रियासतों का विलय अपनी अहिंसात्मक एवं शान्तिपूर्ण पद्धतियों के लिए विष्व के इतिहास में एक अभूतपूर्व क्रान्ति रहा है। प्रसिद्ध राजनेता एन.वी. गाडगिल का कहना था कि, "यदि महात्मा गाँधी हमारी स्वतन्त्रता के निर्माता है, तो सरदार पटेल भारतीय संघ के विष्वकर्मा है।" मोरारजी देसाई ने पटेल की बिस्मार्क से तुलना करते हुए लिखा कि "उन्होंने अधिक समय लिया और वह भी एक छोटे देश में जहाँ कुछ ही राज्य थे तथा एक ही धर्म के लोग थे। परन्तु पटेल ने यह कार्य एक विषाल देश में जहाँ विभिन्न धर्म तथा भाषा के लोग थे और जहाँ देश के प्रति अधिक देश भक्ति भी न थी।"

इस समस्या का समाधान पटेल ने अत्यधिक साहस एवं धैर्य से किया। इसी कारण भारतीय इतिहास में उन्हें लौहपुरुष एवं आधुनिक भारत के निर्माता के रूप में सदैव स्मरण किया जाएगा।

सन्दर्भित ग्रन्थ-सूची

पुस्तकें हिन्दी एवं गुजराती

1. दुर्गादास (सम्पादित) सरदार पटेल का पत्र व्यवहार, 1945-1950 (सम्बन्धित खण्ड)
2. परीख, नरहरि द्वा : सरदार पटेल के भाषण (1918 से 1947 तक अहमदाबाद, 1950)
3. परीख, नरहरि द्वा : सरदार वल्लभ भाई पटेल, खण्ड 1 व 2 (अहमदाबाद, 1950 व 1956)
4. राष्ट्रीय एकता का निर्माण-सरदार वल्लभ भाई पटेल के भाषण (पब्लिकेशन डिविजन, 1954)

B) Books in English.

1. Ahluwalia, B.K.: Sardar Patel (Delhi, 1974).
2. Bahadur, K.P: History of Freedom movment in India Vol. 4 (new Delhi, 1948).
3. Das, Durga (Ed.): Sardar Patel's correspondence 1945-50 (relvant volumes).
4. Larry Collins and Dominique Lapierre; Freedom at Midnight (new Delhi, 1976).
5. Menon, V.P.: The Transfer of Power-India (Calcutta, 1957).
6. Menon, V.P.: the story of Integration of the Indian States (Bombay, 1961).
7. Munshi K.M.: Indian constitutional documents, Vol. 2, Munshi Papers (Bombay 1967).
8. Nandurkar, G.M. (Ed.): this was Sardar-The commemoreative volume (Ahmedabad, 1974).
9. Parikh, narhari: Sardar Vallabhai Patel Vol. – 1 & 2 (Ahmedabad, 1953).
10. Ziegler, Phillip, Mountbatten: The official Biography (London, 1985).

लार्ड कार्नवालिस का स्थायी बन्दोबस्त : एक विवेचना

Surender Kumar
Assistant Professor,
Vaish College, Bhiwani

16 वीं सदी के उत्तरार्ध से लेकर 17वीं सदी तक अनेक यूरोपियन जातियाँ व्यापार करने के उद्देश्य से भारत आईं। 1600 ई० में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना हुई। 1600 ई० से 1757 ई० तक ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने एक व्यापारिक कम्पनी के रूप में कार्य किया। अंग्रेजों ने 23 जून, 1757 ई० को प्लासी की लड़ाई में बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला को हराकर व्यापारिक कम्पनी को राजनैतिक शक्ति बना दिया। अक्टूबर 1764 ई० में अंग्रेजों ने अवध के नवाब शुजादौला, बंगाल के नवाब मीर कासिम और मुगल सम्राट शाह सम्राट शाह आलम द्वितीय की संयुक्त सेना को हराया। 12 अगस्त 1765 ई० को इलाहाबाद की सन्धि के तहत ईस्ट इण्डिया कम्पनी को बंगाल, बिहार, उड़ीसा की दीवानी प्राप्त हुई। 1772 ई० में वारेन हेस्टिंग्स ने भू-राजस्व एकत्रित करने के उद्देश्य से पाँच वर्षीय व्यवस्था स्थापित की थी। 1777 ई० में इसे एक वर्षीय व्यवस्था या इजारेदारी प्रथा में परिवर्तित कर दिया। इनके अनुसार जो जमींदार नीलामी में अधिक बोली लगाता था, उसे लगान एकत्रित करने का अधिकार दिया जाता था। लेकिन इन व्यवस्थाओं का यह दोष था कि न तो वह समय पर लगान जमा करवा पाता था अपितु किसानों से भी अधिक लगान वसूलने के लिए उन पर अत्यधिक अत्याचार करता था। भूमि की दशा को सुधारने की ओर न तो जमींदार और न ही किसान ध्यान देते थे। इस व्यवस्था में कृषि एवं व्यापार दोनों ही पतन की ओर अग्रसर हो गये। लार्ड कार्नवालिस ने 1793 ई० में इन दोषों को दूर करने के उद्देश्य से स्थायी बन्दोबस्त लागू किया।

डॉ० रणजीत गुहा ने अपनी पुस्तक “ A Rule of Property for Bangal” में स्थायी बन्दोबस्त की उत्पत्ति का आधार इंग्लैण्ड में प्रचलित वाणिज्यवादी आर्थिक विचारधारा तथा फ्राँस में फिजियोक्रैटिक विचारधारा बताया है, जो निजि सम्पत्ति के सिद्धान्तों पर अधिक जोर देते थे। फ्राँस में अच्छे एवं स्थिर समाज का आधार सम्पत्ति की

सुरक्षा में देखा गया। फिजियोक्रैटिक विचारधारा में आय का मुख्य साधन कृषि माना गया। अतः कृषि के क्षेत्र में अतिरिक्त उत्पादन बढ़ाने के लिए स्थायी बन्दोबस्त को अनिवार्य माना गया। 1784 ई० में पिट्स कानून में भी जमींदारों द्वारा लगान एकत्रित करने के अधिकारों को मान्यता दे दी गई। समकालीन विचारकों का यह मानना था कि इंग्लैण्ड के समान बंगाल में भी सम्पत्ति सम्बन्धी अधिकार ऐसे वर्ग को सौंप दिये जायें, जिसकी भूमि में गहरी दिलचस्पी हो। लार्ड कार्नवालिस का स्वयं मानना था कि बंगाल में कृषि ही धन का स्रोत है, वाणिज्य नहीं। वाणिज्य का विस्तार कृषि क्षेत्र की समृद्धि पर ही निर्भर करता है। इंग्लैण्ड के वाणिज्य के विकास में भी भारतीय कृषि महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है। नीलाद्वि भट्टाचार्य के अनुसार स्थायी बन्दोबस्त की विचारधारा न केवल यूरोप की बौद्धिक विचारधारा से उत्पन्न हुई, अपितु स्थानीय परिस्थितियाँ भी इसके अनुकूल थी। बंगाल में भी मध्यकाल से ही बड़े-बड़े जमींदारों का अस्तित्व था, जो राजनैतिक क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण स्थान रखते थे। **N.K. Sinha** के अनुसार स्थायी बन्दोबस्त का एकमात्र उद्देश्य अधिकतम भू राजस्व प्राप्त करना था।

आधुनिक इतिहासकारों में अभी तक इस बात पर विवाद है कि अंग्रेजों के आगमन से पूर्व जमींदारों का कृषि व्यवस्था में क्या स्थान था, तपनराय चौधरी के अनुसार भूमि नियंत्रण और भूमि स्वामिस्व का सही अनुमान लगाना बहुत कठिन है। एस० नुरुल, हसन के अनुसार वारेन होस्टिगजं स्वयं यह मानता था कि जमींदार शब्द अनेक प्रकार के अधिकारों का सूचक है, परन्तु उनकी वास्तविक स्थिति से वह अवगत न था। तपनराय चौधरी का मानना है कि अंग्रेजों के प्रभुता से पहले बंगाल के जमींदार स्वतन्त्र या अर्ध-स्वतन्त्र मुखिया थे, जो पेशकश देकर प्रशासनिक स्वायत्तता प्राप्त करने में सफल हो गये थे।

बंगाल के नवाब मुर्षिद, कुली खान के शासन काल में जमींदारों ने नवाब सरकार को निश्चित रकम देकर भू राजस्व एकत्रित करने एवं ग्रामीण प्रशासन के पैतृक अधिकार प्राप्त कर लिये थे। अतः हम यह देखते हैं कि अंग्रेज अधिकारियों में जमींदारों के अधिकार, कार्य-क्षेत्र एवं उनके अधिकारों को लेकर पर्याप्त मतभेद था। सर जॉनषोर के अनुसार जमींदार भूमि के स्वामी है और इन्हें भूमि कर एकत्रित करने का अधिकार है। सरकार को तो उसमें से एक निश्चित भाग रस्मी भूमि कर के रूप में लेने का अधिकार है। शोर ने जमींदारों के इस अधिकार को वंशानुभव माना है। परन्तु जेम्स ग्रांट का विचार था कि

सरकार समस्त भूमि की स्वामी है और उसे अधिकार है कि वह जमींदार या रैययत किसी से भी यह समझौता कर सकती है। उसका यह भी मानना था कि लम्बा या स्थायी समझौता करने से पूर्व समस्त रिवाजों एवं भूमि सम्बन्धी रिकार्ड की जानकारी प्राप्त कर ली जाये।

सर जॉन शोर के विचारों से सहमत होने के कारण और कम्पनी के अधिकारियों की अक्षमता एवं प्रशासनिक अनुभवहीनता का अहसास करते हुए जमींदार के साथ ही नई भूमिकर व्यवस्था स्थापित करने का निश्चय किया। राष्ट्रीय विचारधारा के इतिहासकारों का मानना है कि कार्नवालिस सम्पत्ति के अधिकार ऐसे वर्ग के पास सुरक्षित कर देना चाहता था, जिस पर राजनैतिक रूप से निर्भर किया जा सके और जनता के प्रतिरोध पर भी अंकुश लगाया जा सके। परन्तु **B.B. Chowdhuri** ने इसका खंडन करते हुए कहा है कि लार्ड कार्नवालिस बंगाल में कृषि के पतन से अवगत था और उसका मानना था कि भूमि लगान को स्थायी रूप से निर्धारित करने से न केवल लगान वसूली में स्थिरता व निरन्तरता आएगी अपितु इससे कम्पनी के व्यापार का भी अभूतपूर्व विकास होगा।

अतः लार्ड कार्नवालिस ने जमींदारों को एक वर्ष के लिए बंगाल में भू-राजस्व एकत्रित करने का अधिकार दे दिया गया। 1790 ई० में यह लगान व्यवस्था दस वर्षीय कर दी कि लार्ड कार्नवालिस ने कम्पनी के डायरेक्टरों से स्वीकृति मिलने पर 1793 ई० में जमींदारों से स्थायी बन्दोबस्त किया। इस व्यवस्था के अन्तर्गत सरकार ने जमींदारों एवं उनके उत्तराधिकारियों के लिए भूमि कर की दर निश्चित कर दी गई और यह दर भविष्य में नहीं बदली जाएगी। जब तक निश्चित समय पर जमींदार निर्धारित भू-राजस्व सरकार को देते रहेगें, तब तक उन्हें भूमि का स्थायी स्वामी माना जाएगा। 1793 ई० के विनियम **XIV** में लगान वसूल करने के लिए सरकार को जमींदारों की सम्पत्ति जब्त करने का अधिकार प्रदान किया गया। 1794 ई० में संशोधन के बाद जो नए कानून बनाये गये, वे सूर्यास्त कानून 'Sun Set Laws' के नाम से जाने गये। इनके अनुसार यदि पूर्व निश्चित तिथि के सूर्यास्त तक सरकार को निर्धारित लगान या उसका कुछ भाग नहीं दिया गया तो जमींदार के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही की जाएगी।

लार्ड कार्नविलास के स्थायी बन्दोबस्त में गुण एवं अवगुण दोनों ही विद्यमान थे। इस व्यवस्था के लागू होने पर वर्षा के कम या अधिक होने से राज्य की आय पर कोई फर्क

नहीं पड़ता था। सरकार को अब समय पर निश्चित आय प्राप्त होने से आर्थिक योजनाओं को बनाने में सुविधा हो गई। भू-राजस्व की स्थायी व्यवस्था हो जाने के फलस्वरूप इस कार्य में लगे हुए सरकारी कर्मचारियों की कुछ संख्या शासन सम्बन्धी अन्य कार्यों को करने के लिए मुक्त हो गई। तत्कालीन विद्वानों के अनुसार स्थायी बन्दोबस्त से कृषि को बढ़ावा मिलेगा। सर्वाधिक भूमि जोती जाएगी तथा जमींदारों को कृषि के क्षेत्र में नए प्रयोग जैसे :- उर्वरक का इस्तेमाल तथा फसल बदलने के तरीकों को अपनाने का अवसर मिलेगा। इस प्रकार स्थायी बन्दोबस्त के द्वारा भूमि का अधिकाधिक प्रयोग सम्भव होगा और किसान अधिक समृद्ध हो सकेंगे। राजनैतिक क्षेत्र में भी जमींदारों ने कम्पनी के हितों को सुरक्षित करने में भी उनकी भरपूर मदद की जो कि 1857 के अनुभव से साबित होता है। वास्तव में प्रत्यक्ष रूप से जमींदारों का इस व्यवस्था से अधिकतम लाभ हुआ क्योंकि उन्हें भूमि का वास्तविक स्वामी स्वीकार कर लिया था। इस व्यवस्था से जमींदारों के पास अधिक मात्रा में धन संचित होने लगा, जिसे कुछ जमींदारों ने व्यापार में लगाया। लार्ड विलियम बैटिक ने स्वयं इस तथ्य को स्वीकार किया कि यद्यपि स्थायी बन्दोबस्त कई महत्वपूर्ण उद्देश्यों में असफल रहा, परन्तु इसके फलस्वरूप भारत में धनी भूस्वामियों का एक ऐसा विषाल संगठन तैयार हो गया, जो तहेदिल से यह चाहता था कि भारत में अंग्रेजी राज बना रहे और जनता पर प्रभुत्व कायम रखें रहे।

स्थायी बन्दोबस्त में अनेक अवगुण भी थे। इस व्यवस्था के फलस्वरूप ऊपरी स्तर पर सामन्तवाद तथा निम्न स्तर पर दास प्रवृत्ति को बढ़ावा मिला। इस व्यवस्था के अन्तर्गत न तो भूमि की पैमाईश ठीक ढंग से हुई और लगान की दर भी जल्दबाजी में तय की गई थी। सरकार को दीर्घकालीन दृष्टि से अधिकाधिक वित्तिय घाटा उठाना पड़ा। नई लगान व्यवस्था के कृषि पर भी घातक परिणाम देखने को मिले। राष्ट्रीय विचारकों के अनुसार अधिक भूमिकर, भूमिकर की अदायगी नकद में दिये जाने पर जोर, लगान वसूली के ने केवल कठोर नियम बनाये जाना अपितु इन्हें और भी कठोरता से लागू किया जाना, किसानों के हितों को नज़र अन्दाज करना – ये सभी तथ्य ग्रामीण समाज को बदलने के लिए उत्तरदायी थे। लगान की दर अधिक होने से पुराने जमींदार समय पर लगान राशी जमा करवाने में असमर्थ रहे और वे भूमि से वंचित हो गये। किसानों पर दिन-प्रतिदिन कर्ज का दबाव बढ़ता गया और वे भूमिहीन होते गए। इस व्यवस्था से बिचौलियों का

भूमि-सम्बन्ध में प्रवेश हुआ। जिसके फलस्वरूप समाज में उपसामन्तीकरण बढ़ा। ये उपसामन्त अधिकांश व्यापारी या बनिया वर्ग से सम्बन्धित थे, जो शहरों में रहते थे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि किसानों और सरकार के बीच मध्यस्थ उत्पन्न हो गये, जो किसानों से अधिकाधिक मात्रा में लगान वसूल करते थे और उनके साथ दुर्व्यवहार भी करते थे। अशिक्षित होने के कारण किसानों को भू-राजस्व की दर का ज्ञान न था, जिसका लाभ मध्यस्थ एवं उनके कारिन्दे ही उठाते थे। अतः स्थायी बन्दोबस्त ने अनुपस्थित जमींदारी प्रथा स्वीकार कर कृषकों को पूर्णतया जमींदारों एवं उनके कारिन्दों पर आश्रित कर दिया, जो स्थायी बन्दोबस्त का वास्तविक उद्देश्य न था। अमित भादुरी ने अपने लेख 'The Evolution of Land Relations in Eastern India under British Rule' में वर्णन किया है कि उपसामन्तकीरण के फलस्वरूप भूमि किराये में अभिवृद्धि हुई और कृषि उत्पादन में अपेक्षाकृत कम वृद्धि हुई। अतः किसान कर्जखोरी से भूमि-हीन होते चले गए।

रजत एवं रत्नाराय एवं मफखरूल इस्लाम जैसे लेखकों का मानना है कि स्थायी बन्दोबस्त के बाद कोई मूल परिवर्तन नहीं आया और जो कुछ दिखाई देता है, वो पहले से ही प्रारम्भ हो चुका था। उनका मानना है कि जमीन प्राप्त करने वाले सभी व्यापारी या बनिया थे अपितु इनमें से कई तो जमींदारों के अमले, गुमास्ते, शपेषेवर दलाल इत्यादि थे जो सूर्यास्त कानून के षिकार जमींदारों की जमीन खदीद लेते थे। 19 वीं शताब्दी में जेम्स मिलने अपनी पुस्तक **History of India** में इन जमींदारों को शहरी तत्व माना यद्यपि इस विचार धारा का केवल तथ्यों के आधार पर पूरी तरह खण्डन तो नहीं किया जा सकता परन्तु इसे माना भी नहीं जा सकता। बर्द्धवान राज्य के जमींदार ने इस दौरान न केवल अपनी सम्पत्ति को बचाए रखा अपितु उसे बढ़ाया भी। जमींदार कभी-कभी स्वयं भी अधिक लगान वाले क्षेत्रों की नीलामी करवा देते थे, जिससे कि वे कम लगान वाली भूमि या वन क्षेत्र खरीद सकें। इस दौरान नये परिवार भी अपरिहार्य कारणों से भूमि खरीदने में शहरी दिलचस्पी लेते थे और शीघ्र ही बड़े जमींदारों की श्रेणी में शामिल हो जाते थे। रंगपूर परगना के कातुबाबु और भू कैलाष के गोकूल घोषाल इत्यादि प्रमुख थे, जो व्यापार में असफल हो जाने के कारण भूमि खरीदकर बड़े जमींदार बन गए थे।

रजत व रत्नाराय के अनुसार भारत में अपसामन्तीकरण स्थाई बन्दोबस्त से पूर्व भी था। बंगाल में मध्यकाल से ही बड़े-बड़े जमींदारों अस्तित्व था। उनके अर्न्तगत अनेक छोटी श्रेणी के जमींदार भी कृषि कार्यों को देखते थे, जो उपसामन्तीकरण का उदाहरण थे। मफखरूल इस्लाम के अनुसार बंगाल का गर्वनर वारेन होस्टिंग्ज भी बिचौलियों या मध्यस्थों की समस्या से परिचित था। अबू अब्दुल्लाह का मानना है कि उपसामन्तीकरण बहुत बड़ी जागीरों की प्रबन्धकीय समस्याओं की देन थी, न कि स्थाई बन्दोबस्त की।

समकालीन अर्थशास्त्रियों का मानना है कि कृषि क्षेत्र में स्थायी बन्दोबस्त के फलस्वरूप वाणिज्यीकरण आया, क्योंकि इस व्यवस्था में नकद लगान पर अत्यधिक जोर दिया गया था। अतः कृषि के क्षेत्र में उत्पादन बाजार प्रेरित व्यवस्था से प्रभावित होकर किया जाने लगा। परन्तु यह तथ्य पूर्णतः सत्य नहीं है, क्योंकि भारत में कई शताब्दियों से रेषम, कपास, तेल, सुपारी, तंबाकू, नील इत्यादि का उत्पादन व्यापार के लिए ही किया जाता था। अतः हम कह सकते हैं कि स्थायी बन्दोबस्त ऊपरी सतह पर कुछ परिवर्तन लाने में सफल रहा परन्तु कृषि क्षेत्र में निम्न सतह पर यह परिवर्तन लाने में असफल रहा। एच० बेव्रिज ने इसकी आलोचना करते हुए कहा है कि इस व्यवस्था में किसानों के हितों की उपेक्षा की गई। एस० एन० बैनर्जी के अनुसार हम स्थायी बन्दोबस्त के सिद्धान्तों से पूर्ण रूप से सहमत हैं, परन्तु हमारा मानना है कि यह देश के लिए महान बात होती यदि बन्दोबस्त रैय्यत के साथ किया गया होता। लार्ड कार्नवालिस ने जमींदारों के साथ बन्दोबस्त करके एक भयानक भूल की।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- . Ascoli, F.S. Early Revenue History of Bengal and the Fifth Report, (1917).
- . As Pinall, A., Cornwalls in Bengal, (Manchesler, 1931).
- .Chowdhuri, B.B. Coomercialisation of Agriculture in Bengal.
- .Chowdhuri, K.N. The Economic Development of India under the East India company 1814-58, (1971).
- .Dutt, R.P., India Today, (Bombay, 1947; revised edu. Calcutta, 1970)

.Sen., Sunil, Agrarian Struggle in Bengal, 1946-47, (New Delhi, 1972).

.Sinha, N.K Economic History of Bengal, 3 Vols. (Calcutta, 1959).

.Journal: The Economic History Review Economic and Political Weekly.

Mathematical Model on Reliability with Three Units

Dr. Shruti Rani

Assistant Professor of Mathematics, Vaish College, Bhiwani

E-mail id: [shruti28976\[at\]rediffmail.com](mailto:shruti28976@rediffmail.com)

Abstract: *The evolution of the new systems is directly or indirectly connected with betterment in the old systems and hence the efficiency. Thus assessment of reliability of equipment is of great importance in the context of rapidly growing technology and its further development. A large number of studies have been carried out to evaluate the reliability by taking two-unit set-up under different conditions. This paper presents the study of the execution of steam turbine running in electric power-station. Execution of any set-up can be computed with the help of its availability and reliability. In many combined cycle power plants, the turbine generator consists of steam turbines interconnected to each other. Here one steam turbine is considered as one unit. In this paper, a system is considered in which three indistinguishable units (steam turbine) are considered in which two units are functional and third is taken as an understudy. If two units do not perform, the working of third unit is discontinued till the availableness of the other functional unit. Here inspection before failure is conducted to check functional units in a regular and schedule time. Operating units are inspected before failure to analyse whether a functional units required normal maintenance or not, otherwise repair of the failed unit. Here a independent single server system is supposed which execute normal maintenance inspection and reparation. Inspection before failure and maintenance are taken in priority over repair of discontinued unit. Also supposed that unit is failed and under reparation, no pre-failure scheduled inspection is undertaken. In this paper, system will be analyzed to determine various reliability measures by using mathematical tools MTSE/MTBF, Markov chain, Markov process, renewal process etc.*

Keywords: maintenance, availability, busy period, Inspection, steam turbine

1. Introduction

A thermal power station is a power station in which heat energy is converted to electric power. In most of area in the world-wide, the steam turbines are steam driven. A steam turbine is a machine that extricate thermal energy from compressed steam and utilize it to do automated work therefore steam turbines are used to originate a collection of apparatus type pattern of various sizes and speeds such that all production section taken in power generation and gas industries. Although there are considerable dissimilarities in set-up or plan, complexness, steam working order, dimensions of steam turbines and undergo to the identical non-performance or discontinuance technique. To hold reliable turbine performance, there require being an effectual framework, inspecting the functional working order. Here one steam turbine is considered as one unit. In this paper, a system is considered in which three indistinguishable units (steam turbine) are considered in which two units are functional and third is taken as an understudy. If two units do not perform, the working of third unit is discontinued till the availableness of the other functional unit. Here inspection before failure is conducted to check functional units in a regular and schedule time. Operating units are inspected before failure to analyse whether a functional units required normal maintenance or not, otherwise repair of the failed unit. Here a independent single server system is supposed which execute normal maintenance inspection and reparation. Inspection before failure and maintenance are taken in priority over repair of discontinued unit. Also supposed that unit is failed and under reparation, no pre-failure scheduled inspection is undertaken.

1.1 Description of system and Assumption

A working unit analyzed after a bounded or definite time period of its functioning and it is decided whether unit can running further or demand certain maintenance.

- The system having three indistinguishable units - Initially two unit is functional and third unit is kept as an understudy.
- System is supposed to be in Up-state if two units are working and in down state if one or no unit is working.
- Each of the units of the system has two modes-normal operative and failed.
- A normal functional unit is inspected for preventive maintenance before failure.
- The unit which is in understudy cannot fail.
- If an functional unit fails it is reparation by mender and no preventive maintenance inspection is carried out during the repair.
- Maintenance will be preferred over repair.
- Inspection time is too small to go for maintenance of second unit.
- A unit under maintenance would not fail.
- All the random variables are autonomous or freelance.

1.2 Notations

\odot : Compose of renewed or regenerative states

\odot : Compose of non-renewed or non-regenerative states

O: Unit is in working state.

S: Unit is in understudy

O_i : Unit is under inspection

O_1 : Continue under inspection from previous state.

$m(t)$: pdf of maintenance time of an unit under inspection

$M(t)$: cdf of maintenance time of an unit under inspection

π : Invariant failure rate of a unit

Volume 10 Issue 9, September 2021

www.ijsr.net

Licensed Under Creative Commons Attribution CC BY

a: Chance of unit(steam turbine) required no maintenance
 b: Chance of unit(steam turbine) required maintenance
 d (t): pdf of observed period of a unit
 D (t): cdf of observed period of a unit
 α : Rate of inspection before failure
 g (t), G (t): pdf and cdf of repair time period of a unsuccessful unit
 O_{um} : Inspected unit under maintenance
 O_{UM} : Maintenance of inspected unit continuous from previous state
 F_r : unsuccessful unit under repair
 F_R : Repair of unsuccessful unit continuous from previous state
 F_{wr}, F_{WR} : A unsuccessful unit waiting for repair
 \odot : Symbol for Convolution
 Δ : Symbol for Laplace convolution

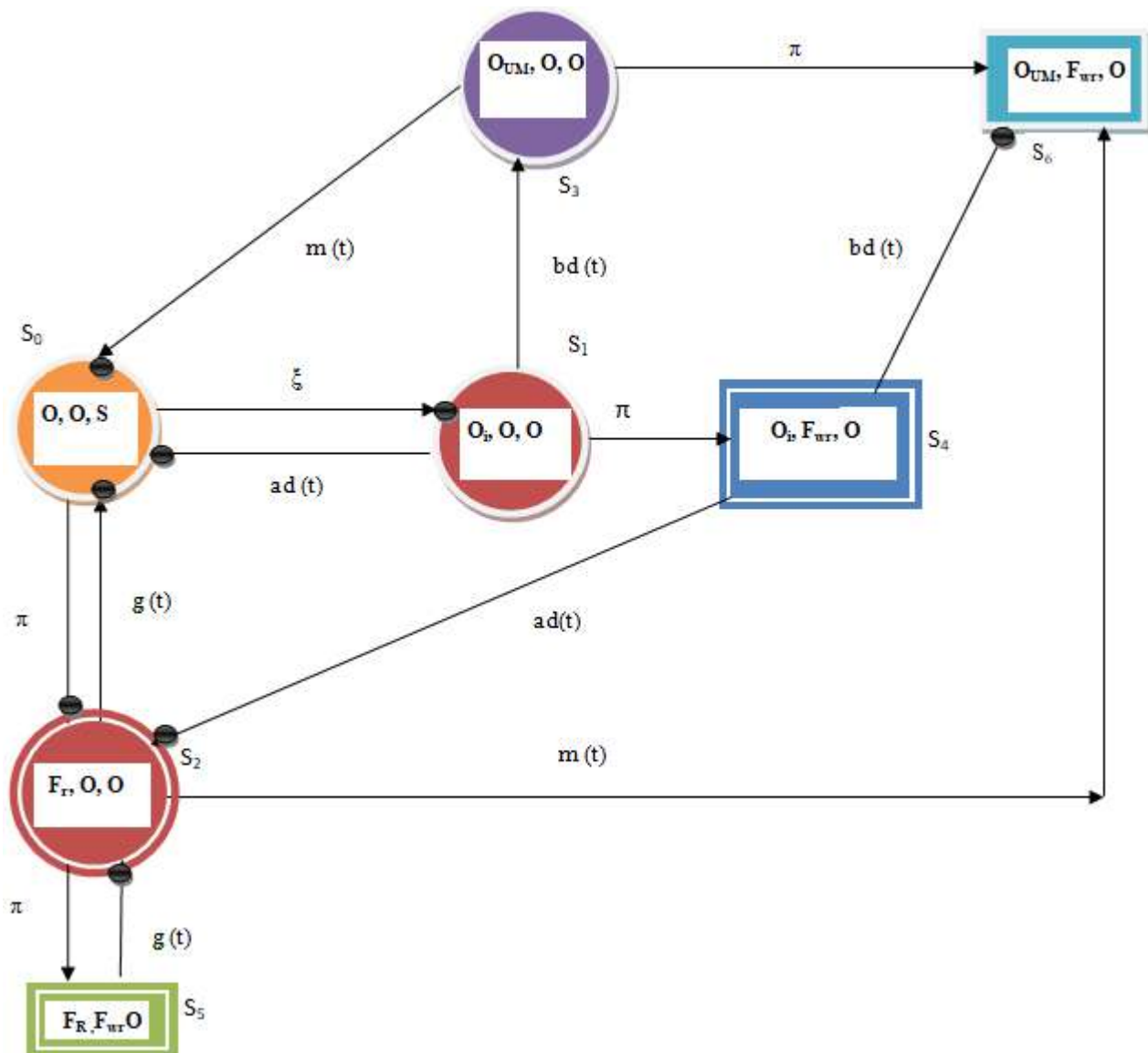
\odot Symbol for Laplace Stieltjes Convolution
 Down-state

Regenerative Point

The system can be in any of the following states with respect of the above symbols:

- $RS_0 = (O, O, S)$
- $RS_1 = (O_i, O, O)$
- $RS_2 = (F_r, O, O)$
- $RS_3 = (O_{um}, O, O)$
- $RS_4 = (O_i, F_{wr}, O)$
- $RS_5 = (F_R, F_{wr}, O)$
- $RS_6 = (F_{wr}, O, O_{UM})$

State Transition Diagram



2. Transition Probabilities

The era of entering into states $\{RS_0, RS_1, RS_2, RS_3\}$ are regenerative states. The transition probabilities from the states RS_i to RS_j are given by Q_{ij} and in the steady states Tp_{ij} denotes the transition probability from states RS_i to RS_j are given under

- $Tp_{01} = \xi / (\xi + \pi)$
- $Tp_{02} = \pi / (\xi + \pi)$
- $Tp_{10} = \alpha d^*(\pi)$
- $Tp_{13} = b d^*(\pi)$
- $Tp_{14} = \{1 - d^*(\pi)\}$
- $Tp_{20} = g^*(\pi)$
- $Tp_{30} = m^*(\pi)$

$$\begin{aligned} T_{p_{25}} &= \{1 - g^*(\pi)\} \\ T_{p_{36}} &= \{1 - m^*(\pi)\} \\ T_{p_{42}} &= a \\ T_{p_{46}} &= b \\ T_{p_{52}} &= 1 \\ T_{p_{62}} &= 1 \\ T_{p_{12}}^{(4)} &= a \{1 - d^*(\pi)\} \\ T_{p_{16}}^{(4)} &= b \{1 - d^*(\pi)\} \\ T_{p_{22}}^{(5)} &= \{1 - g^*(\pi)\} \end{aligned}$$

It can be easily verified that

$$\begin{aligned} T_{p_{01}} + T_{p_{02}} &= 1 \\ T_{p_{10}} + T_{p_{13}} + T_{p_{14}} &= 1 \\ T_{p_{20}} + T_{p_{25}} &= 1 \\ T_{p_{30}} + T_{p_{36}} &= 1 \\ T_{p_{42}} + T_{p_{46}} &= 1 \\ T_{p_{12}}^{(4)} + T_{p_{16}}^{(4)} &= T_{p_{14}} \\ T_{p_{22}}^{(5)} &= T_{p_{25}} \end{aligned}$$

Mean Sojourn Times

To compute the mean sojourn time $\mu_i(t)$ for state RS_i , let T_i be sojourn time for state RS_i . Then

$$\mu_i(t) = \lim_{t \rightarrow \infty} \int_0^t P\{t : 0 < t < T\} dt$$

So that in steady state we have following relations

$$\begin{aligned} \mu_0(t) &= 1/(\xi + \pi) \\ \mu_1(t) &= \{1 - d^*(\pi)\} / \pi \\ \mu_2(t) &= \{1 - g^*(\pi)\} / \pi \\ \mu_3(t) &= \{1 - m^*(\pi)\} / \pi \end{aligned}$$

The unconditional mean time taken by the system to transit from any states RS_i to RS_j is mathematically given by

$$m_{ij} = \int_0^\infty t dQ_{ij}(t) = -q_{ij}^*(s)' /_{at s=0}$$

So that

$$m_{01} = \xi / (\xi + \pi)^2$$

$$m_{02} = \pi / (\xi + \pi)^2$$

$$m_{10} = a d^*(\pi)$$

$$m_{13} = b d^*(\pi)$$

$$m_{14} = [\{1 - d^*(\pi)\} / \pi] + d^*(\lambda)$$

$$m_{20} = -g^*(\pi)$$

$$m_{25} = [\{1 - g^*(\pi)\} / \pi] + g^*(\pi)$$

$$m_{30} = -m^*(\pi)$$

$$m_{36} = [\{1 - m^*(\pi)\} / \pi] + m^*(\pi)$$

It can be easily verified that

$$m_{01} + m_{02} = \mu_0(t)$$

$$m_{10} + m_{13} + m_{14} = \mu_1(t)$$

$$m_{20} + m_{25} = \mu_2(t)$$

$$m_{30} + m_{36} = \mu_3(t)$$

Mean Time to System Failure

Let $\Omega_i(t)$ be the cdf of the first and foremost transition time from regenerative state i to a failed state, respecting the failed state as absorbing state. So the recursive relations for the Mean Time to System Failure (MTSF) are given by the following equations

$$\begin{aligned} \Omega_0(t) &= Q_{01}(t) \oplus \Omega_1(t) + Q_{02}(t) \oplus \Omega_2(t) \\ \Omega_1(t) &= Q_{10}(t) \oplus \Omega_0(t) + Q_{13}(t) \oplus \Omega_3(t) + Q_{14} \\ \Omega_2(t) &= Q_{20}(t) \oplus \Omega_0(t) + Q_{25}(t) \\ \Omega_3(t) &= Q_{30}(t) \oplus \Omega_0(t) + Q_{36}(t) \end{aligned}$$

Above these equation can be Solving by taking Laplace Stieltjes transformations and solving for $\Omega_0^{**}(s)$, we get

$$\Omega_0^{**}(s) = U(s) / V(s)$$

Where

$$U(s) = q_{14} q_{01} + q_{02} q_{25} + q_{01} q_{36} q_{13}$$

$$V(s) = -q_{01} q_{13} q_{30} + 1 - q_{01} q_{10} - q_{02} q_{20}$$

$$\begin{aligned} \text{MTSF} &= \Omega_0 = \lim_{s \rightarrow 0} \{ [1 - \Omega_0^{**}(s)] / s \} \\ &= \{ V'(0) - U'(0) \} / V(0) \\ &= \frac{U}{V} \end{aligned}$$

Where

$$U = m_{01} + m_{02} + (m_{13} + m_{14}) p_{01} + m_{10} p_{13} p_{30} + p_{02} (m_{20} + m_{25}) + p_{01} p_{13} (m_{30} + m_{36})$$

$$V = p_{01} p_{13} p_{36} + p_{02} p_{25} + p_{01} p_{14}$$

Availability of the system - (Av)

Let $Av_i(t)$ be the chance or probability that the system which is in upstate at instant of time 't' given that the system entering in the regenerative state i at $t=0$. Then the recursive relations for the point wise availability $Av_i(t)$ of the system is given by

$$Av_0(t) = M_0(t) + q_{01}(t) \Delta Av_1(t) + q_{02}(t) \Delta Av_2(t)$$

$$Av_1(t) = M_1(t) + q_{10}(t) \Delta Av_0(t) + q_{13}^{(4)}(t) \Delta Av_2(t) + q_{14}(t) \Delta Av_3(t) + q_{16}^{(4)}(t) \Delta Av_6(t)$$

$$Av_2(t) = M_2(t) + q_{20}(t) \Delta Av_0(t) + q_{25}^{(5)}(t) \Delta Av_2(t)$$

$$Av_3(t) = M_3(t) + q_{30}(t) \Delta Av_0(t) + q_{36}(t) \Delta Av_6(t)$$

$$Av_6(t) = q_{62}(t) \Delta Av_2(t)$$

Where

$$M_0(t) = \int_0^t e^{-(\xi + \pi)x} dx$$

$$M_1(t) = \int_0^t e^{-\pi x} D(x) dx$$

$$M_2(t) = \int_0^t e^{-\pi x} G(x) dx$$

$$M_3(t) = \int_0^t e^{-\pi x} M(x) dx$$

Now solving these equations by taking Laplace transform and solving for $Av_0^*(s)$, we get

$$Av_0^*(t) = U_1(s) / V_1(s)$$

The steady states availability is given by

$$Av_0^{**} = (\lim_{s \rightarrow 0} Av_0^*(s)) = U_1(0) / V_1(0)$$

here

$$U_1(0) = -\mu_2 [p_{01} p_{13} p_{36} + p_{01} p_{14} + p_{02}] + \mu_1 p_{01} p_{20} - \mu_3 p_{01} p_{13} p_{20} - p_{20} \mu_0$$

And

$$D_1(0) = 0$$

$$D_1(0) = -m_{20} (p_{01} p_{14} + p_{01} p_{13} p_{36} - p_{02}) - [p_{10} p_{25} + p_{20} (1 - p_{10})]$$

$$m_{01} - m_{02} p_{20} - (m_{10} + m_{13} +$$

$$m_{12}^{(4)} + m_{16}^{(4)}) p_{01} p_{20}$$

$$+ m_{22}^{(5)} (p_{01} p_{10} + p_{01} p_{13} p_{30} - 1)$$

$$- m_{62} (p_{01} p_{20} p_{16}^{(4)} + p_{01} p_{20} p_{13} p_{36})$$

$$- p_{01} p_{13} p_{20} (m_{30} + m_{36})$$

Busy Period Analysis

The recursive relations for the busy period $BP_i(t)$ of the system is given by

$$\begin{aligned} BP_0(t) &= q_{01}(t) \Delta BP_1(t) + q_{02}(t) \Delta BP_2(t) \\ BP_1(t) &= q_{10}(t) \Delta BP_0(t) + q_{12}^{(4)}(t) \Delta BP_2(t) + q_{13}(t) \Delta \\ &BP_3(t) + q_{16}^{(4)}(t) \Delta BP_6(t) \\ BP_2(t) &= S_2(t) + q_{20}(t) \Delta BP_0(t) + q_{22}^{(5)}(t) \Delta BP_2(t) \\ BP_3(t) &= q_{30}(t) \Delta BP_0(t) + q_{36}(t) \Delta BP_6(t) \\ BP_6(t) &= q_{62}(t) \Delta BP_2(t) \end{aligned}$$

Where

$$U_2(t) = \int_0^t e^{-\pi t} G(t) dt + \int_0^t (\pi e^{-\pi t} \odot 1)G(t) dt$$

Now solving these equations by taking Laplace transform and find $BP_0^*(s)$, we get

$$BP_0^*(s) = U_2(s) / V_1(s)$$

Then for steady states

$$BP_0^{**} = \lim_{s \rightarrow 0} (s BP_0^*(s)) = U_2(0) / V_1'(0)$$

Where $U_2(0) = -(p_{01}p_{14} + p_{02} + p_{01}p_{13}p_{36}) \mu_2$
 $D_1'(0)$ is already defined

Maintenance Time

Let K_i is the Maintenance time starting from a regenerative states S_i at $t=0$ is given by

$$\begin{aligned} K_0(t) &= q_{01}(t) \Delta K_1(t) + q_{02}(t) \Delta K_2(t) \\ K_1(t) &= q_{10}(t) \Delta K_0(t) + q_{12}^{(4)}(t) \Delta K_2(t) + q_{13}(t) \Delta K_3(t) + \\ &q_{16}^{(4)}(t) \Delta K_6(t) \\ K_2(t) &= q_{20}(t) \Delta K_0(t) + q_{22}^{(5)}(t) \Delta K_2(t) \\ K_3(t) &= X_3(t) + q_{30}(t) \Delta K_0(t) + q_{36}(t) \Delta K_6(t) \\ K_6(t) &= X_6(t) + q_{62}(t) \Delta K_2(t) \end{aligned}$$

Where

$$\begin{aligned} X_3(t) &= \mu_3 \\ X_6(t) &= \mu_6 \end{aligned}$$

Now solving these equations by taking Laplace transform and solving for $K_0^*(s)$, we get

$$K_0^*(s) = U_3(s) / V_3(s)$$

$$K_0^{**} = \lim_{s \rightarrow 0} (s K_0^*(s)) = U_3(0) / V_3'(0)$$

Where

$$U_3(0) = (p_{13}p_{36} \mu_6 + p_{13}\mu_3 + p_{16}^{(4)} \mu_6) (p_{01}p_{25} - p_{01})$$

$V_3(0)$ is already defined

Inspection Time before Failure

Let Γ_i is the inspection time starting from a regenerative states S_i at $t=0$ is given by

$$\begin{aligned} \Gamma_0(t) &= q_{01}(t) \Delta \Gamma_1(t) + q_{02}(t) \Delta \Gamma_2(t) \\ \Gamma_1(t) &= N_1(t) + q_{10}(t) \Delta \Gamma_0(t) + q_{12}^{(4)}(t) \Delta \Gamma_2(t) + q_{13}(t) \Delta \Gamma_3(t) + \\ &q_{16}^{(4)}(t) \Delta \Gamma_6(t) \\ \Gamma_2(t) &= q_{20}(t) \Delta \Gamma_0(t) + q_{22}^{(5)}(t) \Delta \Gamma_2(t) \\ \Gamma_3(t) &= q_{30}(t) \Delta \Gamma_0(t) + q_{36}(t) \Delta \Gamma_6(t) \\ \Gamma_6(t) &= q_{62}(t) \Delta \Gamma_2(t) \end{aligned}$$

Where $N_1(t) = \mu_1$

Now solving these equations by taking Laplace transform and solving for $\Gamma_0^*(s)$, we get

$$\Gamma_0^*(s) = U_4(s) / V_4(s)$$

In the steady states

$$\Gamma_0^{**} = \lim_{s \rightarrow 0} (s \Gamma_0^*(s)) = U_4(0) / V_4'(0)$$

Where

$$U_4(0) = -p_{01}p_{20} \mu_1$$

$D_1(0)$ is already defined

Particular cases:

If we take repair rate and inspection time as negative binomial distributions as

$$g(t) = \gamma e^{-(\gamma)t} \quad i(t) = \delta e^{-(\delta)t}$$

Then we get,

$$\begin{aligned} p_{01} &= \xi / \xi + \pi \\ p_{02} &= \pi / \xi + \pi \\ p_{10} &= a\delta / \delta + \pi \\ p_{13} &= b\delta / \delta + \lambda \\ p_{14} &= \pi / \pi + \delta \\ p_{20} &= \sigma / \pi + \sigma \\ p_{25} &= \pi / \pi + \sigma \\ p_{30} &= m / m + \pi \\ p_{36} &= \pi / m + \pi \\ p_{42} &= a \\ p_{46} &= b \\ p_{62} &= 1 \\ p_{52} &= 1 \\ p_{12}^{(4)} &= a\pi / \delta + \pi \\ p_{16}^{(4)} &= b\pi / \pi + \delta \\ p_{22}^{(5)} &= \pi / (\pi + \delta) \end{aligned}$$

Mean Sojourn Time:

$$\begin{aligned} \mu_0 &= 1 / \xi + \pi \\ \mu_1 &= 1 / \delta + \pi \\ \mu_2 &= 1 / \pi + \sigma \\ \mu_3 &= 1 / m + \pi \\ \mu_4 &= 1 / \delta \\ \mu_4 &= 1 / \sigma \\ \mu_4 &= 1 / m \end{aligned}$$

Unconditional Mean Time:

$$\begin{aligned} m_{01} &= \xi / (\xi + \pi)^2 \\ m_{02} &= \pi / (\xi + \pi)^2 \\ m_{10} &= a\delta / (\delta + \pi)^2 \\ m_{13} &= b\delta / (\delta + \pi)^2 \\ m_{14} &= \pi / (\delta + \pi)^2 \\ m_{20} &= \sigma / (\pi + \sigma)^2 \\ m_{25} &= \pi / (\pi + \sigma)^2 \\ m_{30} &= m / (\pi + m)^2 \\ m_{36} &= \pi / (\pi + m)^2 \\ m_{42} &= a/\delta \\ m_{46} &= b/\delta \\ m_{52} &= 1/\sigma \\ m_{62} &= 1/m \end{aligned}$$

The expectable outcomes based on above particular cases can be explained with the graphs as following:

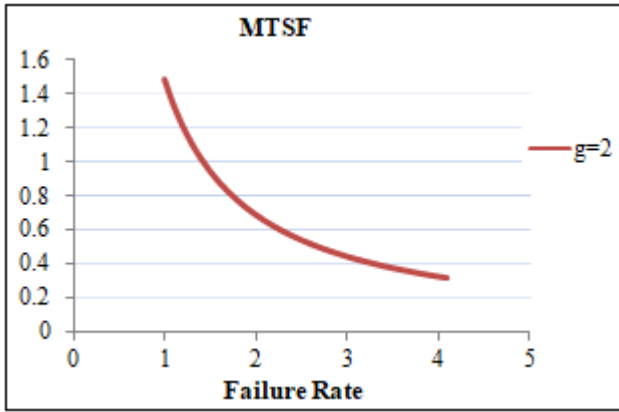


Figure 4.12: MTSF vs Failure rate

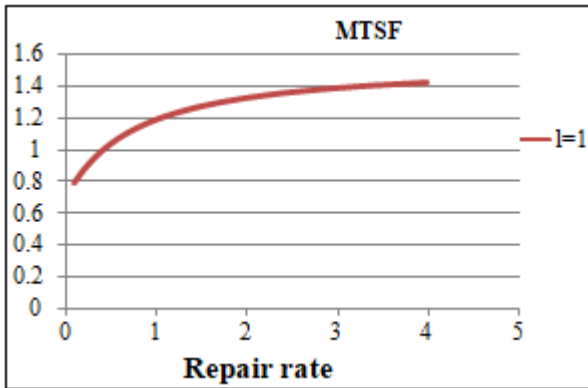


Figure 4.13: MTSF vs Repair rate

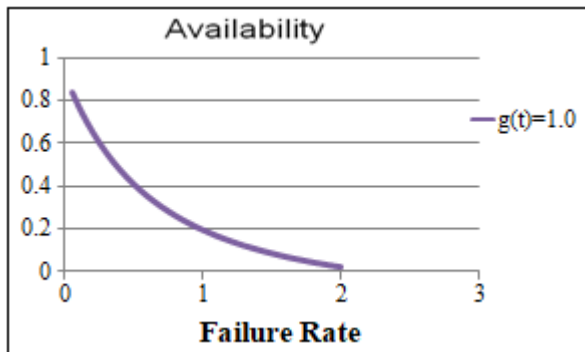


Figure 4.14: Availability vs Failure rate

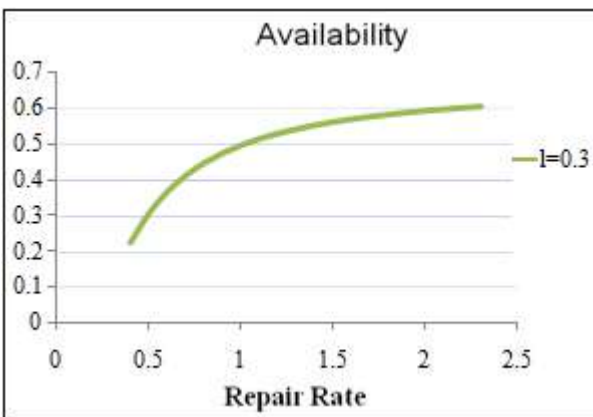


Figure 4.15: Availability vs Repair rate

References

- [1] Jui-Hsiang Chian and John Yuan, (2001) , optimal maintenance policy for a deteriorating production system under inspection,,
- [2] Tuteja, R.K., and Gulshan, T. "cost – benefit analysis of a two- server-two unit warm standby system with different type of failure", Microelectron. Reliab., 1992, VOL.32,p1353-1359.
- [3] Brown, M., Proschan, F. (1983) “Imperfect repair”, Journal of Applied Probability, 20: 851–859.
- [4] Jiang, R. and Jardine, A.K.S. (2005) “Two Optimization Models of the Optimum Inspection Problem”,Journal of the Operational Research Society,56: 1176–1183.
- [5] H. Wang. A survey of maintenance policies of deteriorating systems. European Journal of Operational Research, 139(3):469–489, 2002

Vol. 14 No. 2, July 2020

ISSN : 0975-1386

Wesleyan Journal of Research

An International Research Journal

HINDI & SOCIAL LITERATURE

Multidisciplinary | Peer Reviewed | Refereed

UGC Care Listed



Bankura Christian College

Bankura-722101

WEST BENGAL, INDIA

Author(s) By :- पूनम

10. भारतीय समकालीन चित्रकला साहित्यक लक्षण 54-60

Author(s) By :- डॉ० भूपसिंह गुलिया, कुसुम गोयत

11. बलम्मा गाँव (रोहतक) के चौपाल-चित्रों का कलात्मक व सांस्कृतिक विश्लेषण 61-68

Author(s) By :- डॉ० भूपसिंह गुलिया, कविता

✓12. सुशीला टाकमौरे के कहानी संग्रह 'संघर्ष' में दलित चेतना 69-74

Author(s) By :- डॉ० आशा रानी, शशि बाला

13. भारत-रूस संबंधों का नया दौर 75-78

Author(s) By :- नवीन कुमार

दलितों को सदियों से शिक्षा से दूर रखकर कमजोर बनाया गया है। लेकिन अब दलित अपने अधिकारों के प्रति सचेत होने लगे हैं। देश में, मध्यप्रदेश में यह सरकारी नियम बन गया है, शंकर को स्कूल से नहीं भगा सकते, नहीं तो कानून हमें भगायेगा। शंकर को स्कूल में आने और पढ़ने का अधिकार मिल गया है। डॉ. अम्बेडकर ने देश के संविधान में उन्हें मूलभूत अधिकार दिये हैं।⁶

जन्मदिन कहानी में लेखिका ने भगी समाज के साथ कैसा अमानवीय व्यवहार किया जाता है उसकी व्यथा का वर्णन किया है। कहानी के माध्यम से लेखिका ने बताया है कि भगी समाज को अछूत मानकर बस्ती से बाहर बसाया जाता है। इनके घरों के आस-पास सर्वग जातियों के घर नहीं होते हैं। यहाँ रहकर न ये कुछ कर पाते हैं न ही कुछ सोच पाते हैं। ये दूसरों का मैला अपने सिर पर ढोते हैं लेकिन अब शिक्षा के माध्यम से आगामी पीढ़ी जागरूक हो रही है मुन्ना कहता है - "हमारा देश स्वतंत्र होकर कितने वर्ष बीत गये फिर भी हम वहीं के वहीं हैं। हमारी आजादी हमें कब मिलेगी? आज तक, आप लोगों ने से, किसी न भी यह नहीं सोचा। किसी ने भी अपने इस पुरतैनी काम को छोड़ने का साहस नहीं किया। हम क्यों सठाये, अपने सिर पर, दूसरों का मैला? ऐसा आपने कभी क्यों नहीं सोचा?"⁷

दलित समाज को हमेशा से ही ज्ञान से दूर रखा गया। कभी दलितों ने ज्ञान की परम्परा से जुड़ने की कोशिश की तो उन्हें अपमानित व उत्पीड़ित किया गया। कहानी का वास्तविक उद्देश्य दलित समाज को पराधीनता की जंजीरों से मुक्ति दिलाना है। लेकिन समाज दलित समाज ने महापुरुष भीमराव अम्बेडकर को पहचान लिया है। कहानी के मुख्य पात्र मुन्ना ने निश्चय किया - "मैं बाबा साहब के कार्यों और विचारों से अपनी बिरादरी को परिचित कराऊंगा, उन्हें सच्चाई का ज्ञान कराऊंगा।"⁸

'सिलिया' कहानी में लेखिका ने दर्शाया है कि जब सिलिया को पानी का गिलास देने के लिए आगे बढ़ाया जाता है तो बीच में 'जाति' आ जाती है। जाति का पता चलते ही पानी का गिलास वापस ले लिया जाता है। सिलिया मन ही मन दृढ़ निश्चय करती है - "मैं बहुत आगे तक पहुँगी, पढ़ती रहूँगी। उन सभी परम्पराओं के मूल कारणों का पता लगाऊँगी, जिन्होंने हमें समाज में अछूत बना दिया है। मैं विद्या, बुद्धि और विवेक से अपने आपको ऊँचा साबित करके रहूँगी। किसी के सामने झुकूँगी नहीं। न ही कभी अपना अपमान सहन करूँगी।"⁹

सिलिया जानती थी कि शिक्षा के माध्यम से समाज को जागरूक किया जा सकता है। वह सोचती है "झाड़ू नहीं कलम। हा, कलम ही उसके समाज का भाग्य बदलेगी।"¹⁰

'बदला' कहानी सवर्ण समाज और दलित समाज के आपस के बदले को चित्रित करती है। कहानी में बताया गया है कि गांवों में न पुलिस होती है न ही कानून होता है। सबसे पहले तो वे बुलाने वाले को ही तंग कर डालते हैं। कहानी में दलित जो कि गांव के लिए अपनी जान देने के लिए उतारू हो जाते हैं उसी गांव के लोग उनसे बुरा व्यवहार करते हैं। कल्लू की माँ अपनी छौआ से कहती है "देख लियो अपनो गांव? ... मरी जाये है गांव के लिए। ... रातदिन जिनकी गुलामी कर है, का दे रहे है तेको? ये कहीं अपने हो सके हैं? इनके दिल में पाप भरो है ... ये कोई पे दया नहीं करें।" 11

दलितों के प्रति सवर्णों का व्यवहार अमानवीय रहा है। वे उन्हें हमेशा से घृणा की दृष्टि से देखते थे। पर अब दलित समझ चुके है कि हमें एकजुट होकर अपनी ताकत दिखानी होगी। "हम सब मिलकर रहेंगे तो हमारी ताकत बहुत बड़ी ताकत बनेगी। एकता की ताकत से ही हम दुश्मनों से बदला ले सकते हैं।" 12

'छौआ मां' कहानी एक दलित महिला की कहानी है। जिसमें वह अपने गांव में झाड़ू पीछा का काम करती है। उनके गन्दे कपड़े धोती है। वह दाईपने का काम करती है। सवर्ण लोग अपना काम का काम करती है। उनके गन्दे कपड़े धोती है। वह दाईपने का काम करती है। सवर्ण लोग अपना काम निकलवाने के बाद उसे घर में प्रवेश नहीं करने देते हैं। ना चाहते ही उन्हें यह काम करना पड़ता है इनके परिवार को भी सवर्ण समाज जबरदस्ती इसमें धकेल देते हैं। छौआ मां की बेटी इनको कोसती है - "खुद जिन्दगी भर पूरे गांव का नरम उठाती रही ... सबका दलिदर समेटती रही। अब मेरे पीछे ये मुसीबत लगा रही है। ये सब उसी के कारण हो रहा है। लोगों को आदत डाल दी है। करेगी उसके बिना नहीं होयगों ... रात दिन दौड़ती फिरे हैं। सबके लिए मरी जाये हैं ... अब मोहे भी गिरा रही है जई दल-दल में ... पीढ़ी-पीढ़ी परम्परा चलाते रहे, अब ये परम्परा मेरे गले को फंसा रही है।" 13

पीढ़ी दर पीढ़ी यही सिलसिला चलता है। लेकिन तुलसा इस परम्परा को तोड़ती है। अपने बच्चों से कहती है - "अपमान भरी इस नरक की जिन्दगी से बाहर निकलो, इन्सान बनकर जीना सीखो।" 14

कहानी यही दर्शाती है कि दलित शिक्षा के कारण पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही परम्परा को छोड़ने लगे है। वे अपने बच्चों को सम्मान का जीवन देना चाहते हैं।

'दमदार' कहानी में दलित औरत की ताकत को चित्रित किया गया है। दलित स्त्रियों का अपनी ताकत के बल पर शोषण करता रहा है। 'दमदार' कहानी में लेखिका ने दलित स्त्री का नया रूप सामने रखा है। कहानी में सुमन एक दलित युवती है। जग्गू सवर्ण समाज से है। जग्गू पहलवान को जब

एक दलित स्त्री ने बीच बाजार में घसीट-घसीट कर पीटा। इससे सवर्ण समाज को पता चलता है कि दलित स्त्री अब कमजोर नहीं है। अब वह अपनी अस्मिता की रक्षा स्वयं कर सकती है।

“अभी तक आदमी ही सरे आम औरतों को नंगा करके मारते आये है। क्या, औरत आदमी को नंग करके नहीं मार सकती।”¹⁵

‘दमदार’ कहानी का यही उद्देश्य है कि अब दलित सवर्ण समाज से अपना बदला स्वयं ले लेते हैं।

निष्कर्ष -

‘संघर्ष’ कहानी संग्रह में लेखिका का मुख्य उद्देश्य पिछड़े, दलित समुदाय तक अम्बेडकरवादी विचारधारा का संदेश पहुंचाना है। दलित समाज भी प्रगति, परिवर्तन के साथ जागृति, समता, सम्मान का जीवन जीये। दलित जाति अपने हक के लिए संघर्ष करती नजर आ रही है। लेखिका ने अपने इस कहानी संग्रह के माध्यम से समाज को नई दिशा प्रदान की है।

संदर्भ सूची -

1. जोगिन्द्र कुमार संधू, दलित चेतना के संदर्भ में कथाकार ओमप्रकाश वाल्मीकि, प्रकाशक साहित्य संस्थान, गाजियाबाद, सं. 2012, पृ0 26
2. डॉ. गुणशेखर, दलित साहित्य का स्वरूप : विकास और प्रवृत्तियाँ, शिल्पायन प्रकाशन शाहदरा, दिल्ली, सं. 2012, पृ0 16
3. वहीं, पृ0 16
4. वहीं, पृ0 16
5. सुशीला टाकभौरे, संघर्ष, शरद प्रकाशन, नागपुर, प्र.सं. 2006, पृ0 10
6. वहीं, पृ0 11
7. वहीं, पृ0 38

8. वहीं, पृ0 43
9. वहीं, पृ0 48
10. वहीं, पृ0 49
11. वहीं, पृ0 59
12. वहीं, पृ0 63
13. वहीं, पृ0 71
14. वहीं, पृ0 73
15. वहीं, पृ0 135, 136

DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I3.0086781.57311

418. बैंकिंग का वाणिज्य क्षेत्र में योगदान

Education Department of Haryana

Page No:3521-3528

DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I3.0086781.57312

419. उत्तरा भारत में बाढ़ के प्राकृतिक कारण

Mr.Poonam, Mrs.Kusum Yadav; Education Department of Haryana

Page No:3529-3536

DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I3.0086781.57313

420. RURAL REHABILITATION OF REFUGEE IN EAST PUNJAB

Naresh Kumar; Haryana Education Deptt

Page No:3537-3545

DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I3.0086781.57314

421. कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यासों में चित्रित पारिवारिक संबंध

रानी, सुसीला; महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

Page No:3546-3552

DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I3.0086781.57315

422. मध्य गंगा के पुरातात्विक स्थल महदहा का विवरण

डॉ० सुभास चंद्र पाल; केंद्रीय विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

Page No:3553-3557

DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I3.0086781.57316

423. EFFECT OF USAGE OF SUGARCANE BAGASSE ASH AND QUARRY DUST ON :

B TEJA PRADEEP, K.ROOP SAGAR; C.V.S.E College of Engineering, Affiliated to JN
M SATHYA SRI; BIT Institute of technology, Affiliated to JNTUA, AP, India

Page No:3558-3565

DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I3.0086781.57317

424. Agriculture Play Role in Rural Economy of India

Ishwar Singh; Education Department of Haryana

Page No:3566-3575

DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I3.0086781.57318

425. गूण सन्धि 'एक विवेचन' सामवेद पर आधारित

KIRAN; ARJUN NAGAR KAITHAL

Page No:3576-3583

DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I3.0086781.57319

426. PHYSICAL EDUCATION PHILOSOPHY

Virender Tanwar; DPE, Department of Education, Haryana

Page No:3584-3589

DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I3.0086781.57320

427. Elimination of Gender Barriers through Education in BuchiEmecheta'sThe

M.Sheyamala, Dr. S. Sudha Rani, Assistant Professor; St. Mary's College (Autono

Page No:3590-3595

DOI:09.0014.PARISHODH.2020.V9I3.0086781.57321

कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यासों में चित्रित पारिवारिक संबंध

डॉ. आशा रानी
सहायक प्रवक्ता हिन्दी विभाग
वैश्य कॉलेज, भिवानी

सुरीला
शोधार्थी, हिन्दी विभाग,
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

सारांश

परिवार समाज की एक महत्वपूर्ण ईकाई है। परिवार और समाज के परस्पर मेल से व्यक्ति विकसित होता है। स्वतंत्रता के बाद भारतीय पारिवारिक व्यवस्था में अनेक परिवर्तन आए। भारतीय पारिवारिक व्यवस्था तो संयुक्त पारिवारिक व्यवस्था रही है। लेकिन आधुनिक युग में नगरीकरण और आर्थिक दबाव के कारण संयुक्त पारिवारिक व्यवस्था विघटित हुई है। इसका एक और कारण है कि छोटे परिवार को सुख का आधार मानना। इस प्रकार पुराने जीवन मूल्यों के प्रति विद्रोह की भावना जाग उठी। गाँव भी इससे अछूते रहे।

मुख्य शब्द : समाज, नगरीकरण, पारिवारिक, परिवार, आधुनिक

प्रस्तावना

परिवार समाज की एक महत्वपूर्ण ईकाई है। परिवार और समाज के परस्पर मेल से व्यक्ति का विकास है। स्वतंत्रता के बाद भारतीय पारिवारिक व्यवस्था में अनेक परिवर्तन आए। भारतीय पारिवारिक व्यवस्था संयुक्त पारिवारिक व्यवस्था रही है। लेकिन आधुनिक युग में नगरीकरण और आर्थिक दबाव के कारण पारिवारिक व्यवस्था विघटित हुई है। इसका एक और कारण है कि छोटे परिवार को सुख का आधार मानना इस प्रकार पुराने जीवन मूल्यों के प्रति विद्रोह की भावना जाग उठी। गाँव भी इससे अछूते न रहे। वैज्ञानिक विकास और पश्चिमी सम्पर्क ने भारत के पारिवारिक जीवन को काफी प्रभावित किया है। पाश्चात्य शिक्षित व्यक्ति

भौतिकवादी बन गया। इस सतथ में कृष्णा अग्निहोत्री का कथन है "मानव के मानव नई समग्र्यात्रा ने एक स्थिति संवार कर रख दी। वैज्ञानिक आविष्कारों नर्षों की गुलापी श्रौं एक प्रभाव न हमारा सामाजिक रहन-सहन और जीवन के मानवीय मूल्यों को झकझोर डाला।" लेकिन आधुनिक युग में पारिवारिक वातावरण में अलगाव की स्थिति का जन्म हुआ है। अलगाव की यही स्थिति पारिवारिक विघटन का कारण बनती है।

डॉ. सीताराम जायसवाल कहते हैं, "कोई भी परिवार उसी समय तक गठित रह सकता है, जब तक उसके सदस्यों में सामाजिक मूल्यों, आदर्शों, अभिवृत्तियों आदि की दृष्टि में एकता पाई जाती है। सब परिवार के सदस्यों में जीवन मूल्यों को लेकर मतभेद उत्पन्न हो जाते हैं। तब परिवार का विघटन होना स्वभाविक है।" इसके साथ ही भारतीय परिवारों पर विदेशी रहन-सहन का प्रभाव व्यक्ति स्वतंत्रता की बढ़ती भावना ने भी संयुक्त परिवारों के विघटन में भूमिका निभाई है आज भी अनेक परिवार ऐसे हैं जहाँ संयुक्त परिवार होते हुए भी संबंधों में टूटन नहीं है। लेकिन फिर भी कहीं-न-कहीं संयुक्त परिवार व्यवस्था के विरोधी नजर आते हैं। क्योंकि वे इसे सामाजिक प्रतिष्ठा का मानदण्ड मानते हैं। संयुक्त परिवार में आ रहे विघटन के कारणों पर टिप्पणी करती हुई डॉ. सवर्णलता लिखती हैं, "आजकल आर्थिक क्षेत्र में हुई क्रान्ति तथा जनसंख्या के दबाव के कारण संयुक्त परिवार टूट रहे हैं। शिक्षा के प्रसार औद्योगिकरण राजनीतिक चेतना से प्रभावित गेजगार की तलाश में संयुक्त परिवारों को छोड़कर अपनी जीविका अर्जन के स्थानों पर जा रहे हैं।"³

आर्थिक अभाव के कारण नारी को जीविका कमाने के लिए घर से बाहर जाना पड़ा। अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए उसे परिस्थितियों से भी लड़ना था। एक और उसे घर से बाहर की जिम्मेदारियों से जूझकर जीना पड़ा। तो दूसरी ओर नए पुराने संस्कारों का आघात भी सहन करना पड़ा अर्थात् नए परिवेश और परिस्थितियों ने नारी को दुविधाग्रस्त बना दिया। इस प्रकार अस्तित्व की रक्षा के लिए

आर्थिक सम्पन्नता की चिंता ने पारिवारिक संबंधों को हिला दिया था। पति-पत्नी, माता-पिता-भाई-बहन, पिता-पुत्र आदि के संबंधों में स्पष्ट परिवर्तन आ गया है। जो हमारे समान में स्पष्ट दिखाई है। कृष्णा अग्निहोत्री ने अपनी औपन्यासिक कृतियों में बदलते पारिवारिक परिवेश और टूटते-बनते सामाजिक संबंधों पर बहुत ही सहजता से लेखनकार्य किया है। कृष्णा जी ने अपने उपन्यास 'कौन नहीं अपराधी' समकालीन बहनों के संबंधों का वर्णन किया है कि किस प्रकार परिवार में समकालीन बहनों का संबंध मिथ्या होता है लेकिन बड़ी बहन सदैव छोटी पर सर्वस्व न्यौछावर करने को तत्पर रहती है। 'थकान व सफाई की चिंता न कर सीमा तुरंत रीमा के होटल जा पहुँचती है।... उसकी सहेलियों को रेसुथियेटर में ले जाकर वह उनका मनोरंजन करती है, ताकि रीमा को यह अनुभव न हो कि उसका अपना वहाँ आकर उसकी सुघ भी नहीं ले सकता।' लेकिन छोटी बहन अपनी दीदी के इस प्यार, स्नेह और आदर का निरंतर उपेक्षा और अपमान करे तो बड़ी दीदी पर क्या गुजरती है।... 'तो कुँए में ढकेल दो, देखो, जीजी की तारीफ... जैसे मैं किसी पेड़ से टपकी हूँ।' ऐसे व्यवहार से संबंधों में खटास स्वाभाविक है।

आयु और अनुभव का सही तालमेल प्रायः कम लोगों में ही देखा जाता है और जो परिवार में सामाजिक बनाए रखने का प्रयास करते हैं। उन्हें बहुधा मानसिक आघात झेलने पड़ते हैं। 'वहाँ जायेगी और दुहरे रहन-सहन का व्यय संभालेगी। इसमें अपने परिवार की कितनी हानि होगी, जानते कि पिता जी अस्वस्थ हैं और टीनू बहुत छोटा है। माँ व पिता जी की देखभाल कौन करेगा।'⁵

देखो सीमा जीजी, 'तुम मेरे व्यक्तिगत मामलों में दखल मत दिया करो, तुम अपने घर व संभालो।'

ऐसी विकट स्थिति में बड़ी बहन को न चाहते हुए भी अपमान का घूंट पीकर रह जाना पड़ता है

कृष्णा जी ने अपने उपन्यास 'अभिषेक' में मुख्य रूप से पति-पत्नी संबंधों का खुलकर वर्णन किया है। उन्होंने अपने उपन्यास में पितृसत्तात्मक समाज में पति सदैव इस अक्धारणा से ग्रस्त रहता है कि केवल वे ही समझदार और विद्वान हैं। पत्नी को तो कुछ ज्ञान नहीं है, लेकिन ऐसी अक्धारणा से दाम्पत्य संबंधों में खटास ही आती है। परिवार में अशांति और असुरक्षा की भावना धर कर जाती है। प्रगति के सभी मार्ग अवरुद्ध हो जाते हैं। पत्नी को कभी-कभी कम नहीं आँकना चाहिए, वरना उसके मन में पति के प्रति ऐसी अक्धारणा बनना स्वाभाविक ही है — पहली बार मनु का पूरा मुँह कड़वा हुआ। मन तो हुआ कि जाए और पति से कहे कि तुम्हारे मन में सोच नहीं, जीवन के संस्कार नहीं, पूरे समय स्वार्थ पूरा करने में मशगूल हो उन्हें भस्म करो न?

पर पत्नी को अच्छा सोचना तो चाहिए, परन्तु उसे व्यक्त करना मूर्खता है, क्योंकि बुद्धि का ठेका तो पतियों ने ही ले रखा है।⁶

जब दाम्पत्य जीवन में इस प्रकार की अव्यवहारिक परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं तो परिवार का अहित होना निश्चित है। परिवार को एकजुट रखने के लिए पति-पत्नी दोनों का ही हर पल त्याग, तपस्या और सहजता के मार्ग पर चलने का प्रयास करना चाहिए। निश्चय एक दूसरे पर दोषारोपण अथवा स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए झूठ का सहारा लेना किसी भी स्थिति में व्यवहारिक नहीं हो सकता। इस प्रकार दाम्पत्य जीवन में जब कोई दरार आती है तो उसे खाई बनने में देर नहीं लगती।

पारिवारिक संबंधों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण और आत्मीय रिश्ता माँ-बेटी का होता है। माँ-बेटी के भविष्य के प्रति सदैव सजग रहती हैं, कि उसके जीवन में कभी भी कोई ऐसी अवांछित घटना न घटे जिसके लिए उसे बेवजह कष्ट झेलने पड़े। 'कौन नहीं अपराधी' उपन्यास में एक ऐसे ही प्रसंग द्वारा लेखिका ने बहुत संवेदनशील चित्रण किया है।

माँ को बच्चों की पहली पाठशाला कहा जाता है और बेटी के लिए तो माँ का सानिध्य अनमोल भाना गया है। माँ, बेटी के लिए जहाँ गुरु है

वहीं वह मित्रवत् व्यवहार से उसे दुनियादारी की समस्त छोटी-बड़ी बारिकियों से भी अवगत कराता है। "मिनी जैसे लैटते ही अपनी कौपी मेज पर रखती कि शान्ति प्यार की चाशानी में लपटे टन से झिड़की देती - पहले अपने हाथ-पैर धो, कपड़े बदलो तब गले लगना और गरम कचौड़ी खाना।" ऐसी अति आवश्यक व्यवहारिक ज्ञान को बेटी शनै-शनै अपने चरित्र में समाहित करके अपना और परिवार का मविष सुखद बनाने में सफल होती है।

परिवार में अनेक संबंध ही उसे परिवार बनाते हैं। ससुराल में सास-ससुर के अतिरिक्त देवर-जेठ देवरानी-जेठानी का संबंध यदि मित्रवत् रहे तो परिवार में सुख-शांति सदैव बनी रह सकती है। यदि इन संबंधों में किसी कारण खटास आ जाती है तो परिवार निरंतर तनावग्रस्त रहता है। उसका टूटना निश्चित है। ऐसे में बिखराव ही उस परिवार का अन्त होना निश्चित है। "जेठानी के जटिल चेहरे पर कुछ पल के कोमलता उभरी, तुम्हारा क्या दोष देवराणी तो पहले ही घर कहाँ ठहरते है। आये और रुपये माँगे लोट गये रोको तो हाथापाई। हमने तो साफ कह दिया है। ससुरजी से कि हमारा हिस्सा अलग कर दे, आपको ये जेवर पत्तंद हैं तो आप ले लें। मुझे पत्थरों में वैसे भी कोई रुचि नहीं है। वेणु कुछ सुब्य हो उठी।

पर भाग्य में तुम्हारे पत्थर ही हों। जेठानी ने गहरी सांस ली। और वेणु के हाथों में नारियल तेल उडेल दिया। प्रायः धन-दौलत के कारण पारिवारिक संबंध खंडित होते देखे गए हैं। स्वार्थ और लालच की अन्य लालसा से सम्पन्न, सुखी और समृद्ध परिवारों को खंड-खंड होतें देखा गया है।

किसी भी परिवार की निरंतर प्रगती में सास-बहू के संबंधों के मध्य गरिमा और सम्मान का होना अत्यंत आवश्यक है। सास अपनी बहु को अपने परिवार के रीति-रिवाजों और आचार-व्यवहार से परिचित करवाती है तो बहु भी समयानुसार उन्हें आत्मसात करके परिवार की आन, बान और

शान में बड़ोतरी करती है, लेकिन जब सास बात-बात पर वह के परिजनों को दोषी ठहराने प्रयास करती है तो मामला बिगड़ने की संभावना अधिक रहती है। "पूरे समय अपना मुँह खुला ही रखती कम से कम पराए मर्दों को देखकर तो घूँघट निकाल लो, वे क्या कहेंगे कि इस घर की बहू-बेटटी वे हैं। मिनी ने विद्रोही स्वर में कहा, "मेरे मुँह में क्या खराबी है, जो ढक लूँ मैं, मुँह खोलने में शर्म कैस मायके में पड़ी-पड़ी सड़ती रहना। तेरी माँ ने तुझे बहस करना ही सिखाया है। मेज दूँगी वापिस वहीं मेरी माँ को कुछ मत कहा, वे मुझे अच्छी-अच्छी बातें ही सिखाती हैं। मैं मायके में सद्गुणी क्यों? खुश रहूँ।" मायका ही एक ऐसा पड़ाव होता है जहाँ बेटी को भरपूर, प्यार, स्नेह और सम्मान मिलता है - शादी के बाद तो परायी हो जाती है। उसका धर्म तो पति को प्रसन्न रखना है उसके एक इशारे पर त्यागना होता है। इसलिए तो कहते हैं कि बेटी की डोली जाती है। ससुराल, अर्थी निकलती है वहाँ ऐसी ही संस्कारों की पाठशाला माँ-बेटी के मध्य चलती रहती है।

निष्कर्ष

अंत निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि कृष्णा अग्निहोत्री ने अपने उपन्यासों में पारिवारिक सं का खुलकर वर्णन किया है। मले ही वे संबंध पति-पत्नी के हों, माई-बहन, सास-बहू, पिता-माता-पुत्री आदि सभी के कृष्णा जी ने अपने उपन्यासों में चित्रित किया है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. कृष्णा अग्निहोत्री, स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी कहानी, पृ.सं. 21
2. डॉ. सीताराम जायसवाल, शैक्षिक समाजशास्त्र, पृ.सं. 241
3. डॉ. स्वर्ण लता, स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य की समाजशास्त्रीय पृष्ठ भूमि, पृ.सं. - 43
4. डॉ. कृष्णा अग्निहोत्री, कौन नहीं अपराधी, अमन प्रकाशन, रामबाग, कानपुर, 2013, पृ.सं. 18
5. वही, पृ.सं. - 21
6. वही, पृ.सं. - 43

7. डॉ. कृष्णा अग्निहोत्री, अभिषेक, अमन प्रकाशन, रामबाग, कानपुर, 2013, पृ.सं. 27
8. डॉ. कृष्णा अग्निहोत्री, टपरेवाले, भारतीय पुस्तक परिषद, नई दिल्ली, 2014, पृ.सं. 47

Synthesis and Characterization of Lanthanum doped Nickel Nanopowdered Crystallites

¹Narender Kumar, ²Bharti Yadav

¹Department of Physics, Vaish College, Bhiwani 127021, India

²Department of Physics, S.K. Govt College Kanwali Rewari 123411, India

*corresponding author, E-mail: nk.physics15@gmail.com

Abstract: In this paper, we have prepared nanopowder crystalline of lanthanum (La) doped zinc ferrite by co-precipitation and sonication technique using an open-air heat treatment. X-ray diffraction (XRD) was used for structural characterization. The evolution of the crystalline phases was analyzed. The effect of precursor concentration is reflected in the diffractogram. NiLaFe₂O₄ (x = 0.01, 0.03, 0.05, 0.07 and 0.09) nanoferrites were prepared using the sono-chemical reaction method. The prepared nanoferrites were investigated using X-ray diffraction (XRD), ultra violet diffuse reflectance spectroscopy (UV-DRS), Fourier transform infrared spectroscopy, field emission scanning electron microscopy, energy-dispersive X-ray spectroscopy, electrochemical impedance spectroscopy and a vibrating sample magnetometer to explore their structural, optical, dielectric and magnetic properties. The analysis of the XRD pattern of these NiLa_xFe_{2-x}O₄ nanoferrites confirmed the formation of a cubic spinel structure. The average crystallite sizes of the nanoparticles were 54, 49, 47, 43 and 40 nm for the composition x = 0.01, 0.03, 0.05, 0.07 and 0.09, respectively. An impedance analysis of the prepared nanoferrites was carried out to explore the dielectric behavior.

KEYWORDS:

Ferrites, Nanoparticles, Spinel, Particle size, lanthanum zinc ferrite

1. Introduction

The general chemical formula of spinel ferrites is AB_2O_4 , where A represents a divalent metal ion and B represents a trivalent metal ion [1,2]. Spinel ferrites have been the focus of many research groups due to their applications such as in low loss magnetic core materials, microwave-absorbing materials, transformer cores, antenna rods, high-frequency devices, etc. The nickel nanoferrites are important soft magnetic materials that have many applications in a wide range of frequency [3e5,7,8]. Spinel ferrite is one of the promising materials used for absorption of electromagnetic radiation in various forms such as sheets, ceramic tiles, powders etc. [1].

Characterization studies indicated that the addition of La to $NiFe_{2-x}O_4$ nanoparticles improved the dielectric properties of the prepared nanoferrites. The hysteresis loops promoted the ferro magnetic behavior present in the prepared $NiLa_xFe_{2-x}O_4$ nanoferrites. A decrease in saturation magnetization and an increase in coercivity were observed with an increase in the La content in the prepared nanoferrites.

In recent years, the problem of electromagnetic interference (EMI) has attracted considerable attention due to a variety of applications in telecommunication systems such as mobile phones, computers and radar systems. EMI causes considerable interruption of electronically controlled systems. Thus, it leads to device malfunctions, generates false images, increases clutter on radar and reduces performance because of system-to-system coupling through EMI. To overcome these EMI problems, electromagnetic wave absorbers with the capability of absorbing unwanted electromagnetic signals are used. Extensive research has been carried out on EMI absorbing ferrites. Nowadays, rare-earth ion-doped ferrites have found important applications in modern telecommunication, electronic devices and magnetic recording, and considerable attention has been focused on microwave-absorbing materials.

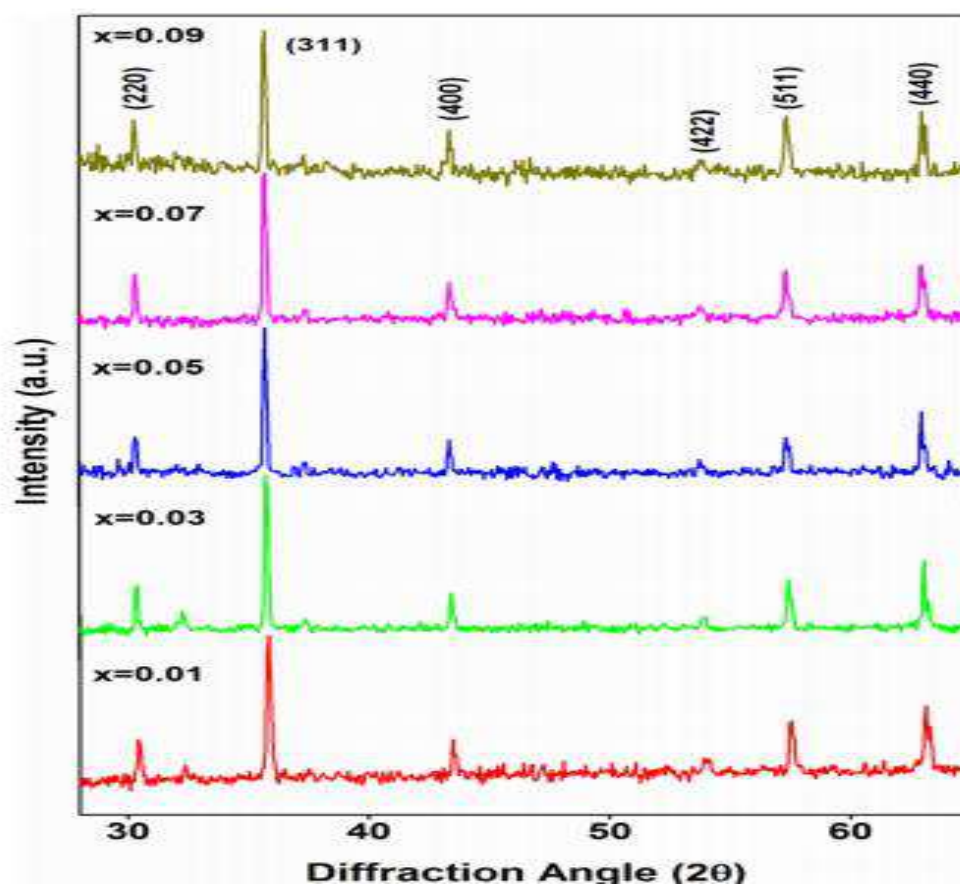
2. Experimental Setup:

Lanthanum (La) is synthesized according to our previously published article [2] and zinc ferrite is manufactured according to our other published data [3].

3. Result and discussion:

3.1 XRD Analysis:

The XRD pattern of the prepared $\text{NiLa}_x\text{Fe}_{2-x}\text{O}_4$ nanoferrites for $x = 0.01, 0.03, 0.05, 0.07$ and 0.09 . The diffraction pattern confirmed the presence of a cubic spinel structure in the prepared $\text{NiLa}_x\text{Fe}_{2-x}\text{O}_4$. Fig. 2 indicates that the prepared $\text{NiLa}_x\text{Fe}_{2-x}\text{O}_4$ nanoferrites had a cubic spinel phase (JCPDS card no. 89e4927). The indexed cubic spinel diffraction peaks corresponded to (220), (311), (400), (422), (511) and (440) diffraction planes. The DebyeScherrer formula was used to calculate the average crystallite size (D) of the prepared $\text{NiLa}_x\text{Fe}_{2-x}\text{O}_4$ nanoferrites by measuring the full-width at half-maximum (FWHM) and Bragg's diffraction angle of diffraction peaks.



The crystallite size of the prepared $\text{NiLa}_x\text{Fe}_{2-x}\text{O}_4$ nanoferrites decreased from 54 to 40 nm with the addition of La^{3+} ions. The addition of La^{3+} ions in place of Fe^{3+} ions induced crystalline anisotropy due to the large ionic radius mismatch between La^{3+} and Fe^{3+} ions. The strain within the unit cell of the crystal increased with the addition of La^{3+} ions due to the induced crystalline anisotropy [4].

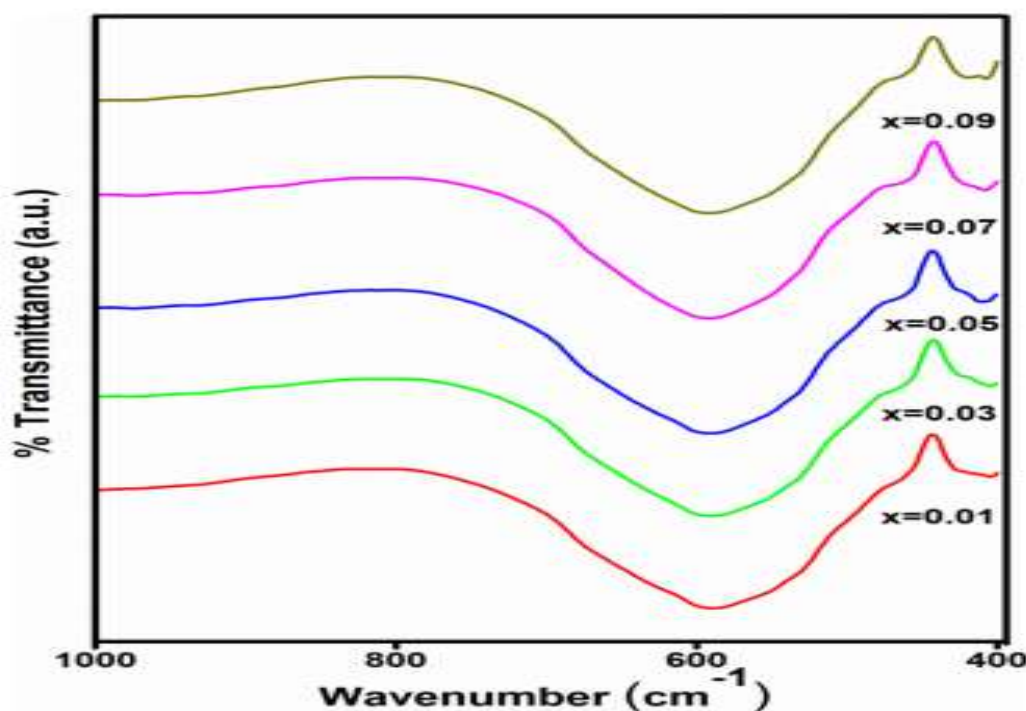
Therefore, the doping of La^{3+} ions acts as a kinetic barrier to further grain growth. Hence, a decrease in the crystallite size was observed with an increase in La^{3+} ions. It can be seen from Table 1 that the lattice constant increased from 7.4494 to 7.5616 Å with the addition of La^{3+} in the prepared $\text{NiLa}_x\text{Fe}_{2-x}\text{O}_4$ nanoferrites. The increase in the lattice parameter with increasing La^{3+} ion content can be attributed to ionic radii. The ionic radius of La^{3+} ions (1.05 Å) is larger than that of Fe^{3+} ions (0.67 Å) [5]. Consequently, La^{3+} has a strong preference for the B-site. The average value of XRD of the prepared $\text{NiLa}_x\text{Fe}_{2-x}\text{O}_4$ nanoferrites decreased from 7.5577 to 7.4302 g/cm³ with an increase in La^{3+} . The La^{3+} ion has no electrons in the 4f orbit, which makes it nonmagnetic. Doping of La^{3+} ions in spinel ferrites leads to strong spin-orbit coupling of their angular momentum, which in turn improves the dielectric properties. A rare-earth ion in the spinel ferrite improves densification, electrical resistivity and low eddy current losses. The doped rare-earth ion (La) enters into the B-site (Fe) by displacing the corresponding number of Fe^{3+} from the B-site to the A-site.

In the present investigation, $\text{NiLa}_x\text{Fe}_{2-x}\text{O}_4$ ($x = 0.01, 0.03, 0.05, 0.07$ and 0.09) nanoferrites were prepared using the sonication method. An attempt was made to study the dielectric constant and capacitance behavior of nickel nanoferrites using lanthanum as a dopant.

3.2 FTIR analysis:

The FTIR spectrum indicates that the presence of two absorption bands around 405-420 cm⁻¹ and 560-620 cm⁻¹ corresponds to the intrinsic stretching vibrations of octahedral and

tetrahedral complexes of NiFe₂O₄, respectively [4,6,8]. The absorption bands are slightly shifts to higher frequency with an increase in La³⁺ ions content.



The size of the prepared NiLaxFe_{2-x}O₄ nanoferrites is in the range of around 60 nm. The EDX spectra of NiLaxFe_{2-x}O₄ (x = 0.01, 0.03, 0.05, 0.07 and 0.09) nanoferrites. The EDX spectra confirmed the qualitative composition of Ni, Fe, La and O in the prepared nanoferrites. It is suggested that the elemental compositions are close to the starting compositions of the prepared NiLaxFe_{2-x}O₄ (x = 0.01, 0.03, 0.05, 0.07 and 0.09) nanoferrites [5,6]

The prepared nanoferrites were characterized by X-ray diffraction (XRD), ultra violet (UV) diffuse reflectance spectroscopy (DRS), Fourier transform infrared spectroscopy (FTIR), field emission scanning electron microscopy (FESEM) coupled with energydispersive X-ray analysis (EDX), dielectric spectroscopy, electrochemical impedance spectroscopy and vibrating sample magnetometer (VSM) measurements. The results obtained from the above characterization studies were analyzed in-depth to gain greater insights into NiLaxFe_{2-x}O₄ (x = 0.01, 0.03, 0.05, 0.07 and 0.09) nanoferrites.

In the present investigation, high pure-grade Merck chemicals such as lanthanum nitrate hexahydrate ($\text{La}(\text{NO}_3)_3 \cdot 6\text{H}_2\text{O}$), ferric nitrate nonahydrate ($\text{Fe}(\text{NO}_3)_3 \cdot 9\text{H}_2\text{O}$), nickel nitrate hexahydrate ($\text{Ni}(\text{NO}_3)_2 \cdot 6\text{H}_2\text{O}$), citric acid ($\text{C}_6\text{H}_8\text{O}_7 \cdot \text{H}_2\text{O}$), ammonia (NH_4OH) and distilled water were used as precursors for the preparation of $\text{NiLa}_x\text{Fe}^{2-x}\text{O}_4$ ($x = 0.01, 0.03, 0.05, 0.07$ and 0.09) nanoferrites.

The required stoichiometric amount of chemical powder was measured separately using a digital balance (Analytical, Shimadzu) [7]. The measured powders were mixed with distilled water to obtain a homogeneous solution of the precursor. High-intensity sonication (titanium horn) was carried out using an Ultrasonic cell crusher, Lark, India operated at a frequency of 25 kHz.

3.3 Magnetic and electric characterization:

The reactants were mixed together during sonication at 80 C for 1 h. After the sonication process, ammonia was added to the ferrite solution to adjust the pH value of the mixture to ~ 7 . The resultant dark liquid solution was collected and dried in a hot-air oven at a constant temperature of 60 C for 24 h. The resultant powders were collected and calcinated in a muffle furnace at 500 C for 2 h. After the calcination process, the powders were ground for 15 min to obtain a fine powder [8]. These obtained ferrite powders were well sintered at 1000 C for 24h. Techniques such as XRD, UV-DRS spectroscopy, FTIR spectroscopy, FESEM-coupled EDX, inductance capacitance and resistance (LCR) Htester spectroscopy, impedance spectroscopy and VSM were used to characterize the prepared $\text{NiLa}_x\text{Fe}^{2-x}\text{O}_4$ ($x = 0.01, 0.03, 0.05, 0.07$ and 0.09) nanoferrites. To identify the structural phase and the crystallite size of the prepared $\text{NiLa}_x\text{Fe}^{2-x}\text{O}_4$ nanoferrites was used by X-ray diffractometer (X'Pert PRO; PAN alytical, the Netherlands). CuK α radiation ($\lambda = 1.5406 \text{ \AA}$) was used [9] as a source to analyze the prepared nanoferrites at the 2θ position from 10 to 80.

The optical properties of the prepared nanoferrites were determined using a UV visible DRS (UV-2450, Shimadzu, USA). The UV-DRS spectra were recorded the wavelength-dependent absorption of the NiLaxFe_{2-x}O₄ nanoferrites from 200 to 800 nm. The functional groups and chemical bonds existing in the prepared NiLaxFe_{2-x}O₄ nanoferrites were identified using FTIR spectra (Perkin Elmer Spectrometer, Spectrum 100, USA) in the wavenumber range of 4000e400 cm⁻¹ at room temperature.

A pellet was created of 95% KBr with 5% prepared nanoferrites for FTIR spectral analysis. The surface morphology and elemental composition of the prepared NiLaxFe_{2-x}O₄ nanoferrites were characterized using field emission scanning electron microscopy coupled with an energy dispersive analysis spectrum (Quanta FEG 250)

To investigate the conductivity of the prepared NiLaxFe_{2-x}O₄ nanoferrites, the spectrum was assessed using electrochemical impedance spectroscopy (PGstat302N; Autolab, the Netherlands). Magnetic measurements of the prepared NiLaxFe_{2-x}O₄ (x¼0.01, 0.03, 0.05, 0.07 and 0.09) nanoferrites were performed using a VSM (7410; Lake Shore, USA) at room temperature with an applied magnetic field of 20 to 20 kOe.

Generally, the dielectric constant of any material depends on polarization factors such as dipolar, interfacial, ionic and electronic polarizations. Among these polarizations, dipolar and interfacial polarizations are responsible for the observed behavior in dielectric constant at lower frequencies [10]. On the other hand, electronic polarization is more effective in the higher frequency region.

4. Discussion

A huge difference in the impedance spectra was observed in the prepared nanoferrites in the high-frequency region and the lowfrequency region. A clear arc in the high-frequency region was presented for the composition x ¼ 0.01. Further, an increase in La³⁺ ions from x ¼ 0.01 to x ¼ 0.05 led to a decrease in the position of the arc towards the low-frequency region. In

addition, an increase in the radius of curvature of arc was observed. An increase in La^{3+} ions beyond $x = 0.05$ led to an increase the position of the arc towards high-frequency region. However, no arc was observed in the high frequency region for the composition $x = 0.09$. This absence of arc implies ($x = 0.09$) that the interfacial charge-transfer resistance for the prepared $\text{NiLa}_x\text{Fe}_{2-x}\text{O}_4$ nanoferrites is significantly high. Furthermore, decrease in conductivity with increasing frequency is attributed to the electronic exchange ($\text{Fe}^{3+} \leftrightarrow \text{Fe}^{2+}$), which cannot follow the alternating field due to the predominance of species such as lattice defects, oxygen vacancies and Fe^{2+} ions [43,44]. On the other hand, an increase in the content ($x = 0.05, 0.07$ and 0.09) of La^{3+} ions of the prepared $\text{NiLa}_x\text{Fe}_{2-x}\text{O}_4$ nanoferrites leads to progress decrease in Warburg region value which were less than 45. The three compositions were found to show resistive behavior [11].

The resistive property of the prepared $\text{NiLa}_x\text{Fe}_{2-x}\text{O}_4$ ($x = 0.05, 0.07$ and 0.09) nanoferrites indicates the presence of space-charge polarization in a material.

The saturation magnetization (M_s) value of the prepared $\text{NiLa}_x\text{Fe}_{2-x}\text{O}_4$ nanoferrites was 107.56, 98.08, 77.87, 70.19 and 54.67 emu g⁻¹ for the composition $x = 0.01, 0.03, 0.05, 0.07$ and 0.09 , respectively. The obtained magnetization curve indicated a ferromagnetic nature of the prepared nanoferrites. The M_s decreased with an increase in La^{3+} substitution in the prepared $\text{NiLa}_x\text{Fe}_{2-x}\text{O}_4$ nanoferrites. This is due to the formation of a nonmagnetic structure in the solid solution spinel by the substitution of nonmagnetic La^{3+} ions in the prepared $\text{NiLa}_x\text{Fe}_{2-x}\text{O}_4$ nanoferrites. The magnetic super-exchange interactions depend on the cation distribution between tetrahedral and octahedral sites. The dominant magnetization may have occurred due to the presence of Fe^{3+} in the octahedral B site.

5. Conclusions

$\text{NiLa}_x\text{Fe}_{2-x}\text{O}_4$ ($x = 0.01, 0.03, 0.05, 0.07$ and 0.09) nanoferrites were prepared using the sonochemical method. XRD confirmed the cubic spinel crystal structure of the prepared

nanoferrites. The average crystallite size of the prepared nanoferrites ranged from 40 to 54 nm. The unit cell parameter decreased linearly with an increase in La³⁺ ions substitution. The morphology characterization of the FESEM confirmed the formation of a spherical-like morphology. The UV visible diffuse reflectance spectrum showed that the E_g of the prepared Ni_{1-x}La_xFe₂O₄ nanoferrites ranged from 3.31 to 4.14 eV. The increases with an increase in the number of La³⁺ ions in the prepared nanoferrites. The FTIR spectrum indicates that the presence of two absorption bands around 405-420 cm⁻¹ and around 560-620 cm⁻¹ corresponds to the octahedral and tetrahedral sites of NiFe₂O₄, respectively. The dielectric constant (ϵ_0) of the prepared nanoferrites suddenly decreased at lower frequencies and remained constant at higher frequencies. The impedance analysis of the prepared ferromagnetic materials revealed that the dielectric behavior of the prepared Ni_{1-x}La_xFe₂O₄ nanoferrites. These materials showed ferrimagnetic ordering at room temperature for all compositions. These results confirm that the prepared Ni_{1-x}La_xFe₂O₄ (x = 0.01, 0.03, 0.05, 0.07 and 0.09) nanoferrites are useful for improving radiation-absorption properties.

References:

- [1] D.M. Jnaneshwara, D.N. Avadhani, B. Daruka Prasad, H. Nagabhushana, B.M. Nagabhushana, S.C. Sharma, S.C. Prashantha, C. Shivakumara, Role of Cu²⁺ ions substitution in magnetic and conductivity behaviour of nano CoFe₂O₄, *Spectrochimica Acta Part A: Mole. Biomole. Spectroscopy* 132 (2014) 256e262.
- [2] InduVashistha and sunilrohilla, structural characterization and rietveld refinement of CeO₂/CoFe₂O₄ nanocomposites prepared via coprecipitation method, *2020 IOP Conf. Ser. Mater. Sci. Eng.* 872 012170.
- [3] HimanshuBedi *et al*, Synthesis of nanocomposite of franklinite (Fe₂O₄Zn) doped zincite(ZnO) using wet chemical coprecipitation method and rietveld refinement, *2020 J. Phys.: Conf. Ser.* 1706 012013

- [4] H. El Moussaoui, T. Mahfoud, S. Habouti, K. El Maalam, M. Ben Ali, M. Hamedoun, O. Mounkachi, R. Masrour, E.K. Hlil, A. Benyoussef, Synthesis and Magnetic Properties of tin spinel ferrites doped manganese, *J. Magn. Magn Mater.* 405 (2016) 181e186.
- [5] J.L. Gunjekar, A.M. More, K.V. Gurav, C.D. Lokhande, Chemical synthesis of spinel nickel ferrite (NiFe₂O₄) nano-sheets, *Appl. Surf. Sci.* 254 (2008) 5844e5848.
- [6] K. SudalaiMuthu, N. Lakshminarasimhan, Impedance spectroscopic studies on NiFe₂O₄ with different morphologies: microstructure vs. dielectric properties, *Ceram. Int.* 39 (2013) 2309e2315.
- [7] P. Sivakumar, R. Ramesh, A. Ramanand, S. Ponnusamy, C. Muthamizhchelvan, Synthesis and characterization of nickel ferrite magnetic nanoparticles, *Mater. Res. Bull.* 46 (2011) 2208e2211.
- [8] M. Srivastava, A.K. Ojhaa, S. Chaubey, A. Materny, Synthesis and optical characterization of nanocrystalline NiFe₂O₄ structures, *J. Alloys Compd.* 481 (2009) 515e519.
- [9] K. VijayaBabu, G. Satyanarayana, B. Sailaja, G.V. Santosh Kumar, K. Jalaiah, M. Ravi, Structural and Magnetic properties of Ni_{0.8}M_{0.2}Fe₂O₄ (M^{1/4}Cu, Co) nano-crystalline ferrites, *Resut. Phy.* 9 (2018) 55e62.
- [10] K.A. Ganure, L.A. Dhale, V.T. Katkar, K.S. Lohar, Synthesis and characterization of lanthanum-doped Ni-Co-Zn spinel ferrites nanoparticles via normal microemulsion method, *Inter. J. Nanotech. Appl.* 2 (2017) 189e195.
- [11] A.C.F.M. Costa, A.P. Diniz, V.J. Silva, R.H.G.A. Kiminami, D.R. Cornejo, A.M. Gama, M.C. Rezende, L. Gama, Influence of calcination temperature on the morphology and magnetic properties of Ni_{1-x}Zn_x ferrite applied as an electromagnetic energy absorber, *J. Alloys Compd.* 483 (2009) 563e565.

Impact of COVID-19 on Our Ruler Education System

Narender Kumar

Department of Physics, Vaish College Bhiwani, Haryana 127021

Corresponding Author Email- nk.physics15@gmail.com

Abstract

Corona viruses are a large family of viruses which may cause illness in human beings. COVID-19 is the infectious disease caused by the most recently discovered corona virus. The most common symptoms of COVID-19 are fever, tiredness, and dry cough. This disease spread from the contact with person to person directly or indirectly. Due to this disease, it mainly affects our Rural Education System and resources of Technology. Schools Colleges, Universities and other educational institute closures in response to the COVID-19 pandemic have shed a light on numerous issues affecting access to Education, Technology as well as broader Socio-Economic issues. Their impact is more severe for rural areas disadvantaged students. Distance learning/online classes can be effective only if all students have computers, smart phones and high-speed internet access. But mostly students from rural areas and disadvantaged families are affected from education. The spread of COVID-19 is a stressful event that may have a direct effect on students' preparation. Along with the effect of COVID19, closure of educational institutes play an important role in reducing or breaking the chain of spreading of COVID19 with some simple precautions as regularly washing your hands with soap and water, using alcohol-based sanitizers and maintain at least one metre distance between yourself and anyone. So Stay Home Stay Safe till no vaccine discovered.

Keywords- *Corona viruses, disease, spread, epidemic, Impacts, Education, Network, Technology*

Introduction

Corona viruses are a large family of viruses which may cause illness in human beings. COVID-19 is the infectious disease caused by the most recently discovered corona virus. The most common symptoms of COVID-19 are fever, tiredness, and dry cough. This disease spread from the contact with person to person directly or indirectly. Still now there is no vaccine found so it called epidemic disease. Due to this disease, it mainly affects our Rural Education System and resources of Technology. Schools Colleges, Universities and other educational institute closures in response to the COVID-19 pandemic have shed a light on numerous issues affecting access to Education, Technology as well as broader Socio-Economic issues. As of March 2020, more than 370 million students are not attending their classes because of temporary or indefinite countrywide educational institutes are closures mandated by governments of India in an attempt to slow the spread of COVID-19. Their impact is more severe for rural areas disadvantaged students and their families including interrupted learning, compromised nutrition, childcare problems and consequent economic cost to families who cannot work. Distance learning/online classes can be effective only if all students have computers, smart phones and high-speed internet access. But mostly students from rural areas and disadvantaged families are affected from education. First, campus closures and online teaching have direct consequences on complete the syllabus and student's preparation. But now is the timing of the COVID-19 spread is affecting how final exams will be managed. No one possibility is to eliminate for final exams, but this would be especially problematic for students who were counting on this year's results to increase their average performance and their final degree classification. Delaying the exams would also generate some problems, as this would lengthen the time to graduation and add uncertainty to the timing of the assessments, and could also affect students through learning loss. The spread of COVID-19 is a



stressful event that may have a direct effect on students' preparation. Now the major problem is how the COVID-19 emergency is likely to affect students' entrance in higher classes in university as well as in job opportunities. Along with the effect of COVID19, closure of educational institutes play an important role in reducing or breaking the chain of spreading of COVID19 with some simple precautions as regularly washing your hands with soap and water, using alcohol-based sanitizers and maintain at least one metre distance between yourself and anyone. So Stay Home Stay Safe till no vaccine discovered.

What is COVID-19

Corona viruses are a large family of viruses which may cause illness in animals or humans. In humans, several coronaviruses are known to cause respiratory infections ranging from the common cold to more severe diseases such as Middle East Respiratory Syndrome (MERS) and Severe Acute Respiratory Syndrome (SARS). The most recently discovered coronavirus causes coronavirus disease COVID-19. What is COVID-19 COVID-19 is the infectious disease caused by the most recently discovered Corona virus. This new virus and disease were unknown before the outbreak began in Wuhan, China, in December 2019.

Symptoms

The most common symptoms of COVID-19 are fever, tiredness, and dry cough. Some patients may have aches and pains, nasal congestion, runny nose, sore throat. These symptoms are usually mild and begin gradually. Some people become infected but don't develop any symptoms and don't feel unwell. Most people (about 70%) recover from the disease without needing special treatment. Around 1 out of every 6 people who gets COVID-19 becomes seriously ill and develops difficulty breathing. Older people, and those with underlying medical problems like high blood pressure, heart problems or diabetes, are more likely to develop serious illness. People with fever, cough and difficulty breathing should seek medical attention. How does COVID-19 spread People can catch COVID-19 from others who have the virus. The disease can spread from person to person through small droplets from the nose or mouth which are spread when a person with COVID-19 coughs or exhales. These droplets land on objects and surfaces around the person. Other people then catch COVID-19 by touching these objects or surfaces, then touching their eyes, nose or mouth. People can also catch COVID-19 if they breathe in droplets from a person with COVID-19 who coughs out or exhales droplets. This is why it is important to stay more than 1 meter (3 feet) away from a person who is sick. Can the virus that causes COVID-19 be transmitted through the air? Studies to date suggest that the virus that causes COVID-19 is mainly transmitted through contact with respiratory droplets rather than through the air. See previous answer on "How does COVID-19 spread?" Can CoVID-19 be caught from a person who has no symptoms? The main way the disease spreads is through respiratory droplets expelled by someone who is coughing. The risk of catching COVID-19 from someone with no symptoms at all is very low. However, many people with COVID-19 experience only mild symptoms. This is particularly true at the early stages of the disease. It is therefore possible to catch COVID-19 from someone who has, for example, just a mild cough and does not feel ill. Can I catch COVID-19 from the feces of someone with the disease? The risk of catching COVID-19 from the feces of an infected person appears to be low.

Impacts of COVID-19

Corona virus effects all fields in all over the world such as Education system, IT and Communication Sector, Labour market outcomes, Manufacturing Market, Transport Department. In this paper we discuss about effects on Rural Education System and Information Technology.



On Education System

After some initial uncertainty in higher education institutions in the India switched to online teaching in March, not without some debate accompanying the decision. Even if technology enables distance learning in a relatively smooth way, the fact that by the end of March most universities decided to close at least part of their campus facilities is likely to have a number of consequences.

On Online assessments

The most realistic alternative is online assessments. But this also comes with some issues. The spread of COVID-19 is a stressful event that may have a direct effect on students' preparation, while the closure of some campus facilities may also impact on their preparation. For example, library closures, though necessary, will be particularly disruptive for some students, and a lack of quiet space to study at home might be a relevant issue, particularly for students from low-income backgrounds. Also, access to technologies at home is particularly crucial in times of online lectures and classes, and this is unlikely to be evenly distributed across income groups.

The design of online assessments should take these aspects into account. To reduce inequalities among students, it may help to allow more time to complete the exam than usual, and to keep a high degree of flexibility in terms of how students can submit the exam. To reduce the risk of plagiarism, as trust relationships are not likely to change in the very short term and blocking students from accessing resources is technically unfeasible, assessments should take into account the fact that exams will be *de facto* open book, and focus more on the re-elaboration of the course material rather than a more simple recall of what was covered in class.

On Conduct of Examinations

First, campus closures and online teaching have direct consequences on exams and students' preparation. The timing of the COVID-19 spread is affecting how final exams will be managed. One possibility is to eliminate final exams, but this would be especially problematic for students who were counting on this year's results to increase their average performance and their final degree classification. Delaying the exams would also generate some problems, as this would lengthen the time to graduation and add uncertainty to the timing of the assessments, and could also affect students through learning loss. Moreover, online exams can have a higher risk of plagiarism, as students can have full access to the whole course material and to other resources.

On Entrance to University

The COVID-19 emergency is likely to affect students' entrance to university. A-level exams are not going to take place this year. The qualifications' watchdog, Ofqual, has consulted on how to receive grades in these qualifications through teachers' evaluation of each students' performance, based on information such as coursework, participation, and previous performance. A-level and equivalent exams have been traditionally used to evaluate university applications. Currently, most students have submitted their application for entry in September 2020 and universities are issuing offers. In a standard year, students will then sit their A-level exams and attempt to meet the requirements of the university offers. This year, as the exams will be substituted by more elaborate forms of grade prediction, it is hard to say how accurate the process will be. But past research shows that grade predictions are not particularly accurate. If this is confirmed by the new prediction process, this could worsen the probability of mismatch between students and universities, particularly in a context where universities may have a bigger incentive this year to make offers to marginal students, due to the possibility of a fall in international student numbers.



Mismatch refers to the situation where students enter ‘lower quality’ universities than their prior attainment would suggest they are able to. Research shows that this affects students from low-income groups more than those from high-income groups. Any increased mismatch could therefore have long-term impacts on social mobility. Furthermore, teacher discretion in the grading of high-stakes tests can have long-term consequences. At the moment, the offer process is on-going, but discussing alternative selection methods that overcome the lack of information related to A-level disruptions is still relevant, in order to prevent similar problems happening in the future. One possibility is that universities provide their own entry tests. An alternative is to extend the weight given to previous assessed results, such as GCSEs, so as to have a more comprehensive overview of the students’ school paths, which can complement the information coming from A-level coursework.

On IT Sector

The significant weaknesses the IT industry is facing now is due to the fall in the economy, as a lot of companies are faced to ask their employees to work from home keeping in the account of the public health concerns. Due to this, there is a massive loss in opportunity for many companies who have international dealers. For example- Apply inc. is estimated to have at least 10% fall in its shares because of the lack of availability of iPhones in the market. The parts that are required to build the iPhones are supposed to come from China, and it is facing a major lockdown. The spread of this deadly virus has caused a lot of tech conferences to get cancelled, which could have been a great partnership opportunity for many companies to expand their horizons. A few of the meetings were shifter to teleconferences, but this won’t have the same reach, and the conference attendees will not be able to have the networking opportunities as they would be attending the actual conference. Due to the cancellation of these major tech conferences, there is an estimated loss of 1 Billion dollars.

Need of Recommendations

Distance-based learning

The digital divide will impact many students’ ability to learn and remain on target for academic progress. Strengthening wireless hotspots outside of libraries and other city facilities (even if the facility is closed) will be critical. Fortunately, the Federal Communications Commission has secured a voluntary commitment from many internet service providers (ISPs) for the next 60 days. The “Keep Americans Connected Pledge” asks that companies not terminate service for residential or small business customers, waive any late fees incurred due to the economic effects of the virus, and open access to public Wi-Fi hotspots to “any American who needs them.” Cities should check if their local-area providers are on the list of pledged companies and remain in contact with them about these commitments and any additional ones they can make. The American Federation of Teachers has published an important Checklist of questions you should ask your institutions district now to ensure everyone is prepared for distance leanings. This checklist covers important questions on topics such as technology access, preparation and training, and technology “help desk” support for students and parents’ writ large, specific to English language learners and for students with disabilities. The AFT site also includes access to the Remote Learning Community for educators, Institute support staff, and parents to engage/share ideas, and lesson plan resources.



Meals to ensure food security for our nation's students

City leaders can bring various city agencies and community-based partners together to identify organizations and facilities that can be used to serve meals for students, such as school or college's sites and the city's recreation centres. Identify non-institutional locations and transportation for non-essential staff who can be deployed to coordinate sites where students can pick up meals. Ensure that your state nutrition and social services agencies are making plans with your institutions district(s) to submit waivers to the federal government to ensure low-income families relying on school/college lunch and school/college breakfast will continue to have access to institutional meals. These measures include waiving eligibility requirements for summer nutrition programs, allowing multiple meals and meal supplements to be offered at a time, flexibility of meal items and for procurement.

Finding safe spaces and/or housing for students while institutions are closed-

City leaders can bring various city agencies and community-based partners together to ascertain facilities that can be used and services that can be redeployed to support safe, productive activities for student and families. This includes recreation centres and gyms, the local Y and other organizations with facilities for safe activities. City leaders can work with higher education institutions to convert part of their on-campus dorms to house students who cannot afford to or are unable to get home, or who do not have a home to go to, with the proviso to practice safe distancing and that campus services would be highly limited. Some hotels are offering severely discounted rates for students who have nowhere to go if their colleges are closed. City leaders can encourage this practice with hotels. The Hope Centre, an NLC partner, offers a very useful toolkit for educational institutions trying to support students' food and housing needs during this crisis.

Ensuring Healthcare Access for students while educational institutes are closed

City leaders can work with partners to ensure access to health care by engaging community health centres, public health departments and other healthcare providers to explore strong access to care, including through tele-health options. Hospitals and healthcare providers are likely to be stretched under the current crisis, and individuals showing symptoms of COVID-19 should always call in advance before going in for services. However, students have a wide range of other health care needs that may require medical attention. Cities have a role to play to promote alternate sources of healthcare and in communicating ways to access them. Many students are uninsured. If they are eligible for CHIP and/or Medicaid, they can get emergency coverage to get screened and treated. Some states may be opening a special enrolment period for health coverage due to the Coronavirus crisis. For students who are not eligible for Medicaid or are undocumented, they can go to a health centre and access care sites with sliding scale fees.

Conclusions

- Closing educational institutes' cafeterias/dining halls will affect students who will go hungry without school breakfast and lunch and after school snacks and suppers.
- Distance learning/online classes can be effective only if all students have computers and high-speed internet access.
- Many students who already face housing and food insecurity are further challenged as their institutions close and force them to leave without access to food pantries on campus.
- Many students who really on campus jobs or work-study job may face unexpected expenses and loss of wages during this time.



- Many students may not have health insurance and access to health care with the closure of student health services on campus.
- Along with the effect of COVID19, closure of educational institutes play an important role in reducing or breaking the chain of spreading of COVID19 with some simple precautions as regularly washing your hands with soap and water, using alcohol-based sanitizers and maintain at least one metre distance between yourself and anyone. So Stay Home Stay Safe till no vaccine discovered.

References-

1. COVID19: Universities mull combined exams for different semesters after situation eases out <https://www.thekashmirmonitor.net/covid19-universities-mull-combined-exams-for-different-semesters-after-situation-eases-out/>
2. "Accionessobre COVID-19" Argentina.gob.ar 20-03-2020 Retrieved 04-06-2020.
3. "GobiernolanzaFndo COVID-19" y dispone para proyectos de investigacioncientifica Retrieved 06-06-2020.
4. Letter expressing support to partners and Member institutions during the COVID-19 crisis. https://oui-iohe.org/wpcontent/uploads/2020/03/comunicado_covid19_fr.pdf
5. The Kerala Government has directed universities to resume resume examinations postponed in wake of the lockdown from May 11. An order has been issued in this regard by the Higher Education Department to all universities in the state. <https://english.manoramaonline.com/news/campus-reporter/2020/04/19/keralauniversities-examinations-in-may.html>
6. "Taskforce, CLAIRE COVID19" CLAIRE COVID19 Taskforce. Retrieved 04-06-2020.
7. "Kupferschmidt, Kai (26 February 2020)" A complete new culture of doing research. "Corona virus outbreak changes how scientistscommunicate". Science AAAS Archivedfrom the original on 04-03-2020 Retrieved 02-05-2020.
8. How higher education institutions can respond to COVID-19 <https://www.eaie.org/blog/how-higher-education-institutions-respond-covid-19.html>
9. Johnson, Carolyn Y. "Chatotic search for coronavirus treatments undermines efforts, experts says" Washington Post Retrived 18-05-2020.
10. Damon Wake (04-06-2020). "World leaders urge cooperations in vaccine hunt raises" Yahoo Finance Retrieved 04-06-2020.
11. Implications for international education in the context of COVID-19. <https://www.nafsa.org/about/about-international-education/public-health-andinternational-education-whats-now-and-whats-next>
12. Jump up to- "Update on WHO solidarity Trial- Accelerating safe and effective COVID-19 vaccine" World Health Organization. 2020-04-27. Retrieved 2020-05-02. It is vital that we evaluate as many vaccines as possible as we cannot predict how many will turn out to be viable. To increase the chances of success (given the high level of attrition during vaccine development), we must test all candidate vaccines until they fail. WHO is working to ensure that all of them have the chance of being tested at the initial stage of development. The results for the efficacy of each vaccine are expected within three to six months and this evidence, combined with data on safety, will inform decisions about whether it can be used on a wider scale. United Nations, World Health Organization. 18 March 2020. Retrieved 02-05-2020.



13. Actions by AUF members in the context for COVID-19. <https://www.auf.org/nouvelles/actualites/covid-19-etablisements-denseignementsuperieur-membres-de-lauf-partenaires-se-mobilisent/>
14. ACU response to the COVID-19 pandemic including invitation to join ACU' virtual networks. <https://www.acu.ac.uk/news/our-response-to-the-coronavirus-covid-19-pandemic/>
15. Presents research findings and a Statement on COVID-19 pandemic. <https://eua.eu/news/461:sharing-research-data-and-findings-relevant-to-the-novelcoronavirus-covid-19-outbreak.html>
16. Letter expressing support to partners and Member institutions during the COVID-19 crisis. https://oui-iohe.org/wpcontent/uploads/2020/03/comunicado_covid19_fr.pdf
17. Implications for international education in the context of COVID-19. <https://www.nafsa.org/about/about-international-education/public-health-andinternational-education-whats-now-and-whats-next>
18. Updates on changes within universities and the higher education system in relation to COVID-19. https://www.vsnu.nl/en_GB/news-items/nieuwsbericht/569-information-on-the-coronavirus-in-relation-to-universities-update-of-19-march.html
19. Communication to students concerning travel. <https://www.janu.jp/eng/globalization/files/20200311-wnew-message.pdf>
20. This open access resource from UNESCO and the Library of Congress contains over 19,000 articles on 193 countries. <https://www.wdl.org/fr/>
21. The World Bank has produced several resources which analyse the global context of the impact of COVID-19 on higher education, providing responses and implications for universities and systems, required actions for course delivery, research and operations, and long-term challenges. <http://pubdocs.worldbank.org/en/621991586463915490/WB-Tertiary-Ed-and-Covid-19-Crisis-for-public-use-April-9.pdf>
22. IIE is organising a series of webinars linked to the Covid-19 crisis. • May 7th 12:00pm EST – 1:00pm EST: Communicating Your Experience Abroad for Future Opportunities. Register for webinar. • May 26 12:00pm EDT – 1:00pm EDT: Maintaining International Partnerships During Crises. Register for the webinar. • June 4 11:00am EST – 12:00pm EST: How Are Campuses Continuing to Recruit International Students? Register for webinar.
23. The AIU (IAU Member) has created a platform for Indian Universities to share the e-content, approaches and strategies adopted by them for delivery of online content. <https://aiubloggroup.wordpress.com/>

Thus it is concluded that child ragpickers are exposed to defiling and unhygienic environmental conditions mostly in the dump yards which worsens their health conditions and moreover to overcome such working conditions they are involved in taking substance abuse which further worsens their health.

References

- Uplap P, Bhate K. Health profile of women ragpicker members of a nongovernmental organization in Mumbai, India. *Indian J Occup Environ Med.* 2014; 18 (3): 140-4.
- Wasnik, S.G, Bhate, K., Mehta. A, Sadawarte. M, Evaluate the factors affecting health seeking behaviours of women rag pickers in Mumbai, *International Journal of Community Medicine and Public Health* Wasnik SG et al. *Int J Community Med Public Health.* 2018 Jan;5(1):156-160
- Upadhyay VP, Rajeswar PM, Srivastav A, Singh K. Eco Tools for Urban Waste Management in India). *J Hum Ecol.* 2005;18(4):253-69.
- Sobiya Naaz, Health Hazards and Social Stigma Faced by Rag-Pickers in Delhi - A Review, *International Journal of Research in Engineering, Science and Management* Volume-2, Issue-5, May-2019
- Mirza, Faheem, and Indulkar, Pranali S. (2018); Rag picking: A factory of violations and infringement of child rights. *Internet. J. Appl. Soc. Sci.*, 5 (3&4) : 247-254.
- Dhanalakshmi, R. and S. Iyer., *Solid Waste Management in Madras City.* Madras, Pattipaggam Ltd. Chennai, India, (1999)

□□□

18

कबीर की वैचारिकता : धार्मिक आस्था और सामाजिक आधार का प्रश्न

डॉ अनिल कुमार
सहायक प्रोफेसर,
हिंदी विभाग
वैश्य महाविद्यालय, भिवानी

अलौकिक सत्ता में विश्वास का नाम ही धर्म है, जो प्रत्येक मनुष्य के हृदय में अनिवार्य रूप से विद्यमान रहता है। प्रबुद्ध हो या अज्ञानी सभी मनुष्य प्रायः ईश्वर में विश्वास रखते हैं। जिस प्रकार मनुष्य का अलौकिक शक्ति में आस्था या विश्वास स्वाभाविक है, उसी प्रकार उस शक्ति के प्रति श्रद्धा, प्रेम या भक्ति—भावना भी मानव हृदय का स्वाभाविक गुण है। यदि हम आस्था, प्रेम एवं भक्ति को धर्म का क्रमगत आवश्यक अंग कहें तो असत्य नहीं होगा। अतः धर्म मानसिक प्रवृत्तियों से प्रेरित अलौकिक शक्तियों में विश्वास एवं उपासना पर आधारित है।

धर्म अपने परम्परागत रूप में लोगों द्वारा समाज की सुव्यवस्था और विकास में सहायक माना जाता है। अतः पूर्व में जो धर्म सामाजिक एकता का परिचायक था, कालान्तर में यह अनेक बुराइयों से ग्रस्त हो गया और वही धर्म सामाजिक एकता के लिए खतरा बन गया। आश्चर्य की बात है कि आज धर्म से जुड़ी विभिन्न प्रकार की परम्पराएँ रूढ़िवादिता को जन्म देती हैं अति रूढ़िवादिता समाज की भलाई के लिए अत्यंत घातक है। इस बात को हम सब जानते हैं फिर भी इसे छोड़ना नहीं चाहते। 'हमारे शिष्टाचार और हमारी प्रथाएँ कुछ अंशों में अपने चिन्तन पर, कुछ अंशों में वंशानुगतक्रम

से प्राप्त होने वाली भावनाओं से उत्पन्न आदतों पर, कुछ अंशों में अपने वातावरण के प्रति क्रमिक और अनजान समायोजन पर, कुछ अंशों में महान व्यक्तित्व वाले लोगों के आकर्षक प्रभावों, कुछ अंशों में मूलतः अज्ञान प्रथाओं पर, और प्रायः कुछ अंशों में विशेष लोगों, समूहों तथा दूसरे लोगों के दबावों पर आधारित होती है। इस तरह से प्राप्त रूप अन्न में परम्परागत बन जाते हैं और फिर से परम्पराएं मनुष्य के लिए स्वाभाविक हो जाती हैं।" मनुष्य चाहकर भी इन परम्पराओं को त्याग नहीं पाता, चाहे वह व्यर्थ तर्कहीन तथा अन्धविश्वासों पर ही क्यों न आधारित हो।

धर्म के नाम समाज में कितनी भी बुराइयाँ दृष्टिगत हो रही हों फिर भी लोग उस पर बहस करना पसन्द नहीं करते बल्कि वे उस पर अन्धविश्वास करते हैं और बड़ी ही श्रद्धा के साथ उसका अनुसरण भी करते हैं किन्तु क्रांति के अग्रदूत को यह बात स्वीकार नहीं थी। वे धर्म की केवल उन्हीं बातों को धारण करने की बात कहते हैं जो वास्तविक हो। तत्कालीन समाज का प्रत्येक व्यक्ति धर्म से जुड़ा हुआ था किन्तु उसका संबंध धर्म के वास्तविक रूप से न होकर बल्कि बनावटी रूप से था। वह अपने पथ से विचलित हो गया था। उसकी आस्था सत्य से हटकर असत्य में संलग्न थी। अहिंसा, त्याग और सत्य का स्थान पशु-बलि, नर-बलि और हिंसा ने ले लिया था जो कबीर के लिए असहनीय था। उन्होंने हिंसा, मूर्ति-पूजा, साम्प्रदायिकता, बाह्याडम्बर, ऊँच-नीच छुआछूत आदि बुराइयों की कड़ी निन्दा की और धर्म के परम्परागत रूप पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया।

प्रायः कहा जाता है कि ईश्वर सम्पूर्ण सृष्टि में व्याप्त है, जीव उसी का अंश है कबीर कहते हैं कि यह कैसी विडम्बना है, जब सभी मनुष्यों को जान है कि प्रत्येक जीव में ईश्वर का निवास है फिर जीव हत्या क्यों? हिन्दू लोग यज्ञ के नाम पर अश्वमेध, नरमेध, गोमेध तथा अजामेध करते हैं, तो मुसलमान स्वभक्षण के लिए जीवों का गला काटते हैं और कहते हैं कि हमने हलाल किया है। इस

तरह देखा जाए तो दोनों अपने-अपने गमन में भटक गये हैं और कुकर्म करते हैं और इमें धर्म बताते हैं। अरे भई जहाँ जीव हत्या हो, वहाँ पाप है। धर्म कैसा?

हिन्दू-मुसलमान दोनों ने ही दया छोड़ दी है और हिंसा के पुजारी बन गये हैं। अन्नर वगैरे इतना है कि एक जीव हत्या को झटका तो दूसरा उसे हलाल बताता है—

“हिन्दू की दया मेहरतुरकन की। दूनों घट सो त्यागी॥
ई हलाल वै झटका मारै। आगि दूनों घर लागी॥”

कबीर को इस बात पर बड़ा आश्चर्य होता है कि एक जीव की मृत्यु के पश्चात् घर के अन्य सदस्य भोजन नहीं करते अर्थात् यदि परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु हो जाए तो लोग खाना, खाना भी पसन्द नहीं करते, किन्तु दूसरी ओर खाने के लिए ही जीव जीव हत्या करते हैं। यह कैसा धर्म है —

“पंडित इक अचरज बड़ होई॥

इक मरि मुअै अन्न नहिं खाये। इक मरे सोझे रसोई॥

कबीर के अनुसार मूर्ति पूजा धर्म नहीं अपितु भ्रम है। वह मनुष्य अज्ञानी है, नादान है, जो जीवित मनुष्य की सेवा नहीं कर सकता और पत्थर के देवालय में रखी प्रस्तर मूर्ति के सम्मुख समृद्धि-कामना करता है। इस अज्ञानी एवं अन्धविश्वासी मानव की पूजा निश्चय ही व्यर्थ जाने वाली है—

“पाहन केश पूतला, करि पूजै करतार।

ठही भरो स^१जे रहे, ते बूड़े काली धार॥”

मध्यकालीन समाज में जाति-पाँति की संकीर्ण भावना की भाँति ऊँच-नीच का भाव भी दृढ़ था। समाज की निम्न जातियाँ मृणित जीवन जीने के मजबूर थी किन्तु कबीर ने इस कुप्रथा पर जबरदस्त चोट की। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि ऊँचे कुल में जन्म लेना उच्चता नहीं है —

“ऊँचे कुल क्या जनमियाँ, जे करणी ऊँच न होई॥

सेवन कलस सुरे भर्या साधूँ निद्याँ सोई॥”

अतः ऊँच और नीच मनुष्य अलग वर्गों के आधार पर बनना है। इस प्रकार स्पष्ट है कि मध्यकालीन भारतीय समाज विभक्तित हो गया था। धर्म के नाम पर अनेकानेक दमघोड़, जकड़बन्दी मान्यताओं ने अपना अधिकार जमा लिया था, जिसका लोग चेतनीय होकर अन्धानुकरण कर रहे थे, किन्तु सत कबीर ने अपने चिटोही प्रकृति में जनमानस का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया और समाज में व्याप्त इन निरर्थक एवं निगूँध मान्यताओं के खंडखंडरण को जनमानस के सम्मुख निःसंकोच भाव से प्रकट किया।

निःसंदेह धर्म और समाज का आरम्भ में घनिष्ठ संबंध है। नियमों एवं मान्यताओं पर आधारित एक संस्थागत रूप में धर्म का समाज शास्त्रीय महत्त्व अन्वयाधिक है, वह अपने नैतिक मान्यताओं के माध्यम से समाज को दृढ़ता प्रदान करता है, व्यक्ति की परिस्थिति के अनुसार निर्देशित एवं नियंत्रित करता है। पाप और पुण्य का भय दिखाकर बुराई से अच्छाई की ओर ले जाता है। किन्तु ये विशेषताएं धर्म के नैतिक मान्यताओं पर आधारित होती हैं। यह धर्म को दूसरा रूप है, कर्मकाण्ड जो पूजा-पाठ, यज्ञ आदि पर आधारित होता है। जिस प्रकार धर्म के नैतिक नियम समाज को प्रभावित करते हैं उसी प्रकार धार्मिक क्षेत्र में प्रचलित कर्मकाण्ड भी सामाजिक जीवन को प्रभावित किये बिना नहीं रह सकते। जैसाकि मध्ययुगीन समाज में धार्मिक क्षेत्र की कर्मकाण्ड बहुलता, सामाजिक क्षेत्र में वर्ण व्यवस्था जन्म जाति-पाति, ऊँच-नीच, शूद्राशूद्र आदि की कट्टरता को बढ़ावा दे रही थी। समाज का विशाल जन मनुष्य वर्ण एवं जाति के आधार पर सभी मानवीय अधिकारों से वंचित कर दिया गया था। इसका एक बड़ा कारण यह है कि कभी-कभी धर्म से जुड़ी ये रुढ़ियां एवं प्रथाएं कुल अंशों में विशेष लोगों के स्वार्थों को पूर्ण करती रहती हैं। इस मन्दर्भ में भारतीय समाज के प्रचलित वर्ण-व्यवस्था का नाम सर्वोपरि है। इस युग में शासक पट पर ब्राह्मण वर्ण आसीन हो गया। इस प्रकार धार्मिक संस्था के पुजारी बन बैठे

ब्राह्मणों ने न केवल नीच वर्णियों का सामाजिक प्रताड़ना पहुँचायी बल्कि उनके धर्म, शिक्षा आदि सभी अधिकारों से भी वंचित रखा। इस प्रकार कबीरकालीन समाज में धर्म और धार्मिक संस्था के संकेतार परिहृत-दुर्गन्धित के जाल में सभी सामान्य जनता बुरी तरह तड़प रही थी। उनकी तड़प को महसूस किया मध्ययुगीन सना-कविषों ने, जिसमें कबीर अग्रणी हैं। उन्होंने मध्यकालीन समाज में प्रचलित समस्त बुराइयों को विरोध किया। अन्वयाय तथा अन्वयाचार के द्विस्तान अन्वय बुराई को तथा हाथ में मरोड़ा लेकर मानवीय अधिकारों की रक्षा के लिए समाज में लड़ने निकल पड़े। कबीर ने पुनर्जीव जन और उनके अहित कर समाज में इसका प्रचार-प्रसार करने वाले परिहृतों को जड़ता का अन्वय निरमलता से उग्रहाम किया है। कबीर ने वेद-शास्त्रों की कड़ी निंदा की है। वे लोक, वेद और कुल को मर्पाँदा तथा उनके अनुकूल किये जाने वाले बाह्यद्वन्द्वों को मनुष्य के गले का बन्धन मानते हैं -

“लोक लाज कुल की मर्पाँदा त्वही गले की फाँसी।।”

उनके अनुसार वेद आदि ऐसा बन्धन अथवा फाँसी है जो त्याग और ग्रहण दोनों के मार्ग में ग्रहण बना हुआ था। यदि वे वेद शास्त्रों पर आधारित आधार-विचारों का त्याग करते हैं तो धर्म पर ग्रहण लगता है, क्योंकि वेदशास्त्रों का मीठा संबंध धर्म से है तथा यदि वे इसका ग्रहण (धारण) करते हैं तो यह उनके अधिकारों को उसी प्रकार ग्रहण की भूमिका निभाता है जिस प्रकार नी ग्रहों में से एक गुरु ग्रह जो सूर्य और चन्द्र का ग्रहण करता है। किन्तु न्यायप्रिय एवं प्रतिकारों व्यक्तिमत्त्व के स्वामी कबीर, ने कभी भी कगनकग में पहुँकर समझौते का मार्ग नहीं अपनाया, बल्कि तर्क और बुद्धि के बल पर सदैव सत्य और न्याय का गम्ता चुना है। कबीर के अनुसार उन वेदशास्त्रों का क्या लाभ जो गले की फाँसी अर्थात् प्रगति में बाधक हो। वे कहते हैं कि उन लोगों को ही स्वर्ग की प्राप्ति हो सकती है, जिसमें इन लोक वेद रूपी फटे को काटकर फेंक देने का साहस है-

“कहै कबीर विनारि। बहुरि नाहि आवई॥
लोक लाज कुल भेटि। परमापद पावई॥”

इसी कारण कबीर ने वेदादि धार्मिक ग्रन्थों को पढ़ने—पढ़ाने के फेर में न पढ़ने की जोरदार नसीहत की है—

“पोधी पढ़ि पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोइ।”

कबीर ने सामाजिक तथा आध्यात्मिक दोनों ही पक्षों के लिए भक्ति का ही मार्ग चुना है क्योंकि जीव के पूर्ण ईश्वरोन्मुख होते ही आध्यात्मिक जगत की एकात्म स्थिति उसके आचरण में अपने आप उतर जाती है। फिर उच्च और निम्न का भाव समाप्त हो जाता है। शुद्ध आचरण युक्त व्यक्ति अधवा सच्चा साधक कभी भी वर्ण, जाति, लिंग आदि के आधार पर मानव—मानव में भेद नहीं कर सकता। फिर धर्म के नाम पर भेद—भाव करना तथा मानव को उसके अधिकारों से वंचित रखना तो निराधार सिद्ध होता है। जो धर्म मानव को उसके अधिकारों से वंचित करे वह धर्म नहीं बल्कि अधर्म कहलायेगा। इतनी धार्मिक बुराइयां करने के पश्चात् भी कबीर धर्म को बुरा नहीं बताते। कबीर के मतानुसार —

“वेद कतेब कहौ क्यूँ झूठा, झूठा जोनि विचारै।”

अतः स्पष्ट है कि कोई भी धर्म बुरा नहीं होता बल्कि वह संस्था से संयुक्त होकर संस्थागत रूप धारण करता है और मठ तथा मठाधीश के अधीन हो जाता है तब उसमें अधार्मिकता के तत्व विकसित हो जाते हैं।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि धार्मिक संस्थाओं तथा मानवीय अधिकारों का आपस में घनिष्ठ संबंध है। यह उसक पर गहरा प्रभाव डालते हैं। धार्मिक संस्थाओं में सामाजिक कल्याण का भाव छुपा होता है। अतः ये संस्थाएं सदैव ही मानव व्यवहारों को नियंत्रित एवं निर्देशित करती हैं, किन्तु कभी—कभी ये संस्थाएं ही धार्मिक मुखौटा पहनकर मानवीय सामाजिक अधिकारों का शोषण भी करती हैं। कबीर ने इन्हीं पृणित धार्मिक मान्यताओं के प्रति खिन्नता प्रकट की और इसी कारण वे

पाण्डित—मुल्ल दवाग लिखी हुई बाना का शाश्वत
आगे बढ़ गये हैं।

सन्दर्भ सूची—

1. जे.एम. मेकेन्जी, समाज दर्शन की स्पष्टीकरण, प्र. संव १९६२ पृ० ४०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
2. डॉ० सावित्री शुक्ल, संत साहित्य की सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, अगस्त १९६३, विश्वविद्यालय हिन्दी प्रकाशन, लखनऊ पृ० ३४
3. वही पृ० ४५
4. डॉ० श्याम सुन्दर दास (संपा) कबीर ग्रंथावली २४वां संस्करण सं. २०६१, नागरी प्रचारिणों सभा, वाराणसी पृ० ३४
5. वही पृ० ३७
6. प्रदीप सक्सेना नवजागरण इतिहास और चेतना पृ० १६८ “पहल”, १०१, रामनगर आधारतल, जबलपुर
7. आचार्य महन्त गंगाशरण (संपा) महाबोजक प्र. सं २०५५ वि०, पृ० ७२६, कबीर बाणों प्रकाशन केन्द्र श्री सदगुरु, कबीर मंदिर
8. वही पृ० २८२
9. डॉ० श्यामसुन्दर दास (संपा) कबीर ग्रंथावली २४वां संस्करण सं. २०६१, नागरी प्रचारिणों सभा, वाराणसी पृ० ८४

□□□

तरह एक एन०जी०ओ० की माध्यम से अपना जीवन यापन भी कर रही है तथा महिलाओं के विकास के लिए भी काम रही है और बच्चों के टीकाकरण कार्यक्रम पर भी बहुत मेहनत की है। इसलिए इमे वर्ष २००५-०६ का राष्ट्रीय युवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। (The Times of India, Patna, Ranchi, National January 02, 07 के अंक में प्रकाशित) ऐसा इसलिए संभव हो सका क्योंकि उसके अन्दर दृढ़ इच्छा शक्ति कूट-कूट कर भंग हुआ था।

वर्ष २००६ में बिहार में नितीश कुमार सरकार ने महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए बिहार के ग्राम पंचायत आम चुनाव में ५० प्रतिशत का आरक्षण दिया ताकि महिलाओं के विकास के लिए एक Platform मिल सके। इसी वर्ष आर्थिक रूप से महिलाओं को सुदृढ़ करने के लिए शिक्षकों के लाखों पदों की नियुक्ति में ५० प्रतिशत का आरक्षण दिया गया ताकि मेधावी युवतियों को अपने जीविका उपार्जन के लिए एक धन संचित हो सके इस बात को बिहार विधान परिषद में कार्यकारी सभापति प्रो० अरुण कुमार ने भी स्वीकारा है। (The Times of India, Patna, Ranchi, National January 30, 07 के अंक में पृष्ठ सं०-०३ पर प्रकाशित)

कुल मिलाकर उपर्युक्त तथ्यों के अवलोकन से यह बात स्पष्ट हो रहा है कि महिलाओं को सशक्त करना आज के युग की एक अहम पुकार है और हमारे समाने जो पश्चिमी देशों की चुनौति है उसे तभी जाकर सामना कर सकते हैं। इस प्रकार बिहार के सम्पूर्ण भारतवर्ष में एक ऐसा पहला राज्य है जहाँ नितीश कुमार सरकार ने महिलाओं को सशक्त करने के लिए बिगुल बजा दिया है। अब देखना है कि हमारे अधिकारी और हम जनता इसमें कहां तक सफल जो पाते हैं क्योंकि हमने अभी जिस मुद्दा का बिगुल बजाया है वह एक ज्वलन्त मुद्दा है और इसे हमें बिम करने के लिए बहुत कड़ा संघर्ष करना पड़ेगा तभी जाकर बिहार की महिलाओं को सशक्त करने का आन्दोलन अपना यथार्थ रूप ले पाएगा।

नयी कहानी और कमलेश्वर

डॉ. अनिल कुमार

महायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
वैश्य महाविद्यालय, भिवानी

आधुनिक युग की सबसे लोकप्रिय और सशक्त साहित्यिक विधा है कहानी। हिंदी साहित्य में भी कहानी को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। जीवन से सर्वाधिक गहरा संबंध रखनेवाली एक विधा है कहानी। जीवन-यथार्थ को कल्पना के साथ मिलाकर, कहानीकार उसे छोटी-छोटी इकाइयों में बदलकर हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं। कहानी की अपनी एक दीर्घ परम्परा रही है और यह परम्परा संस्कृत साहित्य से हिंदी में आती है। हमारे पौराणिक कथानक इस परम्परा के उत्स है। लेकिन हिंदी में कहानी का जो स्वरूप आधुनिक काल में उभरकर आया, वह सर्वथा नवीन रहा। बंग महिला की दुलाई वाली कहानी हो या इशा अल्ला खाँ की रानी कतेकी की कहानी अथवा किशोरीलाल गोस्वामी की इन्दुमती हो सब की सब मानव जीवन को रूपायित करती है। लेकिन हिंदी की पहली कहानी किसे माना जाए यह प्रश्न आज तक विवादित है, आलोचकों ने अपने ढंग से इस प्रश्न का उत्तर देने की कोशिश की है। कोई बंग महिला की दुलाईवाली को हिंदी की पहली मौलिक कहानी मानता है तो कोई किशोरी लाल गोस्वामी की इन्दुमती को हिंदी प्रथम मौलिक कहानी के शिखर विराजित करता है, किसी ने आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की कहानी ग्यारह वर्ष का समय को प्रथम मौलिक कहानी माना है। हिंदी की पहली मौलिक कहानी को लेकर आलोचकों के बीच विवाद के कुहासे को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की ये पंक्तियाँ छाँटती हुई दिखाई देती हैं— यदि इन्दुमती किसी बंगला साहित्य की छाया

नहीं है, तो हिन्दी की यही पहली मौलिक कहानी ठहरती है, इसके उपरान्त ग्यारह वर्ष का समय फिर दुलाईवाली का नम्बर आता है। जो भी हो, इसमें कोई सन्देह नहीं कि भारतेन्दु युग में ही हिन्दी कहानी का आविर्भाव हुआ और उसने अपना एक अलग स्वरूप धारण कर लिया।

भारतेन्दु युग में यह विधा अपना शैशव काल बिताकर जब प्रेमचन्द युग में प्रवेश करती है, तो उस समय तक उसे प्रौढ़ रूप मिल चुका होता है। प्रेमचन्द ने हिन्दी कहानी को यथार्थ रूप में निरूपित किया। हिन्दी कहानी के इस प्रथम चरण में प्रसाद ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। उनकी कहानियों में जीवन के सामान्य यथार्थ को कम और स्वर्णिम अतीत के गौरव, मसृण, भावुकता, कल्पना की ऊँची उड़ान तथा कात्यात्मक चित्रण को अधिक महत्त्व मिला है। प्रेमचन्द युग के सशक्त कथाकार यशपाल ने हिन्दी कहानी को एक नया मोड़ दिया। उनकी कहानियों में मार्क्सवाद का पुट मिलता है। प्रेमचन्द की ही परम्परा के सशक्त कहानीकार जैनेन्द्र ने व्यक्ति-मन की शंकाओं, प्रश्नों तथा गुत्थियों को मनोविज्ञान के धरातल पर निरूपित किया। इसकी कहानियों का मुख्य विषय नारी है।

हिन्दी कहानी जब पाँचवे दशक में कदम रखती है तो उसका स्वरूप बदला-बदला दिखाई देता है। सन् १९५० के बाद कविता के क्षेत्र में नयापन दिखाई देने लगा। हिन्दी कहानी भी अपने नये रूप में उभर रही थी। वस्तु और शिल्प दोनों दृष्टियों से सन् १९५० की कहानी एक नवीन कलेवर लेकर पाठकों के सामने आती है। यहाँ तक आते-आते उसने आधुनिकता की चुनौती स्वीकार कर ली थी। कथाकार भी पुरानी लीक से हटकर कहानी सृजन में अपना योगदान दे रहे थे। इस प्रकार की नूतन प्रवृत्ति देखकर आलोचक हिन्दी कहानी को नयी कहानी के नाम से सम्बोधित करने लगे। नयी कहानी के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए इन्द्रनाथ मदान का यह कथन काफी न्यायसंगत लगता है — आज इसके पुराने बंधन टूट चुके हैं, जीवन के पुराने सत्य गिर चुके हैं। इसलिए आज जीवन में नए सन्दर्भों की खोज है, अभिव्यक्ति के नये माध्यमों की आवश्यकता है।

वरगुन: नयी कहानी अन्धानक से चर्चा में नहीं आई। सन् १९५० के बाद जब परम्परा से हटकर आधुनिकता से सम्पृक्त नूतन जीवन मूल्यों को अपने में समेटे हुए यह विधा सामने आयी, तो उसके नूतन स्वरूप को देखकर समीक्षकों ने अपने-अपने ढंग से नयी कहानी को परिभाषित किया। नयी कहानी का कहानीकार पारम्परिक मूल्यों को छोड़कर मानव के यथार्थ जीवन का चित्रण करने में विश्वास रखता है। इस संबंध में गजेन्द्र यादव का यह कथन तर्कपूर्ण लगता है — शायद यही कारण है कि हमारे इस कथाकाल की सारी कहानियाँ नये संबंधों के बनाने की कहानियाँ नहीं, संबंधों के टूटने की कहानियाँ हैं, संघर्षों से टूटा हुआ व्यक्ति अधिक से अधिक अकेला, अजनबी होता चला जाता है, पिछली पीढ़ी के प्रति अविश्वास, घृणा और आपस में अपरिचय, अनिश्चय .. यही यथार्थ नयी कहानी के माध्यम से बार-बार सामने आता है।

नयी कहानी अपने पूर्व की कहानी से पूर्ण से भिन्न नहीं है। किसी न किसी से उसका उससे संबंध है क्योंकि उस समय भी पुरानी पीढ़ी के कहानीकार जिस तरह की कहानी लिख रहे थे, वह नयी कहानी से किसी रूप में कम नहीं थी। रामवश की यह दृष्टि नयी और पुरानी कहानियों के बीच सेतु का काम करती है— इन कहानियों में नये और पुराने का संघर्ष है ही नहीं (क्योंकि जीवन में नहीं था) एक अजीब-सी स्थिति है कि दोनों पीढ़ियाँ घर में एक साथ मिलती ही नहीं। दोपहर का भोजन भी एक के बाद एक चुपके से कर जाते हैं।

नई कहानी के कथाकार अतीत को लेकर पूरी तरह से मुक्त थे। उनके सामने वर्तमान मौजूद था, जो संघर्ष और चुनौतियों से भरा पड़ा था। इस दौर में ऐसी कहानियों की रचना हुई, जो वर्तमान को बड़े यथार्थ ढंग से प्रस्तुत करती है। कर्मनाशा की हार, गुलकी बनों, गुलरा के बाबा, आदि रचनाएं इस दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि नयी कहानी नूतन दृष्टिकोण को लेकर हमारे सामने आती है और समाज के यथार्थ को दुनिया के सामने पेश करती है। उसमें नूतनता के प्रति दुराग्रह बिल्कुल

दिखाई नहीं देता। वह जीवन की जगजगत्ताओं, सामाजिक विरासतियों, कुम्भमय्य अवसर, पति-पत्नी के बीच तनाव को सहज रूप में निरूपित करती दिखाई देती है।

नयी कहानी के पुणेबा कमलेश्वर हिन्दी कहानी को एक ऐसे मोड़ पर लाकर खड़ा कर देते हैं जहाँ कहानी अपने पुणेपन को छोड़कर एक नये शिल्प में ढलती दिखाई देती है। उनकी कहानियों का कथ्य पूर्ववर्ती कहानियों के कूर् से अलग दिखाई देता है। लीक से हटकर नूतन मार्ग अपनाते उनकी कहानियों की प्रकृति है। राजा निखरिया, करवे का आदमी, गर्मियों के दिन, नीली झील, आदि कहानियाँ एक नयापन लिए हुए हैं। एक जगह उन्होंने परम्परागत मूल्यों के प्रति अपनी असाहमति प्रकट भी की है— जीवन और उसके परम्परागत मूल्यों के प्रति उन पात्रों की असाहमति ही मेरी असाहमति है।

सच तो यह है उनकी इस दौर की कहानियों में नयी कहानी के सारे लक्षण दिखाई देते हैं। इनमें जहाँ शिल्पगत नूतनता है, वहीं कथ्यगत विशिष्टता भी है। आदर्शों के प्रति अनावश्यक लगाव इन कहानियों में कदाई दिखाई नहीं देता। कहानियों में पात्र वहीं करते दिखाई देते हैं जो परिस्थितियाँ उनसे करवाती हैं। नयी कहानी दो दिशाओं में आगे बढ़ती है। पहली दिशा में जाने वाली कहानियाँ ग्रामीण जीवन की बड़ी सहजता एवं ईमानदारी के साथ चित्रित करती हैं और दूसरी दिशा में जाने वाली कहानियाँ नगरीय जीवन चित्रण करती हैं। लेकिन कमलेश्वर की कहानियों में कस्बाई जीवन अधिक देखने को मिलता है। करवेका आदमी कहानी में कस्बाई संस्कृति और संस्कार देखने को मिलते हैं। गर्मियों के दिन कहानी में कमलेश्वर अपने युग के जीवन मूल्यों की तलाश करते दिखाई देते हैं और इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि आज के जीवन में जीवन मूल्य खण्डित हो चुके हैं।

कस्बाई जीवन का चित्रण करने वाले कथाकार कमलेश्वर सन् १९६० तक आते-आते महानगरीय जीवन को नजदीक से देखने लगे और महसूस करते हैं कि यहाँ तो अपनापन धीरे-धीरे लुप्त-सा हो गया है। संवेदन-शून्यता और कृत्रिम जीवनशैली ने महानगरीय

जीवन को पुणे तरह जकड़ लिया है। दिल्ली में एक भौत कहानी पूर्ण रूप से संवेदनशून्यता की कहानी है। रोड सीवान चन्द्र की मृत्यु पर पड़ोसियों को दुखी होने को मौन कहे, उन्हें इस बात की चिन्ता अधिक सता रही है कि कहीं इस कड़ी सर्दी में शव यात्रा में शरीक न होना पड़े और जब लोगों को शरीक होना पड़ा, तो वहाँ लोगों में प्रसंग से हटकर बाने होती है। लेखक महसूस करता है कि यह संवेदन शून्यता गाँवों में व करवों में कहीं देखने को नहीं मिलती। खोई हुई दिशा कहानी में हर व्यक्ति एक दूसरे को अजनबी दिखाई देता है। अपनापन कूटने पर भी नहीं मिलता। कहानी का पात्र चन्द्र इस पीड़ा को दिल से महसूस करता है। करवे से दिल्ली आने तक के सफर में वह इतना अकेला हो जाता है कि वह अपनी पहचान भी खोने लगता है। सच तो यह है कि महानगरीय जीवन में हर व्यक्ति अकेला है। अपने पन की भावना धीरे-धीरे लुप्त हो गई। तलाश कहानी में बदलते जीवन मूल्यों की और लेखक ने संकेत किया है। विभवा माँ को अपनी युवा बेटी की चिन्ता कम, अपने सुख की चिन्ता अधिक है। बेटी अपनी माँ के अन्दर वात्सल्य की तलाश करती है। वह अपनी माँ के विषय में कहती भी है — उनके तन से ऐसी अद्भूत गंध उड़ती थी, जो सबको आनी तरफ खींचती थी। एक तरफ मागृत्व है, तो दूसरी तरफ नारी। दोनों के बीच लगातार संघर्ष होता रहता है और अन्ततः नारी जीत जाती है और विभवा माँ आधुनिक परिवेश में अपने आप को ढाल लेती है और आत्मसुख के लिए मातृत्व का त्याग कर देती है। महानगरों में जीवन मूल्य, पारम्परिक संबंध, नैतिकता सब के सब विखण्डित हो चुके हैं। जहाँ मूल्य हैं ही नहीं वहाँ उनकी तलाश करना बेमानी है। वस्तुतः आज के युग मूल्य अपनी पहचान खो चुके हैं। संबंध अपनत्व के मोहताज हो गए हैं। हर व्यक्ति सिर्फ अपने बारे सोचता है। समाज या देश उसके लिए कोई मायने नहीं रखता।

कमलेश्वर के तीसरे दौर की कहानियों में महानगरीय जीवन ओर खुलकर सामने आता है। इस दौर की कहानियों में व्यक्ति संघर्ष करता दिखाई देता है। हर व्यक्ति अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए संघर्ष

करना दिखाई देता है। हर वस्तु, स्थिति व संकेतों को भौतिकता की तराजू में तोले जाने लगा। सांस्कृतिक संकट और संवेदनशून्यता मानवीय मूल्यों को आहत करते दिखाई देते हैं। नागमणि कहानी देख में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं बेईमानी पर तीखा प्रहार करती है। इस दौर की बयान कहानी समाज की जटिलताओं को बड़े यथार्थ रूप में सामने लाती है।

असक्ति कहानी युवा पीढ़ी की असाहाय स्थिति को रेखांकित करती है। वस्तुतः यहाँ तक पहुँचते-पहुँचते कमलेश्वर की कहानियों में सामान्य आदमी की विवशता, उसका मोहभंग, उसकी असाहाय स्थिति, दूर व्यवस्था में उसका पिसता आत्मविश्वास सबके सब अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करते दिखाई देते हैं। अपने इस दौर की कहानियों के विषय में कमलेश्वर जी स्वयं अपना ब्यान देते हैं— यातनाओं के जंगल से गुजरते मनुष्य की इस महायात्रा का जो सहयात्री है, वही आज का लेखक है। सह और समान्तर जीने वाला आदमी के साथ।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि कमलेश्वर का कहानी-लेखन नयी कहानी-आन्दोलन को सम्बन्धित कर उसे जीवन्तता प्रदान करता है। आधुनिकता-बोध उनकी कहानियों का उत्स है। नयी कहानी को स्वस्थ स्वरूप प्रदान करने में कथा कमलेश्वर ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी कहानियाँ हर मोड़ पर समाज के यथार्थ को दिखाती नजर आई हैं। नई कहानी के पुरोधा कमलेश्वर भारतीय समाज यथार्थ दृष्टा है। समाज के कट्टर यथार्थ का पर्दाफास करने में कमलेश्वर ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इनकी कहानियों में आदर्शों विल्कुल को विल्कुल शोषा नहीं गया। उन्होंने समाज के यथार्थ को पाठकों के सामने रखा और अप्रत्यक्ष रूप से संकेत करते हैं कि इस यथार्थ को अनदेखा करके समाज को स्वस्थ स्वरूप प्रदान नहीं किया जा सकता। संघर्ष से पलायन करके व्यक्ति अपने अस्तित्व की रक्षा नहीं कर सकता। उनकी कहानियों का यथार्थ समाज का यथार्थ है। उनकी कहानियाँ यथार्थ के भगवत पर खड़ी नजर आती हैं। ये यथार्थ और संघर्ष के कथाकार हैं कल्पना के पंख लगाकर उड़ान भरना उनकी रचनाधर्मिता के

प्रतिकूल हैं। उनकी कहानियों का सही मूल्यांकन करने हुए डॉ० बच्चन सिंह का यह कथन ध्यातव्य है — कमलेश्वर इस कालखंड के अत्यन्त सशक्त कथानीकार हैं। यह शक्ति स्वभावियत में अलम होवे और भाषा-संस्कृति के संयोग में निहित है। सम्पूर्ण संस्कृति में इतनी निरसता किसी अन्य कथानीकार में नहीं जा पायी है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची—

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास — आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी पुस्तकालय ३४४
2. हिन्दी कहानी : पहचान और परम्परा — डॉ० इन्द्रनाथ मदान पृष्ठ २४
3. एक दुनिया : समानान्तर — मजेन्द्र यादव, पृष्ठ ३१
4. हिन्दी कहानी : पहचान और परम्परा — डॉ० इन्द्रनाथ मदान पृष्ठ १३५
5. आधुनिक हिन्दी कहानी — गंगा प्रसाद विमल पृष्ठ १३०
6. मेरी प्रिय कहानियाँ — कमलेश्वर, गजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली पृष्ठ ६
7. वही पृष्ठ १४०
8. वही पृष्ठ ६
9. हिन्दी साहित्य का इतिहास — डॉ० नगेन्द्र पृष्ठ ६९२

□□□

सुनीता जैन के काव्य में मानव मूल्य

- *डॉ. अनिल कुमार **कमलेश(शोधार्थी)
*असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, वैश्य कॉलेज भिवानी।
**शोधार्थी, हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्विद्यालय, रोहतक।

एक सश्रे रचनाधर्मी, कवि या साहित्यकार के अस्तित्व का सारतत्त्व मुख्य रूप से उसके मूल्य-विषयक चिन्तन और सृजन में व्याप्त रहता है; जो कवि या साहित्यकार जीवन-मूल्यों के प्रति समर्पित हुए बिना सृजन कार्य नहीं करता उसकी रचनात्मक दृष्टि प्रायः निर्मूल ही होती है। वस्तुतः कवि के सृजन की सार्थकता जीवन मूल्यों की अनवरत तलाश में होती है। डॉ. सुनीता जैन ने एक शोधक एवं कवि के रूप में अपने सृजन में 'मूल्यों' के प्रति गहन सरोकारों को साहित्य जगत के समक्ष प्रस्तुत किया है। उनकी मान्यताएं व्यापक रूप में उनके सृजन में समाहित हुई हैं। प्रमोद त्रिवेदी के शब्दों में- 'सुनीता जी आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता के आतंककारी प्रभावों से बची रही। आधुनिकता योंही पर आदर्शवादी भी है। जहां तक दोनों का निर्वाह हो सका किया पर यदि किसी एक को चुनने का अवसर आया होगा उन्होंने मूल्य और मर्यादा को ही चुना होगा। यह सब उनके लेखन में साफ झलकता है।' सुनीता जी की दीर्घकालीन साहित्य साधना का मुख्य उद्देश्य श्रेष्ठतम जीवन मूल्य प्रेम, दया, करुणा, ममता, विश्वमैत्री, सत्य, सेवा, सहानुभूति, कर्तव्य परायणता, उत्साह आदिको उजागर करते हुए जीवन संघर्षों से थके-हारे मानव को कुंठा एवं निराशा के कुएं से निकालकर जीवन-संघर्षों से जूझने की क्षमता प्रदान करना है।

डॉ. सुनीता जैन के काव्य में मुख्यतः प्रवृत्ति प्रेम, सौंदर्य, जीवनोत्साह, आधुनिक भावबोध, सभ्यता और संस्कृति, त्याग आस्था, विश्वास, उत्कट जीजिविपा आदि भावानुभूतियाँ अभिव्यक्त हुई हैं। वे मानव मूल्यों की मजग प्रवृत्ति के रूप में जीवन पर्यंत साहित्य साधना करने में लगी रही। जीवन मूल्यों पर प्रकाश डालने वाली उनकी विभिन्न कविताओं में उनके जीवन दर्शन की एक आलोकमयी दृष्टि उजागर होती है। सुनीता जी को उच्च मानव मूल्यों के प्रति अनुराग तो है ही इसके साथ ही उनके पोषण, रक्षण और समृद्धि की आकांक्षा भी अत्यन्त बलवती है जिसे उनके काव्य में स्पष्ट रूप में देखा जा सकता है। उनका काव्य सत-पथ प्रदर्शित करने के कारण वरण करने योग्य है।

मूल्य शब्द का प्रयोग विस्तृत एवं वैविध्यपूर्ण है। मूल्य परिवर्तनशील होते हैं; क्योंकि इनका सम्बन्ध परिवेश, कालचक्र और समाज से रहता है। इसलिए ही विद्वान अलग-अलग तत्त्वों के मूल्यों को स्वीकार करते हैं। डॉ. रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरुण' के विचारानुसार- 'जिन उपकरणों या तत्त्वों से मानव-जीवन अर्थदान, महत्त्वपूर्ण या महिमाशाली होता है वे ही मानव-जीवन के वास्तविक मूल्य हैं। मानव-जाति का इतिहास बताता है कि पशु-सुलभ वृत्तियों से ऊपर उठने का प्रयत्न करते हुए ही मनुष्य ने अपनी मनुष्यता को पाया है। अतः ये उदात्तवृत्तियाँ ही मानवमूल्यों-सत्य, शिवम, सुन्दर की निर्णायिका हैं।' जिसमें सत्य उनका आधार है, शिव उनका लक्ष्य है और सुन्दर उस लक्ष्य तक पहुँचने का साधन है। अतः इन तीनों मानव मूल्यों के समन्वय से ही श्रेष्ठ कला का निर्माण होता है। यह मानव जीवन को सुरक्षित और व्यवस्थित बनाए रखने के लिए आवश्यक है। यह आवश्यक नहीं है कि कवि मानव-मूल्यों को अभिव्यक्ति प्रदान करते हुए सीधे तौर पर 'मूल्य' शब्द का प्रयोग करें। उसके सृजन में तो ये पुष्प में सुगंध की भांति समाये होते हैं। इस दृष्टि से जब हम कवयित्री सुनीता जैन के काव्य का अध्ययन करते हैं तो पाते हैं कि उनका सम्पूर्ण साहित्य मानव-मूल्यों की सुगंध को अपने में समाहित किये हुए है।

वास्तव में वही साहित्य चिरंजीवी होता है जो मानव-जीवन को प्रत्येक देशकाल में अपने अमृत-तत्त्व से सींचने की क्षमता रखता है और यह क्षमता तभी आती है जब मानवीय मूल्यों का संवर्धन किया जाता है। इन मानव-मूल्यों से ही मनुष्य और समाज के बीच सामंजस्य स्थापित होता है। मूल्य ही जीवन में व्याप्त कटुता को मृदुता में परिवर्तित करके विश्व बंधुत्व की भावना को बल प्रदान करते हैं। हिन्दी साहित्य के विकास पर विहंगम दृष्टिपात करने पर कहा जा सकता है कि यद्यपि हर कालखण्ड में परिवर्तन हुआ है किन्तु प्रेम, करुणा, दया, समता, सद्भाव और अहिंसा जैसे वृहत्तर मानवीय मूल्य प्रत्येक कालखण्ड में अपनी उपस्थिति दर्ज करते हैं। पूर्व-मध्यकाल में तो मनुष्य को उदार एवं उदार बनाकर महामानव की पदवी पर प्रतिष्ठित करने का उपक्रम रहा। आधुनिक काल में भी परिवर्तन की आंधी के बीच रचनाकार का लक्ष्य मानव जगत को और अधिक सुन्दर, समृद्ध, समुन्नत बनाना रहा है किन्तु इसके पश्चात् भी साहित्य जगत में- 'सांस्कृतिक संकट या मानवीय तत्त्व के विघटन की जो बात बहुधा उठाई जाती रही है उसका

तात्पर्य यही रहा है कि वर्तमान युग में ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न हो चुकी हैं कि जिनमें अपनी नियति के इतिहास निर्माण के सूत्र मनुष्य के हाथों से छूटे हुए लगते हैं। मनुष्य दिनों-दिन निरर्थकता की ओर अग्रसर होता प्रतीत होता है। यह संकट केवल आर्थिक और राजनीतिक संकट नहीं है वरन् जीवन के सभी पक्षों में समान रूप से प्रतिफलित हो रहा है। यह संकट केवल पश्चिम या पूर्व का नहीं है वरन् समस्त संसार में विभिन्न धरातलों पर विभिन्न रूपों में प्रकट हो रहा है।³ आज कुंठा, संक्रास, घुटन, द्वेष, बाजारवाद, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, अजनबीपन, अकेलापन, धार्मिक विखंडनवाद, लिंगानुभेद, बलात्कार, शोषण, यौन शोषण, भुखमरी, भाषावाद-प्रान्तीयवाद, निरक्षरता, हिंसा, कन्याभूषण हत्या, दहेज उत्पीड़न, आतंकवाद जैसी बुराइयां समाज को विद्रूप बना रही हैं। सुनीता जैन एक ऐसी कवयित्री हैं जो वस्तुजगत की विभीषिकाओं तथा विसंगतियों से भलीभांति परिचित हैं किन्तु उनकी तत्त्वभेदी सौन्दर्यमयी दृष्टि सृष्टि के मूल में विद्यमान हर्ष, उल्लास एवमसौंदर्य को देख पाने में सर्वथा समर्थ हैं। वे अपनी 'क्यों कह दूँ' कविता में लिखती भी हैं कि-

"यदि मैंने दुष्यंत संग
अनाघ्रातपुष्प

अनवीधे मुक्ता देखे हैं

तो मैं क्यों कह दूँ कि

वस स्तेनगन चलते हैं

जीते जी मरते हैं

जीवन यह कुओं है

अंधे हो गिरते हैं।"⁴

आज के त्रासदीपूर्ण वातावरण में भी कवयित्री जीवन को कुएं की भांति न मानकर अनेक सम्भावनाओं का द्वार मानती हैं। इनकी यही जीवन दृष्टि मनुष्य को निरंतर श्रमशील बने रहने का संदेश देती है। उनकी 'तौर-तरीके' कविता श्रमशील मानव के सम्बन्धों में प्रेम प्रगाढ़ता को दर्शाती है-

"जब वह खोदता है धरती/अपने बहते स्वेद में

स्त्री खोजती है जल सौ नदियों की शीतलता में

जब वह चलता है/हल के पीछे/ताज़े बीज उगाने

स्त्री उगती है जल्दी-जल्दी/अंकुर में, उसको हर्षाने।"⁵

सुनीता जी के काव्य में दृष्टिगोचर ये मानवीय मूल्य ही हैं जो अजनबीपन के युग में अपनेपन, प्रेम, स्नेह के बीज बोते हैं। यह सुनीता जैन के काव्य की उपलब्धि ही है कि वे समय की विपरीत धारा में भी अपना धर्म निभाने के लिए संकल्पबद्ध हैं। मानव की आस्था एवं विश्वास को सहेजे परम्परागत रूप से पूज्य सूरज ही उनके विश्वास का आधार है 'सूरज आया था कल' कविता में वे कहती भी हैं कि-

"इन अकारण विश्वासों का/कारण क्या है/नहीं पता

सूरज आएगा कल/क्योंकि सूरज/आया था कल

उससे पहले कल/उससे/उससे/उससे पहले

हर कल/आया था सूरज/आएगा कल

कल तुमने/मुझको याद किया

इसका केवल यही प्रमाण/कि मैंने विश्वास किया।"⁶

सूरज का उगना स्वयं में ही कर्म करने को प्रेरित करता है। सुनीता जैन इसी कर्म को जीवन मूल्य के रूप में स्वीकारती हैं इसलिए ही वे अपनी कविता 'कोर किसी सपने की' में कर्म करने के लिए संकल्पबद्ध दिखाई देती हैं-

"पल्ले में कुछ तो।

गांठे होगी ही

खुलती कुछ यादों की

डलती संकल्पों की।"⁷

उनकी 'कहीं न मेल होगा' कविता भी कर्म के मार्ग पर चलते हुए समय के सदुपयोग पर बल देती है। वे लिखती हैं कि-

"जब तक यह घनघोर

वरखा सीमित है कुछ रोप, कुछ उगा

क्यों नहीं लेते?"⁸

यह रोपना, उगाना मनुष्य के हाथों में होता है। वह निरन्तर संघर्षरत रहकर हर लक्ष्य को पा सकता है। कवयित्री जीवन में श्रेष्ठ मूल्यों की स्थापना के लिए जीने के पक्ष में रात-रात भर जागकर काव्य सृजन करती हुई कहती भी है कि-

"शायद जीने के पक्ष में
फिर-फिर अपना यों
हाथ खड़ा करती हूँ।"⁹

यही जिजीविषा मानवीय मूल्यों में से एक है जो संघर्षमयी स्थितियों से जूझने की क्षमता प्रदान करती है। इसी तरह प्रेम भी मानव जीवन का वह महामूल्य है जो हर परिस्थिति में जीने की प्रेरणा देता है इसलिए ही कवयित्री मानव मन को प्रेम का गीत गाते रहने के लिए कहती है यहाँ सुनीता जी की 'ढाई अक्षर प्रेम के के' कविता दृष्टव्य है-

"ढाई अक्षर/प्रेम के/मन गाना
दोहराना/कभी झील में/कभी कमल में
कभी हंस के धवल-युगल में/इसको सुनने जाना
मन गाना/दोहराना जब/शंपा से/टूट चले/अम्बर का तन
कांधे चढ़ निज/चले प्रिय जब
घर के हो जब/कपाट बंद

ढाई अक्षर/चुक नहीं जाना/चुक नहीं जाना।"¹⁰

सुनीता जी अपनी 'उत्तराधिकार-2' कविता के माध्यम से मानवीय मूल्यों में से एक 'समता' के महत्व पर दृष्टिपात करती है। वे कहती हैं कि-

"जिस दिन बनवाओ/बेटे के लिए मकान
उस दिन लाना एक ईंट/बेटी के लिए।
ईंट पर ईंट रखते प्रतिदिन
बन जाये शायद/उसकी भी झोपड़ी।"¹¹

स्वच्छ समाज की कल्पना समता, सद्भाव, समन्वय जैसे मानवीय मूल्यों के रहने पर ही की जा सकती है। सुनीता जी ने अपने काव्य में इसी सामाजिक दायित्व का पूर्णतः निर्वहन किया है। उनका हृदय समाज कल्याण के लिए ही उन सभी वृद्धजनों के पक्ष में खड़ा दिखाई देता है जिन्हें आत्मकेंद्रित सोच का शिकार होना पड़ा है। 'पिछवाई' कविता में वे कहती हैं कि-

"तुमने जो सहा, सहा/सहा
मैंने जब उसको/कहा, ज़रा/ज़रा
अंगारों का/आकाश फटा
किस-किसने/विप उगला
वे भुझकों/झुलसा भी देंगे/तो क्या-
तेरे जितने औसू थे
समझूँगी, उनका/कुछ तो/मोल चुका।"¹²

मानवीय मूल्यों में से एक मूल्य अहिंसा भी है। अहिंसा के मार्ग पर चलकर ही समाज में शांति स्थापना की जा सकती है। आज जब चहुँओर भय, आतंक का साया पसरा पड़ा है, ऐसे में कवयित्री अपनी 'इस आग को बुझा ज़रा' कविता के माध्यम से मानव को हिंसा के मार्ग को त्यागकर अहिंसा के पथ पर चलने के लिए प्रेरित करती है। वे कहती हैं कि-

"यूँहें खून था तेरा मेरा
यह खून तू बहा नहीं
इस आग को बुझा ज़रा
यह आग को बुझा ज़रा
यह आग तू लगा नहीं
जो चल रहे हैं चाल वो

क्या मातमों से मौत के
ये दिल तेरा भरा नहीं

इस आग को बुझा ज़रा... *13

अतः उपरोक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि सुनीता जी मानव मूल्यों की सजग प्रहरी हैं। उनका मूल स्वर आस्था और विश्वास से पूरित है। आपका काव्य निराशा के अंधकार से निकल आशा के प्रकाश में उल्साहित करने वाला है। सुनीता जी अपनी कविताओं के माध्यम से विसंगतियों के विरुद्ध डटकर खड़े होने और दृढ़ विश्वास के बूते उन पर विजय पाने का संदेश देती हैं। वे कर्म को ही अपना धर्म मानकर अपने ईष्ट को पा लेना चाहती हैं इस प्रकार वे स्वयं और उनका काव्य दोनों पाठक में मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठापित करने में सहायक सिद्ध होते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रमोद त्रिवेदी, 'सुनीता जैन शब्द होने का अर्थ', प्र.सं.2004, पृ.-11
2. डॉ. रामेश्वरलाल खण्डेलवाल 'तरुण', 'जयशंकर प्रसाद वस्तु और कला', पृ.-427
3. धर्मवीर भारती, 'मानव मूल्य और साहित्य' (भूमिका प्रथम संस्करण से) pustak.org/index.php/box
4. पुष्पपाल त्रिवेदी, सुनीता जैन समग्र: खण्ड-5 (धूप हठीले मन की-1995), प्र.सं.2010, पृ.-44
5. वहीं, खण्ड-10 (प्रेम में स्त्री-2006), पृ.-26
6. वहीं, खण्ड-4 (सच कहती हूँ-1994), पृ.-78
7. वहीं, खण्ड-5 (इस अकेले तार पर-1995), पृ.68
8. वहीं, पृ.-102
9. वहीं, पृ.-122
10. वहीं, खण्ड-5 (जाने लड़की पगली-1996), पृ.-219
11. वहीं, पृ.-220
12. वहीं, पृ.-189
13. वहीं, खण्ड-12 (किस्सा तोता मैना-2007), पृ.-232

Swami Vivekanand's Ideas Towards Women

□ Surender Kumar *

ABSTRACT

Swami Vivekanand was highly sympathetic towards women's oppression instead of their emancipation. In the 19th century, free minded social reformers like Raja Rammohan Rai, Keshav Chandra Sen, Jyotibaphulle, Atmaram Pandurang and Vidyasagar fought against the cruel injustice against women. But in the midst of modern day decision on feminism one name is until forgotten or forbidden, the great Indian Yogi Vivekananda. He is also known as a great nationalist leader, Karmayogi and a devotee of veda in modern Indian history. He stated that forthcoming Indian women will attain glorious achievements. Women like man must be acceptable to enjoy independence and accountability. Swami Vivekananda was the leading monastic to do work for the liberty and impartiality of women and realising her prominence for the proper working of home and society. Swami Ji thought that the main motive behind the numerous glitches of the women in our country was due to lack of good education. Swami Ji quantified that if the women get good education then they can resolve their own difficulties in their own means and they must also understand what chastity means, as it is her legacy.

Keywords: Swami Vivekananda, Feminism, Oppression, Equality, Emancipation, Society.

* Deptt. Of History, Vaish College, Bhiwani

Introduction:

Swami Vivekanand was a great son of India born on 12th June 1863 and died on 4th July 1902 at the young age of less than forty. Though he lived for a short period but his achievements in different fields had been remarkable. His stimulating character was well known in India, USA and some other countries during the last decade of the nineteenth century and the first decade of twentieth century. The unidentified monk of India rapidly dove into fame at the speech delivered by him on September 11, 1893, at first World's Parliament of Religions on the site of the present-day Art Institute in Chicago, where

he represented Hinduism. He started his discourse in a profound voice with the words, "Sisters and Brothers of America" and the entire audience applauded and praised widely for two entire minutes. He was not only a great teacher with an international message but he was also a very great Indian, a patriot and his message inspired our countrymen down to the present generation. He gave his ideas on various issues on mankind, peace and human brotherhood, spiritually, morality, philosophy, womanhood and several others. However, our focus in this paper would be on Vivekanand's views on womanhood.

Research Methodology:-

Research methodology is a way to analytically explain the research problem. Through proper research methodology objectives of any research are encountered. Methodology, broadly comprises of the research strategy and the method hired for collecting records, information and substantial. The research design should be compatible with the accessibility of source substantial. Two major components research methodology, viz research Strategy and Source Substantial.

Research Design:-

The search proposal implemented for our research paper is of a composite nature mixing descriptive strategies. Most of the ancient search comes under this compound class of plan.

Source Material:

The history is not mere description of past proceedings of deeds and misdeeds of ruling sovereigns. This is emphasis on social organizations, their monetary, spiritual and ethnic conditions. The evidences and material were garnered, collected and ordered from diverse scattered source such as journals, books, government reports etc for writing this paper.

Analysis:

We now proceed to analyse the views of Swami Vivekanand on womanhood. As we know that women in India enjoyed high status in vedic age but with the passage of time the position of women deteriorated and during Mughal period it was far from satisfactory. They were expected to be subjected to men all their lives, first to father and brother then to their husbands and lastly to their sons. The social evils like Purdah System, Killing of Female Child, Early Child Marriage, Sati partha were prevalent in the society. He said that welfare of the world is not feasible till condition of women is not improved. He remarked that it is not conceivable for a bird to fly on only one wing. He discoursed that motherhood

of a woman is the depiction of "Divine Mother". He further added that if you do not permit one to become a lion, then she will turn out to be a fox. He preached that the Hindu women are spiritual and religious as compare to other women in the world. He said that a sprint must first nurture a great respect for maternity. The God should be worshiped as "Mother". The woman is a form of "Shakti" (power) and there has been no revival of this power and that is why India is the feeblest and the most retrograde of all countries. Without the grace of Shakti, nothing is to be proficient. To me, mother's grace is far more valued than Father's. India has so many powerful women like Sita, Gayatri, Ahalyabai, Mirabai who were peerless on the earth. He said that through education, women problems can be solved.

According to him men and women are equal. We, human beings are born to apprise and to help each other. Since man thinks himself superior to woman is the great cause of divorce. The beauties of home life and principles that may develop an ideal character with the help of modern science and the female students must be trained up for ethical and spiritual life. It is only in the home of educated and pious mothers that great men are born. For the upliftment of women, men must come first.

Swami Vivekanand considered Sita as an idyllic woman. **He also told, "The ideal womanhood of India's motherhood that marvelous, Unselfish, all suffering ever for giving mother"** He assumed that the day India starting abandoning their woman, the demise of the nation started.

The best parameter to measure the growth of a nation is its treatment to women. In ancient Greece, there was no significant difference in the status of man and woman. The idea of perfect parity existed. Only a married man can be priest, the idea behind this works that a single man is only half a man, and flawed.

Swami Vivekananda was in favour of liberty of women so that they could live on their own principles could be able recommend ideas for their own improvement. He thought that if women were properly educated than they could be able to use their capabilities. He was in the favour of self-esteemed and dignified status women and wanted no man to crush upon it.

Swami Vivekananda emphasized on the fact that there was a significant difference in the approach of Indian men and others towards women status. This was hard fact that Indian men consider women are born for their pleasure. The real Shakti worshipper is one who knows that God is the ubiquitous force in the cosmos, and sees the women as the sign force in the cosmos. American men considered women in this view and treated women as well hence they are so affluent, so cultured, so factual and so enthusiastic.

Swami Vivekananda was a great admirer of Indian women past for their great achievements. He pompously said that "women's statesmanship, managing territories, governing countries, have proved themselves equal to men, if not superior. In India I have no doubt about that, whenever they have had the opportunity they proved that they have as much ability as men, With this advantage they seldom degenerate. They keep to the moral standard, which is innate in their nature and thus governors and rulers of their state they prove at least in India far superior to men". John Stuart Mill mentions this statement.

Swami Vivekananda stated that Although he had more chance than others to know women in general from his situation and his profession as a missionary continuously roaming from one place to another and had contact with all kind of society. He said "Ideal woman in India is the mother first, and the mother last".

According to Swami Vivekanand, Liberty was the first condition of development. It is highly wrong if some one says that he will work out for the resolution of the women status. Women will

solve their own problems. We should have to create such an environment that an women will be able to solve their own problems in their own ways.

Swami Vivekanand evoked so much admiration among American women. The relationship between Vivekanand and American women became strong, Miss Katherie became the first hostess of Swami in America. Similarly, he came in contact with Professor Wright, Mrs. Katewoods, George W.Hale, Mrs. B. Lyon, Miss S.E. Words, Mrs. S.R. Shephard etc. He became so popular among women that most of the audience in America was women. The audience used to be spell bound. Vivekananda criticized the Christian Missionaries for their insular approach and outlook towards women and remarked that their religion preached in the name of luxury. The wonder audience always became frenzy to hear his speeches and his sense of respect and compliments towards women. The Swami repaid their admiration by writing both "religious and semi sentimental verses" in his autographies and books. The result was that the "New thought Movement" was launched by Mrs. Ella and regarded the Swami's teachings on anyone for despair and gloom.

Swami Vivekanand's contact with the American women provided with ideas which set into motion the process of the spread of Hindu thought in America. His message caused "the frivolous society women to think" and imbued "the wife and mother, the husband and father with a larger and holier compression of duty". The American women took him up and made him a celebrity. The swami also reciprocated by paying glowing tributes to them. He said "The United States has inspired me with hopes for great possibilities in the future, but our destiny, as that of the world rests not in the law-makers of today, but in the women".

Conclusion:

Swami Vivekanand's social regeneration of women in America, India and other countries was based on Vedic principles. Today in Modern India Swami's Doctrines are still needed more to free the women in India from Social evils and pressures under which women are groaning in almost every field and their conditions are far from satisfactory. The women though are marching ahead yet their position is not pleasant from her birth to death. The task can only be accomplished if we follow the teachings of Swami Vivekanand with all its earnest.

References:

1. Kothari, C.R., (1985) '**Research Methodology-Methods and Techniques**' wiley Eastern Limited New Delhi P.11
2. Vivekanand, Swami, '**Lecturers from Colombo to Almora**' The Vyjayanti press, Madras
3. Roy, S.R., (2013) '**Swami Vivekanand Thoughts on Education of Women - Embodiment of Shakti**' SRJIS, Vol-II/IX,PP: 798.
4. Basu. P.Shankari, '**Vivekananda O Samkalin Bhartbarsha**' Mandal Book House, Kolkata.
5. Vivekananda, Swami '**State, Society and Socialism**' Advaita Asharma, India.
6. Mazumdar, Vina, '**The Social Reform Movement In India; From Ranade to Nehru**' Vikas Publishing House, New Delhi.





DERIVATION IN NON-ASSOCIATE ALGEBRAIC

Sanjay Goyal
S/o Sh. Trilok Chand Goyal
Associate Professor in Mathematics
Vaish College, Bhiwani

ABSTRACT

In this paper we will explain about the basic of non-associative algebra using triality group and some were matrix and graph representation. A Non-associative algebra structure can be studied with other associative algebraic as K-endomorphisms of A just like K-Vector Space. Whereas as some of the researchers we have also consider non-associative algebraic as a multiplicative operation of a commutative Ring R.

KEY WORDS

Non-associative, Triality, multiplicative operation, associator, vector space.

INTRODUCTION

Non-associative algebra: A Non-associative algebra also known as distributive algebra. Non-associative algebra is a vector space over a field because its vector space provides a bilinear product. An algebra known as an algebraic structure which consists of a set with an additive, multiplicative and scalar operations of the elements of a field of vector space. Thus, an algebraic structure A, is a non-associative algebra with binary multiplicative operation over a field K. An algebraic structure $A \times A \rightarrow A$ may or may not be associative.

R-module in mathematics is one of the fundamental algebraic structures. The notation of vector space over a field is a module over a ring R with operation of a scalar multiplication known as R-binary multiplication operation. Some of the researcher also stated that Z-algebra as a non-associative rings. Where Z-algebra is an algebra which obeys all the properties and laws of ring for example as R-algebra. An algebraic structure ring act with two binary operations. Associative is a part of one of the binary operations in which rearranging of the parentheses is done .

The linear algebra multiple mapping is a function $f : V_1 \times V_2 \times \dots \times V_n \rightarrow W$ known as K-multiple linear maps. Therefore associator of A is a K-multiple linear map with the operation

as $[\square, \square]: A \times A \rightarrow A$ and with three operations are as $[\square, \square, \square]: A \times A \times A \rightarrow A$. Thus, the associator on A is given by $[x, y, z] = (xy)z - x(yz)$ where x, y, z is an arbitrary element of the algebra.

Derivative algebra is equipped with number of derivations as differential rings, differential fields which satisfied Leibniz's product rules. A K -derivation is also a K -linear map for an algebraic A over a ring or a field is such that $D: A \rightarrow A$ which satisfies Leibniz's product rules.

$$D[xy] = xD(y) + D(x)y$$

Triality Group: Let A be an algebra with a bi-linear product over a field F denoted by $x y$ for all x and y an element of A . Let us suppose a **first triple** $h = (h_1, h_2, h_3) \in (E_{pi}A)^3$

Equipped with
$$h_j(x + y) = h_jx + h_jy$$
 and
$$h_j(\alpha x) = \alpha h_j(x)$$

$E_{pi}A$ represents the set of epimorphisms of A , for $\alpha \in F$

By the Global Triality relation we have,

$$h_j(x, y) = (h_{j+1}x)(h_{j+2}y) \dots \dots \dots (1)$$

And
$$h_{j+3} = h_j \dots \dots \dots$$

(2)

Where $j=1,2,3$ is a module 3, $\forall x, y \in A$

Similarly for **second triple**

$$h' = (h_1', h_2', h_3') \in (E_{pi}A)^3$$

Equipped with
$$hh' = (h_1h_1', h_2h_2', h_3h_3')$$

$\dots \dots \dots (3)$

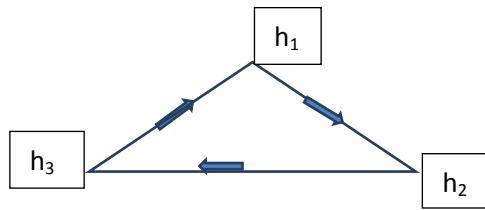
$$\therefore Trig(A) = \left\{ h = (h_1, h_2, h_3) \in (E_{pi}A)^3 : h_i(xy) = (h_{j+1}x)(h_{j+2}y) \right\} \dots \dots \dots (4)$$

$$Auto(A) = \left\{ h \in E_{pi}A : h(xy) = (hx)(hy), \forall x, y \in A \right\} \dots \dots \dots (5)$$

Let us assume a function $f \in End(Trig(A))$

So as
$$f : h_1 \rightarrow h_2 \rightarrow h_3 \rightarrow h_1$$

$\dots \dots \dots (6)$



It is a closed walk with cyclic graph and satisfying $f^3 = id$

$Trig(A)$ is invariant for the cyclic group Z_3 by the generation function f .

Similarly let there be three functions $\gamma_1, \gamma_2, \gamma_3$ by for $\mu=1,2,3$ $\gamma_\mu \in End(Trig(A))$

i.e

$$\left. \begin{aligned} \gamma_1 : h_1 \rightarrow h_1, h_2 \rightarrow -h_2, h_3 \rightarrow -h_3 \\ \gamma_2 : h_1 \rightarrow -h_1, h_2 \rightarrow h_2, h_3 \rightarrow -h_3 \\ \gamma_3 : h_1 \rightarrow -h_1, h_2 \rightarrow -h_2, h_3 \rightarrow h_3 \end{aligned} \right\}$$

.....(7)

In Matrix form it is $\begin{bmatrix} 1 & 0 & 0 \\ 0 & 1 & 0 \\ 0 & 0 & 1 \end{bmatrix}$ unit matrix of order 3

i.e I_3

Which satisfies and is isomorphic to \mathbf{K}_4 $\gamma_\mu \gamma_\nu = \gamma_\nu \gamma_\mu, \gamma_\mu^2 = id$
 $\therefore \gamma_1 \gamma_2 \gamma_3 = id$

.....(8)

For $\gamma_4 = \gamma_1$ $f \gamma_\mu f^{-1} = \gamma_{\mu+1}$

.....(9)

For $x \rightarrow x'$ which fulfil $(x')' = x$ & $(xy)' = y'x'$

.....(10)

We define $\bar{R} \in End(A)$ for $R \in End(A)$

$$\bar{R}x = \bar{R} \bar{x}$$

.....(11)

Take $x \leftrightarrow \bar{y}$

$$\bar{h}_j(xy) = (\bar{h}_{j+2}x)(\bar{h}_{j+2}y) \dots \dots \dots (12)$$

For $\theta \in End(Trig(A))$

$$\theta : h_1 \rightarrow \bar{h}_2, h_2 \rightarrow \bar{h}_1, h_3 \rightarrow \bar{h}_3 \dots \dots \dots (13)$$

$$f\theta f = \theta, \theta^2 = id,$$

Now,

$$\left. \begin{aligned} \theta_{\gamma_1} \theta^{-1} &= \gamma_2 \\ \theta_{\gamma_2} \theta^{-1} &= \gamma_1 \\ \theta_{\gamma_3} \theta^{-1} &= \gamma_3 \end{aligned} \right\}$$

.....(14)

METHODOLOGY

If $D(x, y) = d_0(x, y) + d_1(x, y) + d_2(x, y)$

Then it holds a derivative $D(x, y) \& D(x, yz) + D(z, zx) * D(z, xy) = 0$

Therefore, a model global triality is $\bar{h}_j(x * y) = (h_{j+1}x) * (h_{j+2}y)$

CONCLUSION

Thus, a researcher stated that automorphism of Cayley algebra can be constructed. Also, Triality algebra (Trig(A)) is an important concept of lie algebra.

REFERENCES

- I. Allison, B. N.;" A Class of non-associative algebras with innovation containing a class of Jordan algebra" Math, Ann 237, (1978)133-156.
- II. Allison, B. N.; Faulkner; J.R.;" Non-associative coefficient algebras for Steinberg unitary lie algebras" J. Algebras 161(1993)133-158.
- III. Schafer, R.D.;" An introduction to non-associated algebra" Academic press N.Y. and London (1966)
- IV. Elduque, A.; On triality and automorphism and derivation of composition algebra" Linear algebra and its application 314(2000)49-74.
- V. I. M. H. Etherington. Non-associative arithmetic. Proc. Roy. Soc. Edinburgh. SectA., 62:442-453,1949.,

E-BANKING COMPARATIVE STUDY OF PUBLIC AND PRIVATE SECTOR BANKS IN HARYANA STATE

Dr. Promila Dahiya

Director cum Assistant Professor SFS, Vaish College, Bhiwani

ABSTRACT

Studying the subject from several angles is possible through the use of research methods. There is an explanation of the research topic and its aims as well as the structure of the chapter and the necessity for it. It has also been explored in detail the statistical tools and procedures that are used to examine data. The current investigation is both descriptive and analytical. E-banking customer impression in Haryana is the focus of this study. It has to do with the collection of primary and secondary data using a well-crafted and well validated questionnaire.

Customer awareness and satisfaction with e-banking services in public and private sector banks are the primary goals for this study. In Haryana, both private and public sector banks offer e-banking services. Because of their computer proficiency, today's young people are more likely to utilize electronic banking services, according to the study's findings. E-banking is preferred by those in the high-income and professional categories (such as teachers, physicians, surgeons, and dentists). As a result of their higher levels of education, the residents of Ambala and Rohtak districts utilize e-banking services at a higher rate than those in the other districts studied.

Keywords: E-Banking, comparative study, public, private sector, banks in Haryana

INTRODUCTION

India has been praised for its ability to remain relatively unharmed during the global financial crisis. A large part of it depended on the country's financial sector. The banking system underwent a major overhaul as a result of these changes. The changes have a significant influence on the financial system's overall efficiency and stability. The number of branches and ATMs owned by banks rose.

They also expanded in terms of both their balance sheets and their total banking business Profitability, net interest margin, return on assets (ROA) and return on equity (ROE) of Indian banks improved as a result of increasing competition (ROE). The banks' non-performing assets dropped dramatically as a result of the significant improvement in their

capital position. During this time of change, technology was increasingly used, which helped to enhance the quality of customer service.

While the Reserve Bank's law (RBI Act, 1934) does not specifically mention that financial stability is a goal, numerous steps were taken from time to time to enhance the system's financial stability and spanned a wide range. As a result of a continual exchange between micro- and macroeconomic judgments, the methodology has evolved. "Financial stability has been maintained in India thanks to the Reserve Bank's multiple-indicator monetary policy, as well as prudent financial sector management and a synergetic approach through tight interaction with other financial sector authorities."

Capital Account management, systemic interconnectivity management, enhancing the regulatory framework, and steps to improve financial market infrastructure are a few more examples of policy interventions. In order to deal with systemic issues arising from interbank and bank-to-nonbank financial company (NBFC – our shadow banks) interconnections and common exposures, prudential limits were placed on aggregate interbank liabilities as a percentage of banks' net worth, banks and primary dealers were restricted access to the uncollateralized funding market with borrowing and lending limits, and increasingly subjected to risk-based regulation.

It has also been observed that countercyclical initiatives have been used to solve the procyclicality difficulties. While the RBI has utilized time-varying sectoral risk weights and funding intermittently even before, the countercyclical measures were first implemented in 2004. It is widely accepted that these unusual steps implemented in response to rising concerns were essential in shielding the Indian financial system from critical vulnerabilities.

Much progress has been made since the changes of 1991, and we may be proud of that. Our accomplishments and success should not blind us to the fact that we still have a long way to go in our quest of perfection. Look ahead to see what is ahead of us.

CUSTOMER PERCEPTION ON SERVICE QUALITY OF PUBLIC AND PRIVATE BANKS

The development of the economy is greatly influenced by the performance of the banking sector. As a result, the Indian government is concerned about the growth of the bank's customer base. In today's retail banking market, the focus has changed from pricing to service quality. The rivalry has grown as technology has advanced and other banks have stepped up their service offerings. Now, financial institutions are making an effort to

improve the quality of their services. The banking industry's profitability is heavily reliant on the services it provides to other institutions. In today's competitive economy, it's becoming increasingly difficult to maintain service quality. The level of service supplied to potential clients of the bank has been evaluated as an overall measure. A customer's needs and expectations are often considered while determining the quality of a service. Another way of defining service quality is by comparing it to client expectations. It has been categorized into five categories based on the amount of time spent using the service.

NEED OF THE STUDY

There is a fierce battle between Indian banks and new-generation and global banks nowadays. The banking business has seen radical transformations as a result of the rapid progress of information technology. Customers are growing increasingly demanding, and banks are able to meet their needs thanks to their widespread use of technology. With the advent of Ebanking services, banks now provide a wider range of services. E-banking services and their effects on operational efficiency and customer satisfaction necessitate more investigation. E-banking services have become increasingly important, although research on e-banking in India has been minimal.

Research on Haryana consumers' perceptions has been mostly limited to studies undertaken on a national and international scale. In this context, the current study aims to determine if clients in Haryana favour e-banking or not. E-impact banking's on customers' perceptions is examined in a small-scale experiment.

SCOPE OF THE STUDY

Customers in Haryana's E-banking sector were surveyed in this study. Haryana's 6 six districts were chosen based on population density. According to Indian Banking at Glance 2015, two public sector banks (PNB and SBI) and two private sector banks (HDFC Bank and ICICI Bank) were selected for the research (www.iba.org.in). The research spans the years 2012-13 through 2016-17. Pooled data is used in the study.

LITERATURE REVIEW

Kapoor, Sheetal & Vashishth, Vibhuti (2021) The Indian banking industry exemplifies the sturdiness and adaptability required of a business its size and scope. Banking is widely understood to be a relationship built on trust. Our country's entire financial structure revolves around the banks. Protecting retail financial services consumers effectively while

empowering them to exercise their rights and fulfill their duties is the goal of an effective customer protection regime in the financial industry.

Buddhika, H & Gunawardana, T.S.L.W. (2020) For their everyday operations, the vast majority of contemporary financial institutions rely on computerized banking processes rather than traditional banking techniques. Experts report that Sri Lankan e-banking services fall short of international standards. Sri Lankans' views on e-banking vary from nation to nation, according to a study. Surveys were distributed to 150 people in Galle district who use e-banking through the purposive sample approach and the snowball method.

Kadam, Mahesh & Sapkal, Deepak (2019) the banking industry is one of the most rapidly expanding in today's world and a large amount of money is being invested there. When it comes to rating financial institutions, particularly commercial banks, for their capital sufficiency, asset quality, management capabilities, profits potential and liquid assets, CAMEL Rating is one of the commonly utilized techniques by major regulators throughout the world.

Shimpi, Leena (2018) Because of this, the banking industry's capacity to expand and deliver better customer service is significantly impacted. E-banking services are expected to increase customer pleasure and satisfaction, as well as lower operating costs, improve competition, and increase profitability for banks. As a result, e-banking's impact on customer satisfaction must be assessed in terms of its many components.

Glara, K.Thanga & Franco, C. (2017)

The banking business has undergone several changes during the past two decades in order to compete with its rivals. The banking sector is putting a lot of emphasis on technology in this rivalry. E-banking is the most widely utilized technology in banks today. Technological advancements and competition have led to the development of e-banking.

RESEARCH METHODOLOGY

A research technique is a method for investigating an issue in a methodical manner. A thorough explanation of the study's issue statement and objectives, as well as its purpose, scope, hypotheses, and data source are provided. In addition, the data analysis methods and tools have been described. The following is a brief summary of the study's research methodology:

It was decided to adopt a survey approach in order to acquire primary data from a large number of respondents. Structured questionnaires and one-on-one interviews are used to

gather the bulk of the main data. Open-ended and closed-ended questions were included in the survey. It was divided into two halves. To begin, we'll look at some basic demographic data, including things like race and income level. Gender, marital status, educational attainment, employment, and family income were all included in this survey's findings about its participants. Section two is broken into three parts once more. First, there are questions about customers' preferences for E-banking, and then there are questions about customers' preferences for E-banking that don't exist.

ANALYSIS

Customers are critical to the success of the banking industry. So banks provide a wide range of products and services to attract new consumers as well as keep current ones. Banking institutions, too, have a strong desire to learn about and meet the desires of their customers. Customers' preferences and disfavorites for private (HDFC & ICICI) and public sector (PNB & SBI) E-banking services have been explored in this chapter. There are two parts to this chapter. For example, consumers' names, ages, genders and marital statuses as well as their occupations and incomes are all included in Section A's demographic and background information. Section B focuses on a series of comments that indicate whether or not clients like or reject E-banking.

Table 1: Distribution of respondents on the basis of types of account in different banks

Type of bank account/Bank	Private sector banks				Public sector banks				Total	
	HDFC		ICICI		PNB		SBI			
	Frequency	%	Frequency	%	Frequency	%	Frequency	%	Frequency	%
Saving a/c	72	48	83	55	108	72	109	73	372	62
Current a/c	16	11	29	19	6	4	17	11	68	11
Saving a/c & Current a/c	23	15	24	16	19	13	9	6	75	13
Saving a/c, Fixed Deposita/c	17	11	6	4	5	3.3	4	2.7	32	5.3
Saving a/c, Current a/c, Fixed Deposita/c	22	15	8	5.3	12	8	11	7.3	53	8.8
Total	150	100	150	100	150	100	150	100	600	100

Responses are shown in Table based on the kind of account in private (HDFC & ICICI) and public (PNB & SBI) sector banks, respectively. Of those who responded, 62% have a savings account, followed by 12.5% who have both a savings and a current account. A

bank-wise research shows that SBI and PNB of Savings A/c have the greatest percentage of responders (72%) followed by ICICI (55.3 percent). Fewer than 5% of ICICI, PNB, and SBI customers have combined accounts (Current a/c and Fixed Deposit a/c).

Table2: Distribution of respondents on the basis of awareness of net banking services offered by bank

Response/Bank	Privatesectorbanks				Publicsectorbanks				Total	
	HDFC		ICICI		PNB		SBI			
	Frequency	%	Frequency	%	Frequency	%	Frequency	%	Frequency	%
Yes	110	73.3	102	68	95	63.3	93	62	400	66.7
No	40	26.7	48	32	55	36.7	57	38	200	33.3
Total	150	100	150	100	150	100	150	100	600	100

Net banking services supplied by private (HDFC & ICICI) and public (PNB & SBI) sector banks are shown in Table 66.7 percent of respondents replied "Yes" and 33.3 percent said "No" when asked if they were aware of online banking services. Bank-wise, HDFC has the largest percentage of net banking users (73.3 percent), followed by ICICI (68 percent), and PNB (63.3 percent). Only 26.7 percent of the respondents are aware of net banking, and the majority of those are HDFC customers).

FINDINGS RELATED TO CUSTOMERS ON THE BASIS OF DEMOGRAPHIC PROFILE

- HDFC and ICICI, as well as Public (PNB and SBI) sector banks, have the highest percentage of respondents in the 21-30 age group, followed by 31-40 age group. ICICI bank has the biggest percentage of customers in the 21-30 age bracket, while SBI comes in second. Only a small percentage of those over the age of 60 are customers of ICICI bank or HDFC.
- Private (HDFC& ICICI) and Public (PNB& SBI) sector banks had the highest percentage of married respondents. Respondents from HDFC and ICICI have the greatest percentages, while those who are not married have the lowest percentages. SBI and ICICI had approximately the same percentage of married and unmarried respondents.

- Graduates (HDFC& ICICI) and postgraduates (PNB & SBI) make up the majority of responses, with matriculants and postgraduates following closely behind. HDFC has the greatest percentage of responders, followed by ICICI, SBI, and HDFC, according to a bank-by-bank analysis.
- Among private and public sector banks, the majority of responders are servicemen, followed by businessmen, in terms of occupation. An examination of responses by bank reveals that ICICI and SBI had the most serviceman responders, followed by HDFC. For all banks, the proportion of respondents who are retired is lower than that of other groups.
- Among respondents from the private (HDFC& ICICI) and public (PNB& SBI) sector banks, the highest percentage came from the income brackets of 10001-20000 and 20001-30000. According to a bank-by-bank study, ICICI has the greatest percentage of respondents in the 10001-20000 income bracket, followed by SBI and PNB.

Conclusion

Incorporating human assistance via E-banking service delivery channels might alleviate consumers' concerns about security and so increase their adoption of E-banking and use of complicated banking services and product facilities.. Because of this, customers frequently rely on one another to help them cope with the stress of a new product or service. In addition, there are just a few researches examining Indian customers' use of E-banking. As a result, future study should focus on identifying the major factors that influence the adoption of E-banking in India.

The present study is centred on Customers perspective about E-banking in Haryana. In future, investigations can be carried out in the following areas: The research of acceptability and satisfaction of various E-banking goods and services in other states even all over the India which would offer better image on Customers perspective regarding E-banking services at National Level. A comparison research may also be undertaken on E-banking adoption across public sector, private sector and overseas banks.

A comprehensive analysis may be done to determine the Information Communication Technology hazards associated in the delivery of E-banking services for improved adoption of E-banking services.

Reference

1. Siddik MN, Sun G, Kabiraj S, Shanmugan J, Yanjuan C. Impacts of e-banking on performance of banks in a developing economy: empirical evidence from Bangladesh. *Journal of Business Economics and Management*. 2016 Nov 1;17(6):1066-80.
2. Singh, Balwinder & Malhotra, Pooja. (2004). Adoption of Internet Banking: An Empirical Investigation of Indian Banking Sector. *Journal of Internet Banking and Commerce*. 9.
3. Singh, Dilpreet & Singh, Harpreet & Sandhu, Namrata. (2021). New market entry strategies: public and private sector banks in India.
4. Singh, Surabhi & Arora, Renu. (2011). A Comparative Study of Banking Services and Customer Satisfaction in Public, Private and Foreign Banks. *Journal of Economics*. 2. 10.1080/09765239.2011.11884936.
5. Singh, Tejinderpal & Kaur, Manpreet. (2012). Internet Banking: Content Analysis of Selected Indian Public and Private Sector Banks' Online Portals. *Journal of Internet Banking and Commerce*. 17.
6. Somiah, Ranjithkumar. (2020). A Comparative Study of Public Sector Banks and Private Sector Banks with Reference to Non-performing Assets Theme - Commerce, Finance and Business. *International Journal of Applied Business and Economic Research*. 15. 541- 553.
7. Srivastav, Garima & Mittal, Arun. (2016). Impact of Internet Banking on Customer Satisfaction in Private and Public Sector Banks. *Indian Journal of Marketing*. 46. 36. 10.17010/ijom/2016/v46/i2/87252.
8. Syed Usman Ali Gillani and Abdul Ghafoor Awan (2014), "Customer Loyalty in Financial Sector: A case study of Commercial Banks in Southern Punjab", *International Journal of Accounting and Financial Reporting*, Vol. 4, No. 2.
9. T., Biju & Philip, Anu. (2020). Customer Perception on Banking Services -A Study Among Public Sector and Private Sector Banks. 4424.



Cost benefit study of two-unit system with dual maintenance under guarantee period

Dr. Shruti Rani
Asstt. Prof. Of Mathematics
Vaish College, Bhiwani

Abstract

This paper explain stochastic model having dual non-identical units. Here a routine inspection is carried out on the operating unit after doing a normal maintenance. It is also assumed that the operative unit is inspected if another unit is failed. After inspection either the unit is maintained or assumed to be failed after inspection. The decisions about failed unit is done by taking the concept of guarantee period. It is also considered that the unit under maintenance would not fail. After guarantee period, it is to be decided that whether minor replacement or major replacement. A new concept of paid maintenance is taken in this second part. This system is analyzed to determine various reliability measures by using mathematical tools MTSF/MTBF Markov chain, Markov Process. It is assumed that a repaired and replaced unit is good as new.

Keywords: Maintenance, Availability, Busy period, Inspection, Repair, Replacement

INTRODUCTION

In order to develop a good reliability program for a system, the system must have good reliability specifications. These specification most, if not all, of the conditions in the reliability definition including MTSF, limitations, operating environment instances, this will require a detailed description of how the system is expected to perform reliability- wise. A proper balance of financial goals and realistic performance are necessary to develop a detailed and balanced reliability specification. Another important foundation for a reliability program is the development of universally agreed upon definitions of the system failure. It should be fairly obvious whether a product has failed or not.

Reliability testing is the cornerstone of a reliability program. It provides the most detailed forms of data in that the data are collected can be carefully controlled and monitored. Furthermore, the reliability tests can be designed to uncover suspected failure modes and other problems.

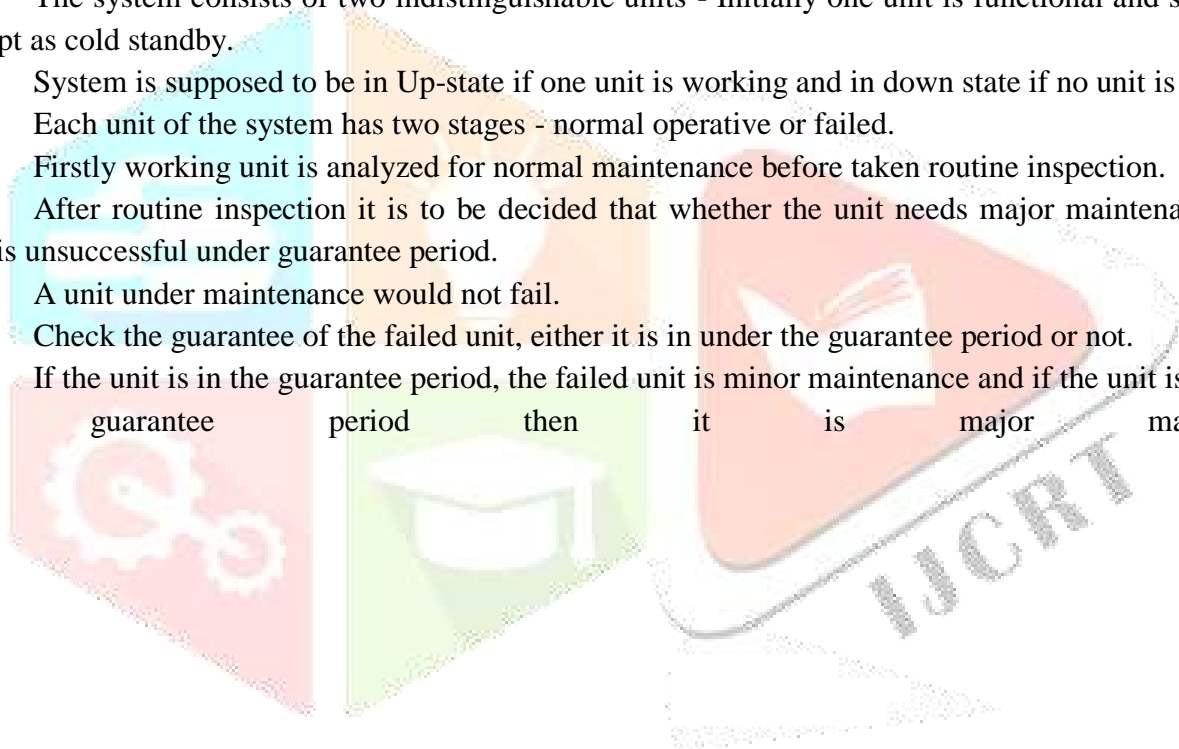
The development of the new systems is directly or indirectly associated with improvement in the old systems and hence the efficiency. Thus assessment of reliability of equipment is of great importance in the context of rapidly growing technology and its further development. A large number of studies have been carried out to evaluate the reliability by taking two-unit models under different conditions.

This paper explain stochastic model having dual non-identical units. Here a routine inspection is carried out on the operating unit after doing a normal maintenance. It is also assumed that the operative unit is inspected if another unit is failed. After inspection either the unit is maintained or assumed to be failed after inspection. The decisions about failed unit is done by taking the concept of guarantee period. It is also considered that the unit under maintenance would not fail. After guarantee period, it is to be decided that whether minor replacement or major replacement. A new concept of paid maintenance is taken in this second part. This system is analyzed to determine various reliability measures by using mathematical tools MTSF/MTBF Markov chain, Markov Process. It is assumed that a repaired and replaced unit is good as new.

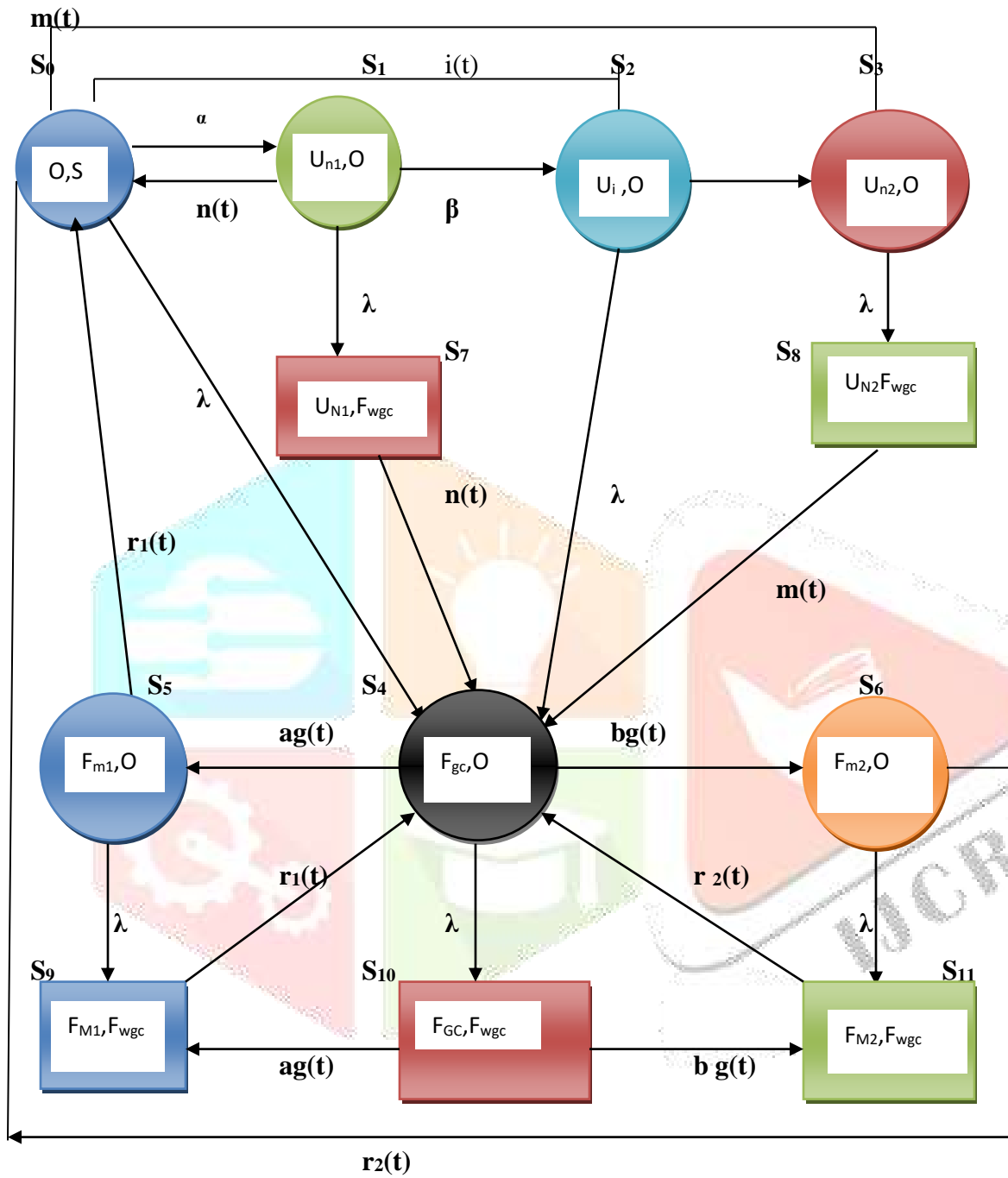
Description of system and Assumption:-

In this paper, an operative unit is analyzed after a bound or definite period of its functioning and it is decided whether unit can run further or demand certain maintenance. A new concept of normal maintenance and major maintenance are introduced in this part.

- The system consists of two indistinguishable units - Initially one unit is functional and second unit is kept as cold standby.
- System is supposed to be in Up-state if one unit is working and in down state if no unit is working.
- Each unit of the system has two stages - normal operative or failed.
- Firstly working unit is analyzed for normal maintenance before taken routine inspection.
- After routine inspection it is to be decided that whether the unit needs major maintenance or the unit is unsuccessful under guarantee period.
- A unit under maintenance would not fail.
- Check the guarantee of the failed unit, either it is in under the guarantee period or not.
- If the unit is in the guarantee period, the failed unit is minor maintenance and if the unit is not under the guarantee period then it is major maintenance.



State Transition Diagram



Notations

U_{n1} :	Normal maintenance
α :	Invariant normal maintenance rate of unit
$i(t)$:	pdf of inspection time period of a unsuccessful unit
$I(t)$:	cdf of inspection time period of a unsuccessful unit
β :	probability that unit is in under maintenance
U_i	Invariant inspection rate of unit
$U_{M1}U_{M2}$:	Maintenance of unit is continuous
F_{m1} :	unsuccessful unit under minor maintenance
F_{m2} :	unsuccessful unit under major maintenance
F_{gc} :	unsuccessful unit under guarantee check
F_{wgc} :	unsuccessful unit waiting for guarantee check
$m(t)$	Maintenance rate
$r_1(t)$	Minor maintenance rate
$r_2(t)$	Major maintenance rate
A:	$\{1 - m^*(\lambda)\}$
B:	$\{1 - g^*(\lambda)\}$
C:	$\{1 - r_1^*(\lambda)\}$
D:	$\{1 - r_2^*(\lambda)\}$

The system can be in any of the following states with respect of the above symbol $RS_0 =$

(O,S)	$RS_1 =$	(U_{n1}, O)	$RS_0 =$
$RS_2 =$	(U_i, O)	$RS_3 =$	(F_{n2}, O)
$RS_4 =$	(F_{gc}, O)	$RS_5 =$	(F_{m1}, O)
$RS_6 =$	(F_{m2}, O)	$RS_7 =$	(F_{N1}, F_{wgc})
$RS_8 =$	(F_{N2}, F_{wgc})	$RS_9 =$	(U_{M1}, F_{wgc})
$RS_{10} =$	(F_{M2}, F_{wgc})	$RS_9 =$	(F_{GC}, F_{wgc})

Transition Probabilities

The era of entering into states $\{RS_0, RS_1, RS_2, RS_3, RS_4, RS_5, RS_6\}$ are

Renewed states. The change of state probabilities from RS_k to RS_l states are given by Q_{kl} and in the steady states Tp_{kl} denotes the change of state probability from states RS_k to RS_l are given under

$Tp_{01} =$	$\alpha/(\alpha+\lambda)$	$Tp_{04} =$	$\lambda/(\alpha+\lambda)$
$Tp_{10} =$	$n^*(\beta+\lambda)$	$Tp_{12} =$	$\beta\{1 - n^*(\beta+\lambda)\}/(\beta+\lambda)$
$Tp_{17} =$	$\lambda\{1 - n^*(\beta+\lambda)\}/(\beta+\lambda)$	$Tp_{20} =$	$i^*(\gamma+\lambda)$
$Tp_{23} =$	$\gamma\{1 - n^*(\gamma+\lambda)\}/(\gamma+\lambda)$	$Tp_{12} =$	$\lambda\{1 - n^*(\gamma+\lambda)\}/(\gamma+\lambda)$
$Tp_{30} =$	$m^*(\lambda)$	$Tp_{38} =$	A
$Tp_{17_4} =$	$\lambda\{1 - n^*(\beta+\lambda)\}/(\beta+\lambda)$	$Tp_{38_4} =$	A
$Tp_{45} =$	$ag^*(\lambda)$	$Tp_{46} =$	$bg^*(\lambda)$
$Tp_{4,10} =$	B	$Tp_{4^{10,9}_4} =$	B
$Tp_{4^{10,11}_4} =$	B	$Tp_{50} =$	$r_1^*(\lambda)$
$Tp_{59} =$	C	$Tp_{59_4} =$	C
$Tp_{60} =$	$r_2^*(\lambda)$	$Tp_{6^{11}_4} =$	D
$Tp_{6,11} =$	D		

With the help of following calculated values, we can easily check that

$$\begin{aligned}
 T_{p01} + T_{p04} &= 1 \\
 T_{p10} + T_{p12} + T_{p17} &= 1 \\
 T_{p20} + T_{p23} + T_{p24} &= 1 \\
 T_{p30} + T_{p38} &= 1 \\
 T_{p17} &= T_{p1}^{7/4} \\
 T_{p38} &= T_{p3}^{8/4} \\
 T_{p45} + T_{p46} + T_{p4,10} &= 1 \\
 T_{p4'10} &= T_{p4}^{10,9/4} \\
 T_{p4'10} &= T_{p4}^{10,11/4} \\
 T_{p50} + T_{p59} &= 1 \\
 T_{p59} &= T_{p5}^{9/4} \\
 T_{p60} + T_{p6,11} &= 1 \\
 T_{p6'11} &= T_{p6}^{11/4}
 \end{aligned}$$

Mean Sojourn Times

To compute mean value of stay/sojourn time $\mu_k(t)$ for state RS_k , let T_k be sojourn time for state RS_k . Then

$$\mu_k(t) = \lim_{t \rightarrow \infty} \int_0^t P[t: 0 < t < T] dt$$

So that in steady state we have following relations

$$\begin{aligned}
 \mu_0 &= 1/\alpha + \lambda & \mu_1 &= \{1 - n^*(\beta + \lambda)\} / (\beta + \lambda) \\
 \mu_2 &= \{1 - i^*(\gamma + \lambda)\} / (\gamma + \lambda) & \mu_3 &= A / \lambda \\
 \mu_4 &= B / \lambda & \mu_5 &= C / \lambda \\
 \mu_6 &= D / \lambda
 \end{aligned}$$

The unconditional mean time is mathematically given by

$$m_{kl} = \int_0^{\infty} t dQ_{kl}(t) = -q_{kl}^*(s)' / at s=0$$

$$\begin{aligned}
 \text{So that } m_{01} &= \alpha / (\alpha + \lambda)^2 & m_{04} &= \lambda / (\alpha + \lambda)^2 \\
 m_{10} &= -n^*(\beta + \lambda) \\
 m_{12} &= [\beta \{1 - n^*(\beta + \lambda)\} / (\beta + \lambda)n^2] + \beta n^*(\beta + \lambda) / (\beta + \lambda) \\
 m_{17} &= [\lambda \{1 - n^*(\beta + \lambda)\} / (\beta + \lambda)n^2] + \lambda n^*(\beta + \lambda) / (\beta + \lambda) \\
 m_{20} &= -i^*(\gamma + \lambda) \\
 m_{23} &= [\gamma \{1 - i^*(\gamma + \lambda)\} / (\gamma + \lambda)^2] + \gamma i^*(\gamma + \lambda) / (\gamma + \lambda) \\
 m_{24} &= [\lambda \{1 - i^*(\gamma + \lambda)\} / (\gamma + \lambda)^2] + \gamma i^*(\gamma + \lambda) / (\gamma + \lambda) \\
 m_{30} &= -m^*(\lambda) & m_{38} &= A/\lambda - m^*(\lambda) \\
 m_{45} &= -ag^*(\lambda) & m_{46} &= -bg^*(\lambda) \\
 m_{4,10} &= A/\lambda - g^*(\lambda) & m_{50} &= -r_1^*(\lambda) \\
 m_{59} &= C/\lambda - r_1^*(\lambda) & m_{60} &= -r_2^*(\lambda) \\
 m_{6,11} &= D/\lambda - r_2^*(\lambda)
 \end{aligned}$$

It can be easily verified that

$$m_{01} + m_{04} = \mu_0$$

$$m_{10} + m_{12} + m_{17} = \mu_1$$

$$m_{20} + m_{23} + m_{24} = \mu_2$$

$$m_{30} + m_{38} = \mu_3$$

$$m_{40} + m_{46} + m_{4,10} = \mu_4$$

$$m_{50} + m_{59} = \mu_5$$

$$m_{60} + m_{6,11} = \mu_6$$

Mean Time to System Failure

The recursive relations for (MTSF) are given by the following equations

$$\Omega_0 = Q_{01} \odot \Omega_1 + Q_{04} \odot \Omega_4$$

$$\Omega_1 = Q_{10} \odot \Omega_0 + Q_{12} \odot \Omega_2 + Q_{17}$$

$$\Omega_2 = Q_{20} \odot \Omega_0 + Q_{23} \odot \Omega_3 + Q_{24} \odot \Omega_4$$

$$\Omega_3 = Q_{30} \odot \Omega_0 + Q_{38}$$

$$\Omega_4 = Q_{45} \odot \Omega_5 + Q_{46} \odot \Omega_6 + Q_{4,10}$$

$$\Omega_5 = Q_{50} \odot \Omega_0 + Q_{59}$$

$$\Omega_6 = Q_{60} \odot \Omega_0 + Q_{6,11}$$

Here Ω_i and q_{kl} are all function of t

Above these equation can be Solving by taking L. S.T and solving for $\Omega_0^{**}(s)$,

we get $\Omega_0^{**}(s) = U(s) / V(s)$

Where

$$\begin{aligned} \text{MTSF} &= \Omega_0 = \lim_{s \rightarrow 0} \{ [1 - \Omega_0^{**}(s)] / s \} \\ &= \{ V'(0) - U'(0) \} / V(0) \\ &= \frac{U}{V} \end{aligned}$$

After solving, we have

$$U(s) = - [q_{01} q_{17} + q_{01} q_{12} q_{23} q_{38} + q_{01} q_{12} q_{24} q_{4,10} + q_{01} q_{12} q_{24} q_{45} q_{59} \\ + q_{01} q_{12} q_{24} q_{46} q_{6,11} + q_{04} q_{4,10} + q_{04} q_{45} q_{59} + q_{04} q_{46} q_{6,11}]$$

$$V(s) = - 1 + q_{01} q_{10} + q_{01} q_{12} q_{20} + q_{01} q_{12} q_{23} q_{30} + q_{01} q_{12} q_{24} q_{45} q_{50} \\ + q_{01} q_{12} q_{24} q_{46} q_{60} + q_{04} q_{45} q_{50} + q_{04} q_{46} q_{60}]$$

Where

$$U = V'(0) - U'(0) = - [1 + T p_{01} \mu_1 + T p_{01} T p_{12} \mu_2 + T p_{01} T p_{12} T p_{23} \mu_3 + (T p_{04} + T p_{01} T p_{12} T p_{24}) \\ (\mu_5 + T p_{45} \mu_5 + T p_{46} \mu_6)]$$

$$V = V(0) = -1 + T p_{01} T p_{10} + T p_{12} T p_{01} (T p_{20} + T p_{23} T p_{30}) -$$

$$(T p_{01} T p_{12} T p_{24} + T p_{04})(T p_{45} T p_{50} + T p_{46} T p_{60})$$

Availability of the system -(Av)-

The recursive relations for the availability $Av_i(t)$ at each point of the system is given by

$$Av_0 = q_{01} \Delta Av_1 + q_{04} \Delta Av_2 + \Psi_0$$

$$Av_1 = q_{10} \Delta Av_0 + q_{12} \Delta Av_2 + q_{17} \Delta Av_4 + \Psi_1$$

$$Av_2 = q_{20} \Delta Av_0 + q_{23} \Delta Av_3 + q_{24} \Delta Av_4 + \Psi_2$$

$$Av_3 = q_{30} \Delta Av_0 + q_{38} \Delta Av_4 + \Psi_3$$

$$Av_4 = q_{45} \Delta Av_5 + q_{46} \Delta Av_6 + (q_4^{(10,9)}_3 + q_4^{(10,11)}_4) \Delta Av_4 + \Psi_4$$

$$Av_5 = q_{50} \Delta Av_0 + q_5^{(9)}_4 \Delta Av_4 + \Psi_5$$

$$Av_6 = q_{60} \Delta Av_0 + q_6^{(11)}_4 \Delta Av_3 + \Psi_6$$

Here Av_i, Ψ and q_{kl} are all function of t

$$\begin{aligned} \text{Where} \quad \Psi_0 &= \mu_0 & \Psi_1 &= \mu_1 \\ \Psi_2 &= \mu_2 & \Psi_3 &= \mu_3 \\ \Psi_4 &= \mu_4 & \Psi_5 &= \mu_5 \\ \Psi_6 &= \mu_6 \end{aligned}$$

Now solving these equations by taking Laplace transform and solving for $Av_0^*(s)$, we get

$$Av_0^*(t) = U_1(s) / V_1(s)$$

The steady states availability is given by

$$Av_0^{**} = U_1(0) / V_1(0)$$

Where

$$U_1(0) = -[\{\mu_0 + \mu_1 Tp_{01} + (Tp_{12} Tp_{01} + Tp_{04})\mu_2 + (Tp_{12} Tp_{01} Tp_{23} + Tp_{04} Tp_{23})\mu_3\} + (Tp_{45} Tp_{50} + Tp_{46} Tp_{60}) + (\mu_4 + Tp_{45}\mu_5 + Tp_{46}\mu_6) \{ (Tp_{23} Tp_{34}(Tp_{12} + Tp_{01} + Tp_{04}) + Tp_{01}(Tp_{12} Tp_{24} + Tp_{174}) \}]$$

$$\text{And} \quad V_1(0) = 0$$

$$V_1'(0) = -[(1 + Tp_{01} Tp_{12} + \mu_0 (Tp_{01} Tp_{12} Tp_{23} + Tp_{04} Tp_{23})\mu_3) (Tp_{45} Tp_{50} + Tp_{46} Tp_{60}) + (Tp_{01} Tp_{12} Tp_{23} Tp_{34} + Tp_{01} Tp_{12} Tp_{24} + Tp_{01} Tp_{174} + Tp_{04} Tp_{23} Tp_{34} + Tp_{04} Tp_{24}) (\mu_4 + Tp_{45}\mu_5 + Tp_{46}\mu_6)] \dots \dots \dots (a)$$

Normal Maintenance Time

The recursive relations are

$$\begin{aligned} Nm_0 &= q_{01} \Delta Nm_1 + q_{04} \Delta Nm_2 \\ Nm_1 &= q_{10} \Delta Nm_0 + q_{12} \Delta Nm_2 + q_{174} \Delta Nm_4 + \tilde{N} \\ Nm_2 &= q_{20} \Delta Nm_0 + q_{23} \Delta Nm_3 + q_{24} \Delta Nm_4 \\ Nm_3 &= q_{30} \Delta Nm_0 + q_{34} \Delta Nm_4 \\ Nm_4 &= q_{45} \Delta Nm_5 + q_{46} \Delta Nm_6 + (q_4^{(10,9)}_3 + q_4^{(10,11)}_4) \Delta Nm_4 \\ Nm_5 &= q_{50} \Delta Nm_0 + q_5^{(9)}_4 \Delta Nm_4 \\ Nm_6 &= q_{60} \Delta Nm_0 + q_6^{(11)}_4 \Delta Nm_3 \end{aligned}$$

Here Nm_i , \tilde{N} and q_{kl} are all function of t

Now solving these equations by taking Laplace transform and find $\mathcal{N}_0^*(s)$, we get

$$\mathcal{N}_0^*(s) = U_2(s) / V_1(s)$$

Then for steady states

$$\mathcal{N}_0^{**} = \lim_{s \rightarrow 0} (s \mathcal{N}_0^*(s)) = U_2(0) / V_1'(0)$$

$$\text{Where} \quad U_2(0) = -\tilde{N} Tp_{01} (Tp_{45} Tp_{50} + Tp_{46} Tp_{60})$$

$V_1'(0)$ is specified in eq. (a).

Paid Maintenance Time

The recursive relations are

$$\begin{aligned} Mm_0 &= q_{01} \Delta Mm_1 + q_{04} \Delta Mm_2 \\ Mm_1 &= q_{10} \Delta Mm_0 + q_{12} \Delta Mm_2 + q_{174} \Delta Mm_4 + \mathcal{L} \\ Mm_2 &= q_{20} \Delta Mm_0 + q_{23} \Delta Mm_3 + q_{24} \Delta Mm_4 \\ Mm_3 &= q_{30} \Delta Mm_0 + q_{34} \Delta Mm_4 + \eta \\ Mm_4 &= q_{45} \Delta Mm_5 + q_{46} \Delta Mm_6 + (q_4^{(10,9)}_3 + q_4^{(10,11)}_4) \Delta Mm_4 \\ Mm_5 &= q_{50} \Delta Mm_0 + q_5^{(9)}_4 \Delta Mm_4 \\ Mm_6 &= q_{60} \Delta Mm_0 + q_6^{(11)}_4 \Delta Mm_3 \end{aligned}$$

Here Mm_i , \mathcal{L} and q_{kl} are all function of t

Now solving these equations by taking Laplace transform and find $\mathcal{M}_0^*(s)$, we get

$$\mathcal{M}_0^*(s) = U_3(s) / V_1(s)$$

Then for steady states

$$\mathcal{M}_0^{**} = \lim_{s \rightarrow 0} (s \mathcal{M}_0^*(s)) = U_3(0) / V_1'(0)$$

and

$$U_3(0) = -\xi [Tp_{45} Tp_{50} + Tp_{46} Tp_{60}] [Tp_{01} Tp_{12} Tp_{23} + Tp_{04} Tp_{24}]$$

$V_1'(0)$ is specified in eq. (a).

Minor Replacement Time

The recursive relations are

$$Mr_0 = q_{01} \Delta Mr_1 + q_{04} \Delta Mr_2$$

$$Mr_1 = q_{10} \Delta Mr_0 + q_{12} \Delta Mr_2 + q_1^7 \Delta Mr_4 + \xi$$

$$Mr_2 = q_{20} \Delta Mr_0 + q_{23} \Delta Mr_3 + q_{24} \Delta Mr_4$$

$$Mr_3 = q_{30} \Delta Mr_0 + q_3^8 \Delta Mr_4 + \eta$$

$$Mr_4 = q_{45} \Delta Mr_5 + q_{46} \Delta Mr_6 + (q_4^{(10,9)}_3 + q_4^{(10,11)}_4) \Delta Mr_4$$

$$Mr_5 = q_{50} \Delta Mr_0 + q_5^{(9)}_4 \Delta Mr_4$$

$$Mr_6 = q_{60} \Delta Mr_0 + q_6^{(11)}_4 \Delta Mr_3$$

Here Mr_i , ξ and q_{kl} are all function of t

Now solving these equations by taking Laplace transform and find $Ir_0^*(s)$, we get

$$Mr_0^*(t) = U_4(s) / V_1(s)$$

$$Mr_0^{**} = \lim_{s \rightarrow 0} (s Mr_0^*(s)) = U_4(0) / V_1'(0)$$

Where

$$U_4(0) = -Tp_{45} \xi [Tp_{01} Tp_{12} Tp_{23} Tp_3^8 + Tp_{01} Tp_{12} Tp_{24} + Tp_{01} Tp_1^7 - Tp_{04} Tp_{23} Tp_3^8 + Tp_{04} Tp_{24}]$$

and

$V_1'(0)$ is specified in eq. (a)

Major Replacement Time

The recursive relations are

$$Mj_0 = q_{01} \Delta Mj_1 + q_{04} \Delta Mj_2$$

$$Mj_1 = q_{10} \Delta Mj_0 + q_{12} \Delta Mj_2 + q_1^7 \Delta Mj_4$$

$$Mj_2 = q_{20} \Delta Mj_0 + q_{23} \Delta Mj_3 + q_{24} \Delta Mj_4$$

$$Mj_3 = q_{30} \Delta Mj_0 + q_3^8 \Delta Mj_4 + \eta$$

$$Mj_4 = q_{45} \Delta Mj_5 + q_{46} \Delta Mj_6 + (q_4^{(10,9)}_3 + q_4^{(10,11)}_4) \Delta Mj_4$$

$$Mj_5 = q_{50} \Delta Mj_0 + q_5^{(9)}_4 \Delta Mj_4$$

$$Mj_6 = q_{60} \Delta Mj_0 + q_6^{(11)}_4 \Delta Mj_3 + \text{Hb}$$

Here Mj_i , η and q_{kl} are all function of t

Now solving these equations by taking Laplace transform and find $\hat{R}_0^*(s)$, we get

$$Mj_0^*(t) = [U_5(s) / V_1(s)]$$

$$Mj_0^{**} = \lim_{s \rightarrow 0} (s Mj_0^*(s))$$

$$= [U_5(0) / V_1(0)]$$

Where

$$U_5(0) = \text{Hb} Tp_{46} [Tp_{01} Tp_{12} Tp_{23} Tp_3^8 + Tp_{01} Tp_{12} Tp_{24} + Tp_{01} Tp_1^7 + Tp_{04} Tp_{23} Tp_3^8 + Tp_{04} Tp_{24}]$$

And $V_1'(0)$ is specified in eq. (a)

Inspection Time

The recursive relations are

$$IT_0 = q_{01} \Delta IT_1 + q_{04} \Delta IT_2$$

$$IT_1 = q_{10} \Delta IT_0 + q_{12} \Delta IT_2 + q_1^7 \Delta IT_4$$

$$IT_2 = q_{20} \Delta IT_0 + q_{23} \Delta IT_3 + q_{24} \Delta IT_4 + \text{Hk}$$

$$IT_3 = q_{30} \Delta IT_0 + q_3^8 \Delta IT_4 + \eta$$

$$IT_4 = q_{45} \Delta IT_5 + q_{46} \Delta Mj_6 + (q_4^{(10,9)}_3 + q_4^{(10,11)}_4) \Delta IT_4$$

$$IT_5 = q_{50} \Delta IT_0 + q_5^{(9)}_4 \Delta IT_4$$

$$IT_6 = q_{60} \Delta IT_0 + q_6^{(11)}_4 \Delta IT_3 + H_b$$

Here IT_i , H_b and q_{kl} are all function of t

Now solving these equations by taking Laplace transform and find $\hat{R}_{p0}^*(s)$, we get

$$IT_0^*(t) = U_6(s) / V_1(s)$$

In the unvarying state,

$$IT_0^{**} = \lim_{s \rightarrow 0} (s IT_0^*(s))$$

$$= U_6(0) / V_1'(0)$$

Where

$$U_6(0) = - \lambda (p_{01}p_{12} + p_{04}) (p_{45}p_{50} + p_{46}p_{60})$$

And

$V_1'(0)$ is specified in eq. (a)

Busy Period of Repairman :-

Inspection Time + Normal Maintenance Time + Paid Maintenance Time + Minor Replacement Time + Major Replacement Time

Particular cases:

If we take repair rate and inspection time as negative binomial distributions as

$$g(t) = \theta e^{-\theta t}$$

$$i(t) = \delta e^{-\delta t}$$

$$r_1(t) = \mu e^{-\mu t}$$

$$k = \alpha + \lambda$$

$$e = \beta + \lambda + \gamma$$

$$h = \lambda + \pi$$

$$x = \lambda + \mu$$

$$m(t) = \pi e^{-\pi t}$$

$$n(t) = \gamma e^{-\gamma t}$$

$$r_2(t) = \rho e^{-\rho t}$$

$$w = \lambda + \gamma + \delta$$

$$f = \lambda + \rho$$

$$j = \lambda + \theta$$

Then we get,

$$Tp_{01} = \alpha / k$$

$$Tp_{10} = \gamma / e$$

$$Tp_{17} = \lambda / e$$

$$Tp_{23} = \gamma / w$$

$$Tp_{30} = \pi / h$$

$$Tp_{1^7_4} = \lambda / e$$

$$Tp_{45} = a\theta / j$$

$$Tp_{4,10} = \lambda / j$$

$$Tp_{59} = \lambda / x$$

$$Tp_{60} = \rho / f$$

$$\mu_0 = 1 / k$$

$$\mu_2 = 1 / w$$

$$\mu_4 = 1 / j$$

$$\mu_6 = 1 / f$$

$$Tp_{04} = \lambda / k$$

$$Tp_{12} = \beta / e$$

$$Tp_{20} = \delta / w$$

$$Tp_{24} = \lambda / w$$

$$Tp_{38} = \lambda / h$$

$$Tp_{3^8_4} = \lambda / h$$

$$Tp_{46} = b\theta / j$$

$$Tp_{50} = \mu / x$$

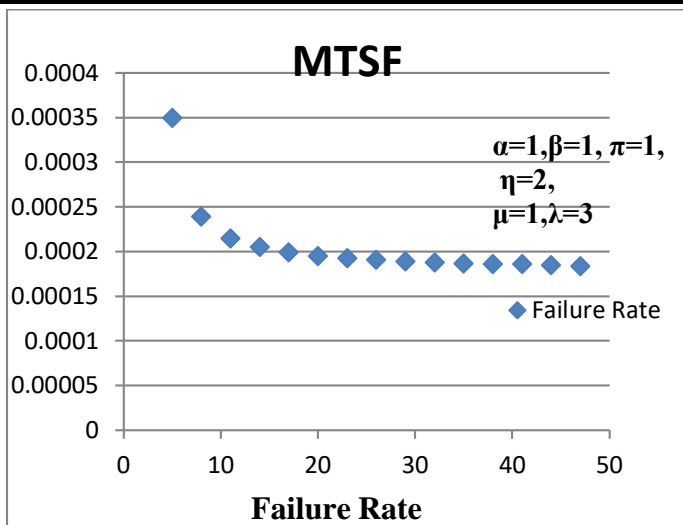
$$Tp_{5^9_4} = \lambda / x$$

$$Tp_{6,11} = \lambda / f$$

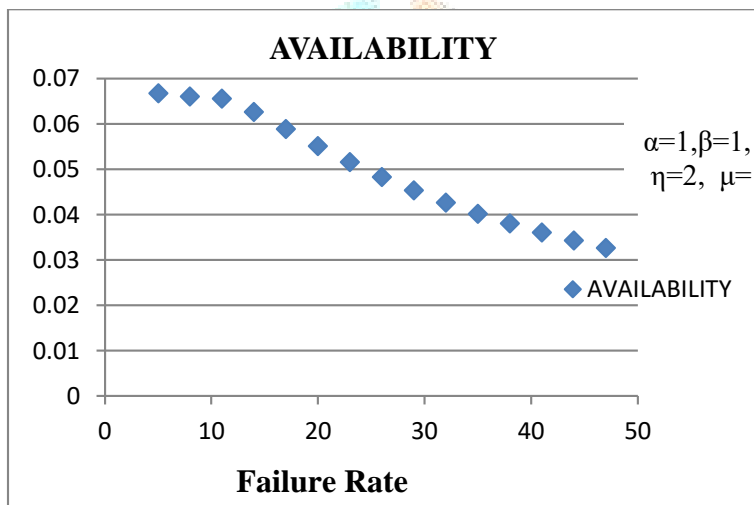
$$\mu_1 = 1 / e$$

$$\mu_3 = 1 / h$$

$$\mu_5 = 1 / x$$



Failure rate vs MTSF graph



Failure rate vs Availability

CONCLUSION:

In this paper, a new conception of maintenance, repair and was taken together in system to avoid the loss of production and extensive damage for safety reasons. Also routine inspection concept also taken with these assumptions. By the particular cases, we conclude that

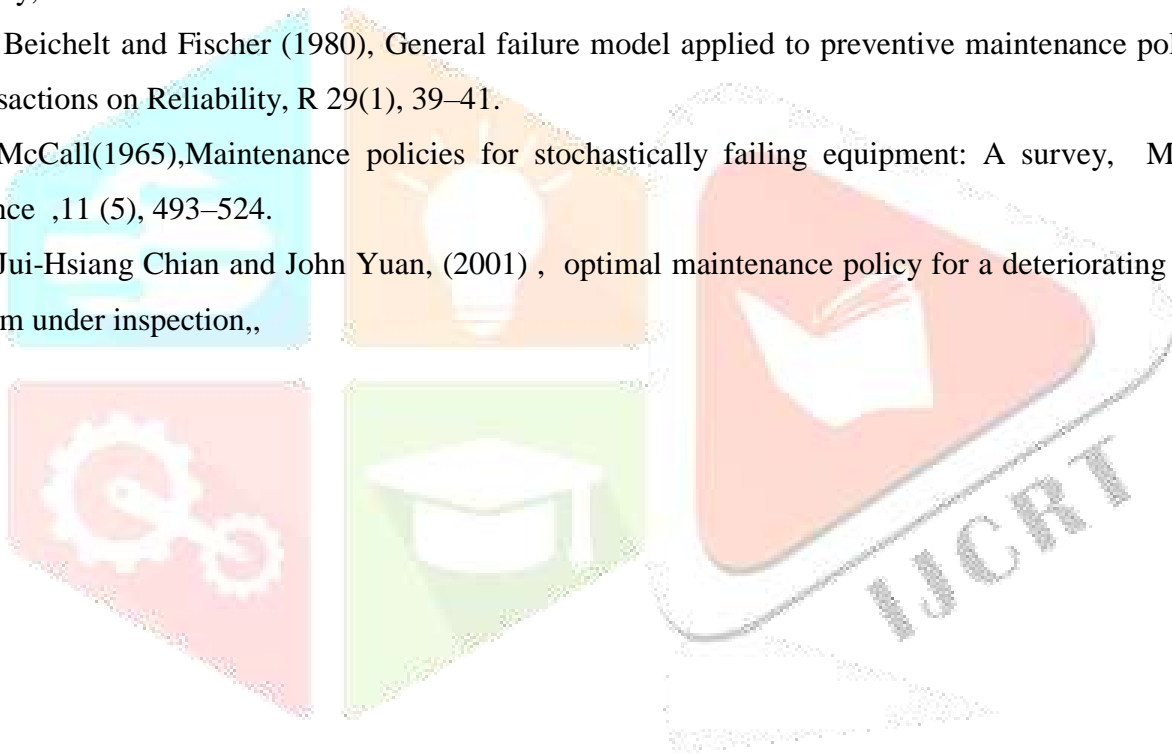
For the invariant value of $\alpha=1, \beta=1, \mu=1, \pi=1, \eta=2, \lambda=3$ MTSF goes on increases with the increase of failure rate.

Availability goes on decreases very sharply with the increases of failure rate.

Thus above conclusions help to get the desirable results in the field of design, development and production of individual production.

References:

1. Rander,M.C.,Suresh,K. and Ashok,k.," cost analysis of a two dissimilar cold standby system with preventive maintenance and replacement of standby", Microelectron. Reliab., 1994, VOL.34,p171-174.
2. Endrenyi J, Anders GJ.,2006, "Aging, maintenance, and reliability", IEEE Power and Energy Magazine, 59-67.
3. Marquez AC, Heguedas AS,2010, "Models for maintenance optimization: A study for repairable systems and finite time periods", Reliability Engineering and System Safety ,75:367-377.
4. Brown, M., Proschan, F. (1983) "Imperfect repair", Journal of Applied Probability,20: 851–859.
5. Jiang, R. and Jardine, A.K.S. (2005) "Two Optimization Models of the Optimum Inspection Problem",Journal of the Operational Research Society,56: 1176–1183.
6. Beichelt and Fischer (1980), General failure model applied to preventive maintenance policies,IEEE Transactions on Reliability, R 29(1), 39–41.
7. McCall(1965),Maintenance policies for stochastically failing equipment: A survey, Management Science ,11 (5), 493–524.
8. Jui-Hsiang Chian and John Yuan, (2001) , optimal maintenance policy for a deteriorating production system under inspection,,

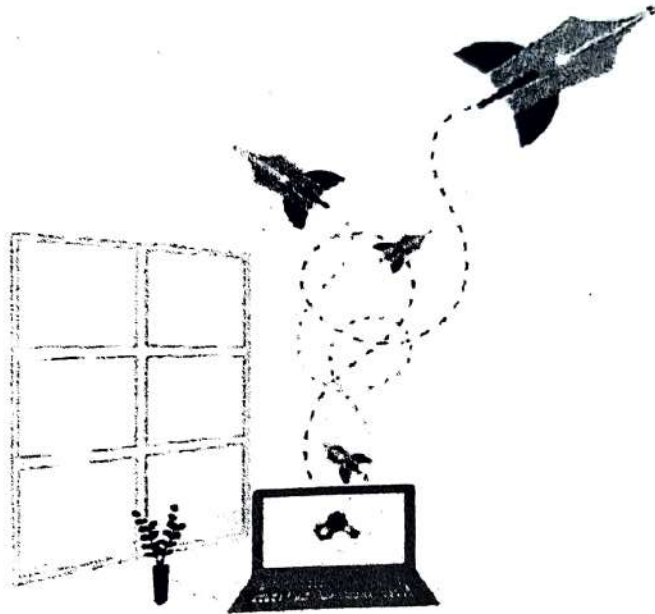


शोध सचिवा

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY BILINGUAL
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Issue 29

January to March 2021



Editor in Chief

Vinay Kumar Sharma
D.Litt. - Gold Medalist

sanchar
Educational & Research Foundation

GOVT. OF INDIA RNI NO.: UPBIL/2014/56766
GC Approved Care Listed Journal

ISSN 2348-2397

Shodh Sarita

International Multidisciplinary Quarterly
Bilingual Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 8 • Issue 29 • January to March 2021



Editor in Chief
Dr. Vinay Kumar Sharma
Ph.D. Litt. - Gold Medalist

 **sanchar**
Educational & Research Foundation

CONTENTS

No.	Topic	Page No.
1.	NEW PANCHSHEEL OF INDIA-CHINA BORDER STANDOFF	Ritu kothari, Dr Sanjeev 1
2.	Differnt Pattern of Micro services particular used in Applications	Ramadas Nayak 4
3.	A REVIEW of ALZHEIMER'S DISEASE	Shoubham, Akankaha 9
4.	Rainfall in Mysuru Regional Rhythms	Anita Rani 19
5.	The cyber criminology is an emerging field for research	Nisha Verma 26
6.	A Social Work Perspective Parental Involvement	Angeline, DrEnoch 32
7.	उत्तर भारतीय संगीत की गायन विधाओं में दक्षिण पद्धति के रागों का प्रयोग	अलीशा रानी 34
8.	Strategies and Adopted for Survival Pandemic Time in India	Dr. Anita Malhan 39
9.	महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण में मूल्य चेतना	सन्दीप कुमार 42
10.	Studies relating to Parental Involvement in education	Dr. Pooja 45
11.	A design pattern provides a general reusable resolution	Aditi Malik 51
12.	आसनों का स्वरूप - नारायण तीर्थ के सन्दर्भ में	पूनम रानी, डॉ० सुष्मा नारा 54
13.	Disease Detection Using Neural Network	Prateck Redy 60
14.	शरद सिंह के उपन्यास 'फिछले पन्ने की ओर' में चित्रित बेड़िया समाज	रजनी बाई, डॉ० आशा रानी 62
15.	Any Type of Gender Discrimination is Domestic Violence	Pankaj Rani 67
16.	द्वैताद्वैतवाद में जीवात्मातत्व	सुमन देवी 71
17.	Modified Features of Wastewater Processes	Hardic Sadafale 75
18.	Anoxic growth of heterotrophic bacteria	Shilpa Rani 80
19.	AN ALGORITHM FOR HIGH DYNAMIC RANGE	AKHIL KUMAR 85
20.	Indian Ethos and Dramatic Craftsmanship - A Fusion in Karnad's Plays	Rakhi Tyagi 88



शरद सिंह के उपन्यास 'पिछले पन्ने की औरतें' में चित्रित बेड़िया समाज

□ रजनी बाई, डॉ० आशा रानी

भारत को विभिन्न धर्म, जाति और समुदाय का देश माना जाता रहा है। इसलिए भारत को धर्म निरपेक्ष देश भी कहा जाता है। बी.बी.सी (ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन) की रिपोर्ट के अनुसार भारत में जातियों को 3000 तथा उपजातियों को 25000 में उनके कार्यों के अनुसार विभाजित किया गया है। इसी प्रकार से एक जाति समुदाय जिसे बेड़िया जनजाति या बेड़िया समुदाय के नाम से जाना जाता है। यह समुदाय उत्तर प्रदेश के कुछ इलाकों में निवास करता है। जो मुख्यतः बुंदेलखण्ड प्रान्त के अन्तर्गत आते हैं। बुंदेलखण्ड क्षेत्र के रनगाँव, पथरिया, विजावत, विदिशा, रायसेन, हबला, फतेहपुर जैसे गाँवों में यह जनजाति मुख्यतः आज भी बड़ी संख्या में निवास करती है।

बेड़िया समुदाय एक घुमंतू और अपराधिक प्रवृत्ति वाला समुदाय माना जाता है। भारत में कई ऐसी जनजातियाँ हैं जिनकी गणना जरायमपेशा जाति के रूप में की जाती है। इन जातियों का प्रत्यक्ष धंधा जो भी हो, परन्तु मूलतः ये चौरा, डकैती, लूटमार जैसी अपराधिक कृत्यों से जुड़ी रहती है। इनके कृत्यों में वे जनजातियों आती है जो पहले घुमकड़ी एवं अपराध से जुड़ी हुई थी, किन्तु अब एक स्थान पर बस गई है और अधिकतर ईमानदारी से अपनी आजीविका चलाती है। द्वितीय श्रेणी में वे जनजाति है, जो एक निश्चित स्थान पर बस चुकी है तथा प्रत्यक्षतः कोई न कोई धंधा

करती है। तृतीय श्रेणी में वे जनजातियाँ हैं जो आप भी घुमकड़ है और अवसर पाते ही अपराधिक कृत्य कर डालती है।

बेड़िया जाति का स्वरूप आज भी द्वितीय श्रेणी में आता है। वैसे मध्यप्रदेश में बेड़िया जनजाति के अलावा और भी बहुत-सी जनजातियाँ हैं जो अपराधिक कृत्यों से जुड़ी हुई मानी जाती है जैसे-बधिक, बौदिया, जादुआ, कंजर, खंगर, कोल्हासी, कोलो, गरौरी, नट, पासी, पारदी, सांसिया आदि। संविधान में बेड़िया को अनुसूचित जाति के अन्तर्गत माना गया है जिसमें ग्राम पथरिया का बेड़िया समाज भी शामिल है। सन् 1901 की जनगणना में बेड़िया समुदाय को नट समुदाय के साथ गिना गया था। 2011 की जनगणना के अनुसार इनको अनुसूचित जनजाति में शामिल किया गया। इनकी जनसंख्या 46775 है। यह एक घुमकड़ जनजाति है जिसे अपराधिक जनजाति अधिनियम के अन्तर्गत अधिसूचित किया गया है।

उपन्यास का अध्ययन करते हैं तो ज्ञात होता है कि बेड़ियों की उत्पत्ति के बारे में बेड़िया समाज में कुछ दिलचस्प कथाएं प्रचलित हैं। बेड़िया समाज के लोग स्वयं को पृथ्वीराज चौहान के सैनिकों के वंशज मानते हैं। पृथ्वीराज चौहान और मौहम्मद गोरी के मध्य जब युद्ध हुआ तो युद्ध के दौरान अनेक राजपूत सैनिक मारे गए। उस समय यद्यपि सती-प्रथा का भी प्रचलन था। परन्तु जब सती होने के लिए मजबूर करने वाले परिवारजन भी मारे गए तो ऐसे परिवारों की विधवाओं ने सती होने की बजाय जीवन जीने का निर्णय लिया। यद्यपि वो यह बात अच्छे से जानती थी कि उनका

¹ शरद सिंह, हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विन्वविद्यालय, रोहताक

² सत्यमक प्रकाश (हिन्दी), कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी, मिरापुर (हरियाणा)

विवाह सम्भव नहीं है इसलिए उनमें से कुछ ने शास का मार्ग अपनाया तो कुछ ने सहारा प्राप्ति के लिए अन्य जातियों के पुरुषों से संबंध स्थापित किए। संबंध समाज द्वारा मान्यता प्राप्त नहीं कर पाए। उनकी अवैध कहलाने वाली संतानों को किसी भी जाति का स्वीकार नहीं किया तथा इन्हें समाज से बहिष्कृत किया गया। समाज से बहिष्कृत होने के कारण कोई इनकी पुत्रियों से विवाह नहीं करना चाहता था। इनकी पुत्रियाँ वेश्यावृत्ति के लिए विवश हुईं। ये स्त्रियाँ सम्पन्न घरों एवं ऊँची जाति के पुरुषों की संतान होने के कारण इनमें रूप-रंग, सौन्दर्य और शक्ति की कोई कमी नहीं थी। आर्थिक रूप से सम्पन्न उच्च वर्ग के पुरुषों को आकर्षित करके उन्होंने धन कमाना आरम्भ किया।

बेड़िया समाज की उत्पत्ति के विषय में एक कथा यह भी प्रचलित है कि राजस्थान के भरतपुर राज्य में दो-ढाई सौ वर्ष पहले सैसमुल और मुल्लानुर नाम के दो भाई रहते थे। सैसमुल के वंशज सांसी (सांसिया) कहलाए और मुल्लानुर के वंशज बेड़िया या कोल्हासी कहलाए। ये परम्परागत रूप से घुमक्कड़ और लुटेरे थे। ये चटाई की झोपड़ियों में अथवा तंबुओं में रहते थे। बेड़िया समाज में स्वच्छंद यौनाचार की प्रथा प्रचलित है। इनके दल की सभी स्त्रियाँ दल के सभी पुरुषों के साथ यौन सम्बन्ध बनाती थी। इनके दल में स्त्री-पुरुष के मध्य विवाह की बाध्यता नहीं रहती थी। कोई भी स्त्री आज एक पुरुष के साथ सम्बन्ध बनाती थी तो कल किसी दूसरे पुरुष के साथ संसर्ग करती थी। इसी प्रकार पुरुष भी किसी एक स्त्री के साथ संसर्ग में विश्वास नहीं रखते थे। उन्हें अपने समुदाय की किसी भी स्त्री के साथ यौन-संबंध की स्वतन्त्रता थी। बेड़ियों में स्वच्छंदता के साथ-साथ दायित्व बोध भी रहा। वो जो भी करती वह अपने परिवार एवं समुदाय के लिए करती थी। इसीलिए ये औरतें किसी एक पुरुष के साथ बंधकर बंधन में जीवन व्यतीत करने के बदले यायावर जीवन जीना अधिक

पसंद करती है। अंग्रेजी अधिकारी सर एच. रिजले ने सन् 1915 ई. में बेड़ियों के बारे में विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि "बेड़िया खानाबदोश, घुमक्कड़ तथा जिप्सियों के समान एक समुदाय है जो मूलतः आपराधिक प्रवृत्ति का है।"¹

"1916 में रसेल और हीरालाल ने पहली बार बेड़नी शब्द का प्रयोग उन औरतों के लिए किया जो बेड़िया समुदाय की थी और नृत्य करती थी। बेड़िया समाज में बेड़नी बनने की प्रक्रिया में एक प्रथा प्रचलित है जिसका पालन इन औरतों को करना पड़ता है। बेड़नी बनने की प्रक्रिया में बेड़नी बनने वाली लड़की का 'सिर-ढकना' नाम की रस्म की जाती है।"²

सिर-ढकना ही वह प्रथा है जिसे परम्परा का नाम देकर इन बेड़िया औरतों को देह-व्यापार की दलदल में धकेला जाता है। 'सिर-ढकना' की रस्म अदा करने वाला व्यक्ति निकटवर्ती ग्राम का कोई सम्पन्न व्यक्ति होता है। 'सिर-ढकने' वाला व्यक्ति आमतौर पर सवर्णजाति का ही आर्थिक संपन्न युक्त लोग होते हैं। बेड़िया समुदाय में प्रचलित मान्यता के अनुसार- "बेड़िया जाति के लोग जिन जातियों के लोगों के हाथों पानी पीते हैं उन्हीं जातियों के व्यक्ति को 'सिर-ढकना' करने का अधिकार होता है। 'सिर-ढकना' की रस्म में धनिक व्यक्ति अपनी पसंद की बेड़नी पर अपना अधिकार स्थापित करने अर्थात् उसे अपनी रखैल बनाने के लिए पहले एकमुश्त रकम देता है। यह रकम पांच हजार रुपये तक हो सकती है। यह रस्म एक सामाजिक समारोह के रूप में पूरी की जाती है। इस रस्म के अवसर पर मिली प्रथम धनराशी से सामूहिक भोज किया जाता है। यह जाति-भोज होता है। भोज से बची हुई धनराशी उस लड़की की व्यक्तिगत संपत्ति होती है। सिर-ढकने वाला व्यक्ति भरण-पोषण के लिए वार्षिक राशि की घोषणा भी करता है जिसका भविष्य में भुगतान करता रहता है।"³ इस रस्म को सिर-ढकना इसलिए

कहा जाता क्योंकि इसके द्वारा बेड़िया लड़की को सिर-ढंकना करने वाले यह करने वाले व्यक्ति का संरक्षण प्राप्त होता, किन्तु इस संरक्षण का अर्थ यह नहीं है कि वह संरक्षण मिल जाने के बाद देह व्यापार में संलग्न नहीं होती। 'सिर-ढंकना' की रस्म के पश्चात् वह उन्मुक्त भाव से देह-व्यापार प्रारम्भ कर देती है।

बेड़िया स्त्रियां जो बेड़नी कहलाती हैं, उन्होंने अपना स्थान समाज में निर्धारित करने के लिए लोकनर्तकी के जीवन को अपनाया। इनके समुदाय के पुरुष आलसी एवं निकम्मे होते हैं और आजीविका हेतु बेड़नी लड़की की कमाई पर ही निर्भर रहते हैं। पुरुषों की इसी अकर्मण्यता ने इन बेड़ियां स्त्रियों को आज तक वेश्यावृत्ति के कीचड़ से नहीं निकलने दिया। अपने परिवार तथा समुदाय के भरण पोषण के लिए नाच-गाकर कमाया जाने वाला धन-पर्याप्त नहीं था। इस आर्थिक समस्या को सुलझाने के लिए उन्होंने धन कमाने का आसान तरीका खोजा। वो आसान तरीका था देह-व्यापार। जो परम्परा के नाम पर इस समुदाय की स्त्रियां पीढ़ियों से करती आ रही हैं। अन्य समाज में वेश्यावृत्ति को हेय दृष्टि से देखा जाता है परन्तु बेड़िया समाज में देह-व्यापार परम्परा के नाम पर अब जीवित है। विशेष बात तो यह है कि इस समाज की वेश्यावृत्ति करने वाली स्त्रियां अपने समाज और परिवार में अपेक्षाकृत अधिक अधिकार प्राप्त होती हैं। उनके लिए देह-व्यापार अपराध बोध से परे है। क्योंकि वह यह बात जानती ही नहीं कि वेश्यावृत्ति अपराध की श्रेणी में आता है। वह तो परम्परा के नाम पर होने वाले इस शोषण को ही अपनी नियति मानकर भोगे जा रही है।

देह-व्यापार के साथ-साथ ये बेड़नियां अपनी देह का प्रयोग चोरी के कार्य में भी करती हैं। सन् 1907 ई. में जबलपुर के एक अंग्रेज अधिकारी गेयर ने बेड़ियों की चौर्यकला का वर्णन करते हुए लिखा था,

"बेड़नियां हीरे-जवाहरात और यहां तक कि सिक्के भी अपने गुप्तांगों में छिपा लेने में प्रवीण होती हैं। इनमें अभ्यास के द्वारा अपने गुप्तांगों में अधिक से अधिक कीमती सामान अंदर रख लेने की पर्याप्त जगह बनाने की आदत शुरू से डाली जाती है। ये बेड़निया घूम-घूमकर भीख मांगती हैं और अक्सर मिलते ही चोरी कर लेती हैं।" चोरी करने का तरीका ये अपने परिवार के सदस्य यानी माँ, बुआ, बड़ी बहन आदि से ही सीखते हैं। फुलवा, नचनारी, बिलौटी आदि ने चौर्यकला की प्रेरणा अपनी माँ से ली थी। "फुलवा के दल में बच्चे-बूढ़े मिलाकर कुल सैंतालीस सदस्य थे। जिन दिनों उसके दल ने पनागर में डेरा डाला हुआ था, उन दिनों फुलवा को चोरी करने का एक नया ढंग अपनी माँ से सीखने को मिला।"⁵

चोरी की यह शैली बेड़ियों में बहुप्रचलित थी। उन्हें बचपन से ही ऐसे ढंग में ढाला जाता है कि वो बड़े होते-होते चौर्यकला में पूर्णतः महारत हासिल कर लेते हैं। "बिलौटी की बात और थी। उसने अपने पहले चौर्य-धन के रूप में लाई हुई सोने की मुंदरी माँ के हाथ में रखी थी। माँ ने उसकी लाख-लाख बलैया ली थी। जब माँ भीड़ से घिरी हुई तुमके लगा रही थी उसी समय बिलौटी भीड़ में घुसकर किसी आदमी की उंगली से मुंदरी सरका लाई थी।"⁶

बीसवीं सदी के अन्तिम दशक में बेड़िया समुदाय में परिवर्तन होने लगा है परन्तु उनके समाज में बेटी के जन्म का उल्लास मनाए जाने की परम्परा आरंभ से आज तक चली आ रही है। एक बेड़नी आज भी फूली नहीं समाती जब तक एक कन्या को जन्म देती है। वह और उसके परिवारजन कन्या जन्म पर खुशियां मनाते हैं क्योंकि इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि वह एक बेड़नी को अपनी बेटी के भविष्य में ही अपना भविष्य सुरक्षित दिखाई देती है। वह यह बात मली-मांति जानती समझती है कि जैसे-जैसे वह वृद्धावस्था की ओर बढ़ने लगेगी, वैसे-वैसे वह नाचने

देह-व्यापार में अक्षम हो जाएंगी और स्थिति एक ऐसी हो जाएगी कि न तो वह नाच सकेगी और देह-व्यापार कर सकेगी। ऐसी स्थिति में एक लड़की होती है जो उसके नक्शे कदम पर चलते हुए नका भरण-पोषण कर सकती है। लेखिका कहती है, ठाकुर को लेकर नचनारी का आचारण अब पूरी तरह खोबर हो चला था, क्योंकि ठाकुर के प्रति उसका मोह हो गया था। इसी दौरान वह अपने होने वाली बच्चे के बारे में सोच-सोचकर चिंतित होती रहती। भगवान से दुआ करती कि उसकी संतान के रूप में बेटा जन्म ले, बेटा नहीं। जिस समाज में पुत्र के जन्म को अधिक महत्व दिया जाता है, पुत्री होने पर विषाद का अनुभव किया जाता है, उस समाज में नचनारी द्वारा बेटे के जन्म लेने की आकांक्षा अपने आप में एक विचित्र-सी लगने वाली आकांक्षा थी।⁷

बेड़नियां जब देह-व्यापार की दलदल में उतरी तो उनके सामने एक विकट समस्या थी। वो समस्या थी स्वच्छंद यौन-संबंध स्थापित करने के बाद होने वाली नाजायज संतान की समस्या। क्योंकि बेड़नियां जिन पुरुषों से यौन-संबंध स्थापित करती थी उन पुरुषों से संबंध का आधार सिर्फ अर्थ प्राप्ति था। अतः कोई भी पुरुष इन अवैध-संबंधों से प्राप्त होने वाली संतान को अपना नाम नहीं देना चाहते थे। इसके पीछे दो प्रमुख कारण थे। पहला कारण तो यह कि उनको अपनी सामाजिक प्रातिष्ठा का बड़ा ध्यान रहता कि कहीं बेड़िनियों से इनके नाजायज संबंध प्रगल्हा न हो जाए और दूसरा ये कि बेड़नी से उत्पन्न उनकी संताने स्वयं को उनका उत्तराधिकारी घोषित करके कहीं उनकी सम्पत्ति न हड़प ले। बेड़नियां इस सच्चाई से भली-भांति परिचित है कि उनके बच्चे को उनका पिता सामाजिक रूप में स्वीकार नहीं करेगा, फिर भी वे बिना किसी हिचक के बच्चों को जन्म देती है और उन्हें पालती-पोसती है। बेड़नियां अविवाहित रहकर ही मातृत्व ग्रहण करती है। लेखिका ने जब श्यामा नाम की बेड़नी से पूछा कि

अविवाहित रहकर तुम बच्चे पैदा करते हो तो क्या तुम्हारे बच्चे अवैध नहीं कहलाएंगे? तब श्यामा दृढ़ता-गरे स्वर में कहा कि 'क्यों अवैध कहलाएंगे? वे अनाथ थोड़े हैं।'⁸ लेखिका ने श्यामा को समझाने का प्रयास किया कि वह वैधानिक पितृत्व के बिना अपने बच्चों को समाज में उचित स्थान नहीं दिलवा पाएगी। वह कोई नीना गुप्ता तो है नहीं, वह तो निचले तबके की एक अशिक्षित औरत है। वह भी निपट देहातन। लेखिका श्यामा को समझाते हुए कहती है, 'श्यामा, इस समाज में बच्चों को अपने पिता के नाम की आवश्यकता पड़ती है न। तो बच्चों का कोई कानूनी पिता तो होने चाहिए।'⁹ जब वे धनिक पुरुष बेड़िनियों से उत्पन्न संतान को अपना नाम नहीं दे पाते तो जरूरत पड़ने पर बेड़िनियों अपनी संतान के पिता का नाम पैसा लिखता देती है। सही भी है पैसे के लिए ही तो वह इस अभिशाप को झेलने के लिए मजबूर है।

बेड़िनियों ने अपने इस कटुयथार्थ को बड़ी सहजता से आत्मसात करते हुए इस समस्या का बड़ा उचित हल निकाला है, वह उन पुरुषों के मुंह पर तमाचे की भांति है जो अपने पौरुष का परिचय देते हुए पैसों के बल पर इनकी कोख में संतान का बीजरोपण करता है परन्तु उसी संतान को अपना नाम देने का पौरुषपूर्ण साहस नहीं जुटा पाता है और अपनी संतान को अवैध अभिशप्त जीवन जीने के लिए छोड़ देते हैं। बेड़नियां सामाजिक बंधन की परवाह नहीं करती है और न ही अपनी जीवन में पुरुष के महत्व की। क्योंकि वे लोग इस बात को अच्छे से जानती हैं कि उनके जीवन में आने वाले पुरुषों से उनका सिर्फ एक ही रिश्ता होता है और वह रिश्ता है ग्राहक के रूप में। क्योंकि कोई भी पुरुष प्रेम के वशीभूत होकर बेड़िनियों के पास नहीं जाता। वह मात्र अपनी कामाग्नि को शांत करने के लिए आते हैं, ये बात बेड़िनियां बखुबी समझती भी है और जानती भी है। उन पुरुषों की नजर में बेड़िनियां प्रेम से अधिक विलासिता की सामग्री होती है

वे पैसे के बल पर इसका जब चाहे भोग सकते हैं। अतः ऐसे पुरुषों के महत्व को बेड़नियों ने अपने तथा अपनी संतान के जीवन से नकारने का साहस बड़ी सहजता से कर दिखाया है।

काश। बेड़नियां ऐसी ही दृढ़ता अपने जीवन के हर पक्ष में दिखा पाती। वे पौराणिक कथा की शकुंतला की तरह स्वयं को दुष्यंत के सामने खड़ी होकर स्वयं को स्वीकारे जाने की गुहार नहीं लगाती है। बेड़नियों ने अपने जीवन की कटु-सच्चाई को हंसकर पी लिया है। बेड़नियां स्वयं नहीं जानती है कि नारीवाद क्या है, फिर भी वे एक विशेष नारीवादी जीवन जी रही है। उनका यह अस्तित्व संघर्ष यदि कोई मुखर रूप नहीं ले पा रहा है तो सिर्फ इसलिए कि उनके पास पुराने अनुभव है, नए रास्ते नहीं। इस सन्दर्भ में लेखिका लिखती है, "नए रास्ते की खोज में श्यामा का भटकाव अब मैं जान चुकी थी। मंत्री के घर जाकर राई नाचने से लेकर चन्द महीनों की रखैल बनने की कथा श्यामा की उस जिजीविषा को व्यक्त करती है जो अपनी जीवन-धारा बदलने की प्रबल इच्छा के रूप में उसके मन में विद्यमान है।"¹⁰

सार रूप में कहा जा सकता है कि लेखिका ने इस उपन्यास के माध्यम से सामाजिक स्तरों में दबी-कुचली और पिछले पन्नों में दब गई औरतों को मुखपृष्ठ पर लाने का सफल प्रयास किया है। बेड़नियां कहलाने वाली बेड़ियां सामाज की औरतों की स्थिति में सुधार लाने हेतु सबसे पहले उनके प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन लाना अनिवार्य है। इसी परिवर्तन से वे अपने अधिकारों को जान-समझ सकेंगी और अपने लिए बेहतर विकल्पों की तलाश करके समाज में अपनी भूमिका निर्धारित कर पाएंगी। साथ-ही एक बेहतर नागरिक के रूप में देश के विकास में योगदान दे सकेंगी।

सन्दर्भ-सूची

1. शरद सिंह, 'पिछले पन्ने की औरतें', पृ. 68
2. वही, पृ. 150
3. वही, पृ. 150
4. वही, पृ. 68
5. वही, पृ. 55
6. वही, पृ. 37
7. वही, पृ. 102
8. वही, पृ. 18
9. वही, पृ. 18
10. वही, पृ. 262

सुनीता जैन की कविताओं में वृद्धों का मार्मिक यथार्थ

*डॉ. अनिल कुमार **कमलेश

*असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, वैश्य कॉलेज भिवानी।

** (शोधार्थी) शोधार्थी, हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्विद्यालय, रोहतक।

समकालीन हिन्दी रचनात्मकता के परिदृश्य पर पद्मश्री सुनीता जैन (1941-2017) का विशिष्ट स्थान है। व्याप्त सम्मान में सम्मानित सुनीता जैन ने उपन्यास, कहानी, कविता, निबंध, आत्मकथा अर्थात् तमाम साहित्यिक विधाओं को अपनी लेखनी के सम्पर्क में न केवल हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि की है, अपितु आंग्ल भाषा एवं साहित्य को भी समृद्ध किया है। उनकी पचास वर्षों तक की गई निरंतर साहित्य साधना इस बात का शानक है कि उन्होंने जीवन के प्रत्येक पल को जीने के साथ-साथ उसे साहित्य की विभिन्न विधाओं में संजोकर आने वाली पीढ़ी के लिए धरोहर के रूप में सुरक्षित रख छोड़ा है।

अपने सम्पूर्ण जीवन काल में एक कवयित्री के रूप में डॉ. सुनीता जी ने तेरहपन काव्य संग्रह लिखे जो विषय की विविधता और कला की उत्कृष्टता के कारण हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है। ऐसा प्रतीत होता है कि उनके भीतर उमड़ने वाली भावनाओं और विचारों का ज्वार इतना तीव्र रहा होगा कि उन्होंने एक-एक वर्ष में कई-कई काव्य संग्रह प्रकाशित करवाये। देश-विदेश तक के अपने अनुभव संसार में देशीयता के आंचल को पकड़ने वाली सुनीता जी की कविताओं में व्यक्त भावनाओं का संबंध प्रेम, प्रकृति, परमात्मा, परिवार से रहा है। उनकी कविताएं आधुनिक युग में बदलते रिश्त-नातों की गंभीर एवं तीक्ष्ण संघर्षों से परिपूर्ण मनःस्थित को व्यक्त करती है। डॉ. चंद्रकांत वादिवडेकर के शब्दों में-“सुनीता जैन की कविता एक संवेदनात्मक एवं भावसमृद्ध कवि-मानस का गहरा स्पर्श देती है। उनकी कविता विचारोत्तेजक बौद्धिकीकरण का रूप लेकर नहीं आती बल्कि जीवन जीते समय पग-पग पर होने वाले अवरोध, सम्बन्धों की अमानुषिकता तथा मूल्यभ्रष्टता के कारण उत्पन्न होने वाली मानसिक तकलीफ और तज्जन्य कठुणा की हार्दिक प्रतीतियाँ देती है।”¹ अतः सुनीता जी अपनी कविताओं में उन सरोकारों को बड़े ही मार्मिक श्रम में अभिव्यक्ति प्रदान करती है जो वृद्धावस्था से जुड़े हैं।

वृद्धावस्था जीवन काल की तीन अवस्थाओं में से एक अंतिम अवस्था है जिसे स्वाति तिवारी ने अपनी पुस्तक ‘अकेले होते लोग’ में “सम्पूर्ण शारीरिक क्षमताओं में उतरोत्तर कमी”² के रूप में परिभाषित किया है। वहीं प्रमोद त्रिवेदी इसे भारतीय परिवारों के “बिखराव का श्रासद और सबसे भयावह पहलू”³ मानते हैं। आज वृद्ध जीवन अपने ही घर की दहलीज पर भविष्य की संभावनाओं से भयग्रस्त खड़ा है। असुरक्षा की भावना, मानसिक संताप, जीवन में अलगाव बोध, अकेलेपन, उपेक्षा जैसी विकट समस्याओं से घिरे वृद्धों के श्रासदीपूर्ण जीवन का अंकन सुनीता जैन यथार्थ रूप में करती है। क्योंकि उन्होंने-“देखा था/चट्टी हुई उम्रों में/मन को बेवस गिरते।”⁴ सुनीता जी की ‘मैंने देखा था’ कविता वृद्धों की इस बेवसी को बयां करती है कि उन्हें शारीरिक अक्षमताओं के कारण खाने के लिए बेटे-बहुओं पर आश्रित रहना पड़ता है। उन्हें बार-बार मांगकर खाने में शर्म महसूस होती है; परंतु जब पेट भरना हो तो यह शर्म उन्हें खाना चुराने तक के लिए विवश कर देती है। वृद्धों के इस मार्मिक यथार्थ को सुनीता जी अपनी ‘तशतरी-1’ कविता में व्यक्त करते हुए बताना चाहती है कि -

“एक बार मैं खा नहीं सकते वृद्ध
इसीलिए खाते हैं थोड़ा-थोड़ा।”⁵

वृद्धों का भोजन चुराकर खाना घर के बेटे-बहुओं को पसंद नहीं होता। वे उनकी इस स्थित को समझने की बजाय उन पर खीजते हैं। उनकी इस खीज को सुनीता जी अपनी ‘तशतरी-2’ कविता में चित्रित करती है -

“वृद्धों का जीवन है बस, ‘छी...छी...’

‘ओह माई गॉड...’

‘फिर वही...’

‘मैं और नहीं कर सकती अब

तुम जानो और तुम्हारे बाबू जी, ”⁶

बेटे-बहुओं की यह खीज वृद्धों को आत्मग्लानि से भर देती है; परंतु वे कुछ भी कर सकने में स्वयं को असमर्थ पाते हैं। ऐसे में सब कुछ सहन करने के लिए विवश उनका व्यथित मन कह उठता है -

“राम जी, क्यों रखे हो जीवित
झिड़की खा-खा कर भरने को ?”⁷

आज अपने व्यक्तिगत जीवन में अपराधबोध का शिकार हुए वृद्ध अपेक्षेपन की स्थिति में संघर्ष कर रहे हैं। यह अपेक्षापन और तनाव उन्हें भय में ग्रस्त करना हुआ लगाना मृत्युबोध की ओर धकेलना है। अपनी युवावस्था में एवं पालतू कुत्ते के साथ अपने पूरे दिन को गुजार देना होगा। गुनीला जी की 'अवकाश' कविता की पंक्तियाँ इस अपेक्षेपन का मार्मिकी चित्र उपस्थित करती हैं -

"गिना खाने और गीने के कुत्ते नहीं
बेटा-बेटी अफिम में
पोता-पोती स्कूल में
यस बचा एक टीवी
या पालतू कुत्ता कोई
आप जितना चाहें
जी नगा लें उनमें"⁹

माता-पिता के लिए तो उनके बच्चे ही उनका सब संसार होने हैं। वे उनके सुख-दुःख का हर परिस्थिति में ध्यान रखते हैं। उनके जीवन की चरम सार्थकता तो इसी में रहती है कि वे मर्दान सुखी रहें; परन्तु यही बच्चे अपनी गृहस्थी में, कामकाज में इतना उलझे होते हैं कि आज -

"उनकी समस्याएं दर्ज हैं लैपटॉप में,
उनके समाधान इंटरनेट पे,
उनका भविष्य बैंकों के खाते हैं,
उनका अतीत व्यर्थ की बातें हैं।"⁹

आज की इस जीवन शैली ने वृद्धों की समाज में कोई जगह नहीं छोड़ी; बल्कि उन्हें उनकी उम्र जगह में भी विस्थापित कर दिया है जहाँ पर उन्हें आदर, मान-सम्मान के अधिकारी होना चाहिए। वृद्धों को विकास की अबाध गति ने आज असहाय बना दिया है। आज का समाज सेवानिवृत्त होते ही व्यक्ति की उपस्थिति को नकार देता है। सेवानिवृत्त होने से केवल उसकी नौकरी ही नहीं जाती अपितु उसके साथ ही चली जाती है उनकी शानों-शौकत, रोब-दाव सब के सब। जितना चाहे साधन सम्पन्न होने पर भी सेवानिवृत्त वृद्ध की बात का बज़न कम हो जाता है फिर चाहे -

"बाबा को प्यास लगी या जरूरत है चाय की
घर को जानने फुर्त नहीं
आते जाते परिजन देखते हैं उन्हें
आंगन के वृक्ष सा
जो यदि वहाँ नहीं होता
तो पोते कि मोटर साइकिल खड़ी हो सकती"¹⁰

आज अधिकांश परिवारों में वृद्धों की स्थिति ऐसी हो गई है कि उनके पोता-पोती भी उनमें बिना बोले ही, बिना नमस्ते किये ही उनके पास से निकल जाते हैं, ऐसे में 'मूल से प्यारा सूद' कहावत की सार्थकता पर मंदाह व्यक्त करती हुई कवयित्री कहती है कि आज -

"न मूल, न सूद कुछ भी नहीं।
न विगत न आगत हम वृद्धों के।"¹¹

आज के बच्चे यह नहीं समझ पाते कि जिन दादा-दादी के साथ खेल कूदकर वे बड़े हुए हैं "वे ही दादा /रोते हैं क्यों / छिप-छिप"¹²कर आज बेटे-बहुओं के द्वारा ज़मीन-जायदाद, धन-सम्पत्ति का वंटवारा करने के साथ ही माँ-बाप का वंटवारा भी कर लिया जाता है। यह आज के समाज का सर्वाधिक मार्मिक पहलू है क्योंकि -

"जब दो में से एक
रह जाते हैं-माता या
पिता तो मरने से पहले
वे कई बार मरते हैं।"¹³

जिस घर परिवार को माता-पिता अपने परिश्रम, प्रेम, स्नेह, विश्वास में सींचते हैं उसे टुकड़े-टुकड़े होते देखना उनके लिए असहनीय होता है। यह पीड़ा तब और भी सघन हो जाती है जब -

"बहु महमूसता है
बेटे की उपेक्षा
बहु का शोभ

बच्चों का हर
वह दिन-दिन
होना जाना है
चुप से चुपकर¹⁴

उसकी चुप से चुपकर की यह स्थिति आगे चलकर समाज के उस भयावह एवं मार्मिक यथार्थ को दर्शाती है जब एक वृद्ध अपने अंतिम पल में -

"बेटा है /बेमे ही /विम्बर पर निधन
किंतु पर के /जानेगे यह

जाएगा जब कमरे में /नीकर उमका /घाना लेकर।"¹⁵

आज के सम्बेदनहीन समाज में वृद्धों की इस तरह तिल-तिल कर मरने जाने की घटनाएं न केवल किमी के भी ध्यान को अपनी ओर केन्द्रित करती हैं; अपितु यह सोचने पर भी विवश कर देती हैं कि आगिर हमारे बड़े-बड़े हमसे चाहते क्या हैं? शारीरिक असमर्थता और अंगों की शिथिल होने जाने पर भी -

"बूढ़े नहीं चाहते किमी का पैसा
न ही सेवा। बूढ़े जो चाहते हैं
वह कोई नहीं कहता
'बाबूजी, हम है ना'
कोई नहीं कहता, माँ
उदास मत होना, हम हैं न...?
बूढ़े हैरान हैं इन
'हम हैं न ' के कहीं भी
नहीं होने से।"¹⁶

बूढ़े सब अपमान, उपेक्षा को महते हुए अगर कुछ चाहते हैं तो वह है केवल अपनों के अपने करीब होने का एहसास। "बूढ़े बचाना चाहते हैं एक ऐसा नाता /जो सचमुच में अब है ही नहीं"¹⁷ परंतु बूढ़ों को तब अत्यधिक ईरानी होनी है जब उनके अपने ही उनसे उनके हर नाते को झुठलाते हुए उन्हें अपने से दूर कर देते हैं। इस यथार्थ की अभिव्यक्ति मुनीता जी की अनेक कविताओं में देखने को मिलती है। 'देसी माँ विदेश में' उनकी एक ऐसी ही कविता है जो बूढ़ों को समर्पित है। जिनके बच्चों उन्हें विदेश में अपने बच्चों की देखभाल के लिए ले जाते हैं और फिर उन्हें सरकारी अनुदान के भरौसे जीवित रहने के लिए छोड़ देते हैं। 'थीमती रेहू' कविता में बुजुर्गों की बदतर स्थिति को दर्शाया गया है, जिनमें एक पंचानवे वर्ष की बुजुर्ग महिला अपने बेटों के साधन-सम्पन्न होने पर भी अकेले रहने को विवश है। 'लाल तिपहिया रेहू' कविता अपने परिवार से दूर रहकर अमहाय, अकेलेपन के दंश को महती बुजुर्ग की दिनचर्या को दर्शाती है। आज देश-विदेश में वृद्धाश्रमों का विद्यमान हुआ जान मानवीय सम्बेदनशून्यता का परिचायक है। इन वृद्धाश्रमों में न जाने कितने वृद्ध अपनों के आने की प्रतीक्षा में दम तोड़ देते हैं। मुनीता जी की 'कहते-कहते' कविता बूढ़ों के इसी यथार्थ का अंकन करती है। उनकी 'आधा संसार' कविता एक माँ के संघर्ष और बेटों के शर्मनाक व्यवहार की पोल खोलती है -

"अरे, जिस पेट में पसरने
जगह मिल गई मात को
उस पेट में रोटी डालने
का बक नहीं किमी एक को,
नोट भिजवा देते हैं सारे
जैसे नोट चबा नूँ
जगह अनाज के..."¹⁸

बूढ़ों की इस मारक स्थिति पर चिंता व्यक्त करती हुई मुनीता जैन अपनी 'फ़िलहाल' कविता में कहती भी है कि -

"मेरी चिंता है
मेरे घर के आमपान
ऐसे घरों की
जिनमें बैठा रहता है
कोई वृद्ध कुर्मी पर
चित्र सा -

और कोई वृद्धा
सुख सुख ही
अनमनी¹⁹

वृद्धों की यह दुःख स्थिति जीवन का अर्थ समझना में समझा जानी है कि दुःख में चाहे हम जिनका भी दुःखकारा या लेना चाहे वह किसी न किसी रूप में हमारे सम्मुख आन खड़ा होता है। चाहे वह आर्थिक दुःख हो या मानसिक दुःख उम्रके आने का कारण होता है- मोह-माया, आशा-नृणा। यदि इनका परिणाम कर दिया जाए तो दुःख में भी सुख की अनुभूति होने लगती है। सुनीता जी हमें इसी सुखद एहसास की ओर प्रेरित करती हुई कहती है कि -

“यह तुमना अब छोड़, हिरणी
नावा मयमे मोड़, हिरणी
पौन गया संग किनके, बोलो-
हुई गाँव की बेर, हिरणी²⁰

वह उन वृद्धों को समझने की आवश्यकता है जो अपनों से अत्यधिक अपेक्षा रखते हैं। ऐसे में जब भी वे अपने अतीत को याद करने हैं तो उन्हें अत्यधिक कष्ट की अनुभूति होती है। आज वृद्धों को स्वयं के प्रति जागरूक होना होगा। इसके साथ ही हमें भी यह समझना होगा कि वृद्धों के सबसे बड़े दुःख का कारण जीने की उनकी अहमियत को ना समझा जाना है। मरने पर उनके श्राद्ध किये जाते हैं, तस्वीर पर माला पहनाई जाती है परंतु जीते जी उनसे कोई बोलता तक नहीं। सुनीता जी की 'जब तक वह' कविता इसी सामाजिक आडम्बर पर प्रहार करती है। इसके साथ ही वे वृद्धों की महत्ता के प्रति चेतावने हुए 'माँओं को' कविता में कहती है कि -

“माँओं को /मद्यमल पे रखो
झूला दो /फूलों पे
वे हैं आज /मगर कल होंगी न
सोचो तब /क्या-क्या न
घो जाएगा /जीवन में ?
सोचो । फिर सोचो ।²¹

सुनीता जी के 'जाने लड़की पगली' काव्य संकलन में 76 कविताएँ हैं वे कविताएँ उनके जीवन का वह अनुभव संसार है जिसमें वृद्धों के दुःखों का, उदासी का, निराशाओं का मार्मिक यथार्थ चित्रण तो हुआ ही है साथ में अपने माता-पिता को आदर मान-सम्मान के अधिकारी मानने, उन्हें श्रद्धा में याद करने व नई पीढ़ी को परम्परागत जीवन मूल्यों से जोड़ने का संदेश मिलता है। सुनीता जी की कविताओं में माँ तो केवल प्रतीक भर है। वे माँ के माध्यम से तमाम वृद्धों के मार्मिक यथार्थ को अभिव्यक्ति प्रदान करती हुई सामाजिक सम्बेदनशून्यता और आत्मकेन्द्रित मोच के विरुद्ध खड़ी नजर आती है -

“तुमने जो /महा /महा /सहा
मैंने जब उसको /कहा /जरा /जरा
अंगारों का /आकाश फटा
किस-कसने /बिप उगला
वे मुझ को /सुलसा भी देंगे /तो क्या
तेरे जीतने आंसू थे /समझूंगी उनका
कुछ तो /मोल चुका²²

अतःनिष्कर्ष तौर पर कहा जा सकता है कि आज वृद्धों की घर, परिवार, समाज में उपेक्षा एवं प्रताड़ना की जो स्थिति बनी हुई है वह एक गम्भीर विषय है। आज एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी के बीच जो भावात्मक फासना बढ़ा है। उसे दूर करने की आवश्यकता है; ऐसा तभी संभव हो सकता है जब हम वृद्धों को सम्मान दें, उनके अनुभवों की कद्र करें। एक व्यक्ति अपनी पूरी सामर्थ्य के साथ जिस घर को बनाता है उमी घर में उसे उपेक्षा की नज़र से देखा जाना, उसे वृद्धाश्रमों में छोड़ा जाना, उसका तिरस्कार किया जाना। यह व्यवहार हमारे मरते हुए संस्कारों का ही सूचक है। कवयित्री सुनीता जैन हमारे संस्कारों को मरते जाने से रोकने की एक पहल अपने विचारों और भावनाओं को कविता के माध्यम से व्यक्त करके करती है। वे अपनी कविताओं में ना केवल वृद्ध जीवन के मार्मिक यथार्थ का चित्रण करती है; अपितु वृद्धों के प्रति समाज को चेतावने का प्रयास भी करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हरेराम पाठक, 'कविताओं के दर्पण में मुनीता जैन', प्र. सं. 2016, पृ.-49
2. म्वाति तिवारी, 'अचेले होने योग', प्र. सं. 2006, पृ.-31
3. प्रमोद त्रिवेदी, 'मुनीता जैन शब्द होने का अर्थ', प्र. सं. 2004, पृ.-52
4. मुनीता जैन, 'मौ टंच मान', प्र. सं. 2004, पृ.-26
5. पुष्पाल सिंह, मुनीता जैन समग्र: खण्ड-13 (ओक भर जल-2008), प्र. सं. 2010, पृ.-73
6. वहीं, पृ.-75
7. वहीं, पृ.-75
8. वहीं (रमोई की खिड़की में-2008), पृ.-148
9. वहीं (ओक भर जल-2008, पृ.-77
10. मुनीता जैन, 'टेशन मारे', प्र. सं. 13 जुलाई, 2013, पृ.-37
11. पुष्पाल सिंह, मुनीता जैन समग्र: खण्ड-13 (ओक भर जल-2008), प्र. सं.-2010, पृ.-73
12. वहीं, खण्ड-7 (गंगा तट देखा-1998), पृ.-135
13. वहीं, खण्ड-5 (जाने लड़की पगली-1996), पृ.-256
14. वहीं, खण्ड-6 (इतना भर समय-1996), पृ.-227
15. वहीं, पृ.-227
16. वहीं, खण्ड-9 (चौखट पर-2003), पृ.-148
17. वहीं, खण्ड-12 (लुओं के बेहाल दिनों में-2007), पृ.-90
18. वहीं, खण्ड-10 (खाली घर में-2006), पृ.-194
19. वहीं, खण्ड-5 (जाने लड़की पगली-1996), पृ.-197
20. मुनीता जैन, 'कॉटों भरी बेल में', प्र. सं. 2015, पृ.-68
21. वहीं, पृ.-97
22. पुष्पाल सिंह, मुनीता जैन समग्र: खण्ड-5 (जाने लड़की पगली-1996), प्र. सं. 2010, पृ.-189



Shodh-Rityu तिमाही शोध-पत्रिका
PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE-23 **VOLUME- 1** IMPACT FACTOR-**SJIF-6.424,** GIF-2-3588
ISSN-2454-6283 जनवरी-मार्च, 2021

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

सम्पादक
डॉ.सुनील जाधव ,नांदेड
9405384672

तकनीकी सम्पादक
अनिल जाधव,मुंबई

पत्राचार हेतु पता-
महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी, हनुमान गढ़ कमान के सामने, नांदेड-43160

References-

(1) James Mitchell (General Editor): op. cit., p. 102. (2) P.C. Chatterji : Broadcasting in India, p. 39. (3) Radio and Television Report of the Committee on Broadcasting & Information Media, 1966, p. 15. (4) Ibid. (5) P.C. Chatterji: op.cit., p. 39. (6) Ibid, p. 41. (7) File Facts and Figures 2000, compiled by All India Radio. Audience Research Unit, Lucknow. (8) P.C. Chatterji: op.cit., p. 41. (9), p.44. (10) Radio and Television Report of the Committee on Broadcasting and Information Media, 1966, pp.15-16. (11) File Facts and Figures 2000, compiled by All India Radio. Audience Research Unit, Lucknow. (12) Swarna Jayanti Smarika, Akashvani, Lucknow, dated April 2, 1988. Note: Station Directors of A.I.R., Lucknow 1. A.A. Advani : 27-1-1938 to 6-6-1938 2. Jugul Kishore Mehra: 17-9-1938 to 2-4-1939. 3. N.A.S. Lakshmana : 13-6-1939 to 26-4-1940 4. A.K. Sen : 06-07-1940 to 31-05-1941. 5. S.N. Chib : 04-6-1941 to 29-7-1943 6. K.S. Malik : 2-8-1943 to 14-6-1944 7. Jugul Kishore Mehra : 14-6-1944 to 18-8-1945 8. K.S. Malik: 18-8-1945 to 14-6-1948 13. File : Facts and Figures 2000, compiled by All India Radio. Audience Research Unit, Lucknow. 14. Ibid. 15. Radio and Television Report of the Committee on Broadcasting and Information Media, 1966, p. 16. 16. R.A.U.P., 1940, pp. 21-22. 17. R.A.U.P., 1941, p. 6. 18. Ibid. 19. R.G.A.U.P., 1943, p. 13. 20. R.G.A.U.P., 1944, p. 11.

38. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सूफी काव्य का मूल्यांकन

- डॉ. अनिल कुमार

एसोशिएट प्रोफेसर,

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, वैश्य महाविद्यालय, भिवानी (हरि.)

भारत विविधताओं का देश है। अनेक धर्म को मानने वाले यहाँ सदियों से रहते आये हैं और कोई भी धर्मावलम्बी किसी भी धर्म की अच्छाइयों को ग्रहण करने में संकोच नहीं करता। सूफी कवियों में यही भावना आरम्भ से अंत तक दिखाई देती है। उनकी ये रचनाएँ हिन्दू कथाओं पर आधारित हैं। नायक-नायिका हिन्दू राजघरानों से ही हैं। मौलाना दाऊद ने सन् 1380 में चन्द्रायन की रचना की। इस रचना में व्यथा-कथा, प्रेम-विरह, सुख-दुःख की अनुभूतियों के जीवन्त चित्र हैं, इस काव्य का नायक लोरिक और नायिका चंदा है। सन् 1504 में कुतुबन कृत मृगावती में चन्द्रगिरी के राजा गणपति देव के पुत्र राजकुंवर और कंचनपुर की राजकुमारी मृगावती की प्रेमकथा का वर्णन है। कवि मंझन ने मधुमालती की रचना सन् 1545 में की। हिन्दू नायक राजकुमार मनोहर व नायिका मधुमालती के प्रगाढ़ प्रेम की कहानी पर आधारित है। कवि सम्राट जायसी ने अपनी कालजयी रचना पद्मावत में सिंहल द्वीप की राजकुमारी पद्मावती और चितौड़गढ़ के राजा रत्नसेन के प्रेम को चित्रित किया है। इन सूफी कवियों के अध्ययन से पता चलता है कि ये कवि मुस्लिम होते हुए भी इस्लामी कट्टरता, हठधर्मिता से सर्वथा दूर रहे। भक्तिकाल की अन्य धाराओं में भी रहीम, रसखान जैसे मुस्लिम कवि हैं जो साम्प्रदायिक एकता की भावना के प्रबल समर्थक हैं, संस्थापक हैं। इन्होंने राम और अल्लाह को एक ही बताया। जिस समय सूफी कवियों के काव्य ग्रन्थ भारतीय संस्कृति से ओत-प्रोत होकर लोगों तक पहुँचे। उस समय देश में विभिन्न प्रकार के मतभेद फैले हुए थे। सूफी कवियों के कार्यों का यह फल हुआ कि भारतीय सभ्यता की रक्षा हुई और वेद-शास्त्र डूबने से बच गए। समाज को ज्ञान एवं प्रेम की नवीन दिशा प्राप्त हुई। जिसमें सूफियों ने लौकिक प्रेम के साथ अलौकिक प्रेम की भी अभिव्यंजना कर समाज को एक सूत्र में बांधा है, इससे साम्प्रदायिक झगड़े मिट गए। जाति-पाति की लड़ाई कम हो गई।

अलाउद्दीन खिलजी के समय 'नूरक और चन्दा की कहानी' के लेखक मूला दाउद (1440ई0) प्रेम काव्य के पहले कवि माने जाते हैं। 'मृगावती' के लेखक कुतुबन (1500ई0) सिकन्दर लोदी के राजस्वकाल में हुए। जिस समय आक्रमणकारियों की तलवार अपनी रक्त पिपासा बूझा रही थी, उसी समय दोनों जातियों को मिलाने के लिए प्रेम काव्य सबसे अधिक आवश्यक था। इसी आदर्श पर मंझन ने 'मधुमालती', जायसी ने 'पद्मावत' तथा असमान ने 'चित्रावली' लिखकर उस प्रेम सूत्र को और भी दृढ़ किया। जायसी इन्हीं शेरशाह के सम-सामयिक थे, जिन्होंने कि उल्माओं की कट्टरता की अवहेलना की

थी। जायसी की उदारता इसी भावना के अनुकूल है। सूफी कवियों की भाषा में अन्य लोगों की भाषा की अपेक्षा अधिक परिमार्जन और साहित्यिकता है। निर्गुण संतो के प्रभाव से लोगों के हृदय में कुछ रुखापन तथा संसार से उदासीनता आ गई थी। इसे दूर कर प्रेम के उच्च रूप को सामने रखकर जनता के हृदय में गृहस्थ जीवन के प्रति अनुराग तथा प्रेम की सरस धारा बहाना इन्हीं कवियों का काम था। प्रेम के महत्त्व को तो कबीर, रैदास आदि सभी ने माना था, किन्तु उसे जीवन का अंग प्रेम-मार्गी कवियों ने ही बनाया। इसके अतिरिक्त लोकहित समाज कल्याण भी इनके काव्य का एक प्रमुख आदर्श था। हिन्दू मुस्लिम एकता स्थापित करने के लिए इन कवियों ने दोनों को प्रेम पद्धति एवं संस्कृतियों में समन्वय कर दिया है। यथा-ईरानी प्रेम पद्धति में नायक के प्रेम का वेग अधिक तीव्र रहता है और भारतीय प्रेम पद्धति में नायिका का, किन्तु सूफी कवियों ने दोनों में समन्वय स्थापित कर दिया।

लोक हित एवं समाज कल्याण को काव्य का आदर्श मानने के कारण ही सूफी कवियों ने जन समाज के भोगों को अपनाया। इनकी प्रेम-गाथाओं में प्रेम भावना का सम्बन्ध यद्यपि राज-परिवार से है, किन्तु इसमें जन साधारण की भावनाओं की अवहेलना नहीं की है। इसमें राज-रानियों के पति का विरह एक साधारण नारी के समान है। उदाहरणार्थ-पुष्य नखंत सिर ऊपर उनावा, / हौ विनु नाह मन्दिर को छावा।³ सूफी सन्तों से पहले हिन्दू-मुस्लिमों ने जो देश की स्थिति बना रखी थी उससे लोग भयभीत थे, देश में ऊँच-नीच, जाति-पाति तथा बाह्य आडम्बरों का बोलबाला था। डा0 ताराचन्द्र ने इसकी व्यापकता का वर्णन लिखते हुए कहा-लिंगांगत, शंकराद्वैत सन्त कवियों एकेश्वरवाद एवं चैतन्य महाप्रभु की शिक्षाओं में इस्लाम के महान प्रभाव का जो स्वरूपांकन किया है।⁴ उसमें से प्रथम तीन को तत्थहीनता को दिनकर जी ने भली भांति प्रभावित कर दिया है। कबीर, नानक आदि निर्गुण धारा के सन्तों पर सूफी-प्रेमतत्त्व का प्रभाव अवश्य एक सीमा तक पड़ा जिसे प्रायः विद्वानों ने स्वीकार भी किया है।⁵ इसके अतिरिक्त नामदेव के शिष्यों जो इस्लाम से उनके सम्प्रदाय में आये उन पर इस्लाम का प्रभाव प्रतिष्ठित रहा।⁶ वे रमजान और एकादशी दोनों मानते एवं मक्का तथा पंढरपुर दोनों की तीर्थयात्रा करते हैं। इसी प्रकार दत्तात्रेय सम्प्रदाय पर भी यह बाह्य प्रभाव परिलक्षित रहता है कि उनके अराध्य देवता का पहनावा मुसलमान फकीर जैसा है। बंगाल में किसी सीमा तक प्रचलित सत्यपीर की पूजा, जिसका कि प्रवर्तक वहाँ का शासक हुसैन शाह माना जाता है, हिन्दू तथा मुसलमान दोनों में प्रचलित हुई जो कि एक प्रकार से मुस्लिम प्रभाव को स्पष्ट करती है।⁷ इसके अलावा सामान्य हिन्दू जनता में अलौकिक शक्तियों तथा उनसे सम्पन्न माने जाने वाले सन्यासियों के प्रति प्रतिष्ठित अन्धविश्वास मुसलमान पीरों तथा मजारों की ओर भी उन्मुख हुआ तथा उनकी पूजा होने लगी। यह भी मुस्लिम प्रभाव का एक रूप है जिसके पीछे कोई

सैद्धान्तिक अथवा इस्लाम साधनागत तत्व नहीं, अपितु भारतीय जनता की अन्धविश्वास प्रवृत्ति काम करती है।⁷ वैसे तो इस्लाम धर्मी समाज के धर्ममत्तों में से सूफी मत तो भारतीय प्रभाव का ज्वलन्त उदाहरण है किन्तु इसके अतिरिक्त अन्य धार्मिक विश्वासों का भी प्रभाव प्रायः समस्त वर्गों की मूलसमान जनता पर इस युग में पड़ा था। सूफीमत की आधार भूमि का विचार करने से ज्ञात होता है कि उसके मूल में भारतीय वेदान्त का अप्रत्यक्ष किन्तु महत्वपूर्ण प्रभाव तो था ही जिसके साथ ही उस पर दुहरा प्रभाव 'हिन्दू और बौद्ध सन्तों और पंडितों द्वारा पड़ा और इसलिए तसब्बूफ पर सबसे अधिक प्रभुत्व हिन्दुत्व का ही माना जाना चाहिये।⁸ ऐतिहासिक विकास को प्रस्तुत करते हुए दिनकर जी ने यह प्रमाणित किया है कि अरब, बगदाद और बलख में भारतीय चिन्तन का प्रभाव तो था ही किन्तु इसके साथ ही अनेक सूफी सन्त ज्ञान लाभ के लिए भी भारत की यात्रा करते थे।⁹ भारत में आवागमन के पश्चात् एक और प्रभाव योगमार्गी नाथ पंथी साधना का भी पड़ा। कहना न होगा उस युग के धार्मिक वातावरण के अन्तर्गत चमत्कारी एवं आश्चर्य-जनक तत्त्वों के प्रति विश्वास सामान्यतः हिन्दू मुस्लिम जनता की प्रवृत्ति बन चुका था और जिसके लिए ये सूफीसन्त की प्रेरणा तथा मार्ग दर्शन प्राप्त करने के लिए हिन्दू साधुओं, सन्यासियों एवं योगियों के पीछे-पीछे घूमा करते थे।

डाँ0अशरफ के अनुसार 'गुरु का भारतीय आदर्श पीरों अथवा शेखों से सम्बन्धित मुस्लिम अवधारणा द्वारा अभिव्यक्त हुआ और उसे भावों के नैतिक पतन के फलस्वरूप उनका स्थान आध्यात्मिक आचार्य अथवा उपदेशक के रूप में प्रतिष्ठित हो गया। कालान्तर में, यह महत्त्व उनकी संतानों को प्राप्त होने लगा जिसके परिणामस्वरूप उन्हें वह धार्मिक सम्मान तथा स्थान प्राप्त हो गया जो कि हिन्दू जनता के बीच ब्राह्मणों का था।¹⁰ यह प्रसिद्ध है कि मुसलमानों में हज्ज तो पहले से ही प्रचलित था। किन्तु उसके अतिरिक्त अब प्रसिद्ध सन्तों के मजारों पर प्रायः तथा विशेषकर 'उर्स' के अवसर पर जाना मुसलमान जनता के बीच प्रचलित हो गया था। उपर्युक्त परिस्थितियों के कारण जनता में ही नहीं अपितु मुसलमान शासकों ने भी हिन्दू तथा मुसलमान सन्तों के प्रति इतनी आस्था एवं अंध-श्रद्धा प्रतिष्ठित हो गयी थी कि वे अपनी इच्छा पूर्ति के लिए उनके पास जाते थे। बंगाल का मुसलमान सुबेदार जो हिन्दुओं पर निर्मम अत्याचार करने के लिये प्रसिद्ध था, चैतन्य महाप्रभु का आध्यात्मिक चमत्कार सुनकर स्वयं उनके पास आया तथा अपने अनाचारों पर पश्चाताप प्रकट करता है, किन्तु चैतन्य का अनुयायी बनकर सरकारी नौकरी छोड़ने को तैयार हो जाता है। राजनीतिक रूप में बादशाह अकबर के दरबार में मनोहर, बीरबल, गंग, नरहरि आदि हिन्दू कवियों को विशेष सम्मान प्राप्त था। यह हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रत्यक्ष प्रमाण है, किन्तु जिस शिद्दत से, तन्मयता से, सूफियों ने भारतीय मूल्यों को अभिव्यक्ति प्रदान की, उसे अनुभव कर आश्चर्य होता है। सूफी कवियों में ईश्वर की कल्पना प्रेम

के रूप में प्राप्त होती है। यह प्रेम लौकिक न होकर अलौकिक है, आध्यात्मिक है। प्रणय के द्वारा आत्मा का परमात्मा से मिलन माना गया है। इनकी अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना करने वाली ये लौकिक प्रेम कथाएँ प्रबन्ध काव्य की श्रेणी की है। उन्होंने अपने प्रेम आख्यानों में माशूक के रूप सौन्दर्य को ज्योति पुंज के रूप में प्रस्तुत किया है। जीवसत्ता इस ज्योति पुंज पर अपना सर्वस्व अर्पित करने की इच्छा से प्रेम के कठिन मार्ग पर अग्रसर हो जाती है इस प्रकार प्रेमी युगल को आपस में मिलने के लिए प्रेम-मार्ग की भयंकर बाधाओं से जूझना पड़ता है, लेकिन वो फिर भी अपने लक्ष्य की सिद्धि की ओर बढ़ते हैं।

प्रायः सभी धर्मों में परमात्मा के प्रति प्रेम-श्रद्धा को अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। उस परम सत्ता को प्राप्त करने के जितने मार्ग बताए गए हैं उनमें प्रेम का मार्ग श्रेष्ठ है। मानव में श्रद्धा एवं विश्वास की उत्पत्ति प्रेम के द्वारा ही होती है, ऐसा इन सूफी सन्तों का विश्वास है। प्रेम के द्वारा इस संसार में सब कुछ संभव है यहाँ तक परमात्मा संबंधी वेदना व्यथा, ज्ञान प्राप्त करना, प्रेम के द्वारा ही संभव है। प्रेम के द्वारा ही मनुष्य स्वर्ग का अधिकारी होता है। अगर उसने प्रेम नहीं किया तो वह एक मुट्ठी राख के सिवाए और क्या है।¹¹ सूफियों के अनुसार जब जीव प्रेम मार्ग पर चलकर प्रभु से मिलने जाता है तो उसके साथ इस नश्वर संसार से धन्धा-पोथी जैसी कोई भी वस्तु नहीं जाती केवल प्रेम ही जाता है:—“धन्धा पोथि जाइन नहिं साथ”¹² जायसी ने प्रेम के जानकार को ज्ञानी पुरुष माना है:—कोटिक पोथी पढि भरे पण्डित माने कोई।/एके अच्छर प्रेम का पदे सो पण्डित होई।¹³ सूफियों ने प्रेम का विस्तार उस समय किया जब देश में विविध सम्प्रदाय अपने-अपने मत का प्रचार अपने-अपने ढंग से कर रहे थे। कबीर अपनी डॉट-फटकार से धर्म, जाति और सम्प्रदाय के बीच फैली रूढ़ियों को मिटाने की कोशिश कर रहे थे किन्तु इससे सम्पूर्ण समाज लाभान्वित न हो सका। ठीक उसी समय सूफियों ने हिन्दू राजघरानों की प्रेम कथाओं को आधार बनाकर जीवात्मा और परमात्मा के मिलन को मार्ग 'प्रेम' की खोज की।¹⁴ अतः हम कह सकते हैं कि जो कार्य कबीर अपनी झाड़ फटकार की शैली से नहीं कर पाए, उसे सूफी प्रेम के माध्यम से सहज ही कर गए। इस प्रकार विविध जातियों और सम्प्रदायों में बटे इस देश को एकता के सूत्र के बाँधने का सफल प्रयत्न तत्कालीन सूफी कवियों ने किया।

आज हम बाजारवादी भावना से ग्रस्त हैं, उपभोक्तावाद हम पर हावी है साम्प्रदायिकता, क्षेत्रवाद, अलगाववाद, आंतकवाद, जातिवाद जैसी ज्वलंत समस्याएँ इस देश की अखंडता और एकता को छिन्न-भिन्न करने का प्रयत्न कर रही हैं। राष्ट्र को एक बार फिर आज सूफीवाद जैसे सांस्कृतिक आंदोलन की आवश्यकता है। सूफियों ने अपने साहित्यिक आंदोलन द्वारा साम्प्रदायिक सद्भाव स्थापित किया। इस देश की अखंडता में अपना अहम योग दिया। निःसन्देह सूफी काव्य स्तुत्य और अनुकरणीय है।

सन्दर्भ सूची—(1)जायसी ग्रंथावली पृष्ठ 152 कवित्त संख्या-4. (2)डा०ताराचन्द्र, इनपलूयेन्स आफ इस्लाम आन इण्डियन कल्चर, सं० 1954, पृष्ठ.118. (3)रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ. 61. (4)डा०ताराचन्द्र, पृष्ठ.217. (5)डा०सत्यकेतु विद्यालंकार-भारतीय संस्कृति और उसका इतिहास पृष्ठ.627. (6)डा०रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति, पृष्ठ.253-54.(7)वही, पृष्ठ.257. (8)डा०के०एम०अशरफ, लाइफ एण्ड कन्डीशन आफ दि पीपुल आफ हिन्दुस्तान, पृष्ठ.73, भाग-1,सं०1959. (9)संपादक शिवसहाय पाठक, चित्ररेखा पृष्ठ.135. (10)जायसी ग्रंथावली, पृष्ठ.71. (11)वही, पृष्ठ.145. (12)वही, पृष्ठ.1.

A study on Synthesis and Characterization of Magnesium Iron Nitrate Mixed Nano Composites

Narender Kumar

Department of Physics, Vaish College, Bhiwani 127021, India

Corresponding author, E-mail: nk.physics15@gmail.com

Abstract

Cobalt substituted nickel ferrites, $Ni_{1-x}Co_xFe_2O_4$, have been synthesized by using oxalic de-hydrate as a fuel. Nano composites (ferrite particles) can be synthesized by using solution combustion method. As the combustion process involves exothermic reaction and a large amount of heat is released, the ferrites can be synthesized at lower temperature. X-ray diffraction studies reveal the formation of single phase spinel structure. Magnetic studies show variation of coercivity and saturation magnetization with cobalt substitution and show higher coercivity and saturation magnetization than pure nickel ferrites. From the Mossbauer recording, presence of two well resolved Zeeman sextets, which is due to Fe^{3+} ions distribution in tetrahedral and octahedral sites, ferrimagnetic nature of ferrite materials is revealed.

Keywords: *Ferrites, Magnetic, synthesize, saturation, magnetization, chemical composition*

Introduction

For the first calculated amount of salts of Mn, Fe and Ni were dissolved in deionized water and stirred for a few minutes. 0.1 M NH_4OH solution was then slowly added drop-wise under vigorous stirring. The alkali addition was continued till the pH of the solution was 10 and was left undisturbed for 1 hour for complete digestion. The precipitate was then washed thoroughly till pH 7 and then heated to $600\ ^\circ C$. For the next series "x" was kept fixed at 0.5 and the same synthesis steps were repeated. The sample was divided into three batches and heat treatment was performed at $600\ ^\circ C$, $900\ ^\circ C$. The samples were checked for their phase purity by x ray diffraction which confirmed the spinel phase without any impurity.

Dielectric measurements were performed within a frequency window of 1 Hz to 1 MHz the dielectric dispersion can be well explained by Koops and Maxwell – Wagner theory. Raman spectroscopy also gave detailed information about the structural order of the samples. The advance made in physics of solids has led too much of the recent progress in science and technology. Physics of condensed matter draw attention to chemical

composition, atomic configuration, electrical, crystal structure, magnetic ordering and saturation magnetization and the special preference of metallic ions for interstitial sites in the spinel lattice etc. of the solids. It also helps to co-relate the physical and chemical properties of solids and their use in technological applications.

In the recent years, solid state physics mainly concentrates on crystal structure, chemical and physical properties of solids. A proper understanding of the nature and properties of solids form the basis for developing new tailor made nano composites with the desired properties that can be used in many electrical and electronic devices.

Ferrites are in general ferromagnetic ceramic materials consisting of ferric oxide in major portion and metal oxides. On the basis of their crystal structure they can be grouped in to three categories namely, spinel ferrite, cubic garnet and hexagonal ferrites. The molecular formula of ferrites is $M^{2+}O.Fe^{3+}2O_3$, where M stands for the divalent metal such as Fe, Mn, Co, Ni, Cu, Mg, Zn or Cd. There are 8 molecules per unit cell in a spinel structure. Spinel Ferrites are also called cubic ferrite. Spinel is the most widely used family of ferrite. High values of electrical resistivity and low eddy current losses make them ideal for their use at microwave frequencies. The spinel structure of ferrite as possessed by mineral spinel $MgAl_2O_4$ was first determined by Bragg and Nishikawa in 1915.

Electrical properties of prepared samples were studied by dielectric studies and porosity of the samples derived from x-ray densities which utilizes structural parameters obtained through XRD measurement.

Synthesis and Characterization of doped Nano Composites

Cobalt ferrites nano composites are prepared by burning cobalt oxalate with iron oxalate using poly (vinyl alcohol) as a fuel for the combustion reaction in 1: 5 ratio. The burning process takes place in a separate container to the particular temperature which results into the possible formation of partial metal oxides *i.e.* (Co-O and Fe_2O_3). These oxides are mixed properly with PVA, grinded and burned again in a separate container at ratio 1: 1: 5, respectively. This process starts with formation of froth, evolution fumes and burns with flame; finally it was completed at particular temperature. The product cobalt ferrite obtained after the complete combustion process and is grinded in the pestle and motor for half an hour. It is washed with acetone and concentrated action to get rid of carbon particles in the final product.

Cobalt ferrite nano composites are doped with the silver metal nanoparticles using the combustion method. The process starts with burning of cobalt ferrite with silver metal nanoparticles, and PVA keeping the molar ratio as 2: 1: 5, respectively. Initially, it burns

with sooty flame followed by reduced non sooty flame for complete reaction. This reaction was arrested at a particular temperature around 500⁰C to form the phase formed Ag doped cobalt ferrite nanoparticles. Later it is washed with acetone and concentrated action to remove the carbon particles and other organic impurity.

Nano composites are corner stones of nano-science and nanotechnology which are broad and interdisciplinary area of research and developmental activity that has been growing explosively worldwide in the past few years. Nanotechnology is based on the science that deals with tweaking of the matter at the atomic and molecular scale and the size range between 1- 100 nm [1].

Recently researchers are attracted much towards nano composites due its enhanced properties and applications [2]. The latest physical properties and advancement in sample preparation of the materials at nanosize accounts the progress of nanoscience [3-4]. The man in his quest for knowledge has been conceiving and developing physical world and its components in bigger than the biggest and smaller than the smallest dimensions of mass, length and time [5]. Sometimes the changes in particles size are in such extent that the completely new transpiration is digging up which helps in flowering of the world [6-7]. However the title is known about how the biological activity takes place for certain materials when it is reduced into nanoscale dimensions. In this world of elaboration nanotechnology, one of the main primary concerns should be the potential environment impact of nanoparticles (Nps).

A proper way of estimating the nanotoxicity is to monitor the response of the bacteria against these nanoparticles [8-9].

Discussion

The nanocrystalline mixed spinel nano composites and ferrites materials used in various technological issues like nano ferrite doped microstrip patch antenna for improved the overall antenna performance, microwave dielectric property study and antenna miniaturization. Application of nano ferrites are in fashion these days because of its simple preparation, compatibility with electrical circuits, low overall cost and light weight these have numerous application in almost every field some of them like medical, electric, power, communication, mechanical etc.

Doping rare earth ions into spinel types ferrites, the occurrence of 4f-3d couplings which determine the magneto-crystalline anisotropy in spinel ferrite can also improve the electric and magnetic properties of spinel ferrites. The rare earth ions commonly reside at the octahedral sites by replacing Fe³⁺ ions and have limited solubility in the spinel ferrite

lattice due to their large ionic radii. There is absence of relaxation in Mn rich concentration due to the unavailability of hopping charges, for manganese nickel ferrite conductivity and resistivity can be explain on the basis of hopping of electron and hole charges on the octahedral site.

On relative intensity and peak position can be explained considering alloy effects, resulting from the introduction of a new ion at increasing content. Further, the Raman frequency depends on the Fe(Ni)-O and bond length. The intensity of the highest wavelength Raman mode (initially around 693 cm^{-1}) decreases with increasing Mn content the intensity of the Raman mode peaking around 617 cm^{-1} increase proportionally.

The Raman intensity of the signal increases as the sintering temperature is increased, as shown in figure (h) the intensity of Raman mode 617 cm^{-1} increases at 900C and mode 693 cm^{-1} is disappeared at 900C

The shift toward lower wave number is attributed to the crystalline disorder and also to the presence of grain boundaries, which are large in small-sized nano composites. Bandwidth, shows broadening for the small-sized nano composites ($\sim 20\text{ nm}$), which also supports the crystalline disorder. Raman shift toward lower wave number and the line broadening are generally observed in polycrystalline materials and are attributed to the confinement of optical phonons in a small crystalline particle.

Nanocrystalline manganese Nickel ferrite particles for $x=0$ to $x=0.5$ and europium and terbium doped Nickel ferrite for $x= 0.02, 0.05, 0.1$ were prepared using wet chemical co-precipitation technique. Particles were found to be exhibiting a spinel structure with sizes varying from $21\text{nm} - 51\text{nm}$. Overall result of xrd pattern confirms the spinel cubic structure with high degree of crystallinity of prepared ferrites. Of the two types of liners viz. soil and synthetic liners commonly used in waste disposal facilities, soil liners seems to be indicative of the extensive use of clay soils as pollution barriers.

Result of Raman modes confirms the five Raman modes and distribution of cation distribution in octahedral and tetrahedral sub lattices in agreement with the as-synthesized samples. The mechanism of dielectric polarization was found to be similar to that of conduction process involving the hopping of charge carriers. The decrease in ϵ with Mn substitution point to the decrease in availability of $\text{Ni}^{2+}/\text{Ni}^{3+}$ and $\text{Fe}^{2+}/\text{Fe}^{3+}$ pairs with increasing Mn. The $\tan\delta$ and exhibit strong relaxation peaks and relaxation time (Γ) was estimated from these relaxations.

Applications

Applications being developed for nano composites include adding antibodies to nanotubes to form bacteria sensors, making a composite with nanotubes for aircraft, adding boron or gold to nanotubes to trap oil spills, include smaller transistors, coating nanotubes with silicon to make anodes the can increase the capacity of Li-ion batteries by up to 10 times. In addition to this, applications being developed for nano composites include a nanotube-polymer nano composite to form a scaffold which speeds up replacement of broken bones etc. Transition metal ferrites, both doped and undoped, are magnetic candidates in a huge range of applications considering catalysis, sustainable hydrogen production application and electronic and magnetic devices, with others.

Cobalt ferrite material have attracted a great interest in fundamental and applied research due to their various properties like mechanical, hardness, thermal stability and anisotropy constant. All these characteristics encourage their use in wide range of applications from medicine to electronics. Relating to all these possible applications, different research groups performed various studies on the influence rare earth cations on the properties of CoFe_2O_4 in bulk form thin films and nanoparticles [11]. Cobalt ferrite as a magneto-strictive material has recently become of interest to many researchers due to its promising magneto-strictive properties. It has been proposed to be a suitable magneto-strictive material for some applications in the area of sensors and actuators. In such applications, speed of response with accurate displacements is important. Although cobalt ferrite has shown a small magneto-strictive coefficient, which is a disadvantage, it has also shown a very small hysteresis characteristic. It follows that, the results of using this material should lead to a smaller amount of energy loss and higher displacement accuracy at high frequencies, and these benefits may compensate this disadvantage.

Conclusion

Presented data to show that the water content – dry density criterion for compacted soil liners can be formulated in a manner that is different from the currently used approach in which the adequate strength and permissible compressibility is ensured. The approach recommended by them is based on defining water content – dry density requirements for a broad, but representative, range of capacitive energy and relating those requirements to hydraulic conductivity.

Grouting is very popular but at one time, it was supposed to be very mysterious task in civil engineering. For the grouting to be more effective, needs a lot of skill, understanding and perception.

References

- [1] Veena Gopalan E. “on the synthesis and multifunctional properties of some Nano crystalline spinel ferrites and magnetic Nano composite” Ph.D. thesis (department of Cochin university of science and technology) 14, 16, 18
- [2] Sakurai j and Shinjo T.J phys. Soc. Japan 23 (2014) 1426 S.A Oliver, H.H Hamdesh, J.C Ho; phys. Rev. B60 (1999)3400
- [3] JeongKeunJi, Won Ki Ahn, Jun Sig Kum, Sang Hoon Park, Gi Ho Kim, and Won Mo Seong “Miniaturized T-DMB Antenna With a Low-Loss Ni-Mn- Co Ferrite for Mobile Handset Applications”(IEEE MAGNETICS LETTERS, Volume 1 (2010) Soft Magnetic Materials By Research and Development Center, E.M.W. Antenna Company,
- [4] John Jacob, M Abdul Khadar, Anil Ionappan and K. T Mathew “Microwave dielectric properties of nanostructure nickel ferrite” (Bull. Mater. Sci., Vol. 31, No. 6, November
- [5] G..Nabiyouni et al., “Characterization and Magnetic Properties of Nickel Ferrite Nanoparticles Prepared by Ball Milling Technique”, CHINS PHYS. LETT.Vol. 27, No. 12 (2010) 126401.
- [6] P. Chandra Mohan, M.P Srinivasan, S Velmurugan and S.V Narasimhan J. Solid State chemistry 184, 89(2011).
- [7] White WB, DeAngeli BA (2014). “Interpretation of vibrational spectra of spinels” SpectrochimActa 23A:985–995. doi: 10.1016/0584- 8539(67)80023-0.
- [8] Y.Qu, H.Yang, N. Yang, Y.Fan, H Zhu and G. Zou Mater, Lett. 60, 3548 (2016).
- [9] P. Chandra Mohan, M.P Srinivasan, S Velmurugan and S.V Narasimhan J. Solid State chemistry 184, 89(2011).
- [10] T.Yu, S.C Tan, Z.X Shen, L.W Chen, J.Y Lin and A.K See, Applied physics Lett. 80, 2266(2012).
- [11] Jitendra Pal Singh, et al. “Micro-Raman investigation of nanosized zinc ferrite: effect of crystallite size and fluence of irradiation”,J. Raman Spectrosc.(2011) (wileyonlinelibrary.com) DOI 10.1002/jrs.2902.

A Study on Synthesis and Characterization of Cobalt Nickel Mixed/Doped Nano Ferrites

¹Bharti Yadav, ²Narender Kumar,

¹Department of Physics, Govt College, Kanina 123027, India

²Department of Physics, Vaish College, Bhiwani 127021, India

*corresponding author, E-mail: nk.physics15@gmail.com

ABSTRACT

Cobalt substituted nickel ferrites, $\text{Ni}_{1-x}\text{Co}_x\text{Fe}_2\text{O}_4$, have been synthesized by using oxalic dihydrazide as a fuel. Nanoscale ferrite particles can be synthesized by various methods like Wet Chemical method, Co-Precipitation method Ball milling method out of which we are using solution combustion method. As the combustion process involves exothermic reaction in which a large amount of heat is released. The prepared sample can be synthesized from lower temperature to higher temperature. X-ray diffraction studies reveal the formation of single phase spinel structure. Magnetic studies of prepared sample shows variation of coercivity, saturation magnetization with cobalt substitution, show higher coercivity and saturation magnetization than pure nickel ferrites. From the Mössbauer recording, the presence of two well resolved Zeeman sextets, which is due to Fe^{3+} ions distribution in tetrahedral and octahedral sites. As a ferrimagnetic nature of prepared ferrite materials is revealed.

KEYWORDS: Ferrites, Particle, Magnetic, X-ray Diffraction,

INTRODUCTION

For the first calculated amount of salts of Mn, Fe and Ni were dissolved in deionized water and stirred for a few minutes. In this process a 0.1 MnH_4OH solution was slowly added drop-wise under vigorous stirring. The alkali addition was continued till the pH of the solution should not becomes 10 and then left undisturbed for one hour of complete digestion. The precipitate was then washed thoroughly till pH becomes 7 upto the temperature reached $600\text{ }^\circ\text{C}$. For the next series “x” was kept fixed at 0.5 and the same synthesis process steps were repeated again. The sample was divided into three batches and heat treatment was performed at $600\text{ }^\circ\text{C}$ to $900\text{ }^\circ\text{C}$. The characterization of prepared samples were checked for their phase purity by X-ray

diffraction method, which confirmed the spinel phase without adding any impurity. Dielectric measurements were performed within a frequency window of 1 Hz to 1 MHz. So the dielectric dispersion can be well explained by Koops and Maxwell – Wagner theory. Raman spectroscopy also gave detailed information about the structural order of the samples. The advance made in physics of solids has led too much of the recent progress in science and technology. Physics of condensed matter draw attention to chemical composition, atomic configuration, electrical, crystal structure, various magnetic properties like magnetic ordering and saturation magnetization and the special preference of metallic ions for interstitial sites in the spinel lattice etc. of the solids. It also helps in co-relate the physical and chemical properties of solids and also their various uses in technological applications.

In the recent years, solid state physics mainly concentrates on crystal structure, chemical and physical properties of solids. A proper understanding of the nature and properties of solids form the basis for developing new tailor made materials with the desired properties so that we can be used in many electrical and electronic devices. Ferrites are in general ferromagnetic ceramic materials consisting of ferric oxide in major portion and metal oxides. On the basis of their characterization of crystal structure they can be mainly grouped into three categories as spinel ferrite, cubic garnet ferrite and hexagonal ferrites. The molecular formula of ferrites is $M^{2+}O.Fe^{3+}2O_3$, where M stands for the divalent metal such as Fe, Mn, Co, Ni, Cu, Mg, Zn or Cd. There are 8 molecules per unit cell in a spinel structure. Spinel Ferrites are also called cubic ferrite. Spinel is the most widely used family of ferrite. High values of electrical resistivity and low eddy current losses make them ideal for their use at microwave frequencies. The spinel structure of ferrite as possessed by mineral spinel $MgAl_2O_4$ was first determined by Bragg and Nishikawa in 1915. Electrical properties of samples were studied by dielectric studies and porosity of the samples derived from x-ray densities which is utilizes as structural parameters obtained through XRD measurement.

SYNTHESIS AND CHARACTERIZATION OF DOPED/MIXED NANO FERRITES

Cobalt ferrites nanomaterials are prepared by burning cobalt oxalate with iron oxalate using poly (vinyl alcohol) as a fuel for the combustion reaction in 1: 5 ratio. The burning process takes place in a separate container at the particular temperature which results into the possible formation of

partial metal oxides *i.e.* (CoO_4 and Fe_2O_3). These oxides are mixed properly with PVA, grinded and burned again in a separate container at ratio 1: 1: 5, respectively. This process starts with formation of froth, evolution fumes and burns with flame; finally it was completed at particular temperature. The product cobalt ferrite obtained after the complete combustion process and is grinded in the pestle and motor for half an hour. It is washed with acetone and concentrated action to get rid of carbon particles in the final product. Cobalt ferrite nanomaterials are doped with the silver metal nanoparticles using the combustion method. The process starts with burning of cobalt ferrite with silver metal nanoparticles, and PVA keeping the molar ratio as 2: 1: 5, respectively. Initially, it burns with sooty flame followed by reduced non sooty flame for complete reaction. This reaction was arrested at a particular temperature around 500°C to form the phase formed Ag doped cobalt ferrite nanoparticles. Later it washed with acetone and concentrated action to remove the carbon particles and other organic impurity. Nanomaterials are corner stones of nanoscience and nanotechnology which are broad and interdisciplinary area of research and developmental activity that has been growing explosively worldwide in the past few years. Nanotechnology is based on the science that deals with tweaking of the matter at the atomic and molecular scale and the size range between 1- 100 nm [1].

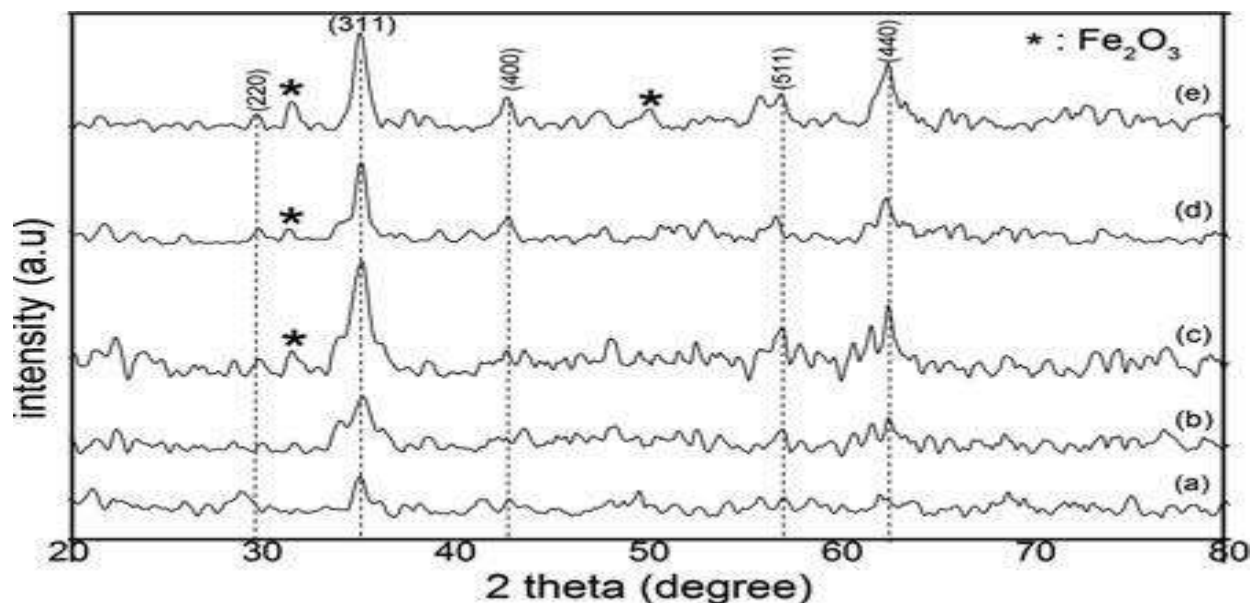


Fig- XRD patterns of $\text{Ni}_{1-x}\text{Co}_x\text{Fe}_2\text{O}_4$ nanoparticles (a) $x = 0.1$, (b) $x = 0.2$, (c) $x = 0.3$, (d) $x = 0.4$ and (e) $x = 0.5$

Recently researchers are attracted much towards nanomaterials due its enhanced properties and applications [2]. The latest physical properties and advancement in sample preparation of the materials at nano size accounts the progress of nanoscience [3-4]. The main in his quest for knowledge has been conceiving and developing physical world and its components in bigger than the biggest and smaller than the smallest dimensions of mass, length and time [5]. Sometimes the changes in particles size are in such extent that the completely new transpiration is digging up which helps in flowering of the world [6-7]. However the title is know about how the biological activity takes place for certain materials when it is reduced into nanoscale dimensions. In this world of elaboration nanotechnology, one of the main primary concerns should be the potential environment impact of nanoparticles (Nps). A proper way of estimating the nanotoxicity is to monitor the response of the bacteria against these nanoparticles [8-10]. Applications being developed for nanomaterials include adding antibodies to nanotubes to form bacteria sensors, making a composite with nanotubes for aircraft, adding boron or gold to nanotubes to trap oil spills, include smaller transistors, coating nanotubes with silicon to make anodes the can increase the capacity of Li-ion batteries by up to 10 times. In addition to this, applications being developed for nanocomposites include a nanotube-polymer nanocomposite to form a scaffold which speeds up replacement of broken bones etc.

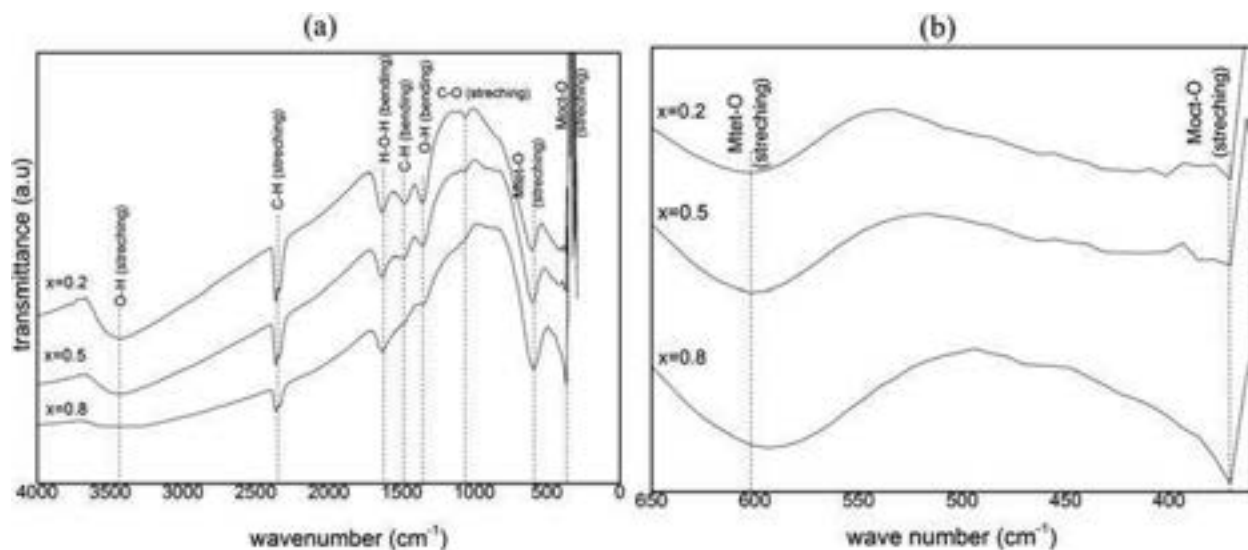


Fig:- FTIR spectra of as prepared $\text{Ni}_{1-x}\text{Co}_x\text{Fe}_2\text{O}_4$ nanoparticles; (b) the partially enlarged wave number indicating presence M–O stretching vibration

Transition metal ferrites, both doped and undoped, are magnetic candidates in a huge range of applications considering catalysis, sustainable hydrogen production application and electronic and magnetic devices, with others. Cobalt ferrite material have attracted a great interest in fundamental and applied research due to their various properties like mechanical, hardness, thermal stability and anisotropy constant. All these characteristics encourage their use in wide range of applications from medicine to electronics. Relating to all these possible applications, different research groups performed various studies on the influence rare earth cations on the properties of CoFe_2O_4 in bulk form thin films and nanoparticles [11]. Cobalt ferrite as a magnetostrictive material has recently become of interest to many researchers due to its promising magnetostrictive properties. It has been proposed to be a suitable magnetostrictive material for some applications in the area of sensors and actuators. In such applications, speed of response with accurate displacements is important. Although cobalt ferrite has shown a small magnetostrictive coefficient, which is a disadvantage, it has also shown a very small hysteresis characteristic. It follows that, the results of using this material should lead to a smaller amount of energy loss and higher displacement accuracy at high frequencies, and these benefits may compensate this disadvantage.

DISUSSION

The nanocrystalline mixed spinel ferrites materials used in various technological issues like nano ferrite doped micro strip patch antenna for improved the overall antenna performance, microwave dielectric property study and antenna miniaturization. Application of nano ferrites are in fashion these days because of its simple preparation, compatibility with electrical circuits, low overall cost and light weight these have numerous application in almost every field some of them like medical, electric, power, communication, mechanical etc. Doping rare earth ions into spinel types ferrites, the occurrence of 4f-3d couplings which determine the magneto-crystalline anisotropy in spinel ferrite can also improve the electric and magnetic properties of spinel ferrites [20-23]. The rare earth ions commonly reside at the octahedral sites by replacing Fe^{3+} ions and have limited solubility in the spinel ferrite lattice due to their large ionic radii. There is absence of relaxation in Mn rich concentration due to the unavailability of hopping charges, for

manganese nickel ferrite conductivity and resistivity can be explain on the basis of hopping of electron and hole charges on the octahedral site.

On relative intensity and peak position can be explained considering alloy effects, resulting from the introduction of a new ion at increasing content. Further, the Raman frequency depends on the Fe(Ni)-O and bond length. The intensity of the highest wavelength Raman mode (initially around 693 cm⁻¹) decreases with increasing Mn content the intensity of the Raman mode peaking around 617 cm⁻¹ increase proportionally.

The Raman intensity of the signal increases as the sintering temperature is increased, as shown in figure (h) the intensity of Raman mode 617 cm⁻¹ increases at 900C and mode 693 cm⁻¹ is disappeared at 900⁰C. The shift toward lower wave number is attributed to the crystalline disorder and also to the presence of grain boundaries, which are large in small-sized nanomaterials. Bandwidth, shows broadening for the small-sized nanomaterials (~20 nm), which also supports the crystalline disorder. Raman shift toward lower wave number and the line broadening are generally observed in polycrystalline materials and are attributed to the confinement of optical phonons in a small crystalline particle. Nanocrystalline manganese Nickel ferrite particles for x=0 to x=0.5 and europium and terbium doped Nickel ferrite for x= 0.1 to 0.5 were prepared using wet chemical co-precipitation technique. Particles were found to be exhibiting a spinel structure with sizes varying from 21nm - 51nm. Overall result of xrd pattern confirms the spinel cubic structure with high degree of crystallinity of prepared ferrites. Of the two types of liners viz. soil and synthetic liners commonly used in waste disposal facilities, soil liners seems to be indicative of the extensive use of clay soils as pollution barriers.

Result of Raman modes confirms the five Raman modes and distribution of cation distribution in octahedral and tetrahedral sub lattices in agreement with the as-synthesized samples. The mechanism of dielectric polarization was found to be similar to that of conduction process involving the hopping of charge carriers. The decrease in 'ε' with Mn substitution point to the decrease in availability of Ni²⁺/Ni³⁺ and Fe²⁺/ Fe³⁺ pairs with increasing Mn. The tanδ and exhibit strong relaxation peaks and relaxation time (Γ) was estimated from these relaxations.

CONCLUSION

Presented data to show that the water content-dry density criterion for compacted soil liners can be formulated in a manner that is different from the currently used approach in which the adequate strength and permissible compressibility is ensured. The approach recommended by them is based on defining water content-dry density requirements for a broad, but representative, range of compactive energy and relating those requirements to hydraulic conductivity. Grouting is very popular but at one time, it was supposed to be very mysterious task in civil engineering. For the grouting to be more effective, needs a lot of skill, understanding and perception.

REFERENCES

- [1] Veena Gopalan E. “on the synthesis and multifunctional properties of some Nano crystalline spinel ferrites and magnetic Nano composite” Ph.D. thesis (department of Cochin university of science and technology) 14, 16, 18
- [2] Sakurai j and Shinjo T.J phys. Soc. Japan 23 (2014) 1426 S.A Oliver, H.H Hamdesh, J.C Ho; phys. Rev. B60 (1999)3400
- [3] JeongKeunJi, Won Ki Ahn, Jun Sig Kum, Sang Hoon Park, Gi Ho Kim, and Won Mo Seong “Miniaturized T-DMB Antenna With a Low-Loss Ni-Mn- Co Ferrite for Mobile Handset Applications”(IEEE MAGNETICS LETTERS, Volume 1 (2010) Soft Magnetic Materials By Research and Development Center, E.M.W. Antenna Company,
- [4] John Jacob, M Abdul Khadar, Anil Ionappan and K. T Mathew “Microwave dielectric properties of nanostructure nickel ferrite” (Bull. Mater. Sci., Vol. 31, No. 6, November
- [5] G..Nabiyouni et al., “Characterization and Magnetic Properties of Nickel Ferrite Nanoparticles Prepared by Ball Milling Technique”, CHINS PHYS. LETT.Vol. 27, No. 12 (2010) 126401.
- [6] P. Chandra Mohan, M.P Srinivasan, S Velmurugan and S.V Narasimhan J. Solid State chemistry 184, 89(2011).
- [7] White WB, DeAngeli BA (2014). “Interpretation of vibrational spectra of spinels” SpectrochimActa 23A:985–995. doi: 10.1016/0584- 8539(67)80023-0.
- [8] Y.Qu, H.Yang, N. Yang, Y.Fan, H Zhu and G. Zou Mater, Lett. 60, 3548 (2016).

- [9] P. Chandra Mohan, M.P Srinivasan, S Velmurugan and S.V Narasimhan J. Solid State chemistry 184, 89(2011).
- [10] T.Yu, S.C Tan, Z.X Shen, L.W Chen, J.Y Lin and A.K See, Applied physics Lett. 80, 2266(2012).
- [11] Jitendra Pal Singh, et al. "Micro-Raman investigation of nanosized zinc ferrite: effect of crystallite size and fluence of irradiation", J. Raman Spectrosc.(2011) (wileyonlinelibrary.com) DOI 10.1002/jrs.2902. .

GENDER DIFFERENCES AMONG COLLEGE LECTURERS IN RELATION TO THEIR PSYCHOLOGICAL WELLBEING AND QUALITY OF WORK LIFE

Sonal Shekhawat

Research Scholar, Shri JITU, Rajasthan, sonusonalrathore787@gmail.com

Dr. Harikesh

Assistant Professor, Vaish College, Bhiwani(Haryana)

ABSTRACT

The present study is designed to find the gender differences among college lecturers in relation to their Psychological wellbeing and quality of work life. Psychological wellbeing and Quality of Work Life are the two Concepts of high interest in the modern work environment. Data was collected from 100 college lecturers 50 male and 50 female from different Colleges of Bhiwani District. Data was collected by Psychological Wellbeing scale designed by Dr. .Carol Ryff & Keys(1989) and Quality of working life scale Designed by Angus S McDonald(2001). T-Test was used for comparative analysis among male and female college lecturers. Findings revealed there is no significant differences among male and female college lecturers in relation to their Psychological Wellbeing and Quality of Work life.

Keywords: Psychological wellbeing, Quality of work life, lecturers,

INTRODUCTION

PSYCHOLOGICAL WELLBEING-

Psychological wellbeing is a personal experience and it can be defined as a person's cognitive and affective evaluation of his or her life and the extent that a person feels healthy satisfied with and even happy about life. Ryff(1989) examined Psychological wellbeing as "the existentials challenges of life as : pursuing meaningful goals, growing and developing as a person, and establishing equalities to others." Ryff(1989)gives a multidimensional model of psychological wellbeing. All dimensions of this model included wellness in it. Dimensions are

1. SELF-ACCEPTANCE-
Positive evaluations of oneself and his/her past life.
2. PERSONAL GROWTH-
Continued growth and development of his/her self.
3. PURPOSE IN LIFE-
A positive belief and attitude towards meaningful and purposeful life.
4. POSITIVE RELATION WITH OTHER-
Quality relation with others
5. ENVIRONMENTAL MASTERY-
Manage effectively one's life and surroundings the world.
6. AUTONOMY-
A sense of personal authority.

QUALITY OF WORKING LIFE

Now a days Quality of Working Life is a very important aspects in every organization. Organizations are increasingly realizing that their employees are one of their most valuable resources. The concept of quality

of work life developed rapidly over the last half of the 20th century, and has evolved from focusing almost exclusively on financial rewards to its present, much broader definition.

Quality of working life encompasses the characteristics of the work and work environment that influence employees work lives.

Huang et al.(2007) stated that quality of work life is the favourable conditions and environments of the workplace that addresses the welfare and wellbeing of employees. But Knox and Irving stated that quality of work life is all not about strength and favourableness of work place but it has weakness also.

REVIEW LITERATURE

Moreover most of the researches did not explore the Psychological wellbeing and Quality of work life among male and female employees. Most of the Studies only focus on the Relationship of Psychological wellbeing and Quality of Work Life with some of the other variable like job satisfaction, performance and productivity etc. Some of the researches related to this study are;

Elias and Saha(1995) found in their research that female workers Quality of Work Life was significant lower than that of their male counterparts in the tobacco industry.

Wadud(1996) found that Quality of Work life was notably higher among the private sector women employees than their counterparts in the public sector.

Akram, Muhammad(2019), done a research in Pakistan to compare the Psychological wellbeing of public and private university teachers. The study found that male and female teachers perceived similar level of psychological wellbeing.

PURPOSE OF THE STUDY

1. To Study the Gender differences among College Lecturers in Relation to their Psychological wellbeing.
2. To Study the Gender differences among College Lecturers in Relation to their Quality of Working Life.

RESEARCH HYPOTHESIS

1. There is no significant differences among College Lecturers in Relation to their Psychological Wellbeing.
2. There is no significant differences among College Lecturers in Relation to their Quality of Work Life.

METHODOLOGY

RESEARCH DESIGN

T-test was used to study the comparison between male and female college lecturers in relation to their Psychological Wellbeing and Quality of Work life.

PARTICIPANTS

The study involved lecturers from different colleges of Bhiwani district. A sample of 100 lecturers 50 male and 50 female was collected through convenient sampling method.

INSTRUMENTS

The researcher adopted two research instruments to collect data of the study.

The 1st instrument Psychological wellbeing Scale developed by Dr. Carol Ryff & Keys (1989). Instrument was used to assess psychological wellbeing of the respondents. It consisted 42 items and included the following measures and indicators—Self acceptance, personal growth, purpose in life, positive relation with others and environmental mastery. All the items in psychological wellbeing scale were structured on a 6 point scale i.e. Strongly disagree to strongly agree.

The second Instrument was the quality of working life scale designed by Angus S. McDonald. It consisted 53 items and was used to measure quality of work life of the respondents. The items were related to working environment, feedback, responsibility, job security, supervision, stress, benefits, job significance etc. All the items in this instruments were structured on a 6 point scale and the reliability coefficient of the scale is .94.

PROCEDURE

All the participants were approached personally. Participants was made to sit comfortably and after that rapport was established with the subject. When the subject was feeling comfortable and ready for testing, the following instructions were given to the subject. "I am going to administer a test having some statements regarding your psychological wellbeing and quality of work life. Please answer frankly and honestly as the information provide will be kept confidential and would only to be used for research purpose. There is no right and wrong answer. There is no time limit to complete it but complete it fast. If there is any doubt you can ask or shall we start?"

After giving the necessary instructions to the subject test was administered. After the completion of the test it was taken back and it was ensured that subject was responded each and every in the prescribed way. After completion of the testing, the subject was duly thanked for his/her cooperation. All the items were scored as per the scoring pattern. The obtained data was statistically analyzed by using SPSS Software. Pearson Coefficient of correlation was computed for this study.

RESULTS AND DISCUSSION

The present study is designed to study the gender differences among college lecturers in relation to their Psychological Wellbeing and Quality of work life. The result of the study revealed that in case of both male and female lecturers the degree of satisfaction about the Psychological wellbeing and Quality of work life in the Institutions is the different. The null hypothesis of the study is that there is no significant differences among male and female lecturers in relation to their Psychological Wellbeing and Quality of Work Life.

TABLE-1. PSYCHOLOGICAL WELLBEING OF MALE AND FEMALE COLLEGE LECTURERS.

GROUPS	MEAN	SD	t-value
Male(N=50)	169.86	30.644	1.118
Female(N=50)	213.62	275.084	1.118

Table 1 showed that the value of $t = 1.118$ which is less than the table value of 2.576 at 5% level which is statistically insignificant and hence the null hypothesis is accepted. Hence it indicates that male ($M = 169.86$) and female ($M = 213.62$) are not equally satisfied with their Psychological wellbeing in an Institutions. It means female lecturers have high wellbeing as compare to male lecturers

TABLE-2. QUALITY OF WORK LIFE OF MALE AND FEMALE COLLEGE LECTURERS.

GROUPS	MEAN	SD	t-value
Male(N=50)	168.82	22.69	1.042
Female(N=50)	194.10	169.98	1.042

Table 2 showed the value of $t = 1.042$ which is also less than the table value, which is statistically insignificant and hence second hypothesis also accepted. And male ($M=168.82$) and female ($M=194.10$) on Quality of Work Life indicates that females also have high quality of work life than male.

The research showed that female lecturers are continuously making an effort to manage a proper balance between their personal and professional work life. In the same way institutions are also putting their best to retain the female employees as the study revealed that there was no difference in the Psychological wellbeing and Quality of work life of male and female lecturers.

Some of the previous research by (Pratibha Barik,2011, Akram, Muhammed,2019) also support the result of this study. These all study found no significant differences in male and female lecturers in relation to their Psychological wellbeing and Quality of work life.

CONCLUSION AND SUGGESTIONS

Results show that there is no significant differences between male and female college lecturers in relation to their Psychological wellbeing and Quality of work life. The t value of Psychological wellbeing and Quality of Work life is 1.118 and 1.042 respectively which is non significant at 5% level of significance. This shows that male and female employees have equal level of wellbeing and quality of work life. Further researches can be done in case of other variables like job satisfaction, workaholism, work life balance etc. Comparative study on the Psychological wellbeing among permanent and -temporary college lecturers can further be undertaken.

REFERENCES

- Barik,P.(2011). Quality of Life of Female Professionals: A Comparative Study Of Male vs Female. *International Journal Of Research In Commerce And Managements*, Vol.2(10), 148-151.
- Elias, M.S. and Saha,N.K.(2005).Environmental Pollutions and Quality Of Working life in Tobacco Industries, *Journal of Life Earth Science*, Vol.1(1), 21-24.
- McDonald, S.A.(2001).User's Guide Quality of Work Life. Published by the *NFER-NELSON* Published Company Ltd. Darville House,UK.
- Muhammad.A.(2019). Psychological Wellbeing of University in Pakistan. *Journal Of Education and Educational Development*, Vol.6(2), p235-253.
- Ryff, C.D.(1989a).Beyond Ponce de Leon and Life Satisfaction: New Directions in quest of successful aging ,*International Journal of Behavioral Development*, 12(1), 33-55.
- Ryff, C.D.(1989b). Happiness is everything, or is it? Exploration on the meaning of Psychological wellbeing. *Journal of Personality and Social Psychology*,57(6), 1069-1081.

IMPACT OF STRESS ON HAPPINESS IN COLLEGE STUDENTS

Sunita Nimbria

Research Scholar, Shri JITU, Rajasthan, sunitanimbria697@gmail.com

Dr. Harikesh

Assistant Professor, Vaish College, Bhiwani(Haryana)

ABSTRACT

This paper investigates the impact of stress on happiness in college students. For this purpose 170 college students (102 females & 68 males) were randomly selected from the colleges of NCR Bhiwani (Haryana, India). Data was collected through self-reported Stress Scale by Dr. (Mrs.) Vijaya Laxmi & Dr. Shruti Narain and Happiness Scale by Dr. Himanshi Rastogi & Dr. Jaanki Moorjani. Proper instructions were given to the students before filling the questionnaires. Simple linear regression and t-test were used for data analysis by using SPSS 20. Results revealed that there is a significant negative relationship between stress and happiness in college students. Gender differences were found significant only on stress.

Keywords: Stress, Happiness, Relationship, College students

INTRODUCTION

Today's life is full of demands, frustrations, challenges and stress. Stress is a natural thing and everyone experiences it. When a situation enters in our life, our body responds to it physically and mentally. This mechanism of responding to situation is called stress. Although we face stressful situations all over the life but there is a certain period of time when people face more stress. College life is one of such period. It feels so rewarding to attend college but it can also cause anxiety and stress also (Dyson & Renk, 2006). Some students feel their college life more stressful than others. This is the time when they experience new surroundings, away from parents and home, meeting new friends, and independency. It is the time of great development, challenge and opportunity. Some students feel overwhelmed with these new things and fail to adjust with the new environment. This failure in adjustment causes stress with multiple problems both mental and physical. Physically they suffer from sleeping disorders, changes in eating habits, fatigue and even they start use of drugs and alcohol. At mental level, they feel depressed, mood swings, bad temper and irritability etc. These stressful symptoms affect their college and further life. These mental health problems are not only affecting the student's life but also the lives of their family members and friends.

STRESS

Stress is an unavoidable part of life which affects a wide range of population without discriminating them on age, gender, socio-economic status and educational levels. Stress, depression and anxiety are prevailing mental health issues among college students (Kitzrow, 2003; Marthoenis, Meutia, Fathiariani & Sofyan, 2018). College students face a number of educational, social, emotional and psychological difficulties which can affect their well-being and academic outcomes. This happens because this tertiary educational system has a big difference from secondary education systems. In this system, students are more independent, new to the college environment and classmates and more concerned about their future career etc. (Thawabieh & Qaisy, 2012). Stress can be even healthy if a person learns to fight rightly with the stressors (Khan, Lanin & Ahmad, 2015). A certain level of stress is very much essential for the

students to motivate them. Many researchers have also said that stress is not always negative. Hans Selye (1936) was the first person to introduce the concept of stress. Stress is derived from the Latin word 'stringere' which means 'to draw tight'. The term referred to strain, hardship and pressure etc.

"Stress is the non-specific response of the body to any demand made upon it" (Selye, 1956)

"Stress can be described as "any influence which disturbs the natural equilibrium of the body that includes within its reference, physical injury, exposure, deprivation, all kinds of diseases and emotional disturbance." (Wingate, 1972)

"Any state that causes people to lose their equilibrium whether it be mentally, physically or emotionally is called stress." (Rosenberg, 2005)

Stress has two aspects:

1. Positive aspect: Eu-stress
2. Negative aspect: Dis-stress

Types of stress:

- 1) Acute stress: The most common form of stress. It comes from the demands and pressure of recent past and near future. It can be existing in small quantity but excessive can be dangerous.
- 2) Episodic acute stress: It is same as acute stress but happens more frequently. The individuals with episodic acute stress are always in a hurry and feel pressure. The people of type 'A' personality are more susceptible to episodic acute stress.
- 3) Chronic stress: This is the most harmful type of stress. If it is not treated over a long period of time, it can damage both physical and mental health.

HAPPINESS

In recent years, Positive Psychology has commenced to bring cognizance to the role of psychology in making life more fulfilling, enhancing human functioning and increasing happiness (Seligman, 2002). As happiness increases, it gives multiple benefits. Based on the common thought that stress obstructs happiness, it would be appeared that reduction of stress level is an important way to increase happiness. Happiness is the experience of pleasure (positive emotion) and life satisfaction, as well as the lack of depression and anxiety (negative emotion) (Argyle, 2013). The World Health Organization insinuated happiness as a critical health factor in individuals' daily life (Cohn et al., 2005). Happiness is a factor contributed to subjective well-being (Raibley, 2012; Veenhoven, 2010). It is known as a personality feature which helps to protect health and can play a vital role in future success (Lyubomirsky et al., 2005). Happiness has been defined in various ways, but Diener (1984) has given the most widely accepted definition, He defined happiness as the presence of positive affect, life satisfaction and absence of negative affect. Diener favored to use the term subjective well-being rather than happiness. Both the terms have been used synonymously over the three decades since this definition. Subjective happiness belongs to subjective, global evaluation of happiness (Lyubomirsky & Lepper, 1999).

Happiness is perceived differently by different people (Vaingankar et al., 2012). Many factors like social norms, social rule and demographic characteristics affect happiness (Hori and Kamo, 2017). Happy individuals are more creative, successful, healthier and enthusiastic in comparison to unhappy individuals. When a student enjoys his/her college life with happiness, he/she can be more successful in all aspects of college life and even after college life (Hoggard, 2005; Lyubomorsky et al., 2005). The increase in happiness is observed as an important human goal (Lyubomirsky, 2001).

Ading C.E. et al. (2012) in University in Malaysia investigated the religion and gender differences in

stress, happiness and life satisfaction. 178 university students were selected for sample. Spiritual involvement and Beliefs Scale (Hatch et al. 1998), The satisfaction with life scale (Dicner et al., 1985) and The oxford happiness inventory (Argyle, 2001) were used for data collection. ANOVA, t-test and regression analysis were used for data analysis. Results revealed that level of happiness and life satisfaction were low in females than male students. University students were found suffering from stress and trying to adjust themselves as a student. **H. H. Schiffrin & S.K. Nelson (2010)** studied the relationship between happiness and perceived stress among 100 college students. Three questionnaires were used to assess happiness of the students: The Satisfaction with Life Scale (SWLS) for assessing overall life satisfaction, The Subjective Happiness Scale (SHS) for assessing subjective sense of global happiness and The Authentic Happiness Inventory (AHI) for assessing current state of happiness. The Perceived Stress Scale (PSS) was used for assessing the stress. The results of the research supported the hypothesis that there would be an inverse relationship between happiness and perceived stress. **Anjali Devvrat Singh & Dr. Harminder Kaur Gujral (2019)** assessed happiness of students of higher educational institutions. 402 UG students (152 males & 250 females) were involved in the study from three academic years of private university through convenience sampling. Oxford Happiness Questionnaire was used to assess happiness. No significance difference was noticed between male and female happiness which showed that happiness is not affected by gender. No significance difference was found in happiness for different academic years.

OBJECTIVES

1. To examine the gender differences in stress and happiness of college students.
2. To examine the impact of stress on happiness in college students.

HYPOTHESES

1. H₀: There is no significant gender difference in stress and happiness of college students.
2. H₀: There is no significant impact of stress on happiness in college students.

RESEARCH METHODOLOGY

SAMPLE & DATA COLLECTION

Sample consisted of 170 college students (68 males & 102 females). Participants ranged in age from 18 to 24 years with the mean age of 21 years. All the students of undergraduate and postgraduate level are included in the research population. All the willing students were enrolled in the study. Stress scale by DR. (Mrs.) Vijaya Laxmi & Dr. Shruti Narain and Coping Strategies scale by Prof. A.K.Srivastava were used to collect the data. All the necessary instructions were given to the students before filling the questionnaires.

DESCRIPTION OF THE TOOLS

Stress Scale (SS-LVNS): Stress Scale by Dr. Vijaya Laxmi & Dr. Shruti Narain measures four dimensions like; Pressure, Physical stress, Anxiety & Frustration. SS consists of 40 items related to all above four dimensions. Inter-dimension correlations were also calculated, which were found to be sufficiently low and not significant. This scale is meant for adolescents in the age range of 12 to 24 years. The scale can be administered either by self or by the investigator. It may be used in groups as well as individual condition. There is no fixed time limit as such. However it generally takes about 10 to 15 minutes to complete. For smooth administration of stress scale clear instructions are printed at the top of

the first page. The answers of those items which tally with the answers given in the scoring key are given a score of +1. If they don't tally, they are given a score of zero. Positive items are given a score of +1 on 'yes' and zero on 'no' and negative items are given +1 on 'NO' and 0 on 'YES'. Higher the score, greater is the level of stress. The test-retest reliability is found .82, which is significant at .01 level. The validity coefficient is calculated .72 with Singh's personal stress source inventory and .83 with Stress dimension of anxiety, depression and stress scale by Bhatnagar et al.(2011). Percentile norms for Stress Scale for adolescents have been developed. Qualitative interpretation of SS score will be as 'High Stress', 'Moderate Stress' and 'Low Stress'.

Happiness Scale (HS-RHMJ): This scale is developed by Dr. Himanshi Rastogi & Dr. Janki Moorjani. It consists of 62 items which are responded as 'Strongly Agree', 'Agree', 'Undecided', 'Disagree', and 'Strongly Disagree' and the scoring is done by giving points of 5,4,3,2,1 respectively. The five factors are measured through this scale which are: Career well-being, Subjective well-being, Social well-being, Spiritual well-being & Emotional well-being. It can be applied in the age range of 18 to 40 years. The reliability of the scale was calculated on the basis of Split-half (odd-even method). It was calculated to be $r=0.88$, which is significant at .01 level of significance. Items were validated with an external criterion test Subjective Happiness Scale, which is likert scale as well, the correlation was found to be $r=0.91$. The test had been subjected to item analysis and as such has content validity. The Happiness Scale measures happiness on the level of "Extremely High", "High", "Above Average", "Average", "Below Average", "Low" and "Extremely Low".

RESULTS

Table 1: Showing Mean, SD and t-value of stress and happiness according to gender

	Gender	N	Mean	SD	t-value	Sig. level
Level of stress	Male	68	11.02	6.03	-2.60	.010 ($P<0.05$)
	Female	92	13.70	6.72		
Happiness	Male	68	231.17	35.65	-.714	.476 ($p>0.05$)
	Female	92	235.26	35.86		

Table 1 shows the comparison of stress scores between male and female students. Female students have scored significantly high (female mean= 13.70, SD= 6.72; male mean= 11.02, SD= 6.03; $t= -2.60$) than their counterpart male students. Both genders were not found significantly different on happiness level. However, female scored higher (female mean= 235.26, SD=35.86; Male mean= 231.17, SD= 35.65; $t= -.714$) than male students.

Table 2: Showing predictive value of stress on happiness in college students

Model	R	R square	Adjusted R square	F value	DF	Beta value	Standard Beta	T-value	Sig. level
1	.583	.340	.335	81.265	1	Constant 273.441	-.583	54.792	.000 ($p<0.01$)

						-3.176		
--	--	--	--	--	--	--------	--	--

Table 2 shows the value of happiness as predicted by stress, which was estimated by using linear regression method, significant model emerged (Model 1: $F= 81.265$, $p<0.01$, $R\text{ square}= .340$). When stress was entered in the equation, it accounts for 34% variance in predicting happiness ($F= 81.265$, $p<0.01$) which is significant. The obtained data value is -3.176 ($p<0.01$), it reveals that unit change in stress will result in .583 unit change in happiness in opposite direction.

DISCUSSION

The present study revealed that female college students reported higher stress than male college students. The findings are consistent with past studies and provide support for women college students report of greater stress. The finding is in line with the results of previous study where women reported a higher level of overall stress than college men (Ruby R. Broughman et al.). Results are contrary to the studies in which no gender difference was found on stress (Marie Dahlin et al., Ading C.E. et al., 2012). On the findings of happiness no gender differences were observed. A previous study supported the findings that happiness is not affected by gender (Anjali Devvart Singh & Dr. Harminder Kaur Gujral, 2019). Some studies resulted contrary to the present study that male students were found more happier than female students (Hassan Mehmoodi, 2019; Perez, 2012 & Akhter, 2015). The hypothesis stated that there is no significant gender difference in stress and happiness of college students, is rejected on the stress level not on the happiness level.

The main objective of the study was to investigate the impact of stress on happiness in college students. Findings state that participants who perceived higher levels of stress reported being less happy than those with lower level of stress. The result supported the study that there was inverse relationship between stress and happiness (Holly H. Schiffrin & S. Katherine Nelson, 2010). The finding is in line with the results of a previous study that academic stress had a negative relationship with self-efficacy and was a determinant for low happiness among college students (Hassan Mehmoodi et al., 2019). Another study also supported the results (King et al., 2014). Thus, the hypothesis stated that there is no relationship between stress and happiness, is rejected.

CONCLUSION

Considering the significant associations between stress and happiness among college students, the colleges are recommended to conduct stress workshop for freshman orientation. Parents should be included in these workshops because they are a primary and continuous source of social support for college students. Parental participation in the workshop is also supported by Jo Lohman and Jarvis (2002) and Lopez and Brennan (2000). These workshops will result in increase of adaptive coping skills that will help to lower physical problems, better psychological adjustments and increase in happiness and academic success for college students.

REFERENCES

- Ading, C.E., Seok, C.B., Hashmi, S.I., & Maakip, I. (2012). Religion and gender differences in stress, happiness and life satisfaction. *Southeast Asia Psychology Journal*. Volume 1. 46-55.
- Dahlin, M., Joneborg, N., & Runeson, B. (2005). Stress and depression among medical students: a cross-sectional study. *Blackwell Publishing Ltd Medical Education*; 39; 594-604.

- Freire, C., Ferradas, M.D.M., Valle, A., Nunez, J.C. & Vallejo, G. (2016). Profiles of psychological well-being and coping strategies among university students. *Original Research*, Volume 7, Article 1554.
- Gupta, S. & Khokhar, C.P. (2018). Behavioral approach coping styles as a function of happiness and personality trait. *Journal of Emerging technologies and innovative research (JETIR)*, Volume 5, Issue 8.
- Heng, T.T. (2018). Coping strategies of Chinese international undergraduates in response to challenges in U.S. colleges. *Teachers college record*, 120(2), 1-42.
- Ickes, M. J., Brown, J., Reeves, B. & Zephyr, P.M.D. (2015). Differences between undergraduate and graduate students in stress and coping strategies. *California Journal of health promotion*, Volume 13, Issue 1, 13-25.
- Latha K.S. (2006). Pattern of stress, coping styles and social supports among adolescents. *Indian association of child adolescents mental health*, 3(1): 5-10
- Mahmoodi, H., Nadrian, H., Javid, F., Ahmadi, G., Kasravi, R., Chavoshi, M. & Golmohammadi, F. (2019). Factors associated with happiness among college students: Do academic self-efficacy and stress predict happiness? *Int. J. Happiness and Development*, Vol.5, No.1.
- Majumdar, B. (2010). Stress and coping strategies among university students: A phenomenological study. *Indian journal of social science researches*, vol. 7, no. 2, pp. 100-111. ISSN 09749837.
- Martinez I.M. et al. (2019). Does gender affects coping strategies leading to well-being and improved academic performance. *Revista De Psicodidactica*, 24(2), 111-119.
- Persaud, N. & Persaud, I. (2015). The relationship between socio-demographics and stress levels, stressors, and coping mechanisms among undergraduate students at a university in Barbados. *International Journal of higher education*, Vol.5, No.1.
- Salavera, C., Usan, P., Peraz, S., Chato, A. & Vera, R. (2016). Differences in happiness and coping with stress in secondary education students. *Procedia- Social and behavioral sciences*, 237, 1310-1315.
- Schiffrin H.H. & Nelson, S.K. (2010). Stressed and Happy? Investigating the relationship between happiness and perceived stress. *J Happiness stud*, 11:33-39 DOI 10.1007/s 10902-008-9104-7.
- Singh, A.D. & Gujral, H.K. (2019). Happiness: Is it prevalent amongst students of higher education institution. *International Journal of Psychosocial Rehabilitation*, Vol 23, Issue 04, ISSN: 1475-7192.
- Yikealo, D., Tareke, W. & Karvinen, I. (2018). The level of stress among college students: A case in the college of Education, Eritrea Institute of Technology. *Open Science Journal*. 3(4).
- Zareipour, M.A., Amirzehni, J., Moharooni, F. & Abbasi, S. (2018). Evaluation of happiness and its relationship with academic achievement in Urmia Midwifery students. *Mintage Journal of Pharmaceutical & Medical Sciences*. Vol 7, Suppl 4. ISSN: 2320-3315.

Importance of Values and Ethics for students and Stakeholders

Indu

Research Scholar

JJTU, Rajasthan, India

Dr. Satish Kumar

Department of Psychology

Vaish College, Bhiwani, Haryana

Abstract:

Human Values and Ethics describe the idea of an individual or an affiliation or society running free. Specialists of characteristics and ethics get to know these models through self-began attempts, through the useful experience that is the best lab of learning, and through the informative associations, those they participate. In this way, the informative foundations themselves ought to be characteristics and ethics addressed. It is pointless to highlight that guidance is the principle pillar of a developed and honorable society. The entire development of society or nation depends upon the strength of this segment. In case this segment is strong, society would remain merciful and would prosper. If this section cultivates a couple of breaks, the overall population may go into sub-human stage. Therefore, there is a need to keep on underlining the meaning of human characteristics in informative foundations. Human characteristics and ethics disdain motor capacities, which once overwhelmed stay with until the cows come home. They are not capacities, they have a spot not even to the space of basic data, they honestly have a spot with the space of subtler plan and practice. The present paper is an honest attempt to attract the attention of the readers towards the **Importance of Values and Ethics for students and Stakeholders**.

Kew-Words: observation, incongruities, life, artistic, expression, humorist, alive, discrepancy entertainment.

Introduction:

Aadi Shankar suggested that subtler pieces of human characteristics ought to be upheld and guaranteed with care, as a mother gets the gut. Characteristics and ethics have nature of camphor – they disperse if not saved carefully. Thusly there is a need to inspect and streamline the communication that helps with blending the lifestyle of human characteristics and ethics in informative associations. Data is power anyway practice and execution of human characteristics and ethics demand movement bearing, maintained with good for dynamic culture in associations.

The current game plan framework rehashes the need and association to set up extraordinary practices and environment supported with human characteristics and master ethics in associations of high-level training. In its underlying fragment, the record sufficiently clarifies the objections and expected consequences of setting up a value-based environment blamed for master ethics. In the resulting part, it plunges into the hypothetical

arrangement of human characteristics and master ethics. An educational establishment depends on the backbone of various accomplices. The third part clarifies the value based and moral demonstrations of various inside and external accomplices. The fourth part, while suggesting the utilitarian guidelines, underlines on the execution and checking of the significant tasks. Characteristics and ethics need nurturance and fortification. In this light, the piece of the record shows methods of developing the lifestyle of characteristics and ethics in the establishment. Various foundations are asked to recognize their innovative practices to make such culture.

Objectives

The objectives of this technique framework to show human characteristics and master ethics in higher information foundations are the going with:

- (1) To re-establish the rich social legacy and human potential gains of which we are the overseers.
- (2) To put down more broad principles of characteristics and ethics for inside and outside accomplices.
- (3) To propose useful standards for regard based and moral practices in the higher educational foundations provoking execution and noticing.
- (4) To show the consequences of making a value based and moral culture in SSE.
- (5) To propose definite help programs for supporting human characteristics and ethics in SSE.

Research Methodology:

The original text-books will be used for the present research paper. For the collection of secondary sources, a large number of related reference books, research articles, research thesis, periodicals, journals, newspaper articles and online web-based sources will be used.

Human Values:

Human civilization is known for the characteristics that it esteems and practices. Across various conditions, blessed individuals and diviners, drawing on their experience, made practices that put crucial importance on human characteristics, but the names used by them differentiated, as their tongues moved at this point the name was same. Human characteristics are valuing that individuals regard and hold in like way deliberately and practice them. Human characteristics are the yield of the field of human intuition.

Truth (Satya): Truth is ageless and ceaseless, as it oversees outrageous and consistent reality. In the Taittiriya Upanishada, the teacher, while passing on the gathering message to the adherent, says, 'Satyam vada' (truth is reality). It is separate by veracity, dependability and validity, perfection, accuracy and fairness, boldness and uprightness. It may have various angles as enthusiastic or relative truth that why people adhere to 'my existence' and 'your world' provoking battle once in a while.

Serenity (Ahimsa): Ahimsa suggests non-killing. Serenity is an outcome of impediment from purposefully doing any harm through one's insights, talk or movement to any component, living or nonliving. It requires being sensitive to the way that there is life in a wide range of essence and they are interconnected. Quietness demands restriction from scorn and supporting worship and sympathy for all animals.

Excellent nature (Dharma): Righteousness is the establishment of focus human characteristics and moreover of human existence. It incorporates direct of life and movement by practicing decency and respect at each stage. In clear language, it is separate by 'right lead'. It covers moral principles, moral lead and moral uprightness. Its encapsulation is peddled in the saying: Do incredible, see extraordinary, and be satisfactory. Indian culture pivots around the possibility of Dharma which implies 'dhaarayate yasya sa dharma' ('what justifies doing or keeping up with') in which action is coordinated by authenticity of time (kaal), place (desh) and position or status (kula).

Renunciation or Sacrifice (Tyaaga): Renunciation has two preconditions: care similarly as love for all living animals went to by nonattendance of immaturity. Renunciation begins when conceit closes. Renunciation isn't an escape from the issues of life. Additionally, renunciation without movement infers a parasitic life. Also, organization is considered, when renunciation with action begins. Renunciation in its most straightforward design is found in seriousness, sense control, and unselfishness.

Organization (Sevaa): When love and compassion toward others and status to relinquish for others out of worship show up as movement, it becomes organization. Organization is possible exactly when one loves others as one's own, not as other. The value of organization demands serenity without any conditions or detachment on the lines of rank, conviction, race, region or religion.

Professional Ethics:

Human characteristics and master ethics are interlaced. Characteristics are stressed over near and dear conviction with the middle conviction or need that guide or stir mindsets and exercises. Ethics has been portrayed as rules of lead that show how one should act reliant upon honest convictions and morals arising out of guidelines spot on and wrong. Capable ethics is stressed over the thought and arrangement of moral unchangeable as applied to a specialist affiliation, execution procedures and practices. Anyway, preparing in its most certifiable sense is positively not a specialist, for common sense explanation here we would address it to be a calling so an institutional design of ethics in high level training may be propounded.

Human characteristics, capable ethics, and authentic framework are three basic constituents those direct the helpful human practices and dynamic guidelines in an affiliation. In the occasion that authentic framework alone could organize human practices and dynamic association, there would have been no prerequisite for characteristics and ethics to exist in progressive reference. Being real is least need, regardless, it isn't sufficient. Law is base and plinth of various levelled practices yet we need to build a plan over it. Not becoming unlawful on account of a neurotic dread of discipline is the coarse level of human existence. It is reliably alluring over notice laws in soul and not just in words. Over the universe of authenticity, there is the open sky of ethics and

characteristics where human undertakings are done to make the world more prosperous, stacked with world value, and blamed for both of elegant sense and delight.

Results and Discussions:

In the discussion on ethics, it may be relevant to look at how misleading practices take after. One review in of Indian affiliations; some shifty practices saw by Human Resource Managers are: utilizing, getting real progressing on inclination; allowing contrasts in pay in view of connections; improper conduct; sex part headway; using discipline conflictingly; not staying aware of protection; sex division in pay; non-exact factors used in assessments; plans with traders inciting individual increments, and; sex isolation on enlist and selecting. A couple of rules reliant upon considers in Indian affiliations suggest that: association ought clear; decision ought to be taken transparently interest; supervisors should leave behind their post neighbourhood, language in their own homes; corruption ought to be rebuked; uncalled for benefits should given to specialists; individuals at all levels ought to be encouraged to think and to offer their dis energetically, and; entire association ought to be equipped to deal with without any other person or the various affiliations the risk - destitution. Various assessments in Indian setting recommend that affiliations stimulate moral lead by: bestowing presumptions that delegates will act ethically and portray what that suggest enrolling at the top who set real models; repaying moral practices and rebuking shifty works on; some specialist crucial gadgets of moral dynamic, and; engaging discussion of moral issues.

Outcomes:

The as an issue of first significance aftereffect of this endeavor is to make foundations with the characteristics and ethics. All of the genuine establishment, mental structure, data system and financial ought to be glimmering with qualities and moral practices. It is crucial to have the colossal things at put and have the most diminutive things at the spot. To set up such an environment, following five systems ought made:

- (1) The learning measure for far reaching new development
- (2) Impeccable organization
- (3) Effective institutional organization
- (4) Well laid game plan of compensations and censure
- (5) Institutional climate where 'opportunities' appreciate and 'wrongs' are weaken.

Education is not limited to the imparting of information or training of skills. It has to give the educated sense of values

Summing Up:

To sum up; the research scholar comes to the point that the ethical decision depends on how one searches oneself, periods of moral new development and various leveled environment. Blanchard and Peal recommend that ethical direct is related to certainty. People, who have a nice point of view toward themselves, have the stuff to withstand outside pressure and to settle on the shrewdest choice instead of do what is just impetus, notable, or beneficial. Nevertheless, for moral practices, just individual(s) can't be considered trustworthy. Beside moral development and certainty, definitive environment is a third factor adding to moral stand or practices or decisions. That is the clarification there is a need to build up an ethical environment in an affiliation. In case legitimate environment progresses moral practices, individuals accept more upright decisions just as the reverse way around. Researches show that every one of the more disastrously communicated moral statements offer less towards moral practices in affiliations and obviously communicated concretized moral verbalizations offer more to moral practices in affiliations. In the present paper; the research scholar tries to explain about the importance of **Importance of Values and Ethics for students and Stakeholders because Values and Ethics are priceless words and virtues.**

References:

Primary Sources:

- ✓ Aikenhead, G. S. (2005). Research into STS science education. *Educacion Quimica*, 16, 384-397.
- ✓ Alavi, H. R. (2007). Al-Ghazāli on moral education. *Journal of Moral Education*, 36(3), 309-319. doi: 10.1080/03057240701552810
- ✓ Allechin, D. (1998). Values in sciences and science education. In B. Fraser & K. Tobin (Eds.), *International handbook of science education*. Dordrecht, The Netherlands: Kluwer.
- ✓ Allechin, D. (1999). Values in science: An educational perspective. *Science & Education*, 8(1), 1-12. doi: 10.1023/A:1008600230536
- ✓ Althof, W., & Berkowitz, M. W. (2006). Moral education and character education: Their relationship and roles in citizenship education. *Journal of Moral Education*, 35(4), 495-518. doi: 10.1080/03057240601012204

SECONDARY SOURCES:

- ✓ Anderson, D. R. (2000). Character education: Who is responsible? *Journal of Instructional Psychology*, 27, 139.
- Arthur, J., & Carr, D. (2013). Character in learning for life: A virtue-ethical rationale for research on moral and values education. *Journal of Beliefs & Values*, 34(1), 26-35. doi: 10.1080/13617672.2013.759343
- ✓ Batterham, R. (2000). The chance to change: Final report. Department of Industry, Science and Resources, Commonwealth of Australia. Retrieved from <http://ict-industry-reports.com/content/uploads/sites/4/2013/10/2000-Chance-to-Change-Robin-Batterham-Final-Report-PMSEIC.pdf>
- ✓ Bell, R. L., & Lederman, N. G. (2003). Understandings of the nature of science and decision making in science and technology-based issues. *Science Education*, 87(3), 352-377. doi: 10.1002/sce.10063
- ✓ Berkowitz, M. W. (1999). Obstacles to teacher training in character education. *Action in Teacher Education*, 20(4), 1-10. doi: 10.1080/01626620.1999.10462930
- Bullough, R. V., Jr. (2011). Ethical and moral matters in teaching and teacher education. *Teaching and Teacher Education*, 27(1), 21-28. doi: <http://dx.doi.org/10.1016/j.tate.2010.09.007>
- ✓ Campbell, E. (2003). *The ethical teacher*. Maidenhead, UK: Open University Press/McGraw-Hill.
- Campbell, E. (2008). Teaching ethically as a moral condition of professionalism. In D. Narvaez & D. Nucci (Eds.), *The international handbook of moral and character education* (pp. 601-617). New York: Routledge.
- ✓ Car, D. (2014). Metaphysics and methods in moral enquiry and education: Some old philosophical ideas for new theoretical bottles. *Journal of Moral Education*, 43(4), 500-515. doi: 10.1080/03057240.2014.943167
- ✓ Chowdhury, M. A. (2013). Incorporating a soap industry case study to motivate and engage students in the chemistry of daily life. *Journal of Chemical Education*, 90(7), 866-872. doi: 10.1021/ed300072a004
- ✓ Chowdhury, M. A. (2014). The necessity to incorporate TQM and QA study into the undergraduate chemistry/science/engineering curriculum. *The TQM Journal*, 26(1), 2-13. doi: 10.1108/TQM-06-2013-0043
- ✓ Chewning, J. T. (2005). How to have a successful science and ethics discussion. *The Science Teacher*, 72(9), 46-50.

Acknowledgements

We consider it is my moral duty to pay honour, regards and thanks to the authors, Learned Researchers, Research Scholars, librarians and publishers of all the books, Research papers and all other sources which I have consulted during the preparation of the present paper.



Application of Biological Mathematics in Medical Science

Sanjay Goyal

S/o Sh. TrilokChand Goyal

Associate Professor in Mathematics

Vaish College, Bhiwani

ABSTRACT

Mathematics plays a role in many disciplines of science, primarily as a mathematical modelling tool. In this paper, we study the role played by mathematics in medical science and analysis that the real-life application of calculus, especially in the medical field. This is important because calculus can be used to solve and analyse real-life problems, but also to make medical procedures more efficient and beneficial to the public.

Applications of mathematics in medical science using calculus can be used not only in drug sensitivity. Also, the Right dosage of medicines produces the desired effect but to minimizes the negative side effects.

KEYWORDS

Mathematics, Biological, Calculus, Mathematical models, Bio-mathematics, mathematically modeling.

INTRODUCTION

Mathematics for biosciences helps us to understand many biological and medical phenomena from those topics such as population growth, biology oscillations, pattern formation, and the spread of disease, human physiology, systems and organs, the development of tumour's, etc. It also produces new mathematical questions.

The use of mathematics in biology for the raw data mass is in tracking change over time. Bio-statistics uses statistical analyses to form biological phenomena such as drawing balancing or connections between biological-Variables. One of the applications of mathematics in biomedical is the use of probability and statistics, invalidating the effectiveness of drugs. Along with this mathematical field in medicine is to evaluate the survival rate of cancer patients under the treatments.

THE ROLE OF MATHEMATICS IN BIOLOGY FIELDS.

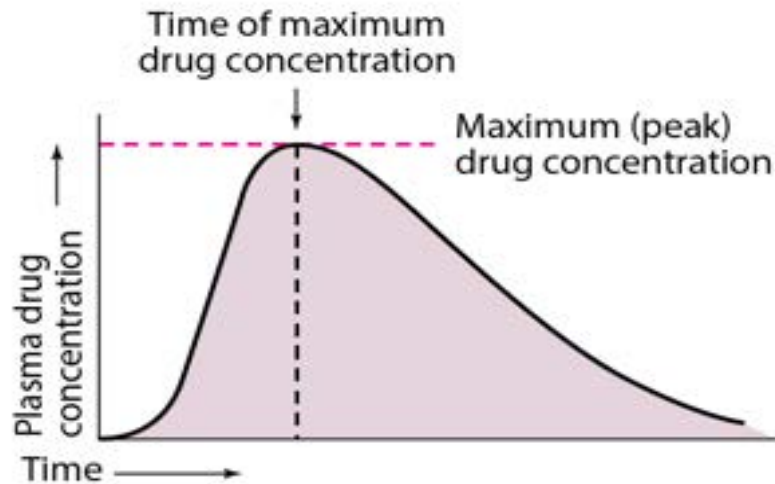
Mathematical in biological or bio-mathematics is a fast-growing and the most modern application of mathematics. Mathematics is a need in the medical profession. The aim of the new discipline has mathematics to represent modelling of biological problems to use a variety of mathematical thesis and methods. The pharmaceutical mathematics curriculum includes measurements and calculations required to impose and allot medication.

This new discipline has applications in biological, biomedical, and biotechnology. Mathematical biology has both theatrical and practical applications in research on bio, biomedical and biotechnology fields.

Biological scientists need mathematical models

Mathematical and computational models are increasingly used to help clarify bio-medical data produced by high-throughput genome and proteome projects.

Mathematical models are tools that we can use to describe the past accomplished and forecast the future performance of biotechnological processes. Bio -mathematical models can affect the tools in both fundamental research and applied research fields and development.



In this graph x-axis showing a change in time.

And the y-axis showing plasma drug concentration.

The *graph* above representing a solution to the differential equation.

Article and analysis of *how calculus* impacts the *medical research field*.

METHODOLOGY

Calculus is a branch of mathematics that is applied to real-life problems. Calculus is a mathematical study of continuous change, and it can be broken down into two types:

Differential and Integral calculus. calculus can be used in fields such as engineering, economics, and medicines.

The purpose of this presentation is to explain the real-life application of calculus, especially in the medical field. Calculus has many vital applications in medicine when considering drug dosages, blood flow, and tumour growth. This is important because calculus can be used not to solve and analyse real-life problems, but also to make medical procedures more efficient and beneficial to the public.

Calculus is often used in medicine to determine the right dosage of a drug to be administered to a patient. This is very important when taking into consideration drug sensitivity, rate of dissolution, and blood pressure.

Calculus can be applied to drug sensitivity

The concept of derivatives can be applied to determine the patient's sensitivity to a specific drug, to prevent too much of that drug from being administered. For example, if a drug's potency is given by $P(t)$ where t is a dosage, the derivative $P'(t)$ gives the sensitivity of the body with respect to t . $P'(t)$ gives the sensitivity of the body with respect to t . $P'(t)$ also represents the change in P as a result of the change in the dosage of the drug.

Another topic covered in calculus that can be applied to medicines is optimization. Doctors have to prescribe the right dosage of medicines to not only produce the desired effect but also to minimize negative side effects. In order to do this, optimization is used to determine the correct dosage to produce the best result in each patient.

Exponential Growth/Decay

This calculus topic can be used in the medical field to analyze the growth of bacteria in a patient, so that doctors may combat the bacteria with antibiotics.

A patient has been exposed to bacteria in her workplace. Her lab results showed 350 bacteria in her bloodstream at time $t=2$ hours and 780 bacteria at time $t=4$ hours. Find the rate at which the bacteria multiplied. How many bacteria were present initially? Set up an equation that shows the exponential growth of this bacteria and use it to find how many bacteria were present at time $t=24$ hours.

Exponential Growth Formula: $y = Ce^{kt}$

C = Initial Value

K = Rate of growth/decay

T = Time

Rate of Exponential Growth

$$350 = Ce^{2k} \quad 780 = Ce^{4k}$$

$$C = 350/e^{2k}, \quad C = 780/e^{4k}$$

$$350e^{4k} = 780e^{2k}$$

$$E^{4k} = 2.229e^{2k}$$

$$\ln E^{4k} = \ln 2.229e^{2k}$$

$$4k = \ln 2.229 + 2k$$

$$2k = \ln 2.229$$

$$K = 0.4008$$

The rate of exponential growth is 0.4008 bacteria per hour.

Bacteria present initially

$$C = 350/e^{2(0.4008)}$$

$$C = 157.021$$

There were 157.021 bacteria present initially.

Exponential growth equation

$$Y = 157.021e^{0.4008t} \text{ ----- Equation of exponential growth}$$

$$Y = 157.021e^{0.4008(24)}$$

$Y = 2,363,323.749$ ----- There is 2,363,323.749 bacteria present at time $t = 24$ hours.

CONCLUSION

- Calculus has many real-world applications in a variety of fields.
- Calculus also holds significant importance in the medical field, especially when analysing problems.
- The use of calculus is to solve a problem and make medical procedures more efficient.

This research project work impacted my perception of how calculus is important to the medical field. Before my research,

I thought calculus was only crucial for a job in engineering and architecture.

To my surprise, calculus involved almost every aspect of medicine. It realized me grateful that school push for students to take calculus when they plan on working in the medical field instead of just allowing them to take the basics and not have a deeper understanding of the field they plan.

REFERENCES

- 1). MURRAY. J.D. (2002) *Mathematical Biology-I An Introduction, Interdisciplinary Applied Studies, Vol.17*, Springer.
- 2). Karp R. Mathematical challenges from genomics and molecular Biology .*Notices of the AMS* 2002;94(5):544-553
- 3). HANNA KOKKO (2007) *Modelling for Field Biologists and Other Interesting People*, Cambridge University Press.
- 4). AVNER FRIEDMAN (2010) What is mathematical biology and how useful is it? *Notices of the AMS*, pp. 851-857.
- 5). Hood L, Heath JR, Phelps EW, Lin B. Systems biology and new technologies enable predictive and preventive medicine. *Science* 2004;306:640-64
- 6). R. Gonzalez, R. Woods *Digital image processing* Prentice Hall, New Jersey (2002)
- 7). . Cherniack NS. Mathematics and medicine: Does it all add up? *Al Ameen J Med Sci.* 2009;2:2-3.
- 8). Clairambault J. Commitment of mathematicians in medicine: A personal experience, and generalisations. *ActaBiotheoretica.*



GENERALIZED DERIVATIONS IN PRIME RINGS

Sanjay Goyal
S/o Sh. Trilok Chand Goyal
Associate Professor in Mathematics
Vaish College, Bhiwani

ABSTRACT

To study the derivations which satisfy certain differential identities on the general derivation of the prime ring. If a derivation exists as $d: R \rightarrow R$ where $F(a, b) = F(a)b + ad(b)$ holds for all $a, b \in R$. Here in this paper, we have proved that $V \subseteq Z(R)$ or $d = 0$, for all $x \in I$. Then, $d(x) = \lambda [x, a]$, for all $a \in Z$ or $x \in I$.

KEYWORDS:

Generalized derivative, Abelian group, Prime ring, Derivation, commutative

INTRODUCTION

An algebraic structure of a rings are generalize field even multiplicative inverse and commutative need not exist. A ring is associated with two binary operations which satisfies the properties of addition and multiplication of an integers.

An element of a rings can be complex or integer numbers or non-numerical objects such as polynomials, functions, power series and square matrices.

R is a commutative ring with unity a belongs to R is called prime ring if,

- a is not equal to zero.
- a non-unit
- If a/bc in R then, a/b in R , a/c in R .

This property is called prime property

Prime ring is a derivation, then one of them is zero,

If d is a derivation of a prime ring

i.e, for all elements of the ring

$x y (x) - d(x)x$ is Central,

Then either $d = (0)$ or the ring is commutative.

By definition we know that A ring R is called prime if and only if $(xay) = 0$,

Implies that $x = 0$ or $y = 0$.

Thus, R will be a ring with Centre Z .

Now Let x and y belong to R .

The commutator $x y$ or $y x$ will be denoted by $[x, y]$.

Therefore, a ring is prime, if $x (R) y = 0$

implies $x = 0$ or $y = 0$.

Now, an additive mapping $\partial: R \rightarrow R$ is called a derivation.

If $\partial (a, b) = \partial(a) y + a \partial(b)$ for all $a, b \in R$.

The study of commutability of prime rings with derivation.

The current analysis states that there has been an ongoing interest concerning the relationship between the commutative ring and the existence of certain special types of derivations of R .

Bresar, defined the following symbol.

By derivation of a ring, there exists $d: R \rightarrow R$

i.e, $F(x, y) = F(x)y + x d(y)$ for all $x, y \in R$.

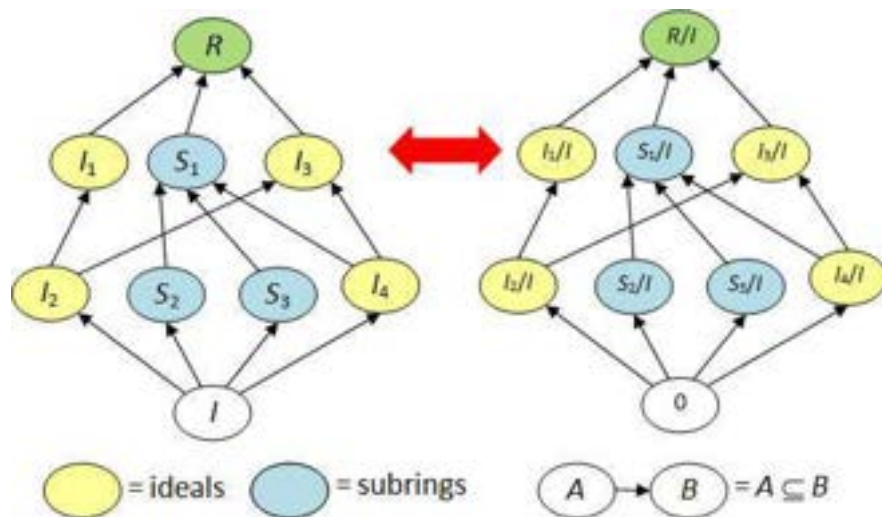
Here in this paper,

R will be a prime ring with Martindale ring of quotients as $Qr(R)$,

which extended centroid C and central closure $RC = RC$,

Prime ring generalized that the ring derivation can be uniquely extended to a generalized ring derivation of $Qr(R)$.

Albas, E. and Argac, N. showed that R is a non-commutative ring and a generalized ring derivation



Correspondence for the lattices of ideals and subrings between those of R which contain I , and those of R/I .

In general, an idea can be contained in a subring, the ideal is the whole ring R recollected that R is prime ring if $a R b = 0$

This implies, $a = 0$ or $b = 0$.

By an additive map of ring $d: R \rightarrow R$ is called a derivation if $d(x, y) = d(x)y + x d(y)$ for all $x, y \in R$.

By Generalized derivation additive function of $F: R \rightarrow R$.

If there exists a derivation $d: R \rightarrow R$

Which holds $F(x, y) = F(x)y + x d(y)$ for all $x, y \in R$.

By analysis, we have the study of generalized derivation in the context of algebras on certain normed spaces.

As U is an additive subgroup of R then U is called an ideal of R for all u an element of U and r element of R of the ring R .

Methodology

To prove theorems following known results which will be used considerably.

Theorem 2.1.1. If V is a Lie ideal of R such that $V^2 \in V$ for all $v \in V$, then $2 v u \in V$ for all v and $u \in V$.

Proof. For all w, u and $v \in V$,

we have $u v + v u = [(u + v)^2 - v^2 - u^2] \in V$

On the other hand,

$$\text{for } v - v u \in V.$$

On adding both expressions,

we have $2 u v \in U$ for all u and $v \in V$

Theorem 2.1.2. If suppose $V \subseteq Z(R)$ is a Lie ideal of R ,

$$\text{then } C R (V) = Z(R)$$

where R is whole ring.

Theorem 2.1.3. If suppose V is a Lie ideal of R ,

$$\text{then } C R ([v, v]) = C R (V).$$

Theorem 2.1.4. If $U \subseteq Z(R)$, then $V \subseteq Z(R)$ for Set $U = \{v \in V \mid d(v) \in V\}$.

Proof. Assume that for $V \subseteq Z(R)$ and R is a ring

$$\text{Because } [v, v] \subseteq V \text{ and } d([v, v]) \subseteq V,$$

$$\text{Thus we have } [v, v] \subseteq U \subseteq Z(R).$$

Hence $C R ([v, v]) = R$. by theorem 2.1.2 $C R (V) = Z(R)$. where R is whole ring

But (V) belongs to the whole ring R . by theorem 2.1.3, $C R ([v, v]) = C R (V)$.

That is, $R = Z(R)$ is a contradiction.

Theorem 2.1.5. If $V \subseteq Z(R)$ is a Lie ideal of R also, if $x U y = 0$, then $x = 0$ or $y = 0$.

Theorem 2.1.6. A group G of ring R cannot be a union of two of its proper subgroups of a group G . If $V \subseteq Z(R)$, So $U \subseteq Z(R)$ of group G .

Proof: By theorem 2.1.4. for all x and $y \in V$ we have $d(x) * F(y) = 0$.

By theorem 2.1.1 on Changing $2yz$ and by taking $R=2$,

we obtained $d(x) \circ F(y z) = 0$ for all x, y and $z \in V$

$$[d(a) \circ b]d(z) - b [d(a), d(z)] + [d(a) \circ F(b)] z - F(y) [d(a), z] = 0$$

By definition of field of ring R it shows that

$$[d(a) \circ b] d(z) - b [d(a), d(z)] - F(b) [d(a), z] = 0.$$

Now by replacing z by d(a)

$$[d(a) \circ b] d^2(a) - b [d(a), d^2(a)] = 0 \quad \text{for } a \in V$$

Next, Replacing y by 2zy

$$[d(x) \circ (z y)] d^2(x) - z y [d(x), d^2(x)] = 0 \quad \text{for all } x, y \text{ and } z \in V$$

This implies that

$$z d(x) \circ y d^2(x) d(x), z y d^2(x) - z y d(x), d^2(x) = 0$$

Now on solving the above equations,

we obtained

$$[d(x), z] y d^2(x) = 0 \text{ for } x \in U \text{ and } y \in V \text{ and } z \in V$$

Here in this case,

$$[d(x), x] y d^2(x) = 0,$$

Therefore,

either $[d(x), x] = 0$ or $d^2(x) = 0$ of ring R

Now let us suppose $V_1 = \{x \in V [d(x), x] = 0\}$

$$\text{And } V_2 = \{x \in U d^2(x) = 0\}.$$

Therefore,

Additive subgroups of U are U_1 and U_2

$$\text{Also, } U_1 \cup U_2 = U.$$

Thus, either $U = U_1$ or $U = U_2$ of group G by theorem 2.16.

Now by taking $U = U_1$, then by Theorem 2.1.6 we have $V \subseteq Z(R)$

On the other hand, if we take $U = U_2$ of a prime ring R

The following known results will be used considerably to prove theorems.

Theorem 2.1.7. Let us suppose V be a Lie ideal of R in such a way that $v^2 \in V$ for all v an element of V ,

then $2vu \in V$ for all v and u an element of V .

Proof. As we have $u^2 + v^2 + (u+v)^2 = (u+v)^2 + u^2 + v^2 \in V$ for all $u, v \in V$

On the other hand, $u^2 - v^2 - (u-v)^2 \in V$.

Now on adding both expressions, we have $2uv \in V$ for all u and $v \in V$,

Thus, by theorem 2.1.2. Now let us suppose $Z(R)$ be a Lie ideal of R ,

then we get $C_R(V) = Z(R)$

where R is the whole ring.

Now again, by theorem 2.1.3. as V is a Lie ideal of R ,

then $C_R([V, V]) = C_R(V)$ and by theorem 2.1.4. Set $U = \{v \in V \mid d(v) \in V\}$ if $U \subseteq Z(R)$, then $V \subseteq Z(R)$.

By commutativity sigma prime ring R .

A generalized derivation F satisfies

Either $d(x) * F(y) = 0$ or $[d(x), F(y)] = 0$ or $d(x) * F(y) x * y = 0$ or $[d(x) \circ F(y)][x, y] = 0$ or

$(d(x) * F(y))[x, y] = 0$ and

$[d(x) * F(y)] x * y = 0$

For all x, y in an appropriate subset of R ,

where R is a 2-torsion prime ring, U a non-zero sigma lie ideal.

REFERENCES

[1] B. Hvala, "Generalized derivations in rings," *Communications in Algebra*, vol. 26, no. 4, pp. 1147–1166, 1998.

[2] M. Ashraf, A. Ali, and R. Rani, "On generalized derivations of prime rings," *Southeast Asian Bulletin of Mathematics*, vol. 29, no. 4, pp. 669–675, 2005.

- [3] Herstein, I. N. Rings with Involution, Chicago Lectures in Mathematics, The University of Chicago Press, Chicago, Ill.-London, 1976
- [4] J. Bergen, I. N. Herstein, and J. W. Kerr, "Lie ideals and derivations of prime rings," *Journal of Algebra*, vol. 71, no. 1, pp. 259–267, 1981.
- [5] P. H. Lee and T. K. Lee, "Lie ideals of prime rings with derivations," *Bulletin of the Institute of Mathematics. Academia Sinica*, vol. 11, no. 1, pp. 75–80, 1983.
- [6] I. N. Herstein, "On the Lie structure of an associative ring," *Journal of Algebra*, vol. 14, no. 4, pp. 561–571, 1970.
- [7] Albas, E. and Arga, c, N., Generalized Derivations of Prime Rings, *Algebra Colloquium*, 11:3, (2004), 399-410.
- [8] Bresar, M., On the distance of the composition of two derivations to the generalized derivations, *Glasgow Math. J.*, 33, (1991), 89-93. Generalized Derivations of Prime Rings 23
- [9] Havala, B., Generalized derivation in prime rings, *Comm. Algebra*, 26 (4), (1998), 1147-1166..
- [10] Passman, D., Infinite Crossed Products, Academic Press, San Diego, 1989.
- [11] Posner, E. C. Derivations in prime rings, *Proc Amer. Math. Soc.*, 8, (1997), 1093-1100.



EFFECT OF DERIVATIONS ON ANALYTIC FUNCTIONS

Sanjay Goyal
 S/o Sh. Trilok Chand Goyal
 Associate Professor in Mathematics
 Vaish College, Bhiwani

ABSTRACT

To study derivations satisfying certain analytic function of region R of domain D. By Cauchy's Integral and Riemann Equations of an analytic in the region R at any point $z=a$. Taylor's Series expansion of an analytic function determine.

KEYWORD

Analytic function, Taylor Series expansion, Region R, Cauchy's.

INTRODUCTION

In the complex plane, let boundary behaviour of functions be as $(1-z^2)^n f^{(n)}(z)$ Where f is an analytic function defined on the open unit disk and $n > 0$. By taking an example let $(1-z^2)f'(z)$

be bounded on D for Block Space B_p , set of analytic function f on D.

Also, $(1-z^2)f'(z) \rightarrow 0$ as for Block Space B_0 . $z \rightarrow 1$ be the set of analytic function f on D

Let Lebesgue area denoted by dA measure on the complex plane.

By the Bergman Space B_p

$$\int_D |f|^p dA < \infty \quad \text{for } p \in [1, \infty),$$

Where B_p is the set of analytic function f on D.

Next, if $f \in L^1$ then $f(z) = \frac{1}{\pi} \int_D \frac{f(w)}{(1-zw)} dA(w)$, for every $z \in D$



Let us define an analytic function $P(f)$ on D then,

$$P(f)(z) = \int_D \frac{f(w)}{1-zw} dA(w) \quad \text{for } f \in L^1(D, dA)$$

Let us suppose P restricted to $L^2(D, dA)$ then,

Again, $L^2(D, dA)$ is the orthogonal project of $L^2(D, dA)$ onto L^2 .

Let us suppose P restricted to $L^p(D, dA)$ then,

$L^p(D, dA)$ is a bounded projection of $L^p(D, dA)$ onto L^p .

By the, Analytic Function following lemma exist:

Lemma 1: Let us suppose f be an analytic function on D then by an analytic function as an area integral of its equivalents are as follow:

- (a) $f \in B$
- (b) $\sup_{|z| < 1} |(1-z^2)^n f^{(n)}(z)| < \infty$, for every $\forall n > 0$;
- (c) $\sup_{|z| < 1} |(1-z^2)^n f^{(n)}(z)| < \infty$, for some $\forall n > 0$;

Lemma 2: Let us suppose $f \in B$ such that, f has a zero of order at least $2n$ at 0 then

$$f(z) = \int_D \frac{(1-w^2)^n f^{(n)}(w)}{n! \pi (1-zw)^2 (w)^n} dA(w), \quad \forall n > 0, z \in D$$

□

Lemma 3: Let us suppose $h \in u$ and $t > 0$ then $\exists b > 0$ st



$h(b_z(\lambda)) - h(b_z(\lambda')) < \epsilon \quad \forall z \in D, dA$ generated

For the
need of

$\lambda, \lambda' \in D$ and $d(\lambda, \lambda') < \delta$
Where u is the closed
subalgebra

by the Complex Conjugate $H^\infty(D)$.

Lemma 4: Let us suppose f be an analytic function on D . then its
equivalents are:

- (a) $f \in P(u)$
- (b) $(1 - z^2)^n f^{(n)}(z) \in u,$ for every $\forall n > 0;$
- (c) $(1 - z^2)^n f^{(n)}(z) \in u,$ for some $\forall n > 0;$

Proposition (1) $p(u)$ is properly contained in the
Block Shape B .

Proposition (2) Let $u \in C(D)$ then u is bounded on D .

Lemma 5: Let u be a bounded, continuous, complex-valued function on D
in such a way that

$$\sup \left\{ \left| \frac{u(w) - u(z)}{w - z} \right| : z \in D \right\} < \infty$$

for $u \in C(D)$

Cauchy's Integral Theorem:

Let $f(z)$ is an analytic function on D by
supposing D as a bounded

domain with piecewise smooth boundary, then

$$\int_D f(z) dz = 0$$

Cauchy's Integral Formula:

Let $f(z)$ is an analytic function on D over C at a is then,



$$f'(a) = \frac{1}{2\pi i} \oint_C \frac{f(z)}{z - a} dz$$

Cauchy's Riemann Equations:

Let $f(z)$ is an analytic function on D over C at a over a complex

plane satisfies Cauchy's Riemann Equations throughout D.

$$\frac{\partial u}{\partial x} = \frac{\partial v}{\partial y} \quad \text{and} \quad \frac{\partial u}{\partial y} = -\frac{\partial v}{\partial x}$$

To check weather f has a complex derivative and to compute that derivative. Cauchy's Riemann Equations uses the partial derivatives of u and v .

Taylor series :

The Taylor Series of a function is an infinite sum of terms

also known as Maclaurin Series if zero is the point of derivative that are expressed in terms of the function's derivatives at a single point.

A real or complex-valued function $f(x)$ of Taylor Series for

complex or real number a is the power series of $n!$ is

$$f(a) + \frac{f'(a)}{1!}(x - a) + \frac{f''(a)}{2!}(x - a)^2 + \frac{f'''(a)}{3!}(x - a)^3 + \dots$$

Then it can be written as $\sum_{n=0}^{\infty} \frac{f^{(n)}(a)}{n!} (x - a)^n$

where derivative of f is $f^{(n)}(a)$.



METHODOLOGY

If a function is having complex $f'(z)$ then a function derivative

$f(z)$ is analytic. Real derivative of a Real function is too much similar as Complex derivative of Complex function.

$$f'(z_0) = \lim_{z \rightarrow z_0} \frac{f(z) - f(z_0)}{z - z_0}$$

$\therefore \exists f$ is analytic and differentiable at z_0

By Cauchy's Integral Formula

Let $f(z)$ is an analytic in region R then its derivation at any

point $z = a$ is also analytic in R

$$f'(a) = \frac{1}{2\pi i} \int \frac{f(z)}{(z-a)^2} dz \quad (1)$$

By Analytic functions and the necessary Cauchy's Riemann.

A function of z defined a single valued function of z

i.e. $w = f(z)$ is same domain D, then the function is

differentiable at $z = z_0$

if $\lim_{z \rightarrow z_0} \frac{f(z) - f(z_0)}{z - z_0} = 0$ (2)

By using equation (1) and (2) in Taylor Series expansion of an analytic function.

$$\Rightarrow f(z) = \frac{1}{2\pi i} \int \frac{f(z')}{z' - z} dz'$$

$$\Rightarrow \frac{1}{2\pi i} \int \frac{f(z')}{(z' - z_0) - (z - z_0)} dz'$$

Thus,



f is analytic in R

$$\Rightarrow \frac{1}{2\pi i} \int_C \frac{f(z')}{(z'-z)^2} dz'$$

$$= \frac{f'(z)}{1!} (z'-z_0)$$

where $(z'-z_0) > (z-z_0)$

By an analytic function Cauchy's Riemann,

$f(z)$ is a complex

By the theorem of complex line integral if analytic function then,

$$\int_C f'(z) dz = f(z_1) - f(z_0)$$

The Cauchy-Riemann equations

$$f(z) = \sum_{n=0}^{\infty} a_n (z-z_0)^n$$

Taylor's Series expansion $f(z)$

about z_0

Derivative of all order exist $f(z)$

is analytic function.

if

$$\lim_{n \rightarrow \infty} \frac{f^{(n)}(z)}{n!} (z-z_0)^n = 0$$

A Taylor-series expansion is available for functions which are analytic within a restricted domain.

CONCLUSION

In analytic function

of bounded domain D over a complex

$f(z)$

$$\text{plane. } \frac{du}{dx} \cdot \frac{dv}{dy} = \frac{dv}{dx} \cdot \frac{du}{dy}$$

over C at a point a i.e (then real and $z-a)dz$

complex valued function $f(x)$

is a power series of $(n!)$. Series expansion

$f(z)$ about

z_0 of analytic series of expansion by Taylor-series are Shower.



REFERENCES

1. J. M. Anderson, J. Clunie, and Ch. Pommerenke, On Bloch functions and normal functions, *J. Reine Angew. Math.* 270 (1974), 12—37.
2. S. Axler, Bergman spaces and their- operators, *Surveys of some recent results in operator theory*, v. I (J. B. Conway and B. B. Morrell, eds.), Pitman Res. Notes Math. Ser., 171, pp. 1 —50, Longman Sci. Tech., Harlow, 1988.
3. S. Axler and P. Gorkin, Sequences in the maximal ideal space of H^∞
Proc.
Amer. Math. Soc. 108 (1990), 731—740.
4. L. Brown and P. M. Gauthier, Behavior of normal meromorphic function on H^∞ ,
the maximal ideal space Of H^∞ *Michigan Math. J.* 18 (1971), 365—371.
5. E. F. Collingwood and A. J. Lohwater, *The theory of cluster sets*, Cambridge Univ. Press, Cambridge, 1966.
6. P. L. Duren, *Theory of H^p spaces*, Academic Press, New York, 1970.
7. J. B. Garnett, *Bounded analytic functions*, Academic Press, New York, 1981.
8. K. Hoffman, Bounded analytic functions and Gleason parts, *Ann. of Math. (2)* 86 (1967), 74—111.
9. P. Lappan, Some results on harmonic normal functions, *Math. Z.* 90 (1965), 155—159.
10. G. McDonald and C. Sundberg, Toeplitz operators on the disc, *Indiana Univ. Math. J.* 28 (1979), 595—611.
11. K. Zhu, The Bergman spaces, the Bloch space, and Gleason's problem, *Trans.*
Amer. Math. Soc. 309 (1988), 253—268.
12. Krantz, Steven; Parks, Harold R. (2002). *A Primer of Real Analytic Functions* (2nd ed.). Birkhäuser.
13. A holomorphic function with given almost all boundary values on a domain with homomorphic support function. *J. Convex Anal.* 14(4), 693—704 (2007).
14. Homogeneous polynomials on strictly convex domains. *Proc. Am.*



Math.

Soc. 135, 3895–3903(2007).

15. Bounded holomorphic functions with given maximal modulus on all circles.

Proc. Am. Math. Soc. 137, 179–187 (2009).



TO STUDY OF THE PATHOLOGICAL OR THE SICK FAMILY MODEL

*INDU AND DR. ANITA KUMAR, DR. HARIKESH
RESEARCH SCHOLAR AND RESEARCH GUIDE, CO-GUIDE
SHRI JJT UNIVERSITY*

Abstract-When dealing with the impact of a special needs kid on various family members, one of the difficulties is figuring out what issues come as a result of having a special needs child and what conflicts develop as a result of the employment, marriage, economics, and other factors. A fundamental assumption of the Pathological Model of the family is that any problem or difficulty in the family's structure is caused by the presence of a disabled kid in the family. The pathological perspective may be traced back to at least the seventeenth century. Back then, there was a widespread notion among the general public that moral depravity and corrupt parenting were the root causes of reproductive incompetency. As a result of this conception of impairment, there was a societal stigma attached to it. As Joanna Ryan points out in her historical account of mental disability, this concept persisted into the twentieth century and is still articulated by parents today in the form of shame and mortification.

Keywords- FAMILY, Difficulties

Introduction:-The National Health Services (NHS) were established in 1949, and the field of disability was brought under their jurisdiction. Disability was considered as a medical condition that required the support of medically based therapies for persons who were physically or mentally challenged it was once believed that a family with a disabled kid was automatically classified as a 'handicapped household.' The presence of a handicapped kid was regarded as an anomaly, and his or her life was expected to have a detrimental impact on the family. They were occasionally institutionalised in order to prevent them from causing stress and problems for their siblings or for their families. It was sometimes necessary to organise psychotherapeutic meetings in order to assist the immediate families dealing with the myriad of challenges that come with having a differently-abled kid in the home. With this approach, it is possible to analyse the negative consequences of having a kid with special needs in the household. When it comes to matters of mental and physical health, studies have revealed that the general public is feeling more tension and fear than ever before.

Families under Stress:-In the first place, the researches were carried out on 'group populations' and took place at a 'single point in time. Afterwards, 'the idea of stress in the earlier experiments was frequently misunderstood,' says the author. Stress was measured in these researches by the degrees of depression and stress experienced by the participants' family members. These investigations were conducted on mothers as the subjects. They anticipated that family members would be subjected to some form of mental mutilation. Mothers of impaired children, according to research, "had substantial levels of stress and had 'critically high levels of despair' following the birth to a disabled child." "A research did not discover a bigger difference in depression ratings between mothers of children with Down's syndrome and moms of non-disabled children in the first two years following the children's birth, in contrast to the findings stated above." It has been the goal of researchers to investigate the relationship between the presences of many elements, such as "socio- economic" factors, "family size," "mother's age," and other similar considerations, and the effects of these factors on stress levels in mothers. The outcomes are inconclusive. They have come to the conclusion that "vulnerability to stress is multi-dimensional.

Fathers:-Several research have been undertaken to determine the impact of special needs children on dads, and it has been concluded that fathers were 'less stressed' than mothers in these investigations. On the other hand, according to research conducted in the United States and the United Kingdom, dads are more anxious, unhappy, and suffer from 'poor self-esteem' than other family members. In most cases, they 'get success by utilising an escape-avoidance technique.' In turn, this has a 'negative' impact on the family, resulting in increased duties and difficulty being placed on the family, as well as sentiments of 'resentment and anger' among other people in the family.

Brothers and Sisters:-Some feel that having a disabled sibling has a negative impact on the psychology of the 'typical child.' The findings of another study found that there has been a significant increase in 'anti-social' behaviour among 'older sisters of children with Down's Syndrome.' Numerous factors contribute to children's feelings of 'resentment' towards their siblings and parents, including the additional burden placed on 'normal' children, particularly 'older sisters,' their parents' preoccupation with the special needs child, their parents' suppression of strong and negative feelings, and broken 'expectations of the future.' Aside from a lack of "understanding regarding impairment," youngsters "may lack the understanding of how to deal with their impaired brother," according to the report. In general, it has been noted that 'older siblings' are better at coping with adversity than their younger siblings. The siblings of chronically unwell children have been shown to be well adjusted, according to the researchers. "They demonstrate maturity and demonstrate an attitude of responsibility that is in keeping with their chronological age." A number of studies have examined 'specific behaviours within the sibling relationship' in order to determine whether or not there are any significant variations in the "dynamics" of the sibling relationship as compared to "normal sibling" relationships. Comparing ten control children with ten siblings of a child with severe learning difficulties in a study conducted by "direct interview study with ten school-aged siblings of a child with severe learning difficulties," there appeared to be no evidence of conflict, of sharing household chores, and of other responsibilities. According to the findings of the Manchester research, the difficulties were associated with "certain behaviours of the kid with Down's syndrome." Sibling sessions held in Nottingham and Leicester for children with autism were attended by youngsters who expressed their 'pain' at the 'lack of empathy' displayed by the autistic kid. To put it another way, some youngsters adapt well to their circumstances while others do 'poorly.' What we do know is that a variety of elements play a role in attempting to understand how siblings 'grow' and live with youngsters who have differing abilities.

Review of literature

Chaubey, Dhani& Kala,Devkant. (2012) In transforming students into business professionals, academicians need to play a pivotal role by enriching students' knowledge and enhancing their emotional intelligence levels. EI skills have been strongly associated with dynamic leadership, satisfying personal life experiences and success in the workplace.

Sabir, Shabila& Thomas,Sannet. (2020) Emotional intelligence is the ability to perceive emotions, to access and generate emotions so as to assist thought, to understand emotions and emotional knowledge, and to reflectively regulate emotions so as to promote emotional and intellectual growth.

SanjyothPethe and UpinderDhar in 2002.t-test analysis conclude that there is no significant difference between emotional intelligence among joint and nuclear families ($p > 0.05$), gender and residential arê.

Alhashemi, Suhaila. (2015) Emotional intelligence (EI) is being recognised to be a vital element in many educational institutions today. Tuning into one's feelings and understanding others help to build and strengthen relationships in classrooms.

Objectives

1. To compare the Pathological college students on the basis of their gender.
2. To find Sick Family Model'of college students.

METHOD OF THE STUDY:-The purpose of this study was to investigate the link between stress and coping strategies, as well as emotional intelligence, in students from Bhiwani who were studying at the secondary level. It was aimed to collect a wide and really representative sample of data from all throughout Bhiwani in order to acquire a thorough sense of the problem's analytics dashboard and scope. Because of this, the investigator chose to conduct the current investigation using a survey approach. By conducting a thorough review of the theoretical aspects and related literature, as well as by distributing it to experts in the fields of teacher education and psychology for their feedback and suggestions, and making necessary modifications in response to their suggestions and opinions, the content validity of the tool was established

Result

Summary of Analysis of Variance of the Influence of Emotional Intelligence on Stress of Students with respect to the Levels of Emotional Intelligence

Source of Variance	Sum of Squares	df	Mean of Squares	F
Between groups	119800.20	2	59890.30	62.56*
Within groups	768300.50	792	969.51	
Total	888100.11	794	-	-

* Significant at 0.01 level

In the case of 2 and 792 degrees of freedom, the computed 'F' value is 62.56, which is greater than 4.52, which is the calculated 'F' value at the 0.01 threshold of significance. As a result, the theory is unsupported. It follows from this that, when the three levels of Emotional Intelligence are compared, there is a considerable effect of Emotional Intelligence on the stress levels of college students. Therefore, the considerable "F" score shows that Emotional Intelligence is important in determining the level of stress experienced by students in a given situation. An examination of the Scheff Post Hoc test was conducted in order to determine the relationship between the three levels of Emotional Intelligence. Using the three degrees of Emotional Intelligence, Table 4.5a depicts the relationship between stress and the three levels of Emotional Intelligence.

Data and Results of Test of Significant Difference in the Mean Scores of Emotional Intelligence, Stress and Coping Strategies of Students on the Basis of Gender

Variables	Gender	N	Mean	Standard Deviation	Critical Ratio
Emotional Intelligence	Male	150	106.23	9.42	1.60
	Female	150	150.29	11.52	
Stress	Male	150	181.23	33.4	0.30
	Female	150	180.90	34.5	
Coping Strategies	Male	150	169.50	36.03	2.10
	Female	150	178.54	35.70	

The crucial ratios derived for male and female students' Emotional Intelligence, Stress, and Coping Strategies are 1.60, 0.30, and 2.10, respectively, for the three variables. In this study, the critical ratio for Emotional Intelligence was found to be 1.60, which is lower than the table value of 1.96 at the 0.05 level of significance. This suggests that there is no statistically significant difference between male and female pupils in terms of Emotional Intelligence. At the 0.05 level of significance, the critical ratio for Stress was found to be 0.30, which is also less than the table value of 1.96, indicating that male and female students do not differ substantially in their stress levels before participating in teaching practise. As for Coping Strategies, the derived critical ratio 2.10 is similarly smaller than the table value at 0.05 level of significance, indicating that male and female students do not substantially differ in their Coping Strategies while coping with Stress prior to participating in instructional activities.

So the hypothesis that there is no statistically significant difference between male and female students in terms of their emotional intelligence, stress, and coping strategies is acknowledged as being correct is accepted.

CONCLUSIONS OF THE STUDY

Conclusions Related to the Influence of Emotional Intelligence on Stress and Coping Strategies of Student Teachers

It was discovered that when the three levels of Emotional Intelligence were examined, that the emotional intelligence of student instructors had a significant impact on their stress levels. Because of this, Emotional Intelligence plays a crucial part in regulating the level of stress experienced by student teachers. When the mean differences in stress among the High, Average, and Low Emotional Intelligence groups were calculated, it was discovered that the mean score of the Low Emotional Intelligence group differed significantly from the mean scores of the average and high Emotional Intelligence groups, indicating that low emotional intelligence is associated with higher levels of stress. As a result, it may be stated that students with low Emotional Intelligence experience more stress than students with high or medium levels of Emotional Intelligence. The fact that these factors have an inverse connection means that an improvement in Emotional Intelligence will have an impact on a decrease in the stress experienced by student instructors.

Reference

1. Alhashemi, Suhaila. (2015) emotional intelligence as predictor of academic achievement among university students: an implication for the educational managers. *HamdardIslamicus: quarterly journal of the Hamdard National Foundation, Pakistan*. 43. 132-142.
2. Chaubey, Dhani& Kala, Devkant.(2012) EMOTIONAL INTELLIGENCE OF STUDENTS BELONGING TO SC/ST COMMUNITIES. 3. 19-25.
3. Fida, Asfandyar&Ghaffar, Abdul &Zaman, Amir &Satti, Asif. (2018). Gender Comparison of Emotional Intelligence of University Students.*Journal of Education and Educational Development*. 5. 172. 10.22555/joeeed.v5i1.2046.
4. Sabir, Shibila& Thomas, Sannet. (2020) The Relationship between Emotional Intelligence and Marital Status in Sample of College Students. *Procedia - Social and Behavioral Sciences*. 84. 1317-1320. 10.1016/j.sbspro.2013.06.749.
5. SanjyothPethe and UpinderDhar in 2002Investigating the Correlation between Emotional Intelligence and Academic Performance.*Pacific Science Review B Humanities and Social Sciences*. 13. 01-09.

An Analysis of the Development of Education and the Library System Under the Mughal Dynasty

Dr. Surender Kumar

(Associate Professor, Vaish College, Bhiwani, Haryana)

Abstract: *During the Turko-Aryan dynasty (1206–1526 A.D.), Delhi was under the rule of the Sultans, whose cultural heritage influenced the development of their own educational system. The educational system of the Delhi Sultanate was founded upon religious principles, as makhtabs and madrasahs were established within mosques. Makhtabs served as the residences of scholarly establishments, whereas madrasahs were where primary education was conducted. Both were supported monetarily, by the government, or both. Makhtabs were publicly funded establishments whose mission was to propagate Islam by means of teaching the recitation and composition of the holy Quran. Madrasahs additionally imparted knowledge in secular subjects and Islamic philosophy and religion, with the intention of augmenting the intellectual prowess and expertise of the general public. Subjects that were fascinating to the majority of Indians were disregarded. As a result of calligraphy's continued prevalence among Muslims, madrasahs persisted in employing handwritten texts. Educational establishments of the modern Hindu tradition have made substantial contributions to the dissemination of education and the progression of knowledge. An immense collection of manuscripts from diverse fields, including medicine, science, history, and philosophy, was housed in libraries. Patan, Nadia, and Mithila were acknowledged as epicentres of instruction regarding Brahmanical culture. The Nyaya institution Mithila flourished during the period spanning from the twelfth to the fifteenth centuries. Established in Bengal, Nadia was an esteemed academic establishment in eastern India. It remained a preeminent centre of Hindu scholarship until the middle of the eighteenth century. The Buddhist educational institution Vikramshila and the renowned Nalanda were both destroyed during the reign of the Musalmans. Neither the religious nor cultural practices of the Bengali people nor educational institutions were affected. The cessation of the Hindu kingdom in North India occurred as a consequence of the Muslim conquest that was initiated at the start of the thirteenth century. Numerous educational establishments in South India, which were under the patronage of numerous Hindu monarchs, imparted knowledge relevant to their culture and way of life. An authority on the Telegu language and an esteemed patron of education and culture, King Krishnadevaraya of Vijayanagar was regarded as an Andhra-Bhoja.*

Keywords: *Education System, Mughal Period, Delhi Sultanate, Librery System.*

Content

During the early thirteenth century, specifically commencing in 1206 A.D., under the Muslim rule, India experienced a period of political decline. Educational institutions were not exempt from the political and cultural fragmentation that characterised the society at the time. While certain instructors of the Brahmanic and Buddhist educational systems attempted to uphold their traditional methods by conducting lectures orally with a limited number of students in their homes or institutions affiliated with monasteries and temples, their endeavours were abruptly halted when Muslim invaders wreaked havoc and destroyed their educational

centres on a massive scale. Devastation and destruction on a grand scale rendered the education and library systems of ancient India obsolete. Indeed, it was impossible for them to reconstruct their libraries and educational institutions and reclaim their former splendour.

Commencing with the historical period of the Turko-Aryan dynasty (1206–1526 A.D.), during which the Sultan ruled over Delhi, is imperative. Due to their cultural background being entirely distinct, they were not in favour of the traditional Indian educational system. They established their own educational system, which was implemented for many years in their native land. In fact, religion formed the basis of the educational system of the Delhi Sultanate. Various makhtabs and madrasahs were established within the mosques of the nation. Primary education was conducted in madrasahs, whereas makhtabs housed institutions of higher learning. Both were supported financially by the nobles, the state, or both. The majority of makhtabs were state-funded institutions whose mission was to promote Islam through the instruction of recitation and composition of the sacred Quran. It is well-known that madrasahs also provided instruction in Islamic philosophy and religion alongside secular subjects, with the intention of enhancing the intellectual capacity and expertise of the populace. In the same way, they disregarded topics that the majority of Indians found intriguing. As a result of calligraphy's popularity among Muslims, madrasahs also incorporated instruction in this art form and continued to utilise handwritten texts. Madrasah admission was exclusively granted to Muslim pupils; individuals of non-Muslim faith were not permitted to attend. The instructional curriculum was conducted in Arabic, which was a mandatory subject. While a few sizable establishments existed, comparable in stature to universities, the vast majority of madrasahs affiliated with mosques were quite modest in size. Based on the fact that madrasahs served as scholarly establishments specialising in Islamic studies, it is possible to deduce the existence of library facilities affiliated with them, albeit with limited information available.

An additional category of academic establishments emerged under Muslim rule; these were known as khanqah. Additionally, some mystic philosophers were born in the thirteenth century. Shaikh Qushairi, Iman Ghazzali, Shaikh Shihabaldin Suhrawardi, Shaikh Muhyi-Din Ibn Arabi, and Shaikh Jalal al-Din Rumi are notable esoteric thinkers. They once resided in khanqahs with their adherents and were enthusiastic about disseminating their beliefs throughout society. Limited information is available regarding the course offerings and textbooks utilised by the madrasahs and khanqahs. Barani asserts that the curriculum included instruction in Tafsir (Quranic exegesis), Hadis (prophetic tradition), and Fiqh (Muslim jurisprudence). Very little is known regarding the instructional methodologies employed in these institutions. In general, they imparted spiritual instruction with the objectives of purifying oneself and others. Khanqahs espoused a comprehensive, liberal perspective unrestricted by religious affiliation. Without a doubt, they contributed significantly to the literary and cultural advancement of all individuals, regardless of their religious affiliation. Scholars affiliated with khanqahs contributed to the composition of an extensive body of philosophical literature.

India was replete with numerous minor kingdoms that played a significant role in advancing education and establishing libraries. An essential component of a comprehensive examination of the mediaeval education system and libraries in India is an investigation into the educational systems and libraries of those lesser kingdoms. Hasan Gangu Bahamani established the Bahamani kingdom in 1347 A.D., and it remained under his dominion until 1526 A.D. He did not gain widespread acclaim for his literary associations or support of

other authors. It is documented that he was the initial Brahman to accept the services of a Musalman prince; prior to that, Brahmans were exclusively obligated to engage in Vedic study and perform religious duties. Mhuammad Shah Bahmani, who succeeded Hasan Gangu twenty years later, was an eminent patron of education. In addition to possessing fluency in Persian and Arabic, he also composed poetry. 1378 A.D. saw the establishment of a madrasah in Decan for the instruction of orphans. In addition to offering complimentary lodging and food, the professor was actively involved in the dissemination of knowledge. Additionally, numerous orphanage-oriented institutions were established in the various locations of his state. Numerous locations, including Viz Gulbargah, Bidar, Qandhar, Ellichpur, Daulatabad, Chaul, and Dabul. Significant bequests were established to ensure the upkeep of these establishments.

Firuz Shah was an intellectual. His understanding of literature is said to be comparable to that of the imperial dynasty of Delhi's Mahammad Tughlaq. In the past, he attended lectures on logic, geometry, and botany. Among his courtiers, he used to spend the majority of his time in the company of divines, poets, historian reciters, Shah-Namah readers, and other erudite and humorous individuals. Firuz Shah, an astronomy enthusiast, initiated construction of an observatory in 1407 AD; however, the endeavour remained unfinished as the project superintendent, the astronomer Hakim Husain Gilani, passed away. Near Gulbargah, Ahmad Shah Bahamani constructed a magnificent college. However, upon his assault on Bijapur, he toppled a number of Brahmana colleges within the city. As the minister of Muhammad Shah Bahamani II, Mahmud Gawan founded the renowned Bidar College. A mosque was connected to the college. A well-appointed and satisfactory library was available for student use. In total, 3000 volumes comprised the library's collection.

Jaunpur was widely recognised as an intellectual hub during the reign of its illustrious monarch, Ibrahim Sharqi. Jaunpur produced a number of religious reformers and scholars who led men and movements during his reign. It was referred to as India's Shiraz. He bestowed altamgahs and jagirs upon scholars and instructors, enabling them to dedicate themselves to the pursuit of knowledge without regard for material necessities. Many scholars ascribed the works of Ibrahim Sharqi to themselves. The establishment of over twenty schools of thought and the cultivation of several hundred academics ensued. Since the city's inception, scholars from various regions of Hindustan, including Oudh and Illahabad, have reportedly congregated at this renowned epicentre of learning to pursue their academic pursuits. Due to its abundance of excellent libraries, Jaunpur became a centre of learning, attracting numerous academics from across India. Additionally, eminent scholars maintained personal libraries. Particular mention should be given to the libraries of Maulavi Maasuq Ali and Mufti Syed Abul Baqa. Maasuq Ali possessed a library that boasted a substantial collection of five thousand volumes.

The Sultans of Delhi were benefactors of education. In addition to constructing mosques, they also established madrasahs and makhtabs in close proximity to these mosques across the nation. Concurrently, the Muslim authorities of India engaged in both demolition and construction. In order to facilitate both general and religious education, makhtabs and madrasahs, libraries, and literary societies were established. The capital being transferred from Ghazni to Lahore and from Lahore to Delhi respectively, rendered both cities renowned centres of learning in the style and tradition of Ghazni. As a result, Delhi emerged as a renowned epicentre of learning, attracting academicians from various regions of the globe. Sultan Firuz Tulaq, Iltutmish, Sultana Raziya, Nasiruddin, and Balban were renowned throughout the Slave dynasty for their support and

encouragement of learning and scholarship. Iltutmish was an eminent advocate for education. Delhi became a centre of learning during his reign, and numerous learned men fled Central Asia in search of refuge in the city. His patronage extended to scholars including Amir Khusrau, Fkhr-ul-Mulk, and Amir Kuhani. It has been learned that he constructed a madrasah and a mosque. Sultan Nasiruddin cherished Persian literature immensely. The magnum opus *Tabaqati-Nasiri* was composed by Minhaz-i-Siraj during his reign. It is a reference book for historians interested in India and Persia's histories. By reading and copying the Quran on a regular basis, Sultan Nasiruddin contributed to the development of exceptional calligraphy. Reportedly, he funded his personal expenditures through the sale of his exceptional handwriting. Additionally, he established Nasirryya College in Jalandhar, where he intermittently designated Minhaj-i-Siraj as principal. Additionally, Balban was a close companion of an erudite individual. Sixteen men, including Amir Khusrau, Sheikh Usman Tirmizi, Amir Hasan, Sayyed Manla, and Qutb-Uddin Bakhatiyar, sought refuge in Delhi as a result of Changiz Khan's unprecedented destruction. Additionally, he organised stipends for them. At this time, numerous literary societies were emerging in Delhi. The Sultan's eldest son provided financial support to these societies. A total of twenty thousand couplets were gathered by him. His second son founded a distinct society comprised of performers, dancers, musicians, and storytellers. A regal library served as a venue for organising recurring gatherings with poets. Amir Khusrau compared Delhi to Bukhara, the preeminent university city of Central Asia, during this time.

Thus, it can be deduced that Delhi was a renowned epicentre of scholarship during the reign of the slave dynasty, thanks to the direct support of the sultans. Society acknowledged that penmanship was not only utilised by the Sultans and nobles, but was also put to use. Subsequently, numerous works were duplicated and meticulously conserved within the libraries. The induction of a new dynasty elevated the status of Delhi as a hub for cultural and literary endeavours. The progenitor of the Khilji dynasty, Jalaluddin Khilji, possessed an exceptional literary bias. Numerous literary figures, including Amir Khusrau, Tajuddin Iraqi, Khajah Hasan, Myyid Diwanah, Amir Arslan Quli, Ikhtikharuddin Razi, and Baqi Khatir, were court guests of his. He was an author and poet himself. Sultan Jalaluddin Khilji perhaps founded an imperial library in Delhi, according to available information. Amir Khusrau, a renowned poet and intellectual, was designated as the librarian by him. Sultan placed the ideal individual in the ideal position. Sultan placed significant significance on the librarian position, and he honoured Amir Khusrau with this honour. In addition to his role as the librarian of the imperial library, Sultan Jalaluddin bestowed upon him the responsibility of safeguarding the sacred Quran. The Sultan held the librarian, Amir Khusrau, in such high regard that he elevated him to the peerage and granted him permission to don white vestments, a practice typically reserved for the court's royals and nobles. Upon being appointed Arizi-Mamalik, the sultan was granted a pension and rewarded with twelve hundred tankas, even when he was a prince. Thus, it can be deduced that the librarian held a highly esteemed position during the sultanate period, which was perceived as a valuable and accountable role.

Modern Hindu educational institutions have significantly contributed to the advancement of knowledge and the dissemination of education. The libraries housed an extensive assortment of manuscripts encompassing a wide range of disciplines, including medicine, science, history, and philosophy, among others. Such centres include Patan, Nadia, and Mithila. Mithila was widely recognised as a centre of Brahmanical culture education. It evolved into a renowned Nyaya institution that thrived between the twelfth and fifteenth

centuries. Numerous eminent intellectuals resided in that region, including Jagaddhara, Gangesha, Vardhamana, Vachaspati Misra, and Sankara Mishra. Jagadhara authored commentary on a variety of sacred scriptures, including the Malati Madhavi, Devi Mahatya, Gita Govinda, and Meghduta. The poet Vidyapati, an additional renowned Mithila scholar, authored a significant number of Maithali melodies and Padavalis. His Padavali contributed to the dissemination of Vaishnavism in Bengal and served as a generational inspiration for Vaishnava writers in Bengal. Gangesa Upadhyay established the Navya Nyaya school of logic and authored "Tattva-Chintamani." Padartha Chandra, an original work by Misarumisra, was devoted to Vaisesika. A renowned academic institution in eastern India was Nadia, located in Bengal. It thrived as a highly regarded intellectual hub between 1063 and 1106 A.D., when it was designated as the capital by King Lakhmana Sena. Despite the conquest of Lakshmana Sena's dynasty by Bakhtiyar Khilji and his subsequent exile to Vikrampur in 1197, Nadia maintained its status as a preeminent hub of Hindu scholarship until the mid-18th century. The destruction of Nalanda and Vikramshila, a renowned Buddhist educational facility, by Bakhtiyar Khilji had no impact on the religious and cultural practices of the Bengali people or educational institutions under the Musalman rulers. Nadia was thus granted the opportunity to continue its mission. Abdihodha Yogi, Basudev Sarbabhauma, Pakshadhar Misra, Raghunath Siromoni, Raghunandan Smarta Bhattacharya, and numerous others were erudite scholars in Nadia. Krishnanda Agambagis gained notoriety for his Tantra philosophy, while in the sixteenth century, Gauranga, also known as Chaitanya, presided over the Vaishnava sect.

The establishment of the Muslim dominion in North India occurred at the onset of the thirteenth century. As a result, the Hindu kingdom had ceased to exist in this region. Conversely, South India was governed by numerous Hindu monarchs. As a result, the authorities supported a multitude of educational institutions that provided instruction pertinent to their culture and way of life. Vijaynagar's name must be mentioned in relation to this. King Krishnadevaraya of Vijayanagar was a notable patron of education and culture. He was regarded as an Andhra-Bhoja. He considered himself an authority on the Telegu language. His retinue comprised eight poets of renown who were known as Ashtadiggajas. According to the writings of Allasani Peddana and Tenali Ramkrishna, two palace poets, King Krishnadevaraya and other monarchs maintained an extensive library. Tenali Ramkrishna identified four adversaries of library literature. They include theft, fire, decay (caused by insects and the elements), and misplacement of books.

References:

- Datta, B.K. (1960) Libraries & Librarianship in ancient and medieval India. Delhi: Atmaram & Sons
- Keay, F.E.(Rep. 1954). Indian education in ancient and later times: an inquiry into its origin, development and ideals (2nd ed.). Calcutta: Oxford University Press.
- Law, N.N. (1916). Promotion of learning in India: during Muhammadan rule. Calcutta: Longman and Green.
- Nizami, K. A. (1956). Studies in medieval Indian history and culture. New Delhi: Cosmopolitan Publisher.
- Srivastava, A.L (1964.). Medieval Indian culture. Agra: Shivalal Agarwal.
- Wali, M. A. (1969, October). Library development in Kashmir. Herald of Library Science.

Impact of Imperialism on Modern Indian History Writing: A Research Review

Dr. Surender Kumar

Associate Professor,
Vaish College,
Bhiwani, Haryana, India.

Abstract: Following their military triumphs over the indigenous population, the Aryans proceeded to invade India, renaming them the Dasas or Dasyus and asserting that the Dravids were the initial inhabitants, with Europeans being their descendants. Additionally, non-Aryans were categorised as Dasas or Dasyus. It was their conviction that the Indian civilization did not predate all others and that early Homo sapiens subsisted in forests and ingested flesh. The composition period of the Vedas was estimated to be between 1500BC and 1200 BC. An synthesis of a nation's social, religious, political, and literary conditions ought to comprise its history. Contemporary understandings of Indian history have been manipulated to undermine Indian sources by means of selective foreign evidence, arbitrary interpretation, and temporal adjustment of inferences. This has been accomplished through the falsification of ancient evidence and arbitrary interpretation. The Indian youth are filled with national pride due to this deficiency in quality. In order to establish dominion over the region, the British proceeded to reacquaint themselves with the history, traditions, and culture of India. The purpose of establishing organisations such as the Archaeological Survey of India and the Sanskrit Asiatic Society of Bengal was to gain knowledge about Indian languages and literature. Initiating a reassessment of their historical identity as a British reactionary faction, Indian academicians were granted the privilege of researching the nation's past. An abundance of recent revelations regarding India instilled a sense of national pride and magnificence in the Indian people, resulting in a resurgence of self-assurance and patriotism.

Keywords: Modern India, History of India, Imperialism, Indian History Writings.

Content:

The Aryans invaded India from beyond subsequent to their military victories over the indigenous population. The Aryans refer to them as Dasas or Dasyus, and they assert that the Dravids were the first inhabitants of India and that Europeans are their progeny. Non-Aryans were designated Dasas or Dasyus by the Aryans, who also classified them as Shudras. Further, according to one of them, the Indian civilization was not the eldest in the world, and early Homo sapiens consumed flesh and lived in forests. They estimated that the Vedas were composed between 1500 and 1200 BCE. Indian time calculations were scientifically erroneous and exaggerated. Historical facts being manipulated in the name of science.

The Vikram era was established by King Vikramaditya of Ujjain, a figure who was categorically denied by Europeans. It was stated that the River Sarswati existed. Only during the British colonial period did the entirety of Bharat come under the control of a central power; pre-Bharat, India had never existed as a distinct nation. The Europeans yearned for their once-civilized ancestry. European nations originated more than two millennia before they attained the status of nations. This was prior to their engagement with untamed communities. Once a mere tribe, their primary objective upon conquering the land from

other planets was to establish their claim to a more advanced lineage. For this reason, they appropriated Aryan terms from ancient Hindu literature; consequently, the notion of writing history was conceived; to achieve their objective, they began to distort ancient Indian history. Their persecution commenced with the derogatory designation of the Aryans (civilised, white-skinned people). However, Hindus hold that the excellent qualities and civilised disposition of Indians are unrelated to their facial features, skin pigment, or body structure.

Commencing in the 4th century BC, numerous foreign invaders and travellers have penned annals of India. Even today, these memoirs remain in circulation; however, none of them contain any references to the Aryan invasion or the subsequent establishment of the Aryan culture in India. This theory was recently formulated and lacks any foundation. Such criticism is indisputable evidence that the British may have maintained the identical strategy until the moment of independence. However, even after seven decades of Indian independence, objectionable questions remain unanswered. The solutions can be found in emerging research trends, such as India's purported mastery of the science or art of preserving its distinctive national attributes. The Indian historical tradition was notably distinct in that it was composed with a specific objective in mind. The objective has been achieved. Numerous contemporary scholars agree that the recently published recensions of the Puranas and epics were finalised at the start of the Christian era; however, this date has been traced back to the early Kali era according to tradition. Despite the passage of approximately two millennia since their inception and numerous modifications, contemporary scholars agree that these recensions continue to be highly practical and efficacious in illuminating the thoughts of Hindus. Gandhi desired Ramrajya following independence. At that juncture, numerous ideologies had emerged, and the countries that adopted them were similarly prosperous. Although this was the case, Mahatama Gandhi favoured Rama during the Ramayana period. What a profound, enduring impact and influence do historical texts from India hold?

They held the conviction that the contents of this book represented the nation's history. They believed it was of the utmost importance to society and therefore dedicated their careers to transferring it to the people. Not only did they compile the history, but the calibre of the compilation also established a link between their usefulness and a number of life-dedicating recipients. The aforementioned accounts demonstrate the significant regard in which they placed the discipline of historiography. We must now comprehend the change or impact in writing. Present-day circumstances in the world have drastically altered the situation. In the past two to three centuries, the world has undergone erratic and sudden transformations that have not been seen before, not even in the millennium cycle. The development of innovative technologies has facilitated communication. Access to any information is as simple as placing a fingertip.

In addition to facilitating the acquisition of desired knowledge, scientific progress has engendered confidence. Under such circumstances, the authenticity and currency of Indian history texts assume critical importance. The confined annals of Indian history are presently accessible not only to the nation of India, but to every history buff. The world is interested in the authentic and genuine history of India, which is authored solely from the perspective of Indian historians. A considerable duration has elapsed since the compilation of historical literature in accordance with Bhartiya historiography. A renewed effort has been made by numerous historians at this time. Given the altered circumstances, consideration should also be given to this recent development. In conjunction with the inherent merits of Indian historiography, certain supplementary particulars, such as a chronology spanning several millennia, could be appended to enhance fidelity, comprehension, and to avert the detrimental effects of history. It is now more important than ever to support those who are laboriously advancing the cause of history and to ensure that our own history is written. It is necessary that we devise a quest for our ancient past. The study of Indian history requires revitalization and reinvigoration. Divergent viewpoints may exist; nevertheless, the overarching objective should be to rewrite the annals of history and impart this revised account to future generations. This is the sole approach to eliminating this type of imperialism. The time has come to censure and condemn the voluminous historical works authored by imperialist historians.

The historical account that contradicts Indian traditions and factual data is in no way representative of India. As stated in the preceding discourse, we consider the history of a nation to be a synthesis of its social, religious, political, and literary circumstances. The chronicles of a nation ought to be composed utilising the documents that are readily accessible in its immediate vicinity. When history is written, evidence is present in that specific location; only citizens of that nation can take pride in that. Modern interpretations of the History of India have been crafted to discredit Indian sources through the falsification of ancient evidence, arbitrary interpretation, temporal adjustment of inferences, and the adoption of selective foreign evidence. Therefore, they are devoid of every quality that would inspire national pride in our people.

Presently, our nation is liberated; we are endowed with absolute liberty of expression and writing by our formidable constitution. Currently, what is necessary is the emergence of a sense of unity and affection for the nation. India is a multifaceted nation. Since ancient times, our nation has been renowned globally for its ability to embrace diversity while maintaining its ancient traditions. We must abandon our self-centered agenda in order to surmount the challenges that our nation is presently confronting and enduring. We are currently residing in an era characterised by profound despair and disarray. At this critical juncture, every individual in India ought to internalise the sentiment of being an indigenous resident of this nation and take pride in the fact that their predecessors did not engage in nomadic existence, wanderlust, invasion, or plunder. It is imperative that the Indian people develop a profound sense of pride for their civilization. It is imperative that they possess a comprehensive understanding of the abundant culture and traditions that characterise their nation. They must be informed that India has bestowed upon the globe an abundance of treasures. It has furnished the universe with ultimate knowledge. The game of chess, yoga, and meditation, which originated in India, were all innovations that propelled our predecessors to the pinnacle of their modern civilization. They imparted to the world the importance of modelling one's character after that of their predecessors.

As previously mentioned, a significant consequence of imperialism was that the British rediscovered the history, customs, and culture of India in order to exert effective control over the region. In order to comprehend Indian literature and its languages, a multitude of institutions were established. The establishment of the Sanskrit Asiatic Society of Bengal, an organisation that educated British scholars in Sanskrit and other related languages, promoted the study of Sanskrit. The Sanskrit instructor of William Jones was an Indian Brahman. In addition to translating Manusmriti and Bhagwatgita, Jones also undertook the translation of the Vedas. The establishment of the Archaeological Survey of India was a collaborative endeavour between John Marshal and Alexander Cunningham to unearth the history of India. Indian scholars initiated a reevaluation of their historical identity as a British reactionary faction. They were given the opportunity to study our nation's history. Numerous new discoveries regarding India inspired Indians with national pride and grandeur. Their confidence was reclaimed, and subsequently, their eloquent writings concerning the illustrious history of India inspired a sense of nationalism among the Indian populace.

The national perspective on the history of India has evolved. It fostered the development of nationalistic sentiments and brought together the people of India, regardless of caste, class, or creed, despite the numerous linguistic and class distinctions that existed. The field of nationalistic history primarily examines the historical events of ancient and mediaeval India. The reevaluation of historians' perspectives regarding the fundamental aspects of Indian history resulted in significant disruptions to the historical record. Their civilization was held in high regard and heaped praise and grandeur in western historical literature. The act of glorification compelled the Indian people to look to the past for an object worthy of glorifying India. Moreover, we can deduce that British visitors who were well-versed in Indian history fostered unity and cohesion among the Indian people. Western influence on the Nationalist Intelligentsia inevitably and significantly resulted in the development of a burgeoning interest in international current events. Over time, they came to understand that colonialism and imperialism possessed a global nature and ultimately had far-reaching consequences. Nationalism and anti-imperialism emerged as ideologies among the Indian

populace. Presently, the effects of British imperialism in India are readily apparent due to the proliferation of nationalistic historical writings.

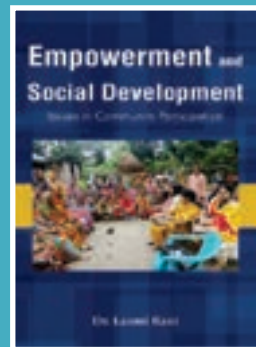
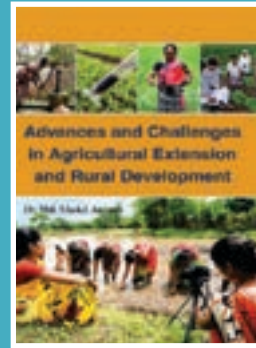
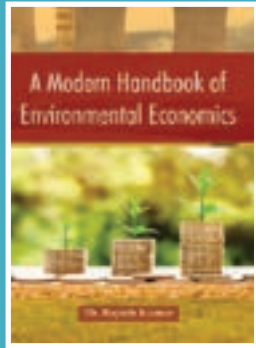
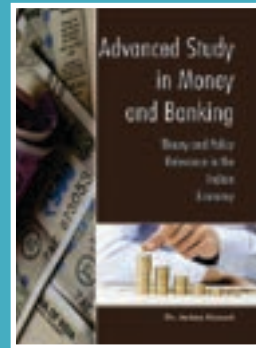
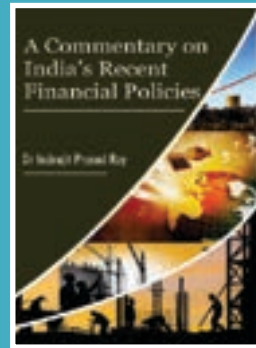
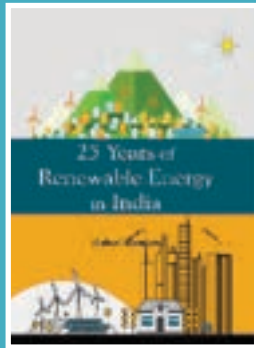
Either the Indian government or Indian historians ought to undertake the task of composing an authentic history of the Indian people. The Indian government must proactively strategize the revision and preservation of India's history for future generations. The majority of individuals are irritated and troubled by the current state of affairs and are solely concerned with the nation's role. My understanding and analysis indicate that only we have the ability to assist. Whether we reside in India or elsewhere, we must never forget that distorted and imperialistic history influences the development of a nation and its people; it shapes our nationalistic sentiments and identities, determines our interactions with one another and other countries, and, most significantly, influences how other nations perceive us.

References

1. B.K. Majumdar, 'Vincet Arthur Smith' in S.P. Sen (ed.), *Historians and Historiography in Modern India*.
2. Basham, *Modern Historians of Modern India* in Philips, ed., *Historians of India, Pakistan and Cylon*.
3. Majumdar, *Historiography of Modern India*.
4. S.P. Sen, *Historians and Historiography of India*, p.viii
5. Swami Vivekanand, *Karm Yogi*.
6. William Hunter, *Indian Musalman*.

ISSN 0975-119X

OUR PUBLICATIONS



 Lobus Press

448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 13 अंक 1 जनवरी-फरवरी 2021

दृष्टिकोण

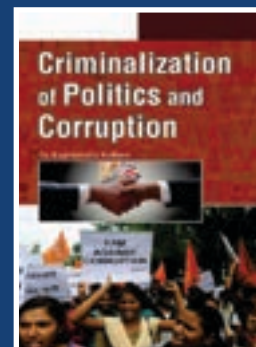
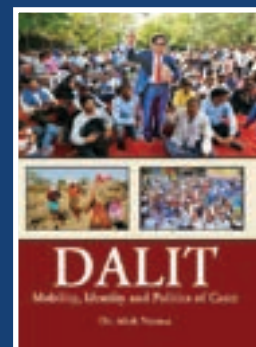
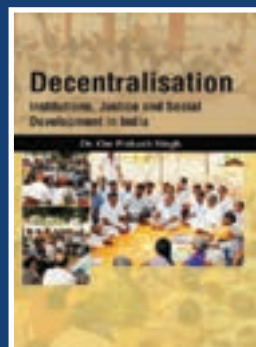
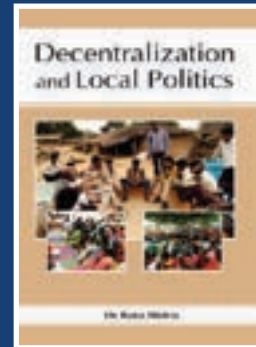
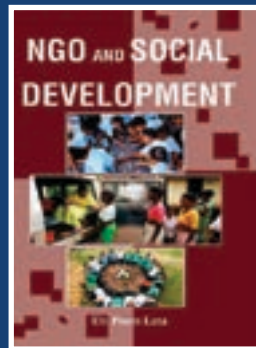
कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Refereed Hindi Language Journal



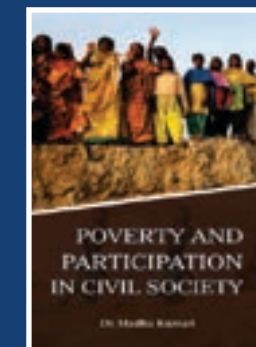
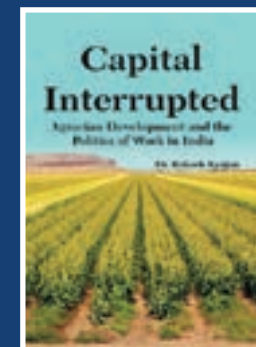
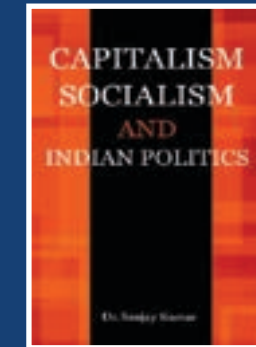
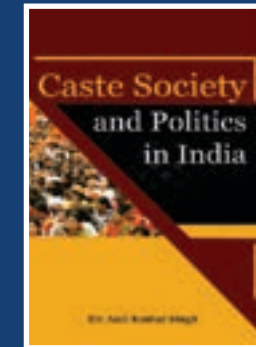
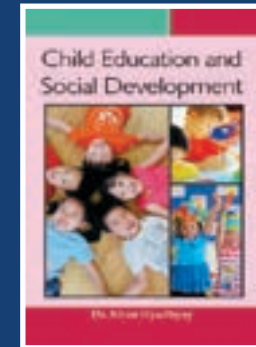
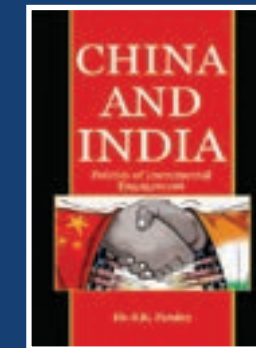
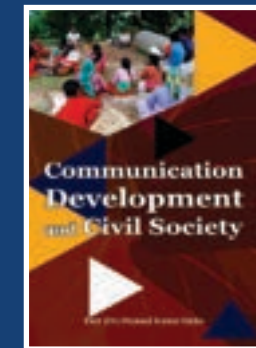
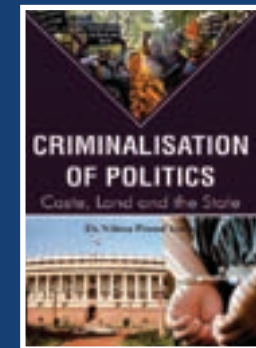
IMPACT FACTOR : 5.051

OUR PUBLICATIONS



448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

OUR PUBLICATIONS



448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

प्रधान संपादक

डॉ. अश्विनी महाजन

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक

प्रो. प्रसून दत्त सिंह

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

डॉ. फूल चन्द

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दृष्टिकोण प्रकाशन

वर्ष : 13 अंक : 1 □ जनवरी-फरवरी, 2021

दृष्टिकोण

संपादक मंडल

डॉ. अरुण अग्रवाल

ट्रेन्ट विश्वविद्यालय, पीटरबरो, ओंटारियो

डॉ. दया शंकर तिवारी

दिल्ली विश्वविद्यालय

डॉ. आनंद प्रकाश तिवारी

काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी

डॉ. प्रकाश सिन्हा

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

डॉ. दीपक त्यागी

दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर

डॉ. अरुण कुमार

रांची विश्वविद्यालय, रांची

डॉ. महेश कुमार सिंह

सिद्धू कान्हू विश्वविद्यालय, दुमका

डॉ. हरिश्चन्द्र अग्रहरि

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा

डॉ. पूनम सिंह

बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

डॉ. एस. के. सिंह

पटना विश्वविद्यालय, पटना

डॉ. अनिल कुमार सिंह

जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा

डॉ. मिथिलेश्वर

वीर कुंअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

डॉ. अमर कान्त सिंह

तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

डॉ. ऋतेश भारद्वाज

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. स्वदेश सिंह

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. विजय प्रताप सिंह

छत्रपति साहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

संपादकीय सम्पर्क:

448, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-I, दिल्ली-110091

फोन : 011-22753916, 40564514, 35522994 Mobile: 9710050610, 9810050610

e-mail : editorialindia@yahoo.com; editorialindia@gmail.com; delhijournals@gmail.com

Website : www.ugc-care-drishtikon.com

©Editorial India

Editorial India is a content development unit of Permanence Education Services (P) Ltd.

ISSN 0975-119X

नोट: पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार अपने हैं। उसके लिए पत्रिका/संपादक/संपादक मंडल को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। पत्रिका से सम्बंधित किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

सम्पादकीय

पूरे देश की निगाहें एक फरवरी 2021 को संसद में पेश होने वाले बजट पर लगी हैं। यूं तो बजट के बारे में हर बार ही उत्सुकता होती है, कि वित्तमंत्री के पिटारे में विभिन्न वर्गों के लिए क्या योजनाएं हैं? क्या सरकार आयकर में कोई छूट देगी? कारपोरेट टैक्स के बारे में सरकार का क्या नजरिया रहेगा? देशी और विदेशी निवेशकों पर क्या कर प्रावधान होंगे? बजट का शेयर बाजारों पर क्या असर पड़ेगा? शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग, बैंकिंग आदि के बारे में क्या नजरिया होगा? कौन सी नई जनकल्याणकारी योजनाएं होंगी?

लेकिन हमें समझना होगा कि इस बार का बजट एक महामारी के बाद का बजट है। पिछली एक सदी के बाद पहली बार ऐसी महामारी आई, जिसने पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले लिया। हालांकि भारत में इस बाबत हालात (केरल और महाराष्ट्र को छोड़कर) सुधरे हुए दिखाई देते हैं, लेकिन इस महामारी के कारण हुए नुकसानों की भरपाई बहुत जल्द होने वाली नहीं है। पिछले वर्ष हमने देखा कि कैसे महामारी के कारण आवाजाही बाधित हुई, जिसके कारण न केवल मांग बाधित हुई, काम-धंधों पर भी जैसे ब्रेक लग गया। कुछ व्यवसायों में घर से काम (वर्क फ्रॉम होम) थोड़ी-बहुत मात्रा में चला, लेकिन अधिकांश मामलों में आर्थिक गतिविधियां पूरे या अधूरे तौर पर बाधित रही। मजदूरों का बड़े शहरों से पलायन, कामगारों का काम से निष्कासन या उनके वेतन में भारी कटौती, इस महामारी के कालखंड में सामान्य बात बन गई। ऐसे में जीडीपी के प्रभावित होने के साथ-साथ, सरकार का राजस्व भी प्रभावित हुआ।

महामारी से पूर्व भी अर्थव्यवस्था कई कारणों से मंदी की मार झेल रही थी। पूर्व में बैंकों द्वारा दिए गए ऋणों की वापसी नहीं होने के कारण, बैंकों के बढ़ते एनपीए के चलते बैंकों का मनोबल ही नहीं गिरा था, लोगों का बैंकों पर विश्वास भी घटने लगा था। उसके साथ ही साथ आईएलएफएस सरीखे गैरबैंकीय वित्तीय संस्थानों में घोटालों के कारण वित्तीय क्षेत्र के संकट और अधिक बढ़ गए थे। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बैंकों पर नकेल कसने के प्रयासों में बैंकों द्वारा कार्य निष्पादन भी प्रभावित हो रहा था और व्यवसाय भी। बैंकों द्वारा ऋण भी कम मात्रा में दिए जा रहे थे। कुल मिलाकर नए निवेश भी घटे और चालू आर्थिक गतिविधियां भी। कठिन परिस्थितियों में जब पिछले साल वित्तमंत्री ने बजट पेश किया था, वर्ष 2019-20 में राजस्व उम्मीद से कम दिखाई दिया था लेकिन यह अपेक्षा जरूर थी कि इसकी भरपाई 2020-21 में हो सकेगी।

लेकिन उसके पश्चात वर्ष 2020-21 में भी महामारी के प्रकोप ने राजस्व में सुधार की सभी अपेक्षाओं पर पानी फेर दिया है। वित्तीय वर्ष 2020-21 के पहले 9 महीनों में जीएसटी से कुल राजस्व 7,79,884 करोड़ रूपए ही प्राप्त हुआ है, जबकि इस कालखंड में अपेक्षा न्यूनतम 10 लाख करोड़ रूपए की थी। जीएसटी में इस कमी का असर हालांकि केन्द्र और राज्य, दोनों के राजस्व पर पड़ा है, लेकिन राज्यों के हिस्से की भरपाई (14 प्रतिशत वृद्धि के साथ) देर-सबेर केन्द्र सरकार को नियमानुसार करनी ही पड़ेगी। इस कारण केन्द्र को इसका नुकसान राज्यों से कहीं ज्यादा होगा। दूसरे इस वर्ष वैयक्तिक आयकर और निगम (कारपोरेट) कर भी उम्मीद से कम रहने वाला है। सरकार के इस वर्ष का विनिवेश का लक्ष्य भी पूरा होने की दूर-दूर तक कोई संभावना दिखाई नहीं देती।

एक तरफ जहां महामारी के चलते सरकारी राजस्व में भारी नुकसान हो रहा था, रोजगार खोने के कारण भारी संकट से गुजर रहे मजदूरों और अन्य प्रभावित वर्गों के जीवनयापन की कठिनाईयों के कारण उन्हें खाद्य सामग्री उपलब्ध कराने हेतु सरकार का दायित्व तो था ही, गांवों में लौट रहे मजदूरों को रोजगार दिलाने का भी दबाव था। 80 करोड़ लोगों को लगभग 9 महीने तक मुफ्त भोजन उपलब्ध कराया गया। महामारी से निपटने हेतु सरकार का स्वास्थ्य पर खर्च भी बढ़ चुका था। महामारी से पार पाने हेतु कोरोना योद्धाओं, शिक्षकों एवं अन्य वर्गों को वैक्सीन उपलब्ध कराने की भी आवश्यकता है।

महामारी के कारण बाधित गतिविधियों को दुबारा शुरू करने की भी जरूरत थी। यह सरकार की मदद के बिना नहीं हो सकता था। पूरी तरह से छिन्न-भिन्न हुई आर्थिक गतिविधियों को पुनः पटरी पर लाना, महामारी की मार झेल रही आम जनता को राहत देना, रोजगार खोने वालों के लिए राहत और रोजगार की व्यवस्था करना, पहले से ही मंदी की मार झेल रही अर्थव्यवस्था को सही रास्ते पर लाना, यह सरकार का दायित्व भी है और प्राथमिकता भी।

दुनिया भर में सरकारों ने इस महामारी से निपटने के लिए राहत पैकेजों की व्यवस्था की है। उसी क्रम में भारत सरकार ने भी अपने सभी राहत उपायों की घोषणा की है। ये सभी राहत उपाय कुल मिलाकर देश की जीडीपी के लगभग 10 प्रतिशत के बराबर बताए जा रहे हैं। इन राहत अथवा प्रोत्साहन पैकेजों में सरकार ने लघु, सूक्ष्म और मध्यम उद्यमों को प्रोत्साहन, प्रवासी मजदूरों एवं किसानों के लिए राहत पैकेज, कृषि विकास, स्वास्थ्य उपायों, व्यवसायों को अतिरिक्त ऋणों की व्यवस्था, ईज ऑफ डूइंग बिजनेस समेत कई उपायों की घोषणा की गई है। सरकार ने हाल ही में रियल ईस्टेट क्षेत्र को राहत एवं प्रोत्साहन देने, इलैक्ट्रॉनिक्स, टेलीकॉम, मोबाईल फोन और एक्टिव फार्मास्यूटिकल उत्पादों के उत्पादन को प्रोत्साहन देने हेतु 'प्रोडक्शन लिंकड' प्रोत्साहनों की भी घोषणा की है।

पिछले साल का बजट प्रस्तुत करते हुए, वित्तमंत्री ने वर्ष 2020-21 के लिए राजकोषीय घाटे का लक्ष्य जीडीपी को 3.5 प्रतिशत रखा था। लेकिन बदले हालातों में घटे सरकारी राजस्व और बजट अनुमानों से कहीं ज्यादा खर्च के दबाव के चलते इस वर्ष का राजकोषीय घाटा अनुमान से कहीं ज्यादा हो सकता है। माना जा रहा है कि इस महामारी का बड़ा असर राजकोषीय घाटे पर पड़ सकता है। माना जा रहा है कि वर्ष 2020-21 के लिए यह राजकोषीय घाटा जीडीपी के 8 प्रतिशत तक पहुंच सकता है।

महामारी से निपटने हेतु राहत के प्रयासों की अभी शुरूआत भर हुई है। आगामी वर्ष में इन प्रयासों को और आगे बढ़ाने की जरूरत होगी। सरकार द्वारा आत्मनिर्भरता के संकल्प और अर्थव्यवस्था में सुधार हेतु तमाम प्रयासों के चलते अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने भी इस वर्ष भारत की जीडीपी में 11.5 प्रतिशत संवृद्धि का अनुमान दिया है। इसके चलते राजस्व में वृद्धि तो होगी, लेकिन सरकार को जीडीपी ग्रोथ की इस गति को बनाए रखने के लिए और अधिक प्रयास करने की जरूरत होगी। ऐसे में केन्द्र सरकार का राजकोषीय घाटा अधिक रहेगा। लेकिन इसके साथ ही साथ केन्द्र सरकार ने कोरोना से उपजी समस्याओं से निपटने हेतु राज्य सरकारों को भी अतिरिक्त ऋण लेने के लिए अनुमति दी है। विशेषज्ञों का मानना है कि इस वर्ष राज्यों के बजट में भी राजकोषीय घाटा जीडीपी के 4 से 5 प्रतिशत के बीच रह सकता है। ऐसे में देश में कुल राजकोषीय घाटा 10 से 11 प्रतिशत तक पहुंच सकता है।

लेकिन समय की मांग है कि अर्थव्यवस्था को गति देने हेतु सभी प्रकार के प्रयास किए जाएं। कुछ समय तक एफआरबीएम एक्ट को स्थगित रखते हुए देश की अर्थव्यवस्था को गति देना जरूरी होगा। वित्तमंत्री इस बात को समझती हैं और आशा की जा सकती है कि जहां महामारी से प्रभावित वर्गों को सरकारी बजट का समर्थन मिलेगा, अर्थव्यवस्था को गति देने हेतु प्रयासों में कोई कंजूसी नहीं की जाएगी। वर्षों से चीन से सस्ते आयातों की मार झेल रही अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भरता और 'वोकल फॉर लोकल' का संकल्प एक नई दिशा और ऊर्जा देगा और यह बजट उस दिशा में मील का पत्थर साबित होगा।

संपादक

इस अंक में

स्वामी विवेकानंद का व्यंजन प्रेम—डॉ० अमरेन्द्र कुमार	1
महात्मा गाँधी के भारत में शुरूआती दौर के आन्दोलन (1917-1918)—मोहन लाल	4
अमरकांत का उपन्यास साहित्य : अभिव्यक्ति कौशल संबंधी परम्परागत एवं नवीन प्रयोगों की अवधारणा —डॉ० यदुवीर सिंह खिरवार; श्रीमती रेणु बाई	8
नई शिक्षा नीति में संस्कृत भाषा की उपादेयता—डॉ० उषा नागर	13
पुलिस प्रशासन-संगठन, समस्या और सुझाव—डॉ० शेषाराम मीणा	18
वैदिक वाङ्मय में अर्थचिन्तन—डॉ० आशा सिंह रावत	23
नाटककार भवभूति की कृतियों में पर्यावरण चिन्तन—डॉ० बाबूलाल मीना	30
गाँधी के सर्वोदय दर्शन में विकेन्द्रीकरण की अवधारणा—आशीष कुमार सिंह	36
राजनीतिक सामाजीकरण एवं विकास : एक अध्ययन—कृष्णा बैठा	39
सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में पारिवारिक वातावरण का छात्रों की अध्ययन आदतों के संबंध का अध्ययन—मनु सिंह; डॉ० मंजू शर्मा	44
ग्रामीण महिलाओं की राजनैतिक सहभागिता की समीक्षा—किरण कुमारी; डॉ० संजय बुंदेला	48
महिलाओं द्वारा अपने प्रति होने वाले अपराधों के प्रतिकार की स्थिति—श्रीमती श्वेता चतुर्वेदी; डॉ० श्रीमती रीना तिवारी	51
बौद्धिक सम्पदा का अधिकार और इसके संरक्षण के प्रयास—जितेन्द्र भारती	55
वेदों में ज्योतिर्विज्ञान—डॉ० भगवानदास जोशी	58
नई शिक्षा नीति में गृह विज्ञान शिक्षा का भविष्य—डॉ० आभा रानी	63
शैक्षिक नीतिशास्त्र का स्वरूप और विचार—अजय कुमार पटेल	66
अमरकंटक अंचल में पर्यटन की संभावना एवं विकास—निर्मला तिवारी; डॉ० रीता पाण्डेय; प्रो० आभा रूपेंद्र पाल	69
बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास—शशि शेखर द्विवेदी; मनीष कांत	78
मुगलकालीन विदेशी यात्रियों की दृष्टि में भारतीय महिलाओं की स्थिति—आशु त्यागी	84
स्वास्थ्य सुविधाओं के क्रियान्वयन में भौगोलिक परिदृश्य की भूमिका—आशीष कुमार शुक्ल	88
मुक्ति प्राप्ति का भक्ति-मार्ग—डॉ० सुनील कुमार शुक्ल	90
विश्वशान्ति: स्वधर्म एक माध्यम—डॉ० क्षमा तिवारी	93
उ०प्र० में बौद्ध स्थलों पर पर्यटन प्रतिरूप का एक प्रतीक अध्ययन—डॉ० अनूप कुमार सिंह	97
संयुक्त राष्ट्रसंघ और सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था का समीक्षात्मक अध्ययन—डॉ० लवलेश कुमार	101
हिन्दी उपन्यासों में चित्रित जनजातीय जीवन में बंधुआ मजदूरी एवं बेगारी की समस्या—डॉ० उमेश कुमार पाण्डेय	103
प्राथमिक शिक्षक एवं कक्षा-कक्ष : एक चुनौती—डॉ० राकेश कुमार डेविड; डॉ० संजीत कुमार साहू; डॉ० शोभना झा	106
कोरोना वैश्विक महामारी के काल में भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव—अर्चना कुमारी	109
‘समकालीन सामाजिक परिदृश्य में प्रत्ययवाद का महत्व’—डॉ० ब्रिजेन्द्र कुमार त्रिपाठी	112
आधुनिक समाज में माता-पिता की महत्वाकांक्षा और बच्चों की मानसिक स्थिति: एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन—डॉ० रूमा कुमारी सिन्हा	114
लाल शकरकंद : अनाज का विकल्प—डॉ० शिखा चौधरी	116
कृष्णा सोबती के उपन्यासों में स्त्री अस्मिता के प्रश्न—डॉ० ज्योति गौतम	119
बौद्ध वाङ्मय और बुद्ध की प्रासंगिकता—अर्चना	122
लोक साहित्य में विरहाभिव्यक्ति—श्रीमती अर्चना वर्मा; श्रीमती लक्ष्मी देवी	125
इतिहास के आइने में स्त्री विमर्श—डॉ० शैलेन्द्र सिंह	129
स्वयंभू रचित पउमचरिउ में स्त्री चेतना—कुमकुम पाण्डेय	132
लोकतंत्र का चौथा स्तंभ और दलितों की भागीदारी—लाल चन्द पाल	135
शोषण मुक्ति हेतु संघर्षरत : स्त्री जीवन (दलित आत्मकथाओं के संदर्भ में)—आशीष खरे; डॉ० ज्योति गौतम	139

सोनांचल की जनजातीय संस्कृति : समस्याएँ एवं समाधान-अवन्तिका	143
वैदिक भूगोल के आलोक में संसाधन संरक्षण की संकल्पना की विवेचना-डॉ० रत्नेश शुक्ल; रोहणी तिवारी	147
वैज्ञानिक सामाजिक व्यवस्था में सांस्कृतिक संघर्ष-डॉ० शाद अहमद	152
हिन्दी आलोचना में डॉ. देवीशंकर अवस्थी का कथा क्षेत्र में योगदान-पवन कुमार वर्मा	155
प्रेमचन्द की पत्रकारिता और जीवन दृष्टि-डॉ० नलिनी सिंह	158
उदयपुर जिले की देवास परियोजना का जनजातिय जनसंख्या के सन्दर्भ में पारिस्थितिकीय अध्ययन-रणवीर ठौलिया	161
पश्चिमी राजस्थान के आदिमवर्गों के आर्थिक विकास में इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना का योगदान (विशेष संदर्भ : भील) -डॉ० अश्वनी आर्य; गजेन्द्र शेखावत	166
भारत में बाल मानव अधिकारों का संरक्षण: एक अनुशीलन-सहदेव सिंह चौधरी	171
70 वर्षों में मानव अधिकार की उपलब्धियाँ एवं चुनौतियाँ-डॉ० ऋतेश भारद्वाज	176
शिक्षा और समाज का अन्तःसम्बन्ध-डॉ० निशा वालिया	181
बिहार में सामाजिक आन्दोलन के उभरते लहर (1960-2015) : एक अध्ययन-विजया वैजयंती	184
स्वास्थ्य सुविधाओं के क्रियान्वयन में भौगोलिक परिदृश्य की भूमिका-आशीष कुमार शुक्ल	188
कोविड-19 के दौर में भारत-नेपाल संबंध-आशुतोष कुमार	190
भारत एवं हिन्द महासागर की भू-राजनीति-सत्येन्द्र सिंह	194
भारतीय संस्कृति और तुलसीदास-डॉ० संजय कुमार; डॉ० सरिता	198
भवानी प्रसाद मिश्र की प्रतिनिधि कविताओं में गाँधी-दर्शन-डॉ० (श्रीमती) सविता मिश्रा; अंतिमा गुप्ता	201
वर्तमान परिदृश्य में हरियाणा के परम्परागत माध्यमों के प्रति सामाजिक प्रतिक्रिया-डॉ० दिलावर सिंह	205
कोरोना संकट में सेक्स वर्कर्स के मानवाधिकार-डॉ० पंकी पुनिया	209
रायपुर संभाग में कृषि उपज मंडियों की कार्य प्रणाली का अवलोकन-डॉ० गिरजा शंकर गुप्ता	214
श्रीमद्भागवत के अनुसार ऋषियों की कथाओं का अध्ययन-सीमा चिनप्पा; डॉ० वेदप्रकाश मिश्र	217
देश के युवाओं के लिए आई.टी.आई. एवं पॉलिटेक्निक पाठ्यक्रमों का महत्व-शिवानी सिंह	222
नारी शोषण के विविध आयाम: संदर्भ गुनाह बेगुनाह-काजल	225
मध्य प्रदेश की गोड़ जनजाति चित्रकला में सूर्योपासना-डॉ० शैलेन्द्र कुमार	227
कुषाण काल में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी-डॉ० प्रदीप कुमार	229
भारतीय लोकतंत्र के लिए खतरा : पेड न्यूज-अनिल कुमार यादव	233
21वीं सदी के नवगीतकारों में सामाजिक चेतना : वीरेन्द्र आस्तिक, रामनारायण रमण एवं रमाकांत के संदर्भ में-डॉ० रामरती; ममता	237
वर्तमान में संयुक्त राष्ट्रसंघ की प्रासंगिकता-मिथिलेश	242
भारत में नगरीय जीवन एवं सांस्कृतिक चुनौतियाँ : एक भौगोलिक अध्ययन-गोविन्द सिंह	244
इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में महानगरीय जीवन-डॉ० निशा जम्वाल	250
पंचायती राज में महिलाओं की सक्रिय सहभागिता-एक विमर्श : समस्या, समाधान-अनिता कंवर	252
माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन (मुजफ्फरपुर जिले के विशेष संदर्भ में) -प्रतिभा सिंह; डॉ० पी० एन० मिश्र	257
माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन -वैशाली उनियाल; प्रो० (डॉ०) सुरेश चन्द्र पचौरी	260
राजा राममोहन राय के सामाजिक सुधारों की मानवीय चेतना-अनिकेत पीयूष सिंह	266
औद्योगिक विकास एवं पर्यावरण प्रदूषण (अलवर जिले के संदर्भ में)-डॉ० राजेन्द्र प्रसाद	269
पैतृक संपत्ति में उत्तराधिकार पर हिंदू महिलाओं के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन-आभा मिश्रा; डॉ० विजय कुमार वर्मा	272
उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् छात्रों के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रति दृष्टिकोण पर शिक्षण रूचि के प्रभाव का अध्ययन -ज्योत्सना रमोला; प्रो० (डॉ०) सुरेश चन्द्र पचौरी	278
बिहार के राजनीतिक इतिहास में सत्येन्द्र नारायण सिंह का योगदान-डॉ० संदीप कुमार	285
अखिलेश कृत 'निर्वासन' उपन्यास में विस्थापन की समस्या-सपना रानी	289

पूर्वोत्तर की आदिवासी कहानियों में अभिव्यक्त सामयिक प्रश्न-चेतन कुमार	291
बाल-मनोविज्ञान और विज्ञापन : व्यावहारिक अंतः संबंध-शुभांगी	293
मंजूर एहतेशाम के उपन्यासों में असामाजिक तत्त्व और साम्प्रदायिकता-सुमन देवी	302
कोविड 19 के दौरान मोहल्ला क्लास के प्रति प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों का प्रत्यक्षीकरण-डॉ० चन्द्रा चौधरी	305
हिन्दी व्यंग्य और आधुनिक व्यंग्यकार-बिन्दु डनसेना; डॉ० बी० एन० जागृत	308
गुणात्मक शिक्षा के उन्नयन में शिक्षकों के व्यावसायिक अभिवृत्ति की भूमिका-सुदर्शन सिंह; डॉ० स्वीटी श्रीवास्तव	310
लोक अदालत का गठन एवं कार्यकरण : एक विश्लेषण-वकील शर्मा	314
पुरुषार्थ अर्थ का स्वरूप और महत्त्व-डॉ० योगिता मकवाना	319
अपराध भूगोल के अध्ययन में भौगोलिक सूचना प्रणाली का उपयोग-राजकिरण चौधरी	322
भारतीय लोकतंत्र में दल और दलबदल की राजनीति-डॉ० रविन्द्र सिंह राठौड़; प्रो० अनिल धर	326
सामाजिक उपन्यासकार के रूप में : नागार्जुन-डॉ० रेखा दुबे; ज्योति नरवाल	330
जलियांवाला बाग हत्याकांड के विविध आयाम : एक पुनर्मूल्यांकन-डॉ० कुमारी ज्योति	332
चौरी चौरा जनज्वार का राष्ट्रीय आयाम : एक पुनर्मूल्यांकन-डॉ० सर्वेश चंद्र शुक्ल	335
चौरी चौरा जनक्रांति में स्थानीय जनता तथा स्वयं सेवकों की भूमिका-अभिषेक कुमार तिवारी	339
पर्यावरण दर्शन और नैतिकता-मुकेश कुमार	342
गांधीवादी दृष्टि और आधुनिक राज्य की अवधारणा : एक अनुशीलन-डॉ० अभय कुमार सिंह	346
राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान की चुनौतियां-सुनीता जांगिड	350
बुक्सा जनजाति और उनके असंतोष के कारणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन-अवधेश कुमार; किन्नर विमर्श; सनोज पी आर	357
मुगलकाल में कार्यरत महिला शिल्पी वर्ग : कतनी/कत्तियों के विशेष संदर्भ में-मनीषा मिश्रा; डॉ० अमिता शुक्ला	359
सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना की प्रासंगिकता-ललिता देवी	363
मृणाल पाण्डे के कथा साहित्य में सामाजिक एवं पारिवारिक संस्कारों का मूल्यांकन-आलोक कुमार तिवारी	366
नागार्जुन के रचना संसार में सौंदर्यबोध की प्रासंगिकता-संदीप कुमार	369
मानवता का उद्घोष और छायावादी रचना संसार-संजीव कुमार पाण्डेय	371
रमेशचन्द्र शाह का सबद निरंतर में आलोचनात्मक दृष्टि का मूल्यांकन-कृपा शंकर	374
महिला सशक्तिकरण मे राष्ट्रीय महिला आयोग की भूमिका : एक अध्ययन-डॉ० अजित कुमार पाठक	376
स्त्री विमर्श: अर्थ एवं अर्थव्याप्ति-कुमारी अंजना	379
भारत में मानवाधिकार और लोकतंत्र: एक राजनीतिक विश्लेषण-फरीद आलम	381
संत कवि रैदास की वाणी में मानवतावाद-डॉ० मुकेश कुमार	385
प्रवासी हिंदी साहित्य में स्त्री कथाकारों की मानवीय चेतना-प्रो० रमेश के० पर्वती	389
छत्तीसगढ़ के श्रमिकों में कोविड माहामारी के दौरान पलायन एवं चुनौतियां (रायपुर संभाग के विशेष संदर्भ में) -संजय कुमार जांगडे; श्रीमति डॉ० रीना तिवारी	391
राम की शक्ति-पूजा : निराला व राम के संघर्ष की गाथा-प्रो० मन्जुनाथ एन० अविग	397
कोरोना काल में उत्पन्न तनाव को दूर करने में योग करने की भूमिका-तिलकराज गौड़; डॉ० शालीनी यादव	400
भारत एक कल्याणकारी राज्य के रूप में : एक अनुशीलन-मो० जाहिद शरीफ	405
भारतीय समाज में वृद्ध लोगों की दशा-घनश्याम	408
पर्यावरण संरक्षण एवं भारतीय दर्शन-मयंक भारती	411
दक्षेस : महत्त्वपूर्ण पड़ाव व वर्तमान प्रासंगिकता-संजय कुमार	414
प्राणायाम : सर्वांगीण विकास का आधार-सुशील कुमार	418
ओटीटी प्लेटफॉर्म का युवाओं पर प्रभाव (एक अध्ययन: दिल्ली के विशेष संदर्भ में)-हर्षवर्धन	422
भूमण्डलीकरण के दौर में लोकधर्मी कविता का संघर्ष-रंजना कुमारी गुप्ता	426
समाज सुधार की दृष्टि से तंज कसती भारतेंदु युगीन व्यंग्य-काजल कुमारी सिंह	431
संस्कृतसाहित्ये व्यक्तिविवेकस्य स्थानम्-डॉ० सुमन कुमारी; डॉ० रामजी मेहता	434

आज का पूँजीवाद और उसका उत्तर आधुनिकतावाद—मन्नु कुमार शर्मा	437
पुरुष एवं महिला बी.एड. प्रशिक्षुओं के आत्मसम्प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन—अभिषेक दुबे; डॉ० (श्रीमती) स्मिता मिश्रा	441
भारत की संसद और राष्ट्रपति मिलकर क्या धारा 370 और आर्टिकल 35A को हटाने की शक्ति रखते हैं?—डॉ० रीता कुमारी	444
काव्य प्रयोजन की साहित्यिक अवधारणा का अध्ययन—डॉ० हेमन्त सिंह कंवर	448
लोक व मिथकीय संरचना में गिरीश करनाड का नाटक हयवदन—सुनील कुमार	451
छत्तीसगढ़ी लोकगाथा की परम्परा में वीरांगना बिलासा कंवटिन—श्री मिथलेश सिंह राजपूत; डॉ० स्नेहलता निर्मलकर	455
सामाजिक न्याय : अवधारणा एवं सिद्धान्त—डॉ० पूरण मल बैरवा; महेन्द्र प्रताप बाँयला	460
प्राचीन भारत में स्त्री-शिक्षा (प्रारम्भ से बारहवीं शताब्दी ईस्वी तक)—सीमा जागिड़	468
माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत लोकप्रिय एवं एकाकी विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन—प्रमोद कुमार वर्मा; डॉ० मृदुला भदौरिया	476
हास्य एवं व्यंग्य का प्रतिरूप सिरमौरी लोक गायन शैली शिटणा—प्रो० पी०एन० बंसल; विनोद कुमार	482
भारत में आत्मनिर्भरता से सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का उन्नयन—डॉ० सौरभ मालवीय	487
वैश्वीकरण एवं बदलते सामाजिक सांस्कृतिक प्रतिमान (एक विश्लेषणात्मक अध्ययन)—डॉ० मंजु नावरिया	491
सिद्धरामेश्वर : वीरशैव आंदोलन के प्रभावी शिवशरण—डॉ० अंबादास केत	496
हिन्दी कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन—डॉ० रमेश एस० जगताप	500
बाल श्रम—एक विश्लेषण—सतीश कुमार	503
भूमण्डलीकरण और जल, जंगल, जमीन का प्रश्न—डॉ० विनोद मीना	512
आधुनिक वैश्विक परिस्थितियों में बौद्ध दर्शन की प्रासंगिकता—डॉ० हरदीप सिंह	516
एम.एन. राय का नव मानववाद: एक विश्लेषण—सोनी कुमारी	520
नारी-स्वातंत्र्य के परिप्रेक्ष्य में कमलेश्वर की कहानियाँ—सुधा कनकानवर; डा० श्रीनिवास मूर्ति	523
गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के सन्दर्भ में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन—डॉ० सुषमा सिंह; राजपाल सिंह यादव	526
मनोहर श्याम जोशी का उपन्यास शिल्प : यथार्थवादी बिम्ब का जादुई-अवबोध—डॉ० संजय कुमार लक्की; रमेश चन्द सैनी	531
लोकपाल की भ्रष्टाचार निवारण में सार्थकता—डॉ० योगेन्द्र कुमार धुर्वे	535
दलितों के शैक्षिक उत्थान में डॉ० भीमराव अम्बेडकर का अवदान—सरिता; प्रो० बी०एल० जैन	538
गाँधीवादी दर्शन में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का स्थान—सोमेश गुंजन	541
आचार्य क्षेमेन्द्र द्वारा प्रतिपादित औचित्य विमर्श—डॉ० दीप्ति वाजपेयी; गुंजन	543
आचार्य महाप्रज्ञ का चिंतन—अहिंसा एवं विश्व शांति और लोकतंत्र सुधार—डॉ० इन्दु तिवारी	547
पंडित विद्यानिवास मिश्र के निबन्धों में ग्रामीण संस्कृति—अनिरुद्ध कुमार	550
ग्रामीण क्षेत्रों में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना से बदलता परिदृश्य का एक अध्ययन: आलीराजपुर जिले के सन्दर्भ में—डॉ० दुंगरसिंह मुजाल्दा	553
जूनियर हाईस्कूल में अध्ययनरत दृष्टिबाधित एवं सामान्य बालकों के समायोजन एवं व्यक्तित्व का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध का तुलनात्मक अध्ययन—डॉ० प्रशान्त शुक्ला	563
हिंदी कथा साहित्य में अभिव्यंजित दिव्यांग या विकलांग पात्रों की समस्याओं का विश्लेषण—डॉ० प्रेरणा गौड़	568
हेमचंद्राचार्य कृत योग-शास्त्र में आसन विमर्श—डॉ० धीरज प्रकाश जोशी	571
प्राकृतिक आपदाओं का कृषकों के जीवन पर प्रभाव : मनरेगा एक विकल्प — समाजशास्त्रीय अध्ययन—डॉ० सौम्या शंकर; सुनील कुमार	573
शैक्षिक उपलब्धि परसंवेगात्मक बुद्धिका प्रभाव: एक समीक्षात्मक अध्ययन—डॉ० वन्दना चतुर्वेदी; शिव नारायण	584
भारतीय अर्थव्यवस्था में ई-व्यवसाय की भूमिका एवं प्रभावशीलता का अध्ययन—पूजा जैन	588
मालती जोशी की कहानियों में नारी चित्रण—डायमंड साहू; डॉ० रमणी चंद्राकर	591
युवाओं में नए मीडिया की भूमिका का अध्ययन—डॉ० मधुदीप सिंह; हिमांशु छाबडा	594
किशोर अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों में शैक्षिक समस्याओं पर एक अध्ययन—डॉ० रिया तिवारी; श्री डोमार यादव	600
वैश्वीकरण और इलैक्ट्रॉनिक बैंकिंग सेवाओं की उपयोगिता—डॉ० संजय खत्री	606
छत्तीसगढ़ी भाषा : दशा एवं दिशा—डॉ० आंचल श्रीवास्तव; विवेक तिवारी	608

तुलसीदास की समन्वय भावना-डॉ० राजमोहिनी सागर	613
आधुनिक जीवन शैली में योगाष्टाङ्गों का महत्व-डॉ० चन्द्र कान्त पांडा	617
वैयक्तिक अनन्यता की समस्या (Problem of Personal Identity)-ऋषिकेश चौहान	626
वर्तमान परिवेश में ई-गवर्नेंस द्वारा प्रशासनिक सुधार एवं सुशासन पर प्रभाव-चन्दना शर्मा	629
वाल्मीकि महिलाओं का सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिदृश्य; हरियाणा के नूह जिले के विशेष सन्दर्भ में-दीपक	632
आज की आलोचना के समक्ष चुनौतियाँ-डॉ० आस्था दीवान	638
जम्मू - कश्मीर के क्षेत्र के लिए विकास की संभावनाएं-डॉ० अभिषेक आनन्द	640
संस्कृत साहित्य में वर्णित मानव चक्र-डॉ० दीप्ति बाजपेयी; कु० संजू नागर	644
हिन्दी काव्य और उत्तरआधुनिकता-डॉ० तारु एस० पवार	647
शिक्षा के क्षेत्र में न्यू मीडिया का उपयोग: एक अध्ययन (सिरसा के महाविद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों के सन्दर्भ) -डॉ० अमित सांगवान; विनोद कुमार	650
काव्य प्रक्रिया में दिवास्वप्न से गुजरता हुआ कवि नरेंद्र मोहन-डॉ० सुभाष चंद्र डबास 'चौधरी'	655
भारतीय जीवनाधार: कर्मवाद:-डॉ० हिमा गुप्ता	657
आई०एम० क्रौम्बी के अनुसार धार्मिक भाषा का स्वरूप : एक विश्लेषण-डॉ० स्मिता सिंह	660
हिमालय के खस : उत्तराखंड में आर्य जातियों में समाहित होते खस इतिहास के पन्नों में हाशिए पर-डॉ० हरीश चंद्र लखेड़ा	665
स्वच्छ भारत अभियान के प्रचार प्रसार में सूचना व संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका: एक अध्ययन-डॉ० अनिल कुमार	668
आधुनिक भारत में डॉ. अम्बेडकर के धर्मान्तरण का औचित्य-डॉ० युवराज कुमार	672
आरटीआई: प्रभावी शासन का एक औजार-डॉ० ऋचा सिंह	679
"..किसी के जाने के बाद, करे फिर उसकी याद, छोटी-छोटी सी बात" (फिल्मकार बासु चटर्जी से गोकुल क्षीरसागर की बातचीत) -डॉ० गोकुल क्षीरसागर	684
करोना महामारी और प्रसाद के काव्य की मानवतावादी भावना-डॉ० बिजेन्द्र कुमार	687
गंगाराम राजी के कथा साहित्य में चित्रित सामाजिक सरोकार-सुनीता; डॉ० रामरती	692
गोंड जनजाति के प्रमुख संस्कार-डॉ० पियुष कुमार सिंह	695
जयश्री रॉय के उपन्यासों में नारी शोषण-भावना देवी	697
पुरुष की संक्रीण मानसिकता के कारण विवाहोपरांत दाम्पत्य-संबंधों में बिखराव को मार्मिक ढंग से चित्रित करता सुनीता जैन का उपन्यास "बिंदु"-नीलम देवी	699
बाल धरोहर एवं समाज कल्याण-डॉ० शिवसिंह बघेल; डॉ० के० बालराजु	703
गीतांजलि श्री के माई उपन्यास में चित्रित समस्याएँ-वीना	707
जिला रीवा के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के सामाजिक प्रेरकों एवं शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन -राजेश कुमार यादव; डॉ० पतंजलि मिश्र	709
नई कविता में सौंदर्य-चेतना-डॉ० संतोष धोत्रे	713
भारत - राष्ट्र राज्य बनाम सभ्यतामूलक राज्य: एक समीक्षात्मक अध्ययन-डॉ० जय प्रकाश खरे	717
मध्य एशिया में चीन-रूस संबंध: सहयोग और अविश्वास-गुरदीप सिंह	720
मानवाधिकार और आदिवासी-प्रो० प्रशांत देशपांडे	724
महाविद्यालय के शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक प्रशिक्षकों की सेवा संतुष्टि की भूमिका-अश्वनी कुमार मिश्र; डॉ० सुनील कुमार सेन	729
रीवा जिले में बी०एड० एवं डी०एल०एड० प्रशिक्षुओं की मानवाधिकार जागरूकता का उनकी जीवन शैली से सम्बन्ध का अध्ययन -अरूण कुमार; डॉ० पतंजलि मिश्र	732
भारतीय बैंकिंग में ग्राहक शिकायत निवारण नीति-रमनदीप कौर	736
विद्यार्थियों में पर्यावरणीय चेतना के लिए शिक्षा का महत्व-डॉ० श्रवण कुमार; डॉ० गिरीश कुमार द्विवेदी	740
वेदों के विषय में आचार्य सायण एवं महर्षि दयानन्द का दृष्टिकोण-सुनील कुमार	743
जूड़ों में स्थिर संतुलन पर वजन वर्ग का प्रभाव-चन्द्रशेखर बांधें; डॉ० राजीव चौधरी	749
बंगला काव्य और गांधी जी-डॉ० राम विनोद रे	754

मानव जीवन में वनस्पतियों का महत्व (वैदिक साहित्य के आलोक में)–डॉ० दीप्ति वाजपेयी; कु० मोनिका सिंघानिया	760
वैदिक काल में स्थानीय - प्रशासन का विकास–डॉ० रितु तिवारी	764
साहित्य में थर्ड जेंडर: हाशिये की दुनिया–कृष्णा कुमारी	767
निराश्रित एवं पारिवारिक किशोर विद्यार्थियों में “आत्मविश्वास”–श्रीकृष्ण जागिड़; डॉ० अखिलेश जोशी	770
सांसद निधि के उपयोग में पारदर्शिता का अध्ययन–यशोदा पटेल; डॉ० आयशा अहमद	774
मन्नू भंडारी की कहानियों में नए जीवन मूल्यों का चित्रण–प्रा० डॉ० दिग्विजय टेंगसे	777
आधुनिक जीवन शैली में योगाष्टाङ्गों का महत्व–डॉ० चंद्रकांत पंडा	780
नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में साम्राज्यवादी विचारधारा का अनुशीलन–अजय कुमार	788
हिन्दी साहित्य में ललित निबंधों की मौलिकता–प्रदीप कुमार तिवारी	792
घनानंद काव्य का भाषा-शिल्प सौन्दर्य–डॉ० तृप्ता	795
भारत में सु-शासन और उसके समक्ष चुनौतियाँ–डॉ० सुरेन्द्र मिश्र	798
आर्थिक विकास बनाम संस्कृति और पर्यावरण : भारत के संदर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–एन राजेन्द्र सिंह	804
महात्मा गांधी की ग्राम-स्वराज्य की अवधारणा : एक अध्ययन–मोनिका भाटी	808
समकालीन काव्य सृष्टि में पर्यावरण दृष्टि–शाहिद हुसैन; डॉ० श्रद्धा हिरकने	811
योग-शिक्षा की अभिनव विधियाँ: हिंदी-भाषी यौगिक-वर्णमाला-चार्ट की रचना एवं परिवर्धन–मनीष कुमार; पूनम पंवार; परन गौड़ा	816
जगदीश चंद्र माथुर के नाटकों में समाज में नारी का महत्व–स्मिता शर्मा; डॉ० चित्रा	826
बेरोजगारी की राजनीतिक-यथार्थ (अखिलेश के ‘अन्वेषण’ उपन्यास के संदर्भ में)–बर्नाली नाथ	829
भारतीय उपभोक्ता और उत्पाद एवं सेवा प्रदाता कंपनियों के अंतर्संबंधों में डिजिटल मीडिया की भूमिका–डॉ० आदित्य कुमार मिश्रा	832
भारतीय लोकतंत्र में दल और दलबदल की राजनीति–डॉ० रविन्द्र सिंह राठौड़; प्रो० अनिल धर	836
उत्तराखण्ड राज्य में पर्यटन शिक्षा, कौशल विकास एवं क्षमता संवर्धन- वर्तमान परिदृश्य, भावी चुनौतियां एवं अवसर –डॉ० संजय सिंह महर; डॉ० हेमंत बिष्ट	840
छत्रपति शिवाजी महाराज के दृष्टिकोण से स्त्री–डॉ० हेमलता काटे	854
भ्रष्टाचार से लड़ाई और अन्ना हजारे का नेतृत्व–आलोक तिकी	857
राजनीतिक-जागरुकता की शक्ति एवं महत्त्व–हामिद अली	860
भारतीय लोकतंत्र में मतदान प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले कारक: एक अध्ययन–डॉ० जोनी इम्मानुएल तिरकी	863
बिहार की राजनीति में बदलाव की अपेक्षाएँ: एक अध्ययन–कृष्णदेव राय	866
बिहार में सुशासन और दलित सशक्तिकरण : एक अध्ययन–प्रभात आनन्द	868
केन्द्र - राज्य सम्बंध : बदलते परिदृश्य–चन्द्रभान सिंह	872
विमर्श एवं विद्या केंद्रित आलोचना–श्रीमति मीतू बरसैया; डॉ० श्रीमती आँचल श्रीवास्तव	878
विकसित और विकासशील राष्ट्रों में बुजुर्गों की देखभाल: एक तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य–डॉ० स्मिता राय; डॉ० भूपेन्द्र बहादुर सिंह	881
भिण्ड अंचल की सामाजिक व्यवस्था का इतिहास : एक अध्ययन–डॉ० शालिनी गुप्ता	886
जनजातीय समुदाय में तीज त्यौहार एवं परिवर्तन का विश्लेषण (छ.ग. राज्य की मुरिया जनजाति के विशेष संदर्भ में)–डॉ० ममता रात्रे	890
स्वामी विवेकानन्द : सामाजिक विचारक के रूप में–प्रेमलता	893
संस्कृत नाट्यशास्त्र पर कालिदास की शैली का प्रभाव–डॉ० अवधेश कुमार यादव	895
पितृसत्तात्मक व्यवस्था और नारी : अप्प दीपो भव–डॉ० जागीर नागर	898
समाज में निरन्तर दोगम दर्जे की अनुभूति–डॉ० प्रदीप कुमार सिंह	903
पंजाब नाट्यशाला : नाट्य मंचन का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय रंगमंच–डॉ० सुनीता शर्मा	909
विद्यार्थियों में परीक्षा दबाव को कम करने में योग व ध्यान की भूमिका–शैली गुप्ता; डॉ० मंजू शर्मा	914
शोभाकरेण अलङ्कारसर्वस्वखण्डनं जयरथमतमण्डनञ्च–डॉ० प्रीतम रुज	916
हिंदी आलोचना का समकालीन परिदृश्य–अमित डोगरा	921
प्रेमचंद पूर्व कहानियों की परम्परा–डॉ० नारायण	924
स्वातंत्र्योत्तर भारत के सामाजिक एवं राजनीतिक पुनर्जागरण में लोकनायक जयप्रकाश नारायण की संपूर्ण क्रांति का अवदान–डॉ० आरती कुमारी	929

भूमंडलीकरण के दौर में भारतीय भाषाओं की भूमिका—डॉ० गीता सहाय	932
नई शिक्षा नीति 2020—डॉ० गवित माधव हरि; गोपाले यशवंत काशीनाथ	934
नई शिक्षा नीति और प्रक्रिया उम्मीद : चिकित्सक अध्ययन—डॉ० कविता सालुंके	936
नई शिक्षा नीति 2020—डॉ० बबीता बी० शुक्ला	939
शिक्षा पर डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर के बुनियादी विचार—डॉ० नागोराव शालिग्राम डोंगरे	943
नए श्रम कानून का सामाजिक प्रभाव—डॉ० माधव के० वाघमारे	946
नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: एक दृष्टिक्षेप—श्रीमती थोरात अनिता भास्कर	949
भारत की नई शिक्षा नीति - 2020—डॉ० रंजना राजेश सोनावने	952
चिकित्सकों के बीच भावनात्मक बुद्धि में लिंगभेद का अध्ययन—डॉ० साहेबराव यू० अहिरे; डॉ० जी० बी० चौधरी	955
नई शिक्षा नीति - 2020 और नए श्रमिक कानून: नई शिक्षा नीति 2020 का डी. एड्. व बी. एड्. कोर्सेस पर प्रभाव: एक अनुशीलन—डॉ० अमोल शिवाजी चव्हाण	959
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का शिक्षकों को सक्षम बनाने में योगदान—प्रताप भाऊसाहेब आत्रे	964
चित्रा मुद्गल कृत उपन्यास 'एक जमीन अपनी' में नारी जीवन (विज्ञापन जगत के सन्दर्भ में)—डॉ० शशी पालीवाल	967
भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में ग्रामीण पर्यटन का प्रभाव—अनूप कुमार सिंह	971
श्रीलाल शुक्ल कृत उपन्यास अज्ञातवास में ग्रामीण एवं शहरी जीवन : एक अध्ययन—डॉ० अखिलेश कुमार वर्मा	974
परमार अभिलेखों में संदर्भित स्थलाकृतियों से सम्बन्धित स्थलनाम एवं उनका अभिधान—डॉ० रागिनी राय	977
मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथाओं में स्त्री अस्मिता : एक दृष्टि—डॉ० शिवा श्रीवास्तव	981
वित्तीय समावेशन की ग्रामीण रोजगार में भूमिका : एक दृष्टि—उज्ज्वल चतुर्वेदी	985
न्यू मीडिया की नजर से कोविड-19 से जूझते परिदृश्य में शिक्षा जगत का बदलता परिदृश्य—डॉ० शैलेश शुक्ला	988
चार्वाक दर्शन—डॉ० सरोज राम	993
असगर वजाहत व्यक्तित्व-कृतित्व—रमेश नारायण; डॉ० सविता तिवारी	997
श्रीमद्भगवद्गीता में प्रकृति का स्थाई अस्तित्व—डॉ० मधु दीप सिंह; जितेंद्र सिंह	1002
भारत में अपार्टमेन्ट संस्कृति की यात्रा : समाजशास्त्रीय पाठ—डॉ० विमल कुमार लहरी	1010
आदिवासी विमर्श—डॉ० नसरीन जान	1014
राजस्थान में बढ़ती किसान आत्महत्या के कारण व निवारण: एक अध्ययन—डॉ० मंजु यादव; राजेन्द्र कुमार मीणा	1016
राही मासूम रजा के उपन्यासों में मानवाधिकार—डॉ० मौहम्मद अबीर उद्दीन	1019
स्ववित्तपोषित सहशिक्षा एवं महिला शिक्षा संस्थानों में कार्यरत महिला अध्यापिकाओं की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन—अखिलेश कुमार मौर्य	1022
निजी और सरकारी स्कूलों के शिक्षकों में नौकरी संतुष्टि और शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर कार्य दबाव के प्रभाव—अलका तिवारी; डॉ० कालिंदी लाल चंदानी	1026
ब्रज चौरासी कोस यात्रा : आधुनिक परिपेक्ष में—डॉ० अम्बिका उपाध्याय	1029
आदिवासी देवी अंगारमोती : ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में—कु० शोभना देवी सेन; डॉ० बन्सो नुरूटी	1033
हिंदी कहानी में वृद्ध विमर्श—डॉ० भगत गोकुल महादेव	1039
भारत की जनजातियों में जीवन साथी चुनने की विधियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन—डॉ० हरिचरण मीना	1041
स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षुओं के सांवेगिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन—कृपा शंकर यादव	1044
उच्चतर माध्यमिक स्तर के कक्षा 11 के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन—कुसुम देवी	1050
भारत और नेपाल संबंध—डॉ० वंदना वाजपेयी	1053
महाभोज : परत दर परत टूटता विश्वास—विनोद कुमार; प्रो० डॉ० मिनतु	1057
अरुण कमल की कविताओं में नव युगबोध—मिथिलेश कुमार मिश्र	1060
अनाथ व सनाथ छात्रों के मनोवैज्ञानिक-सामाजिक समस्याओं और शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन—कुलदीप; डॉ० कालिंदी लाल चंदानी	1063
पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' के साहित्य में सामाजिक चेतना—मुरली सिंह ठाकुर; डॉ० स्नेहलता निर्मलकर	1068

उच्च माध्यमिक स्तर के महिला शिक्षकों में जीवन कौशल के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन—प्रो० मंजू शर्मा; मधु देवी	1072
वीर रानी के रूप में रुद्रमा देवी का मूल्यांकन—प्रो० देवेन्द्र कुमार गुप्ता; सुमिति सैनी	1078
हिन्दू परिवार में आधुनिक परिवर्तन : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण—डॉ० प्रियंका नीरज रूवाली; वन्दना सिंह	1081
अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के लिए किए गये सरकारी प्रयास एवं वर्तमान स्थिति—अच्युत कुमार यादव	1086
असमिया साहित्य में रोमांटिसिज्म के प्रभाव (चंद्रकुमार आगरवाला के कविताओं के विशेष संदर्भ में)—दिगंत बोरा	1090
असाध्य वीणा का सामाजिक पाठ—डॉ० आकाश वर्मा	1094
कोरोना महामारी काल में पुस्तकालयों में डिजिटल तकनीकों का महत्व और उपयोग—डॉ० संजय डी० रायबोले	1098
असम का लोकनाट्य: पुतलाभिनय या पुतला नृत्य—डॉ० परिस्मिता बरदलै	1101
भोजपुरी लोकगीतों में स्त्री—डॉ० आकाश वर्मा	1104
“स्माल सिनेमा” बनाम “मालेगांव का सिनेमा”—डॉ० मनीष कुमार मिश्रा	1110
विश्वशांति बनाए रखने में विभिन्न धर्मों की भूमिका—डॉ० सुनिता कुमारी	1115
दलित चेतना का प्रतीक झलकारी बाई: एक अनुशीलन—बबली कुमारी	1118
भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में जनसंचार की भूमिका—देवेन्दु आलोक	1122
चम्पारण के नील संघर्ष में गांधीजी की भूमिका: एक ऐतिहासिक पुनर्मूल्यांकन—धीरज कुमार	1126
रबीन्द्रनाथ टैगोर और महात्मा गांधी: एक शैक्षणिक स्थिति से शिक्षा पर उनके प्रभाव—गुड्डू कुमार सिंह; डॉ० अलका कुमारी	1131
भूगोल में फेनोमेनॉलॉजी : एक चिन्तन फलक—डॉ० श्री कमलजी	1138
बदलते परिवेश में मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श के विविध आयाम—प्रोफेसर लता सुमन्त; प्रमोद कुमार सिंह	1140
नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व व कृतित्व—प्रोफेसर लता सुमन्त; राजेश कुमार पटेल	1146
मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में चित्रित नारी की राजनीतिक चेतना—डॉ० महेन्द्र कुमार त्रिपाठी; नीलम देवी	1151
बुद्ध दर्शन और पश्चिमी मनोविज्ञान—डॉ० मनोज कुमार	1154
गांधीजी का स्वराज एवं सत्याग्रह : रंग-भेद नीति के विरुद्ध निर्णायक शस्त्र—निवेदिता कुमारी	1158
मुगल काल में इतिहास लेखन—डॉ० राघवेन्द्र यादव	1162
प्राचीन बिहार के बौद्ध महाविहार ओदन्तपुरी: एक शैक्षणिक अवलोकन—राहुल कुमार झा	1165
बिहार के पुराने गया जिले के क्षेत्र में नक्सलवादी गतिविधि—सचिन कुमार	1169
भारत की नई शिक्षा नीति - 2020 : आवश्यकता, प्रभाव एवं चुनौतियां—संजय हिरवे; आशुतोष पाण्डेय	1173
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में सुभाष चंद्र बोस की भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन—तौकीर आलम	1177
प्राचीन बिहार में राजतंत्र एवं गणतंत्र की अवस्थाएँ—डॉ० संजीव	1181
“जनहित याचिका” मानवाधिकारों का संरक्षक : एक अध्ययन—दीपक कुमार कोठरीवाल	1183
प्रगतिशील आंदोलन की जागृति—डॉ० आशा तिवारी ओझा	1186
भारत में बाढ़ की समस्या और समाधान—डॉ० सीमा सहदेव	1189
भारत सहित अन्य देशों पर कोरोना वायरस का (कोविद-19) प्रभाव—श्रीमती मीनाक्षी	1195
रत्न आभूषण उद्योग : एक भू-आर्थिक विश्लेषण—अक्षय राज	1201
जीएसटी अवलोकन - भारत में माल और सेवा: जीएसटी आईटीसी—डॉ० अनामिका तिवारी; डॉ० संजय कुमार सिंह	1205
छत्तीसगढ़ कानून, नीतियां और न्यायिक दृष्टिकोण, पर्यावरण सुरक्षा और संरक्षण—आकांक्षा गर्ग अग्रवाल; डॉ० (प्रो०) जे० के० पटेल	1210
अष्ट चामुण्डा - अग्निपुराण के विशेष संदर्भ में—प्रो० प्रभात कुमार; कल्पना देवी	1216
पाणिनि अष्टाध्यायी में वर्णित जनपदीय कृषि का विवेचन—डॉ० प्रशान्त कुमार; डॉ० दुर्वेश कुमार	1221
रीति काल के अग्रदूत: महाकवि केशवदास—सोमबीर	1227
कार्यशील महिलाओं में प्रसव सम्बंधी निर्णायक क्षमता का समाजशास्त्रीय अध्ययन—डॉ० सुशीला; कु० आरती	1230
भारतीय लोकतंत्र के संदर्भ में संसदीय सरकार की उपयोगिता—डॉ० जगबीर सिंह	1238
भारत में राजनीति के अपराधीकरण की समस्या—मुकेश देशवाल	1241
भारत में दो स्तर पर शासन की त्रिस्तरीय लोकतांत्रिक संरचना—सूर्यभान सिंह	1244
अलवर जिले में बदलता सिंचाई स्वरूप एवं उसका कृषि पर प्रभाव (2011 से 2018 तक)—जितेश कुमार घोरेठा; डॉ० राजेन्द्र प्रसाद	1250

भारत में संसदीय गरिमा का अवमूल्यन—महेश कुमार	1256
प्रधानमंत्री मोदी के तहत भारतीय विदेश नीति: निरंतरता और परिवर्तन—डॉ० जय कुमार झा	1259
मानव जीवन में भावनात्मक और संवेगात्मक मनोविज्ञान से जुड़े तथ्यों एवं सिद्धांतों की महत्ता: समीक्षा —डॉ० जया भारती; डॉ० संदीप कुमार वर्मा	1262
भारत में जल संसाधन एवं जल संरक्षण की परम्परागत विधियों का शोधपरक अध्ययन—कविता	1266
मानवाधिकार : साहित्य की समग्र दृष्टि—डॉ० रूपेश कुमार चौहान	1271
निर्धनता उन्मूलन में मनरेगा कार्यक्रम की भूमिका : अनुसूचित जातियों के विशेष सन्दर्भ में—डॉ० प्रियंका एन० रूवाली; उपमा द्विवेदी	1275
“उच्च शिक्षा स्तर पर महाविद्यालयी शिक्षा में ई-लर्निंग की प्रभावशीलता का अध्ययन”—प्रीति शर्मा; डॉ० मंजू शर्मा	1279
युवा एवं पंचायती राज संस्थाओं का शिक्षा और महिलाओं के सामाजिक विकास में भूमिका—श्वेता पांडेय; डॉ० मंजू शर्मा	1283
भारतीय राष्ट्रीय जागरण में स्वामी दयानन्द का योगदान—विकास	1287
आजादी के बाद के भारत में महिलाओं की स्थिति—डॉ० अनिल कुमार तेवतिया	1290
टेलीविजन संस्कृति और सामाजिक प्रतिबद्धता के अंतर्विरोध—डॉ० मधु लोमेश	1295
प्रगतिशील समाज में अवरोधित महिला शिक्षा—प्रो० (डॉ०) मंजू शर्मा; रुकमणी हसवाल	1298
विवेकी राय कृत उपन्यास श्वेत-पत्र: एक ऐतिहासिक दस्तावेज—विभा रीन	1303
हिन्दी गद्य साहित्य में महिला लेखन का महत्त्व—प्रो० (डॉ०) शिव शंकर मंडल	1306
सुशासन की अवधारणा एवं व्यवहार : भारतीय शासन व्यवस्था के विशेष संदर्भ में—डॉ० सत्येन्द्र कुमार	1309
ग्रामीण सामाजिक परिवर्तन एवं विकास में पंचायतराज की भूमिका—डॉ० जयराम बैरवा	1312
प्राचीन भारतीय समाज में शिक्षा का महत्त्व—डॉ० विनय कुमार मिश्र	1317
अनामिका के उपन्यासों में स्त्री-जीवन की अभिव्यक्ति—स्वर्णिम शिप्रा	1322
पूर्वमध्यकाल में जातीय प्रगुणन—प्रवीण पाण्डेय	1326
पश्चिमी राजस्थान की हस्तशिल्प कला का संग्रहालयों में योगदान—अजीत राम चौधारी; डॉ० महेन्द्र चौधरी	1329
भारत में सामाजिक न्याय के निर्वचनकर्ता के रूप में मानव जीवन के विकासात्मक पहलुओं पर सर्वोच्च न्यायालय की भूमिका —असीम कुमार शर्मा	1332
भारतीय साहित्य की एकता में बाधक तत्व—डॉ० नवनाथ सर्जेराव शिंदे	1336
पं० दीनदयाल उपाध्याय का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद—डॉ० हरबंस सिंह	1339
क्षेत्रीय विकास, सतत विकास एवं राजनीति - उत्तराखण्ड के लोगों के जनजीवन के विशेष संदर्भ में—सुनील सिंह	1341
किशोर छात्र-छात्राओं की चिंता का उनके कैरियर के प्रति निर्णय क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन —महेन्द्र कुमार; डॉ० जीतेन्द्र प्रताप	1346
पर्यावरण का सामाजिक पक्ष और केदारनाथ सिंह की कविताएं—डॉ० पूर्णिमा आर	1352
सतनामी संप्रदाय और बाबा जगजीवन दास—डॉ० अनिता सिंह	1356
ऑनलाइन एवं ऑफलाइन खरीददारी में उपभोक्ता संतुष्टि के मध्य तुलनात्मक अध्ययन (बिलासपुर शहर के उपभोक्ताओं के विशेष संदर्भ में)—डॉ० अनामिका तिवारी; अंकिता पाण्डेय	1360
समकालीन विमर्शों के समक्ष चुनौतियाँ—संजय सिंह यादव; डॉ० विनोद कुमार	1374
स्वामी सुन्दरानन्द जी : निम के प्रथम विद्यार्थी—गीता आर्या	1377
दार्शनिक चिन्तन की प्रक्रिया - मूल्यान्वेषण या सत्यान्वेषण—डॉ० रेखा ओझा	1381
इच्छाशक्ति और संघर्ष की दास्तान ('मुर्दहिया' के संदर्भ में)—डॉ० विलास अंबादास सालुंके	1386
हिंदी उपन्यासों में चित्रित किन्नर विमर्श—डॉ० दायक राम	1388
भारत में मातृभाषा का महत्त्व एवं चुनौती : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन—डॉ० सोनू कुमार	1392
भारत में किसानों का दशा एवं दिशा : एक अध्ययन—डॉ० राकेश रंजन	1396
छत्तीसगढ़, पर्यटन और नक्सलवाद—डॉ० काजल मोइत्रा; डॉ० रत्नेश कुमार खन्ना; रेखा शुक्ला	1401
दलित महिलाओं के शोषण के विभिन्न आयाम : एक ऐतिहासिक अध्ययन—कुमारी संगीता कुशवाहा	1405
भारत में महिलाओं को प्रदत्त संवैधानिक अधिकार (सैद्धांतिक व व्यावहारिक विश्लेषण)—आशा नागर	1408

पूर्वमध्यकालीन समाज का सामाजिक एवं आर्थिक आधार—डॉ० मनोज सिंह यादव	1414
ज्ञान के विकास के नवाचार का महत्त्व—रजनी कुमारी	1417
न्यायवैशेषिकदर्शनाभिमत मोक्षस्वरूपविमर्श (कौण्डभट्ट विरचित पदार्थदीपिका के विशेष सन्दर्भ में)—डॉ० विश्वेश 'वाग्मी'	1419
सिक्ख दार्शनिक : डॉ. वजीर सिंह का जीवन तथा उनका शैक्षणिक कार्य—हरदीप कौर	1423
संजीव की कहानियों में समकालीन परिदृश्य—डॉ० मधुलता बारा; हेमलता पटेल	1425
शिक्षा के बुनियादी सरोकार और गाँधी-दर्शन—डॉ० किरण कुमारी	1428
अमीरी और गरीबी सैद्धान्तिक प्रक्रिया मानने वाले प्रज्ञा श्री के धनी श्री श्रीलाल शुक्ल—डॉ० मुक्ति मिश्रा	1432
वैश्वीकरण से भारत के चुनावी प्रक्रिया पर पड़ने वाला प्रभाव—विकास रंजन	1439
विज्ञान एवं अध्यात्म—डॉ० रमाकान्त पाण्डेय	1443
फनिश्वर नाथ रेणु की 'मैला आंचल' उपन्यास का नया परिदृश्य—डॉ० हरिकिशोर यादव	1447
भारत का कपड़ा उद्योग: एक अवलोकन एवं स्वास्थ्य समस्याएँ—डॉ० हितैषी सिंह	1453
भारत में शिक्षक शिक्षा का विकास : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन—विक्रम बहादुर नाग; डॉ० अजीजुर्हमान खान	1456
मध्यकालीन कृषि व्यवस्था में उत्पादन तकनीकी विशिष्टता की महत्ता—अश्वनी कुमार; किशोर कुमार	1460
भारत में दलीय लोकतन्त्र की बदलती भूमिका—डॉ० ब्रह्म प्रकाश	1465
परसाई के साहित्य में भाषा का सौन्दर्य—अजय कुमार मिश्र	1468
बौद्ध धर्म के प्रमुख केन्द्र के रूप में कौशाम्बी : एक पुनरीक्षण—अनामिका मौर्या	1471
गोदान - कृषक-वेदना का दस्तावेज—डॉ० सुरजीत कौर	1474
मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श—डॉ० कविता मीणा	1477
भारतीय युवाओं में बढ़ती आपराधिक वृत्तियाँ- एक बहुआयामी विश्लेषणात्मक अध्ययन—रजनी रंजन सिंह; त्रिलोकी सिंह	1480
ब्रिटिश शासन का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव—विपिन सहरावत	1491
ऊना के लोकगीतों में वैज्ञानिक व विद्युत वाद्य यंत्र उपकरणों की भूमिका—ममल धीमान; डॉ० परमानन्द बंसल	1494
आर्थिक विकास में उच्च शिक्षा का महत्त्व—डॉ० गुलाब फलाहारी	1497
इंटरनेट पर उपलब्ध हिन्दी ई-संसाधन, सूचना स्रोत एवं उपकरण: एक सूचनात्मक अध्ययन—डॉ० गौतम सोनी	1499
शहीद भगतसिंह—कुसम राय	1504
जीवन कौशल शिक्षा: एक नया दृष्टिकोण—डॉ० कविता सालुंके; प्रा० ज्योति लष्करी	1506
आधुनिक इतिहास में पुतर्गाल का सागरीय नियंत्रण : राजनैतिक व आर्थिक परिणाम—डॉ० नीलम	1509
मानव जीवन में योग—डॉ० पूजा कुमारी	1514
भारत में बेरोजगारी एवं निर्धनता निवारण—एक जटिल प्रक्रिया—डॉ० अशोक कुमार मिश्र	1517
अवसाद व रोग प्रतिरोध का हथियार है योग—डॉ० सीमा सिंह	1519
स्वामी विवेकानंद की दृष्टि में शिक्षा का वास्तविक अर्थ—डॉ० अपराजिता जाँय नंदी	1525
उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के किशोरावस्था के विद्यार्थियों में मूल्य सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन—डॉ० विष्णु कुमार	1527
भगवद्गीता का दर्शन और महात्मा गाँधी—डॉ० स्मिता कुमारी	1532
शिक्षा में कंप्यूटर का महत्त्व—आलोक तुली	1537
सामाजिक कार्य व्यवसाय में लोक-जीवन एवं उनकी विधियों की प्रासंगिकता—अमित कुमार	1541
आर० के० अर्चना सदा सुमन टुदी—डॉ० रविन्द्रनाथ शर्मा	1541
चौरी चौरा जनक्रांति और ब्रिटिश साम्राज्य की द्वेषपूर्ण न्यायिक प्रक्रिया—डॉ० अजय कुमार सिंह	1545
21वीं शताब्दी भारतीय परिपेक्ष्य में आत्मनिर्भरता अभियान—डॉ० गरिमा सक्सेना	1548
बस्तर संभाग में विद्युत उत्पादन के पारंपरिक स्रोतों की संभावना—जितेन्द्र कुमार बेदी; डॉ० काजल मोईत्रा	1551
भारत में विदेशी व्यापार की प्रवृत्ति, संरचना एवं दिशा का अध्ययन—डॉ० मनोज कुमार अग्रवाल	1554
प्राचीन भारतीय वेशभूषा (प्रारम्भ से गुप्तकाल तक)—पीयूष पाण्डेय	1558
विचित्र नाटक में छंद योजना—मनिंदर जीत कौर	1562

समकालीन भारतीय समाज में वृद्धों की स्थिति का समाजशास्त्रीय अध्ययन-डॉ० हेमलता बोरकर वासनिक	1565
आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों की नारी पात्रों में निहित लोककल्याण की भावना-प्रतिभा झा	1572
हरियाणा की चुनावी राजनीति में मतदान व्यवहार का निर्धारण-राजीव वर्मा; डॉ० तिलक राज आहुजा	1575
कबीर की विचारधारा और उनकी जन-पक्षधरता-डॉ० धनंजय कुमार दुबे	1580
श्रीमद्भगवद्गीता तथा मनुस्मृति में सदाचार अनुशीलन-प्रवीण कुमार	1586
सगुण कवि तुलसीदास के काव्य - सिद्धान्त-मधु अरोड़ा; अर्चना कुमारी	1590
महावीरचरिते तात्कालिक - समाजसंस्कृति-अनिता कौशिक:	1594
गरुड पुराणे कुष्ठ रोग: एकं विवेचनम्-संजय: कुमार:	1599
सिक्कों की उत्पत्ति, विकास एवं उनका महत्त्व-अंजू मलिक	1602
शक्तिपात विद्या की दार्शनिक रूपरेखा-मनीष कुमार; डॉ० बिमान पॉल	1605
स्मृति विकास में योग दर्शन की भूमिका-प्रमोद कुमार; डॉ० पारन गौड़ा	1609
पं. बस्तीराम के काव्य में मानवतावाद-पूनम	1612
हरियाणवी लोकगीतों में यथार्थ-चित्रण-सुमन	1616
प्रवासी महाकवि हरिशंकर 'आदेश' के महाकाव्यों में सौंदर्य-चित्रण-डॉ० मनोज कुमार; डॉ० विकास कुमार	1619
प्राचीन भारत में 'युद्ध एवम् शांति' नैतिकता या अनैतिकता के संदर्भ में-डॉ० आरती यादव	1622
शारीरिक फिटनेस तथा मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन : कुमाऊं क्षेत्र के जनजातीय तथा शहरी छात्रों के संदर्भ में-डॉ० रश्मि पंत	1625
सोशल मीडिया और फेक न्यूज का जम्मू के युवाओं पर प्रभाव : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन-अरविंद	1630
कौटिल्य का राजनीतिक दर्शन-संतोष कुमार साह	1634
राजस्थान के लोकजीवन में लोकनृत्य की परंपरा एवं स्वरूप-नारायण सिंह	1637
साठोत्तरी हिन्दी प्रमुख ऐतिहासिक एकांकीयाँ-रमेश चौहान; डॉ० एस०के० पवार	1641
मिथिला की लोक कला 'सिक्की' एक परिचय-शंभू कुमार गुप्ता	1645
भारतीय आर्थिक नियोजन में उपेक्षित किंतु प्रासंगिक : एकात्म अर्थचिंतन-धीरज कुमार पारीक	1647
मीरा कांत के नाटक : द्वन्द्व के संदर्भ में-गुरप्रीत कौर	1651
यात्रा साहित्य में हिमाचल : संदर्भ और प्रवृत्ति-डॉ० सुनीता शर्मा; श्वेता शर्मा	1653
कुण्डा : बट्टी सिंह भाटिया के कथा-साहित्य के संदर्भ में-सुषमा देवी	1658
प्रयाग, कुंभ एवं भारतीय समाज-पूजा	1661
तीन एकांत : कहानी और नाट्य रूपांतरण-चन्दन कुमार	1664
मानवीय संघर्ष की महागाथा ...रंगभूमि-डॉ० अमिता तिवारी	1668
राजस्थान में जनशिकायत निवारण-तंत्र और ई-गवर्नेंस-विनोद कुमार	1671
पूर्वोत्तर का यथार्थ : वह भी कोई देश है महाराज-स्वाति चौधरी	1680
योगोपनिषदों में उद्धृत प्रणवः एक विवेचन-नम्रता चौहान; डॉ० शाम गणपत तिखे	1682
मासिक धर्म के पूर्व योगाभ्यास का महत्त्वः एक अध्ययन-नेहा सैनी; डॉ० शाम गणपत तीखे	1688
स्वप्रबन्धन में चित्तशुद्धि की भूमिकाः महर्षि पतंजलि एवं महत्मा बुद्ध के संदर्भ में-अखिलेश कुमार विश्वकर्मा	1693
चित्रा मुद्गल की कहानियों में चित्रित नारी-जीवन : स्वरूप, संघर्ष और अस्मिता की खोज-दीक्षा कोंवर	1697
भाषाविज्ञान का अन्य ज्ञान- विज्ञान से संबंध-डॉ० वंदना शर्मा; डॉ० वीरेंद्र सिंह	1700
कश्मीरी विद्वानों का संस्कृत साहित्य को योगदान-मीना देवी	1703
कृषि-क्षेत्र में तकनीकी परिवर्तन हेतु विभिन्न समस्याओं का अध्ययन-अरुण कुमार	1706
राष्ट्र निर्माण में भारतीय संसद की भूमिकाः एक अवलोकन-डॉ० सुनीता मंगला; डॉ० निवेदिता गिरि	1709
राहुल का बौद्ध दर्शन और मानवतावादी सन्दर्भ-सत्य प्रकाश पाण्डेय	1715
प्रवासी मजदूरों का अपने घर की ओर हो रहा पलायनः इससे निर्मित चुनौतियाँ एवं अवसरों का अध्ययन-डॉ० लक्ष्मीकांत शिवदास हरणे	1719
भारत में प्रवासी श्रमिकों का वैश्विक महामारी के दौरान पलायन : चुनौतियाँ एवं रणनीति-डॉ० संजू चलाना बजाज	1723
सार्वभौमिक शिक्षा दर्शन : श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन-डॉ० अनिता जोशी; सुनीता जोशी	1727

छत्तीसगढ़ के नवगीतकारों के नवगीतो में राजनीतिक विडम्बनाएँ-डॉ० स्वामीराम बंजारे; शैलेन्द्र कुमार साहू	1732
बौद्ध दर्शन में ध्यान का स्वरूप-धनंजय कुमार जैन; डॉ० संतोष प्रियदर्शी	1736
भविष्य के भारत में प्राचीन भारतीय विज्ञान की भूमिका-डॉ० विजय कुमार	1741
भारत में कृषि पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का भौगोलिक अध्ययन-चिरन्जी लाल रैगर	1745
भारतीय हिंदी साहित्य में किसानों की त्रासदी-होशियार सिंह	1750
इन्टरनेट और मोबाइल के व्यसन से मुक्ति में योग की उपयोगिता-कृष्णाबेन संजयकुमार ब्रह्मभट्ट; डॉ० बिमान पॉल	1753
1857 की क्रांति के कारणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन-अमित कुमार; राजेश कुमार	1757
'भोलाराम का जीव' व्यंग्य-रचना में अभिव्यक्त सामाजिक विसंगतियाँ-चुन्नीलाल	1761
चंद्रकांता उपन्यास "कथा सतीसर" में कश्मीर समस्या के विविध आयाम-सुखबीर कौर	1764
बिहार का कृषि रोड मैप: किसानों के समग्र विकास का प्रतीक-दीपक कुमार झा	1766
मानसिक स्वास्थ्य के संवर्द्धन में संगीत की भूमिका: शिक्षकों के विशेष सन्दर्भ में विवेचनात्मक अध्ययन-अलका सिंह	1772
किसान अस्मिता का संकट और 'फॉस'-डॉ० बिजेन्द्र कुमार	1777
ध्रुवस्वामिनी: प्रसाद की नयी संकल्पना-डॉ० बिजय रवानी	1781
आर्थिक विकास और पर्यावरण-श्रीमती कविता	1785
नई शिक्षा नीति, 2020 के आधार पर उच्च शिक्षा में परिवर्तन-डॉ० रवींद्र कांबले	1789
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में नयी तालीम के तत्व अनुसार स्कूली छात्रों में व्यवसाय शिक्षा के लिए सेवांतर्गत अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम का उपयोजन-श्रीमती भावना पाटीलबुवा राजनोर; डॉ० संजीवनी राजेश महाले	1792
नई शिक्षा नीति 2020 के साथ पढ़ेगा भारत-डॉ० दयाराम दुधाराम पवार	1798
वंचना से विकास की ओर शैक्षणिक संदर्भ में विविधता का अध्ययन : एक नीतिगत समझ-मांडवी दीक्षित	1801
प्राचीन मूर्तिशिल्प में पार्वती: विश्लेषणात्मक अध्ययन-राजेश कुमार जाट	1805
गरासिया जनजाति की धार्मिक अलौकिक शक्तियाँ: एक विवेचन-गोगराज चौधरी	1810
लोक-नीति और राष्ट्र निर्माण: भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मूल्यांकन-मोहम्मद राशिद खान	1814
वर्तमान परिदृश्य में महिला सशक्तिकरण- बाधाएँ एवं सुझाव-डॉ० उमाशंकर त्रिपाठी	1819
संस्कृत नाट्य शास्त्र में वर्णित नायक-नायिका और महाकवि कालिदास की रचनाओं पर उसका प्रभाव-तरुण कुमार सिंह	1822
भारत में चुनाव, लोकतंत्र और मीडिया-प्रतिभा सिंह	1825
मानवता के सरोकार और अज्ञेय का काव्य-माधुरी शर्मा	1827
भारतीय योग परम्परा एवं नाथपंथ : एक तुलनात्मक अध्ययन-कुँवर रणजय सिंह	1833
छत्तीसगढ़ के लोक गीत और नारी सशक्तिकरण-डॉ० तृषा शर्मा; डॉ० सुधीर शर्मा	1836
कुलिश की दृष्टि में राजनीति और पत्रकारिता-डॉ० जितेन्द्र द्विवेदी	1839
हिंदी साहित्य में काल क्रमानुसार अभिजात्य एवं लोक का संबंध-सचीन्द्र नाथ	1842
नाट्यशास्त्र में वर्णित संगीत का स्वरूप-अशोक बैरागी; डॉ० दीपिका श्रीवास्तव	1845
मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में नारी जीवन-राधा शर्मा; डॉ० स्नेहलता निर्मलकर	1848
हिंदी पत्रकारिता और राष्ट्रधर्म: एक विमर्श-सूर्य प्रकाश मिश्र	1852
कोविड-19 संक्रमण एवं संतुलित आहार-डॉ० स्नेह लता	1854
महिलाएँ एवं सामाजिक न्याय - एक समाजशास्त्रीय अध्ययन-डॉ० दिलीप कुमार सोनी	1858
माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव: एक अध्ययन-विमला कुर्रे; डॉ० सुनील कुमार सेन	1862
इक्कीसवीं सदी की कहानियों में चित्रित वर्तमान परिदृश्य-डॉ० पठान रहीम खान	1869
राजस्थान में पशुपालन का महत्व: एक भौगोलिक मूल्यांकन व विश्लेषण-नीलू चतुर्वेदी	1873
हिन्दी लघुकथा में वृद्ध संवेदना का चित्रण-सरिता कुमावत	1878
रीवा सम्भाग में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजातियों में पर्यावरण चेतना: एक भौगोलिक अध्ययन-अरुणेन्द्र बहादुर सिंह; सितेश भारती	1882
मानव जीवन में आकांक्षा एवं आकांक्षा स्तर की उपदेयता-विनोद कुमार; डॉ० कुमुद त्रिपाठी	1886

प्रवासी जीवन की अभिव्यक्ति के सन्दर्भ में उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में परम्परा और प्रगति का अध्ययन—सोनी यादव	1890
नरेश मेहता द्वारा रचित धूमकेतु और अरण्या का विवेचनात्मक अध्ययन—अशोक कुमार यादव	1893
“वर्तमान सन्दर्भ में श्रीमद्भगवद्गीता की उपादेयता”—डॉ० बन्दना सिंह	1896
काशीनाथ सिंह की कहानियों में यथार्थवाद का चित्रण—देवव्रत यादव	1899
उच्च शिक्षा तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति—डॉ० ममता मणि त्रिपाठी	1902
नैषधीयचरितम् महाकाव्य में नल के व्यक्तित्व का मनोवैज्ञानिक अध्ययन—डॉ० अमृत कौशल	1905
मीनाक्षी स्वामी के उपन्यास ‘भूभल’ में स्त्री चेतना—विजय कुमार पाल	1909
डॉ० नगेन्द्र द्वारा रस निष्पत्ति के सम्बन्ध में मौलिक विचारों का अध्ययन—विशाल मिश्र	1913
हिंदी साहित्य में स्त्री -विमर्श—डॉ० दिनेश श्रीवास	1916
राजस्थान के बाढ़ सम्भाव्य पूर्वी मैदानी कृषि जलवायु प्रदेश में फसल प्रतिरूप परिवर्तन का भौगोलिक अध्ययन—अमिता बाई यादव	1919
जैन-तीर्थ-स्थलों से जुड़े प्रबन्धन में स्वार्थ-परक राजनीति का प्रवेश—पवन कुमार जैन	1926
कुसुम अंसल साहित्य में पारिवारिक रिश्तों का बदलता स्वरूप—डॉ० विक्रम सिंह; डॉ० सुनीता	1928
“मुरैना जनपद के मन्दिरों में प्रतिबिम्बित प्राचीन भारतीय मन्दिर स्थापत्य का विकासक्रम”—प्रो० प्रभात कुमार; गौरव सिंह	1930
कोरोना संकट का भारतीय अर्थव्यवस्था पर दुष्प्रभाव—डॉ० संतोष कुमार लाल	1934
सूर्यबाला की कहानियों में वृद्ध और आधुनिकता के व्यंग्यात्मक पहलू—नरेंद्र कुमार स्वर्णकार	1937
अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में ‘जेण्डर पाठ्यक्रम’ की आवश्यकता क्यों—वन्दना शर्मा; प्रो० वन्दना गोस्वामी; डॉ० अजय सुराणा	1940
व्याकरण शास्त्रे प्रमाणम्—डॉ० सुभाषचन्द्र मीणा	1943
एक राष्ट्र एक चुनाव: एक विश्लेषण—गुलशन कुमार; डॉ० मानसी सिन्हा	1947
आधुनिक शिक्षा प्रणाली का समाजशास्त्रीय मूल्यांकन—डॉ० सुशील कुमार सिंह	1950
तुलसीदास के काव्य में लोकमंगल—डॉ० राम टहल दास	1954
हठयोग: आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता—ज्योति शर्मा; प्रो० गणेश शंकर गिरि	1959
कृष्णा सोबती का अंतिम उपन्यास ‘चन्ना’: विश्लेषणात्मक अध्ययन—पूजा मिश्रा	1962
नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री जीवन की समस्या—सूर्यकांत एम०बी०	1966
हरियाणा की प्रतिनिधि हिंदी कहानियां—डॉ० ओम प्रकाश सैनी	1969
भारतीय संदर्भ में आतंकवाद के कारण: एक अध्ययन—सुरेन्द्र प्रसाद	1973
योगिता यादव की कहानियों ‘अनहोनी’ तथा ‘भेड़िया’ में नारी अस्मिता का मुद्दा—प्रेम सिंह	1977
आनंदमठ उपन्यास की समीक्षा—डॉ० प्रीति राय	1980
मधुकर अष्टाना के नवगीतों में यथार्थबोध—डॉ० प्रीति राय; हरकेश कुमार	1983
सामाजिक परिवर्तन के वाहक बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर एक अवलोकन—सुरेन्द्र सिंह	1988
डॉ० भीमराव अम्बेडकर का राष्ट्रवाद—डॉ० चन्द्रशेखर आजाद	1992
वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जल संग्रहण की प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन—हरिओम; डॉ० प्रदीप कुमार शर्मा	1995
योगिता यादव के कथा साहित्य में मानवीय मूल्यों की अनुभूति एवं अभिव्यक्ति—सुमन	1997
हरियाणा पर्यटन:- चुनौतियां एवं सुझाव—राजेश कुमार; डॉ० प्रदीप कुमार शर्मा	2000
नागरिकता (संशोधन) अधिनियम 2019—डॉ० अविनाश कुमार लाल; श्रीमती अविन्दना जॉन	2005
“वैदिक मनोविज्ञान”—अनामिका वर्मा	2010
गोंड जनजातीय महिलाओं की स्थिति का ऐतिहासिक विश्लेषण (कांकर जिला के विशेष संदर्भ में)—डॉ० बन्सो नुरुटी	2013
देवेन्द्र कुमार बंगाली की कविताओं में जनपक्षधरता—डॉ० राम पाण्डेय	2019
गदल का प्रासंगिक-विमर्श—डॉ० रमेशकुमार टण्डन	2022
भारतीय संविधान के निर्माण में डॉ० भीमराव रामजी अम्बेडकर का अवदान—डॉ० विजय कुमार	2025
दलित स्त्री-अस्मिता का कोरस : सुशीला टाकभौरे की कविताएं—कार्तिक राय	2029
कविता के आइने में थर्ड जेंडर—डॉ० शबाना हबीब	2032
उत्तर प्रदेश की राजनीति में महिला सहभागिता—डॉ० प्रमिला यादव	2038

दलित-विमर्श और रामचरितमानस-प्रो० प्रदीप श्रीधर	2042
लैंगिक (जेण्डर) परिप्रेक्ष्य में अर्थशास्त्र पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण-जयंती; डॉ० ज्योति कुमारी	2047
आयु वर्ग एवं लैंगिक भेद का इन्सेप्लाइटिस से सम्बन्ध : उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जनपद के विशेष सन्दर्भ में -अमरनाथ जायसवाल; डॉ० साधना श्रीवास्तव	2058
भारतीय विदेश नीति में बदलाव व उभरती चुनौतियाँ-चेतन बहोत	2062
विश्व में बढ़ता प्रवासी हिंदी साहित्य का योगदान-डॉ० सुमन फुलारा	2066
अवध की प्राथमिक शिक्षा का स्वरूप (19वीं शताब्दी)-गणेश कुमार	2068
विभाजन के केंद्र में गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिंदुस्तान-निधि वर्मा	2071
पंजाब में विधायी नेतृत्व के राजनीतिक लक्ष्य (1997-2017)-डॉ० सुनीता रानी	2074
वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में भारतीय महिलाओं की दशा एवं दिशा-रक्षा सिंह; प्रो० अमिता सिंह	2079
मनरेगा: गाँवों में रोजगार सृजन का सुलभ साधन-राकेश कुमार वर्मा; डॉ० राम सेवक सिंह यादव	2084
संस्कृति, परंपरा और लोक: समकालीन अर्थगत विश्लेषण-प्रवीण कुमार जोशी	2088
हरियाणा की त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी व शैक्षणिक आधार पर तुलनात्मक अध्ययन -सुरेन्द्र; डॉ० तिलक राज आहुजा	2091
प्रशासन, शहरीकरण और प्रदूषण-रामावतार आर्य	2098
पूर्वी उत्तर प्रदेश तराई में अनुसूचित जनजाति जनसंख्या की आर्थिक संरचना-डॉ० संजीव कुमार सिंह; सीमा सिंह; डॉ० अभिषेक सिंह	2100
इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यासों का कथात्मक वैविध्य-दीप्ति यादव	2107
बिहार में महिलाओं की प्रशासनिक भागीदारी का समीक्षात्मक अध्ययन-डॉ० अनिल झा	2111
शिक्षकों में हास्यवृत्ति और उनकी शिक्षण प्रभावकता-प्रो० वन्दना गोस्वामी; रेखा बागडा	2115
दीनदयाल उपाध्याय और मीडिया माध्यम-राजकुमार भारद्वाज	2117
जे. कृष्णमूर्ति की दृष्टि में शिक्षकों, छात्रों तथा समाज के प्रति विद्यालयों की भूमिका का अध्ययन-डॉ० चन्द्रावती जोशी	2121
भारतीय नारी मुक्ति के संदर्भ में महात्मा गाँधी का योगदान-सुनिता कुमारी	2126
'मोरचे' का समीक्षात्मक अध्ययन (सुषम बेदी के विशेष संदर्भ में)-संगीता यादव	2129
शिक्षक और मूल्य शिक्षा: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन-रफत फातिमा; डॉ० नलिनी मिश्रा	2132
यशपाल का स्त्री चिंतन-डॉ० अभिषेक मिश्र	2136
समाज के सजग साहित्यकार जयप्रकाश कर्दम-श्रीमती पंकज यादव	2140
शिवपुराण में अरण्यवासी एक विवेचना-डॉ० गोपेश कुमार तिवारी	2142
छत्तीसगढ़ के कुष्ठ आश्रम और इसकी पुनर्वास योजना का ऐतिहासिक विश्लेषण (धमतरी जिले की शांतिपुर कुष्ठ आश्रम के विशेष संदर्भ में)-रणजीत कुमार; डॉ० बन्सो नुरुटी	2145
छत्तीसगढ़ में बैंको द्वारा प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों में वितरित ऋणों का विश्लेषण: "कृषि ऋणों" के विशेष संदर्भ में -श्रीमती भूमिका शर्मा; डॉ० अर्चना सेठी	2150
कोरोना काल में बालकों के सामाजिक व शैक्षणिक कौशल विकास में ऑनलाइन कक्षाओं के दुष्प्रभावों का मनोसामाजिक अध्ययन (रीवा जिले के शहरी बालक-बालिकाओं के संदर्भ में)-डॉ० सुनीत कुमार तिवारी; श्रीमती निर्मला तिवारी	2155
कुँवर नारायण की कविताओं में जीवन-बोध-कुमार सौरभ	2161
राजा राम मोहन राय के धार्मिक, सामाजिक सुधार एवं वर्तमान में हिन्दुत्व की अवधारणा : एक समीक्षात्मक अध्ययन -डॉ० श्याम शंकर प्रसाद गुप्ता	2165
मोती लाल साकी का कश्मीर साहित्य को योगदान-परवेजा अखतर	2170
शिक्षक ही समाज का शिल्पकार और मार्गदर्शक-डॉ० कल्पना जैन; डॉ० रत्नेश कुमार जैन	2173
हिमाचल की कहानियों में अवसरवादिता और प्रशासनिक तंत्र में भ्रष्टाचार -डॉ० ममता	2178
रामायण में प्रकृति-डॉ० मौमिता भट्टाचार्य	2182
"जनपद चम्पावत में ग्रामीण व्यावसायिक स्वरूप का अध्ययन"-सन्तोष कुमार सिंह	2185
हिन्दी व्यंग्यालोचन की परंपरा और डॉ. सुरेश माहेश्वरी का योगदान-श्रीमती आँचल श्रीवास्तव; श्रीमती मीतू बरसैयॉ	2189
वर्तमान परिप्रेक्ष्य में परम्परागत बिरसू का अध्ययन-गोपाल शर्मा	2192

बक्सर से प्राप्त प्राक् मौर्यकालीन मृणमूर्ति कला-मंदीप कुमार चौरसिया	2196
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्राचीन भारतीय शिक्षा की चौसठ कलाओं का समावेश-डॉ० श्री प्रकाश मिश्र	2200
'मेरा बचपन मेरे कंधों पर' में चित्रित जीवन-संघर्ष-डॉ० राम किशोर यादव	2205
हिन्दी सिनेमा के गीतों में सावन और बारिश-डॉ० अनुपमा श्रीवास्तव	2209
पटना महानगर के पूर्वी भाग में आवासीय भूमि उपयोग की गतिशीलता: एक भौगोलिक विश्लेषण-नीता कुमारी झा	2217
कला में अमूर्तन की सीमा: बनारस के सन्दर्भ में विजय सिंह के चित्र का संक्षिप्त अवलोकन-शशि कला सिंह	2223
प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी एवं भारतीय विदेश नीति: एक अवलोकन-डॉ० अलका चतुर्वेदी	2227
अज्ञेय के उपन्यासों में व्यक्तिवादी पात्रों की भाषा शैली-डॉ० रानी बाला गौड़; गरिमा वर्मा	2229
'शिवमूर्ति के कथा साहित्य में बदलते समकालीन ग्राम्य जीवन का परिदृश्य'-डॉ० रानी बाला गौड़; मनीष कुमार	2232
मध्यकालीन भारत में भक्ति का वास्तविक और व्यावहारिक पथ और आधुनिक समाज में इसकी प्रकृति और प्रभाव -मिथिलेश कुमार मौर्य; डॉ० अजीत कुमार मिश्रा	2234
सुल्तानपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन -शशि मिश्रा; डॉ० अखिलेश कुमार श्रीवास्तव	2237
फर्रुखाबाद जनपद के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन-डॉ० रमाशंकर	2241
समकालीन कथा साहित्य में स्त्री-पुरुष संबंध-सोवनी मईड़ा	2244
मधु काँकरिया के 'सलाम आखिरी' उपन्यास में अभिव्यक्त वेश्या जीवन-कुमारी पूनम चौहान	2249
अहिंसा एवम् सत्याग्रह का गांधीवादी दर्शन और युवा-डॉ० अरविंद कुमार	2252
रविन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों का एक अध्ययन-डॉ० विजय कुमार	2255
छत्तीसगढ़ी कविता की आलोचना में डॉ. बलदेव का प्रदेश-श्रीमती वंदना जायसवाल; डॉ० स्नेहलता निर्मलकर	2258
हल्बा जनजाति के जन्म संस्कार में गतिशीलता एवं परिवर्तन: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (छत्तीसगढ़ के उत्तर बस्तर कांकेर जिला के विशेष संदर्भ में)-डॉ० प्रीति शर्मा; दूजराम टण्डन	2265
स्त्री "मुक्ति" की अवधारणा, "झूला नट" उपन्यास के संदर्भ में-प्रीति	2269
'पिंजरे की मैना' आत्मकथा में चित्रित स्त्री जीवन का यथार्थ-डॉ० निशा मुरलीधरन	2275
वर्तमान भारत में मानवाधिकारों का नारी संदर्भ (उत्पीड़न एवं विधिक संरक्षण)-रजनीकांत दीक्षित	2278
हिंदू मंदिर : अंग, संरचना तथा कार्य प्रणाली-आशुतोष पाण्डेय	2282
हिन्दी कविता में अभिव्यक्त गांधी दर्शन के विविध आयाम-डॉ० वीरेन्द्र सिंह	2285
पटना में बाल श्रमिकों की सामाजिक आर्थिक स्थिति का अवलोकन: एक भौगोलिक अध्ययन-रंजीता कुमारी	2292
बलराम अग्रवाल की लघुकथाओं में कथ्य की विविधता एवं शिल्पगत नवीनता-चन्द्रेश साहू; डॉ० प्रभात रंजन	2299
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सीखने का समग्र वातावरण-डॉ० अर्चना मिश्रा	2302
ग्राम सभा एवं ग्रामीण महिला सशक्तिकरण-डॉ० क्रान्ति प्रकाश	2306
भारतीय परिप्रेक्ष्य में व्यावसायिक शिक्षा की नई नीति 2020-डॉ० प्रिया सोनी खरे; सुनन्दा सिंह	2308
परिवार समाज और राष्ट्र के निर्माण में स्त्री शिक्षा की उपादेयता-डॉ० नम्रता जैन; डॉ० सुगंधा जैन	2312
पर्यावरणीय पर्यटन: सिद्धांत और अभ्यास-ईरा भारद्वाज	2316
गाँधी चिन्तन में सामाजिक रूपान्तरण का नैतिक आधार-महेन्द्र सिंह	2320
भारतीय काव्यशास्त्र में काव्य रूप-डॉ० राजेश कुमार गर्ग	2325
आदिवासी साहित्य में नारी अस्मिता-गौरव सिंह	2328
बौद्धकालीन शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि-सरोज कुमारी	2333
मोदी काल में भारत का विदेश नीति: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन-सरिता कुमारी	2339
नई शिक्षा नीति 2020 : शिक्षक शिक्षा के लिए एक चुनौती-शाजिया सुल्तान; पायल शर्मा	2343
राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की बुनियादी या बेसिक शिक्षा की वर्तमान समय में प्रासंगिकता-विनय कुमार; धर्मेन्द्र सिंह	2347
भरतपुर रियासत की जनजागृति में यातायात साधनों की भूमिका-नीतू जेवरिया	2351

स्त्री विमर्श के संदर्भ में प्रभा खेतान का उपन्यास 'छिन्नमस्ता'—सरिता कुमारी	2355
विन्ध्याचल के पण्डे: व्यावसायिक एवं धार्मिक पक्ष—प्रिया चौरसिया	2359
महात्मा गांधी की ग्राम विकास दृष्टि—डॉ० विकास यादव	2363
ग्रामीण विकास में पंचायती राज संस्थाओं की भूमिका - महिलाओं के उत्थान के सन्दर्भ में—डॉ० कृष्णदेव कुमार भारती	2366
छत्तीसगढ़ की लोकसंस्कृति में डॉ० रमाकांत सोनी के साहित्यों का अध्ययन—सरोजनी डडसेना; डॉ० रेखा दुबे	2369
माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की व्यवसायिक प्रतिबद्धता का अध्ययन—डॉ० समर बहादुर सिंह	2376
कुसुम अंसल के उपन्यासों में विविध विभिन्न समस्याओं से ग्रस्त नारी चरित्र का विश्लेषण—नारायण रमण चौधरी	2379
हठयोग परम्परा में वर्णित चारित्रिक तथा व्यवहारिक उत्कर्ष के साधन (वशिष्ट संहिता तथा घेरण्ड संहिता के विशेष सन्दर्भ में)—पवित्रा देवी; डॉ० गोविन्द प्रसाद मिश्र; डॉ० सुखबीर सिंह	2382
हिंदी समाचार पत्रों के संपादकीय विषय वस्तु का विश्लेषण (दैनिक जागरण एवं नवभारत टाइम्स दिल्ली के विशेष संदर्भ में)—बिमलेश कुमार	2386
पारिजात उपन्यास में सांस्कृतिक मूल्य—डॉ० दीपिका विजयवर्गीय	2391
विवादों को कम करने के लिए तनाव मुक्त कार्य संस्कृति की आवश्यकता—सुश्री कंचन शेखावत	2393
कैदियों की चिन्ता स्तर पर प्रेक्षाध्यान के प्रभाव का अध्ययन—डॉ० निर्मला भास्कर; राजेश भयाना; डॉ० अशोक भास्कर	2395
राष्ट्रीय राजनीति में पर्यावरणीय मुद्दों पर बदलती विश्व सहमति—डॉ० नलिनी लता सचान	2398
अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में मानवाधिकार—डॉ० पुष्कर पाण्डेय	2401
ग्रामीण युवाओं पर वैश्वीकृत जनसंचार माध्यमों का प्रभाव—विमला देवी	2404
भारतीय संस्कृति और योग—डॉ० सितेश कुमार	2408
भारत—इजरायल : कृषि सहयोग—मनीष कुमार सिंह; डॉ० रामकृष्ण सिंह	2412
भारतीय समाज में नारी की भूमिका—डॉ० स्मिता जायसवाल; डॉ० आर० के० पाण्डेय	2416
अध्यापक शिक्षा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020—डॉ० बृजेश कुमार पाण्डेय	2418
बाबा रामदेव जी का योग एवं दर्शन—डॉ० प्रियंका शुक्ला	2421
वायुपुराण में दर्शन—तत्त्व—डॉ० गंगेश गुंजन	2424
भारतीय समाज - विकलांगता के परिप्रेक्ष्य में—सुमित्रा महरोल	2427
प्राच्य एवं पाश्चात्य शिक्षण पद्धतियों में समन्वय की आवश्यकता—सुनील कुमार उपाध्याय	2429
मौर्य काल से गुप्तकाल तक परिवर्तित होती न्याय व्यवस्था—डॉ० शरदेन्दु कुमार त्रिपाठी	2431
समग्र ग्रामीण विकास की अवधारणा एक समाजशास्त्रीय अध्ययन—विवेकानन्द सिंह; प्रोफेसर राम गणेश यादव	2434
सुमित्रानन्दन पंत एवं महादेवी वर्मा के काव्य में प्रकृति के विविध रूप का तुलनात्मक अध्ययन—डॉ० श्रवण राम	2437
डॉ० भीमराव अम्बेडकर का निरीश्वरवाद—डॉ० संजय कुमार मिश्र	2441
शाक्त तंत्र की दृष्टि में ध्यान और उसके सहायक अंग—ममता चौधरी; डॉ० उपेन्द्र बाबू खत्री	2444
भारतीय शिक्षा में एनी बेसेण्ट का अवदान—डॉ० के०डी० तिवारी	2447
बिलासपुर शहर के झुग्गी झोपड़ी निवासरत् लोगों को मिलने वाले शासकीय योजनाओं का अध्ययन—कु० आरती तिकी; डॉ० ऋचा यादव	2452
'चाक' उपन्यास में नारी विमर्श—श्रीमती गीता सतीश पोस्ते; डॉ० सन्मुख नागनाथ मुच्छटे	2457
शिक्षण के विकास में तकनीकी और संचार का योगदान—डॉ० दिनेश कुमार	2460
सिद्धियों की वर्तमान में प्रासंगिकता—डॉ० मनोज कुमार टाक	2463
संत आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में संत रैदास—राजेश कुमार यादव	2466

गांधी के राजनैतिक विचार—माया यादव; डॉ० संध्या जायसवाल	2470
मानवीय उत्कर्ष निमित्त योगासन शिक्षण/प्रशिक्षण की अवधारणा (हठयोग परम्परा के विशेष सन्दर्भ में)—जयदेव	2474
स्मार्टफोन के उपयोग का किशोर विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन पर प्रभाव—तुलसी राम; डॉ० चंद्रकांत शर्मा	2477
सोशल मीडिया की तर्कसंगिकता का एक वस्तुनिष्ठ अध्ययन—डॉ० सेवा सिंह बाजवा	2482
मॉरीशस में हिंदी व गिरमिटिया मजदूरों की स्थिति—अमित कुमार गुप्ता; प्रो० कनुभाई निनामा	2486
भारतीय समाज और राजनीति में महिलाओं की स्थिति—डॉ० सुषमा कुमारी	2489
औपनिवेशिक बिहार में तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा—रश्मि कुमारी	2491
समासे पूर्वनिपाततत्त्वम्—डॉ० अनुप कुमार रानो	2496
बाबासाहेब डॉ० भीमराव अम्बेडकर एवं मानवाधिकार—कन्हैया प्रसाद	2501
कृष्णा अग्निहोत्री के कथा साहित्य में सामर्थ्यवान नारी—प्रोफेसर (डॉ०) राजिन्द्र पाल सिंह जोश; अनुराधा कुमारी	2504
बाल साहित्य में कहानी—उपन्यास का योगदान—डॉ० सुषमा कुमारी	2507
समाधि सिद्धि निमित्त प्राणायाम की उपादेयता - एक समीक्षा—मोहित आर्य	2510
हिंदी साहित्य में छायावाद काव्य: प्रकृति का काल्पनिक एवं प्रेमपूर्ण चित्र—अरविन्द कुमार दीक्षित	2513
भारतीय दर्शन में योग का महत्त्व—संजय कुमार	2517
उषा प्रियंवदा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व—अमिता शुक्ला; डॉ० ममता पंत	2520
अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्त्व—डॉ० नवल किशोर बैठा	2524
डिजिटल मार्केटिंग: व्यापार और मार्केटिंग का बदलता स्वरूप—डॉ० साद बिन हामीद; डॉ० तनवीर अहसन निजामी	2527
दर्शनभेदाः—प्रो० प्रसून दत्त सिंह	2529
पण्डिताक्षमारावमहोदयाया: कथामुक्तावल्या: समाजिकविश्लेषणम्—श्री० विश्वजित् वर्मन	2531
मलयालम के लोक गीत और केरल की संस्कृति—डॉ० सीमा चन्द्रन	2535
दृश्य-श्रव्य सामग्री प्रयोग कौशल—डॉ० सविता राय	2538
वर्तमान समय में गुरुकुलीय शिक्षा की प्रासङ्गिकता—डॉ० श्याम कुमार झा	2544
स्थानीय दलों में महिलाओं की राजनीतिक प्रतिनिधित्व—अभिषेक कुमार	2548
श्री नरेश मेहता के खण्डकाव्यों में चेतना—श्रीमती सुमित्रा यादव	2551
ग्वालियर घराने के प्रमुख स्तम्भ: पण्डित कृष्णराव शंकर पण्डित जी का व्यक्तित्व व कृतित्व—चाँदनी; डॉ० लोकाेश शर्मा	2556
‘इन्हीं हथियारों से’ उपन्यास में सामाजिक चित्रण—किरण देवी	2561
अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महिला मानवाधिकार एवं उनकी स्थिति—पूनम यादव; प्रो० रणबीर सिंह गुलिया	2565
हरियाणा के प्रसिद्ध सांगी चंद्रलाल भाट की गुरु शिष्य परंपरा—रेखा; डॉ० मुकेश कुमार	2568
प्रो० अभय मोर्य कृत ‘त्रासदी’ उपन्यास में चित्रित समाज—रीतू; डॉ० सुमन राठी	2572
हरियाणा की सांग कला में श्री खीमचन्द स्वामी का अवदान—योगेश कुमार	2575
कौटिल्य अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों पर याज्ञवल्क्यस्मृति का प्रभाव—डॉ० इशरत सुल्ताना	2579
अयोध्या सिंह उपाध्याय का भाषायी चिन्तन—डॉ० अनिल कुमार	2584
पर्णशबरी : प्रकृति का चिकित्सकीय स्वरूप—पूजा सिंह	2588
आधुनिक हिंदी साहित्य में नारी विमर्श—निशु सिंहा; प्रो० अजय कुमार	2593
समाज में लैंगिक असमानता का स्वरूप एवं महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन—सीमा सिंह; प्रो० बन्दना गौड़	2595

कवि अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा प्रयुक्त विविध काव्य रूप—जसप्रीत कौर चावला—डॉ० राजेन्द्र सिंह 'साहिल'	2603
जनसंख्या का भू-जोतों के आकार एवं संख्या पर प्रभाव: प्रयागराज जनपद का एक प्रतीक अध्ययन—वेद प्रकाश वेदी	2609
इलाहाबाद जनपद में गंगा और यमुना नदी में प्रदूषण का स्तर: एक भौगोलिक अध्ययन—वृजेश कुमार	2615
स्वतंत्रतापूर्व आदिवासी उन्नति के लिए ईसाई मिशनरियों का कार्य—डॉ० शशिकांत गोकुळ साबळे	2619
मुगलकालीन समाज और राजस्व व्यवस्था के बीच की महत्वपूर्ण कड़ी: जमींदार वर्ग—रंजु कुमारी	2622
भारतीय संस्कृति और नई शिक्षा नीति—अशोक कुमार वर्मा	2625
सर्वोदय: महात्मा गांधी—के० एम० छाया	2628
अथर्ववेद में जादू, टोना और टोटका मंत्र—डॉ० राजकुमार	2631
महात्मा गाँधी और स्वदेशी आन्दोलन—रितेश कुमार	2636
हिंदी कथा साहित्य में आदिवासी अस्मिता विशेषकर महाश्वेता देवी का उपन्यास—समीर कुमार	2639
अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की ग्रामीण बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन—शक्ति सिंह	2643
मायानन्द मिश्रक काव्यमे चित्रित समाज—पुष्पम ज्योति	2646
सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का विलय : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन—नंदिता राय	2650
गृहविज्ञान विषय की छात्राओं का दृश्य विज्ञापनों के प्रति विचारों का अध्ययन—डॉ० प्रतिभा पाल	2654
भारत की आंतरिक सुरक्षा - समस्याएं और समाधान—डॉ० हिमांशु यादव	2656
हिंदी मीडिया का समाजिक सरोकार: एक भाषिक विश्लेषण—डॉ० राकेश कुमार दुबे	2660
वेद एवं चार्वाक दर्शन : आधुनिक जीवन शैली के सन्दर्भ में—डॉ० विद्यापति गौतम	2664
संप्रेषण के लिए शब्द ही माध्यम—डॉ० माला मिश्र	2667
पुराणोल्लिखत दशावतार वर्णन में मानव के आनुवांशिक विकास की प्रतीकात्मकता एवं वैज्ञानिकता—डॉ० अनीता	2670
काश्मीर शैवदर्शन में सृष्टिप्रक्रिया : तत्त्वमीमांसीय दृष्टिकोण—डॉ० प्रदीप	2674
भारतीय दर्शन में प्रत्यक्ष प्रमाण का स्वरूप—डॉ० श्रीप्रकाश तिवारी	2678
महादेवी की विराट प्रेमानुभूति—डॉ० वर्षा अग्रवाल	2681
साम्प्रदायिकता और साहित्य—बृजेश कुमार	2684
छात्राध्यापकों के मूल्यांकन का अध्ययन—प्रज्ञा सिंह	2686
भारत में सुशासन: पहल, चुनौतियाँ एवं सुझाव—डॉ० शैलेश कुमार राम	2691
इतिहास—लेखन और राजेन्द्र प्रसाद का दृष्टिकोण: एक अध्ययन—डॉ० माया नन्द	
चक्रवर्ती का वैभव—डॉ० समणी संगीतप्रज्ञा	2702
उत्तराखण्ड, हिमाचल व जम्मू कश्मीर राज्य के गूजर पशुचारकों का राजनैतिक क्षेत्र में तुलनात्मक अध्ययन—गौरव कुमार	2709
भारतेन्दु और उनके मण्डल के नाटककार—डॉ० राजेश कुमार; डॉ० गिरीश चन्द्र जोशी	2713
हिंदी नाट्य-साहित्य का इतिहास—डॉ० गिरीश चंद्र जोशी	2716
चंद्रकांता के उपन्यासों में नारी चित्रण—पूजा सिंह	2720
बौद्ध परम्परा में स्वास्थ्य एवं चिकित्सा—विज्ञान—डा० पार्थ सारथी	2723
खाने की विकार में मीडिया की भूमिका महिलाओं के संदर्भ में—डॉ० सरिता कुमारी	2728
युग प्रवर्तक मुंशी प्रेमचंद का व्यक्तित्व एवं कृतित्व: एक अध्ययन—डॉ० हेमन्त सिंह कंवर	2732
नगा समस्या: आंतरिक सुरक्षा के विशेष संदर्भ में—डॉ० मनीष कुमार साव	2737
मानव अधिकार और भारतीय प्रजातंत्र—डॉ० आशुतोष पाण्डेय; संदीप कुमार सोनी	2740

कुरान में निहित शैक्षिक विचार एवं मूल्यों का अध्ययन—प्रभु दयाल	2743
माता-पिता के पालन-पोषण शैलियों के प्रभावों का अध्ययन, परिणाम और निष्कर्ष—मो० सैफ	2746
भारत में केन्द्र-राज्य संबंध: एक विश्लेषण—कुमार राजीव रंजन	2751
कौटिल्य अर्थशास्त्र: नीतिशास्त्र के संदर्भ में—इन्द्र जीत; डॉ० मो० मेराज अहमद	2754
बिहार में आंदोलन एवं दलित महिलाएं—श्वेता कुमारी	2757
दलित विमर्श: साहित्यिक परम्परा की प्रासंगिकता—डॉ० साधना	2760
समकालीन हिन्दी कविता: संवेदना और शिल्प की कसौटी पर—डॉ० आर०पी० वर्मा	2763
स्वतंत्रतापूर्व महात्मा गाँधी एवं अन्य पुरुष समाजसुधारकों का महिलोत्थान एवं स्त्रीवादी आंदोलनों पर प्रभाव एवं परिणाम: एक विवेचना—डॉ० प्रशांत द्विवेदी	2766
भारत में श्रमिक सुरक्षा और प्रमुख श्रम अधिनियम : एक विश्लेषण—डॉ० पुष्पराम गौतम	2769
उत्तराखण्ड में जाति व्यवस्था का विकास व वितरण—कु० बबीता आर्या	2773
“सद्गुणाधारित नैतिक चिन्तन की धारा में अरस्तू के सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र का उद्भव एवं विकास”—अपर्णा शुक्ला	2776
‘अथश्री प्रयाग कथा-युवाओं की व्यथा-कथा’—डॉ० जयश्री भण्डारी; कु० मीना	2780
औपनिषद परम्परा में ब्रह्म का स्वरूप तथा ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति में उपमान प्रमाण की उपादेयता (महर्षि दयानन्द सरस्वती के विशेष सन्दर्भ में) —उमेश कुमार; डॉ० अरुण कुमार सिंह	2782
भारत के नागरिकता संशोधन अधिनियम 2019 के वैश्विक प्रभाव—डॉ० पूजा गुप्ता	2790
भारत में मीडिया परीक्षण पर न्यायिक दृष्टिकोण—भारतेन्दु चौधरी; सर्वेश सोनी	2794
सूचना का अधिकार: वर्तमान परिदृश्य एवं न्यायिक दृष्टिकोण—डी. डी. मिश्रा	2798
राही मासूम रजा के उपन्यासों में राजनीतिक चेतना—डॉ० रेनु दीक्षित; प्रदीप कुमार	2801
‘अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में लोकगीत’—डॉ० रेनु दीक्षित; ईश्वर चन्द्र	2805
जनसंख्या के भौगोलिक वितरण में समरेखा जनसंख्या विभव मानचित्रण पद्धति का अनुप्रयोग—नरेन्द्र कुमार; ऋचा; पृथ्वीराज मीणा; एल.पी. लखेडा	2810
न्यायिक दार्शनिकता में लोक अदालतें—मंकेश पाण्डेय	2818
भारत में प्रेस और मीडिया की स्वतंत्रता के संबंध में संवैधानिक दृष्टिकोण—डॉ० अमित बंसल; गिरीश पाल	2821
भक्ति साहित्य का प्रादुर्भाव—डॉ० विश्वनाथ द्विवेदी	2825
स्त्री मन के विश्लेषक: गिरीश कारनाड—डॉ० नमस्या	2828
मोदी सरकार की विदेशनीति का रिपोर्ट कार्ड—डॉ० अरविन्द नेत्र पाण्डेय	2832
भारत और नयी वैश्विक व्यवस्था रूस के संदर्भ में—डॉ० धर्मेन्द्र कुमार उपाध्याय	2834
अशोक कुमार के कहानी संग्रह ‘खाकी में इंसान’ में आतंकवाद—पिंकी देवी	2837
‘भाग्य पर नहीं परिश्रम पर विश्वास करें’ पुस्तक की प्रमुख विशेषताएं—प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना	2839
बुद्धकालीन समाज में क्षत्रियों की स्थिति—अर्चना वत्स	2842
राजा मानसिंह (आमेर) के सांस्कृतिक योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन—भगवान सिंह शेखावत	2845
कृष्णा सोबती के साहित्य में नारी चित्रण—रितु रानी	2848
निरूपमा सेवती के साहित्य में मध्यवर्गीय नारी पात्रों की संघर्षशीलता—डॉ० नम्रता जैन	2850
भारतीय सामाजिक संरचना में नैतिक शिक्षा का महत्त्व—निकी कुमारी	2852
भारत में मनरेगा कार्यक्रम की सामाजिक सुरक्षा योजना—ओंकार नाथ झा	2856
कामाग्नि में दहकती मित्रो—रचना तनवर	2862
भारत में न्यायिक सक्रियतावाद : एक समीक्षात्मक अध्ययन—डॉ० शकुन्तला	2867

प्रतापकुंवरिबाई की भक्ति भावना—नवनीत आचार्य	2870
भारतीय आधुनिक चित्रकला में अवनीन्द्रनाथ टैगोर का योगदान—प्रवीण कुमार	2873
उच्च प्राथमिक स्तर पर हिन्दी बाल-साहित्य का अध्ययन करने वाले एवं अध्ययन न करने वाले विद्यार्थियों की भाषा विकास का अध्ययन —डॉ० धर्मेन्द्र कुमार; डॉ० निदा खान	2876
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना एवं वर्तमान कार्य—एक आलोचनात्मक अध्ययन—डॉ० सोनिका	2881
सुशासन एवं ई-गवर्नेंस—मूर्ति देवी	2884
भारतीय आदिम जनजातियों के संरक्षण में मानवाधिकार विधायन का एक अध्ययन—डॉ० विनोद कुमार मीना	2886
मानव अधिकारों का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन: भारत के संदर्भ में—डॉ० पुष्पेन्द्र कुमार मुसा	2890
आर्यासम्राट डॉ. जगन्नाथ पाठक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व—शहनाज कुरैशी	2896
भारतीय अर्थव्यवस्था के समक्ष प्रमुख चुनौतियां—डॉ० प्रमोद कुमार त्रिपाठी	2899
बुद्धकालीन राजगृह के पुरास्थल का अध्ययन—किशोर कुमार	2901
लोक-मिथकों में रामकाव्य का स्वरूप—वीरेन्द्र	2905
छत्तीसगढ़ी का अनूदित साहित्य—श्रीमती अलका यादव; डॉ० (श्रीमती) रेखा दुबे	2908
नरेश मेहता के काव्य में आधुनिक चेतना—‘शबरी’ के विशेष संदर्भ में—मधु सिंह; दामोदर मिश्र	2913
साम्प्रदायिकता का प्रश्न और हिंदी कथा साहित्य—डॉ० राकेश कुमार सिंह	2918
वैदिक साहित्य में मूल्यों की अभिव्यक्ति—डॉ० हनुमत लाल मीना	2924
मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में अभिव्यक्त स्त्री विमर्श—रीना	2927
बदलते परिपेक्ष्य में महात्मा गांधी के विचारों की प्रासंगिकता—स्वदेश सिंह	2931
पारिभाषिको बलाबलत्वविमर्शः—ज्वलन्तकुमारः	2934
वाक्यपदीयकाराभिमतो वाग्विज्ञानविमर्शः—सचिनः	2937
पत्रकार प्रेमचंद : भारतीय साहित्य का मुखपत्र ‘हंस’—अहमद रजा	2941
मुर्दहिया: दलित जीवन की गाथा—ज्योति	2946
विकास भट्टाचार्य के चित्रों पर यथार्थवादी एवं अति यथार्थवादी प्रभाव विश्लेषणात्मक अध्ययन—शोभना	2949
पंचायती राज में महिलाओं की दशा एवं दिशा—डॉ० के०एल० टाण्डेकर; डॉ० प्रदीप कुमार जाम्बुलकर; डॉ० आशा चौधारी	2952
पंचायती राज व्यवस्था एवं सहकारिता में समन्वय से ग्रामीण विकास—अंकित कुमार गुप्ता	2955
आर्थिक परिप्रेक्ष्य में मधुबनी नदियों का अभिशाप एवं वरदान—श्वेता	2958
डॉ० जगन्नाथ मिश्र का शैक्षणिक चिंतन व कार्य: एक संक्षिप्त अवलोकन—नीतू कुमारी	2963
बिहार कांग्रेस में श्री रामलखन सिंह यादव की भूमिका—सिकन्दर कुमार	2967
गणित, विज्ञान और तकनीकी के विकास एवं संचार में प्राचीन भारत का योगदान—संघर्ष मिश्र	2975
बिहार में डॉ० अल्लेकर एवं उनके कार्यक्षेत्र से संबंधित अन्य पुरातत्वविद्—अराधना झा; प्रो. (डॉ०) नवीन कुमार	2978
भारत में पंचायती राज का इतिहास: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण—डॉ० मौ० उजैर; डॉ० आर० के० ठाकुर	2981
अष्टाध्यायीसंरचनायां योगविभागप्रक्रियाया उपादेयता—प्रभातकुमारः	2986
अष्टाध्याय्यां विभक्तिविपरिणामः—दिव्यरंजनः	2990
मधुसूदनमहाभागानां छन्दशास्त्रप्रयोजनविमर्शः—मनीषः	2992
राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) के संदर्भ में डिजिटल प्रौद्योगिकी और पुस्तकालय—विजय कुमार भारती	2994
उत्तराखण्ड में औपनिवेशिक राज्य की स्थापना एवं प्रभाव—डॉ० शरद भट्ट; रोहित पाण्डेय	2998

‘लोहित’ उपन्यास और असम का राजनीतिक जीवन—संजीव मण्डल	3000
भ्रमर गीत का काव्य सौष्ठव एवं विप्रलम्भ श्रृंगार—डॉ० एम यशोदा देवी; पी० सोमा शेखर	3006
राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 और बहु -विषयक पाठ्यक्रम की उपयोगिता—डॉ० नाहर सिंह; डॉ० नविन्द्रा बाई	3008
भारतीय शिक्षा तंत्र एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति—डॉ० रश्मि शर्मा	3012
ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी विमर्श—महेन्द्र कौर	3016
राजेंद्र अवस्थी के उपन्यासों में राजनीतिक परिवेश—नीतू कुमारी; डॉ० जयकरण यादव	3019
हिंदी साहित्य का विश्व में प्रचार-प्रसार—डॉ० प्रवेश कुमारी	3022
‘चाक’ उपन्यास के ग्रामीण जीवन में नारी का संघर्ष—सुमन कुमारी	3025
प्रेमचंद के उपन्यासों में नारी की दशा—कलवीर कौर	3027
केशर कस्तूरी: ग्रामीण स्त्री-अस्मिता का सशक्त स्वर—किरण मिश्रा	3030
बिहार में पंचायती राज एवं महिला सशक्तिकरण—उषा कुमारी	3036
इन्हीं हथियारों से उपन्यास में लोक जीवन के दृश्य—डॉ० विजय बहादुर त्रिपाठी; कृष्ण कुमार	3040
विनोद कुमार शुक्ल के कथा साहित्य के राजनीतिक सरोकार—अनीता; प्रो० प्रदीप के० शर्मा; प्रो० रामजन्म शर्मा	3044
हिन्दी एवं कन्नड अनुवाद का परस्पर सम्बन्ध की दशा दिशा—डॉ० श्रीधर हेगडे	3046
जनवादी आन्दोलन में जनकवि नागार्जुन की भूमिका—डॉ० अंबुजा एन् मलखेडकर	3050
भारत में खाप पंचायतें - एक सामाजिक अवलोकन—डॉ० जितेन्द्र कुमार	3053
काका कालेलकर: जीवन दर्शन—डॉ० विशेष कुमार राय	3058
पिछड़े वर्ग के सामाजिक उत्थान में काका कालेलकर का योगदान—डॉ० हरेन्द्र कुमार	3062
हिमाचल प्रदेश, उत्तर पश्चिम हिमालय के आदिवासी क्षेत्रों में भूकंप, भूस्खलन और बाढ़ के खतरों जैसी आपदाओं के साथ रहना —राजेन्द्र कुमार; प्रोफेसर संजीव कुमार महाजन	3068
भारत में ऑटोमेशन और महिला रोजगार—डॉ० शम्मी कुमारी	3072
प्रेमचंद के साहित्य में नवजागृति का संदेश (‘कर्मभूमि उपन्यास’ के विशेष संदर्भ में)—जयश्री काकति	3075
आचार्य भानुदत्त एक परिचय—डॉ० सुजाता चतुर्वेदी; विष्णुकान्त गुप्ता	3077
धर्मवीर भारती के साहित्य में सांस्कृतिक चेतना—सरोज देवी	3079
संगीत सीखने वाले व न सीखने वाले विद्यार्थियों में तनाव : तुलनात्मक अध्ययन—विन्ध्या शुक्ला; डॉ० चारू व्यास	3083
मध्ययुगीयासमप्रान्तेषु संस्कृतचर्चा—डॉ० सुबोध कुमार मिश्र भागवती	3088
भारतीय जीवन बीमा निगम की विनियोग नीति का मूल्यांकन—नितेश ग्रेवाल	3092
वर्तमान परिवेश में महिला श्रम की बदलती भूमिका—अनिल	3095
ब्रिटिश भारत का प्रथम लिखित संविधान: रेगुलेटिंग एक्ट दोष एवं महत्त्व—रवि	3101
पंचायती राज संस्थाओं की महिला सशक्तिकरण में भूमिका: आलोचनात्मक मूल्यांकन—सचिन	3104
सूरदास का ‘भ्रमरगीत’ विरह में प्रेम की चरम उत्कृष्टता है—डॉ० संजय नारायण दास	3110
संगीत में स्वर, लय, ताल और रस का सम्बन्ध: एक विवेचन—डॉ० प्रेम चन्द्र कुशवाहा	3112
स्वतंत्रता आन्दोलन में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की भूमिका—डॉ० हरिश्चन्द्र अग्रहरि	3117
गाँधी और अम्बेदकर के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन (दलित समस्या के संदर्भ में)—डॉ० विजय कुमार	3120

भारत में पंचायती राज-व्यवस्था का ऐतिहासिक अवलोकन-मदेश कुमार तिवारी	3123
शिवानी के उपन्यास में स्त्री विमर्श-डॉ० श्रवसुमी कुमारी	3126
कोरोना संक्रमण: एशिया में शक्ति ध्रुवीकरण की नई प्रवृत्तियाँ-डॉ० आर०बी०सिंह बघेल	3129
महिला सशक्तीकरण में केन्द्रीय योजनाओं की भूमिका-डॉ० पुष्पा मद्देशिया	3132
शुंगकालीन कला में कमल-राकेश कुमार गुप्त	3135
मजबूत भारत के मजबूर किसान-डॉ० दयाशंकर सिंह यादव	3138
उत्तराखण्ड राज्य सरकार की मानव सुरक्षा के आर्थिक एवं खाद्य सुरक्षा आयाम से सम्बंधित योजनाओं एवं चुनौतियों की व्याख्या (2019-2021) -मंजरी भट्ट	3142
निर्वाचन प्रक्रिया में भ्रष्टाचार और सुधार - भारत के विशेष सन्दर्भ में-डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय	3145
समकालीन उपन्यासों में आदिवासी विमर्श-शीतला प्रसाद सिंह	3148
वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारत-अमेरिका संबंध-डॉ० यतेन्द्र सिंह	3151
बागेश्वर का धार्मिक अध्ययन-डॉ० पुष्पा दानू	3155
जोधपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर के संगीत विषय के किशोर विद्यार्थियों पर अभिभावक शैली का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन-डॉ० सुनीता श्रीमाली	3159
समकालीन समाज में कबीर: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण-रमेश कुमार; दीपक कुमार खरवार	3164
भारतीय संस्कृति में एकात्मक मानव दर्शन एक समीक्षा-डॉ० सरला शर्मा	3168
आद्य शंकराचार्य का शिक्षा दर्शन एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपादेयता-डॉ० अल्पना राय	3170
सन 1943 ईसवी के बंगाल के दुर्भिक्ष को मूर्तिमान करता 'महाकाल'-निशा तिवारी	3173
भारत में ग्रामीण पर्यटन की संभावनाएं और चुनौतियाँ-डॉ० अनुपमा सिंह	3176
चन्द्रशेखर - समाजवादी व्यक्तित्व-डॉ० नवीन चन्द्र गुप्ता; लक्ष्मी कान्त जायसवाल	3181
शिक्षा में नवाचार-डॉ० राकेश कुमार सिंह	3184
सामाजिक यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में कमलेश्वर कृत कहानी 'राजा निरबंसिया'-भावना	3187
माध्यमिक स्तर के छात्रों की आकांक्षा के स्तर और उपलब्धि के बीच संबंध-आराधना राय	3189
नारीवादी विचारधारा में परिवर्तनों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन; दीक्षा	3198
हायर कक्षा के विद्यार्थियों के समायोजन पर विद्यालयीन पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन-धनलाल जायसवाल; डॉ० राकेश कुमार डेविड	3200
मानवीय मूल्यों से अनुगत अध्यापक शिक्षा की आवश्यकता-सुनिता यादव; डॉ० प्रियंका रमेश रावडाफरे	3203
शिक्षाशास्त्री लोकमान्य बालगंगाधर तिलक की शैक्षिक अवधारणाएँ-वंदना सिंह; डॉ० रेखा नरेंद्र जिभकाटे	3207
बौद्ध धर्म और महिला: एक संक्षिप्त विश्लेषण-डॉ० नीता लखैयार	3211
बुद्धकालीन सामाजिक जीवन व धार्मिक प्रवृत्ति: एक संक्षिप्त अवलोकन-डॉ० कविता लखैयार	3214
स्वतंत्रता बाद भारत में जनजातीय महिलाओं का उत्थान-रेणुका पाठक	3216
एन0 सी0 ई0 आर0 टी0 पाठ्यक्रम का बदलाव: एक समीक्षात्मक अध्ययन-धीरज कुमार	3220
प्लेटो का न्याय सिद्धान्त-डॉ० सुबोध कुमार	3224
आभार भावना-विभिन्न दृष्टिकोण: मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य अध्ययन-प्रा० डॉ० एन.एस. डोंगरे	3226
वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के व्यवसायिक तनाव का उनकी लिंग भिन्नता एवं विद्यालय के प्रकार के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन-डॉ० प्रमिला मलिक; सुमन	3230

महर्षि अरविन्द का शिक्षा दर्शन-डॉ० यशवन्ती गौड़; मोनिका	3234
नवउदारवाद के दौर में सामाजिक न्याय की अवधारणा एवं भारतीय राजनीतिक व्यवस्था का बदलता स्वरूप: एक विश्लेषण-डॉ० इकबाल इमाम	3236
परसाई के निबंधों में व्यंग्य के अनुशीलन-डॉ० कुसुम सिंह; दिनेश कुमार पटेल	3240
आओ माँ हम परी हो जाएँ : पितृसत्ता की पीड़ा से मुक्ति के प्रयास-रश्मि	3243
सामाजिक परिवर्तन: आर्थिक परिप्रेक्ष्य में महिलाओं की बदलती भूमिका-डॉ० ललिता यादव	3245
जलवायु परिवर्तन: राजस्थान के संदर्भ में-डॉ० बबीता	3253
योगदर्शन में वर्णित पञ्चक्लेशों का विवेचन-डॉ० समय सिंह मीना	3255
हिंद महासागर क्षेत्र में भारत के सामुद्रिक चुनौतियाँ एवं विकल्प-राजीव रौशन कुमार	3259
कोविड का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव: एक आलोचनात्मक अध्ययन-डॉ० मनोज कुमार अग्रवाल	3262
मार्कण्डेय के समकालीन कथाकारों की कथा-साहित्य में जीवन-मूल्य-सुनील हिमांशु बर्थवाल; प्रो० (डॉ०) शिव कुमार प्रसाद	3267
कल्हण का जीवन-वृत्त-विवेक कुमार रजक; प्रो० (डॉ०) दिनेश प्रसाद कमल	3270
विनम्र, औसत और मुखर छात्रों के बीच उनकी व्यावसायिक आकांक्षा के संबंध का एक अध्ययन-हुस्ना बानो; डॉ० संजीव कुमार	3273
भारत - अमेरिका संबंध-डॉ० हर्षेन्द्र प्रताप सिंह	3278
भारत में महिलाओं के विरुद्ध बढ़ते अपराधों के कारण: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन-नितिन कुमार; डॉ० संध्या तिवारी	3282
राष्ट्र निर्माण में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवकों का योगदान-मोना कंवट; डॉ० राम नरेश टण्डन	3285
मानव जीवन एवं वनस्पतियों से टूटता नाता-डॉ० राजेश कुमार पालु; अमित कुमार सिंह	3288
राजनीति में महिला प्रतिनिधित्व एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि: राजस्थान की चौहदवी विधानसभा का एक अनुभवमूलक अध्ययन-बालूदान बारहठ	3290
'मधुमेह' रोग में आवश्यक चिकित्सकीय परीक्षण का अध्ययन-वन्दना सिंह यादव	3294
योगिता यादव का व्यक्तित्व एवं कृतित्व: एक विवेचना-मुकेश कुमारी	3297
हरियाणा विधानसभा चुनाव 2019 के जनादेश का विश्लेषणात्मक अध्ययन-आशा रानी	3300
'भक्तिकाल' और 'नयी कविता' के संदर्भ में नामवर सिंह और मुक्तिबोध का आलोचनात्मक चिंतन -डॉ० रत्नेश कुमार यादव; डॉ० चन्द्र प्रकाश यादव	3302
वर्तमान समय को चित्रित करती कहानियाँ-वन्दना पाण्डेय; डॉ० विश्वजीत कुमार मिश्र	3305
संस्कृत-साहित्य में मार्गत्रय की उद्भावना एवं बृहत्त्रयी के महाकाव्य-पिंकी निशा	3308
छत्तीसगढ़ के ग्रामीण कृषकों में ऋणग्रस्तता का अध्ययन-डॉ० सपना शर्मा सारस्वत; अल्का डडुसेना	3311
भारतीय राजनीति में अटल बिहारी वाजपेई का योगदान-उदय भान द्विवेदी; डॉ० इफितखार अहमद अंसारी	3314
उपन्यास 'हुजूर दरबार' का समीक्षात्मक अनुशीलन-डॉ० हिमांशु कुमार	3318
वैज्ञानिक सृजनात्मकता के संदर्भ में परम्परागत शिक्षण विधि के सापेक्ष आगमन चिंतन प्रतिमान की प्रभावशीलता का अध्ययन -डॉ० सरोज जैन; विन्देश्वरी प्रसाद सिंह	3321
भारत में ग्रामीण विकास योजनाओं पर एक अध्ययन-मनजीत सिंह	3325
हिन्दी भाषा का वैश्विक स्वरूप-रीना रानी	3330
"किशोरावस्था के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन"-नेहा श्रीवास्तव	3334
बिखरते परिवार तथा टूटती मान्यताएँ: नौकरी-पेशा, माता-पिता और बच्चों की देखभाल एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन -डॉ० अतुल कुमार मिश्रा; डॉ० निखिल विक्रम सिंह	3339
सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन -आशुतोष कुमार दूबे; डॉ० (श्रीमती) मधुबाला राय	3343
कोविड महामारी का भारत में रोजगार पर प्रभाव एवं सुझाव-डॉ० प्रशांत अग्रवाल	3347
प्राथमिक शिक्षकों के व्यावसायिक प्रतिबद्धता का तुलनात्मक अध्ययन-राघवेन्द्र वीर सिंह; डॉ० अखिलेश चन्द्र	3350
आजमगढ़ जनपद के प्राथमिक स्तर के अध्यापकों के पर्यावरणीय मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन-रेनु देवी; डॉ० अखिलेश चन्द्र	3354

प्राचीन भारत में सती प्रथा की समस्या: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन-भगवान दास	3357
कश्मीर का ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में विवेचन (अनुच्छेद 370 एवं 35 ए के संदर्भ में)-डॉ० सुधीर कुमार शुक्ल	3360
झुन्झुनू जिले के कृषि विकास में संस्थागत वित्तीय स्रोतों का योगदान (मार्च 2016 से मार्च 2020)-कमलेश कुमार मूण्ड; प्रो० (डॉ०) मदन मोहन	3362
वैष्णव धर्म में अवतारवाद की संकल्पना-पंकज कुमार सिंह; डॉ० शशि सिंह	3369
वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्वामी विवेकानंद-चेतन राजपूत	3373
पंडित दीनदयाल उपाध्याय का शिक्षा दर्शन-गुंजेश गौतम	3376
कवि केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में मार्क्सवादी प्रभाव का विश्लेषण-रतिभान	3380
रविदास एवं तुलसीदास के साहित्य में ज्ञानयोग की प्रधानता-जयकान्त; डॉ० बाला मोहन नाग कुमार	3383
कोविड-19 का बेरोजगार युवाओं के करियर, व्यवहार पर प्रभाव (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)-कु. काजल; डॉ० रीना शर्मा	3386
संविधान सभा के अध्यक्ष के रूप में सच्चिदानन्द सिन्हा की भूमिका-राकेश कुमार; प्रो० (डॉ०) रण विजय कुमार	3391
गुरु तेग बहादुर जी: मानवीय अस्तित्व-डॉ० हरबंस सिंह	3394
डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' का व्यक्तित्व एवं कृतित्व-किरण बिष्ट	3397
झारखंड अंचल के उत्थान में बिरसा मुंडा का योगदान-डॉ० रामरतन साहू; संजय कुमार शर्मा	3401
फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास और नारी विमर्श-डॉ० संजू कुमारी	3405
रणेन्द्र के उपन्यास गायब होता देश में आदिवासी जीवन-डॉ० शिखा श्रीधर	3408
भूमण्डलीकरण का महिला शिक्षा पर प्रभाव-डॉ० साधना श्रीवास्तव; सारिका सिंह चौहान	3410
व्यक्तित्व का सम्प्रत्यय एवं प्रकार-अमित कुमार दूबे; डॉ० अखिलेश चन्द्र	3415
“शिक्षित तथा अशिक्षित अभिभावकों के बच्चों के विद्यालय समायोजन क्षमता का अध्ययन”-डॉ० कल्पना सैंगर; अंकश्री भार्गव	3418
वैश्विक आतंकवाद: संयुक्त राष्ट्र संघ की प्रभावशीलता-डॉ० राहुल कुमार	3422
ऐतिहासिक नगरी राजगृह - एक अध्ययन-डॉ० रूबी तबस्सुम	3425
योग साधना के परिप्रेक्ष्य में आसनों की उपादेयता - एक समीक्षा-डॉ० पारुल कुमार	3428
आधुनिक और समकालीन हिंदी काव्य प्रवृत्तियों का तुलनात्मक विवेचन-डॉ० अरविंद सिंह	3431
भारत में प्रजातांत्रिक प्रशासन-डॉ० रमाकान्त पाण्डेय	3435
भारतीय राजनीति के समकालीन बहस-सरफराज अहमद	3439
अज्ञेय काव्य में काव्यगुणों का समीक्षात्मक अध्ययन-डॉ० नितिन सेठी	3443
महाविद्यालय में अध्ययनतर विद्यार्थियों की सूचना के अधिकार के प्रति जागरूकता एवं भ्रष्टाचार निवारण में भूमिका-डॉ० श्रीमती सरला आत्राम	3446
कारक विचार-डॉ० चित्रा भारद्वाज	3449
वर्तमान परिवेश में पर्यावरण और विकास की राजनीति: एक अध्ययन-मोनिका कुमारी	3453
आरक्षण के माध्यम से दलित सशक्तिकरण-डॉ० रामबचन कुमार	3456
पवित्र ध्वनि ओउम (ॐ) के वैज्ञानिक विश्लेषण की समीक्षा-युद्धवीर; एन.पी. गिरी	3459
“दिव्यांग विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन का सह संबंधात्मक अध्ययन”-डॉ० (श्रीमती) अनीता श्रीवास्तव; सरोज बोरकर	3465
चौधरी चरण सिंह का राजनीतिक चिन्तन का संक्षिप्त विश्लेषण-डॉ० ममता शर्मा; गीता	3469
औद्योगिक संसाधन एवं पर्यावरणीय अवनयन: बेगूसराय जिला का एक भौगोलिक अध्ययन-डॉ० अशोक प्रसाद; दीपक कुमार	3474
औद्योगिक विकास एवं नगरीकरण: आरा नगर के विशेष संदर्भ में एक भौगोलिक अध्ययन-डॉ० सैयद गुलाम मोहीउद्दीन; सुजाता सिंहा	3477
कोविड-19 के परिपेक्ष्य में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का अध्ययन-सुषमा दुबे; मधु नायक	3479
समकालीन हिन्दी कविता का वर्तमान स्वरूप-डॉ० शीला मिश्रा; इन्द्रसेन यादव	3484

कृषि के अन्तर्गत नवीन तकनीकों का उपयोग एवं कृषकों की आय पर उसका प्रभाव: मेरठ जनपद का एक भौगोलिक अध्ययन—ओम प्रकाश	3488
समावेशन की राह में बाधा- 'अभिभावक, शिक्षक एवं समाज की मनोवृत्ति के सन्दर्भ में'—डॉ० मोनिका सरोज; सुधीर कुमार रंजन	3494
सोशल मीडिया का आज की युवा पीढ़ी पर प्रभाव—सविता देवी; डॉ० सुमन	3498
भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रधान मंत्री आवास योजना: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन—शक्ति शंकर कुमार	3500
राष्ट्रीय आन्दोलन और जवाहर लाल नेहरू - एक संक्षेपण—डॉ० श्रुति कुमारी	3504
भारत में गाँवों के विकास के लिए कृषि की उन्नति वर्तमान आवश्यकता—ओंकार यादव	3507
हिन्दी कथा साहित्य में अमरकान्त का स्थान—डॉ० कनुभाई बिछिया भाई निनामा; ओमप्रकाश	3510
'गुड़िया भीतर गुड़िया': स्त्री अस्मिता की एक खोज—पूनम जायसवाल	3514
बस्तर में आदिवासियों का परलकोट विद्रोह: एक ऐतिहासिक पुनरावलोकन—डॉ० डिश्वर नाथ खुटे; ईश्वर लाल	3517
मराठा कालीन छत्तीसगढ़ की सामाजिक स्थिति का ऐतिहासिक पुनरावलोकन (सन 1741 से 1818)—डॉ० डिश्वर नाथ खुटे; ममता ध्रुव	3525
भारतीय चिन्तन परम्परा में तर्कस्वरूप—मीरा द्विवेदी; जोरावर सिंह	3534
संस्कृतसाहित्ये श्रीबोधिसत्त्वचरितस्य महत्वम्—मधुसूदन सती	3538
महाविद्यालयीय विद्यार्थियों में धर्मनिरपेक्षता एवं सामाजिक चेतना के मध्य सहसम्बन्धात्मक अध्ययन—डॉ० प्रेम चन्द यादव; राजीव सिंह	3540
भारत में शिक्षक शिक्षा: कुछ नीतिगत मुद्दे और चुनौतियाँ—कमल चन्द्र गहतोड़ी; डॉ० कल्पना पाटनी लखेड़ा	3544
समाज वैज्ञानिक शोध में सामाजिक सर्वेक्षण का महत्व—डॉ० हरबीर सिंह डागुर	3550
जगदीप दुबे हुन्दे 'तितलियां' कहानी संग्रह च प्रयुक्त अंग्रेजी ते फारसी शब्दावली—शगुफ्ता चौधरी	3556
ग्रामीण भारत का शैक्षिक एवं आर्थिक पिछड़ापन—बलभद्र बिरुवा	3557
काव्यप्रकाश की लीला टीका एवं उसकी पाण्डुलिपियाँ—भारतेन्दु पाण्डेय; गिरिराज	3560
कुमाऊँ का अनुपम जलस्रोत: नौला (भूतल के जल)—हंसा वर्मा; डॉ० सरोज वर्मा	3565
बेरोजगारी समस्या के समाधान हेतु मनरेगा कार्यक्रम—सुनीता कुमारी	3570
माध्यमिक विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षक-प्रभावशीलता का कार्य संतुष्टि से सम्बन्ध का अध्ययन—ज्योति विजय; डॉ० चंद्रकान्त शर्मा	3576
भारतीय संसदीय लोकतंत्र का बदलता स्वरूप: एक विश्लेषण—मनीषा	3580
कारू नाडु (उत्तरी कर्नाटक) को पृथक राज्य बनाने की मांग (उत्तरी कर्नाटक से विश्वासघात की कहानी)—सर्वजीत सिंह राणा; डॉ० अखिल गोयल	3583
दुकानों में प्रोसेस्ड पैकेज्ड भोजन के विभिन्न प्रकारों की उपलब्धता का अध्ययन: (पटना क्षेत्र के संबंध में)	
—कुमारी सुषमा श्रीवास्तव; प्रो० (डॉ०) अंजु श्रीवास्तव	3591
ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों की नैतिक मूल्यों पर शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव पर शोध	
—श्रीमती मोहनी सिन्हा; डॉ० रजनी डिवाकर राव सिवणकर	3595
महासमुन्द्र क्षेत्र के हायर सेकेण्डरी स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता अध्ययन—हेमन्त कुमार खटकर; डॉ० रेखा नरेन्द्र जिभकाटे नवखरे	3600
महात्मा फुले की सामाजिक न्याय अवधारणा—मोनिका काकोडिया	3603
असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के मानवाधिकारों के संरक्षण में केन्द्रीय सरकार की भूमिका का एक अवलोकन	
—नीतेश कुमार चतुर्वेदी; प्रो० सुदर्शन वर्मा	3607
भारत में प्राकृतिक आपदा के समय राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान की भूमिका का अध्ययन—संदीप सेन	3612
पश्चिमोत्तर भारत में पारसियों का आगमन तथा भारतीय समाज पर उनका प्रभाव—सारिका दुबे	3615
मध्यप्रदेश में भारतीय होटल उद्योग में लागू सेवा गुणवत्ता मॉडल का अध्ययन—डॉ० डी०एन० पुरोहित; श्रीमति शीतल तिवारी	3620
भारत में ग्रामीण शिक्षा को बढ़ावा—रूबी सिंह; डॉ० वी० के० गैलत	3629
दिल्ली सल्तनत में महिलाओं की सामाजिक स्थिति—डॉ० स्वर्ण मणि	3632
भारत और सिंगापुर के सांस्कृतिक संबंध: एक ऐतिहासिक अवलोकन—आशा कुमारी सिन्हा; डॉ० सुनीता शर्मा	3636

इंदौर शहर के संदर्भ में बैंकिंग क्षेत्र में डिजिटलीकरण का प्रभाव—डॉ० पवन तिवारी	3640
मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में पिछले 5 वर्षों में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों का व्यावसायिक प्रदर्शन—अंशुल कुमार जैन; डॉ० अमर वतनानी	3651
महाराष्ट्र के पूर्व उपमुख्यमंत्री विजयसिंह मोहिते-पाटिल के व्यक्तित्व के पहलू - एक चिकित्सा अध्ययन —प्रा० तानाजी हनुमंत जाधव; डॉ० बी० के० मोरे	3659
स्मृतियों में वर्णित न्यायिक प्रशासन की अवधारणा—डॉ० पूनम	3662
सांगतिक क्षेत्र में पखावज वाद्य की वर्तमान स्थिति—ज्योति; डॉ० वन्दना चौबे	3665
बालकों के नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों के विकास के अध्ययन हेतु प्राप्त प्रदत्त का विश्लेषण—पवन कुमार	3668
माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिव्यक्ति का तुलनात्मक अध्ययन —संदीप कुमार यादव	3672
माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में मूल्यों की शिक्षा : एक अध्ययन—डॉ० आलोक कुमार मिश्र	3677
“वर्तमान शिक्षा प्रणाली के माध्यमिक स्तर पर मानवाधिकारों के तत्वों का तुलनात्मक अध्ययन”—डॉ० आलोक कुमार मिश्र; विजया रानी वर्मा	3682
चरित्रोपाख्यान: विश्लेषणात्मक परिचय—डॉ० ज्योति कौर	3688
स्त्री विमर्श—वैदिक काल से गुप्त काल तक—कुंवर विक्रम सूर्यवंश	3692
आर्यों का आगमन और ऋग्वेद युग का एक परिचय—डॉ० मो० सरवर अंसारी	3695
वर्तमान परिवेश में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की प्रासंगिकता—डॉ० प्रीति मिश्रा	3699
भारत में नागोपासना: विविध धर्मों में स्वीकारोक्ति—डॉ० अर्चना मिश्रा	3701
भारत-पाकिस्तान परमाणु कार्यक्रम—अर्जुन सिंह सोनकर	3704
जैन धर्म में अहिंसा का स्वरूप—अजीत सिंह; डॉ० बृजेश रावत	3707
बौद्ध दर्शन के सम्प्रदायों का नैतिक दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन—अजीत कुमार	3713
भारत में श्रेणीबद्ध विन्यास के रूप में जाति: एक अवलोकन—डॉ० आलोक वर्मा	3716
भावनात्मक बुद्धि का विकास एवं महत्व—सरोज शुक्ला	3720
शिक्षा में शैक्षिक प्रौद्योगिकी के उपयोग में आने वाली कठिनाइयों का अध्ययन—डॉ० कविता साळुंके; श्री उमेश अमरनाथ कुमावत	3722
छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले एवं बिलासपुर जिले के प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों एवं अभिभावकों में बाल अधिकारों के बारे में जागरूकता का अध्ययन—प्रोफसर रमाकांती साहू	3725
भविष्यपुराण में वर्णित चतुर्मासिक व्रत—लक्ष्मीकान्त त्रिपाठी	3729
गद्दी समुदाय में नुवाले की सामाजिक प्रासंगिकता—लकेश कुमार	3735
अफगानिस्तान में सिख और हिन्दुओं की वर्तमान स्थिति—डॉ० परविंदर शर्मा	3739
पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों की स्थिति (1940-2021)— एक अध्ययन—अविनाश कुमार; प्रो. (डॉ०) दिनेश प्रसाद कमल	3741
दीनदयाल अत्योदय योजना—राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन—डॉ० संगीता विजय; सीमा प्रजापति	3745
भारतीय परिप्रेक्ष्य में मानवाधिकार—कौशल कुमार सैन	3750
प्रधान मंत्री उज्ज्वला योजना: भारत में सामाजिक समावेश की दिशा में कदम—वीर कुमार	3754
उत्तराखण्ड राज्य के सीमान्त जनपद पिथौरागढ़ के ग्रामीण परिवेश में वन आधारित उद्योगों का अध्ययन—बबीता भट्ट; डॉ० मंजुला चन्द	3759
टेढ़े-मेढ़े रास्ते में चित्रित सामंतवाद—जुली कुमारी	3768
क्रांति का मानचित्रण: भारतीय क्रांतिकारी राष्ट्रवाद और हिंदू लोकाचार—डॉ० कंवर चंद्रदीप सिंह	3771
भौतिकवादी चकाचौंध है मनुष्य की अधोगति का कारण—क्रांतिकारी संत तरुण सागर—डॉ० कमलेश कुमार जैन	3775
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में वर्णित मूल्यांकन के विभिन्न पहलुओं का शालेय पाठ्यक्रम के संदर्भ में अध्ययन—श्रीमती श्वेता सिंह	3778
हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के पूर्व प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त विद्यार्थियों की अकादमिक उपलब्धि का अध्ययन—ममता कुमावत	3782
बी.एड. इन्टर्नशिप कार्यक्रम के प्रति छात्राध्यापकों के अभिमत का अध्ययन—डॉ० सुभाष पुरोहित; डॉ० सुनीता मुर्दिया	3786

मानव संसाधन प्रबंधन: मध्यप्रदेश पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कम्पनी लिमिटेड के कर्मचारियों पर एक अध्ययन—महेन्द्र कैथवास; डॉ० जितेन्द्र तलरेजा	3792
उत्तरखण्ड के परम्परागत समाज में दलितों की सांस्कृतिक-धार्मिक स्थिति—चरन सिंह	3795
मूक बधिर विशिष्ट विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के व्यक्तित्व का अध्ययन—डॉ० भावना सिंह	3800
दलित साहित्य का उद्भव एवं विकास: एक अध्ययन—भानु प्रताप; डॉ० संजय सक्सेना	3808
वर्तमान परिदृश्य में उच्च माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों पर सोशल मीडिया का प्रभाव—नीरज भारद्वाज; डॉ० धीरेन्द्र सिंह यादव	3813
नव निर्गमन बाजार को अधिक सक्रिय बनाने के उपाय—प्रतिभा सिंह; प्रो० विजय कुमार अग्रवाल	3819
संस्कृत वाङ्मय में दैव की अपेक्षा पुरुषार्थ की श्रेष्ठता—डॉ० बृजेन्द्र सिंह गुर्जर	3823
रागदारी संगीत में सारंग अंग के रागों की महत्ता—कामाक्षी यादव; डॉ० रामशंकर	3827
विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि में संबंध—विनोद अवस्थी	3831
भारतीय समाज के परंपरागत पृष्ठभूमि और उसमें आधुनिकीकरण की प्रक्रिया—डॉ० राजेश अग्रवाल	3834
कमलेश्वर का हिन्दी कहानी में योगदान—डॉ० सविता वर्मा; लक्ष्मण कुमार पटेल	3837
छत्तीसगढ़ के विशेष पिछड़ी जनजातियां—परिवेश कुमार बर्मन	3839
नई कविता में मानवीय आस्था के मूल्य—मनीष कुमार सिंह	3842
आजादी के बाद भारतीय लोकतान्त्रिक व्यवस्था का बिखरता मूल्य एवं जंगल तंत्रम् उपन्यास—रविकान्त राय	3846
भारतीय संगीत में राग की विकास यात्रा—कुमारी शालिनी	3849
शहरी माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं ग्रामीण माध्यमिक शिक्षा मण्डल के अंतर्गत पढने वाले विद्यार्थियों के परीक्षा दुश्चिंता एवं अभिभावक सहभागिता का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन—डॉ० रीता सिंह	3852
पंचायती राज में महिला जनप्रतिनिधियों की राजनीतिक सहभागिता—प्रियंका शर्मा; डॉ० खेमचंद महावर	3856
आचार्य ओशो के शैक्षिक विचारों का समीक्षात्मक अध्ययन—डॉ० सर्वेश चन्द्र	3862
नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में साम्राज्यवादी विचारधारा का विवेचनात्मक अध्ययन—डॉ० आशीष यादव	3867
किशोरावस्था के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं उनका परिवारिक वातावरण—अंकिता शर्मा; डॉ० (पी.डी.) जय श्री शुक्ला	3870
रायपुर जिले के प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिवृत्ति का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव—आनंद मसीह; डॉ० राकेश कुमार डेविड	3872
शारीरिक शिक्षा का प्रदेय : आरोग्य—डॉ० प्रेम सिंह मीणा	3877
ग्रामीण विकास में मनरेगा का योगदान: राजस्थान के विशेष संदर्भ में—महेन्द्र चौधरी	3879
ज्ञान चतुर्वेदी के साहित्य में व्यंग्य के विविध आयाम—शर्मिला देवी	3884
मैथिली पत्र - पत्रिका आ पञ्जी प्रबन्धक क्षेत्रमे गजेन्द्र ठाकुरक योगदान—शिव कुमार पासवान	3886
ज्ञान प्रकाश विवेक के कथा साहित्य में नारी संघर्ष—ललिता; डॉ० राजेन्द्र सिंह	3890
हरियाणावी लोकगीतों में अभिव्यक्त नारी: एक अनुशीलन—रेखा	3893
महादेवी वर्मा के काव्य में प्रतीकात्मकता—प्रो० प्रदीप श्रीधर	3898
भारतीय स्टेट बैंक एवं इसके अनुषंगी बैंको के विलय के वित्तीय प्रदर्शन का समीक्षात्मक अध्ययन—उमेश	3900
वैदिक काल में महिलाओं का पत्नी के रूप में विभिन्न क्षेत्रों में योगदान का अध्ययन—दीपक कुमार शर्मा; डॉ० निधि तिवारी	3905
प्राचीन भारतीय ग्रंथों में सैन्य तकनीक एवं वैज्ञानिकता की पराकाष्ठा—डॉ० विनोद मोहन मिश्रा	3907
करम मनुष्य का धर्म है सत् भाषे रविदास—निरंजन सहाय	3910
डॉ० अम्बेडकर का आर्थिक और राजनीतिक दृष्टिकोण: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन—डॉ० श्यामदेव पासवान	3915
उच्च शिक्षा के विकास में भारत के विश्वविद्यालयों की भूमिका—शरद चरण वर्मा	3919
हरियाणा के लोक काव्य में भक्ति भावना—डॉ० विनय कुमार	3922

मौलाना अबुल कलाम आजाद और शिक्षा नीति के प्रगतिवादी दृष्टिकोण—रूखसाना बानो; डॉ० अशोक राम	3924
भारत के मंदिरों में देवदासी प्रथा—डॉ० स्मृति वाघेला	3930
आधुनिक हिन्दू परिवार में द्वन्द्व की समस्या: एक समाज वैज्ञानिक विवेचन—डॉ० प्रदीप कुमार गुप्ता	3932
नेतृत्व शैली का समस्त महाविद्यालय के प्राचार्य पर एक अध्ययन—लतिका खट्टीयान	3937
भारतीय सेनाओं की प्रशिक्षण पद्धति : एक अनुशीलन—नीलम; केशव देव शर्मा	3940
नई शिक्षा नीति में पाठ्यक्रम अधिगमता की महत्ता—माजीद बलोच	3945
शिक्षण में शास्त्रीय अभिक्रम विधि की प्रभावकता का अध्ययन—धर्मेन्द्र कुमार भारतीय; डॉ० समर बहादुर सिंह	3948
अरावली क्षेत्र की पर्यावरणीय समस्याओं का भौगोलिक अध्ययन—चन्द्र शेखर; डॉ० गायत्री यादव	3951
स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचार और नारी शिक्षा के उद्देश्य—मनोज कुमार शर्मा; डॉ० दिव्या विजयवर्गी	3954
18वीं शताब्दी के जयपुर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (नगर योजना एवं राजधानी परिवर्तन के विशेष संदर्भ में)—तोसिफ अली	3959
कृषि क्षेत्र में भारतीय महिलाओं की भागीदारी—महिमा बंसल	3964
भारत में MSME उद्योगों का विवेचनात्मक अध्ययन—डॉ० रेनु सिंह राणा	3968
विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का उनकी परीक्षा दुश्चिंता पर प्रभाव: एक अध्ययन—डॉ० राहुल कुमार तिवारी	3972
भारत में दहेज प्रथा: एक विश्लेषण—मो० नुरुल्लाह अंसारी	3977
वैदिक कालीन गद्य का एक सामान्य परिचय और विशेषताएँ—सुषमा तिवारी	3981
भारतेंदु युगीन लोकगीतों में तत्कालीन समाज का चित्रण—डॉ० सुरंगमा यादव	3984
“बाजारवाद, एवं भूमण्डलीकरण के युग में युवा वर्ग का संक्राण: “दौड़” उपन्यास”—रेणु देवी; डॉ० कल्पना शाह	3987
‘निर्गुण’ लोक गायन शैली का साहित्यिक अध्ययन—अरविन्द कुमार गुप्ता	3990
दयानन्द सरस्वती के सामाजिक एवं राजनीतिक विचार—डॉ० वीरेंद्र सिंह वर्मा	3993
कैलाश बनवासी की कहानियों में लोक-जीवन—डॉ० बी०एन० जागृत; अनवर खान	3998
भक्त कवयित्री मीराबाई—डॉ० सीमा कुमारी	4001
सामाजिक समरसता: अम्बेडकर और संघ—डॉ० चन्द्रकांता के माथुर	4003
कोविड 19 महामारी के दौरान कुपोषित बालकों का अध्ययन—डॉ० प्रतिभा सदाशिव देसाई	4007
कोविड-19 प्रतिरक्षण और महाविद्यालयीन युवाओं का दृष्टिकोण तथा व्यवहार—डॉ० बालूदान बारहठ	4014
छत्तीसगढ़ में जनसंख्या प्रतिरूप का भौगोलिक विश्लेषण—शितेन्द्र कुमार साहू	4019
कला एवं विज्ञान विषय के शिक्षक-प्रशिक्षार्थियों के अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन—श्री अनिरबन चौधरी; दिप्ती सिंह राठौर	4024
शिक्षा और राजनीति—माली गीता; सायरा बानो बोरगल	4028
कामायनी महाकाव्य की श्रद्धा : सशक्त नारी का रूप—प्रा० डॉ० भारती बी० वळवी	4030
फकीरचन्द शुक्ला की बाल कहानियों में यथार्थ—अंजू रानी; डॉ० राजकुमार एस.ई. नाईक	4034
महाराष्ट्र, गुजरात और गोवा राज्य के जवाहर नवोदय विद्यालयों में पर्याप्त खेल मैदानों की सुविधा का मूल्यांकन—मोनू; डॉ० बापू एन चौगले	4036
श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित निष्काम कर्मयोग द्वारा समसामयिक समस्याओं का निराकरण: एक ऐतिहासिक अध्ययन—पूनम; डॉ० अंजना राव	4041
अभ्यंग चिकित्सा की रोग निवारण में भूमिका—संगीता	4044
स्वातंत्रयोत्तर भारत में सरकारी व गैर-सरकारी उपागम: एक समीक्षात्मक अध्ययन—बेबी कुमारी	4046
घरेलू हिंसा का महिलाओं पर प्रभाव—प्रो० शैलेन्द्र सिंह; खुशबू यादव	4050
शैक्षणिक उपलब्धि पर विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन—गौरी शंकर; डॉ० दिव्या विजयवर्गीय	4055
कुश्ती खिलाड़ियों के शारीरिक प्रशिक्षण का शारीरिक क्षमता के पूर्व एवं पश्च परीक्षणों का अध्ययन—डॉ० दिलीप सिंह चौहान	4059
भारतीय मृदाओं की समस्याएँ एवं उनके दुष्परिणाम—रीतू	4062
अलवर जिले में कृषि उत्पादकता पर सिंचित क्षेत्र का प्रभाव—जितेश कुमार घोरेटा	4066
जनपद मेरठ के विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित बालक-बालिकाओं में संवेगात्मक परिपक्वता के प्रभाव का विश्लेषण—डॉ० स्मृति दानी; नीरू यादव	4071

हिन्दू विवाह में वैवाहिक समायोजन के आधुनिकीकरण—रंजना वर्मा	4076
स्वच्छता का मानव जीवन में महत्व—अमरेश कुमार अमर; प्रो. डॉ. आर. के. पी. रमण	4081
मिथिला में लोक ज्ञान परंपरा—कुमारी निशा सिन्हा	4084
पाकिस्तान आम चुनाव 2018 के प्रति भारतीय मीडिया का दृष्टिकोण—आबिद रेजा	4087
भारत में किशोर न्याय: एक ऐतिहासिक रूपरेखा—शिखा दुबे	4092
औपनिवेशिक काल में बिहार में अफीम उत्पादन—अलका कुमारी	4098
पंचायती राज व्यवस्था में स्वतंत्रता पश्चात् आरक्षण के माध्यम से महिला सशक्तिकरण—राहुल कुमार	4102
संयुक्त पंजाब में असहयोग आंदोलन की उत्पत्ति के कारण—पूनम; डॉ० अजमेर सिंह पुनिया	4105
रायपुर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में संस्थागत वातावरण का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन—शुभा तिवारी; डॉ. शीतल दिनकरराव अडगांवकर	4109
शिक्षा का अधिकार अधिनियम के प्रति माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की सोच पर एक अध्ययन—श्रीष तिवारी	4115
माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन—नीलम साहु; डॉ० प्रियंका रमेशराव डफरे	4117
पं० दीनदयाल उपाध्याय की राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की यात्रा तथा लेखनी व पत्रकारिता—अवधेश कुमार जैन; डॉ० महेश चन्द्र शर्मा	4121
म्यांमार में लोकतंत्र का विकास—श्री कर्मचन्द यादव	4124
माध्यमिक स्तर के विद्यालयी किशोरों एवं किशोरियों के व्यक्तित्व के संदर्भ में विवाह के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन—संजय शर्मा	4127
वर्तमान समय में बढ़ते बाल-अपराध को रोकने में शिक्षा की भूमिका एक अध्ययन—श्रीमती नीलम चौहान; डॉ० शीतल अडगांवकर	4134
छत्तीसगढ़ में व्यावसायिक संरचना का स्थानिक-कालिक प्रतिरूप—नागेश्वरी वर्मा	4138
भगवानदास मोरवाल के रेत उपन्यास में नारी-अस्मिता—प्रो० (डॉ०) अनुसुइया अग्रवाल (डी.लिट); कुमारी महेश्वरी पात्रे	4143
भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद: एक अवलोकन—अर्चना कुमारी; प्रो० (डॉ०) राजीव रंजन	4146
औपनिवेशिक भारत में महिला और समाज सुधार—पूजा कुमारी; प्रो० कुमकुम कुमारी	4150
बौद्ध दर्शन का अन्य दर्शन पर प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन—रेणु कुमारी	4155
महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता: भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के परिप्रेक्ष्य में—डॉ० अग्निदेव	4159
राजनीतिक व्यंग्य के परिप्रेक्ष्य में शंकर पुणताबेकर के उपन्यास 'एक मंत्री स्वर्गलोक में' का विश्लेषण—डॉ० रविदत्त कौशिश; छिन्दरपाल कौर	4164
सार्वजनिक बैंकों के हो रहे विलय की आवश्यकता, महत्व एवं प्रभाव का अध्ययन—दीपक शर्मा; डॉ. ज्ञानेन्द्र शुक्ला	4168
डॉ. शिवप्रसाद सिंह के ऐतिहासिक उपन्यासों में सांस्कृतिक युगबोध—डॉ. चतुर सिंह	4172
परितोष चक्रवर्ती की कहानी में सामाजिक परिदृश्य—कलमरेखा; डॉ० राजेश दुबे; डॉ० मधुलता बारा	4177
समावेशित शिक्षा के प्रति शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति और जागरूकता का विभिन्न शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में अध्ययन—डॉ० श्रीकांत भारतीय; पंकज सिंह	4180
जय प्रकाश (जे. पी.) का संपूर्णक्रांति दर्शन—डॉ० अनिल कुमार सिंह	4184
स्वदेश दीपक के नाटकों का कथ्य—मुकेश कुमार महतो	4187
सर्वहारा जीवन की अनूठी कृति 'बबूल'—प्रज्ञा सिंह	4194
बिहार के थारु जनजाति में लोकगीत व नृत्य: एक अध्ययन—डॉ० अम्बुज कुमार	4197
पर्यावरण में जन-जागृति की आवश्यकता—डॉ० सुधा सिंह	4201
भारत के संसदीय लोकतंत्र में चुनावी राजनीति एवं मतदान व्यवहार: एक अध्ययन—मेहर सिंह; डॉ० मंजीत	4206
भारतीय समाज एवं संस्कृति पर प्रपंच युद्ध के पश्चात पश्चिमी विचारों का प्रभाव—श्री हरेश राम; डॉ० नीलम आर्य	4209
“बाजारवाद, एवं भूमण्डलीकरण के युग में युवा वर्ग का संत्राश: “दौड़” उपन्यास”—रेणु देवी; डॉ० कल्पना शाह	4212
किन्नर का शब्दकोशीय अर्थ और परिभाषिक स्वरूप—डॉ० विजय कुमार पटीर	4215

उर्वशी: काम से आधात्मक की यात्रा—प्रिया तिवारी	4221
दौसा जिले में भूजल स्तर का बदलता स्वरूप—तुलसी राम सैनी; डॉ० जगफूल मीना	4224
लोकतन्त्र में मतदान व्यवहार—डॉ० पूजा शुक्ला	4230
राष्ट्रीयता और बिलासपुर की साहित्यिक पत्रकारिता: एक अध्ययन—अतुल कुमार मिश्र; डॉ० सीमा पाण्डेय	4235
महिला सशक्तिकरण और पंचायती राज—नीलू देवी; डॉ० अजमेर सिंह मलिक	4239
भारत में निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR)—धनसिंह यादव; डॉ. सुधा जैन	4242
मुण्डकोपनिषद् में परा एवं अपरा विद्या का विवेचन—डॉ० भारत वेदालंकार	4246
शिल्प में नारी आभूषण (खजुराहो के कंदरिया महादेव मन्दिर के विशेष सन्दर्भ में)—आकांक्षा विश्वकर्मा	4249
मुगल शासिका 'नूरजहाँ' का मुगल कालीन राजनीति के विशेष सन्दर्भ में—अजय कुमार; डॉ० शशि सिंह	4252
जनजातीय क्षेत्र में अध्ययनरत बालिकाओं की दबाव प्रबन्धन शैलियों का अध्ययन—डॉ० रचना राठौड़; वर्षा बिड़ला	4254
मानव पुस्तकालय की आवश्यकता और प्रभाव वर्तमान परिदृश्य में—डॉ० आर के तिवारी; सालिक राम; दिप्ती तिग्गा	4259
महिलाओं को सशक्त बनाने में शिक्षा की भूमिका—उपेन्द्र सिंह; शशि भूषण प्रसाद सिन्हा	4263
असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के बीच संबल योजनाओं की जागरूकता का अध्ययन (इंदौर जिले के विशेष संदर्भ में) —डॉ० घनश्याम अग्रवाल; श्रीमती रेणुका पाटीदार	4267
वस्तु एवम् सेवा कर के संबंध में जागरूकता का अध्ययन (इंदौर में संचालित लघु उद्योग के विशेष संदर्भ में) —डॉ० दिनेश अग्रवाल; सुनील कुमार धाकड़	4274
वैश्वीकरण के कारण हिंदी उपन्यासों में बदलते जीवन मूल्य—सुनीता	4283
भारत में विधिक सहायता - एक दृष्टिकोण—हरिओम गुप्ता	4286
औपनिवेशिक बिहार में सहकारिता आन्दोलन - एक विश्लेषण—डॉ० किरण कुमारी	4289
हिंदी साहित्य में लोकगीतों की पृष्ठभूमि—डॉ० भारती तिवारी	4291
विषय वर्ग (कला, विज्ञान व वाणिज्य वर्ग) के संदर्भ में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन—डॉ० जय प्रकाश दूबे; विनोद प्रकाश तिवारी	4295
कबीर के काव्य में स्त्री-चिंतन का सन्दर्भ और स्वरूप—डॉ० प्रेमशीला	4300
महिलाओं और बच्चों के विरुद्ध बढ़ते अपराध: आपराधिक विधि संशोधन अधिनियम 2018 के आलोक में एक आलोचनात्मक अध्ययन—नईमउद्दीन	4305
बिहार में ग्रामीण विकास एवं विश्व बैंक—मिठु कुमारी	4308
ज्ञान समाज तथा शिक्षण संस्थानों में परिवर्तन एवं विकास—राहुल कुमार गुप्ता	4312
आत्मनिर्भर भारत के लिए महिला सशक्तिकरण का एक प्रयास—फारुख मोहम्मद; डॉ० विकास प्रधान	4316
शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर आत्मसंकल्पना, संकाय एवं इनकी अंतःक्रिया के प्रभाव का अध्ययन —राजेश कुमार दुबे; डॉ० संगीता एस. धनाढ्य	4320
सेवारत् शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता तथा संतुष्टि के संदर्भ में उनके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन —पियाधर सिंह कंवर; डॉ० (श्रीमती) निशि भाम्बरी	4324
बाल मानसिक स्वास्थ्य में संवर्धन और निवारण—जागृति कुमारी	4329
कमार अनुसूचित जनजाति की संस्कृति में निरन्तरता एवं परिवर्तन का समाजशास्त्रीय अध्ययन (छत्तीसगढ़ के गरियाबन्द जिले के विशेष संदर्भ में)—विकास बंजारे; डॉ० श्रद्धा गिरोलकर	4334
नक्सलवाद: भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए चुनौती—डॉ० एम० के० टम्टा	4340
अरुणाचल प्रदेश के आदी जनजाति के लोकगीतों में अभिव्यक्त सामाजिक जीवन—डॉ० अरुण कुमार पाण्डेय—बनश्री पतिन	4344
गालो लोककथाओं में स्त्री चेतना—प्रो० हरीश कुमार शर्मा; तुम्बम रीबा	4350

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यवसायिक प्रतिबद्धता एवं आत्म प्रभावकारिता का तुलनात्मक अध्ययन—जूही पीटर; डॉ० शबनम खान	4353
पंजाबी साहित्य में महिलाओं की भूमिका: कृष्णा सोबती की चुनी हुई कृतियों की समीक्षा—पूजा शर्मा	4357
1857 के विद्रोह में जयपुर रियासत की भूमिका—महेश कुमार मीना	4360
भारत की जनसंख्या वृद्धि का आर्थिक विकास पर प्रभाव—दीक्षा उपाध्याय	4363
न्यायिक सक्रियता एवं लोक कल्याण में जनहित वाद का महत्व—अमित कुमार सिंह	4367
विश्व में महिलाएं: अतीत से वर्तमान तक—प्रियंका	4370
हिन्दी सिनेमा का बदलता रूप—कु० सरिता यादव; डॉ० प्रीति राय	4373
सामाजिक एवं वैज्ञानिक परिपेक्ष में संगीत की भूमिका—डॉ० बबली अरुण	4378
‘राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन में आने वाली चुनौतियां’—लक्ष्मण लाल रेबारी	4381
रूपसिंह चन्देल की कहानियों में पुरुष-विमर्श—डॉ० रहीम मियाँ	4383
भारत में पर्यावरण संबंधी चिंताएँ: समस्याएँ और समाधान—प्रीति अग्रवाल	4387
अवमानना विधि का विकास उद्देश्य एवं संवैधानिक विधि मान्यता—प्रीति वर्मा	4391
सुशासन की चुनौतियों से निपटने में सीएजी की भूमिका: एक अध्ययन—डॉ० पूर्णिमा सिंह	4394
स्त्री शिक्षा—डॉ० रजना गुप्ता	4397
किशोर आयु वर्ग के बच्चों का उनके माता-पिता के साथ सामंजस्य की समस्या : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन—अर्पणा रानी	4400
हाई स्कूल स्तर पर वैकल्पिक विषय के रूप में व्यावसायिक विषय के चयन का विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन —भास्कर देवांगन	4403
सरकारी सेवाओं में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रभाव—डॉ० मीरा देवांगन; डॉ० भुनेश्वर प्रसाद	4409
छत्तीसगढ़ में जनजातीय विकास: स्थिति एवं वर्तमान चुनौतियां—डॉ० ममता कोशरिया	4411
छत्तीसगढ़ी लोक-गाथाओं में नारी के विविध रूप—डॉ० शारदा सिंह; प्रो० शैल शर्मा	4414
मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम तथा इंडियन सर्टिफिकेट ऑफ सेकेंडरी एजुकेशन द्वारा निर्धारित कक्षा नौवीं की हिंदी विषय की पाठ्यपुस्तक का तुलनात्मक अध्ययन—अंजलि सेन; डॉ० शिवानी श्रीवास्तव	4417
कोविड-19 महामारी के बाद भारत में बाल श्रम और आधुनिक दासता: एक सिंहावलोकन—दीपिका रानी	4421
राष्ट्रभाषा के विकास में नागरी लिपि का योगदान—डॉ० मोती लाल शाकार	4429
मन्नू भंडारी से उपन्यास ‘महाभोज’ में चित्रित राजनीति—संध्या	4432
स्वनियोजन: श्रीमद्भगवद्गीता की दृष्टि से—केशव	4435
शतपथ-ब्राह्मण का काल, कर्तृत्व और नामकरण—कुशुम	4440
यशपाल के उपन्यासों में नवजागरण—डॉ० कामराज सिन्धु; रीतू रानी	4444
21वीं सदी नारी युग का आरम्भ श्री राम शर्मा के संदर्भ में—पुष्पा शर्मा; डॉ० अलका तिवारी	4447
स्वामी विवेकानंद: एक सच्चे क्रांतिकारी—आशीष राठौर; डॉ० ज्योति राजपूत	4450
किशोरावस्था में शिक्षा का स्वरूप—रहमत उल्लाह अंसारी; डॉ० ज्योति राजपूत	4455
साहित्य में प्रेमचंद की आलोचक दृष्टि—रीना राठौर; डॉ० अलका तिवारी	4458
आधुनिकताबोध के परिप्रेक्ष्य में ‘महासमर’ का राजनैतिक पक्ष—डॉ० पूनम काजल	4462
हाई स्कूल स्तर पर वैकल्पिक विषय के रूप में व्यावसायिक विषय के चयन का विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन—भास्कर देवांगन	4465
असहयोग आन्दोलन में राहुलजी का योगदान—डॉ० संजय कुमार सिंह	4471
समकालीन लोकतांत्रिक समस्याओं के विभिन्न स्वरूप व समाधान—शालिनी सिंह	4474
तारादत्त विलक्षण के साहित्य में राष्ट्रीयता—कुलदीप शर्मा; डॉ० अनिल कुमारी	4477
बदलता वैश्विक परिदृश्य: भारत-अमेरिका संबंध एक मूल्यांकन—प्रदीप कुमार	4481

'चन्द्रमनोरमीयम्' में गुण-योजना-डॉ० अरुणा शर्मा; ज्योति	4484
विशाखादत्त कृत मुद्राराक्षस में राजा का प्राधान्य-डॉ० ललित कुमार गौड़; लक्ष्मी कुमारी	4488
भारतीय समाज में धर्म का स्वरूप, आवश्यकता और प्रासंगिकता-गोपाल लाल सालवी	4491
प्राथमिक विद्यालय स्तर पर प्रभावी अधिगम में अभिभावकों एवं शिक्षकों की सहभागिता-ईश्वर प्रसाद यदु; डॉ० संजीत कुमार साहू	4494
अध्यापक संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण कौशल एवं वृत्तिक विकास के संदर्भ में अध्ययन-डॉ० बृजेश कुमार	4498
अष्टछाप संगीत में प्रयुक्त वाद्यों का स्वरूप-अंकिता मिश्रा	4503
मुद्राओं के आधार पर गुर्जर प्रतीहार राजवंश की आर्थिक स्थिति: एक विश्लेषण-राजेन्द्र प्रसाद मौर्य	4509
साम्प्रदायिकता का दस्तावेज तमस-सत्यप्रकाश	4512
महाभारत काल में - राज्यों के आय के स्रोत का विश्लेषणात्मक अध्ययन-राजन कुमार	4516
जनपद कौशाम्बी में वर्ष 2001-02 से 2019-20 के मध्य भूमि उपयोग प्रतिरूप में परिवर्तन का स्वरूप-हृदेश कुमार सिंह; प्रो० अरुणा कुमारी	4520
मातृभाषा में अध्ययन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाला प्रभाव-डॉ० सुनिता मुर्दिया; टीना जैन	4527
उत्तराखण्ड में व्यापार एवं वाणिज्य: एक ऐतिहासिक अवलोकन-डॉ० सन्तोष कुमार; दीपक कुमार आगरी	4530
केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में किसान, मजदूर व शोषितों की बेबस-लाचार जिन्दगी का चित्रण-रवि शंकर निराला	4533
भारत-बांग्लादेश संबंधों के विभिन्न आयामों का विश्लेषण-डॉ० मनीष	4536
भारत में षड्-दर्शन की वैज्ञानिक परंपरा-डॉ० शीलक राम	4538
आपका बंटी: उपन्यास में आधुनिक नारी का यथार्थ-जावेदखान	4543
भारतीय ग्रामीण समुदाय के सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन में अर्जक संघ की भूमिका का समाजशास्त्रीय विश्लेषण-विनय कुमार सिंह पटेल	4545
पाकिस्तान में राष्ट्रीय एकीकरण की समस्या: विभिन्न आयाम-ममता डांगी	4548
गुप्तकालीन सामाजिक परिदृश्य का अवलोकन : समकालीन साहित्य के विशेष संदर्भ में-आशुतोष पाण्डेय	4552
भारत में दलितों के सशक्तिकरण को सुनिश्चित करने में 73वें और 74वें संशोधनों द्वारा निभाई गई भूमिका पर एक अध्ययन -रीना कुमारी; डॉ० सोनिका	4558
"पांडुलिपि अंकन में 'मषी' या मसि तैयार करने की विधियां व परिचयात्मक पृष्ठभूमि"-डॉ० राजकुमार जांगिड़	4563
गुरदयाल सिंह के 'परसा' उपन्यास की बनावट और रणनीति का अध्ययन-बिशम्भर; सोनिया यादव	4566
वर्तमान वैश्विक चुनौतियों के समाधान हेतु गांधीवाद की प्रासंगिकता-अनीता मीणा	4568
वैशेषिकमतानुसारं कालस्य द्रव्यत्वसिद्धिः-विजय कुमार	4571
डॉ० सूरज सिंह नेगी के उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन: वृद्धों के विशेष संदर्भ में-मीनाक्षी; डॉ० प्रवेश कुमारी	4574
नक्सलवाद एक संवेदनशील मुद्दा-सुनीता	4577
सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा- एक विहंगम दृष्टिकोण-डॉ० अजित	4580
रघुवीर सहाय के काव्य में "जनता" की अवधारणा-पंकज सिंह	4584
उच्च शिक्षा में चुनौतियाँ: नामांकन, पाठ्यचर्या, शिक्षण, गुणवत्ता, अनुसंधान और नीतियाँ-संतोष कुमार दुबे	4587
भगवद् वाल्मीकि चरितम् महाकाव्य में अलंकार योजना: एक विवेचन-डॉ० जगदीश भारद्वाज; गीता	4591
'भगवद्वाल्मीकिचरितम्' में ध्वनि तत्त्व: एक विवेचन-डॉ० ललित कुमार गौड़; निशा	4597
नारी सशक्तिकरण का एक दस्तावेज: आछरी-माछरी उपन्यास-डॉ० सोनी काण्डपाल	4601
फणीश्वरनाथ रेणु के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अनुशीलन-मनीषा यादव	4605
1857 ई. के विद्रोह का उत्तर भारतीय रियासतों में सैनिक स्वरूप-डॉ० रघु महेंद्र सिंह	4607
कुशीनगर जिले में अध्ययनरत बी0एड0 के छात्राध्यापकों/छात्राध्यापिकाओं के नैतिक मूल्यों का अध्ययन-डॉ० दुर्गेश पाल; डॉ० अजय कुमार सिंह	4609
वाल्मीकि-रामायण में वर्णित वैदिक स्त्री-देवता-चन्द्रकला	4614
महाभारत में खगोलशास्त्रीय विवेचन-राहुल	4617

धर्मांतरण का मुद्दा और उत्तर-प्रदेश की हिंदी दलित पत्रकारिता—दुर्गेश कुमार देव	4621
आरक्षण नीति का प्रभाव: महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के शिक्षकों का अध्ययन—अजीत सिंह	4624
मशीनी अनुवाद: आधुनिक युग की आवश्यकता—मृणाल ठाकुर; डॉ० विदुषी आमेटा	4629
शिक्षकों में बर्नआऊट और कार्य संतुष्टि के मध्य संबंध का अध्ययन—श्रीमती रंजना पटेल; डॉ० पद्मा अग्रवाल; डॉ० सुमनलता सक्सेना	4633
भारत में राज्य प्रशासन: अर्थ, विकास एवं वर्तमान स्वरूप—मिथलेश कुमारी	4636
विजेन्द्र के काव्य में बिम्ब सौन्दर्य—मीना देवी; डॉ० कमला कौशिक	4642
1857 का विद्रोह और ग्वालियर—डॉ० भूप सिंह बल्हारा	4646
शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में मानवाधिकार शिक्षा का अध्ययन—डॉ० नरेश कुमार	4649
प्राथमिक शिक्षा में बालिकाओं के (ड्रापआउट) की समस्या, (बिलासपुर जिले) के विशेष संदर्भ में—लीलावती पटेल; डॉ० नीरज कुमार खरे	4655
अधिगम अक्षम बालको की शिक्षा एवं पुनर्वास को प्रभावित करने वाले कारको का विश्लेषणात्मक अध्ययन —सुमन प्रतीक्षा; (प्रो०) डॉ० रजनी रंजन सिंह	4664
वामपंथी उग्रवाद: चुनौतियां और प्रतिक्रिया—मनोज कुमार शर्मा	4666
वर्तमान कानून पर हाल ही में निजता के अधिकार के निर्णय का प्रभाव—परमार मनोजकुमार आर.	4669
उपभोक्ता जागरूकता: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, (जनपद देहरादून की ग्रामीण एवं नगरीय महिलाओं का तुलनात्मक अध्ययन) —डॉ० सविता राजपूत	4675
भारतीय राजनीतिक व्यवस्था एवं भारतीय लोकतंत्र: जाति की विघटनकारी भूमिका—डॉ० अंशु पांडे	4681
शिक्षार्थियों के शैक्षिक मूल्यांकन की उपलब्धि में समावेशन की चुनौती—अभिषेक कुमार; प्रो० (डॉ०) रजनी रंजन सिंह	4686
तिजारा तहसील: सड़क मार्गजाल विश्लेषण—अशोक कुमार खटीक	4691
वैयाकरणसिद्धांतकौमुदी के कालाधिकार प्रकरणगत तद्धित पदों का संस्कृत वाङ्मय में अर्थप्रयोग—अभिषेक; डॉ० सुरेन्द्र कुमार	4695
परमारकालीन शैव भूमिज मन्दिर स्थापत्य—डॉ० बबीता	4702
वैदिक वाङ्मय में स्त्रियों का योगदान—डॉ० सूरजभान	4709
वृद्धावस्था एक सामाजिक समस्या एवं चुनौती—प्रतिमा सिंह	4711
'दिनकर' के काव्य में विद्रोही स्वर—डॉ० राजेश कुमार; राधा रानी वर्मा	4715
कलौता समाज में राजनीतिक चेतना जागृत करने में पंचायती राज की भूमिका (देपालपुर विकास खण्ड का एक अध्ययन) —अर्जुन चौहान; डॉ० कुसुमलता निगवाल	4718
त्वरित सुनवाई के लिए बलात्कार के मामलों में विशेष न्यायालयों का गठन : एक आवश्यकता—लताबेन सुरजीभाई मेणात	4724
विकलांगता: भारतीय शिक्षा, समाज और सिनेमा—डॉ० पिन्टू कुमार	4727
भारत में पंचायती राज का स्वरूप एवं संवैधानिक प्रावधान—महेन्द्र प्रताप बाँयला	4730
योग माध्यम से तनाव प्रबंधन और इष्टतम प्रदर्शन—विपुल ए. देसाई	4734
कबीर की भक्ति एवं भक्ति काव्य में कबीर का प्रभाव—सलमा खातुन	4736
दयानन्द सरस्वती एवं रवीन्द्र नाथ टैगोर के अनुसार जीवन मूल्य एवं शैक्षिक विचार—प्रतीक त्रिपाठी; डॉ० बीनू शुक्ला	4739
राजस्थान के दौसा जनपद के किलों का अध्ययन—महेन्द्र प्रताप सिंह; डॉ० आलोक कुमार	4741
लोकतंत्र और निर्वाचन एक संक्षिप्त अध्ययन—राकेश कुमार	4745
श्रीमद् भागवत में योग—साधना—दिपिका बी० पटेल; डॉ० रीटा एच० पारेख	4750
कानपुर के चौबेपुर विकासखंड में आयोजित गणेश महोत्सव का सामाजिक सांस्कृतिक अध्ययन—पद्म नारायण पांडेय	4754
उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाली दिव्यांग महिला छात्राओं के मुद्दे और चुनौतियाँ—सरिता बाजपेई	4758
भारत में मानवाधिकार संरक्षण हेतु न्यायिक प्रयास—तरुषी पांडेय	4762
प्राचीन भारतीय साहित्यिक संदर्भों में चारणो का प्रदान—ब्रह्मभट्ट ध्रुवकुमार जयंतकुमार	4766

हरियाणा में अहीरवाल के नाट्य संगीत के प्रसिद्ध लोक कलाकारज्दों मुकेश	4770
हरियाणा के सूरजकुंड अंतर्राष्ट्रीय हस्तशिल्प मेला का एक अध्ययन-सुनीता अहलावत	4773
ग्रामीण गरीबी में मनरेगा का योगदान-जिज्ञासा पाण्डेय	4779
समाज में शिक्षा से वंचित विद्यार्थियों की सांवेगिक स्थिरता का अध्ययन-डॉ० पंकज कुमार यादव	4784
स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्यों का एक अध्ययन-डॉ० विजय शंकर यादव	4788
'अरावली' उपन्यास में बोध और अभिव्यक्ति का नवप्रवर्तन-दिनेशभाई एम. चौधरी	4792
संचार कंपनियों के ग्राहकों के क्रेता-व्यवहार पर विज्ञापन के प्रभाव का अध्ययन (कौशांबी जनपद के विशेष संदर्भ में)-डॉ० ज्ञानेन्द्र सिंह चौहान	4795
प्रभा खेतान के उपन्यासों में स्त्री-चिंतन-उपासना	4799
रबीन्द्र नारायण मिश्रक उपन्यासमे नारी विमर्श-पंकज कुमार पंडित; डॉ० मीनू कुमारी	4802
कोरोना काल के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना पर प्रभाव-नीरज कुमार	4805
भारत में चुनाव आयोग: स्वरूप व कार्य एवं इसके समक्ष चुनौतियाँ-प्रहलाद कुमार मीना	4810
भारत के आर्थिक विकास में शिक्षा का योगदान-अनुज कुमार	4814
मृणाल पाण्डे के उपन्यास में समाज के उत्थान में नारी की भूमिका-चौहाण उर्वशीबेन ऐम	4818
लैंगिक समानता के वैश्वीकरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलनों की भूमिका : एक विश्लेषण-डॉ० गौरव शर्मा	4820
भारत की भू-रणनीतिक महत्वाकांक्षा में अफगानिस्तान का स्थान-निशांत तुराण	4825
जनसंख्या वृद्धि एवं वितरण का क्षेत्रीय प्रतिरूप: सिवान जिला का एक प्रतीक अध्ययन-सुबोध कुमार चौहान	4830
हिंदी उपन्यासों में संवेदना के विविध आयाम-डॉ० संजय भाऊसाहेब दवंगे	4834
तुलसीदास जी के काव्य में लोक कल्याणकारी भावना-प्रा. माने शेषराव सुभाषचंद्र	4837
सतत विकास की अवधारणा सिद्धांत एवं लक्ष्य-श्रीमती अंजना	4840
मोहनलाल महतो वियोगी का व्यक्तित्व और कृतित्व-शालीन साहू	4843
दिनकर के निबंधों में राष्ट्रीय एकता के तत्व-कैलाश कुमार; डॉ० शंकरमुनि राय	4846
74 वें संविधान संशोधन के पश्चात नगरीय प्रशासन-डॉ० श्याम किशोर उपाध्याय	4851
पारिस्थितिकी पर्यटन: सतत विकास का बेहतरीन जरिया-आसीन खॉं	4854
जैन दर्शन में कल्याणक का महत्त्व-विमलेश राम; डॉ० दुधनाथ चौधरी	4859
अन्तः कृद्दशा में वर्णित सांस्कृतिक-जीवन का समीक्षात्मक अध्ययन-विनय कुमार सिंह	4861
जैन एवं जैनेतर शिक्षणीय व्यवस्था का दार्शनिक अध्ययन-सुष्मिता सौरभ	4863
द्विरेफकी कहानियों में मनोविश्लेषणात्मकता-श्री रमेश भाई परबतभाई चौधरी	4865
मत्स्यगंधा - गौतम शर्मा - एक अध्ययन-नरेंद्रसिंह सी. गेलोत	4868
मावजीमाहेश्वरी और निबंध 'बोर'-राजपूत लालसिंह चंदनसिंह	4870
भारत-पाकिस्तान जल विवाद का राजनीतिक आयाम-विष्णु शंकर तिवारी	4873
विभिन्न कर बचत उपकरणों पर एक अध्ययन-अनुभव अग्रवाल; अजय कुमार सिंघल; अरुण अग्रवाल	4877
एस्तामी स्थापत्य शैली-पटेल प्रियंकाबेन कीर्तिकुमार	4885
जन चेतना का स्थानीय उभार एवं अगस्त क्रान्ति: बलिया के विशेष सन्दर्भ में-दिलीप कुमार राय; प्रो० संतोष कुमार	4887
हिन्दी साहित्य में उपन्यासकारों का वर्तमान समय में मानवतावादी दृष्टिकोण-जितेन्द्र कुमार मौर्य	4890
बिहार में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों के विकास में सरकारी योजनाओं की भूमिका-बिरेन्द्र कुमार	4893
प्राथमिक शिक्षा की प्रगति में समुदाय की सहभागिता एवं सशक्तीकरण-डॉ० अनीता सती	4899
माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धिका तुलनात्मक अध्ययन-डॉ० आलोक कुमार सिंह; मनोज कुमार यादव	4904

सोशल मीडिया पर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का सार्थक प्रयोग—डॉ० दीपमाला गुप्ता; ऋतु मिश्र	4909
अहीरवाल के लोक जीवन में लोक संगीत—डॉ० रविन्द्र कुमार	4912
मध्याह्न भोजन योजना: हरियाणा के भिवानी जिले में तोशाम खंड का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन—सरोज कुमारी; प्रदीप कुमार	4915
आई. सी.टी. का वर्तमान शिक्षा प्रणाली में महत्त्व—डॉ० धीरेन्द्र सिंह यादव	4922
भारत में महिलाओं के विरुद्ध बढ़ते अपराध के कारण—डॉ० अर्चना	4926
ऐतिहासिक स्रोत के रूप में जातक साहित्य—रेशमा खातून	4928
मिथिला: एक वैष्णविक कला रूप—आलोक कुमार मिश्र	4930
सोनार किले का ऐतिहासिक महत्त्व—पंचाल मायाबेन ए.	4933
डॉ. हरिप्रसाद शास्त्री का ऐतिहासिक शोध में प्रदान—पटेल रसनाबेन के.	4936
कार्मिक प्रशासन की प्रासंगिकता का एक अध्ययन—श्यामल किशोर ठाकुर	4939
अंतरराष्ट्रीय प्रवासन : कारण और सामाजिक प्रभाव—डॉ० जे० पी० भट्ट; कमल कुमार	4942
नीलम राकेश की बाल कहानियाँ: समीक्षात्मक अध्ययन—मीनाक्षी	4947
स्थानीय स्वशासन और स्वच्छ भारत अभियान' (बिरसिंहपुर नगर परिषद् का एक अध्ययन)—डॉ० अनुराधा जैन; पवन कुमार गुप्ता	4951
स्वामी विवेकानन्द का दर्शन और राष्ट्रवाद—अमीत कुमार अमन	4954
'कन्या दिवस' गीत का रसदर्शन—रबारी दिनेश के.	4958
भारत में सामाजिक एवं धार्मिक आन्दोलन का संक्षिप्त अध्ययन—डॉ० त्रयम्बकेश्वर कुमार	4964
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग- हरियाणा के संदर्भ में इसके प्रशासनिक संगठन एवं प्रबन्धन का एक भौगोलिक विश्लेषण —डॉ० जोगेन्द्र सिंह खोखर	4968
पत्रकारिता में बाबासाहेब अम्बेडकर का योगदान—डॉ० अनिल विठ्ठल बाविस्कर	4974
रीवा संभाग में वनों का वितरण एवं वन्यजीव संवर्द्धन:- एक भौगोलिक अध्ययन—डॉ० प्रदीप सिंह; सितेश भारती	4977
विवेकी राय के उपन्यासों में भाषा एवं शिल्प पक्ष—डॉ० बबीता देवी	4981
कर्म एवं पुनर्जन्म: एक अनुचितन—डॉ० दुधनाथ चौधरी	4985
भट्टिकाव्य में प्रयुक्त प्रत्ययान्त धातुओं की व्याकरणिक प्रक्रिया—ध्रंगी सुरेशकुमार बाबूलाल	4988
अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार एवं वर्तमान परिदृश्य—डॉ० वैशाली देवपुरा	4991
विश्वशान्ति में संस्कृत का योगदान—डॉ० सन्तोष देवी	4996
भारतीय उच्चतम न्यायालय में अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में राजभाषा हिन्दी का स्थान—अरविन्द कुमार गुप्ता	4999
पंडित दीनदयाल उपाध्याय और राष्ट्रवाद - एक अध्ययन—अंकेश कुमार	5002
स्वामी विवेकानन्द और राष्ट्रवाद - एक अध्ययन—रंजन कुमार	5006
अस्तित्व के आइने में किन्नर: एक विश्लेषण—प्रिया सिंह; प्रोफेसर शार्दूल विक्रम सिंह	5009
जीवन कौशल शिक्षा और शिक्षण विधियों का महत्त्व—डॉ० संजीव कुमार	5013
बिहार में महिला सशक्तिकरण: एक अध्ययन—नीतू कुमारी; प्रो० मुनेश्वर यादव	5018
खुमाण रासो में वर्णित सामाजिक परम्परा का ऐतिहासिक विवेचन—डॉ० सोनल चौहन	5022
ज्ञानेन्द्रपति की कविताओं का विश्लेषण—नेहा कुमारी	5027
भारत के आर्थिक विकास में महिला श्रमिकों की भूमिका—किरण सिंह	5030
ऋग्वेद में नारी की स्थिति—विशाल मणी	5033
पचायती राज संस्थान में महिला ग्रामीण नेतृत्व: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन—शीला मिश्रा	5036
बच्चों के जीवन में समाजीकरण के विकास का समाजशास्त्रीय विश्लेषण—सुलेखा झा	5041

प्राचीन काल में अध्यात्म और विज्ञान: एक संक्षिप्त अवलोकन—डॉ० राजीव कुमार	5045
बालक विकास में वातावरण, शिक्षक एवं अभिभावक की भूमिका—डॉ० बाबू राम मौर्य; निक्की टोप्पो	5048
व्यावसायिक शिक्षा: चुनौतियां और आगे की राह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में—भास्कर देवांगन	5051
विदर्भ में स्वास्थ्य के क्षेत्र में डिजिटल मीडिया की पहुंच—डॉ० रुपाली उ. अल्लोने	5059
कोविड-19 महामारी के दौर में दूरस्थ शिक्षा—सुहास डफल	5069
वैश्विक परिप्रेक्ष्य में नयी शिक्षा नीति—डॉ० पूजा यादव	5072
छत्तीसगढ़ी लोकोक्तियाँ—गिरीश पंकज के व्यंग्य उपन्यास के परिप्रेक्ष्य में—नंदिनी तिवारी; शिवांगनी परिहार	5075
पत्र पत्रिकाओं के विज्ञापन का बदलता स्वरूप और स्त्री विमर्श—नंदिनी तिवारी; रश्मि पाण्डेय	5079
जलवायु परिवर्तन: एक विश्लेषणात्मक दृष्टि—डॉ० अर्चना अग्रहरी	5082
घरेलू हिंसा अधिनियम 2005 एक विश्लेषण—पूनम यादव	5085
हिंद महासागर नीति की नई गतिशीलता एवं भूस्त्रातजिक स्थिति—राकेश कुमार	5088
जलवायु परिवर्तन और ऊर्जा सुरक्षा—डॉ० सन्तोष कुमार गुप्ता	5091
भारत में स्वास्थ्य की स्थिति एवं विकास—डॉ० कमलेश पाल; सरिता कुशवाहा	5094
भारत जापान अमेरिका त्रिकोणीय सहयोग—डॉ० रामकृष्ण सिंह; सुशील कुमार रावत	5096
कृष्णा सोबती के उपन्यासों में चित्रित नारी की संवेदनाएँ—श्रीमाली संदिप कुमार मनुभाई	5099
विश्वविद्यालय स्तर के खिलाड़ियों पर योगिक अभ्यास व भौतिक चिकित्सा क्षमता और मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन—डॉ० दिलीप सिंह चौहान; विनोद नायर	5103
मुंशी प्रेमचंद के लेखन में रोचकता—डॉ० शालिनी	5107
भारत में भूकम्प एवं बाढ़ की समस्या का प्रमुख प्राकृतिक आपदा के रूप में भौगोलिक अध्ययन—कृष्ण कुमार	5111
महिलाओं का राजनीतिक विकास—नीरु यादव	5115
जनपद फिरोजाबाद में जल संसाधन: एक भौगोलिक अध्ययन—गरिमा सिंह; डॉ० नेत्रपाल सिंह	5118
जयंत गाडीत के 'सत्य' उपन्यास में गांधीजी का जीवनसंघर्ष—भानोतर निताबेन ईश्वरभाई	5121
अनुसूचित जातियों पर निर्धनता उन्मूलन के संदर्भ में पंचवर्षीय योजनाओं का क्रियान्वयन और प्रभाव का अध्ययन—डॉ० कुलदीप कुमार द्विवेदी	5124
करौली जिले में जल संसाधन की चुनौतियां एवं समाधान—मनोज कुमार मीणा	5127
जयशेखरसूरी रचित जैनकुमारसम्भव महाकाव्य में काव्य सौंदर्य का वर्णन—पायलबेन मनुभाई प्रजापति	5133
लोकगीत—डॉ० हेतल पी० बारोट	5135
स्त्री-साहित्यिक विमर्षवादी विचारधारा का सृजन और संभावना—प्रकाश यादव	5138
शिव प्रसाद सिंह के कथा साहित्य में अनुभूति—प्रो० डॉ० उर्विजा शर्मा; सीमा यादव	5141
मुक्तिबोध की फ़ैण्टेसी विषयक अवधारणा का विश्लेषण—डॉ० सुधा राजलक्ष्मी	5144
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में चौरी-चौरा घटना का महत्व एवं प्रभाव: पुनर्विश्लेषण—डॉ० ऋषभ कुमार	5148
ग्रामीण विकास में सूचनाधिकार की भूमिका—संध्या सिंह	5151
खेल जगत और वर्तमान शिक्षाव्यवस्था—डॉ० हरेद्रसिंह पी सोलंकी	5155
दलित जाति का दश: जूठन आत्मकथा—डॉ० अरविन्द कुमार	5157
गोविन्द मिश्र के कहानियों का युग बोध की दृष्टि से अध्ययन—पंकज मिश्र; डॉ० रानी बाला गौड़	5161
न्यू मीडिया के उपयोग से ग्रामीण क्षेत्रों की मुस्लिम महिलाओं के सामाजिक जीवन में परिवर्तन: एक अध्ययन (भोपाल जिले के ग्रामीण क्षेत्रों के विशेष संदर्भ में)—डॉ० उर्वशी परमार; तस्नीम खान	5165
मंजुल भगत के कथा-साहित्य में नारी चेतना का मूल्यांकन—डॉ० मधु शर्मा; संगीता यादव	5178
हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री-जीवन की चुनौतियाँ—दिनेशभाई चौधरी	5181
मैत्रेयी पुष्पा के ग्राम-केंद्रित उपन्यासों में स्त्री संघर्ष ('इदन्नमम' और 'चाक' के परिपेक्ष्य में)—झाला दिग्विजयसिंह सी	5183
छतरपुर जिले में सांस्कृतिक भूदृश्य पर्यटन का विकास एवं स्थानीय आर्थिक उन्नति के अवसर—डॉ० राजबहादुर अनुरागी; अंजली सिंह यादव	5185

मानवाधिकारों के संरक्षण के लिए नैतिक कृत्रिम बुद्धिमत्ता—राजेंद्र कुमार	5190
मृदुला सिन्हा के कहानियों में नारी चेतना—पौल्टी कुमारी; डॉ० आनंद कुमार सिंह	5201
समाजिक वातावरण का छात्रों के समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन—सुजाता बनकर; डॉ० मुंशी रकीब	5204
फणीश्वरनाथ रेणु के आँचलिक उपन्यासों में सामाजिक चेतना—रेखा टम्टा; डॉ० जगदीश चन्द्र जोशी	5214
मार्कण्डेय की कहानी 'महुए का पेड़' में ग्रामीण परिवेश—डॉ० जयप्रकाश यादव; सुनील कुमार यादव	5218
मध्यकालीन भारत की इस्लामिक वास्तुकला और वर्तमान भारतीय अर्थव्यवस्था में इसका योगदान—शालिनी तिवारी; डॉ० मणि अरोड़ा	5220
संतुलित आहार स्वस्थ जीवन का आधार—एक अध्ययन—अलका सुधा सरोजनी	5224
दुग्ध उद्योग का आर्थिक विकास में महत्व—नविता कुमारी	5226
'हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में नारियों की वर्तमान स्थिति'—डॉ० वर्षा रानी	5228
प्रदर्शन मूल्यांकन प्रणाली और कर्मचारी संतुष्टि पर इसका प्रभाव—डॉ० आशीष कुमार शुक्ला; अनुज कुमार सिंह	5231
नक्सलवाद : एक सामाजिक-आर्थिक समस्या—डॉ० आफताब आलम	5239
पंचायती राज : महिला सशक्तिकरण का सशक्त माध्यम (बिहार राज्य के संदर्भ में)—डॉ० आफताब आलम	4915
महात्मा गाँधी के पर्यावरणीय विचारों की प्रासंगिकता—प्रो० (डॉ०) प्रभास चंद्र मिश्र; कुन्दन कुमार	5242
'बुल बुल सराय' नाटक में उजागर सामाजिक राजनीतिक विसंगतियाँ—काजी गजालाबानू कुतुबुद्दीन	5244
समकालीन हिन्दी नाटकों में युगबोध—अतुल सिंह; डॉ० कुसुम सिंह	5247
चम्पारण में नील के किसानों का संघर्ष और महात्मा गाँधी—पिंकी कुमारी; प्रोफेसर (डॉ०) मीना सिन्हा	5250
भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था में बैंकों की भूमिका—स्मिता कुमारी	5253
भारतीय ग्रामीण विकास में लघु एवं कुटीर उद्योग की भूमिका—सुष्मिता कुमारी	5255
स्वतंत्रता संग्राम के अग्रदूत: शहीद वीर नारायण सिंह—डॉ० अनिल कुमार भतपहरी	5257
मुस्लिम अल्पसंख्यक समुदाय और सामाजिक पिछड़ापन—प्रो० डॉ० मो० शाहिद हसन; मो० हबीब	5259
निराला का काव्य और सामाजिक संदर्भ—प्रज्ञा मिश्रा	5263
केरल में चिकित्सकीय पर्यटन: एक भौगोलिक विश्लेषण—डॉ० शिव कुमार सिंह	5268
गिजुभाई बधेका के त्रिगुणात्मक शिक्षण पद्धति की वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में उपादेयता—रामेश्वरी; डॉ० रानी महतो	5274
जयपुर जिले में कृषि आधुनिकीकरण : आधुनिक सिंचाई एवं कृषि यंत्रों का योगदान—नीरज कुमार जांगिड़	5278
बारडोली स्वराज आश्रम और इसकी रचनात्मक गतिविधियाँ—हर्षदभाई के. चौधरी	5284
मार्केटयार्ड द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाएं—वीए परमार	5288
श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन और मूलभूत सिद्धान्त—पूनम यादव	5290
कहानी के बारे में सुरेश जोशी का भाषाकर्मा थिंगडू—प्रजापति गिरीशभाई कान्तिभाई	5292
परिवार कल्याण कार्यक्रमों का जनसंख्या वृद्धि पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण—डॉ० कुलदीप सिंह; डॉ० जी० बी० कश्यप	5294
प्रमुख दलित कहानीकारों की कहानियों में दलित चेतना—बबिता सरोज; डॉ० बिजय कुमार रविदास	5298
भारत में बाल श्रमिक: एक अध्ययन—संजीव कुमार यादव	5302
जैन धर्म में जैन परम्परा का ऐतिहासिक परिदृश्य: एक समीक्षात्मक अध्ययन—धर्मेन्द्र कुमार; डॉ० दुधनाथ चौधरी	5309
अमरकान्त के सूखा पत्ता एवं ग्राम सेविका उपन्यासों का सामाजिक महत्व—बृन्दा यादव	5312
आमेर राज्य में प्राप्त वाद्ययन्त्रयुक्त मूर्तिकला की ऐतिहासिकता (10वीं - 18वीं सदी के परिप्रेक्ष्य में)—महेश कुमार दायमा	5315
श्रीमद्भगवद्गीता में प्रतिपादित कर्मयोग एक विमर्श—श्रीमती डिम्पल जैसवाल	5321
भारतीय ज्ञान-विज्ञान की ऐतिहासिक परम्परा—कविता वर्मा	5326
शिक्षकों के कक्षा-कक्ष प्रबन्ध कौशलों का उनकी संवेगात्मक बुद्धि एवं शिक्षण अभिवृत्ति के सम्बन्ध में एक अध्ययन —विष्णु पटेल; डॉ० पूजा सिंग	5329
भारत में भूमि सुधार—डॉ० शकुन्तला मीना	5333

भारत, 75 साल की उम्र में, नारकोटिक ड्रग्स में संलग्न है—सौ० फातिमा कबीर	5335
ममता कालिया के आत्मकथा में स्त्री चिंतन—सरोज कसौधन; प्रो० बलराम गुप्ता	5340
हिंदी उपन्यासों में आदिवासी जीवन और विस्थापन—प्रतिभा	5345
मान्यवर कांशीराम जी का सामाजिक-दर्शन—मुकेश कुमार भारतीया	5350
बिहार में ई प्रशासन की भूमिका—अभय कुमार	5353
स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन—डॉ० ईश्वर चन्द्र त्रिपाठी; उमेश कुमार	5358
छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले एवं बिलासपुर जिले के प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों एवं अभिभावकों में बाल अधिकारों के बारे में जागरूकता का अध्ययन—डॉ० धरणी राय; विजय कुमार साहू	5362
भारतीय राजनीति में संघवाद का विकास—मनीषा; डॉ० राजेंद्र शर्मा	5371
संत रविदास की वाणी में सामाजिक चिंतन—सुमित कुमार	5375
भारत में भूजल दोहन: कारण व वैकल्पिक उपाय—डॉ० उर्मिल महलावत; डॉ० प्रभा शर्मा	5378
महाभारत में गृहस्थ धर्म का निरूपण—डॉ० राकेश कुमार	5381
किन्नरों के प्रति संवेदनहीन समाज—प्रिया वर्मा	5384
कश्मीर: अमरीकी परिप्रेक्ष्य (1951-1965)—डॉ० हनुमान सहाय मण्डावरिया	5387
ब्रिटिशकालिन छत्तीसगढ़ और कृषक प्रतिरोध—एक अवलोकन—डॉ० सीमा पाल	5391
ड्रिप सिंचाई: जल के कुशल उपयोग की पद्धति—डॉ० उर्मिल महलावत; डॉ० प्रभा शर्मा	5394
भारतीय संस्कृति में निहित हिंदू-राष्ट्रवाद—डॉ० लाल बहादुर	5397
डॉ० केशुभाई देसाई के उपन्यासों में स्त्री संघर्ष—पार्थकुमार सोमाभाई जोशी आविष्कारक	5400
उच्च माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत संयुक्त और एकल परिवार के विद्यार्थियों की बुद्धि और सामाजिक समायोजन का समीक्षात्मक अध्ययन—शालिनी पाण्डेय	5402
दुर्ग-भिलाई नगरों के कार्यशील महिलाओं की आवासीय दशा एवं स्तर: एक भौगोलिक अध्ययन—शिवेन्द्र बहादुर	5406
मुगल साम्राज्य के पतन में प्रभावी आर्थिक कारण—डॉ० गौरव दीप करौला	5412
शमशेर बहादुर सिंह के काव्य में सामाजिक-यथार्थ—चन्द्रपाल सिंह	5417
अमृता प्रीतम के कथा-साहित्य में नारी विमर्श के मनोवैज्ञानिक पक्ष—ज्योति सक्सेना	5422
जलवायु परिवर्तन के मानव स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव: एक समस्या—रोमित आंतिल	5426
समकालीन कविता और बाजारवाद—डॉ० विवेक शाँ	5430
भारतीय समाज में ट्रांसजेंडर समुदाय की स्थिति: एक विमर्श—डॉ० कंचन; डॉ० सतीश चन्द्र जैसल	5433
योअर्स फेथफुली: प्रतिरोधी चेतना की अभिव्यक्ति—नीतू कुमारी	5436
बिहार की राजनीति में जाति की भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन—सुबोध चौधरी	5438
स्त्री स्वातंत्र्य के प्रश्न और दिव्या—डॉ० उर्वशी गहलौत	5441
रिलेशन: साइबर स्टाकिंग एंड राइट टू प्राइवैसी—मौ० जाकिर	5444
हरियाणा में लाडली योजना का क्रियान्वयन: जींद जिले के संदर्भ में—प्रीति	5449
नई शिक्षा नीति में शिक्षक शिक्षा का विवेचन—डॉ० सुधा उपाध्याय	5452
पोलिसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम: एक परिचय—सुषमा घई; डॉ० सीमा मिश्रा	5456
गोविन्द मिश्र के उपन्यासों में धार्मिक पक्ष का समाजशास्त्रीय अध्ययन—हरजीत कौर	5462
21वीं शताब्दी की हिन्दी कहानियों में नारी का बदलता धार्मिक दृष्टिकोण—सतवीर कौर	5465
आत्म और नैतिकता: भारतीय राजनीतिक विचार में बौद्ध वैचारिक विकास—तरंग महाजन	5468
हरिशंकर परसाई के व्यंग्य-लेखन का वैशिष्ट्य—मनीष कुमार मिश्र	5474
ऋग्वेदब्राह्मणग्रन्थेषु राज्यस्य उत्पत्ति सामाजिका: आवश्यकताया: आधारेण—डॉ० रेणु सिंह; नीलम तिवारी	5477

गायत्री मंत्र के साथ प्रज्ञायोग व्यायाम का गृहिणियों के तनाव स्तर पर प्रभाव—डिलेश्वरी साहू; डॉ० राधिका चंद्राकर	5479
स्त्री संवेदना को खंगालती अनामिका की कविताएँ—डॉ० अफरोज बेगम	5484
महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य में सामाजिक समस्याएँ—खेमबाई साहू; डॉ० सविता वर्मा	5487
21 वीं सदी के दौर में किसान विमर्श—ईरण, जे.	5490
महात्मा ज्योतिबाफुले का दलित पत्रकारिता के उद्भव एवं विकास में योगदान—दुर्गेश कुमार देव	5493
गिजुभाई बघेका एवं डॉ० जाकिर हुसैन के शैक्षिक विचारों की तुलना एवं वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता: एक अध्ययन—शुभम कुमार	5499
बिहार में सुशासन और समावेशी विकास की राजनीतिक संस्कृति के विस्तार में नीतीश कुमार का योगदान—मुकेश कुमार	5504
माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र-छात्राओं की विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन—अंजार अहमद	5510
“मुरादाबाद नगर में प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 धारक शिक्षकों की समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन”—रजनी यादव	5520
“मुरादाबाद जनपद में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व का अध्ययन”—डॉ० रवि कुमार	5524
संत जांभोजी की समाज सुधार की भावना—प्रवीण कुमार रामावत	5528
जनपद जौनपुर के क्षेत्र की आर्थिक पृष्ठभूमि और भूमि उपयोग में कृषि उत्पादकता का अध्ययन—राकेश कुमार मौर्य	5531
कला व सौंदर्य बोध—डॉ० अभिनव नारायण आचार्य	5534
16वीं लोकसभा के बाद भारत की संघीय प्रणाली का विकास—डॉ० अशोक कुमार यादव	5540
कुमारसंभवम् में शिव के संज्ञा शब्द चयन—डॉ० विपुलभाई एम० श्रीमाळी; एकताबेन नरसंगभाई चौधरी	5543
अयोध्या जनपद में अवस्थापनात्मक तत्व एवं ग्रामीण विकास: अध्ययन की एक रूप रेखा—पवन कुमार यादव	5549
सातवें दशक के प्रमुख हिन्दी उपन्यासों में प्रगतिशील चेतना—ककला लक्ष्मी रामजीभाई	5554
सौर ऊर्जा की खपत की तुलना में उपभोक्ताओं के बीच सौर प्रणाली की खपत पर एक अध्ययन (पाटन तालुका के बालिसाना गांव के संदर्भ में) —धरतीबेन मनोज कुमार भोजक	5556
पत्रकारिता की अनुत्तरदायी भाषा—डॉ० गणेश शंकर श्रीवास्तव	5560
उत्तर प्रदेश में सिंधी शिक्षा: एक अध्ययन—अक्षर टेकचंदाणी	5563
चम्पारण सत्याग्रह: एक नवोन्मेषी व सर्वतोन्मुखी प्रयोग—डॉ० अरविन्द कुमार सिंह	5569
भारत विजय नाटक का परिचयात्मक विवरण—जोशी दिपीकाबेन प्रविणभाई	5572
प्रगतिवाद—डॉ० हौशिला प्रसाद पाल; छाया देवी	5574
धूमिल के काव्य में आम आदमी का सामाजिक संघर्ष: एक अनुशीलन—डॉ० अनीता रानी	5577
योग के सन्दर्भित ग्रन्थों में अन्तर्निहित ‘ध्यानयोग’ का परिभाषात्मक स्वरूप—डॉ० लीना झा; दीपक	5582
जन-समाज एवं ग्रामीण सरोकार का कवि: जयप्रकाश मानस (“सपनों के करीब हो आँखें” कविता संग्रह के संदर्भ में)—डॉ० पान सिंह	5600
बी.एड प्रशिक्षुओं में कम्प्यूटर जागरूकता का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन —सरोज शुक्ला; डॉ० रेखा नरेन्द्र जीभकाटे नवखरे	5608
रोहतास जिला (बिहार) में कृषि विकास एवं पर्यावरण: एक भौगोलिक अध्ययन—शशि शेखर सिंह	5613
उत्तर गुजरात में अनुसूचित जाति में वित्तीय और विकास सहयोग की भूमिका—जयेश सी. परमार	5620
वाजपेयी बैंकबल योजना के सामाजिक-आर्थिक प्रभाव मेहसाणा तालुका के संबंध में अभ्यास—नायक रिकूबेन एस.	5624
महिला आर्थिक सशक्तिकरण में सरकार द्वारा जनकल्याणकारी योजनाओं के योगदान का संक्षिप्त मूल्यांकन—डॉ० कविता सक्सैना; शालिनी त्यागी	5627
चन्द्रकान्ता के कथा साहित्य में साम्प्रदायिक सद्भाव—साधना मिश्रा	5631
हिंदी की स्त्री आत्मकथाओं में स्त्री विमर्श—लक्ष्मी गोंड	5634
स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता—कु० पूजा	5636
बदलते सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य एवं नरेश मेहता का कथा साहित्य—बबिता पाठक	5641

पुस्तकालय विज्ञान और गूगल एप्स-डॉ० क्षमा त्रिपाठी	5643
मॉरीशस में हिन्दी साहित्य उद्भव और विकास-कंचन	5656
समग्र शिक्षा- विद्यालयी शिक्षा से सम्बन्धित गुणवत्तापूर्ण एकीकृत शिक्षा प्रणाली-डॉ० क्षमा पाण्डेय; हेमपुष्पा गंगवार	5659
बस्तर का "टाइगर बॉय" चंद्र मंडावी-मोहन	5663
विदेशी व्यापार और बाजारों का एकीकरण-डॉ० महावीर प्रसाद शर्मा	5666
बीमा कंपनी से जुड़े बीमाधारकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का एक अध्ययन (डिसा शहर के संदर्भ में)-परमार नेहा शंकरलाल	5669
अरब कवियों और लेखकों के अमेरिका प्रवास के कारण और कारक-तैयबा उम्मी नाजरीन; डॉ० खैरुल अनम समसुद्दीन	5672
ग्रामीण विकास के बदलते परिदृश्य में मनरेगा की भूमिका-मुन्नी राम; डॉ० (श्रीमती) मंजु मगन	5674
संतमत्त एवं शांति का मार्ग-प्रिय रंजन	5678
ग्रामीण क्षेत्र में मनरेगा योजना में शामिल श्रमिकों का सामाजिक-आर्थिक अध्ययन (पाटन तालुका के संदर्भ में)-डॉ० प्रतीक्षा जे० पटेल	5681
बिहार की अर्थव्यवस्था के विभिन्न आयाम और उसके क्षेत्रीय विकास में स्वयं सहायता समूह का योगदान-अक्षय सिद्धान्त	5684
हिन्दी के विकास में प्रवासी साहित्यकारों का योगदान-डॉ० सुनील यशवंत व्यवहारे	5689
संत कवियों की मानवतावादी जीवन दृष्टि-डॉ० राजेश कुमार चौधरी	5692
भारत में ई-शासन: अवसर एवं चुनौतियाँ-दिव्या; डॉ. राकेश यादव	5696
आधुनिक कलाकार रमेश गर्ग के चित्रों का विश्लेषण-डॉ० मनोज टेलर; मधु पाराशर	5701
भारतीय परिप्रेक्ष्य में संयुक्त परिवार का विघटन-संतोष विश्वकर्मा	5710
वेदों में रचित वर्णित भारतीय मनोवैज्ञानिक संस्कार-डॉ० अभिषेख कुमार पाण्डेय	5714
पर्यावरणात्मक संघर्षों के मुद्दे एवं विभिन्न वैचारिक धाराएं-आलोक गुप्ता	5720
कृषि में आंशिक रूप में कृषिश्रमिकों का सामाजिक-आर्थिक अध्ययन (गुजरात राज्य के पाटन तालुका के संदर्भ में)-मेहुल सथवारा	5724
संत रविदास की दार्शनिक विचारधाराओं का अनुशीलन: एक अध्ययन-प्रो० (डॉ०) शिव शंकर मण्डल	5727
"उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों पर व्यवहार प्रारूप के प्रभाव का अध्ययन"-श्रीमती श्रीति मजुमदार	5730
समतावादी विचारों के पोषक कबीर-कुमारी कंचन	5737
कहानीकार 'परेश' और मानव मूल्य-अंजू बाला	5740
सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में विलयनीकरण कार्यक्रम में छात्रों और अभिभावकों पर आर्थिक और सामाजिक प्रभावों का एक अध्ययन (मेहसाणा तालुका के संदर्भ में)-दशरथभाई पी० सोलंकी	5742
उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में इन्टरनेट के ज्ञान एवं प्रयोग का तुलनात्मक अध्ययन-कमलजीत कौर; डॉ० राकेश कुमार डेविड	5745
उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक मूल्यों का उनके लिंग, परिवेश एवं संवेगात्मक बुद्धि के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन -मंजुला आनंद; डॉ० संगीता एस० धनाढ्ये	5749
महिला शिक्षा का सामाजिक और आर्थिक विकास और महिला सशक्तिकरण पर प्रभाव: वैश्विक और भारतीय परिप्रेक्ष्य का अध्ययन -आशाबेन आर. राठौड़; डॉ० रोहित जे. देसाई	5752
रायपुर जिले के माध्यमिक स्तर विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति: एक शोध-सुमन भारती; डॉ० जे. एस. भारद्वाज	5755
सूचना का अधिकार अधिनियम: उत्तर प्रदेश राज्य सूचना आयोग का कार्यान्वयन एवं चुनौतियाँ-प्रमोद कुमार गंगवार; डॉ० धर्मेन्द्र कुमार सिंह	5761
जनजातीय समाज एवं परिवार नियोजन: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (जशपुर जिले के मनोरा विकासखंड के विशेष संदर्भ में) -डॉ० क्रैसेसिया बक्सला	5769
सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में विलयनीकरण कार्यक्रम में छात्रों और अभिभावकों पर आर्थिक और सामाजिक प्रभावों का एक अध्ययन। (मेहसाणा तालुका के संदर्भ में)-दशरथभाई पी. सोलंकी	5775
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में उग्रवाद की भूमिका-डॉ० अंशु प्रिया	5778
शिक्षा में आधुनिक तकनीक का प्रभाव एक अध्ययन-माया सोनकर	5781

“नई शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक शिक्षा-चुनौतियों और सुझाव”—प्रो. रमाकांती साहू	5785
अस्तित्व: उपन्यास में अभिव्यक्त किन्नर संवेदना—डॉ० पंकी पारीक; अनिता कुमारी	5788
‘चौबोली’ नाटक का स्त्री पाठ—आकांक्षा भट्ट	5791
भारत में बाल-श्रम की स्थिति एवं तत्संबंधी साहित्य का स्वरूप—डॉ० दीपक कुमार	5795
‘पितृसत्तात्मक व्यवस्था बनाम शकुंतिका”—सुरजीत	5800
दलित अस्मिता: एक सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य—डॉ० सीमा आनन्द	5803
महिला सशक्तिकरण सम्बन्धित भारतीय संवैधानिक प्रावधान—गीता चौधरी; डॉ० मनीष पांडेय	5807
नई कविता में विघटित जीवन मूल्य—मुकेश	5813
चित्रा मुद्गल की कहानियों में महानगरीय बोध—डॉ० नीरज कुमारी	5817
कृषक आंदोलन एवं उनकी आर्थिक स्थिति—बमबम यादव	5820
“माध्यमिक स्तर के सामान्य एवं पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों की समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन”— डॉ० हरीश कंसल; निहारिका मिश्र	5824
“बी0एड0, प्रबन्धन तथा अभियान्त्रिकी (इन्जीनियरिंग) पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन” — डॉ० हरीश कंसल; राजेश कान्त रंजन	5829
“चंद्रकांता के कथात्मक साहित्य में मध्यवर्गीय जीवन की अभिव्यक्ति”— डॉ० कुसुम चौधरी	5834
गिरिराज किशोर के साहित्य में अभिव्यक्त सामंती व्यवस्था का अनुशीलन— डॉ० पूजा चौधरी	5836
वर्तमान परिदृश्य में सोशल मीडिया और हिन्दी भाषा की सार्थकता—डॉ० ध्वनी सिंह	5838
आजादी के समय भारत एवं देसी रियासतों का विलय—संदीप बिश्नोई; डॉ० नीलम जुनेजा	5841
आदिवासी अस्मिता पर संकट—प्रदीप कुमार सौर	5845
प्राच्य विद्या के रूप में वैदिक संगीत शिक्षा—अंजली शर्मा	5848
साहित्य और इतिहास की परस्परता—डॉ० मनोज कुमार	5850
मीडिया ट्रायल का न्यायपालिका पर प्रभाव—रविंद्र सिंह	5852
नहरों से सिंचाई से कृषि उत्पादन, आय एवं रोजगार पर आर्थिक प्रभावों का एक अध्ययन—प्रह्लाद आर. सुथार	5857
शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर आत्मसंकल्पना, संकाय एवं इनकी अंतःक्रिया के प्रभाव का अध्ययन —राजेश कुमार दुबे; डॉ० संगीता एस. धनाढ्य	5860
कविवर सुशांत कुमार राज के नाटक राष्ट्र रक्षति रक्षितम का विश्लेषण—डॉ० वीरेन्द्र कुमार जोशी; पंकज कुमार शर्मा	5864
सुलतानपुर जनपद में सेवा केन्द्रों-सामाजिक सुविधाएँ/सेवाएँ एवं कार्य एवं कार्यात्मक वर्गीकरण—शिव रतन गुप्ता	5867
20वीं सदी में भारतीय नारी की सामाजिक क्षेत्र में भागीदारी—श्रीमती लक्ष्मी सक्सेना; डॉ० ललित मोहन शर्मा	5869
भारत में शिक्षक शिक्षा के विकास का समसामयिक अध्ययन—अरविन्द कुमार यादव; डॉ० कविता गुप्ता	5873
वैदिक काल में महिलाओं की भूमिका और उनकी स्थिति—डॉ० दिनेश कुमार; डॉ० रीतिका विश्नोई	5877
प्रवासी भारतीय का महत्त्व: एक विश्लेषण—डॉ० कुमार प्रभाष	5879
“टोंक जिले में जल संसाधन प्रबंधन व विकास”: एक अध्ययन—परवीन महलावत; प्रो० गजेन्द्र सिंह	5883
रामचरितमानस और ग्राम- संस्कृति—डॉ० दयानन्द मसाजी शास्त्री	5886
महादेव टोप्पो की कविताओं में अभिव्यक्त आदिवासी चिन्तन—अमित कुमार चौधरी	5888
हिंदी काव्य संसार को अष्टछाप कवियों का अवदान: एक दृष्टि—डॉ० हेमन्त पाल घृतलहर	5892
निर्मल वर्मा की कहानियों में अभिव्यक्त अकेलेपन की भावना—डॉ० प्रणीता	5895
हेब्बार की कला का तकनीकी व कलात्मक अध्ययन—नीतू नरवाल	5898
कश्मीर में अनुच्छेद 370 की समाप्ति के बाद सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव—दीपिका कुमारी; डॉ० घनश्याम राय	5901
मदकूट्टीप की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अध्ययन—मनीषा रात्रे; डॉ० रामरतन साहू	5904
भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति—एक अध्ययन—कौशल मणी	5907

जौनपुर के करंजकला ब्लॉक में जनसंचार माध्यम एवं ग्रामीण समाज का एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण —देवेन्द्र कुमार यादव; डॉ० संदीप कुमार यादव	5910
दलित अभिजनों की संगठनात्मक सम्बद्धता का अध्ययन (बुन्देखण्ड क्षेत्र के विशेष सम्बन्ध में)—डॉ० सुनीता त्रिपाठी; डॉ० शक्ति गुप्ता	5918
कोविड -19 और बौद्धिक अक्षमता: प्रभाव, चुनौतियाँ और सुधार—सुश्री प्रियंका सरकार	5923
वर्तमान समय में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया एवं जेंडर विभेदीकरण—सुमन कुमार झा; डॉ० नजमा बेबी	5926
माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी विषय के शिक्षण में कम्प्यूटर आधारित शिक्षण पद्धति की भूमिका—मिहिर कुमार पाठक; डॉ० मो० एहसानुल हक	5929
हयाती पत्रिका में प्रकाशित कहानियों में दलित संवेदनाएँ (वर्ष- २०११ से २०२० तक प्रसंग)—आगजा खुशबु नटवरलाल	5931
बनारसी प्रसाद भोजपुरी की दृष्टि में पत्रकारिता—सियाराम मुखिया	5935
भारतीय समकालीन कलाकार संजय कुमार: प्रेरणा स्वरूप भगवान गौतम बुद्ध—राक्षी पासवान; प्रो० पाण्डेय राजीवनयन	5938
चुनावी राजनीति में बिहारी समाज की महिलाएं—डॉ० मुकुल बिहारी वर्मा; संदीप कुमार	5940
डॉ० भीमराव अम्बेडकर एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय की दृष्टि में राष्ट्रवाद सम्बन्धी अवधारणा—डॉ० जय कुमार झा; अनूप मिश्र	5945
प्रारंभिक विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की प्राप्ति में बाधाएँ—अनामिका कुमारी; डॉ० किरण कुमारी	5949
छात्र जीवन में आत्म सम्मान की भूमिका—फराह नाज; डॉ० अरशद हुसैन	5952
लोकनीति पर सामाजिक आन्दोलनों का प्रभाव—दीपक कुमार राय	5955
उत्तरवैदिक कालीन सामाजिक व्यवस्था—प्रो० प्रशान्त श्रीवास्तव; आनन्द सिंह	5958
देहरी का दीया: जीवन-अंधकार में उम्मीद का दीया—मुकेश कुमार मिरोठा	5961
नालंदा जिले में अनुसूचित जाति और सामान्य जनसंख्या के बीच साक्षरता अंतर: एक भौगोलिक अध्ययन—अमित कुमार; डॉ० संतोष कुमार	5965
जायसी के पद्मावत में लोक मर्म—डॉ० सुनीता यादव	5974
केशव चंद्र सेन: राजनीतिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि—डॉ० कलावती गाडरिया; डॉ० विमल कुमार तिवारी	5978
नकदी रहित भारतीय अर्थव्यवस्था और डिजिटलाइजेशन—मुकेश कुमार	5982
चंपारण सत्याग्रह एवं राजकुमार शुक्ल—खालिक हुसैन	5986
विवेकानन्द विजयम् में वर्णित विवेकानन्द के दार्शनिक विचारों का अनुशीलन—वितेश कुमार	5990
भारतीय इतिहास में मुगलकालीन चित्रकला का स्वरूप एवं भाव—डॉ० उदय कुमार	5993
समाज सुधारक पंडिता रमाबाई का योगदान—डॉ० आलोक कुमार	5996
भूपेंद्र नारायण मंडल और उसके समाजवाद की वर्तमान में प्रासंगिकता—माधव कुमार	6000
भूमि सुधार आन्दोलन - एक अध्ययन—कौशल कुमार	6003
भारत में सामाजिक आन्दोलनों का बदलता स्वरूप: एक अध्ययन—डॉ० सतेन्द्र; पूर्णिमा यादव	6005
भिलाई इस्पात संयंत्र में निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व का विश्लेषण—अब्दुल शाहीद; डॉ० हेमलता बोरकर	6009
“उत्तर प्रदेश के दलित आन्दोलन में बहुजन समाज पार्टी की भूमिका”—अभिषेक कुमार	6019
सूचना तकनीक और परिवार कल्याण—डॉ० ब्यूटी कुमारी	6022
छात्रों के परीक्षा तनाव: प्रभाव, कारण और निवारण में शिक्षक की भूमिका—फरहतुल ऐन तसनीम सबा; डॉ० एम० ए० खान	6024
पर्यावरण शिक्षा के प्रति छात्रों की मनोवृत्ति का पर्यावरण संरक्षण पर प्रभाव—अबुल हसनात अशरफ; डॉ० मसूद आलम खान	6027
छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में आई.सी.टी. की भूमिका—शिव शंकर कुमार; डॉ० नजमा बेबी	6029
“बी.एड. विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का उनकी समायोजन क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन”—विवेक दत्त	6032
नई शिक्षा नीति 2020: एक समीक्षा—शिल्पी कुमारी	6036
नवीन शिक्षा नीति में प्राथमिक शिक्षा स्तर पर किए गए परिवर्तनों का उल्लेख—सुनयना कुमारी	6038
बिहार को बंगाल से अलग करने में प्रेस का योगदान—अविनाश कुमार	6042
सांस्कृतिक एवं सांगीतिक परिप्रेक्ष्य में किन्नर समाज का समग्र अवलोकन—डॉ० प्रेम किशोर मिश्र	6045
मलिन बस्तियों की समस्याएँ—विशाल कुमार सिंह	6048
डॉ. राधाकृष्णन के शैक्षिक उपागम का अध्ययन—कुमार नवीन दीपक पाण्डेय; डॉ० शुभ्रा ठाकुर	6051

“पाल प्रदेश के आदिवासी: लोकगीतों में शिक्षा के संदर्भ”—डॉ० सीमा राठौर	6055
लोक साहित्य की अवधारणा—डॉ० रत्ना सदाशिव गौडा	6058
राजस्थान में पुलिस-जनता सम्बन्ध: एक सामान्य विश्लेषण—डॉ० राजेन्द्र प्रसाद सैनी	6061
ऑनलाइन शिक्षण प्रशिक्षण के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन—नितेश कुमार आनन्द	6064
“हिंदी दलित आत्मकथा में चित्रित भाषाई समाज: भाषाई भंडार एवं लघु क्षेत्र का अनुशीलन” (मोहनदास नैमिशराय की आत्मकथा ‘अपने-अपने पिंजरे’ खंड-1 के विशेष संदर्भ में)—प्रा० राजेंद्र ज्ञानदेव ननावरे; प्रो० डॉ० शाहू दशरथ मधाळे	6072
“उत्तर प्रदेश राज्य के सीतापुर जनपद के शासकीय एवं शासकीय अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा विषय के क्रियान्वयन का अध्ययन”—चन्द्रकेश वर्मा; डॉ० मोहम्मद शारिक	6078
भारत में पर्यावरण शिक्षा और इसका महत्व—विभा कुमारी	6082
वैश्विक महामारी कोविड-19 का महिलाओं पर प्रभाव—डॉ० प्रभात कुमार चौधरी; रूपम कुमारी	6086
सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा और शिक्षक की भूमिका—डॉ० दयाशंकर तिवारी	6090
भाषा, साहित्य, संस्कृति और समाज के सम्बन्ध सूत्र—रीना मलिक	6092
प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन का परिवर्तित स्वरूप: एक अवलोकन—डॉ० अवेन्द्र पासवान	6094
“स्वयं प्रकाश के कहानियों में मध्यमवर्ग जीवन”—पटेल सुनिलकुमार अजितभाई	6097
बौद्धिक विकलांग बच्चों में व्यावसायिक कौशल: एक अध्ययन—शोभा चौधरी; डॉ० पवन कुमार	6099
प्राचीन भारत में नारी शिक्षा की स्थिति: एक अवलोकन—डॉ० बृजकिशोर राम	6102
प्राचीन भारत के इतिहास में दिक्मालों की अवधारणा: एक अध्ययन—डॉ० अश्वनी कुमार	6106
राष्ट्रनिर्माण में युवाओं का योगदान—डॉ० ललिता शर्मा	6113
मध्यमवर्गीय नारी की अस्मिता: प्रेमचंद के उपन्यासों के संदर्भ में—राखी	6116
भारतीय संघ में राज्यपाल के पद की चुनौतियाँ एवं विकल्प (सुझाव)—डॉ० अरुण कुमार वर्मा; हिमांशु चौरसिया	6120
आधुनिक भारत में महिला शिक्षा एवं महिला शिक्षा हेतु उठाए गए कदम—डॉ० मनीषा कुमारी	6123
उत्तराखण्ड के अस्थाई राजधानी गैरसैण में जनसंख्या का बदलता स्वरूप—मोहन लाल; कमलेश कुमार; बबीता नेगी	6127
कृषि विकास में भूमि उपयोग पैटर्न और फसल तीव्रता का विश्लेषण (उत्तरप्रदेश के महाराजगंज जपनद के संदर्भ में)—सूरज प्रकाश मिश्रा	6133
छत्तीसगढ़ की मुरिया जनजाति में कृषि आधारित तीज-त्यौहारों का आर्थिक महत्व—सुनीता सोड़ी; प्रो. अशोक प्रधान	6137
प्राचीन भारत में वार्ता का महत्व—डॉ० पुनम कुमारी	6141
भारत में धर्म और समाज—डॉ० अशोक कुमार	6144
भारत नेपाल सीमा पर पुनर्वास और आंतरिक सुरक्षा के लिए सीमा क्षेत्र विकास कार्यक्रम (बीएडीपी-एमएचए भारत सरकार) के क्रियान्वयन में सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) के योगदान की भूमिका—विजय शंकर अग्निहोत्री	6150
“मीर महबूब अली और धर्मनिरपेक्षता” (रज़ाकार आंदोलन)—डॉ० राजश्री पी मोरे	6155
वृद्धों की समस्याओं को दूर करने में समाज का दायित्व—कंचन कुमारी; डॉ० मो० शाहिद हसन	6157
राष्ट्रवाद का परिवर्तित स्वरूप एक विश्लेषणात्मक अध्ययन—कुमारी अर्चना	6161
प्राचीन संस्कृत साहित्य में पर्यावरण चिंतन की परंपरा—डॉ० मिन्टू कंवर	6165
किशोरावस्था के छात्रों की आत्म-अवधारणा के संबंध में कैरियर निर्णय परिपक्वता—डॉ० सुनीता आर्या	6167
जालंधर के शिक्षा महाविद्यालयों में दो वर्षीय बी.एड पाठ्यक्रम के छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का एक अध्ययन—मुकेश कुमार	6173
गायत्री महामंत्र एवं भ्रामरी प्राणायाम का छात्रों के तनाव स्तर एवं शैक्षिक चिंता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन—सत्यम तिवारी; डॉ० राधिका चंद्राकर	6176
भागीरथ मिश्र की ‘जानगुरु’: आदिवासी-बाउरियों के जीवन और उनकी रोशनी की खोज की कहानी—डॉ० निर्मल दास	6183
शक्ति चटर्जी की ‘हेमंतेर अरण्ये एम पोस्टमैन’: अलगाव की भावना—तपन कुमार विश्वास	6186
विभाजन से मिले जख्मों पर मरहम लगाने का प्रयास करने वाला नाटक: जिन लाहौर नई वेख्या ओ जम्याइ नई—डॉ० अमित कुमार मिश्रा	6188
मधुकर सिंह के कथेतर साहित्य (भिखारी ठाकुर की जीवनी के संदर्भ विशेष में)—सीमा कुमारी; डॉ० इन्द्रनारायण सिंह	6191

महिलाओं में राजनीतिक सहभागिता एवं राजनीतिक चेतना (उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले के डलमऊ पंचायत समिति के संदर्भ में) -प्रज्ञा सिंह; डॉ० सतेन्द्र	6194
शिक्षक प्रभावकारिता की सैद्धांतिक रूपरेखा-मो० मंसूर आलम; डॉ० एम० ए० खान	6204
मैथिलीक आरंभिक कथा में नारी-विमर्श-श्वेता कुमारी	6208
“चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में संघर्ष”-ईला बहन कड़वा भाई रावल	6214
“स्वतन्त्र भारत में उच्च शिक्षा”-डॉ० राजेश कुमार यादव	6216
जनसंख्या वृद्धि के आधार पर वितरण एवं घनत्व को प्रभावित करने वाले कारक-तबस्सुम आरा	6219
समकालीन हिन्दी कहानियों में समाज के विभिन्न पक्ष-सुनीता सिंह	6225
1857 के स्वतन्त्रता आन्दोलन में मुजफ्फरनगर की महिलाओं की भूमिका-डॉ० अमरीश कुमार	6229
भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली में चुनौतियाँ-किरण प्रकाश चिकाटे	6232
भारत की युवा-पीढ़ी पर सोशल मीडिया का प्रभाव-गोल्डी कुमारी; डॉ० गोपी रमण प्रसाद सिंह	6235
आर्थिक स्थिति की प्रासंगिकता: धूमिल के काव्य के संदर्भ में-प्रीती तिवारी; डॉ० संतोष कुमार पांडेय	6239
रंग केसर एक कलात्मक अभिव्यक्ति-डॉ० संजय कुमार	6243
रामदरश मिश्र के उपन्यासों में ग्रामीण सांस्कृतिक जीवन के युगीन प्रभावों के कारण बदलती संस्कृति की परिणति का विश्लेषणात्मक अध्ययन -डॉ० अभिलाशा शुक्ल	6247
भारत में शिक्षक शिक्षा में नवाचार प्रथाएं-खुशबू कुमारी; डॉ० पुष्पा श्रीवास्तव	6250
“सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति दिल्ली के सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के विचारों का अध्ययन”-डॉ० अरुणा कुमारी	6255
मनोवृत्ति निर्माण में सोशल मीडिया की भूमिका: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन-डॉ० राजीव कुमार	6260
योगसूत्र में ईश्वर की अवधारणा-डॉ० अजित कुमार	6263
भारत में लैंगिक न्याय के लिए प्रतिबद्धता-राम सुबाष वर्मा	6268
स्कूली शिक्षा में ट्रांसजेंडर बच्चों का समावेशन: समस्या और समाधान-विशाल कुमार गुप्ता	6270
ज्ञानरंजन एवं रवीन्द्र कालिया की कहानियाँ: साम्य एवं वैषम्य-शिखा उमराव; डॉ० गीता अस्थाना	6274
पंजाब के लोक साहित्य-अंजली छाबड़ा	6276
भारतीय इतिहास की बीसवीं शताब्दी में विभिन्न महिला संगठनों की भूमिका का संक्षिप्त मूल्यांकन-मधु; डॉ० अर्चना सिंह	6280
मानवाधिकार एवंमहिलासशक्तीकरणहेतु संचालित योजनाएँ-मोहित जोशी; डॉ० जे० पी० त्यागी	6285
प्राचार्यों की योजना निर्माण में नेतृत्व गुणों की जागरूकता एवं क्रियान्विति के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन -डॉ० सुनीता मुर्डिया; देवेन्द्र कुमार जोशी	6289
बौद्ध धर्म का सांस्कृतिक योगदान-डॉ० नीरजा शर्मा; डॉ० शैलजा शर्मा	6293
एनआरएलएम योजना का ग्रामीण विकास पर प्रभाव: महिला स्व सहायता समूह के सदस्यों का सामाजिक-आर्थिक निर्धारण एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (जशपुर जिले के बगीचा विकासखण्ड में संचालित स्व सहायता समूह के विशेष संदर्भ में)-वीणा कुजूर; डॉ० संजय चंद्राकर	6297
प्राचीन भारतीय वाणिज्य-व्यापार एवं व्यवसायिक संगठन-कोमल गुप्ता	6302
बाल विवाह और ठाकोर समाज-मुकेशजी बी. ठाकोर	6305
सामाजिक परिवर्तन में स्वच्छता की भूमिका-सुरेन्द्र कुमार पंडित; डॉ० मंजू झा	6308
बिहार में असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों की समस्याओं और संभावनाओं पर अध्ययन-नगेश्वर राम	6312
सनातन राष्ट्रीय एकता के लिए आवश्यक: भारत या इन्डिया-डॉ० आकाँक्षा दुबे	6317
किशोर विद्यार्थियों में जोखिम उठाने की क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन-डॉ० वर्षा नालमे	6320
सिवनी जिले में पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की राजनैतिक सहभागिता का अध्ययन-दीपक कुमार बरकड़े; डॉ० अनामिका रावत	6324
कृष्णा सोबती के कथा-साहित्य की भाषिक संरचना-पूजा सरोज	6330
वैदिक साहित्य में धर्मार्थ विवेचन-डॉ० सीमा कुमारी	6334
प्रेमचंद युगीन आर्थिक परिस्थितियाँ-डॉ० सुमित्रा कुमारी	6338
अनुसूचित जनजातियों के विकास हेतु कृषि भूमि की स्थिति (धार जिले के बाग विकासखण्ड के संदर्भ में)-डॉ० देवेन्द्र मुझाल्दा; मडिया डावर	6342
भारतीय इतिहास में नारी- एक अध्ययन-डॉ० सुरेन्द्र कुमार	6345

भारतीय इतिहास में नारी- एक अध्ययन

डॉ० सुरेन्द्र कुमार

सह आचार्य, इतिहास विभाग, वैश्य महाविद्यालय, भिवानी

शोधात्मेख सार- भारतीय इतिहास एवं संस्कृति में सदैव नारी का स्थान सर्वोपरि रहा है। प्राचीन भारतीय धर्मग्रन्थों में नारी साक्षात् शक्ति या देवी का रूप माना गया है। वह अपने विभिन्न रूपों मां, पत्नी, बहन के तथा पुंजी में सदैव पूजनीय रही है। सैन्धव सभ्यता के पुरास्थलों के उल्लेखों से प्राप्त स्त्रियों की अत्यधिक मूर्तियाँ एवं मातृदेवी की मूर्तियाँ इस तथ्य का प्रतीक हैं, इस सभ्यता में नारी को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। वैदिक युग से पुष्यभूति वंश तक भारतीय समाज में नारी को सम्मान जनक स्थान प्राप्त था। परन्तु मध्यकला एवं ब्रिटिशकाल में नारी की दशा में तेजी से गिरावट आई। परन्तु 19 वी शताब्दी से ही अनेक समाज सुधारकों-राजाज राम मोहनराय, केशवचन्द्र सेन, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, जयोतिबा फूले सावित्रीबा फूले, पं. दीन दयालु वाचस्पति, सिस्टर निवेदिता एवं श्रीमां इत्यादि ने महिलाओं की दशा में सुधार किया। उन्होंने महिलाओं को शिक्षित करने हेतु उनके शिक्षण संस्थानों को खोलने में अग्रणी भूमिका निभाई। वर्तमान परिस्थितियों में भारतीय जीवन मूल्यों के आधार पर नारी का विकास करने की आवश्यकता है।

संकेतक शब्द- अर्थववेद, स्कन्दपुराण, गरिमामयी स्वामी विवेकानन्द, मातृदेवी, काठियावाड, थियोसोफिकल सोसायटी, गोरखपुर, रामकृष्ण मिशन, स्वामी दयानन्द।

भूमिका- भारतीय इतिहास एवं संस्कृति में नारी को सर्वोपरि माना जाता है। भारतीय धर्मग्रन्थों, दर्शनशास्त्रों एवं साहित्य में नारी को साक्षात् शक्ति के रूप में दिखाया गया है। नारी अपने विभिन्न रूपों- मां, पत्नी, बहन तथा पुत्री में सदैव पूजनीय तथा श्रद्धा का पात्र रही है। प्राचीन समय से ही समस्त भारतीय ग्रन्थों में मां को अद्वितीय शक्ति मानी गयी है। अर्थववेद में 'माता भूमिः पुत्रोहं पृथित्याः' अर्थात् यह भूमि मेरी माता है। वेदों में भूमि को माता और दुध पिलाने वाली कहा गया है। महर्षि मनु ने लिखा है कि,

उपामयायान्दशाचार्य आचार्याणां शतं पिता।

सहस्रं तु पितृन्याता गौर वेणातिरिच्यते।²

अर्थात् एक उपाध्याय से आचार्य दस गुणा अधिक श्रेष्ठ है। एक आचार्य से पिता सौ गुणा अधिक गौरवमय है, और एक पिता से माता सहस्र गुणा अधिक गौरवमयी है। उपनिषदों में भी "मातृ देवा भव, 'पितृ देव भव'" का उल्लेख करके मां को प्रथम स्थान प्रदान किया गया है। महाभारत के आदिपर्व में वर्णित है, "गुरुण्य चौव संवेषा माता परम को गुरु" अर्थात् समस्त गुरुजनों में माता को परमगुरु माना गया है। मनुस्मृति में कहा गया है कि "यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवताः।" पूजयन्ते सर्वास्त्राफलाः क्रियाः।। अर्थात् जहाँ नारियों का सम्मान व पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं और जहाँ इनका सम्मान नहीं होता है, वहाँ सारी क्रियाएँ विफल हो जाती हैं।

पुराणों में भी माँ को सर्वश्रेष्ठ गुरु माना गया है। स्कन्दपुराण एवं मत्स्य पुराण में वर्णित है, पतिता गुरु वस्त्या माता च न रूप। गर्भधारणपोषाभ्यां तने माता गरीयसी।।⁴ अर्थात् "पतिता गुरु भी त्याज्य है परमाता किसी प्रकार भी त्याज्य नहीं है। गर्भकाल में धारण पोषण करने के कारण माता का गौरव, गुरुजनों से भी अधिक है।

प्राचीन भारतीय धर्मग्रन्थों में भारतीय नारी को लक्ष्मी, दुर्गा एवं सरस्वती के रूप में वर्णन किया गया है। महाभारत में हमें उल्लेख मिलता है कि जब यक्ष ने युधिष्ठिर ने अत्यन्त सरल भाव से उत्तर दिया। माता से बढ़कर कुछ नहीं है। रामायण एवं महाभारत में उल्लेखित माता सीता, माता अनुसूया माता कुन्ती एवं माता गान्धारी से अभिप्रेरित होकर कोई भी सामान्य जन अपना जीवन सार्थक कर सकता है।

वर्तमान समय में भी अनेक भारतीय राष्ट्रपुरुषों ने माता को सर्वोपरि बताया है। स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने कहा है कि "हे भगवान् में किस नाम से आपको सम्बोधित करूँ? मानव के शब्द कोष में माँ से बढ़कर पवित्र शब्द कोई दूसरा नहीं है। जिससे मैं आपको पुकारूँ। अतः मैं शिशु के समान आपको माँ, माँ कहकर पुकारता हूँ। स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि भारत में स्त्री जीवन का आरम्भ और अन्त मातृत्व से होता है। विश्व में माँ नाम से अत्यधिक पवित्र और दूसरा नाम कौन सा है।"⁵ उन्होंने नारी की दशा को किसी भी राष्ट्र का थर्मामीटर बतलाया है।⁶ स्वामी रामतीर्थ ने अमेरिका में अपने भाषण के दौरान कहा, "माँ निष्काम कर्मयोग की मूर्ति है।" भारतीय शास्त्रों में नारी को सखा, अर्धांगिनी, सहचारिणी, सहकर्मि एवं भार्या के रूप में दिखाया गया है। प्रकृति द्वारा किया गया नर-नारी भेद शरीरगत ह न कि आत्मागत। विवाह भारतीय समाज एवं संस्कृति का एक पवित्र संस्कार है, जिसे 16 संस्कारों में से 13 वां संस्कार माना जाता है।

भारत में विभिन्न युगों में नारी की दशा में परिवर्तन देखने को मिलता है। भारत की सबसे प्राचीन सैन्धव सभ्यता में नारी को उच्च स्थान प्राप्त था। सैन्धव पुरास्थलों से नारी की मूर्तियाँ सर्वाधिक मात्रा में प्राप्त हुई हैं और उसे इन मूर्तियों में मातृदेवी एवं उर्वरा के प्रतीक के रूप में पूजा जाता था।⁷ वैदिक काल में नारी की दशा उत्तम थी। नर एवं नारी दोनों के समान अधिकार होते थे। ऋग्वेद में पत्नी को जायदेस्तम भी कहा गया है, जिसका अर्थ है पत्नी ही गृह है।⁸

वैदिक काल में लड़कियों को भी शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त था। अपाला, घोषा, लोपमुद्रा, विश्वरा, सिकता एवं निवानरी इत्यादि इस काल की प्रमुख विदुषियाँ थीं। जो उच्च शिक्षित थी एवं अधिकांश ने वैदिक मंत्रों तथा श्लोकों की रचना की थी।⁹ वैदिक युग में नारियों की दशा एक समान नहीं रही। शिक्षा के क्षेत्र में नारी का दायरा शनैः शनैः सीमित होने लगा। उसका पति ही नारी का शिक्षक अथवा गुरु बनकर रह गया।

सुत्रकाल में नारियों की स्वतन्त्रता पर प्रतिबन्ध लगने लगे। बाल्यकाल में पिता उसकी रक्षा करता है, यौवनावस्था में पति तथा प्रोढाध्वस्था में पुत्र उसकी रक्षा करता है।¹⁰ सुत्रकार शंख ने कहा, “पति के कोढ़ी, पतित, अंगहीन या बीमार होने पर भी पत्नी पति से द्वेष न करे, स्त्रियों के लिए पति देवता है।” छठी शताब्दी ई. पू. में भारत के उत्तर पश्चिम से ईरानी, ग्रीक, यूनानी, इण्डोबैक्टिरियन, इण्डो-पार्थियन, शक, कुषाण तथा हुणो ने आक्रमण किये जिसके फलस्वरूप भारत में नारी की दशा ओर भी दयनीय हो गई। समाज में नियोग एवं पुर्नविवाह की प्रथाएं बंद हो गईं और सती प्रथा का चलन बढ़ गया। मुसलमानों के आक्रमणों के पश्चात् भारतीय समाज में बाल-विवाह, बहुपत्नी विवाह, एवं पर्दा प्रथा का प्रचलन हुआ। मुस्लिम काल में लाखों स्त्रियों एवं बच्चों को मुसलमान बनाकर दासों के रूप में बेचा गया।¹¹ मुगलकाल में उनके हरम में हजारों की संख्या में महिलाएँ होती थीं। अकबर के समय में दिल्ली में मीना बाजार जैसी घृणित व्यवस्था आरम्भ हुई। जहाँगीर शाहजहाँ अपनी भोग विलासिता के लिए प्रसिद्ध थे।

राजपूतों में नारियों को विशेष रूप से माता को विशेष स्थान प्राप्त था। मुस्लिम आक्रमणकारियों से बचने के लिए अनेक भारतीय माताओं, बहनों एवं पुत्रियों ने अपनी सात्विकता की रक्षा हेतु प्राण न्योछावर किये थे। इनमें सुरजदेवी, परमिलदेवी रानी पद्मिनी, देवल देवी, रानी दुर्गावती इत्यादि प्रसिद्ध हैं। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के समय में भी भारतीय महिलाओं की दशा शोचनीय थी। कन्या वध, बाल-विवाह एवं पर्दा प्रथा इत्यादि कुप्रथाएँ बढ़ गई थीं। बनारस, काठियावाड तथा कच्छ के राजपूतों, जोधपुर के राठौरों, जयपुर के कच्छवाहों, जालन्धर के बेदीयों, तथा मेवात के मुसलमानों में कन्या वध बढ़े पैमाने पर चलन में थी।¹² विधवा विवाह निषिद्ध होने पर हिन्दू विधवाओं की जनसंख्या में अभिवृद्धि हुई। एक प्रमुख विद्वान पी.एन. बोस ने 5 वर्ष से 30 वर्ष की विधवाओं का सर्वेक्षण किया।¹³ ब्रिटिश काल में सती प्रथा मुख्यतः राजपूताना तथा बंगाल में प्रचलित थी। मुगल शासक अकबर, सिक्ख गुरु अमरदास तथा मराठा पेशवाओं ने सती प्रथा को रोकने के प्रयास किए थे। देवदासी प्रथा का भी चलन बढ़ गया था। महिलाओं को शिक्षा से भी वंचित रखा जाता था।

भारत में महिलाओं की दशा में सुधार करने हेतु 18 वीं शताब्दी के उत्तार्ध में अनेक सामाजिक संस्थाओं ने अग्रणी भूमिका निभाई। इनमें सर्वप्रथम नाम राजाराम मोहनराय तथा उनके द्वारा स्थापित ब्रह्म समाज का आता है। 1811 ई. में उनके बड़े भाई जगमोहन की मृत्यु के बाद जबरदस्ती उसकी पत्नी अलकमंजरी को सती कराया गया तो उन्होंने सती प्रथा के विरुद्ध अपना अभियान आरम्भ किया। आमतौर पर यात्रा के साथ चलते हुए लोग ‘राम नाम सत्य है’ बोलते हैं, लेकिन वे ‘सतीप्रथा बन्द हो’ का उच्चारण करते थे। राजा राम माहेनराय के अथक प्रयासों से ही 4 दिसम्बर 1829 ई. को सती प्रथा निषेध का नियम पारित हुआ। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के अथक प्रयासों से 1 जुलाई 1856 ई. में विधवा-पुर्न विवाह बिल प्रस्तुत किया गया, जो अतिशीघ्र कानून बना। पहला विधवा पुर्नविवाह 07 दिसम्बर 1856 ई. को ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के एक मात्र पुत्र नारायण चन्द्र का विवाह भावसुन्दरी नामक महिला से हुआ। केशवचन्द्र ने बाल-विवाह, विधवा, पुर्नविवाह, अर्न्तजातीय विवाह कराने तथा बहु विवाह पर रोक लगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।¹⁴

भारत में महिलाओं की दशा में सुधार लाने हेतु स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं आर्यसमाज में भी अग्रणी भूमिका निभाई। उन्होंने विधवा पुर्नविवाह का समर्थन, विवाह एवं अन्य अवसरों पर फिजूल खर्ची को रोकने तथा कन्यावध का सशक्त विरोध किया। आर्यसमाज ने नारी शिक्षा पर भी बल दिया। 1890 ई. में जालन्धर में कन्या महाविद्यालय की स्थापना हुई। पंजाब के लेफि्टनेंट गर्वनर सन् माइकेल ओड्वायर ने 1916 ई. में कन्या महाविद्यालय की ‘विजिट बुक’ में लिखा था। “जालन्धर एक ऐतिहासिक स्थल है, लेकिन कन्या महाविद्यालय ने इसे सम्पूर्ण भारत में विख्यात बना दिया है।”¹⁵ 1882 ई. में मद्रास के अहयार में थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना हुई। इसके अन्तर्गत एनी बेस्फट ने भारत में महिलाओं की दशा को सुधारने का कार्य किया। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया। उनका कहना था कि, “भारत संसार के देशों में तब तक अपना स्थान नहीं पा सकता जब तक इस देश की माताएँ, जिनके घुटनों पर उनके बच्चे बड़े होते हैं, शिक्षा प्राप्त नहीं कर लेती। जब तक इन स्त्रियों को शिक्षा नहीं मिलती जिसके आधार पर वे घर को सुन्दर बना सकें। तब तक कोई कैसे आशा कर सकता है कि भारत उन्नति करेगा।”¹⁶ “उन्होंने कन्याओं को प्राचीन साहित्य, दर्शन, ज्योतिष, भूगोल एवं शक्ति की शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। इस कार्य हेतु उनके नेतृत्व में बनारस, कानपुर, श्रीनगर, गोरखपुर, अड्यार इत्यादि स्थानों पर स्कूल तथा महाविद्यालय स्थापित किये गये। उन्होंने अपने उद्बोधन कहा कि, “तुम अशिक्षित माताओं द्वारा देशभक्तों तथा वीरों की जाति नहीं बना सकते, ये भारत की माताएँ ही थी, जिन्होंने भारत के अतीत को बनाया।”¹⁷ स्वामी विवेकानन्द ने मानव जाति की सेवा हेतु 1 मई 1897 को बेलूर में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। उन्होंने महिलाओं की दशा को सुधारने हेतु सार्थक प्रयास किये। उनका मानना था कि “धर्म को आधार बनाकर स्त्री शिक्षा का प्रचार करना होगा। धर्म के अतिरिक्त अन्य शिक्षाएँ गौण होंगी। धर्म शिक्षा, चरित्र-गठन तथा ब्रह्मचर्य पालन इन्हीं के लिए तो शिक्षा की आवश्यकता है। क्या तुम अपने देश की महिलाओं की दशा सुधार सकते हो? ताकि तुम्हारी कुशलता की आशा की जा सकती है। नहीं तो तुम ऐसे ही पिछड़े पड़े रहोगे।”¹⁸ स्वामी विवेकानन्द ने अपनी आत्यात्मिक पुत्री के नाम से प्रसिद्ध सिस्टर निवेदिता (मार्गरेट एलिजाबेथ नोबुल) के भारत आगमन से पूर्व एक पत्र में उसको लिखा था कि, अपने देश में नारी उत्थान की मेरी निश्चित योजना है। मैं राष्ट्रीय स्तर पर बालिकाओं की शिक्षा के लिए एक संस्था चलाना चाहता हूँ जिससे न केवल भारतीय पत्नियों व माताओं का अपितु ऐसी ब्रह्मचारिणों का भी निर्माण हो, जो अपनी जाति का उत्थान करें। ऐसी महिलाओं की आवश्यकता है यह संभाल ले।¹⁹ निवेदिता ने भारत में 13 नवम्बर 1898 ई. को कलकता में एक छोटा सा विद्यालय शुरू किया, जो वर्तमान में भारत की महिलाओं को शिक्षित करने में अग्रणी भूमिका का निर्वहन कर रहा है।

श्रीमती मिस अल्फासा रिचर्ड, जिन्हें महर्षि अरविन्द ने ‘श्रीमाँ’ का नाम दिया था ने भारत में बालिकाओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में महिला की मातृत्व की भूमिका को अहम् बताया। उन्होंने कहा कि वर्तमान परिस्थितियों को बदलने की क्षमता रखने वाली आध्यात्मिक शक्तियों को अभिव्यक्त करें।²⁰ भारत में महिलाओं को शिक्षित करने में श्री ज्योतिराव गोविन्द राव फूले द्वारा स्थापित सत्यशोधक समाज ने भी अग्रणी भूमिका निभाई। उन्होंने अपनी अर्धांगिनी सावित्री बाई फूले को शिक्षित किया। जिन्हें भारत की प्रथम शिक्षिका के रूप में जाना जाता है। सर सैयद अहमद आगा खां, जो

एक मुस्लिम समाज सुधारक के रूप में प्रसिद्ध थे। उन्होंने मुस्लिम महिलाओं के जीवन को सुधारने के उद्देश्य से बहुपत्नी विवाह प्रथा एवं सरलता से तलाक का प्रबल विरोध किया। पंजाब के क्षेत्र में सिंह सभा ने 'आनन्द विवाह' को कानूनी मान्यता दिलाने के लिए प्रयास किये तथा महिलाओं के लिए संस्थाएँ खोली गईं।²¹ हरियाणा में झज्जर के पं. दीन दयालु द्वारा स्थापित सनातन धर्म सभा ने भी विवाह के अवसर पर फिजूल खर्ची की कटु आलोचना की तथा विधवा पुनर्विवाह का प्रबल समर्थन किया।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि भारत में नारी का माता, बहिन तथा पुत्री के रूप में सदैव आदर किया गया है। वैदिक युग में भी स्त्री और पुरुष दोनों को एक दूसरे का प्रतिरूप बताया गया है। मध्यकाल एवं ब्रिटिश शासन काल में नारी की दशा में गिरावट आई परन्तु भारतीय समाज सुधारकों एवं धार्मिक, सामाजिक आन्दोलनों महिला सशक्तिकरण में अहम भूमिका निभाई। वर्तमान परिस्थितियों में भारतीय नारी का विकास हजारों वर्षों के भारतीय जीवन मूल्यों के आधार पर करने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. अथर्ववेद, 12.1.12: डॉ. राधा कृमुद मुखर्जी, नेशन लिज्म एण्ड हिन्दू कल्चर (संशोधित संस्करण, 1995, दिल्ली) पृ. 12
2. मनुस्मृति, 2.145
3. महाभारत, आदि पर्व, 195, 96
4. स्कन्दपुराण, कौमारिका खण्ड, 6.7: मत्स्यपुराण 227.50
5. स्वामी विवेकानन्द, विवेकानन्द साहित्य, भाग-1, (अद्वैत आवक कोलकाता, 1789 पृ. 309)
6. वहीं, पृ. 324
7. डा. राजबलि पाण्डेय, भारत का सांस्कृतिक इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, द्वितीय संस्करण, 1983, पृ.सं. 27
8. सतयकेतु विद्यालेकार, मौर्य साम्राज्य का इतिहास, श्री सरस्वती सदन, नई दिल्ली, 2017, पृ.सं. 16
9. डॉ. डी.सी चौबे एवं प्रोफेसर रजनी मीणा, भारत की संस्कृति की धरोहर, जयपुर, 2015, पृ.सं. 370
10. डॉ. कैलाश चन्द्र जैन, प्राचीन भारतीय सामाजिक तथा धार्मिक संस्थाएँ, मध्यप्रदेश, हिन्दी अकादमी ग्रन्थ, भोपाल, 1987, पृ.सं. 40
11. डा. आर्शीवादी लाल श्री वास्तव, भारत का इतिहास (1000-1707) आगरा, 1961 पृ.सं.302
12. सतीश चन्द्र मितल, भारत का सामाजिक-आर्थिक इतिहास (1758-1957) नई दिल्ली, 2005 पृ. 19
13. पी.एन. बोस, ऐ हिस्ट्री ऑफ हिन्दू सिविला ई जेरान इ.पूरिंग द ब्रिटिश कब, भाग-दो
14. के.के. दत्र, ए सोशल हिस्ट्री ऑफ मान्डर्न इण्डिया (नई दिल्ली, 1975) पृ. 356-366
15. ए युसुफअली, द मेकिंग आफ इण्डिया (लन्दन 1925, पृ. 285)
16. एनीबेसन्ट, इसैनशैल्स आफ एन इण्डियन एजुकेशन (अडयार)
17. एनीबेसन्ट, बर्थ आफ एनेशन (अदयार, 1917) पृ. 102
18. विवेकानन्द साहित्य 2905 - पृ. संख्या -186
19. डा. सतीश चन्द्र मितल, हिन्दुत्व से प्रेरित विदेशी महिलाएं (नयी दिल्ली, 2014) पृ. 6
20. श्रीमां, आदर्श माता-पिता, अध्यापक और बालक पृ. 11-12
21. द ट्रिब्यून, 9 अप्रैल 1909



MANAGERIAL SKILLS ROLE IN AN ORGANIZATION

Dr. Promila Dahiya

Director cum Assistant Professor SFS, Vaish College, Bhiwani

Abstract

The purpose of this study is to investigate the value of the relationship of prediction of management effectiveness in the four dimensions of management skills (technical skills, management skills, human skills, and civic behavior). Therefore, you want to find the reason why the value relationship of these Aspects of the experience differs according to the type or degree of organization. A multiple moderate regression and 1 ' analysis of the weight in are used to test the ' hypothesis of relation. Using results from various sources, these results show that the four dimensions of the skills of leadership were the predictors very relevant to the management of the performance - . The skills human was a little more important than the experience technology and the attitudes of the citizens, while the skills of management in overall were the most relevant. Gender was not a regulator meaning of the “equation of effective capacity, but the organization level was to allow the heads to choose improvement or positioning the manager to take into account the four measures of capacity. In addition, special attention should be paid to skills management and this concentration should increase in the corporate hierarchy of managers. Although the investigation earlier had suggested that the value of the various functions of management, this analysis is the first to provide the “evidence empirical evidence of this type of ability to predict the actual effectiveness of the management of an aid for the analysis of relevant statistics.” Evaluate the relative importance of these capacity dimensions.

Keywords: managerial skills, capacity management key, efficiency management, capacity management, efficient management of relative importance.

INTRODUCTION

In a serious worldwide economy, it is uncommon for organizations to understand that the principle wellsprings of benefit are their assets, particularly those in the management field. Abilities - Management has been the sultriest theme for the most recent few years Ten and the estimation of the exhibition - management is one more appealing and fascinating territory of investigators and experts. It is broadly perceived that supervisors are the fundamental instruments utilized by countries, associations, and foundations to address the world's issues. The power long haul of an association relies upon the relational abilities, the information, the demeanor positive and the conduct of bosses. The management successfully has been concentrated by one extraordinary number of CEOs and procedure master during the previous many years.

It is widely believed that management training provides a valuable link between monetary development, management performance and the representation of people at their relationship level. Directors have to play an important and increasingly more important role in the overall performance of their organizations and in the progress of their countries in this regard.

The company management has merged in many ways the standard modern and has reorganized the content to educate their members. The administration of the preparation is the basic essential to improve the ' efficiency of management'. Almost inevitably, several variables influence the effectiveness of management and attract one approach special for all the parts of the management of the learning in the world. Training in the management of the market situation is a central task under the direction of the manager. The management training has triggered one series of competitions that traditionally acts the leader of the market and the management of activities democratized in this direction.

From one of the company's funds for the development of knowledge, skills and competencies , and a lot of things that the lead company, as well as people in need of management - education. These schools of commerce have provided to workers and executives in sectors as different as finance, transportation and accounting speaker in skills related to business and the practical business. Business managers are necessary for managers to be financially successful. For the managers of today, the need for knowledge specialized for longer handle multiple companies with the skills well trained is essential. The management of the performance is now many peaks in teaching.

A being only suppliers of frame, the schools of commerce should be able to create the managers qualified and morally reliable, and preparation for leadership is one point potential for the performance manager. This test is directed to the fact, the benefits of shape physically with and without structure prepared by the combination.

Despite the fact that these more intangible and multifaceted capabilities are at the heart of modern organizations, particularly those operating on a global scale, there appears to be an oversimplification of leadership and soft-skills training. Theory-based research, with its general exemption from time-

based constraints and its lack of emphasis on practice-based application, has also come under fire for its shortcomings. Increased scholarly research is of little interest to practitioners and has become a "vast wasteland" of insignificance, disconnected from the pace, pressure, complexity, and challenges of today's business environments.

As a result, much research has been conducted without regard to the essence of a practicing profession, and instead has pursued important latent and theoretical interests. A more focused focus on research relevance without sacrificing rigour would at the very least increase the usefulness of research and make theory much more appealing to those who work in the field of medicine. At the end of the day, researchers and educators must work together to ensure that students not only understand theory, but also develop pragmatic managerial behaviours that are essential to their success in the marketplace. There is evidence that the relevance of business domains and specific competencies nested within broader generic taxonomic categories may change over time as a result of technological advancements and social progress.

The importance of the skills directives

Nonetheless, the improvement of the economy and soundness requires one head adequately human - one hand - to work with the abilities and capacity to put resources into the economy. A conveyance Human Capital reached out to amounts significant for the efficiency of the work and the exercises business, which advances the financial plan of improvement. They are not counsel on the best way to more readily create the knowledge. As NR Narayana Murthy said, the justification the absence of progress in numerous imaginative nations isn't an absence of assets, yet an absence of involvement and uprightness in management.

On the off chance that we are skilled and productive in our work, we can utilize our land resources: human experience, monetary assets, creative mind, and live and distant - the construction, to name only one few. This is on the grounds that an equipped individual owes their responsibility not to an association or association, but rather to their vocation. The fantasy about making India a main part in globalization might not have been conceivable without Jawaharlal Nehru thought of extending a few foundations, for example, the India Institute of Technology (IIT) and the Indian Institute of Management - (IIM). ,

The Center for Research nuclear Bhabha (BARC) and the Institute of India in Sciences Medical, The organization India should have the ability to development abroad, in the event that you are hanging tight for occupations holding up in the expert world. Management (and the economy) is viewed as a fundamental power for change, advancement and success. In the

' circumstance today of management - the experts have one major obligation regarding, being the' India forcefully, that the interest for management and management - preparing is getting more quick.

Due to the consistent improvement of its articles, governments, species, economies, rivalry and the inventiveness of unions analyzed. With these advances, the pioneers desire to react with better ways to deal with exploration and yield. The accomplishment of an association in accomplishing its objectives and furthermore their obligation social depends in huge measure on its individuals. In the impossible occasion that the individuals take care of their work competently and the association that has understood its destinations. The affiliation means to utilize its scholarly ability to prevail amidst today's business world.

Related Literature

Sarita Chaudhary et al (2011) According to them, if management profession and practise are considered and moulded as "art" rather than "science," its educational programming avoids the pitfalls of structure, formalism, and standardization; creativity, subjectivity, flexibility, and informality replace the conscripted mode of training and development in management; and, finally,

Adarsh Preet Mehta (2014) The lack of a corporate governance system at management colleges is one of the key causes for the decline in the quality of management education. Corporate governance should be included in the accreditation process. He has come to the conclusion that management education must be comprehensive, targeted, and customized with the goal of closing the gap that exists between industry requirements and academic curriculum, with a focus on attitude, grooming, corporate awareness, and the development of managerial skills being the primary objectives.

Kumar K. Ashok et al (2013) The undergraduate programmes supplied by universities and postgraduate programmes offered by institutions of management to recent graduates do not provide the participants with appropriate practical experience. These students earn experience only after they have completed their degree and have begun working for an organization.

Sanjeev Kumar et al (2011) Management education must be integrated, targeted, and customized with the goal of closing the gap that exists between industry requirements and

academic curriculum, with a particular emphasis on corporate awareness, grooming, attitude, and the development of managerial skills being the primary focus.

Gautam G. Saha (2012) We have entered the third millennium and that India's management education is undergoing a significant transformation. Internationalization, strategic alliances, cross-cultural communication, partnership, and mergers are the newest trends in management education and training programmes. But where do we stand in relation to the United States and Japan? One of the most crucial reasons for Japan's ascent to the top of the industrial world's ladder is their belief in "developing people before things are developed," and it is critical for Indian management education to adopt this philosophy as well.

RESEARCH METHOD

The scientific methodology is utilized to methodically pass the examination stage. The fundamental goal of this section is to clarify the idea of the examination and the philosophies utilized for the investigation. It additionally incorporates the pursuit cycle, the inquiry structures, models, information assortment strategies, the nature of the substance and configuration, usability, maker of the product and information assortment, as the strategy technique utilized in the example.

The dispersion of the ' hand by and large of the offer - work that is coordinated to the advancement of the market when numerous economies Westerners to manage the impacts of the maturing and, now and again, of a lessening in the labor force. 'Magnum opuses. The number of inhabitants in these nations is overpowering. The number brimming with workers in China, and India is higher than that of Europe, the "United States and Japan joined. It is normal that the ' Indian labor force in the following 20 years of age (2010-30) to 31% development. In 2050 1 ' India is that 19% of its populace more than 60, concerning 39%, 53% and 67% more than 65 in the part states, including Germany and Japan (successfully hand of work by Accenture (Learning Transition , Business Today).

RESULTS

This part portrays the aftereffects of the information survey. The investigation was led among 506 representatives from four prestigious banks situated in NCR - Delhi, India. The perusing and the exchange, l ' association of the design and the' key compelling were the factors that are incorporated. The survey of the information, including the assessment of the administration abilities scale set up in the primary period of this examination, the acknowledgment of the social styles of different banks and, at last, the audit of the hypotheses proposed for the report.

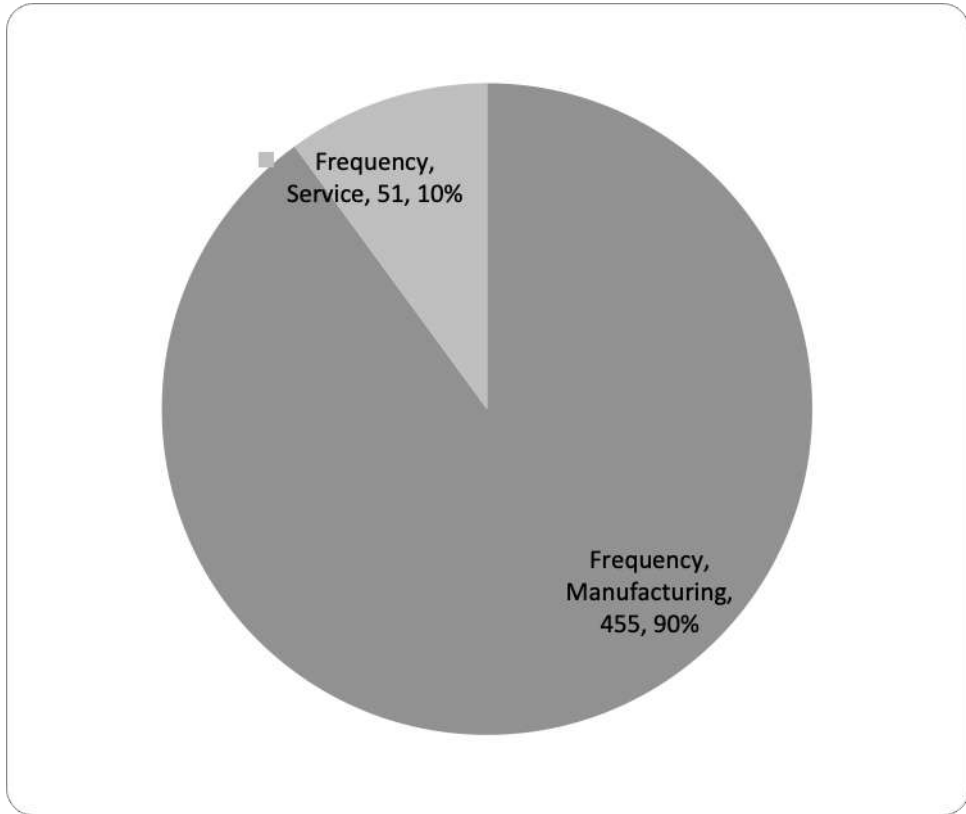
The discussion starts in the initial segment from the presentation of quantitative insights regarding the examination. The subsequent zone clarifies the degree of fitness in the administration of EPT, CFA and the legitimacy and viability of the actions utilized in this investigation for each model. The third section looks to know the “model of the corporate culture 2 bank structures remembered for the examination. The fourth section manages the investigation of hypotheses through straight relapse. The fifth and last portion recognizes the "examination of the investigation of the resistance of spezifischen structure. The investigation information was led in with SPSS 21 and MASTERS 20.

- **Type of organization**

shows that 90 percent of the respondents work in the manufacturing sector, whereas only 10 percent work in the service industry, as a summary.

Type of organization

		Frequency	%
	Manufacturing	455	90
Valid	Service	51	10
	Total	506	100.0



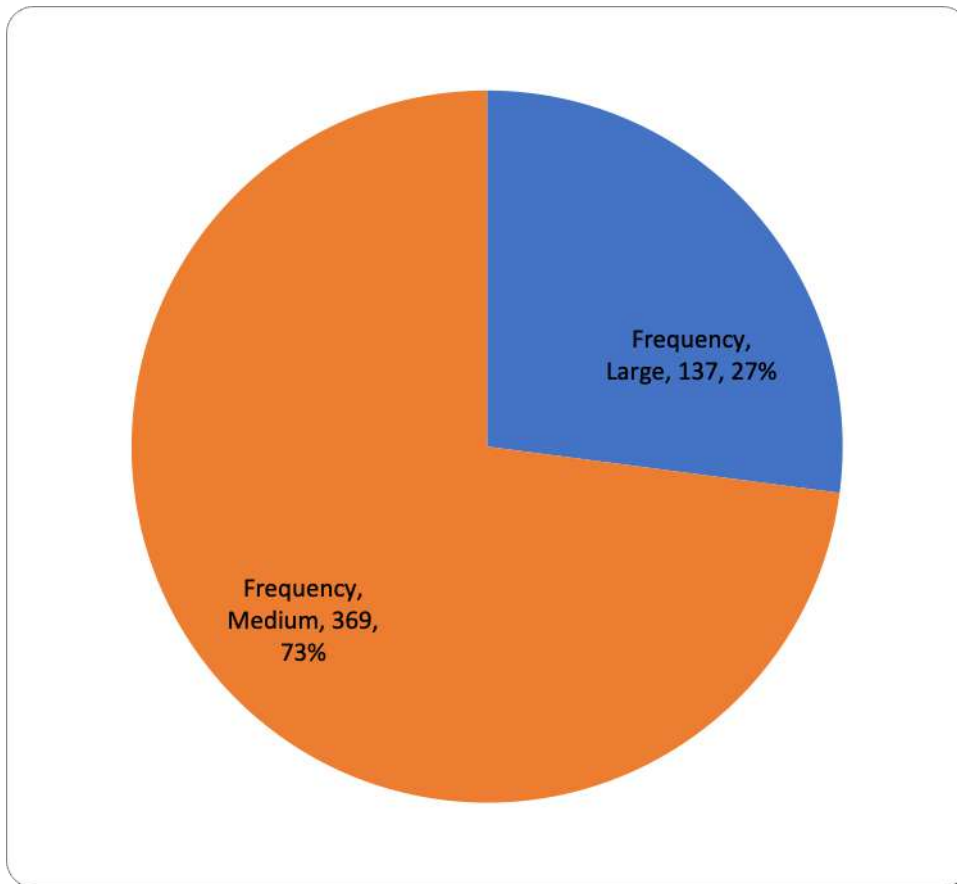
Type of organization

- **Classification of the organization**

shows that 27 percent of respondents work in major industry, whereas 73 percent work in medium industry, which can be characterized as

Classification of the organization

		Frequency	%
	Large	137	27
Valid	Medium	369	73
	Total	506	100.0



Classification of the organization

CONCLUSION

The executives preparing in India has functioned too, on account of the vision of previous mindful government officials to build up IIM as good examples. Presently we need to incorporate and comprehend the different associations to make their assumptions days so understudies get something of significant worth, just as of his own greatness. The instruction the board in India has encountered one sort of advancement that is more the preparation proficient who has been found in the previous many years. India Council of Technical Education (AICTE), which manages specialized instruction in India is persuaded that no has not been the circumstance to guarantee that is has made expansion of the business colleges around the country, in spite of than trust that he can. In any case, the ' exercises of the program ought to urge these understudies to be rehashed. You need to with the most recent assets and weapons to prepare, to get any new situation to make you handle right now to survive. Other than that, it should enable them to foresee issues such that they can be tended to and settled before they occur.

REFERENCE

- [1]. Tsui, S. J. Ashfor R d L . St - Clair, one and K .R. Xin, - d for the email of a ghost
Ling h disco repent expectations: Adaptation of strategies and effective management ,
|| Academy of Management - Journal, December 1995 pp. 1515-1543 ..
- [2]. Analoui, F. (1993), Management - skills in Cusworth, JW and the franc, SI (ed) of the
project - management in developing countries, Longman Scientific and Technical,
United - Kingdom - United - Kingdom.
- [3]. Analoui, F. (1997) The leaders superiors and their effectiveness, Aldershot, Avebury,
United - Kingdom.
- [4]. Analoui, F. (1998), human resources - Management - problems in developing
countries, (edited by) Ashgate, Aldershot, United - Kingdom.
- [5]. Analoui, F. (1999). Eight parameters of efficiency of management: one survey of
executives in Ghana. Management Development Magazine, 18 (4), 362-389.
- [6]. Analoui, F. (2007). Strategic management of human resources. London: Learn
Thompson.
- [7]. A r -to- say Y. L and the victory, John W.M Inton- D and I r mining ogoneo too netion
of a l and f fandc tivyn and s s: anothandr appearance , and one of the order of days
for research management science - 1986a
- [8]. Babcock, DL, Engineering and Management Technology: An Introduction to
Management for the Engineer. 2nd edition, Prentice Hall, New Jersey, 1996.
- [9]. Badawy, MK, Leadership Development Among Engineers and Scientists. John Wiley
& Sons, NY, 2nd edition, 1995.
- [10]. Chaudhary, Sarita et al., (2011) “Emerging Issues in Management Education
in India”, VSRD International Journal of Business & Management Research.

An Investigation of the Vedic Theories on Death and Death Rituals

Dr. Surender Kumar

Research Scholar, IMSAR
MDU, Rohtak, Haryana, India.

DOI: Available on author(s) request.

Abstract: Death, being the ultimate reality of human existence, has long captivated scholars and interests alike. Culture, history, health, and emotion are all intricately entangled with it, and its interpretation and evaluation have varied considerably across cultural contexts. Brahmanism asserts that death represents the ultimate end of human existence and the deepest source of anguish in the human experience; it signifies the culmination of corporeal existence. Death is not regarded as an isolated notion in Brahmanism; rather, it is considered an inevitable element of the perpetual samsara cycle. Two discrete perspectives on mortality are presented in early Brahmanical texts: medical and non-medical. Death is portrayed in non-medical texts as a preternatural or daiva phenomenon, whereas causal explanations for death are found in medical texts like the Susruta Samhita and Caraka Samhita. Susruta Samhita posits that mortality is an unavoidable consequence of the human condition. In contrast, Caraka Samhita recognises the influence of karma on an individual's well-being but upholds the conviction that a premature demise can be averted by maintaining optimal health. The perception, comprehension, and awareness of death throughout history have not been the focus of comprehensive scholarly investigation. The field of death-related research predominantly adopts an archaeological or philosophical approach, allocating relatively little attention to societal perspectives on death, specifically beliefs concerning the afterlife and their historical contexts. An innovative piece of literature, The History of Death by Michael Kerrigan, illustrates how death can be historically analysed and how societal changes reflect the impact of those changes on the death culture. Furthermore, it examines the profound influence of death on the domain of entertainment and transforms it into a subject worthy of literary attention. Following the earliest phases of human civilization to the present day, A Brief History of Death by W.M. Spellman traces the historical influence of death culture in virtually every region of the world. Spellman examines the business ramifications of mortality and illustrates how concerns about death diminish in tandem with advancements in modern medical science and a decline in the global mortality rate. This literary work explores the manner in which specific cultures idealise or enchant mortality.

Keywords: *Death Culture, Death Rituals, Vedas, History of Death.*

Content

The ultimate truth of human existence is death. Ever since the dawn of human civilization, there has been an insatiable human curiosity concerning the enigmatic nature of mortality. Beyond being a natural occurrence, death is also intertwined with culture, history, health, and emotion. Death has been perceived and analysed differently across diverse cultural contexts. Conversely, certain cultural groups have ascribed dangerous connotations to death, while others have portrayed it as a gateway to an eternal realm that never ceases to expand. Diverse conceptions of mortality exist across all religious traditions. Consensus

among theologies is that death is malevolent and calamitous. Brahmanism posits that the final destination of human existence is death, or *MÖtyu*. Death signifies the culmination of the corporeal or ordinary existence that commences with one's birth. Additionally, death is regarded as the most profound source of sorrow in the human experience. In Brahmanism, death is not a singular concept; it has been explicated in a variety of ways. In addition to being a source of anguish and a negative portent, it is also perceived as a muddled experience. Death is considered an unavoidable component of the perpetual samsara cycle, according to Brahmanism. In his autobiography, Rabindranath Tagore described mortality as a natural occurrence comparable to the emergence of the sun or the changing of the seasons in the realm of human existence. A momentary encumbrance of the cadence of life by the black spectre of death ensues, but this transient state is brief, as life promptly reverts to its former splendour. Numerous other concepts, including rebirth, heaven, purgatory, the soul, and numerous others, are integrated with the notion of death in Brahmanism. These concepts revolve around the central idea of death.

Two distinct viewpoints on death can be found in early Brahmanical texts. There exists a medical aspect and a non-medical aspect to consider. Early Brahmanical medical texts, such as *Susruta Samhita* and *Caraka Samhita*, provide causal explanations for death. Conversely, the majority of non-medical texts depict death as a supernatural or *daiva* occurrence. While the *Susruta Samhita* (1/24/7) explicitly precludes the influence of karma on mortality or illness, it does contain an independent segment that examines the impact of *daivabalaprayṣṭta*, which refers to ominous and extraterrestrial elements, on human health. *Susruta Samhita* considers mortality to be an inevitable outcome of the human condition. While *Caraka Samhita* (1/1) acknowledges the impact of karma on an individual's health, it maintains the belief that one can prevent an untimely demise through the attainment of good health. This investigation will centre on the non-medical Brahmanical texts and the various ways in which they depict mortality. In recent years, numerous historical aspects of Indian culture have been examined, but mortality has never been a prevalent subject in Indian historical academia. In recent years, numerous facets of death-related culture have remained undisturbed by scholars. An attempt will be made to shed light on those unexplored facets of Brahmanical death-related culture in the course of this study.

Death-related historical perception, comprehension, and awareness have not been the subject of the most extensive research. Limited exhaustive research has been conducted on this particular aspect. Death-related research is typically conducted from an archaeological or philosophical standpoint. Archaeology-focused research on death primarily emphasises burial practices and culture, while societal perspectives on death, particularly beliefs about the afterlife and their historical contexts, have received relatively little attention. In this regard, *The History of Death* by Michael Kerrigan is a groundbreaking work. The author demonstrates in this book how death can be analysed historically and how societal transformations reflect the influence of those changes on the death culture. Additionally, he demonstrates how funerary practices evolve periodically as a result of social and cultural developments. Additionally, Kerrigan demonstrates how in some societies, death is occasionally celebrated, and how the beliefs of that society regarding the afterlife reflect its mentality. Furthermore, it exposes the impact of mortality on the realm of entertainment and elevates it to the status of a literary topic. An additional work of this genre that merits mention is *A Brief History of Death* by W.M. Spellman. This literary work endeavours to delineate the lineage of death culture from its earliest stages of human civilization to the present day. Spellman attempts to trace the historical influence of death culture in virtually every region of the globe in this book. Additionally, Spellman addresses the business implications of death. Additionally, he demonstrates that as contemporary medical science advances and the global mortality rate declines progressively, so too does the apprehension towards death diminish. Additionally, this book investigates how certain cultures romanticise or fantasise about mortality.

In the context of India, the narrative of mortality is among the most uncharted territories. Very few original works have been published in this field of study. As has been previously stated, the majority of death-related research focuses on philosophical issues. Extensive archaeological research has been conducted on the burial customs of different regions of India; however, evaluations of death culture based on textual evidence are scant, and the majority of these investigations have been

conducted from a religious slant and lack empirical support. Certain scholarly works authored in the West, including Hindu Religion, Customs, and Manners by P. Thomas and Hindu Manners, Customs, and Ceremonies by A. Dubois, contain accounts of Brahmanical death rites. Additionally, a number of Thomas Colebrook's essays include modern accounts of Brahmanical death rituals. Despite the fact that these writings are occasionally enlightening, they are typically quite biased due to an imperialistic superiority complex. The majority of Brahmanical customs are portrayed as superstitious and backwards, and this included death customs. *Life Beyond Death* by Swami Abhedananda could be classified within this particular genre. It is an extremely popular piece. While not written from a historical perspective, the author has endeavoured since an early age to trace the development of death-related philosophy. Abhedananda also endeavoured to provide scientific explanations for the concepts of life after death, the potential for immortality, and souls.

P.V. Kane was the initial individual to endeavour at empirically compiling the Brahmanical death rites. A meticulous effort was expended in the fourth volume of his renowned treatise, *The History of Dharmashastras*, to revise numerous scriptural prescriptions concerning *sraddha* and *asauca*. To reconstruct the historical account of Brahmanical funeral rituals, he examined texts such as the *Rigveda* to the early 17th century CE, including the *Vedas*, *Puranas*, *Grhya Sutras*, *Srauta Sutras*, *Smritis*, and others. He extensively referenced early and late mediaeval *Smṛti* texts in order to situate the dynamic evolution of the Brahmanical ritual. Furthermore, his research demonstrates how the integration of immigrants, particularly Muslims, into Indian society resulted in significant modifications to the Brahmanical funeral rites. His exhaustive investigation, however, neglects to examine other facets of the history of mortality. The afterlife's context is notably absent from the majority of his research. The research fails to investigate the manner in which death came to be associated with divinities or the enduring consequences that death has on modern society. *Gian Motyu: Concept of funeral in Indian Tradition* by Giuseppe Filippi is widely regarded as a seminal work in the field of Indian funeral history. Filippi diligently endeavours to delineate the historical progression of notions pertaining to mortality in India. Additionally, he endeavours to offer a psychological and scientific interpretation of Indian funeral rites. However, the primary deficiency in his work is that Filippi accepts as true the myth and beliefs surrounding death in Indian culture without tracing their social and historical origins.

The Hindu Book of the Dead by Trinath Mishra is an additional exemplary discourse concerning the Hindu belief system's traditions pertaining to death and the afterlife; however, this literary work lacks appropriate historical methodology. In this context, Wendy Doniger O'Flaherty's two novels may be mentioned. *An Investigation into the Origin of Evil in Hindu Mythology* is the initial publication. As an antagonist in Indian mythology, Flaherty examines the context of mortality in this book. *Karma and Rebirth in Classical Indian Tradition* is the title of the second volume. Anthology of essays pertaining to the viewpoints of rebirth as presented in Brahmanical, Buddhist, and Jain theologies, this book is an edited volume. Ed. David M. Knipe A compilation of essays on *sraddha* ceremonies and their outcomes, *The Hindu Rite of Entry into Heaven and Other Essays on Death and Ancestors in Hinduism* comprises the aforementioned topics. The central thesis of this literary work is derived from an exhaustive field investigation conducted in the scorching ghats of Benares. Jonathan Parry's *Death in Benares* is an exemplary scholarly work that explores the evolution of self-immolation from a practice of pilgrimage to a highly lucrative enterprise, the advent of Benares as a sacred destination for atonement through death, and the progressive transformation of this practice into a thriving industry.

Prior studies, including those of Michael Kerrigan and W.M. Spellman, have been conducted using appropriate historical methodologies; however, these studies have not been conducted within the specific context of India. S. Settar and P.V. Kane have conducted the most eminent research in the Indian context, despite the fact that P.V. Kane's research only partially addresses this subject and Settar has approached his research from a Jain standpoint. Although written within a Brahmanical framework, the works of Trinath Mishra and Gian Giusupe Filippi lack appropriate historical methodology. Despite its immense popularity, Swami Abhedananda's book is written entirely from a religious standpoint. David M. Knipe's edited volume attempts to illuminate certain aspects of Brahmanical funeral customs. In the same way, *Karma and Rebirth in Classical Indian*

Tradition, an edited volume by Wendy Flaherty, touches upon a few aspects of Buddhist, Jain, and Brahmanical eschatological studies; however, it is important to note that this work does not provide a comprehensive analysis. The book by Jonathan Parry attempts to illuminate the economic aspect of the funerary industry in colonial Benares. The scholarly contributions of William Borman, Bindu Pandit, and Kusum P. Merh are adequately documented and touch upon various facets of Brahmanical death-related culture to some extent. Death culture in Vaisavism has been the subject of research conducted by Bankim Sen and E.H. Rick Jarow. Conversely, B.C. Law's monograph presents a commendable effort to depict the concept of existence beyond mortality through the lens of Buddhism. The lack of such exhaustive research has resulted in numerous unexplored domains; the current investigation will therefore delve into those uncharted regions.

References

1. Colebrook, Thomas., *Miscellaneous Essays (Vol. I)*, 1837, London.
2. Dubois, A., *Hindu Manners Customs and Ceremonies*, 2007, New York.
3. Kerrigan, Michael., *The History of Death: Burial Customs and Funeral Rites from the Ancient World to Modern Times*, 2007, Amber Books.
4. Spellman, W.M., *A Brief History of Death*, 2014, Reaktion Books.
5. Tagore, Rabindranath., *Rabindra Rachanabali (Vol - XI)*, 1989, Kolkata.
6. Thomas, P., *Hindu Religion, Customs and Manners*, 1971, D.B. Tarapoorwala.
7. Weiss, Mitchell G., 'Caraka Samhitā on the Doctrine of Karma', *Karma and Rebirth in Classical Indian Tradition*, 1980, London.

A Research Review on Akbar's Relation with Non-Sufi Saints

Dr. Surender Kumar

Associate Professor of History,
Vaish College, Bhiwani,
Haryana, India.

Abstract: By virtue of his unorthodox religious views, Akbar, the progenitor of the Mughal empire, ruled India for close to three centuries. Dissenting from caste and religion, he maintained cordial relationships with all sectors of society. Later, during his succeeding sojourns in Ajmer in 1526 A.D., Akbar entered into matrimony with further Rajput princesses, including Man Bai. The magnolia regale granted these Rajput princesses unimpeded entry to observe their religious devotions. Within the imperial residence, havans were conducted. All religious followers were treated equally by Akbar. Non-Muslims were exempt from the "Jiziya," or pilgrimage tax, which was abolished in 1564, and the tax imposed on Hindus in Mathura was eradicated in 1563. Ibadat Khana was built by Akbar between 1575 and 1576 with the explicit purpose of amassing knowledge concerning a multitude of religions. Subsequently, invitations were extended to scholars of diverse faiths, such as Jati Sewara, Sunni Shia, Jewish, and Zoroastrian, in addition to the initial restriction of participation to Muslim jurists. Dusshera, Diwali, Shivratri, and Rakhi were among the Hindu religious observances that Akbar attended. In the end, Babur solicited benevolence from Guru Nanak, who exhorted Babur to free all prisoners within his nation. A single condition was embraced by Babur: the Guru was required to bestow blessings and ensure the perpetuation of his dominion across generations. Humayun encountered Guru Augad while en route from Hindustan to Lahore, whereupon he appealed to him for favours. Following a certain interval of time, the Guru guaranteed that he would reclaim his supremacy. Contemporaries of Guru Amar Das, Guru Ram Das, and Guru Arjan Deo, Karbar maintained cordial relations with the Sikh Gurus. He appointed his youngest son, "Arjan," as the heir apparent of Guru Ram Das. The Adi Granth, regarded as the sacrosanct scripture of the Sikh religion, is attributed to Guru Arjan for its compilation. Birthplaced in a village situated four miles from Delhi, Surdas, a celebrated saint poet of Vallabha Sampradaya, was summoned to Akbar's court by his soldiers. Upon Surdas's arrival at the court, Akbar bestowed reverence upon him.

Keywords: Akbar, Non-Sufi Saints, Mughal Empire, Medieval India, Sikh Guru.

Content

In reality, Akbar was the progenitor of the Mughal empire, having so firmly established his dynasty's foundation in India that it endured for nearly three centuries. This was made possible through his adoption of a liberal religious stance. Akbar upheld amicable relations with every segment of society, regardless of caste or religion. Marriage to a Rajput princess (Raja Baharmal's daughter, Man Bai) during his first visit to Ajmer in 1526 A.D. demonstrated his liberalism. He subsequently wed additional Rajput princesses. The regal palace provided unrestricted access for these Rajput princesses to practise their faith. Havans were performed within the imperial residence. Akbar treated adherents of all faiths with equal regard. Akbar eliminated the pilgrimage tax imposed on Hindus in Mathura in 1563. Akbar eliminated "Jiziya," the tax imposed on non-Muslims, in 1564. With the intention of acquiring knowledge pertaining to various religions, Akbar constructed Ibadat Khana between 1575 and 1576. Initially, participation in the Ibadat Khana was restricted to Muslim jurists; however, Akbar subsequently extended

invitations to scholars of various faiths, including Sunni Shias, Brahmanas, Jati Sewara, Jews, Zoroastrians, and others. Similar to Sultan Muhammad bin Tughluq, Akbar observed Hindu religious celebrations such as Dusshera, Diwali, Shivratri, and Rakhi. Hughis participated in the Hindu festival of Holi.

Under Akbar's direction, a considerable quantity of Sanskrit literary works, including the Mahabharata, Ramayana, Kalila-wa-Dimna, Nal-o-Daman, Singhsan Battisi, and many others, were translated into Persian. At the Mughal Court, Akbar fostered an environment conducive to the assimilation of diverse religions and cultures. He maintained cordial relationships with erudite individuals of various faiths. Abul Fazl records that "sages of various religions gathered at the court," while Badaoni states that "large groups of erudite individuals from different nations and sects, along with sages representing diverse religions and traditions, visited the court and engaged in scholarly dialogues." He engaged in dialogue with the Brahmins and Jogis, expressing interest in their religious beliefs and rituals. Akbar additionally forbade the slaughter of cows, a sacred animal in Hinduism. He held the sentiments of his people in high regard. Outside the city of Agra, Akbar constructed Dharampura and Khairpura, two locations for nourishing impoverished Hindus and Muslims, and jogipura, a third location intended for jogis. In addition, coins featuring the image of Sawastika and the figures of Rama and Sita were also issued by Akabr. Akbar made every effort to incorporate every segment of society into his empire. Raja Man Singh of Amber was elevated to the highest nobility rank, and Raja Todarmal was designated as the realm's finance minister (Diwan). Daswanth and Basawan were two of the court painters under his patronage, while Tansen and Ramdas served as court musicians.

One of Akbar's closest companions, Raja Birbal, was murdered at the north-west frontier; Akbar was profoundly disturbed by this development. Numerous Hindi poets were supported by Akbar, including Narhari, Gang, Manohar, and Holrai, among others. The establishment of an atmosphere of religious tolerance in India can be attributed to Akbar. Terry states, "In this context, every man is free to profess his own religion." Akbar maintained amicable relationships with the non-Sufi saints of his era, especially with the Bhakti saints of various sects, with whom he maintained especially cordial relations. His relations with Jains, Jogis, Zoroastrians, and others were also cordial.

It is said that Guru Nanak encountered the first Mughal emperor Babur en route to the conquest of India. Babur attacked Sayyidpur while Guru Nanak was present in the city. The town's inhabitants were subjected to mass executions and looting, while the Guru and his disciple Mardana were confined in prison despite escaping harm. Babur, moved by Guru Nanak's remarkable deeds while incarcerated, secured his release and intended to offer him gifts; however, the Guru declined all offerings and instead demanded the release of the prisoners. Babur, at the behest of the Guru, freed the detainees and reinstated their property. After that, Guru Nanak paid Babur another visit and performed hymns that he had composed. Following his profound admiration for the Guru's hymns, Babur requested the Guru's companionship for a period of time. Babur ultimately beseeched the Guru to show him benevolence. Once more, the Guru urged Babur to release every prisoner in his nation. Babur consented to a single stipulation: the Guru must guarantee the continuation of his dominion through the generations and bestow blessings. Your empire, said the Guru, would endure for a time. Subsequently, Babur executed every prisoner. According to an additional account in "Dabistan-i-Mazahib," Nanak, dissatisfied with the Afghans, invited the Mughals into the region, which resulted in Babur's triumph over Ibrahim Lodi. However, Babur fails to mention Guru Nanak or his encounter with him in his memoirs. Upon conducting an analysis of various Janam Sakhis (documents detailing Guru Nanak's biography), W.H. McLeod posits that the possibility of Guru Nanak and Babur meeting is not entirely implausible; in fact, it seems highly probable. Guru Anged succeeded Guru Nanak as the second Sikh Guru, carrying on the Guru's mission. During his journey from Hindustan to Lahore, Humayun encountered Guru Augad and beseeched him for his favours. The Guru assured him that he would reclaim his dominion after a period of time. Subsequently, upon reestablishing his Indian empire, Humanyun expressed his gratitude to the Guru. Very cordial were Akbar's relations with the Sikh Gurus. Akbar lived contemporaneously with Guru Amar Das, Guru Ram Das, and Guru Arjan Deo, three Sikh Gurus.

During one of his sojourns in Lahore, Akbar made the deliberate choice to convene with Guru Amar Das. Govindwal was where the Guru was at the time. Akbar endeavoured to meet the Guru at his residence, whereupon he discovered that in order to do so, he was required to partake in the Guru's "langar" (free cookery), a customary practice for visitors. It has been reported that Emperor Akbar dined and sat with commoners. Akbar subsequently engaged in conversation with Guru Amar Das. His admiration for the Guru's spirituality prompted him to propose a land grant in his behalf; however, the Guru declined, stating that his confidence was placed in God. However, Akbar persisted and ultimately bestowed the land upon Bibi Bhani, the daughter of Guru. Akbar was subsequently bestowed with a garment of distinction by the Guru. Akbar was once informed by the Brahmins of Govindwal that Guru Amar Das had forsaken the social and religious practices of the Hindus and eliminated caste distinctions. Following the Guru's accusation, Akbar resolved to summon the Guru to his court. Guru Amardas, in adherence to the emperor's invitation, dispatched Bhai Jetha, his son-in-law, to serve as his representative. Akbar cordially greeted Bhai Jetha and inquired about the Guru's well-being. The Khatri and Brahmins appeared in court and restated their accusations. It was asserted that the Guru's endeavour to sway the populace away from the traditional faith could have potentially precipitated political unrest within the nation. Akbar summoned Bhai Jetha in an effort to refute the accusations. Upon being introduced to Jetha's compositions and knowledge, the Khatri and Brahmins were both astounded and humiliated. Subsequently, Akbar rendered his verdict, asserting that both the individual in question and his compositions did not harbour any animosity towards Hinduism. Rather, he claimed that the Brahmins and Khatri were adversaries of the truth, thereby causing unnecessary irritation. Disgracefully, the Brahmins and Khatri withdrew from the court. Following this, Akbar instructed Guru Amardas, via Bhai Jetha, to undertake a pilgrimage to the Ganges as a means of averting the Hindus' wrath. Additionally, he stated that Guru's party would not be subject to any taxes while on his voyage. In accordance with Akbar's recommendation, the Guru departed for Haridwar. Guru Amar Das designated his son-in-law, Bhai Jetha, as his successor, bestowing upon him the appellation Guru Ram Das, in the final days of his life.

Throughout his lifetime, Guru Ram Das designated "Arjan," his youngest son, as his heir apparent. Guru Arjan is credited with the compilation of the Adi Granth, which is considered the sacred text of the Sikh faith. Arjan Dev's eldest sibling, Prithia, developed feelings of envy in response to his designation as Guru. Constantly, he endeavoured to demean the Guru. Prithia influenced the Qazis and pandits to lodge a complaint with Emperor Akbar regarding the publication of Guru Arjan's book, which contained disparaging remarks about Hindu deities, Muslim prophets and leaders, and Guru Arjan. During that period, Akbar was situated in Punjab. Akbar was presented with the complaint by Diwan Chandu Shah, an additional adversary of Guru Arjan, upon his arrival in Gurdaspur. Akbar issued the directive that Guru Arjan and his granth be brought before him. In lieu of accompanying Bhai Budha and Bhai Gur Das to the Mughal court, the Guru delegated them there. According to the Qazis and Pandits, this hymn was chosen specifically for the emperor. The emperor then personally turned the pages of the granth over, indicated a specific page, and requested that Gur Das read it. It was the hymn "O incomprehensible servant of God." Akbar was delighted. However, according to Chandra Shah, Gurdas recited this from memory. Sahib Dayal, a man brought by Than Chandu who was fluent in Gur mukhi, the scriptural language of the granth, was present. At this juncture, Chandu flipped the granth's pages over and requested that the man peruse it. Upon beinghold this hymn, Akbar was profoundly enlightened by the granth's teachings and enraged at his adversaries. With the exception of affection and devotion to God, he declared that he had found no merit or fault in this grant thus far. This volume merits profound reverence. Subsequently, Akbar presented the granth with fifty-one gold muhars, bestowed honorific costumes upon Bhai Budha, Bhai Gur Das, and Guru Arjan, and assured the Guru of his company during his return voyage from Lahore. Akbar subsequently paid Guru Arjan a visit in Govindwal. In response to his inquiry, the Guru advised him as follows: "The well-being and contentment of monarchs are contingent upon the esteem they bestow upon their subjects and the execution of justice." A monarch shall attain pleasure in this life and glory, distinction, and acclaim in the next. A severe famine afflicted the Punjab in that specific year; therefore, Akbar remitted the revenues of the Punjab for that year as a gesture of gratitude to the Guru.

Surdas was one of the renowned saint poets of Vallabha Sampradaya. His magnum opus, Sursagar (Sur's Ocean), was renowned for its extensive composition comprising over one lakh verses, also known as "Padas," which were ascribed to Krishna. An account of Surdas' life and his encounter with Akbar can be found in "Chaurasi Vaishnavon Ki Varta." (discussion among four to eight Vaishnavas). As per the Varta, Surdas was born in a village situated at a distance of four miles from Delhi. His father was a destitute Sarasvat Brahmin. Surdas penned poetic works extolling Krishna and performed them oratoriously using his melodious voice. His compositions gained widespread acclaim among the populace. Surdas relocated to "gaughat," a leisure location along the banks of the river Jamuna, between Mathura and Agra, when he was eighteen years old. A considerable congregation assembled at this location to adhere to him, and Surdas himself encountered Vallabhacharya and subsequently became one of his disciples. Around the world, Surdas' Padas (poems) are sung. Tansen Sang, a musician at Akbar's court, was once considered one of the "Padas of Surdas." Akbar was anxious to meet the poet and composer SurdasPada after hearing him perform, and he inquired about him. Tansen apprised Akbar that Surdas, a resident of Braj, is the author of this Pada. Akbar, who had arrived in Agra a few days prior from Delhi, instructed his couriers to collect intelligence on Surdas. Surdas was dispatched by Akbar's soldiers to his court. Upon Surdas's arrival at the court, Akbar bestowed upon him reverence. The sovereign informed Surdas that he had already listened to something poetic after having composed numerous poems for Vishnu. A poem was recited by Surdas in "Rag Bilawal." Akbar was exceptionally content with this couplet. The emperor then desired to put Surdas to the test by stating that he ruled a vast kingdom and was universally praised; if Surdas sang in his praise, he would be rewarded with a great deal of wealth and anything else he desired. However, Surdas lauded Krishna in a poem, in which he stated that his only acquaintance was his deity. Akbar was profoundly impressed by the piety and compositions of Surdas. Subsequently, the emperor extended a gift of four villages and a sum of money to Surdas; however, Surdas declined and requested that they not cross paths again. Upon his arrival in Agra, Akbar issued a directive for the gathering of Surdas padas and declared that individuals who brought such padas would be rewarded with rupees and gold mohars. The compilation of these "Padas" was rendered into Persian by him. A Pandit Kavishvar once brought a couplet (Pada) claiming to have been composed and created by Surdas. However, Akbar asserts that the Pandit had misappropriated this couplet for financial gain only, and that it was not Surdas' couplet. Subsequently, the Pandit inquired of Akbar how he had ascertained that the couplet in question did not originate with Surdas. Then Akbar put the couplet of Surdas to the test by submerging it in water; however, it remained unsinkable, whereas Pandit K. Kavishvar's couplet submerged.

References

1. Abdul Qadir Badaoni, Muntakhab-ut-Tawarikh, ed. by Maulvi Ahmad Ali, Calcutta, 1865, vo-II.
2. Abul Fazl, Ain-i-Akbari, Eng. Trans., Blockmann, LPP, Delhi, 2002, vol-I.
3. Abul Fazl-Akbarnama, ed. M Abdul Rahim, Asiatic Society of Bengal, Calcutta, 1879, vol-II.
4. Edward Terry in Early Travels in India. (1583-1619) ed. by William foster S. Chand & Co. Delhi, 1968.
5. Macauliff, The Sikh Religion ; L.P.P. Delhi Reprint, 1993, vol-I.
6. Nizamuddin Ahmad-Tabaqat-i-Akbari, Eng. Trans. by Rajendra Nath De., Low Price Pub. Delhi, 1992, vol-II.
7. See, Andrew Liddle, Coinage of Akbar, Kapoori Devi Charitable Trust, Gurgaon, 2005.

WORK-LIFE BALANCE AND JOB SATISFACTION AMONG TEACHERS: A GENDER DIFFERENCE

Sonal Shekhawat

Guest Faculty, Dept. of Psychology, Chaudhary Bansilal University, Bhiwani, Haryana

Email-sonusonalrathore787@gmail.com

Dr. Harikesh

Assistant Professor, Vaish college, Psychology Department, Bhiwani, Haryana

Email-harikeshpanghal@gmail.com

Abstract

The study was planned to explore the difference of sex on the work-life balance and job satisfaction of teachers. Further it was also intended to examine the relationship between work-life balance and job satisfaction among teachers. Hayman's (2005) Work-Life Balance Scale and Job Satisfaction Scale for Teachers given by Dr. S.K.Saxena were used to assess work-life balance and job satisfaction of teachers. These scales were administered to 120 teachers having equal number of male and female selected on the basis of convenience sampling from different schools of Bhiwani, Dist. of Haryana. Results indicate sex has found significant difference on work – life balance and job satisfaction. Study also revealed that there is a very high positive correlation between work-life balance and job satisfaction

Keywords:- Work-life balance, job satisfaction, teachers, sex, school

Teaching has been considered as an important profession since ancient times and teacher has given very important place in the society. And this has been the reason that teaching has been the central point of educationist and educational psychologist. But for the last few decades, the profession of teaching has been facing many huge challenges, in which the most important is the factors related to job and their personal life. From the very beginning work-life balance and job satisfaction have been considered a focal point in the academic literature (Hayman, 2005. Moore, 2007., Pocock, 2005). We can use word work-life balance in place of work-family balance. Both have the same concept (Hill, Hawkins, Ferris and Weitzman, 2001. Quick Henley & Quick, 2004. Reiter, 2007). Work life balance refers to the absence of conflicts in work and family/Personal life (Frone, 2003., Quick et al, 2004). Work-life balance is a degree by which a person is able to balance both work and family duties in respect to their emotions and behavioral at the same time (Hill et al. 2001). Work-life balance is an adjustment and balance between your official and personal work and don't let any of your personal problems affecting your work and working environment. Work-life balance is a multi-dimensional approach, which many individuals overlook, relates to what individuals do for themselves. The success of work life balance is always sustained with achievement along with enjoyment.

Job satisfaction is an important component in any profession and organization. It is a positive emotional state in which the job offered fulfill all its respective values. Job satisfaction refers to the extent to which a staff member and employee has a favorable or positive view or thoughts of his work or working environment (De Nobile, 2003).

Some approaches to improve WL Band Job - Satisfaction:



Figure-1 Showing work life balance and job satisfaction related approaches.

In ancient time, teachers were enjoying their teaching with dignity and good social status, but now the situation has changed. Today along with teaching, the teachers is engaged in other task as well. He is also given administrative works, community projects, election duties, census, welfare related work, counseling etc. (Siddique, Malik, Abbass 2002). These observations have also been documented by (Ahsan, Abdullah, Fie, and Alam, 2009) in their study on teachers own feeling and emotion towards their job. Work life balance is an important factor linked to job satisfaction (Orkibi & Brandt, 2015). In present the younger generation has to choose their profession keeping in view of demographic factors like gender, economic status, family values and life style etc. (Keeton, Fenner, Johnson and Hayword (2007). However recent studies have shown that work-life balance plays a crucial role in increasing general job satisfaction (Atheyetal., 2016, Skaalvik & Skaalvik, 2014). Good work-life balance and low work-life balance conflicts are also linked to job satisfaction, organizational commitment, organizational citizen ship behavior etc. (Allen, Herst, Bruck & Sutton, 2000., Balm forth & Gardner, 2006., Waltman & Sllivan, 2007). Malik et al (2021) suggested that all facets of work-life balance have positive relationships with one another and satisfaction also. Results of the study also indicate that work-life balance plays a crucial role to provide satisfaction. Saeede et al. (2014) also examined the relationship between work-life balance and job satisfaction among university teachers and findings of his study revealed that there is relationship between job satisfaction and work – life balance.

Objectives

1. To examine their relationship between work-life balance and job satisfaction among teachers.
2. To compare the Work-life balance and job satisfaction of teachers on the basis of their gender.

Hypotheses

1. There is no significant relationship between Work-life balance and Job Satisfaction.
2. There is no significant difference in work-life balance and job satisfaction of teachers on the basis of their gender.

METHOD

Design

Correlation and t-test were used to achieve the objectives of the study.

Sample

The sample of the study was selected on the basis of convenient sampling consisted of 120 teachers, which includes 60 from private job(30male and 30 female)teachers and 60 from govt. job(30 male and 30 female) taken from different schools of Bhiwani, districts of Haryana.

Tools

Work-Life Balance Scale by Hayman (2005)

Hayman’s work-life balance scale was used to measure work-life balance. This scale consists of three dimensions: Work in dereference with personal life (WIPL., e.g., personal life suffers because of work), Personal life interference with work (PLIW .,e.g., personal life drains me of energy of work), and Work /Personal life enhancement (WPLE., e.g., personal life gives me energy for my job).The scale consists of 15 items and is measured on a five–point Liker scale Ranging from 1(not a tall) to 5 (almost all of the time). The WIPL and PLIW sub-scale items with higher means on indicate lower level of work-life balance. However, higher means on the WPLE sub-scale indicate higher levels of perceived WLB. The cronbach’s alpha coefficient in the sample for WIPL (.79), PLIW (.84), and WPLE (.80) were comparable to those reported by Hayman.

Job Satisfaction Scale for Teachers given by Dr.S.K.Saxena

The job-satisfaction Questionnaire is a self-administering questionnaire. The questionnaire consists of 29 highly discriminating,, yes-no “items. These items were classified into four different aspects of job satisfaction in teaching. These included:1). Satisfaction with work (2). satisfaction with salary, security , and promotion policies (3). Satisfaction with institutional plans and policies and (4). satisfaction with authority including Higher Secondary Authority, college’s principal and the management. All the item sex except 4 and 29 are positively worded. All these items are given a score of 1 for positive responses except for items 4 and 29 in which case reverse in applicable (i.e.0). The total score varies from 0 to 29, showing lowest job satisfaction to highest job satisfaction for the subject. The split-half and test-rate streliability of the scale is. 86 and.78 respectively .The face to face validity of the measures is very high.

Procedure

All participants were informed of the nature of study. The tests were administered uniformly to all participants. After completion of the each test it was taken back and ensured that participants have responded each and every item in the prescribed way. Scoring was done according to scoring procedure. Obtained data were analyzed by using correlation and t-test.

RESULTANDDISCUSSION

The data were analyzed by using descriptive as well as inferential statistics, and the result are given in Tables 1,2& 3. Work- life balance scale measure the three dimension WIPL, PLIW AND WPLE, and Job satisfaction questionnaire for teachers measure work, salary, security, promotion related policies etc.

Table:-1 Mean and SD of male and female teacher’s scores in different areas of Work-life balance and Job satisfaction.

AREA	MALE(N=60)		FEMALE(N=60)		TOTAL(N=120)	
	Mean	SD	Mean	SD	Mean	SD

WIPL	12.23	3.35	15.61	2.30	13.92	3.35
PLIW	11.43	1.80	15.30	2.73	13.36	3.01
WPLE	16.36	2.58	17.91	1.52	17.14	2.25
WLB	40.03	5.93	48.83	4.60	44.43	6.89
JS	16.03	2.33	18.85	1.98	17.44	2.57

Table 1 depicts mean and SD of male and on WLB and Job Satisfaction, in which high score on WIPL and PLIW sub-scales indicate lower level of work-life balance and high score on WPLE sub scale shows higher levels of perceived work-life balance. Similarly high score on job satisfaction revealed high job satisfaction.

Table:-2 Inter-correlation matrix of teachers among different area of Work-Life Balance and Job Satisfaction.

		WIPL	PLIW	WPLE	WLB	JS
WIPL	Pearson Correlation	1	.670**	.399**	.908**	.323**
	Sig.(2-tailed)		.000	.000	.000	.000
	N		120	120	120	120
PLIW	Pearson Correlation		1	.201**	.828**	.492**
	Sig.(2-tailed)			.000	.000	.000
	N			120	120	120
WPLE	Pearson Correlation			1	.608**	.112
	Sig.(2-tailed)				.000	.222
	N				120	120
WLB	Pearson Correlation				1	.408**
	Sig.(2-tailed)					.000
	N					120
JS	Pearson Correlation					1
	Sig.(2-tailed)					
	N					120

**correlation is significant at the 0.01 level.

*correlation is significant at the 0.05 level.

Present study was assessed to examine the relationship between work-life balance (WIPL, PLIW &

WPLE) and job-satisfaction. All correlation values in table 2 indicated a positive relationship with job satisfaction. WIPL & PLIW sub-scales had a positive relationship with job satisfaction as indicated by the inter-correlation matrix, 0.32 and 0.49 respectively. But WPLE had not a significant relationship with jobsatisfaction. Overall work-life balance and job satisfaction have also a positive correlation value i.e. 0.40. Thus it can be seen that null hypothesis of the study was rejected.

Table:-3t-value of male and female on Work-Life balance and job satisfaction.

Gender	Work-life Balance			Job Satisfaction		
	Mean	SD	t-value	Mean	SD	t-value
Male	40.03	5.93	9.076**	16.03	2.33	7.123**
Female	48.83	4.6		18.85	1.98	

*significant at 0.01 level

That-testing table 3 reveals that male and female teachers differ significantly on work-life balance and job satisfaction ($t=9.076, p<.01, t=7.123, p<.01$) respectively., wherein the female teachers scored high mean scores on both work life balance and job satisfaction (mean=48.83 & 18.85) respectively.

Results of the study provide a significant evidence of relationship and gender differences in work-life balance and job satisfaction within a sample of school teachers of Bhiwani district in the state of Haryana, India. The results of the study revealed positive correlation between work-life balance and job satisfaction. It means work-life balance is an important determinant of intrinsic aspects of job satisfaction. We can say that a fixed syllabus, regular performance outcomes of the students through exams, job security, increments, yearly award ceremony for teachers by management, good salary package and other activities motivates the teaching facilities which enables them to maintain balance between work and personal life demand and attain job satisfaction. In work-life balance and job satisfaction the mean score of female teachers is significantly higher than their counter parts. If one look at the contemporary scenario in education, work place and in job we see the maximum number of women, it means women are satisfied with their job by balancing their personal and professional life well. Females are quite satisfied and view that somewhat they look education sector as a good place to work. They are very comfortable with their job. The reason for this can be having a participative environment and satisfactory working hours at workplace and having supportive behavior of family members, due to which she is able to make proper adjustment in her personal and professional life. On the other hand males are more ambitious and they keep trying to get much better in their job and also keep political factors involved in their work environment. Second, in our Indian culture, there is a difference between boys and girls from the very beginning that is boys are not involved in much work, they focus on one task, whereas along with studies, girls also do work in kitchen. This is the reason that the habit of creating

Balance is developed in females from the very beginning but her males are not able to do this. Findings of the present study are in tune with the earlier studies related to work-life balance and job satisfaction etc. conducted by Aghaetal. 2017, MALIK etal., 2021 and Arifet. al., 2014, reporting that all dimensions of WLB have positive relationship with job satisfaction of teachers. These empirical evidences provide support that WLB is directly related to job satisfaction. The observation of the present study also indicates that work-life balance is strongly correlated with job satisfaction. Solanki & Mandaviya (2021) also supported the findings of the study by stating the result that male respondents have more health related issues compared with females due to job stress and imbalance in work life.

CONCLUSION

Thus, we can safely conclude that work and personal life need to be integrated in a smooth manner and should not be left impact on each other in a negative way. This balance and imbalance is likely to affect the overall performance of the teachers as well as the performance of the organization. Moreover, the findings of the study need to be generalized cautiously owing to the sample size and only a small area specific sample. But the findings clearly indicate that it is a very important area where the teachers, students, parents and the policy planner have to work together and come out with specific program and policies. Our policy maker should ensure that teachers the nation builders in order to make them more productive by reducing work and family related stress and keeping them satisfied with their job and life.

REFERENCES

- Arif,B., & Farooqi, Y.A. (2014). Impact of Work Life Balance on Job Satisfaction and Organizational commitment among university teachers: A Case Study of University of Gujrat, Pakistan. *International Journal of Multidisciplinary science and engineering*,5(9),24-29.
- Bae.J.et.al .(2019).Compassion Satisfaction Among Social Work Practitioners: The Role of Work-Life Balance. *Journal of Social Services Research*, ISSN: 0148-8376,1540-7314.
- Bell. A.S. Rajendran, D.S., Theiler. S. (2012). Job Stress, Well being, Work life Conflict Among Australian Academics Electronic. *Journal of Applied Psychology*,Vol.8,No.1,25-37.
- Delina .G. Raja. R.P. (2013). A Study On Work life Balance In Working Women. *International Journal Of Commerce, Business & Management*, ISSN:2319-2828.
- Ealias. A. (2012). Emotional Intelligence And Job Satisfaction: A Correlation Study. *Research Journal Of Commerce & Behavioral Science*, Vol.1,No.4,37-42.
- Gorsy.C.,Panwar.N. (2016).Work-Life Balance, Life Satisfaction and Personality Traits among Teaching Professionals. *International Journal In Management And Social Science*,Vol.4,No.2,98-105.
- Hafeez. U.S., Akbar.W. (2015). Impact of Work-life Balance on Teachers of 21STCentury. *Australian Journal of Business & Management Research*, Vol.4, No.11, 25-37.
- Maharjan.S (2012).Association Between Work Motivation and Job Satisfaction of College Teachers. *Administrative and Management Review*, Vol.24, No.2, 45-55.
- Maeran.R., Pitarelli.F., Cangiano.F. (2013).Work-life Balance and Job Satisfaction among Teachers. *International Disciplinary Journal of Family Studies*, Vol.18, No.1, 51-72.
- Malik.A.,Allam.Z. (2021).An Empirical Investigation of Work and Satisfaction among The University Academicians. *Journal of Asian Ainnanee, Economics and Business*, Vol.8.No.5, 1047-1054.

- Othman.A.,Hieng.M.C. (2009). Relationship Between Quality of Work Life and Job Satisfaction: A Case Study Of Enterprise “XYZ” In Malacca. *International Conference On Human Capital Development ISBN, 978-967-5080-51-7*.
- Padma.S.S., Reddy.M.S. (2014).Work life Balance and Job Satisfaction among School Teachers. *AStudyIUPJournalofOrganizationalBehavior, Vol.13, No.1,51*.
- Saeed.K., Farooqi.Y.A. (2014). Work life Balance, Job Stress and Satisfaction Among University Teachers (A Caste Of University Gujarat).*International Journal Of Multidisciplinary Science And Engineering, Vol.5, No.6, 9-15*.

Access of Electronic Information Resources by Faculty and Research Scholars in Jawhar Lal Nehru University Delhi

Mangat Ram Research Scholar

Shri J.J.T.University

Email- Librarianvcbwn@gmail.com

Dr.Khatik Rashid, Guide

Shri J.J.T.University

Abstract:-The main objective of University Library System is to support the university in the development of learning and provide facility to student and faculty member to enhance their knowledge and complete their research work. At the time of ancient era when the library concept was emergence the library is considered as the backbone or heart of any organization. The libraries are now considered as the knowledge resource center it works like Robot 24/7 without having break in a day. A Research Scholar and Faculty member access the resource without any physical barrier because libraries are now provide these services on a single window. During the Covid-19 period libraries play an important role in keep the scholars up to date in their respective field. The finding of this research paper would be useful in framing the effective policies, in respect of Electronic Information Resources.

Key Words:- E-Resources, University Library, Information Services.

INTRODUCTION:-Nowadays everyone needs information instantly and it possible only with the help of internet. Today's users fulfill their information needs by online library resources, and services via networks or authentication methods at any time. In order to exploit the current information explosion, familiarity and use of electronic information resources in the libraries are necessary and important for rapid development. Electronic information resources can be used for efficient retrieval and meeting information needs. This is very important for academic libraries since most of them call for more and more research work. In the digital era the commonly available electronic resources such as CD-ROM databases, online databases, online journals, OPACs and Internet, are replacing the print media.

Electronic information resources have many advantages. First, these are more versatile than paper publications. Second, using full text or key word indexing, these provide excellent searching capabilities. Unlike paper publication, these formats allow simultaneous user access. In addition, information can be accessed from remote locations, such as office and home. This technology enhances the collections of management libraries by providing patrons with access to information that is not available in, or is more accessible through, hard copy. Therefore most

libraries have embraced this technology. Electronic resources have bridged information gap in Indian universities with their counterparts in developing countries. With Information Communication Technologies, Indian universities now provide global information resources to their students and academic staff in order to enhance their learning, teaching and research.

SCOPE OF THE STUDY:-The study would explore the areas and scope of training needed by library users to utilize e-resources efficiently and effectively. The study would examine to recommend training needs and strategies for library professionals in collection development of e-resources, various formats of e-resources, preservation of e-resources, consortium, DELNET, UGCINFONET, INFLIBNET. The study would examine the current state-of-the-art electronic information resources in *Jawahar Lal Nehru* University in Delhi. It would examine the present condition of electronic information resources in *Jawahar Lal Nehru* University in Delhi and suggest possible solutions for the effective and efficient use of e-resources. There has not been any research conducted on the Electronic Information Resources in this university

The findings of this study would be useful in framing effective policies, in respect of electronic information resources, in university library, which in turn would help library users, to use libraries facilities in an effective and friendly manner. The study would be useful for making infrastructure for digital library. The findings of this study would also assist libraries in India to develop strategies and policies that could make better use of electronic information resources and its services.

OBJECTIVES

1. to examine the current status of electronic information resources in university libraries in Delhi and to identify issues and problems faced by post graduate students, researchers and faculty members, in the use of electronic information resources;
2. to examine the availability of various electronic resources through consortia to study search strategy used by library users while using online databases;
3. to study the impact of electronic information resources on the academic work of students, researchers and faculty members.

LITERTURE REVIEW

Breeding (2004) discussed the fundamental aspects to managing electronic resources in his study "The Many Facets of Managing Electronic Resources". According to him there are two fundamental aspects to managing electronic resources: back-end acquisition functions and front-

end content delivery. Back-End Management Tools for Library Staff includes Traditional Online Catalog Approach, E-Journal Holdings Data Services, and Electronic Resource Management Applications. Whereas Front-End Management: Delivering Access to Users includes Links from the Online Catalog, E-Journal Locator Resources, Linking to Full Text, Open URL-Based Link Resolvers.

Kennedy (2004) studied the Dreams of Perfect Programs: Managing the acquisition of electronic resources and found that more than a decade, academic libraries have been wrestling with the thorny issue of managing the acquisition of electronic resources. He had a look at several in-house initiatives around the country, commenting on the successes and failures of the homegrown programs built to track, update and manage the acquisition and behind-the-scenes maintenance of electronic resources. Realizing that libraries are now well equipped to identify what dream programs should entail, this paper also comments on how we can prepare for the future of electronic resource management.

Micalla (2003) conducted a study to encouraged students? use of the library, and particular of its electronic resources and what factors encourage students to seek out information in the library setting. A pilot survey was conducted a class of student taking in "introduction to psychology" at Baruch College, City University of New York. That survey had a number of open ended questions through statistical analysis, Micalla found that use of the library correlated to the students, use of the library's electronic resources and also found out that. Students who express an interest in learning about the library's electronic resources will be more likely to have higher self efficiency.

Rehman and Ramzy (2004) conducted a questionnaire based survey of health professionals affiliated with three teaching faculties of Kuwait University. It was conducted to find out the nature and extent of use and the reasons of low use of these resources. Responses were received from 70.9% of the faculty members. They reported that time constraints, lack of awareness, and low skill level were among the primary constraints they experienced.

Dadzie (2005) conducted a study to investigate the use of electronic resources by students and faculty of Ashesi University, Ghana, in order to determine the level of use, the type of information accessed and the effectiveness of the library's communication tools for information research. A questionnaire-based survey was utilized. It consisted of 16 questions to determine level of use, type of information accessed, assessment of library's communication tools,

problems encountered when using electronic resources and ways to improve the provision of electronic information in the community.

Kumbar, Raju and Praveen (2005) conducted a study that electronic resources have become the vital part of human life in 21st century. It is clear from the study that how electronic resources are useful to research scholars and also problems in accessing and utilizing of electronic resources. 92.86% of respondents use e-resources for the purpose of their research work. 97.21 % of use internet as an e-resource. The majority (45.71%) of the respondents use FST A database. 75.11 % of the respondents opened that access to current information in only through electronic resources. 52.86% of respondent stated that too much of information retrieved in one of the hindrance in using electronic resources.

Nicholas (2005) conducted a study to find the faculty's views towards college students about open web resources. Questionnaire method is used for collecting data of 90 faculty members of 40 colleges. The finding of the study reveals that 60% of respondents said that college subscribed online resources according to the need of the students. Only 70% colleges allocate significant funds to subscribe to online data bases and journals. Most faculty members said that students used the open web resources for quick search of materials and carrier development. Search engines were used for searching web resources.

Prem Chand and Others (2005) explained the use of electronic journals available under UGC INFONET consortium in University libraries. The concept of Electronic Journals, Electronic Publishing, Electronic Serials, Online Journals and Electronic Periodicals is stated in the beginning. The development of UGC INFONET and their services were discussed in three phases. The UGC INFONET providing access to University libraries to their web. The respective libraries have to provide their IP address in order to access of electronic journals and electronic resources offered by the UGC INFONET. User statistics of these electronic resources is not promising. It is necessary to initiate such steps that could help to encourage the users to use the electronic resources offered by UGC INFONET. In this context, the development of infrastructure and user training played a crucial role.

DATA ANALYSIS :- The purpose of the study was to investigate the study of use of electronic information resources in "*Jawahar Lal Nehru University*".

1. General characteristics of the population

For the purpose of getting required information Research Scholars (PhD students) were selected because they acquired more skills for using electronic information than that of Under Graduates and Post Graduates. The details of Research Scholars (PhD students) were collected from the concerned university. Details of Research Scholars (PhD students) are given below:

Table 1: Details of students

Sr. No	University name	Total students
1	Jawaharlal Nehru University	2183

2. Awareness of the Electronic Resources

Respondents were asked to confirm their awareness of the electronic resources whether they are aware of the electronic resources or not. The responses showed that 100% of research scholars are aware of the electronic resources in JNU University. Details of the responses given below in **Table 2.**

Table 2 Awareness of research scholars with the e-resources

University	Awareness of the e-resources		
	Yes	No	Total
JNU	100%(200)	-----	100%

3. Libraries – Use and Familiarity

The investigator asked the respondents to give details about their visits to library; how often do they avail the services of the library, daily, weekly or monthly? Responses from research scholar of JNU university is given below in table 3 and responses shows that 29 % scholar use weekly bases library and 9.5 % scholar uses monthly bases library.

Table 3. Frequency of use of library by the research scholars

University	Frequency of use of library			
	Daily	Weekly	Monthly	Total
JNU	61.50%(123)	29%(58)	9.5%(19)	200

4. Present library use of research scholars

The researcher asked the respondents if their present library usage increased, decreased or is about the same in last 1-3 years. 61% of JNU respondents said that their present library use had

increased. It has been noticed that there is overall increase in the usage of library by the respondents across all the universities surveyed.

Table 4: Present library use of research scholars

University	Present library use			
	Increased	Decreased	About the same	Total
JNU	61%(122)	31%(62)	08%(16)	100%(200)

5. Respondents are extremely familiar with Search Engines and Print Sources

In the survey conducted investigator asked the respondents to rate their familiarity with two information sources i.e. search engines and print sources. In JNU 84 % respondents were very familiar with the search engines. and 91% scholar very familiar with print sources.

Table 5: Familiarity of research scholars with the Search Engines and Print Sources

Familiarity	Universities	Familiarity with...	
		Search Engines	Print Sources
Very familiar	JNU	84%(168)	91%(182)
	JNU	10%(20)	09%(18)
Somewhat familiar	JNU	06%(12)	----
	JNU	----	----

Table 6: Do you face any problem while accessing e-resources

Problems while accessing e-Resources	JNU
Yes	51%
No	49%
Total	100%

Respondents were asked about their problems they faced accessing e-resources or there wasn't any problem at all? Highest numbers of respondents 51 % says "YES" and 49% says "No" among total scholar.

Conclusion:-Life has become fast and to cope-up with it, technology has played a greater role in the lives of people by facilitating their busy time. Information communication technology has promoted the growth of electronic format of the information and gave rise to e-resources. As the time progressed, many things conflicted and many things became easy. Earlier it was not possible to pursue research with easy availability of materials and needed resources. Only the few libraries had accessibility to electronic resources that time but now the whole world of the

libraries got changed by the e-resources. In academics, however, the electronic resources, a gift of technology are not thought to be reliable by many. There is the danger possibility that information can be manipulated after the electronic resources are hacked. Students of JNU library are much aware about electronic resources.

References

1. Prem Chand, Murthy, T. V. A. and Chandel, A. S. (2005). Usage of electronic journals under UGC INFONET E-Journal consortium in North Eastern University librarians. In PLANNER (3rd convention). Assam university, Silchar November 2005. INFLIBNET, Ahmadabad, 127-132.
2. Nicholas, G. Tonninto. (2005). Faculty views of open web resource use by college students. *Journal of Academic librarianship*. 30(6), 550-506.
3. Satish Kannamadi, & Kumber, B.D. (2006). Web based service expected from libraries: a case study of Management institute in Mumbai city. *Webology*. 3(2)
4. Antelman, K., Lynema, E., & Pace, A.K. (2006). Toward a twenty-first century library catalog. *Information Technology and Libraries*, 25(3), 128-39.
5. Sajjad ur Rehman., & Vivian, Ramzy. (2004). Awareness and use of electronic information resources at the health sciences center of Kuwait University. *Library Review*. 53(3), 150-156.
6. Levine-Clark, Michael. "Electronic Books and the Humanities: A Survey at the University of Denver." *Collection Building* 26, no. 1 (2007): 7-14.
7. Kwadzo, Gladys. "Awareness and Use of Electronic Databases by Geography and Resource Development Information Studies Graduate Students in University of Ghana." *Library Philosophy and Practice* (e-journal), March 2015. Accessed July 12, 2015. <http://digitalcommons.unl.edu/libphilprac/1210>.
8. Breeding, M. (2004). The Many Facets of Managing Electronic Resources. *Computers in Libraries*. 24 (1), Retrieved on 22, November, 2011, from <http://www.infotoday.com/cilmag/jan04/breeding.shtml>
9. Bruce, C. S. (1990). Information skills coursework for postgraduate students: investigation and response at the Queensland University of Technology. *Australian Academic & Research Libraries*. 21(4), 224-232.
10. Carol, Tenopir. (2003). Use and user of Electronic Library Resources: an overview and analysis of recent research studies. *Council of Library and Information Resources*. 8(3), 72.